सचित्र

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन
के ३५ वें बम्बई अधिवेशनके अध्यक्ष
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—४६ ता० ३१ दिसम्बर १९४७ 31st December, 1947. मूल्य =) वार्षिक ६)

घिर घिर उठते आज सघन घन!

गीले पंखोंको सहलाते,
नीड़ों में पंछी सुख पाते,
भीग रहे तृण, तरु औ' पल्लव
जल बना वसुधा का कण-कण!

मेरे उर में भी घन छाये,
स्मृतियों के शिशु हैं दुलराये,
क्यों व्याकुल बन गया न जाने,
मेरे प्राणों का यह स्पन्दन!

आंसू से ये गाने गीले;
सूखे पत्ते से हैं पीले,
मोह सकेंगे कैसे जग को,
ले कर व्याकुल उर का क्रन्दन!

निशिदिन मेरी एक प्रार्थना,
जीवन की है मधुर साधना,
अपने दुख सुख भूल, पा सकूं
मैं अपनी आत्मा का चिरधन!

—सुश्री तारापाण्डे

कवियोंकी पनिहारी

श्री ब्रजकिशोर वर्मा श्याम

कवि मानसमें पनिहारी और उसके पनघटको अभिनन्दनीय स्थान प्राप्त है। सदवसे ही ये दोनों चीजें रसिक कवियों की कल्पनाको आकर्षित करती रही हैं। हिन्दीके आदि कवि चन्द बरदायीसे लेकर सुमित्रा नन्दन पंत तक कोई ऐसा विरलाही कवि रहा होगा जिसको पनिहारी की छलकती हुई रस गागरीने मोहित न किया हो। ब्रज भाषाके रसज्ञ शृंगारी कवियों की तो सारी कला और कल्पना पनिहारी की रूप रस माधुरी पर निछावर है। केशव, देव विहारी पद्माकर और रसखानकी कविताएं पनघट जानेको मचलती हुई अज्ञात यौवना, उसकी राहमें कुलेल करती हुई रूप गर्विता, कूएंके घाट पर चांदनी बिखेरती हुई वचन और क्रिया विदग्धा, लौटती हुई अनुशयाना और गुप्ताकी रस चेष्टामें सराबोर हैं ब्रज भाषाके कवियोंका पनघट रूप रस काकेन्द्रबिन्दु है। इसघाटपरजी मर कर लजाती हुई मुग्धा और झिझकती हुई मध्या दोनोंका आप दर्शन कर सकते हैं। और प्रौढ़ा वह तो पनघट की रानी है। उसकी गागरमें रसिकोंके प्राण भरे हैं। जलसे भरी गगरी के साथ प्रवीणोंके दिल उसकी पकड़के ऊपर खिंचते चले जा रहे हैं। उसका मुड़ कर मुसकाना, कमलोंकी सृष्टिका कारण हो जाता है। इसीलिये किसी पकी उम्रवाले कविने कहा है—

पनघट कबहु न बैठिए
पनिहारी को ठाम
पनघट बैठे पत घटै
पनघट जाको नाम

लेकिन इस अनुभवी उक्तिकी ओर कौन ध्यान देता है।। इस ओर न तो रूप-रस लोभी नागरिकोंने ही ध्यान दिया और न हठीली पनिहारीने ही अपनी सखी की इस शिक्षाकी कोई परवाह की—

लाज घट जैहे, गृह काज घट जैहै।
सुख साज घट जैहै, रूप राग घट जायगो
कानि घटि जैहै, मृदु बानि घट जैहै।
सकुचानि घटि जैहै,उर ज्ञानघटि जायगो।
रसिक बिहारी ढीठ छैल सब ही को छलै,
ताकी छबि देख पति धर्म घटि जायगो।
तन घट जैहै, अरु मन घट जैहै अरी,
पनघट जैहै ताको पन घट जायगो।

रसिक बिहारी महाराज आप चाहे जितना भी उपदेश दें, धमकी दें आदेश दें कुलकी कान और पति व्रत धर्मकी दुहाई दें, सब शिक्षाओंके बावजूद भी ब्रज भाषाके कवियोंकी यह प्रिया पनिहारी अवश्य पनघट पर जायगी! आपको क्या पता कि उसे इस घाट पर क्या क्या मिलता है?

उधर देखिये चोरीसे बरजोरीसे वह

(शेष ३८ वें पृष्ठ पर)

परहित बस जिनके मनमानी।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

समझौतेसे नहीं

मानव जातिका सम्पूर्ण इतिहास जिस प्रत्यक्ष सत्यका गवाह है उस पर तर्ककी गुंजाइश नहीं है। और वह प्रत्यक्ष सत्य यह है कि आजतक संसारमें धर्म की शक्ति अर्थात अहिंसा और प्रेम कभी शान्ति और व्यवस्था स्थापित करनेमें सफल नहीं हुए। सैन्य बल और शस्त्रादि हिंसात्मक साधनोंसे प्रतिपादित कानूनके बल पर ही शान्ति कायम की जा सकी है। ईसाई बहुत हुए पर ईसाइयत कितनों- में आयी ? बौद्ध भी कम नहीं हुए पर कितने आदमी बुद्ध धर्मको मान कर उसके अनुसार चलते हैं ? आजके जमाने में गांधी भक्तोंकी भी कमी नहीं है किन्तु कितने गांधी पंथके अनुयायी हैं, यह तो प्रत्यक्ष ही है। सिद्धान्त कितनाही सुन्दर क्यों न हो किन्तु मानव जातिका अबतक- का इतिहास इस बातका पर्याप्त प्रमाण है कि दुनिया बुद्ध, ईसा और गांधीके पथ पर चल सकनेमें असमर्थ है। इसी लिये भगवान कृष्णने संसारको यह उपदेश दिया कि दुष्टका दलन करनेके लिये मनुष्य हथियार उठाये; शस्त्र स्त्र धारण करे तभी संसारमें धर्म राज्यकी स्थापना हो सकती है।

यह प्रमाणित और स्वतः सिद्ध तथ्य है कि राष्ट्रोंके बीचमें होनेवाले युद्धोंको बन्द नहीं किया जा सकता क्योंकि युद्ध- मानव स्वभावमें है। युद्धकी स्थिति उत्पन्न करने वाले कारण एक नहीं अमित हैं, अतः यह कल्पना करना कि उन सब कारणोंको मिटाया जा सकता है अस- म्भव कल्पना है, मानव साध्यके बाहर है। पाकिस्तान और भारतकी समस्या पर विचार करते समय इस तथ्यको स्मरण रखना चाहिये। इसके साथ साथ यह भी स्मरण रखना चाहिये कि पाकिस्तानका राज धर्म—इसलाम—अहिंसा और प्रेमके बल पर नहीं तलवारके बल पर दुनियामें फैला। पाकिस्तानी तलवारके कायल हैं। तलवार हीसे उनको समझाया जा सकता है। काश्मीरके नेता शेख अब्दुल्ला इस तथ्यको समझते हैं, इसीसे उन्होंने कहा कि काश्मीरकी समस्या समझौतेसे नहीं तलवारसे सुलझायी जायेगी। हम चाहते हैं कि हमारे नेता भी इस तथ्यको समझें।

काश्मीरमें शेख अब्दुल्लाकी तलवारने पाकिस्तानी तलवारकी धारको जब कुंठित कर दिया तब उस पर शान रखनेके लिये समयकी आवश्यकता हुई और इसीलिये दिल्ली लाहौरमें सम्मेलनोंका तांता लगा हुआ है। क्योंकि शेख अब्दुल्लाने काश्मीरियोंके देश-प्रेमकी जिस उच्च भावनाको अपने ओजस्वी भाषणों और आवेगमयी वाणी द्वारा जाग्रत और उदबुद्ध किया है जबतक उसे उनकी निकृष्ट भावना जगा कर दबा नहीं दिया जाता तबतक पाकिस्तानका झण्डा काश्मीर पर गड़ नहीं सकता और इस निकृष्ट भावनाको जगाने के लिये दीन इसलामका सहारा लेनेके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। पाकि- स्तानी समझते हैं कि देश प्रेमके अमृतको इसलामके नाम पर डाला गया एक बूंद विष नष्ट कर सकता है बशर्ते कि इस कामके लिये कुछ समय और सुविधाएं मिलें। ये सम्मेलन—हर्षकी बात है कि लाहौरकी तरह दिल्ली सम्मेलन भी असफल हो गया और भारत सरकार पाकिस्तानके फन्देमें नहीं आयी,—पाकिस्तानके इन दोनों मतलबोंको सिद्ध करनेमें सहायक हो रहे है। सरहदी लुटेरोंको ये सम्मेलन आजाद काश्मीर सरकारके प्रतिनिधिका रूप देकर प्रकारान्तरसे उनका मान बढ़ा रहे हैं,शेख अब्दुल्लाका प्रभाव घटा रहे हैं। सीधे हमलेकी नीति अपनाने वाले इन लीगियोंसे,-जिनको दरअसल आज जर्मनी, इटाली और जापानके नाजियों और फासिस्टोंकी तरह अन्तर्राष्ट्रीय न्याया- लयके सामने मानवताका गला घोंटनेका क्रूर अपकर्म करनेका जवाबदेह बना कर विचारार्थ उपस्थित किया जाना चाहिये था पर जो ब्रिटिश कूटनीतिके परिणाम स्वरूप पुरस्कृत हो र आज एक स्वतंत्र देशके कर्ता धर्ता और नियन्ता बने बैठे हैं—तलवार छोड़ समझौतेके रास्ते पर चलनेकी आशा नहीं की जा सकती। परि- स्थितियां जबतक प्रतिकूल हैं तबतक धूर्त्त मनुष्य अपने प्रतिद्वन्द्वीको सन्तुष्ट करनेके लिये सदा सब कुछ करनेको प्रस्तुत दिखायी देता है। मनुष्य हो या राष्ट्र उसकी साधुताजन्य दुर्बलता कभी कभी उसके लिये प्राण घातक हो जाती है और धूर्त इस स्थितिसे सदा नाजायज फायदा उठानेकी ताकमें रहते हैं। हर्षकी बात है कि हमारे नेता इस तरफसे सतर्क हैं और वे इस स्थितिसे जरा भी हटनेको तैयार नहीं है कि लुटेरे आक्रमणकारी पाकि- स्तानकी सहायतासे पाकिस्तानके रास्ते काश्मीर और जम्मू पर हमला कर रहे हैं। पाकिस्तानका यह आचरण अन्त- र्राष्ट्रीय कानूनका उल्लंघन है, यह बात हमारे प्रधान मंत्री अपने ब्राडकास्ट भाषण में स्पष्ट कह चुके हैं। पर दुर्वृत्त आत- तायी अंतर्राष्ट्रीय कानूनकी मर्यादा रखने लगे तो फिर कोषसे यह शब्दही न उठ जाये ? उसने सदा अपनी महत्वाकां- क्षाओंको ध्यानमें रखा है भलेही उसका यह काम पड़ोसीके साथ शत्रुताचरण हो या संसारके साथ।

इस बातके पर्याप्त प्रमाण पाये जा चुके हैं कि स्यालकोट और झेलमका निकट प्रदेश आक्रमणकारियोंका केन्द्र स्थल है। पाकिस्तान केवल समय निका- लने और भारतसे आर्थिक सहायता एवं अन्य सुविधाएं पानेके इरादेसे काश्मीरके मामलेको भी इन सम्मेलनोंमें सामने ला रहा है। पर काश्मीरकी दिशामें पाकि-

स्तानने जो कदम बढ़ाया है उसे जरा भी पीछे हटानेको वह तैयार नहीं है। काश्मीरको पाकिस्तान अपनी जीवनडोर समझता है। वह जानता है कि काश्मीर को अपने अधिकारमें रख कर ही वह भारतके लिये सदा एक खतरा बना रह सकता है और तभी वह हर मामलेमें भारतसे इच्छानुकूल शर्तें मनवा सकता है। अतः इस दृष्टिसे भारत सरकार के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि काश्मीर पर पैर रख कर पाकिस्तान सदा भारतके लिये एक खतरा बने, इसके पहले ही पूरी ताकतके साथ काश्मीरकी समस्या तलवारके बलसे सुलझा डाली जाये। इस स्थितिमें सिक्यूरिटी कौन्सिलके सामने इस मामलेको ले जाना व्यर्थ है, दुश्मन-का ताकत बढ़ानेका मौका देना है, इस-लामकी आवाजको बुलन्द करके काश्मी-रियोंको शेख अब्दुल्लाके नेतृत्व और प्रभावसे दूर खींच ले जानेका अवसर प्रदान करना है।

१९४७—

यह वर्ष बड़ा शुभ और अशुभ बीता। भारतवर्ष स्वतंत्र हुआ पर दो खण्डोंमें विभक्त हो गया और इस तरह उसका एक भाग विदेशी बन गया। स्वतन्त्रताको पञ्जाब और बङ्गालके नागरिकोंके रक्तसे स्नान कराया गया। जूनागढ़ और हैदरा-बादने पैंतड़े बदले। काश्मीर पर आक्रमण किया गया। पश्चिमी पञ्जाबसे प्रायः सभी हिन्दू भारत चले आये और पूर्वी पञ्जाबसे प्रायः सभी मुसलमान पाकि-स्तान चले गये। यह सब होनेके बावजूद भी भारत और पाकिस्तानके बीच एक आर्थिक समझौता हो गया है, पर कहा नहीं जा सकता कि पाकिस्तानकी काश्मीर नीतिको देखते हुए यह समझौता स्थायी होगा या नहीं। इन सब दुर्घटनाओंके बावजूद सालका तलपट शुभ ही रहा, क्यों कि स्वतंत्रताका मूल्य बहुत बड़ा है, बशर्ते कि हम उसे अन्तर्राष्ट्रीय विनिमयके बाजार पर स्थिर रख सकें। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे १९४७ का तलपट शुभ नहीं कहा जा सकता। तीन महानोंके बीचमें युद्ध समाप्त होते ही खांई पड़ गयी थी वह उत्तरोत्तर चौड़ी होती गयी और अन्तमें वे लंदनमें दो दलोंमें विभक्त हो गये। युद्ध की चर्चा जोरों पर है। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस एक तरफ और रूस दूसरी तरफ है। संयुक्तराष्ट्र संघ तीन महानों के आपसी संघर्षके कारण मजबूत नहीं हो सका और अब तो अमेरिका और ब्रिटेनके नेतृत्वमें उसका भी रूपान्तर हो गया है। रूस इससे अलग है। उसने भी पूर्वी यूरोपके ६ राष्ट्रोंको लेकर तीसरे कमिण्टर्नको नये रूपमें जीवित किया है। यूनानमें विद्रोही सरकारकी स्थापना इस बातका सङ्केत है कि यूरोपमें रूस विरोधी प्रत्येक देशमें इसी प्रकारकी स्थिति उत्प-न्न करके उस देशकी सरकारको गृहयुद्ध में लिप्त करनेकी चेष्टा की जायेगी, यदि अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसने रूसके विरुद्ध मोर्चेबन्दी की। गृह युद्ध धीरे-धीरे क्या रूप धारण कर सकता है यह चीनके गृह युद्धसे समझा जा सकता है। मध्य पूर्वकी स्थिति फिलस्तीनके विभाजनसे पहलेसे अधिक संगीन हो गयी है। अरब राज्य सैन्य और शस्त्र संग्रह कर रहे हैं। तीन महानोंका वैमनस्य क्या रूप धारण करेगा, मध्यपूर्वका भविष्य बहुत कुछ इस पर निर्भर है। सुदूर पूर्वमें जापान प्रायः पूर्णतया अमेरिकाके चंगुलमें आ गया है। हिन्देशिया, हिन्द चीनकी समस्या संयुक्त राष्ट्र संघकी दुर्बलतासे ज्योंकी त्यों है और धीरे धीरे साम्राज्यवादी इस अंचल पर अपनी स्थिति मजबूत करनेमें लगे हैं। बर्मा स्वतंत्र होने जा रहा है, सीलोन और मलायाको उत्तरदायित्व पूर्ण शासन की ओर एक कदम आगे बढ़ाने वाले सुधारजारी किये जा रहे हैं। दक्षिणअफ्रीक की जातीय विद्वेषनीतिमें कोई अन्तर नहीं आया। इसके लिये भी तीन महानों का आपसी मत भेद जिम्मेदार है। स्मटस जैसा धाकड़ राजनेता समझता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ उसे दबा नहीं सकता। आस्ट्रेलिया और कनाडा बदस्तूर अपनी पूर्व स्थिति बनाये हुए हैं और अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें इनकी दिलचस्पी इतनी ही दूर तक है कि जहां तक सम्भव हो सबके साथ सद्-भाव बनाये रख कर संसारमें समुन्नत जीवन यापन करना। रङ्ग-विद्वेष इस दिशा में बाधक होगा, यह ये महसूस कर रहे हैं और तदनुकूल नीति ग्रहण करनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

अमेरिकाकी संसार पर आर्थिक साम्राज्यवाद लादनेकी प्रचण्ड अभिलाषा का ही यह परिणाम है कि १९४७ में रूस इन लोगोंसे बहुत दूर हो गया है। अणु-बमके अधिकारने अमेरिकाको पहलेकी अपेक्षा अधिक युद्ध शील बना दिया है और इन सब कारणोंको देखते हुए १९४७ संसारको तीसरे विश्वयुद्धके समीप पहुंचाने में सहायक बने तो आश्चर्य क्या है।

दिल्ली वार्ता असफल—

गत सप्ताह दिल्लीमें भारत और पाकि-स्तानके राज नेता एकत्र हुए यह विचार करने को, कि किस उपायसे दोनोंके बीच सौहार्द और मैत्री कायम की जा सकती है। यह पहला ही प्रयास नहीं था। दो सप्ताह पहले लाहौरमें इस प्रयासका सूत्र-पात किया गया था। अन्य सब मामलों में तो कुछ गुंजाइश दिखायी दी पर काश्मीरके मामले पर पहुंचते ही वास्त-विकता सामने आ गयी और वार्तालाप भङ्ग हो गया। पाकिस्तानमें शासन और व्यवस्था सम्बंधी दुर्बलताएं तो पाकि स्तानियोंको बाध्य करती हैं भारतके साथ मिलकर मित्र पड़ोसीकी भांति रहनेको पर औरङ्गजेबी स्वप्नको पूरा करनेकी महत्वाकांक्षा, हिन्दूकुशसे लेकर कन्या कुमारी तक इसलामी झण्डा फहरानेकी तमन्ना हर बातचीतमें सामने आ जाती है और काश्मीर पहुंचते पहुंचते यह तमन्ना इतनी प्रचण्ड हो उठती है कि समझौतेकी बातचीत इसी जगह टूट जाती है। काश्मीरका प्रश्न ही इस समय

सबसे जबर्दस्त रोड़ा बन कर इन दोनों पक्षोंके बीचमें मेलके रास्तेमें पड़ा हुआ है। किंतु जब तक पाकिस्तान अपनी मौजूदा नीति बरतता रहेगा काश्मीरके मामलेमें समझौता नहीं हो सकता। भारत की स्वतंत्रताकी रक्षाकी दृष्टिसे काश्मीर का वहीं महत्व है जो इङ्गलिश चैनेलका ब्रिटेनके लिये है। अतएव हम समझते थे कि एक ओर पवित्र आवश्यकता और दूसरी ओर भयानक महत्वाकांक्षाके मामलेमें समझौता असम्भव है और वही हुआ। भारतका पक्ष इस मामलेमें स्पष्ट है। सङ्कटके समय भारत काश्मीरका साथ नहीं छोड़ सकता। वह यह जानता है कि काश्मीरमें शेख अब्दुल्लाका नेतृत्व है, अतः आज फिर वह भूल नहीं दुहरायी जा सकती जो एक बार लीगके सम्बन्धमें की जा चुकी है। काश्मीर नेशनल कानफरेन्सका महत्व और प्रधानता नष्ट करके उसका स्थान लीग प्रभावित मुस्लिम कानफरेन्सको देनेकी चाल इस समझौते वार्तामें भी चली जा रही है। काश्मीर भारतके साथ रहेगा या पाकिस्तानके, यह जाननेका समय अभी नहीं आया। पहले युद्ध बंद होना चाहिये। पाकिस्तान इसके लिये राजी नहीं है। फलस्वरूप काश्मीरसे भारतीय सैनिक तबतक नहीं हटाये जा सकते जबतक एक भी आक्रमणकारी काश्मीरमें रहेगा। पाकिस्तान मीठा मीठा गुप्प कड़वा कड़वा थू वाली नीति चरितार्थ कर रहा है। आर्थिक समझौता करके वह भारतसे सहायता चाहता है, पर काश्मीर पर आक्रमण करनेवालोंको अपनी सरहदसे बढ़ते नहीं रोक सकता। शस्त्रास्त्र और अन्य सहायताएं जो आक्रमणकारियोंको दी जा रही हैं उनको बंद नहीं कर सकता। यह समझौतेका तरीका नहीं है। लेनेके बांट और है देनेके बांट और की नीतिसे समझौता होनेके दिन बीत गये। इस नीतिसे पाकिस्तान बन गया। अब पाकिस्तानको फैलानेके लिये यह नीति काम नहीं कर सकती। इस भावपर समझौतेकी बातचीतको समाप्त करनेके सिवा भारत सरकारके सामने दूसरा रास्ता ही क्या था ?

भारतके मुसलमान—

परिवर्तित स्थितिमें भारतके मुसलमानों को क्या रुख पकड़ना चाहिये, यह एक प्रश्न है। इसी सवालको हल करनेके लिये मौलाना अब्दुल कलाम आजादके सभापतित्वमें एक मुस्लिम सम्मेलनका आयोजन २७ और २८ दिसम्बरको लखनऊमें किया गया है। मौलाना आजादका मत है कि भारतमें अब मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्थाकी आवश्यकता नहीं रह गयी और लीगको तोड़ देना चाहिये। राजनीतिक मामलों में भारतके मुसलमानोंका जनवादी दृष्टिकोण होना चाहिये और देशके एक नागरिक की भांति उनको आचरण करना चाहिये। राजनीतिक अधिकारों की लड़ाई उनको कांग्रेसमें शामिल होकर लड़नी चाहिये।

भारतके मुस्लिम लीगी भी कुछ-कुछ इसी तरहकी उधेड़ बुनमें थे, लेकिन गत सप्ताह कायदे आजम जिन्नाने पाकिस्तानकी मुस्लिम लीगके सम्बंधमें जो कहा है उससे यहांके मुसलमान असमंजसमें पड़ गये। जिन्ना साहब कहते हैं कि अभी समय नहीं आया कि मुस्लिम लीगको राष्ट्रीय सङ्गठनमें बदल दिया जाये। पाकिस्तानका लोकमत अभी इस स्थितिको स्वीकार करनेको तैयार नहीं है। हमें लोकतंत्रके भुलावेमें न आना चाहिये। वास्तवमें लोकतन्त्रका कोई आधारही नहीं है। जिन्ना साहबका यह वक्तव्य भारतीय मुसलमानोंके लिये गूढ़ संकेत समझा जाता है। लोकतंत्रके भुलावेमें आकर कहीं भारतके मुसलमान लीगको तोड़ न बैठें इसी अभिप्रायसे लखनऊ सम्मेलनके पहले उन्होंने यह वक्तव्य दिया है। जिन्नाका यह संकेत अपना काम कर रहा है और इस वक्तव्यके आधार पर मुस्लिम लीगको बनाये रखनेकी आवश्यकता महसूस करने वाले प्रतिक्रियावादी मुसलमानोंका पल्ला भारी पड़ गया है।

लखनऊमें होने वाले मुस्लिम सम्मेलनके सम्बंधमें अपना रुख स्थिर करने के लिये यू० पी० मुस्लिम लीगने युक्त प्रांतीय मुस्लिम लीग व्यवस्थापिका दल और प्रांतीय लीगकी वर्किङ्ग कमेटीकी आवश्यक बैठक २५ और २६ दिसम्बर को बुलायी है। इसमें विभिन्न प्रांतोंसे प्रमुख लीगी नेता भाग लेंगे। छतारीके नवाब और भारतीय पार्लमेंटमें लीग दलके नेता मि० महम्मद इस्माइलको विशेष रूपसे आमंत्रित किया गया है। इस सम्मेलनमें भारतके मुसलमानोंको अब क्या रुख लेना चाहिये, इस पर विचार किया जायेगा। युक्त प्रांतीय जमीयत उल उलेमाके अध्यक्ष मौलाना शहीद फखरीने मि० जिन्नाकी उक्त नसीहतका जिक्र करते हुए ठीक ही कहा है कि मालूम होता है हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें हुए हालके रोमांचकारी काण्डोंसे, जिनमें लाखों निर्दोष व्यक्ति बरबाद हो गये और लाखों मर मिटे, मि० जिन्नाने भी कोई सबक नहीं सीखा। उनकी नसीहत देशका, खास कर मुसलमानोंका काफी नुकसान कर चुकी है। भारतके मुसलमानोंने जिन्नाके कारण काफी नुकसान उठाया है। अब उनको अपनी पुरानी चालोंसे बाज आना चाहिये। हम नहीं कह सकते कि भारतके मुसलमान जिन्नाके नेतृत्वको इनकार करेंगे या नहीं पर एक बात हम जानते हैं कि हिंदुस्तान सलमानोंकी पुरानी हरकतोंको दुहरानेका मौका हरगिज नहीं दे सकता। जिस मुस्लिम लीगने भाईको भाईका दुश्मन बना दिया रक्तकी नदियां बहायी और अंतमें हमारे प्रिय देशके दो टुकड़े कर डाले उसे अब इस मिट्टीमें नहीं पनपने दिया जायेगा। मुस्लिम लीगके लिये और उसके माननेवालोंके लिये भारत में कोई स्थान नहीं है।

श्री राहुल सांकृत्यायन

बम्बईमें हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३५ वें अधिवेशनके अध्यक्ष पदसे दिये गये भाषण का वह अंश हम यहां उद्धृत कर रहे हैं जिसमें राहुलजीने बलपूर्वक इस बातका प्रतिपादन किया है कि दो-दो भाषा और दो-दो लिपिको राजभाषा बनानेका कोई कारण नहीं है। उर्दू वालोंको हिन्दी पढ़नेके लिये मजबूर किया जायेगा ? इस प्रश्नका उत्तर देते हुए राहुलजी कहते हैं कि यह तो जनतांत्रिक नियम है। उर्दूको लादनेमें कोई भलाई नहीं है।

सारे संघकी राष्ट्रभाषासे अतिरिक्त हिन्दीका अपना विशाल क्षेत्र है। इसलिये यहां हिन्दीका राजभाषाके तौर पर शिक्षाके माध्यमके तौर पर स्वीकार किया जाना बिल्कुल स्वाभाविक है। कुछ राजनीतिक नेता हिन्दुस्तानीके नाम पर और न जाने किस भलाईके ख्यालसे उर्दूको भी यहां घुसेड़ना चाहते हैं। लेकिन यह तो निश्चित है, कि इस बातमें उनका व्यक्तित्व कोई काम नहीं करेगा। पन्तजी की सरकारने युक्त प्रांतमें हिन्दीके प्रति अपनी दृढ़ता दिखलाते हुए उसे एकमात्र राजभाषा स्वीकार किया, उसने बतला दिया कि हवाका रुख किधर है। दो-दो भाषा और दो-दो लिपिको राजभाषा बनानेका अब कोई कारण नहीं है। तर्क पेश किया जाता है, कि अगर यहांके उर्दू भाषा-भाषी मुसलमानोंको हिन्दी पढ़ने पर मजबूर किया गया, तो बंटा हुआ हिन्दुस्तान फिर कभी एक न होगा। मानो, उर्दू को राज-भाषा स्वीकार कर लेने पर एकता निश्चित है। मेरी समझमें तो बंटे हुए हिन्दुस्तानकी एकताकी बात चलानी फजूल ही नहीं, हानिकर है। हमारी पीढ़ी जो कर सकती थी कर चुकी। एकता करनेका काम अगली पीढ़ी का है, हमें इस एकताकी बात करके उनके काममें कठिनाइयां नहीं पैदा करनी चाहिये। एकता तभी होगी, जब कि दोनों भागोंमें धर्मान्धताका स्थान राष्ट्रीयता और वैयक्तिक स्वार्थका स्थान समाज-स्वार्थ लेगा।

उर्दूको लादनेमें और क्या भलाई समझी जाती है ? उर्दू वालोंको हिन्दी पढ़नेके लिये मजबूर किया जायेगा ? यह तो जनतांत्रिक नियम है। जिस भाषाके अधिक बोलने वाले होते हैं, वही भाषा राष्ट्रीय मानी जाती है। अल्पसंख्यकों की भाषा इस तरह नष्ट हो जायेगी ? यह भी आक्षेप नहीं हो सकता। मैं समझता हूं, कि हमारी सरकार उर्दू पढ़ने वालोंके रास्तेमें रुकावट नहीं डालेगी, लेकिन साथ ही यह तो जरूर होगा, कि जिनको सरकारी या कल कारखानोंकी नौकरियों को पानेका ख्याल है, उनके लिये हिन्दी पढ़ना आवश्यक होगा। आखिर आज तक व इनके लिये वे अंग्रेजी पढ़ते रहे, फिर अब हिन्दी पढ़नेमें क्या हर्ज है। जैसे वह आज तक हाई स्कूलोंसे युनिवर्सिटी तक अरबी-फारसी पढ़ते रहे, वैसे आगे भी पढ़ते रहेंगे। हिन्दी तो केवल वही स्थान लेने जा रही है, जिसे अंग्रेजीने जबर्दस्ती दखल कर रखा था। विदेशी भाषा सीखनेमें जब उजुर नहीं था, तो अपने देशकी भाषा सीखनेमें क्यों उजुर है ? हिन्दी भाषा ७०० सालों से पदच्युत रहकर अब विशाल मध्यदेशमें अपना स्थान ग्रहण करने जा रही है इसके लिये हमें हर्ष होना चाहिये।

विश्वकी महान् भाषा—हिन्दी भारतीय संघकी राष्ट्रभाषा होगी और उसके आधेसे अधिक लोगोंकी अपनी भाषा होनेके कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय जगतमें अब एक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी चीनी भाषाके बाद वही दूसरी भाषा है, जो इतनी बड़ी जनसंख्याकी भाषा है। हिन्दीके ऊपर इसके लिये बड़ा दायित्व आ जाता है। हिन्दीको एक विशाल जनसमूहके राजकाज और बातचीतको ही चलाना नहीं है, बल्कि उसीको शिक्षाका माध्यम बनना है। फिर आजकलकी शिक्षा सिर्फ कविता, कहानी, और साहित्यिक निबन्धों तकही सीमित नहीं है। विश्वकी प्रत्येक उन्नत भाषाका साहित्य अधिकतर साइन्सके ग्रंथों पर अवलम्बित है। अभीतक तो साइंसकी पढ़ाई अंग्रेजीने अपने सिर पर ले रखी थी, किन्तु अब अंग्रेजोंके साथ अंग्रेजीका राज्य जा चुका है। सरह-स्वयम्भूसे पन्त निराला, महादेवी तकका हिन्दी काव्य साहित्य बहुत सुन्दर और विशाल है नाटक छोड़कर सभीअङ्गोंमें विश्वकेकिसी भी प्राचीन और नवीन साहित्यसे उसकी तुलना की जा सकती है। कथा साहित्यमें प्रेमचन्द्रने जो परम्परा छोड़ी है, वह काफी आगे बढ़ है। किन्तु अब हमें सारा ज्ञान विज्ञान लाना होगा। कुछ लोग इसे बहुत भारी शायद सदियोंका काम समझते हैं। परन्तु मेरी समझमें यह उनकी भूल है। आज जिस चीजकी मांग हो उसे साहित्य जगतमें सृजन करने वालोंकी कमी नहीं होता। अबतक उपन्यास कहानी कविताकी मांग थी, और लेखकों तथा कवियोंने इस मांगको बहुत हद तक पूरा किया।

अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलनके बम्बई अधिवेशनका उद्घाटन पण्डित गोविन्द वल्लभ पंतने किया।

बर्मा स्वतन्त्र हो रहा है

लेखक—श्री सतीश चन्द्र

एशिया शुरूसे ही धन-धान्यसे परिपूर्ण रहा है। इसके रत्न पूरित रत्नाकर अक्षय खनिज-भण्डार, अनमोल प्राकृतिक-निधियों आदि चीजें यूरोपवासियोंको प्राचीन कालसे ही लुभाती रही हैं। इसी कारणसे बहुत पहलेसे ही एशियाई देशोंसे सम्पर्क स्थापना करनेकी कोशिश करते आ रहे थे। किन्तु, जबतक समुद्री रास्ताका पता न चला था, तब तक उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो सकी। कारण स्थल-मार्ग होकर आने-जानेमें काफी पैसे और समय लगता था। परीशानी और तबाही भी कम न होती थी। उस पर भी मार्ग सुरक्षित न था, लूट और हत्याका भय सदा ही लगा रहता था। अतः १५ वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें जब वासको डिगामाने यूरोप और एशियाके बीच समुद्री रास्ताका पता लगाया तो एशिया आनेका मार्ग सुगम हो गया और दलके दल यूरोपीय व्यापारी एशियाके दक्षिण पूर्वी देशोंमें आने लगे। व्यापारके साथ साथ कूटनीतिके बल पर वे राजनीतिमें भी हाथ बंटाने लगे और धीरे-धीरे अपना साम्राज्य भी स्थापित करते गये।

डचोंने हिन्देशिया पर दखल जमाया, फ्रांस वालोंने हिन्द चीन और भारतके कुछ हिस्सों पर कब्जा किया, अंग्रेजोंने भारत, मलाया, सिलोन आदि देशों पर कब्जा किया। फिर भला अमेरिकावाले काहेको चुप रहते। उन्होंने भी फिलीपाइन पर हाथ बढ़ाया। इस तरह साराका सारा दक्षिण पूर्वी एशिया गोरी जातियोंने हड़प लिया। आखिर बर्माकी भी बारी आयी। यह भी अंग्रेजोंकी तीखी नजरोंसे बच न सका।

१८२५ ई० तक बर्मा पूर्णतः स्वतन्त्र था, जब कि भारत गुलामीकी कड़ियोंमें बंध चुका था। सर्व प्रथम १८२६ ई के युद्धमें अंग्रेजोंने बर्माके टेनासरिम नामक प्रान्त पर कब्जा किया। बर्माके पतनकी कहानी यहींसे शुरू होती है। टेनासरिममें अंग्रेजोंके पांव तो जम ही गये, फिर शेष हिस्सों पर भी कब्जा करनेकी कोशिशें चलती रहीं। २५ वर्षों बाद १८५२ ई में फिर लड़ाई हुई। इस द्वितीय युद्धमें बर्माका बहुत बड़ा दक्षिणी हिस्सा फिर अंग्रेजोंके हाथ आया। १८५३ ई में उत्तरी प्रान्तों पर भी पंजा बैठा दिया। किन्तु, अभी बर्माका बहुत बड़ा हिस्सा स्वतन्त्र ही था। दाव-पेंच चलते रहे। कूट नीतिके बल पर बर्माको फिर तृतीय युद्धमें घसीटा गया। अंग्रेजोंकी नीति काम कर गयी। इस तृतीय युद्धके परिणाम स्वरूप अंग्रेजोंको शेष हिस्सोंके साथ माण्डले भी मिल गया और तभी बर्माके अन्तिम राजा थिबाको सिंहासन च्युत भी होना पड़ा। इस तरह १८८६ ई तक संपूर्ण बर्मा अंग्रेजोंके चंगुलमें आ गया।

बर्मामें अभी भी ऐसे व्यक्ति ढूंढ़ने पर मिल सकते हैं, जिन्होंने राजा थिबाको सिंहासन च्युत होते देखा है। पूछने पर वे आज भी आपको अवरुद्ध कंठसे उस अशुभ घटनाका वर्णन सुना सकते हैं। वे आपको बतायेंगे, थिबा क्यों हारा, उससे जनता किस तरह रंज थी। उनके वर्णन में आप थिबाके प्रति उनकी शिकायत सुनेंगे।

बगावतका झण्डा

थिबाके सिंहासन च्युत होनेके समय बर्माकी जनताको आशा थी कि अंग्रेज फिर किसी बर्मीको राजा बना कर उसे शासन भार सौंप देंगे। अन्यायी थिबाकी जगह दूसरा न्यायी राजा गद्दी पर बैठेगा और वे सुख पूर्वक रह सकेंगे। किन्तु, जब अंग्रेजोंने किसी बर्मीको राजा न बनाया तो जनतामें विद्रोहकी लहर फैलने लगी। बर्मियोंने अंग्रेजी सत्ता स्वीकार करनेसे अस्वीकार कर दिया और बगावतका झण्डा उठाया। किन्तु अंग्रेजोंकी संगठित, नवजाग्रत शक्तिके सामने बर्माका वह असंगठित स्वातन्त्र्य संग्राम सफल न हो सका। विद्रोहके संचालकोंको अंग्रेजोंने डाकू और लुटेरा घोषित किया। अंग्रेजोंके कागजों या नजरोंमें वे भले ही डाकू या लुटेरा हो, किन्तु बर्माका बच्चा-बच्चा तो आज उन्हें बहादुर देशोद्धारकके रूपमें ही याद करता है। कुछ भी हो विद्रोह तो तत्काल कुछ दिनोंके लिये दब ही गया। बार बारकी पराजयसे एशियाके दूसरे देशोंकी तरह बर्मा निवासियोंका भी विश्वास हो चला कि यूरोपवासी अजेय हैं। अतः इच्छा होने पर भी अंग्रेजोंके विरुद्ध जंग-आजादी छेड़नेसे डरने लगे।

संयोगवश बीसवीं शताब्दीके आरम्भमें एशियाके छोटेसे देश जापानने वृहद काय रूसको पछाड़ दिया। जापानकी इस असंभावित विजयने एशियाके गुलाम मुल्कोंमें नयी जान डाल दी। एशियावासियोंकी यह धारणा कि यूरोपवासी अजेय हैं दूर हो गयी। यूरोपकी साम्राज्यवादके विरुद्ध एशियाके प्रायःसभी गुलाम मुल्कोंने बगावतका झण्डा उठाया। इस घटनासे बर्मा भी प्रभावित हुआ। उसने भी अंगड़ाईयां ली। वह तो तुरत ही गुलाम हुआ था। इसलिये उसके रक्तमें अभी भी काफी गर्मी बची हुई थी ही, इस अप्रत्याशित घटनासे उसमें भी नयी जिन्दगी उमड़ पड़ी। नया साहस, नयी उमंगे पैदा हुई। उसने भी अंग्रेजोंके विरुद्ध अपने स्वातंत्र्य संग्रामका मोर्चा कायम करनेका निश्चय किया। १९०८ ई० में स्थापित यंगमेन्स बुद्धिस्ट एशोसियेसन नामक संस्था इसी निश्चयका परिणाम था। शासन सुविधाकी दृष्टिसे अंग्रेजोंने बर्माको भारतके अन्तर्गत एक प्रांत बना दिया था। स्वभावतः हमारी कांग्रेसके स्वतंत्रता आन्दोलनने बर्मामें भी नव जागरण पैदा किया। भारतके साथसाथ बर्मामें स्वतंत्रता आंदोलनकी प्रगति देख ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने भेद नीतिसे काम लिया, फलस्वरूप अंग्रेजोंकेसंरक्षणमें बर्माको भारतसे पृथक करनेकी मांगके रूपमें एक नया आन्दोलन चल पड़ा। इस आंदोलनकी परिणति १९३५ एक्टके अनुसार बर्माके भारतसे पृथक्करणके रूपमें हुई। इस समय तक

अंग्रेज शासकों और कूटनीतिज्ञों की कृपा से बर्मामें वहांके निवासी भारतीयोंके प्रति द्वेष और घृणा भावने काफी जोर पकड़ा। अंग्रेजोंकी कूटनीति बर्मियों तथा भारतीयोंके बीचमें कटुता पैदा करनेमें जैसे सफल हु. वैसे ही बर्मियोंको आपस में लड़ानेकी उनकी नीति भी सफल हुई।

जिस समय १९३९ में यूरोपमें युद्ध का शंखनाद हुआ उस समय १९३५ एक्टके शासन सुधारके अनुसार बर्मामें बामाका मंत्रिमण्डल शासन कर रहा था, किंतु उसी साल बामाका मन्त्रिमण्डल भंग हो गया और उसकी जगह पर यू पूने नये मंत्रिमण्डलका संगठन किया। यूसा भी इस नये मंत्रिमण्डमें सम्मिलित थे। १९४० ई० में यूसाने अपनी अलग मिआचिट पार्टीका संगठन किया। उस पार्टीके संगठनके आधार पर यूसा कुछ ही दिनोंमें बर्माकी राजनीतिमें चमक उठा। इस बीच जापान भी युद्ध मैदानमें उतर पड़ा। भूतपूर्व प्रधान मंत्री बामा जापानसे मिले रहनेके अभियोगमें जेलमें बन्द कर दिये गये। कुछ ही दिनोंमें बामा निकल भागे और इशान रियासतमें चले गये। जापान आंधीकी तरह सारे दक्षिणी पूर्वी एशिया पर उमड़ता चला आ रहा था। अंग्रेज भी भयभीत हो उठे थे। यूसाने देखा मौका अच्छा है और वह सन्धिका संदेश लेकर लन्दन चल पड़ा। ब्रिटिश मंत्रीमण्डलके सामने उसने मांग पेश की कि युद्धमें सहायता करनेके बदले युद्ध समाप्ति के बाद बर्माको निजी सरकार कायम करनेकी स्वाधीनता दी जाय। किन्तु अनुदार दलकी ब्रिटिश सरकारने यूसाकी मांग को स्वीकार नहीं किया। यूसाकी मांगको अस्वीकार तो कर दिया किन्तु इससे ब्रिटिश सरकारकी चिन्ता बढ़ गयी। उसे भय हो गया कि कहीं यूसा बर्मा पहुंच कर युद्धमें तटस्थता न घोषित कर दे। इसी भयसे प्रेरित होकर बर्मा लौटते समय रास्तेमें ही होनो लूलमें ब्रिटिश सरकारने यूसाको गिरफ्तार कर युगांडा में नजर बन्द कर रख छोड़ा।

यू आंग सानका युग

एक ओर तो ब्रिटिश सरकार अपना जाल फैला रही थी, दूसरी ओर बर्माका तरुण नेता यू आंग सान राजनीतिक हलचलोंको गंभीरता पूर्वक अध्ययन कर रहा था। ब्रिटिश सरकारकी लड़खड़ाती स्थिति जापानकी उमड़ती शक्ति देश की, उठती जागृति सब मिल कर यू आंग सान के हृदयमें उथल-पुथल मचाने लगी।

यू आंग सान ने देखा स्थिति देशकी स्वतंत्रताके लिये अनुकूल है। एक धक्के की आवश्यकता थी। ब्रिटिश सरकार लड़खड़ा रही थी। इन्ही विचारोंसे प्रेरित होकर उसने निश्चय किया कि जापानकी सहायता प्राप्त कर ब्रिटिश सरकारको खदेड़ दिया जाय। इसी उद्देश्यसे प्रेरित हो कर १९४२ ई० के प्रारम्भमें मौतसे भी खेल जाने वाले कुछ जानिसार साथियोंके साथ यू आंग सान जापान जा पहुंचा। जापान सरकार से समझौतेकी बातचीत हुई। समझौता होनेमें विशेष अड़चन नहीं पड़ी। दोनों अपनी अपनी गोटियां एक ही बार लाल कर लेना चाहते थे। यू आंग सानने देखा, प्यारा स्वदेश आजाद हो रहा है। जापान सरकारने देखा आसानीसे बर्मा मिल रहा है। फिर देर क्यों? आजाद हिन्द की देखा देखी आजाद बर्मा फौजका सङ्गठन हुआ। इस फौजने जापानियोंकी साहयतासे ब्रिटिश साम्राज्य को मार भगाया। बर्मा वाले बहुत प्रसन्न हुए कि आखिर आजाद हो गये। किन्तु जापानियोंकी साम्राज्यवादी मनोवृतिने कुछ ही दिनोंमें उनकी आशा धूलमें मिला दी। मौलमिन और टेनासरिमपर अधिकार होने पर बर्मा वालों ने जापान सरकारसे अनुरोध किया कि वह बर्माकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर ले। जापानियोंने बहाना किया कि पहले रंगून तो ले लो फिर तो तुम आजाद हो ही। खैर यह भी सही। १९४२ के मार्च महीनेमें आखिर रंगून पर भी आजाद बर्मा फौजका झण्डा फहरा उठा। बर्मा वालोंने फिर अपनी मांग दुहरायी।

जापानियोंने फिर बहाने बाजी की बार-बार की बहाने बाजीसे बर्मा वाले सशंकित हो उठे। दोनों तरफसे घात प्रतिघात चलने लगे। अन्तमें एक पुतली सरकार १९४३ ई० में जापानके इशारे पर कायम हुई और फिर जापान ही के इशारे पर मित्र राष्ट्रके विरूद्ध युद्ध घोषणा की। एक ओर जापान अपनी जड़ मजबूत करनेकी कोशिश कर रहा था दूसरी ओर यू आंग सान भी जापानसे बर्माको मुक्त करनेका चिन्ता में लीन था। जापानियों द्वारा निर्मित बर्माकी पुतली सरकार देशमें शासन व्यवस्था कायम रखनेमें असफल सिद्ध हुई समस्त बर्मामें त्राहि त्राहि मच गयी। युद्धके फलस्वरूप बर्मावासियोंकी गरीबी आखिरी सीमा पर पहुंच गयी। युद्ध जनित बीमारियां और महंगी पराकाष्टा पर जा चुकी थी। इन कारणों से जापानियोंसे बर्माकी जनता क्षुब्ध हो चली थी। परिस्थिति अनुकूल थी। पश्चिमसे अंग्रेजी फौज बढ़ती चली आ रही थी। आंग सान भी जापानियों द्वारा नव शिक्षित बर्मी सेना लेकर अंग्रेजों का सामना करने रंगूनसे प्रोमकी ओर गया। उस समय तक जापानियोंको आंग सान की नीयतका पता न चला था। उन्होंने बहुत विश्वासके साथ आंगसानकी फौजको विदाई दी। आंग सानभी जापानियोंको विश्वास दिलाकर प्रोमकी ओर बढ़ा।

प्रोम पहुंच कर आंग सानकी फौज इरावती पारकर थायरमायोके क्षेत्रमें पहुंची। इस क्षेत्रमें जापानियोंकी शक्ति बहुत कम थी। यहीं पर समस्त जापानी अफसरोंको कत्ल कर स्वतन्त्र बर्मा सरकारकी घोषणा की गयी। किन्तु केवल स्वतन्त्र सरकारकी घोषणा कर देनेसे ही काम नहीं चलता था।

फासिस्ट विरोधी स्वतन्त्र संघ

बर्मा वाले तो इस तरह जापानियों से मुक्ति पानेकी चेष्टा करते ही रहें दूसरी ओरसे मित्र राष्ट्र की फौज भी जापानियोंको कुचलती आगे बढ़ रही

थी। आंग-सागने देखा मौका अच्छा है और ब्रिटिश फौजसे मिलकर संयुक्त मोर्चा कायम कर जापानियोंको खदेड़ने लगे। जापानी इनके सामने ठहर नहीं सके फलतः १९४५ ई० में बर्मासे जापानियोंकी छाया मिट गयी। जापानियोंकी छाया तो मिट गयी, किन्तु अंग्रेजोंकी छाया फिर छा गयी। किन्तु बर्मा वासी तो एक बार आजादी भोग चुके थे। फिर से गुलामी की कड़ीमें बन्ध जाना आंग-सानको पसन्द न था। ब्रिटिश सरकारकी हुकूमत मिटानेके लिये फिर उसने एक नयी संस्था बनायी। इस संस्थाका नाम रखा फासिस्ट विरोधी जन स्वातंत्र्य संघ राष्ट्रीयताकी लहर देशमें थी ही। जनता ने बड़े उत्साहसे उसमें भाग लिया। जन स्वातंत्र्य संघके साथ साथ जन स्वयं सेवक संघ दल सङ्गठित किया गया। देशके कोने कोनेके किसान युवक इसमें सम्मिलित हो गये। उन लोगोंके पास युद्ध कालके शस्त्र तो थे ही उन शस्त्रों के सहारे वे ब्रिटिश सरकारका विरोध करने लगे। जगह जगह रैलियां होने लगी हड़तालोंका सिल सिला बढ़ा। सारे बर्मामें उथल पुथल सी मच गयी। सरकारने भी दमनका आश्रय लिया। २२ हज़ार बर्मी युवक जेलोंमें ठूंस दिये गये। सभा जुलूस रैलियां और पत्रोंपर रोक लगा दी गयी। किन्तु दमन कारगर न हो सका। परिस्थिति अत्यधिक गंभीर हो उठी अन्तमें लाचार होकर ब्रिटिश के दक्षिणी पूर्वी सेनाके तात्कालिक कमांडर मैंटेम्यू परिस्थिति सुलझाने बर्मा आये। आंग सानको मन्त्री पद स्वीकार करनेके लिये कहा गया। किन्तु आंग-सान तो राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाके सिवा और किसी भी शर्त पर समझौता करनेको तैयार नहीं थे। उनकी सुसङ्गठित शक्तिके सामने ब्रिटिश सरकारको झुकना पड़ा फलतः अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई। और यू आंग-सान उसके अध्यक्ष बने।

पूर्ण स्वतन्त्रता

किन्तु अस्थायी सरकार बन जानेसे ही बर्मावासियों की इच्छा पूरी नहीं होती थी। उनका लक्ष्य तो था पूर्ण आजादी। राष्ट्रीय सरकारकी बागडोर हाथमें आते ही साम्राज्य विरोधी जन स्वातंत्र्य संघकी ओर से चुनौती दी गयी कि उस अस्थायी राष्ट्रीय सरकार १९४७ ई० के ३१ जनवरी तक पूर्ण अधिकार प्राप्त स्वतंत्र सरकारके रूपमें परिवर्तित कर दिया जाय और १२ महीनो के भीतर अंग्रेज पूर्णतः बर्मा छोड़ दे। स्वतन्त्र बर्माका विधान बनानेके लिये एक पूर्ण सत्ता प्राप्त और बालिग मताधिकार द्वारा निर्मित विधान परिषदकी स्थापना करनेकी सुविधा दी जाय। स्वाधीनता पूरे बर्मा के लिये होनी चाहिये।

राष्ट्रीय अस्थायी सरकारकी स्थापना और उपर्युक्त चुनौती ने बर्मा और इङ्गलैंडमें एक अजीब परिस्थिति पैदा कर दी। कम्युनिस्ट पार्टी जो अबतक जन साम्राज्य विरोधी संघमें सम्मिलित थी संयुक्त मोर्चा तोड़कर अस्थायी सरकारके विरूद्ध खूले आम कार्रवाई करने लगी। कम्यूनिस्ट पार्टी तथा सरकार दोनोंको झुकना पड़ा। न कम्यूनिस्टोंके हौसले पस्त हो गये और ब्रिटिश सरकारने भी फासिस्ट विरोधी जन संघकी मांगें कुछ शाब्दिक हेर फेरकर मंजूर कर ली।

मांगे मंजूर हो जानेके बाद विधान परिषदके चुनावकी बात सबसे पहले आयी। अब तक बर्माकी दूसरी दूसरी पार्टियों और नेताओं की यह शिकायत थी कि जब वे जेलोंमें बन्द थे। तभी साम्राज्य विरोधी जन संघका प्रचार गलत तरीके से किया गया। अगर उन्हें मौका मिले तो वे देख सकते हैं कि देश की जनता किसका नेतृत्व स्वीकार करती है। ऐसी परिस्थितिमें विधान परिषद का चुनाव सभी राजनीतिक पार्टियोंको चुनौती दे रहा था। सभी प्रमुख पार्टियों ने उपर्युक्त चुनावमें खुलकर अपना प्रचार किया। जो आंग सान को देशका शत्रु कहते थे उन्होंने तो सबसे अधिक शक्ति लगायी। किन्तु जब चुनाव का नतीजा मालूम हुआ तो साम्राज्य विरोधी संघको सर्व प्रियता और नेतृत्व सभीको स्वीकार करना पड़ा। उक्त चुनावमें बहुत बड़े बहुमतके साथ साम्राज्य विरोधी संघकी जीत हुई। चुनावके बाद व्यर्थ समय न खोकर विधान परिषदका कार्य शुरू कर दिया गया।

एक ओर बर्मा आंग सानके नेतृत्व में द्रुत गतिसे स्वाधीनताकी ओर कदम बढ़ा रहा था। दूसरी ओर उसके विरोधी अभी भी बाज आने वाले नहीं। कभी सीमान्त और पहाड़ी इलाकोंमें विद्रोह हुआ तो कभी तानाशाहीका दोष लगाया फिर भी विधान परिषदका काम चलता रहा। आजाद बर्मा प्रजातन्त्र की रूप रेखा खींची जाने लगी। सहसा १९ जुलाईको कुछ व्यक्तियोंने बर्मा सरकारके मन्त्रिमण्डल पर भीषण आक्रमण कर आंग-सानके साथ ६ मन्त्रियोंको गोलीके घाट उतार दिया। बर्माको इनकीमृत्युसेभीषणक्षति हुई किन्तु आजादी की लड़ाई बन्द न हुई। साम्राज्य विरोधी जन संघके दूसरे कर्णधार आंग सानके चरण चिह्न पर कदम बढ़ाते गये। बर्मियोंकी दृढ़ताके सामने ब्रिटिश सरकारको फिर झुकना पड़ा। फलतः पिछले दिनों ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल और बर्माके प्रधान मन्त्री के बीच एक समझौतेमें तय किया गया कि ४ जनवरी १९४८ को बर्मा पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया जायगा। ब्रिटेनकी लोक सभामें बर्मा स्वातंत्र्य बिल चर्चिलके घोर विरोध पर भी पास हो गया। इस कानून पर स्वीकृतिके सम्राटका हस्ताक्षर भी हो गया। यह शहीद यू आंग सानके साहस पूर्ण नेतृत्व और अद्भुत राजनीतिज्ञता का ही फल है कि हमारा पड़ोसी बर्मा ४ जनवरीको प्रायः सौ वर्षकी गुलामीके बाद पूर्ण स्वतन्त्र होने जा रहा है। इस अवसर पर भारतकी शुभ कामनाएं और सद्इच्छाएं बर्माके साथ हैं, और यह बताने के लिये ही भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू स्वयं इस समारोहमें भाग लेने और बर्माको बधाई देने रंगून जा रहे हैं।

देशी रियासतोंमें

नयी दिल्लीमें भारत और पाकिस्तान डोमिनियनोंके बीच काश्मीरकी समस्या पर जो वार्ता प्रारम्भ हुई वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। काश्मीरके प्रधान मंत्री शेख-अब्दुल्ला भी दिल्लीमें उपस्थित हैं। इस मासके प्रारम्भमें भी काश्मीरकी समस्याके समाधानके लिये दो डोमिनियनोंके बीच वार्ता हुई थी लेकिन उस वार्ताका कोई विशेष परिणाम नहीं हुआ यह सभी जानते हैं। इस वार्ताका कोई अच्छा परिणाम निकलेगा, यह कहना तो कठिन है लेकिन कुछ पर्यवेक्षकोंका मत यह है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कारणोंसे परिस्थितिने बहुत ही जटिल रूप धारण कर लिया है। जो कुछ भी हो, भारत सरकार अपने संकल्प पर दृढ़ है। प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने जम्मूकी सार्वजनिक सभामें स्पष्ट घोषणा कर दी है कि काश्मीरकी समस्याके अन्तिम समाधानके लिये हम दृढ़ संकल्प हैं। किसी कामको आधा करके छोड़ देना हमारी नीति नहीं है। हम काश्मीरमें और भी फौजें भेजेंगे और जब तक विजय लाभ न हो तब तक सारी ताकत लगा कर कोशिश करते रहेंगे। पण्डित नेहरूका यह कथन इस वक्त होने वाली वार्तामें उपस्थित भारत सरकारकी नीतिकी उन शर्तोंसे स्पष्ट हो जाता है जिनमें कहा गया है कि भारत काश्मीर मित्रोंको उनकी आवश्यकताके वक्त पीठ नहीं देगा। काश्मीरी राष्ट्रीय सम्मेलनके नेताओंके विरुद्ध कोई भी निश्चय नहीं किया जायगा; अगर काश्मीरी जनता यह चाहे कि राज्यमें होने वाले उपद्रवोंके बन्द होनेके बाद ही जन गणना संग्रह का कार्य सम्पन्न होगा तो वैसा ही होगा। और जब तक काश्मीरसे उपद्रवियोंको नहीं भगा दिया जायगा तब तक भारतीय सेनाएं वहां से नहीं हटायी जायंगी।

भारत सरकारके इस प्रकारके स्पष्ट रुख के बावजूद समस्या समाधानके लिये वारबार प्रयास किये गये है। गत ६ दिसम्बरको उप प्रधान मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेलने पार्लमेण्टमें कहा था कि सम्भव होने पर काश्मीरकी समस्याओंके समाधानके लिये हर सम्भव उपायसे काम करनेको प्रस्तुत हैं। भारत सरकारकी सद्भावनाके कारण समझौतेकी वार्ता तो शुरू हुई लेकिन पाकिस्तानकी ओरसे उपद्रवियोंकी सहायता जारी है। यद्यपि यह सच है कि काश्मीरमें उपद्रवियोंका भारतीय फौजी टुकडियोंके सामने टिकना कठिन हो गया है

हैदराबादमें दमनका जोर—

निजाम सरकारने अखबारों और संवादों पर ऐसा नियंत्रण लगा रखा है कि उसके प्रतापसे हैदराबादका बाहरी दुनियासे सम्बंध विच्छेदसा हो गया है। बाहरी लोग केवल यही जानते हैं कि हैदराबाद राज्यमें प्रतिक्रियाशील शासकके विरुद्ध प्रगतिशील जन-आन्दोलन चल रहा है निजाम सरकार गंदेसे गंदे उपायों द्वारा जन आंदोलनको दबानेके लिये कटिबद्ध है! लेकिन निजामके दमनकी खबरें हमें बिलकुल नहीं प्राप्त होतीं है। कभी कभी राज्य कांग्रेसके किसी नेताके वक्तव्यसे राज्यके भीतरकी वास्तविक स्थितिका पता चलता है तो हमारा हृदय कांप उठता है। हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्दतीर्थने एक वक्तव्य दिया है जिससे वहांकी वास्तविक स्थितिका पता चलता है उनके पूरे वक्तव्यको प्रकाशित करनेकी आवश्यकता नहीं है। केवल एक अंश काफी है। स्वामीजी कहते हैं कि हैदराबाद राज्यमें जनताके ऊपर जो दमन हो रहा है वह इतना बर्बरता पूर्ण है कि उसका अविलम्ब प्रतिरोध करनेके लिये मैं भारतीय संघकी सरकारको विवेक-बुद्धिसे अनुरोध करता हूं। हैदराबादकी वर्तमान स्थिति इसी एक वाक्यसे स्पष्ट है।

भारत सरकारके इस प्रकारके स्पष्ट रुखके बावजूद समस्या समाधानके लिये

बार बार प्रयास किये गये है। गत ६ दिसम्बरको उप प्रधान मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेलने पार्लमेंटमें कहा था कि सम्भव होने पर काश्मीरकी समस्त समस्याओंके समाधानके लिये हर सम्भव उपायसे काम करनेको प्रस्तुत हैं। भारत सरकारकी सद्भावनाके कारण समझौतेकी वार्ता तो शुरू हुई लेकिन पाकिस्तानकी ओर से उपद्रवियों की सहायता जारी है। यद्यपि यह सच है कि काश्मीरमें उपद्रवियोंका भारतीय फौजी टुकड़ियोंके सामने टिकना कठिन हो गया है। तथापि यत्र तत्र उपद्रव तो जारी ही है। इधर विलायतके प्रतिक्रियावादी संवादपत्रोंने काश्मीरको विभाजित करनेका नारा लगाना शुरू किया है। भारतके विभाजन को स्वीकार करने वाले नेता काश्मीर विभाजनको शायद ही स्वीकार करेंगे। पाकिस्तानी नेताओंकी अगुआई सदैव विलायती शिक्षकोंने की है लेकिन गनीमत है कि अभी तक पाकिस्तान नेताओंने उन पाकिस्तान नेताओंने उनके इस नारे को नहीं अपनाया है यह सच है कि उन्हे अपनानेमें देर नहीं होगी। पर सवाल तो काश्मीरी जनताके समर्थन का है सो मि० जिन्ना और उनके सङ्गी साथी यह जानते हैं कि काश्मीरी जनता शेरकाश्मीर के साथ है लिहाजा वहां धर्मके नाम पर दाल नहीं गलेगी।

गत १६ दिसम्बरको कराचीमें कायदे आजम मि० जिन्नाने कहा है कि काश्मीर की समस्या गम्भीर है। आगे उन्होंने कहा है कि ब्रिटेन पाकिस्तानके साथ उपेक्षा का व्यवहार कर रहा है। व्यक्तिगत रूपसे मैं पाकिस्तानको ब्रिटिश कामनवेल्थ में रखनेका इच्छुक हूं। मि० जिन्नाके इस कथनकी ब्रिटिश पत्रों पर प्रतिक्रिया होनी अनिवार्य थी। अतः कलकतिया अधगोरा स्टेटसमैन उससे कैसे बचता जिस प्रकार स्टेटसमैन भारतमें पाकिस्तान और ब्रिटेनकी भलाईका नारा लगा रहे है उसी प्रकार सीमा प्रांत

(शेष ३८ वें पृष्ठपर)

चुनी हुई पत्तियां बगीचेके ही दूसरे भागमें तौली जा रही हैं।

ऊपरी आसामके एक चाय बगीचेमें मजदूर नारियां चाय की पत्तियां चुन रही हैं।

कदाचित जितनी विचित्रता और कल्पनाका सम्बन्ध चायकी उत्पत्तिसे है उतना अन्य किसी व्यवसायिक वस्तुसे नहीं। प्राचीन दंतकथाओंके अनुसार चायका पता लगना एक प्रकारकी आकस्मिक घटनाही थी। चीनियोंका दावा है कि उन्होंने इसका पता ईसाके २७३७ वर्ष पूर्व लगाया था। चायके गुणकारी प्रभावकी जानकारी उन्हें पानीको साफ करनेके सिलसिलेमें लगी। पर भारतीयोंकी धारणा है कि चायका पता एक बौद्ध भिक्षुने लगाया। एक दिन उस बौद्ध भिक्षुने नींद और सुस्तीसे तंग आकर पासहीकी एक झाड़ीसे कुछ पत्तियोंको तोड़ कर चबाना प्रारम्भ किया। वे चायकी पत्तियां थी। उसके पश्चात नींदने उसे नहीं सताया और वह दत्तचित्त हो भगवान बुद्धकी साधनामें रहने लगा। जो कुछ भी हो, सच बात तो यह है कि चीन और जापान दोनों देशोंमें औषधियोंमें उपयोगके रूपमें ही इसका व्यवहार किया जाता था। परन्तु पाश्चात्य लोगोंके सुदूरपूर्वमें आनेके पहलेसे ही यह दोनों देशोंमें जातीय पेयके रूपमें व्यवहृत होने लगी थी। पाश्चात्य जगतको चायसे सर्व प्रथम अवगत करानेवाले व्यक्तिका नाम था—'जियाम बतिस्ता रेमुसिओ'। यह सन १५५६ ई० की बात है। यद्यपि चायको पाश्चात्य जगतसे परिचित करानेका श्रेय इस युगके अनेकों अनुसन्धान कर्त्ताओंके नामके साथ लगा हुआ है तथापि ऐसा अनुमान है कि चाय सर्वप्रथम

आयात की गयी। यह मकाओसे जावा तथा जावासे यूरोप जहाज द्वारा भेजी गयी थी। आगे अनेक वर्षों तक डचवाले चाय समुद्रके रास्तेसे लाते रहे। पर सन १६१८ ई० में सबसे पहला चायसे लदा कारवां चीनसे रूसमें स्थल मार्गसे पहुंचा। सन १६८१ ई० के बाद ईस्ट इण्डियन कम्पनीने अपने पूर्वके एजेण्टोंको चाय भेजनेका आदेश दिया। सन १६८६ के पहले वे अमोयसे सीधे चाय नहीं मंगा सके।

क्षेत्र बहुत कुछ अंशोंमें चीनसे आयात किये गये बीजों एवं पौधोंसे चाय उत्पन्न करने एवं उसे बनाने तकही सीमित रहा। यहां जंगली चायकी खेती भी होती रही और अन्तमें इसे एक व्यवसायिक रूप प्रदान किया गया। जनवरी सन १८३६ में भारतसे आयात की गयी चायकी आठ पेटियां लंदनमें १६ शि० से ३० शि० प्रति पौण्डके दरमें बेची गयीं। उसी साल चायकी 'आसाम कम्पनी' नामक सर्वप्रथम व्यावसायिक प्रतिष्ठानकी स्थापना हुई।

उस समय ब्रिटिश बाजारोंमें चायका दर बहुत ऊंचा था और इसका विरोध भी कोई कम न था।

किन्तु १८ वीं सदीमें इंगलैण्डमें जातीय-पेयके रूपमें व्यवहृत होने लगी।

सन १८३३ में चीनका इस पर एकाधिपत्य न रहा। सन १८३४ में भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड विलियम बेंटिकने एक समिति नियुक्ति की। उस पर यह भार दिया गया कि वह भारतमें चायकी खेती कैसे उन्नत की जाय, इस विषयकी एक योजना सरकारके सामने प्रस्तुत

आज भारतमें ८७०,००० एकड़से भी अधिक भूमिमें चायकी खेती की जाती है और कुल वार्षिक उत्पादन ५५०,०००,-००० पौण्ड है। १८७०—१८८० ई० के बीचमें किसी समय चायके उद्योगकी स्थापना लङ्का और जावामें सर्व प्रथम हुई। भारत, लङ्का और जावामें चायके उत्पादनके अलावा पूर्वी अफ्रीकामें भी चायका उत्पादन सन् १६०२ में प्रारम्भ हुआ।

अपने इतिहासकी तरह चायके उत्पादनकी कला कोई कम रोचक नहीं है।

कोपलो जिन्हें अंग्रेजीमें 'फ्लश' कहते हैं, बनायी जाती है। पौधेकी उत्पत्ति अस्वाभाविक ढङ्गसे रोक दी जाती है जिससे कि कोमल नवविकसित पत्तियां सदा प्राप्त होती रहे। डालियोंमें गहरी हरी नुकीली घुमावदार पत्तियां लगती हैं। 'फ्लश'के सिवा इनकी लम्बाई ४ से १० या १२ इञ्च तक होती है।

समुद्रकी सतहसे ६००० फीट की ऊंचाई तक चाय कुछ कम मुलायम सदा-हरे रहने वाले पौधों पर ही उगायी जाती हैं। वह गर्म नम जलवायुमें जहां प्रचुर मात्रामें सूर्यका ताप तथा वर्षा प्राप्त हों, पैदा होती है। उष्ण और समशीतोष्ण कटिबन्धमें चायकी सबसे अधिक फसल होती है। उन स्थानोंका वातावरण कुछ कृत्रिम साधनों द्वारा गर्म रखा जाता है जिससे पौधे फल फूल सकें। पर कम ऊंचे पहाड़ी इलाकों में इससे सुन्दर किस्म की चाय पैदा की जाती है। हां, इसमें फसल अवश्य कम मात्रामें होती है। नर्सरी से छोटे छोटे पौधोंको लगानेके पूर्व मिट्टी को उसके अनुकूल बनानेके लिये काफी प्रयत्नकी आवश्यकता होती है। साधारण तया जब तक पौधा ५ वर्ष का न हो जाय पत्तियां तोड़नेके लायक नहीं बन पाती। पत्तियां तोड़नेमें भी एक कुशल मनुष्यकी आवश्यकता होती है। इस बातका पूरा प्रयत्न होना चाहिये कि कारखानोंमें अना-वश्यक खराब माल न भेजा जाय।

कारखानोंमें पत्तियां आने पर वे कन्वासकी लम्बी पट्टी पर दिन भर सूखनेके लिये बिछा दी जाती है। गरम हवा इस कार्यमें सहायता करती है और इसी कारण पत्तियोंका वजन घटकर आधा ही रह जाता है। इसके पश्चात ये रोलेरोंमें डाल दी जातीं हैं। जिससे कि इनके छोटे छोटे टुकड़े हो जांय और रस बाहर निकल जाय। उस समय इनमें एक प्रकारका विचित्र सा टेढापन आ जाता है। इसके पश्चात् चायकी पत्तियां जो कुछ न कुछ हरे रङ्ग लिये रहतीं हैं भट्टी घरमें ले जाई जातीं हैं जहां सिमेंटके फर्स पर या कांच की टेबिल पर बिछा दी जातीं हैं। इसी समय चायकी पत्तियों में रासाय निक परिवर्तन होता है। यहां पत्तियोंका रङ्ग पत्तियोंका सौरम उसका कड़ापन आदि के लिये जिम्मेदार हैं। चायकी पतियां भट्टीमें तब तक उबाली जाती है जब तक कि इनका रङ्ग बदलकर तवेसे लाल न हो जाय। भट्टीका कार्य पूरा करनेके पश्चात् चायकी पत्तियां रोटी सेंकने वाले चूल्हे की तरहकी एक भट्टीमें सुखायी जाती हैं।

उस समय काफी सतर्कताकी आव-श्यकता है क्योंकि विभिन्न समयमें विभिन्न तापों की आवश्यकता होती है। इसके बाद पत्तियां अपने विभिन्न प्रकारों के अनुसार छांटी जाती हैं। इनके नाम बड़े कौतूहल जनक रखे जाते हैं जिन्हेंकि चाय पीने वाले कम या अधिक रूपमें कुछ न कुछ जानते ही है। उनमेंसे कुछको अंग्रेजीमें ओरेञ्जपीको, क्रोकन पीका और ब्रोकन ओरेञ्ज पीको कहते हैं। इन नामों का चाय की किस्मसे कोई सम्बन्ध नहीं है। ये तो केवल चायकी पत्तियो की (सब प्रकारके आवश्यक कार्यके पश्चात) लम्बाई चौड़ाईके अनुसार निर्धारित किये गये हैं। चायके कारखानोंमें जो अन्तिम कार्य करना रह जाता है वह यही कि चायको दूसरी किस्मके अनुसार पेटियों में भरकर अच्छी तरह बन्द कर दिया जाता है। जिससे ये अपने निश्चित स्थान तक पहुंचने तक ताजा रहें। चाय उपजाने वाले क्षेत्रोंमें एक सक्षिप्त कहावत प्रसिद्ध है जिसका अर्थ है कि चायका बनना खेतोंसे प्रारम्भ होता है। वास्तवमें सत्य है। क्योंकि जबतक भली प्रकारसे यह ध्यान न दिया जाय कि पौधोंसे उप-युक्त पत्तियां ही तोड़ी जाय, जबतक भली प्रकारसे टोकरियोंमेंसे अनावश्यक कूड़ा कचरा निकाल न फेंक दिया जाय; जबतक खेतोंसे कारखानेमें माल पहुंचानेका अति-शीघ्र प्रबन्ध हो जाय, जबतक माल पहुं-चानेके साथ ही साथ इस बातका भी ध्यान न रखा जाय कि पत्तियोंकी प्राकृतिक विशेष गुण सुरक्षित रहें तो निस्संदेह कारखाना उत्तम किस्मकी चाय नहीं बना सकेगा। संक्षेपमें, अगर हम कहें कि चाय कारखानेमें ही बनती है तो कोई भूल न होगी।

संसारके अनेक नगरोंमें कई ऐसी गलियां भी हैं जो केवल पत्र व्यवहारका पता मात्र ही नहीं हैं बल्कि उनका अपना नाम एक विशेष महत्त्वपूर्ण अर्थ भी रखता है। विगत शताब्दीसे सारे संसारमें मिन-सिंग लेन केवल भौगोलिक स्थान मात्र नहीं है बल्कि यह शब्द एक तरहसे चाय का पर्याय हो गया है। यद्यपि यह बात नहीं है कि संसारमें पीजानेवाले सारी चाय यहांसे ही होकर जाती है, तथापि इतना कहना कोई अत्युक्ति पूर्ण नहीं होगा कि संसारके चाय व्यापारमें 'मिन-सिंग लेन' बहुत दिनों तक महत्व पूर्ण केंद्र रहा है। चाय पैदा करने वाले अपनी चायको कई तरहसे बेच सकते हैं। कुछ चाहे तो सीधे कारखानेसे खरीदी जाती है। इसका अंतिम निर्दिष्ट स्थान निश्चित नहीं किया जा सकता। कारखानोंसे उसी देशमें जैसे भारत वर्षमें काफी तादादमें खप जाती है। पहले सारीकी सारी फसल या उसका कुछ अंश गुप्त संधि द्वारा बेच दिया जाता है। माल सीधा ही आयात कराने वालोंको भेज दिया जाता था। पर यह प्रथा अब नहीं रही। पूर्वके प्रधान चायके निर्यात करने वाले बन्दरगाह जैसे कोलम्बो, कलकत्ता, बटाविया और मेदान में चायके बेचनेका तरीका बड़ा ही रोचक है। कलकत्तेमें प्रत्येक सालके जून मासके अगले महीनेके मार्च मास तक नियमित रूपसे साप्ताहिक नीलामें होती हैं। कोलम्बोसे जहां दक्षिण भारत के उपजका कुछ अंश तथा सिलोनकी उपजका अधिकांश अंश बाहर भेजा जाता है। साप्ताहिक नीलामोंसे बिक्री साल भर होती रहती है। इन बाजारोंमें चाय या तो उत्पादन करने वाले देश ही में वितरण करनेके लिये या सीधे दूसरे देश

(शेष १८ वें पृष्ठ पर)

ठण्ढके दिनोंमें जब तरुण व्यक्ति लिहाफसे मुंह निकालनेमें भी डरते हैं और बार बार घड़ीकी सुइयोंको देखते हुए यह प्रतीक्षा करते रहते हैं कि घडीकी छोटी सुई आठ पर और बड़ी सुई बारह पर पहुंच चुकी या नहीं, तब मेरे पडोसमें रहनेवाले एक बृद्ध सज्जन अपने घरसे बाहर आकर खली सड़क पर नारियलका हुक्का गुड़गुड़ाते खड़े दीखते हैं।

सड़क पर इन वृद्ध सज्जनके आजाने-का ठीक-ठीक समय क्या है, यह हम स्वयं नहीं जानते। कारण, हुक्केकी गुड़गुड़ाहटके बीच जब कमी वे जोरोंसे खों-खों करने लगते हैं, तब उनका यह स्वर किसी जबर्दस्त अलार्मसे कम नहीं होता। और, जब जब उनके अलार्म से मेरी नींद टूटी, मैंने यही देखा कि कमी साढ़े छः बज रहे हैं, तो कमी पौने छः। ऐसी दशामें सड़क पर हुक्का गुड़गुड़ाते हुए यह वृद्ध सज्जन कब आ जाते हैं, यह कह सकना मेरे लिये सम्भव नहीं।

आप शायद उत्सुक होंगे कि इन वृद्ध सज्जनका नाम क्या है। लेकिन इसके लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूं। कारण ये अमी जीवित हैं। यदि कहीं उन्हें यह पता लग जाये कि उन्हींको लेकर मैंने यह कहानी लिख डाली है, तो मेरी परे-शानीका आप सहजही अनुमान लगा सकते हैं। ऐसी दशामें उनके नामके अतिरिक्त बाकी समी बातें आप जान लीजिये और कमी अवसर मिले, तो मेरे पड़ोसमें आकर स्वयं उनके दर्शन कर लीजिये।

रुईसे मरी हुई एक बण्डी, जिसकी आस्तीनें हैं तो पूरी, लेकिन थोड़ी-सी चढ़ी हुई, खादीकी एक मोटी और मट-मैली सी धोती, जिसमें पैरोंका निम्न माग काफीसे अधिक खुला हुआ, पैरोंमें देशी चप्पल और सिर पर किसी फटे शालका एक छोटा सा टुकड़ा बंधा हुआ। उन्नत और चौड़े-से मस्तकके नीचे दो धंसी हुई आंखें और पिचकेसे गाल, जिनके पार्श्व में बड़ी लम्बी दाढ़ी। यही है इन वृद्ध सज्जनकी रूपरेखा।

खुली सड़क पर खड़े होकर जब ये अपना हुक्का गुड़गुड़ाने लगते, तब धीरे धीरे पास-पड़ोसमें कुछ और लोग मी उनके पास जा पहुंचते और धूपमें बैठ कर पता नहीं कहां-कहांकी महुआ केवलेकी गप्पें और कहानियां सुनते सुनाते। कमी कमी तो इतने जोरोंसे इनके कहकहे लगते कि मुझे इन पर क्रोध हो आता। यह इसलिये कि चाय पीकर नियमित रूपसे जो थोड़ा बहुत लिखनेका मुझे एक नशा-सा हो गया है, उसमें इन कह-कहोंसे बड़ी बाधा पहुंचती। लेकिन पड़ो-सियोंसे इन बातोंको लेकर झगड़ा मोल लेना मैंने कमी ठीक नहीं समझा। चुप-चाप अपनी वह खिड़की बन्द कर अपना काम किया करता, जो सड़ककी तरफ खुलती है।

उस दिन दांत किटकिटा देनेवाली ठण्ढ थी। हवाके झोंके तीखे शूलोंकी तरह शरीरमें चुम रहे थे। पास-पड़ोसमें सर्वत्र एक सन्नाटा छाया हुआ था। ऐसे सन्नाटेमें अपने विस्तरसे उठ कर एक कम्बल ओढ़ कर मैं चुपचाप कहानी लिखने बैठाही था कि श्रीमती जीने लिहाफ रही है और तुम्हें यह लिखनका धुन सवार है। परमात्मा न करे कि ठण्ढ लग जाये, तो लेनेके देने पड़ जायं। जब देखो तब डेस्क पर औंधे रहते हो और न जाने क्या क्या लिखते रहते हो!'

श्रीमतीजीका एक एक शब्द मैंने सुन लिया था, फिर भी मैं चुप रहा। मैं जानता था कि यदि कुछ बोला कि आगे लिखना असम्मव हो जायगा और कहानी अधूरी ही रह जायगी।

मुश्किलसे दस पांच पंक्तियां लिखी होंगी कि श्रीमतीजीके भी विस्तरसे उठनेकी आहट मेरे कानोंमें गूंज उठी। उनके पायलकी झनकार सुन, मैंने संतोष की एक सांस ली कि चलो, कमसे कम चाय तो अब जल्द तैयार हो ही जायगी। और, हुआ भी यही।

श्रीमतीजी चुपचुप जाकर चाय तैयार करने लगीं। वह जानती हैं कि लिखते समय यदि एकाध बार उनके कुछ कहने पर मैंने अपनी कलम न रख दी, तो फिर आगे कुछ कहने सुनने पर मैं एकदम झल्ला उठता हूं। इस दशामें कहानी का एक खण्ड जबतक मैंने लिख नहीं लिया, कोई व्यवधान सामने नहीं आया।

जब चाय तैयार हो गयी, तब मन्नू को जगा कर श्रीमतीजीने उसका हाथ मुंह धुलाया और तब उसे मेरे पास भेज कर चाय बन जानेका संकेत किया। चूंकि कहानीका एक खण्ड पूरा हो चुका था, अतः सन्तोषके साथ मैंने कलम रख दी। मन्नूका चुम्बन लिया और हाथ मुंह धोकर फौरन चाय पीने जा पहुंचा।

(२)

चाय पीते समय मैंने कहा—'देखो, आज इस सन्नाटेमें कहानी लिखना मैं इसलिये ठीक समझा कि उन बृद्ध सज्जन का न तो हुक्का गुड़गुड़ा रहा है और न उनके खों खोंका अलार्म ही बज रहा है। बीच बीचमें जो कहकहे सुनायी पड़ते थे, वे भी आज बंद हैं'।

'लेकिन जानते हो' श्रीमती ने कहा—'आज बुढ़ऊ अबतक क्यों नहीं दीख रहे हैं?'

चायका प्याला खाली करते हुए कहा मैंने 'अरे, इस ठण्ढमें बुढ़ऊकी हिम्मत न

पड़ी होगी घरसे निकलनेकी और क्या ?'

'बुढ़ऊ ऐसी ठंढसे कभी नहीं डरते।' श्रीमतीजीने कहा—'तभी तो मैं कहती हूं कि पासपड़ोसकी जानकारी भी रखा करो थोड़ी बहुत। कहानियां तो बहुत लिखते हो, लेकिन कथानकके लिये सहायता पहुंचानेवाली बातोंकी भी तो कुछ खोज खबर रखनी चाहिये न !'

'ऐसी बातोंका पता मुझे तुमसे मिलही जाता है, फिर मैं क्यों अपना समय बरबाद किया करूं ?'

श्रीमती जीने मसकराते हुए कहा—'तो अब मैं कुछ न बतलाया करूंगी। मैं अपना समय बरबाद करूं और तुम कहानी लिखो। नहीं जी, अब मैं कुछ न बतलाया करूंगी।'

मन्नू चाय पीकर अपनी पुस्तक लेकर बचकानी कुरसी पर बैठ कर पढ़ने लगा था ! श्रीमतीजी अब पानके बीड़े तैयार कर रही थीं। तभी मैंने कहा—'अरे इतना मान न करो देवीजी!' और उनकी उत्सुकताको बढ़ाने तथा जो बात वह छिपानेकी कोशिश कर रही थीं, उसे सरलता पूर्वक मनोवैज्ञानिक युक्तिसे जान लेनेका प्रयत्न करते हुए मैंने कहा—'तुम्हें यह पता ही न होगा कि आज जो कहानी मैं लिख रहा हूं, वह इन्हीं वृद्ध सज्जन पर लिखी जा रही है।'

'बापरे बाप।' दांतोंसे जीभ काट कर श्रीमतीजीने कहा—'यह तुम क्या कर रहे हो ? बुढ़ऊको पता चल जाये तो,........।'

'तो कुछ नहीं !' मैंने कहा—कहानीमें उनका नाम ग्राम तो दूंगा नहीं। फिर दुनियांमें अनुरूपता भी तो कोई चीज है। सारी दुनियामें क्या यही एक बुढ़ऊ ऐसे हो सकते हैं, दूसरा कोई नहीं।'

'हां, जी !' श्रीमतीजीने शायद मेरी बात समझते हुए कहा—,तुम ठीक कह रहे हो।'

'तो बताओ न, आज बुढ़ऊ अपने घरसे अबतक बाहर क्यों नहीं आये ?'

'अजी, कल संध्या समय उसकी लड़की ससुरालसे भाग कर अचानक यहां आ गयी है। सुनते हैं, ससुरालवालोंने उसे इतना मारा पीटा है कि उसके शरीर पर अबतक नीले निशान हैं।

'मारपीटका कोई कारण भी तो रहा होगा। और मारनेवालोंमें ससुरालके सभी लोगोंको तुम क्यों घसीट रही हो ? उसके पतिने ही मारा होगा।

'अजी, यह बात नहीं है। इसीलिये तो मैं कहती हूं कि पास पड़ोसका तुम्हें कोई पता ही कब रहता। वह लड़की विधवा है। विवाहके एक वर्ष बादही बेचारी विधवा हो गयी थी। सुनते हैं, रिश्तेका कोई देवर है। उसीके साथ कुछ ऊंचनीच देख लिया ससुरालवालोंने। बस, एक विधवाके लिये यही क्या कम है। इसी पर उन लोगोंने उसे कस कर मारा पीटा और घरसे भी निकाल बाहर कर दिया। इस दुनियांमें उस बेचारीका ले-देकर यदि कोई सहारा है तो यही बूढ़ा बाप। सो यहीं चली आयी। कल संध्या समय जब वह यहां आयी, बुढ़ऊ घरमें नहीं थे। सभी पास पड़ोसकी स्त्रियोंने संवेदना व्यक्त की और सारी कहानी उससे पूछ ली।'

'तो रिश्तेके उस देवरसे अपने प्रणय सम्बन्धकी कहानी भी उसने स्वयं कह डाली क्या ?'

'तुम भी जाने कैसी बातें करते हो ? भला, कोई स्त्री यह बात भी कभी साफ साफ कहेगी ? लेकिन बातोंही बातोंमें उड़ती चिड़िया पहचान ली जाती है। उसने तो सिर्फ यही कहा था कि रिश्तेके एक देवर हैं। उनसे कभी एकाध बात करती हूं, तो यह प्रसाद मिलता है—कहर बरस पड़ता है।'

'समझा ! उसकी इसी बातको लेकर पड़ोसकी स्त्रियोंने यह समझ लिया कि देवरके साथ कुछ ऊंच नीच देख लिया गया होगा, तभी उसकी यह दुर्गति की गयी है।'

'इसमें अनुमानकी कोई बात नहीं है। श्रीमतीजीने कहा—'जरूर यही बात रही होगी।'

इसी बीचमें बाहरी दरवाजे पर किसीकी कपकपाहट सुनायी पड़ी। बैठकखानेमें जाकर मैंने बाहरी दरवाजा खोला, तो देखा कि वही बुढ़ऊ खड़े थे। मैं क्षण भरके लिये विस्मय-विमुग्ध रह गया। यह बात नहीं कि इन बुढ़ऊसे मेरा कोइ परिचय न रहा हो, लेकिन इतना अवश्य था कि इस मुहल्लेमें रहते हुए मुझे पूरा सवा वर्ष हो चुका था, परन्तु न तो मैं कभी इनके घर गया था और न बुढ़ऊ कभी मेरे घर आये थे।

सदा प्रसन्न रहने वाले इन वृद्ध सज्जन के मुख पर आज किसी चिन्ताकी गहरी और स्याह लकीरें स्पष्ट दीख रही थीं।

(३)

बैठकखानेमें एक कुरसी पर उन्हें बैठनेका सङ्केत करते हुए मैंने कहा—'कहिये, सब कुशल मङ्गल तो है ? मेरे योग्य कोई सेवा ?'

'कुशल मङ्गल तो क्या ?' वृद्ध सज्जन ने कहा—आप शायद जानते ही होंगे कि मैं तो इस दुनियामें एकदम अकेला हूं—उस सूखे वृक्षके ठूंठ जैसा, जिसकी हरित डालियां जरा जीर्ण होकर उसका साथ छोड़ चुकी हैं और वह ठूंठ मानो यह प्रतीक्षा कर रहा हो कि किसी दिन कोई राहगीर उसे भी काटकर ले जाये और चूल्हेमें झोंक कर उसकी भी समाप्ति कर दे।'

'यह आप क्या कह रहे हैं।' मैंने आश्चर्य मुद्रासे कहा 'दुनियामें बुढ़ापा किसे नहीं आता ? लेकिन अनुभव और मार्ग-दर्शनका जहां तक सम्बन्ध है, आप जैसे वृद्धोंकी इस दुनियाको पग-पग पर आवश्यकता पड़ती है।' और एक क्षण रुककर मैंने मन्नूको बुलाकर कहा कि पानके बीड़े ले आओ।

पानके बीड़े आ जाने पर मैंने वृद्ध सज्जनकी ओर पानकी तश्तरी बढ़ा दी। उन्होंने दो बीड़े लेकर चबा लिये। मैंने सिगरेटका डिब्बा भी उनके सामने रखते हुए कहा—'लीजिये, सिगरेट भी पीजिये। हुक्का तो आप पीते ही हैं।'

सिगरेट लेकर उन्होंने सुलगाया ही था कि पहले ही कशमें उन्हें जोरोंकी खांसी आ गयी। खांसी जब शान्त हुई तो कहा उन्होंने—'तम्बाकू पीनेकी आदत पड़ गयी है बाबूजी! और यह खांसी है कि इस तम्बाकूसे मानो चिपकती है। लेकिन आदमी तो आदतोंका गुलाम हो जाता है।'

'अजी, आदतोंकी कुछ न कहिये।' मैंने कहा—'अच्छा मेरे योग्य कोई सेवा हो, तो आप निःसङ्कोच होकर कह डालिये।'

'कल संध्या समय एक ऐसी घटना हो गयी है' वृद्धने शायद अब अपनी बात कहनी चाही—'जिसने मुझे परेशान कर रखा है। इस दुनियामें मेरी एक पुत्री है। वह भी विधवा है। मुश्किलसे उसकी अवस्था अभी सत्रह साल की है। दो साल हुए वह विधवा हो चुकी है। ससुराल वाले उसे फूटी आंखों नहीं देखना चाहते। वे समझते हैं, मेरी पुत्रीने ही उनके लड़केको खा लिया।'

'अन्धविश्वासके आधार पर हमारे समाजमें जो विचार-धाराएं चली आ रही हैं, वे समाजका बड़ा अहित कर रही हैं। इन अंधविश्वासोंको समूल नष्ट करनेकी आवश्यकता है। उस बहिनका इसमें दोष ही क्या है? ससुराल वाले अपनी संकीर्ण मनोवृत्तिका परिचय दे रहे हैं।'

वृद्ध सज्जनने मेरी बातमें सहानुभूति का पुट पाकर कहा—'यही नहीं बाबूजी! उस लड़की पर उन दुष्टोंके हाथ भी चलने लगे हैं। उस बेचारीको उन लोगोंने इतना मारा-पीटा है कि उसके शरीर पर अब तक नीले दाग हैं।'

मेरी श्रीमतीजी पहले ही यह सब मुझे बतला चुकी थीं, लेकिन मैं यह रहस्य अप्रकट ही रखना चाहता था। कहा मैंने—तब तो वे लोग मानव नहीं, पशु हैं। लेकिन इस मारपीटका कोई कारण?'

'कारण-वारण क्या, वही अंधविश्वास जो आप अभी कह चुके हैं। कोई लड़की विधवा हुई नहीं कि उसे फिर अपने किसी सम्बन्धीसे हंसने बोलनेका अधिकार भी मानो नहीं रह जाता। मेरी लड़कीका एक देवर है। उससे कभी हंस-बोलकर वह अपना दुख भुलानेकी कोशिश भी करती है, तो ये लोग उस पर जहर बरसा देते हैं।'

ओह समझा' मैंने कहा। मन ही मन श्रीमतीजीकी उस बातका मैं कायल हो उठा कि रिश्तेके किसी देवरके साथ ऊंच-नीच का। एक क्षणके बाद मैंने कहा—'यह तो मानव स्वभाव है। अवस्था के अनुसार ही मानव अपने मनोविकारों पर नियन्त्रण करना सीखता है। फिर

मी कहा जा सकता है। परन्तु मैं ठहरा बढ़ा। घरमें अकेला हूं। ऐसी दशामें उसे मैं उसकी ससुरालमें ही पुनः पहुंचाये आता हूं। वह जो भाग आयी है, इसके लिये मैं पिताकी हैसियतसे उन लोगोंसे क्षमा मांग लूंगा।'

'लेकिन जिन अत्याचारोंकी यंत्रणाओंसे मुक्ति पानेकी आशा लेकर वह आपके पास भाग आई है, उन्हीं यंत्रणाओंके बीच आप पुनः उसे ढकेल आयेंगे? मैं नहीं समझता, यह कहां तक उचित होगा?'

'उचित हो या अनुचित, लेकिन इसके अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं।

तिब्बतके दलाई लामाके भाई श्री तख्तुसर रिमपाचे पश्चिम बंगके गवर्नर राजाजी से मिल रहे हैं।

ससुराल वाले सबसे हंसें बोलें और वह बहिन चुपचाप आंसू बहाये, यह कैसे हो सकता है? अपनी सहेलियों या बराबरी वाली सखियोंको आमोद-प्रमोद मनाते देख, वह बहिन कैसे अपने आप पर नियंत्रण रख सकती है?'

'यह तो है ही।' वृद्ध सज्जनने कहा—'लेकिन किसी तरुण पुत्रीको—विशेषतः जब वह विधवा है और उसके ससुराल वाले भी मौजूद हैं, कैसे एक पिता अपने पास रखनेकी चेष्टा कर सकता है? तरुणाई पर नियंत्रण रख सकना ससुराल वालोंके लिये तो किसी हद तक संभव

फिर एक क्षण चुप रहकर बोले—'आपको इसी सम्बन्धमें एक कष्ट देने आया हूं। आज २५ तारीख है। मेरी पेन्शन मिलनेमें अभी १० दिन बाकी हैं, आप मुझे पांच रुपये दे सकें, तो बड़ी कृपा होगी। पेंशन मिलते ही पांच तारीखको मैं ये रुपये लौटा दूंगा। मैं उस लड़की को आज ही उसकी ससुराल भेज आना चाहता हूं।

'खेद, रुपये आप ले जाइये।' मैंने कहा और बैठकखानेसे उठकर भीतर श्रीमतीजीके पास जा पहुंचा उन्हें सारी कहानी सुनायी और पांच रुपयेका

एक नोट लाकर मैंने वृद्ध सज्जनको देते हुए कहा—'यह लीजिये।'

आभार प्रदर्शन करते हुए बुढ़ऊ चले गये।

(४)

संध्या समय दफ्तरसे लौटकर आ रहा था। सड़क पर चार पांच पड़ोसी खड़े-खड़े आपसमें कोई बात कर रहे थे। मुझे देखकर उनमेंसे एकने कहा—'जरा सुनिये बाबूजी!'

मैं आश्चर्यचकित हो उठा। ये पड़ोसी मुझे क्यों बुला रहे हैं? मैं तो कभी किसी गोष्ठीमें जाता नहीं—सदा दूर-दूर ही रहता हूं। फिर भी पड़ोसियों का ख्याल कर मुझे उनके पास जाना ही पड़ा।

तभी उनमेंसे एकने कहा—'बाबूजी आपने भी कुछ सुना या नहीं? ये सामने वाले बुढ़ऊ अपनी विधवा लड़कीको, जिसे ससुराल वालोंने मारपीटकर निकाल दिया था, पुनः उन्हीं कसाइयोंके बीच छोड़ने चले गये हैं।

'समाजके ऐसे ही अंधोंके कारण अनेक हिंदू बहिनें हमारे समाजको नमस्कार कर दूसरे समाजोंमें चली जाती हैं—लेकिन पतिता और लांछिता होनेके बाद। और, ऐसे ही अत्याचारोंसे परेशान होकर ये पतिता और लांछिता हो जाती हैं। फिर जिन्हें हम ठुकरा देते हैं, वही दूसरे समाजमें देवीकी तरह पूजी जाती हैं। मुसलमानों और ईसाइयों में ऐसी अनेक बहिनें मिलेंगी, जो हमारे हिंदू समाजके अत्याचारोंकी निशानी हैं। ऐसी बहनोंको कुलटा और भ्रष्टा बनानेमें ऐसे ही लोग सहायक होते हैं, जो उन्हें नियंत्रणोंमें ही सदा रखना चाहते हैं। आज ये बुढ़ऊ भले ही इन बातों पर विचार न करें, लेकिन भविष्यमें यदि उस लड़कीका भी ऐसा ही हाल हुआ, तो इन्हें अपनी भूलका पता लग जायगा, एक अधेड़ सज्जन ने अपना यह भाषण सुना डाला।

मुझे यह सुनकर मन ही मन ग्लानि होने लगी। तो क्या, मैं भी आज ऐसे ही पतनके मार्ग पर जाने वाली किसी बहनको कुलटा बनानेके किसी गर्हित प्रयत्नमें परोक्ष रूपसे सहायक बन गया हूं।

अपनी अस्त-व्यस्त की मनो दशा के बीच इन पड़ोसियोंसे अपना पिण्ड छुड़ाते हुए मैंने कहा—'आप ठीक कह रहे हैं। लेकिन जिसकी लड़की है, वही इन बातों पर जब विचार करना नहीं चाहता, तब हम और आप कर ही क्या सकते हैं? आज सवेरे बुढ़ऊ मेरे पास आये थे मैंने भी उन्हें समझाया था यही सब। लेकिन वह किसीकी सुने तब न? और मैं अपने घर चला आया।

घर आकर मैं बराबर इसी विडम्बना से अभिभूत रह आया। न तो उस दिन भोजन ही बराबर कर सका, न नींद ही ले सका। रात भर करवटें बदलता रहा और पांच रुपये देकर बुढ़ऊकी सहायता बनाम किसी बहिनको कुलटा बनानेमें योग देनेकी अपनी मनोवृत्ति पर मैं अभिभूत रहा आया।

चाय की कहानी

(१४ वें पृष्ठ का शेषांश)

को निर्यात करनेके लिये या उसको मिलाने तथा पैकिङ्ग कर दूसरे देशमें जहांसे 'आर्डर' पहलेसे ही आ गया हो निर्यातके लिये या फिर विक्रयके लिये मोल ली जाती है। जावा और सुमात्रामें नीलामसे बिक्री नहीं होती है यहां की उपजका आधेसे अधिक मात्रा बटाविया और मीदानके व्यापारियोंके हाथ बेच दिया जाता है। इनके द्वारा यह विदेश के बाजारोंमें निर्यातकी जाती है जिनमें आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका मुख्य है। पर संसारका सबसे बड़ाबाजार लंदन है जहां के भावोंका उतार चढ़ावका प्रभाव जल्दी से या देरसे संसारके बाजारों पर पड़ता है। अन्य देशोंसे निर्यातकी हुई चाय का अधिकांश भाग यहां आता है। लन्दन के नीलामोंमें खरीदने वालोंमें मिश्रितका पैकिङ्ग करनेके लिये संघटित दलों या प्रतिष्ठानोंका महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रत्येकके अपनी खास ब्राण्ड होती है। जिसकी बिक्री केवल इंगलैण्डमें ही नहीं वरन् संसारके अनेक भागोंमें होती है उनके नाम जनताके जो चायसे सम्बन्ध रखते हैं, मस्तिष्कमें घर कर गये हैं।

लंदनकी जहाजी कान्फ्रेंस

लेखक—प्रो० जे० सी० कुमारप्पा

पिछली १६ वीं जुलाईको हिन्दुस्तानके जहाजी प्रतिनिधि मंडल के और ब्रिटिश जहाजी प्रतिनिधि मण्डल-के सदस्य लन्दनमें मिले। हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मंडलमें भारत सरकार द्वारा नामजद किये हुए अलग अलग जहाजों-के मालिक और जहाजी कम्पनियोंके प्रतिनिधि थे और ब्रिटिश प्रतिनिधियोंको इंगलैंडके राजाकी सरकारने नामजद किया था। इस कानफरेन्समें कुल तीन घंटे चर्चा हुई। सच पूछा जाय, तो उसमें कोई चर्चाही नहीं हुई। प्रमाण पत्रों और हवालेकी शर्तोंके पेश होनेके साथही कानफरेन्स भङ्ग हो गयी। इसके सिवा और हो ही क्या सकता था।

दोनों प्रतिनिधि-मंडल शुरूसे ही गलत ढंगसे बनाये हुए जान पड़ते थे। जहाजी उद्योग एक राष्ट्रीय सवाल है और उसे उन्हीं लोगोंको हल करना चाहिये, जो देशकी आर्थिक नीतिकी नुमाइन्दगी करते हैं। यातायात, जिसमें दरियाई तिजारत भी शामिल है, एक ऐसा साधन है, जिससे हम अपने आर्थिक और सामाजिक उसूलोंको दुनिया पर जाहिर कर सकते हैं। इसलिये जिन चर्चाओंमें दरियाई तिजारतके सवालके इस पहलू पर ध्यान नहीं दिया जाता, उनसे देशको कोई फायदा नहीं हो सकता। इस कान-फरेन्सके दोनों पक्षोंके प्रतिनिधियोंको जिसने भी चुना हो, उसने सवालके इस पहलूका कोई खयाल नहीं रखा। हिन्दु-स्तान और इंगलैंडके प्रतिनिधि जहाजों के मालिकोंमें से चुने गये थे, जो राष्ट्रीय माली व्यवस्थाकी आड़में अपने निजी व्यापारी हितोंको आगे बढ़ानेके लिये उत्सुक रहते है।

हर एक मंडलका सदस्यने दूसरे मंडल के सदस्योंको, व्यापारके क्षेत्रमें अपने विपक्षीके रूपमें देखा। हम सभी जानते हैं कि जहाजी उद्योगमें इसका क्या मतलब होता है। सिर्फ अलग अलग देशोंके जहाजी उद्योगमें ही नहीं, बल्कि हमारे अपने देशके जहाजी व्यापारियोंमें एक दूसरेका गला काटनेकी होड़ होना आजकी मामूली बात हो गयी है।

दुनियामें जहाजी उद्योगमें सबसे बढ़े चढ़े देशोंसे तीन देश-जर्मनी, जापान और इटली आज लड़ाईमें हार कर चुप-चाप बैठ गये हैं। इसलिये अब हमारे सामने चर्चाके लिये सिर्फ ब्रिटिश और अमेरिकन हित ही रह जाते हैं। इनमेंसे जहां तक हिन्दुस्तानका ताल्लुक है, उसके जहाजी उद्योग पर ब्रिटेनका एकाधिकार है। ऐसी हालतमें क्या कोई भी समझ-दार आदमी यह उम्मीद कर सकता है कि जो लोग जहाजी व्यापार पर अपना एकाधिकार जमाये बैठे हैं, वे हौसले वाले मगर कमजोर विपक्षियोंके फायदेके लिये अपना व्यापार छोड़ देंगे? इस कानफ-रेन्सके सभापति और अंग्रेज प्रतिनि-धियोंके नेता सर विलियम क्यूरीने तो यहां तक कह दिया कि हम हिन्दुस्तानी प्रतिनिधियोंके दावोंकी बातें सुननेमें अपना वक्त नहीं गंवाना चाहते।

अगर हम हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि मंडलकी बनावटको देखें तो हमें पता चलेगा कि उसमें सब वे ही लोग थे जिनका जहाजी उद्योगमें स्वार्थ है और जिन्होंने अभीतक किसी बहाने यही उद्योग चलानेवाले अपने देशवासियोंको दबा रखा है। उनमें कुछ 'कानफरेन्स लाइन्स"के प्रतिनिधि थे। इसका मत-लब है, हजारों और जहाजी संघोंका आपसमें तय की हुई शर्तों पर मिल कर काम करना। इसमें वे अभागे व्यापारी शामिल नहीं किये जाते जो न तो इतने ताकतवर हैं कि कानफरेन्स लाइन्समें भर्ती हो सकें और न जहाजोंके मालिक हैं।

छोटे व्यापारियोंको शामिल किया जाये

बहुतसे जहाजी व्यापारी तो अपना व्यापार निजी जहाजों द्वारा न चला कर अधिकार पर पाये हुए (चार्टर्ड) स्टीमरों द्वारा चलाते हैं। राष्ट्रीय जहाजी उद्योगके बारेमें कोई फैसला करनेके काममें, इस उद्योगमें लगा हुआ छोटेसे छोटा व्यापारी भी शामिल किया जाना चाहिये। हिन्द सरकार द्वारा नामजद किया हुआ प्रतिनिधि मंडल, हिन्दुस्तान-के जहाजी उद्योगमें लगे हुए सभी लोगों-का प्रतिनिधित्व नहीं करता। यह कहा जा सकता है कि वह हिन्दुस्तानके जहाजी उद्योगके उस ताकतवर पक्षका प्रतिनि-धित्व करता है, जो अपने ही विपक्षी देशवासीको गिरानेके लिये बुरे-से बुरे तरीके काममें लाता रहा है।

वहां अपीलके लिये इसके सिवा और कोई आधार नहीं था कि एक व्यापारी संघ दूसरे व्यापारी संघसे कहता कि वह अपने व्यापारका कुछ हिस्सा, कहने वालेके पक्षमें छोड़ दे। इसे मुश्किलसे 'अपील' कहा जा सकता है। हर एक इन्सानमें स्वार्थके साथ परोपकारकी भावना भी रहती है। हमारी अहम चर्चाओंमें हमें सामनेवाले आदमीकी आदर्श भावनाको छूना चाहिये।

तो हम मान सकते हैं कि सर विलि-यम क्यूरी और उनके अंग्रेज साथियोंके स्वभावका भी एक आदर्शवादी पहलू होगा और अगर ठीक तरीकेसे काम किया जाय तो उनके स्वभावके इस पहलूका उप-योग किया जा सकता है। जो लोग यह काम करें उनका इस उद्योगमें कोई निजी स्वार्थ नहीं रहना चाहिये। बदकिस्मतीसे जो पिछली कोशिश की गयी, वह पूरी तरहसे व्यापार दृष्टिसे की गयी थी जैसा कि क्लैम लाइनके लार्ड रादरविकने कहा था "ऐसा लगता है, मानो सारा 'देना' अंग्रेजोंको है और सारा 'लेना' हिन्दु-स्तानियोंको।" बेसक जिस तरह चर्चाएं हुई थीं, उसे देखते हुए यह वाक्य परिस्थितिका बिलकुल सही सारांश है। इस आधार पर ब्रिटिश जहाजोंके मालिक अपने स्वार्थोंके प्रति स्वभावतः सावधान थे और इसी आधार पर हिन्द चीन लाइनके मि० केसविकने, एक दूसरेका गला काटने वाली होड़को रोकनेके लिये ऐसे

सुझाव पेश किये, जिन्हें वे अच्छेसे अच्छे समझते थे।

जहाजी उद्योगको करनेकी आजादी मिले

ऐसी हालतमें, अगर हिन्दुस्तानी जहाजी उद्योगको देशकी आर्थिक जरूरतों के मुताबिक चलना है, तो इस सवाल पर बिलकुल भिन्न दृष्टिकोणसे विचार करना जरूरी होगा। जो कान्फरेन्स इस पर विचार करे, उसमें किसी भी पक्षका ऐसा कोई व्यक्ति न रहे जिसका इस उद्योगमें कोई स्वार्थ हो। इसके बाद जहाजी उद्योग के बारेमें जो बातचीत हो, वह इस उसूलके आधार पर हो कि हर आजाद देशको अपने जहाजी उद्योग पर नियन्त्रण रख कर अपने विदेशी व्यापार पर काबू रखना चाहिये। इसके लिये आजाद हिन्दुस्तान को हिन्द-सरकारकी देखरेखमें स्टीमरोंकी मददसे अपना विदेशी व्यापार चलाना पड़ेगा। अपने निजी फायदेके लिये काम करनेवाले एकाधिकार और जहाजी संघ खत्म कर दिये जाने चाहिये।

ब्रिटिश प्रतिनिधियोंने यह इच्छा जाहिर की थी कि हिन्दुस्तानके जहाजी प्रतिनिधि-मण्डलके हर सदस्यको ब्रिटिश कम्पनियोंसे अलग अलग अपनी बात करनी चाहिये। लेकिन यह गलत कदम होता। इसे सवालका 'अमली' हल कहा गया था, लेकिन हमें डर है कि यह हिन्दुस्तानके जहाजी उद्योगका गला घोंटने और उसे ब्रिटिश कण्ट्रोलके मातहत मानोपाली या इजारेका रूप देनेका बहाना था। हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डलके सेठ बालचन्द हीराचंदकी यह प्रशंसाकी बात है कि उन्होंने इस प्रलोभनतका प्रतिरोध किया और हिन्दुस्तानी मेम्बरोंको बिखरने न दिया। हिन्दुस्तानके जहाजी प्रतिनिधि मण्डलके एक एक मेम्बरसे बात करके मण्डल को तोड़नेकी कोशिश करनेका मतलब था ब्रिटेनकी 'बांटो और राज करो' की सियासी नीतिको आर्थिक क्षेत्रमें भी लागू करना।

यह दलील देना ठीक नहीं कि ब्रिटिश जहाजी उद्योग एक खानगी उद्योग है और वह खानगी कोशिशोंसे ही धीरे धीरे फला फूला है। सारी दुनियांमें जहाजी उद्योग पर हमेशा राजकी निगरानी रही है। खुद इंग्लैंडमें ब्रिटिश माल-महकमेने क्यूनार्ड और ह्वाइट स्टार लाइन नामकी कम्पनियोंको जहाज बनानेके लिये समय समय पर लाखों पौंडकी मदद दी है। 'ट्रेड फसिलीटीज एक्ट' के मातहत सरकारने २ करोड़ ३० लाख पौंडसे भी ज्यादाकी रकम जहाजी कम्पनियोंको उधार दी है। जर्मनीमें सरकार हमेशा जहाजी कम्पनियों को पैसेकी मदद करती रही है। इसी तरह इटली और जापानने भी अपनी सरकारोंकी आर्थिक मददसे जहाजी उद्योगको बढ़ाया है। अमेरिकामें १९२७ के 'जौन्स वाइट एक्ट' के मातहत खानगी जहाज मालिकोंको अमेरिकन विदेशी व्यापार बढ़ानेके लिये हरसाल २ करोड़ १० लाख डालर दिये जाते थे।

इन बातोंको देखते हुए यह जान कर हमें ताज्जुब होता है कि जब हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डलसे ब्रिटिश प्रतिनिधिने बातचीत बन्द कर दी, तब भी हिन्द-सरकारने बातचीत चलानेमें मदद करने की जरूरत महसूस न की। शायद इसका कारण यह रहा हो कि उस समयकी हिन्द सरकार ब्रिटिश वातावरणमें काम कर रही थी, जो हिन्दुस्तानी कामकाजमें आधे मनसे मदद करता था।

सरकारकी निश्चित नीति हो

अब चूंकि हिन्दुस्तानने किसी तरहका आजाद दरजा पा लिया है, हमारा विश्वास है कि सरकार अपनी बड़ी जिम्मेदारियों को समझेगी और दूसरे समुद्र किनारेके देशोंकी मिसाल पर चल कर देशके लायक व्यापारी जहाजी बेड़ा खड़ा करनेमें मदद करेगी। शुरू शुरूमें इस उद्योगकी नींव जमे हुए हितोंवाले लोगोंको डालने देना खतरनाक होगा। जहाजी उद्योगके बारेमें सरकारकी कोई साफ और निश्चित नीति होनी चाहिये। और उसे जहाजी उद्योग पर कण्ट्रोल करके राष्ट्रकी माली व्यवस्था को बढ़ानेमें इस उद्योगको नियमित रूपसे पहल स्थान देना चाहिये। हमें यह देख कर दुःख होता है कि आजकी हिन्दी सरकारने राष्ट्रकी माली व्यवस्थाके इस पहलू पर कोई विचार नहीं किया है। वह जहाजी व्यापारके बारेमें सारी बातें खानगी लोगोंकी मर्जी पर छोड़ देनेका रुख रखती है।

आज तो ब्रिटिश रजिस्टरमें जितने जहाज दर्ज हैं उनमेंसे हिन्दुस्तानके जहाज मालिकोंके चाहने पर भी जरूरी हिस्सा नहीं मिल सकता, क्योंकि उनके दूसरी जगह भेजे जाने पर रोक लगा दी गयी है। अमेरिका भी अपने जहाज हिन्दुस्तानको नहीं देना चाहता। आज ब्रिटेन और अमेरिका सारी दुनियाके जहाजी व्यापार पर कब्जा करनेकी होड़ में लगे हैं, क्योंकि जर्मनी, जापान और इटलीके मुकाबला करने वाले लोग कुछ समयके लिये उनके साथ होड़में नहीं उतर सकते। इसलिये हिन्दुस्तानी जहाजी कम्पनियोंके मालिकोंके सामने एक यही रास्ता खुला है कि वे मिल सकने वाले साधनोंसे उत्तरी-पश्चिमी यूरोपसे जहाज हासिल करें। बाल्टिक प्रदेशके ये जहाज आम तौर पर मोटरकी ताकतसे चलाये जाते हैं। लेकिन हिन्दुस्तानमें इस लाइन के अनुभव वाले इंजीनियर नहीं मिलते इसलिये हमारी जहाजी कम्पनियोंके सामने यह बड़ी भारी रुकावट है। हिन्दुस्तान हमारे राजदूतों और ट्रेड कमिश्नरोंको बहुत बड़े सरकारी खर्चसे विदेशोंको भेजता रहा है। यह काम तभी ठीक कहा जा सकता है जब विदेशों में रहने वाले हमारे ये प्रतिनिधि लोग अपने इस अच्छे ओहदेका उपयोग हिन्दुस्तानकी जरूरतें पूरी करनेमें और उन-उन देशोंकी सरकारों पर हिन्दुस्तानकी मददके लिये ऐसा असर डालनेमें करे कि वे बेचकर या पट्टे पर जरूरी जहाज हिन्दुस्तानको दें।

जहाज बनाना महत्वपूर्ण धंधा

यहां इस बातका जिक्र कर देना ठीक होगा कि हम कई बार यह सुझा चुके हैं

(शेष २८ वें पृष्ठ पर)

नारीका ध्वंस

लेखक—श्री विजयकुमार मुंशी बी०ए०,एल-एल बी० साहित्यरत्न

कामेश विचारमग्न कुर्सी पर बैठा था। सामने डूबते सूरजकी अन्तिम झिलमिल किरणें, मकानकी मुंडेर को चूम रही थीं। दूर तक सुनसान था। गांवमें उसकी ईमारत सबसे बड़ी और सबसे आकर्षक है। कामेशकी पक्की हवेली है। वह इस गांवका जमीन्दार है। वैसे सारे गांवमें कच्चे मकानही अधिक हैं। कामेश मनमें अलस-से फैले विचारोंमें आत्म विस्मृत-सा, अब गायोंके पैरोंसे उड़ती धूलको देखने लगा। सूरजके झिलमिल प्रकाशमें, ढ़ालसे, कतारमें उतरते गायोंके झुण्ड छाया चित्र-से प्रतीत हो रहे थे। कामेश यों विचारोंमें खोया था कि फिर सरिता उसके सम्मुख आ खड़ी हुई।

'क्या सोच रहे हैं ?'

'कुछ नहीं सरिता। जितनाही मन बहलानेका प्रयत्न करता हूं उतनाही उदासीकी गहरायीमें उतर जाता हूं। एक शून्यता मेरे आसपास छाकर मुझे घेर लेती है। मेरा मन एक अनन्त उदासीमें डूब जाता है। सोचता हूं मैंने जीवनमें कोई महान पाप किया था जिसका प्रायश्चित भोग रहा हूं। सरिता तुम कब तक इस प्रकार खड़ी रहोगी ? बैठो जाओ न ?

सरिता कोच पर बैठ गयी वह एक टक व्यथित अपने जीजाको देख रही थी जो पत्नी-वियोगसे व्यथित होकर जीवनकी शांतिको खो चुका था। सरिता उठ कर अन्दर गयी और नाश्ता और चाय लाकर उसने टेबिल पर रखते कहा, 'नाश्ता कीजिये।'

मूर्तिवत कामेश अपने स्थानसे उठा और नाश्तेके सामने आकर बैठ गया और मिठाईका एक एक टुकड़ा खाने लगा। चायके प्यालेको उठाते वह बोला. 'तुम्हें यह गांव अच्छा लगता है ?'

'अपने जीजाका गांव किसीको बुरा लगता है ?

'यदि यह मेरा गांव न होता तो इससे [illegible] न होता ?'

'मैं ऐसा सोचनाही नहीं चाहती।' तुम्हें यही सोचना चाहिये। यही सोचना तुम्हें आवश्यक है। अब इस जमीन्दारीसे मैं इतना ऊब चुका हूं कि इस गांवको अब समाप्त कर देना चाहता हूं। सम्भवतः यह गांव मेरा न रहे, सम्भवतः मैं भी अपना न रहूं और सम्भवतः तुम भी ब्याह होनेके पश्चात इस प्रकार न रहो। जीवनमें सामाजिक बन्धनका विधान भी एक अभिशाप है।'

सरिताकी आंखोंमें जल भर आया। अपने ब्याहकी बात सुनकर वह विशेष आसक्त न दिखाई दी। जैसे अपने जीवनका रस उसे अपने जीजाकी जिंदगीके सम्मुख सूखता-सा प्रतीत होता है।

'जीजा ! जीवनमें इस प्रकार आप कब तक रहेंगे ? ब्याह कर लीजिये !'

'ब्याह ? वह ठहाका मार कर हंस पड़ा। यह भी जीवनका कैसा प्रिय-विरोध तुम कह रही हो सरिता ! अब ब्याह जीवनका प्रिय विरोध ही है ! मेरे जीवनका समस्त स्नेह तो तुम्हारी जीजीने ले लिया और चली गई ! अब रहा ही क्या है जिसको सम्भाल कर रखा जाय या किसीको दिया जाय ? तुम्हें देख कर एक संतोष मुझे मिलता है। सोचता हूं तुमने मेरे दर्दको समझ कर इस दीपावली पर पचास कोसका कच्चा रास्ता तय करके जो यहां आनेका कष्ट किया है यह क्या तुम्हारा चित्र मेरे सम्मुख अंकित नहीं करता ? भावनामें ही हृदयका रस व्याप्त होता है। ताज भावना का ही तो सजग, जागृत गीत है ? वह फिर रङ्ग बदलते आकाशको देखने लगा। सरिता उसके खाली प्यालेमें चाय ढालने लगी। हलका अंधियारा गांवके शरीर पर अपनी चादर फैला रहा था। क्षितिज पर जो दो क्षण पहले स्वर्णिम आभा थी वह डूब चुकी थी और हलकीं रङ्गीन रेखाएं फैल गयी थीं।

* * *

'तुम जा रही हो सरिता, तुम्हें जाना ही चाहिये। दीपावली समाप्त हो चुकी है। पिताजीकी चिट्ठी भी आयी है। दो मास बाद सम्भवतः तुम्हारा ब्याह हो जायगा। सम्भवतः मैं तुम्हारे ब्याहमें न आ सकूं। यह हीरेकी अंगूठी ले जाओ। यह मेरा उपहार है। तुमने मेरे एकाकी जीवनको प्यारका आकर्षण दिया है। तुम्हारी उपस्थितिसे मेरे हृदयको शांति मिली है। ईश्वर तुम्हें सुखी रखें—और कामेशने वह अंगूठी उसकी अंगुलीमें पहिना दी सरिताकी दृष्टि नीची थी। वह अपने अंतरसे प्रश्न पूछ रही थी कि वह किधर बही जा रही है ? क्या यह उसके लिये उचित है ? जीजाने जैसे अपने हृदयका समस्त धन उसके सम्मुख उड़ेल कर उसे जीवनमें एक आकर्षण दे दिया है और यह हीरेकी अंगूठी क्या है? क्या निश्छल-प्यार जीवनका अभिशाप नहीं ? क्या इस निश्छलताकी पावनता पर शरीर निरंतर जला नहीं करता ? क्या जीवन की मान्यताओं पर जीवनका यथार्थ ठोकर खाकर चूर-चूर नहीं हो जाता ? अपनेको संयत कर सरिताने हीरेके दमकते नगमें झांक कर कहा, 'जीजा यह हीरा है ?'

'नहीं सरिता, यह हीरा नहीं, पत्थर है।'

'पत्थर।'

'कठोर और निर्मम पत्थर है सरिता ! इसके सिवा मेरे पास रह ही क्या गया है जो मैं तुमको दूं ?'

'इस अंगूठीको मैं यदि चूर-चूर कर दूं तो आपको दुख होगा ?'

'सरिता ? यह क्या कहती हो ? तुम इस पत्थरको भी चूर-चूर करना चाहती हो ? उफ् ! इतनी निर्ममता ही क्या मेरे लिये और आवश्यक है ?'

वह रो पड़ी। बाहर गाड़ी खड़ी थी। वह बिदा हो गयी। कामेशको दुख हुआ। सरिता अपने हृदयमें एक स्पदंनका अनुभव कर रही थी। जैसे रेगिस्तानमें एक हरा भरा वृक्ष, कहींसे लहलहाकर शुष्कता में विरोध बन कर खड़ा था !

* * *

बारह बज चुके हैं किन्तु यह कामेश

है कि सरिताको ही सोच रहा है।। अपने विगत जीवनकी अकथनीय घटनाएं, आज उसके मानस पथ पर उतरती जा रही हैं। सरिताने उसके हृदय-दीपको शक्ति दी है। हे भगवान? उसने हीरेकी अगूंठी उसे क्यों दी? अगूंठी बंधन है। बंधन कहीं कुवांरी लड़कीको भेंट किया जाता है? क्या वह बंधनकी महिमा और गरिमा को समझ चुकी है? उफ्! जीवन भी एक खिंचा केनवासका टुकड़ा है जिस पर न जाने कितने चित्र बनते हैं, बिगड़ते हैं और फिर बन जाते हैं?

कामेशके एकाकी जीवन पर सरिताने प्रकाश-दीप जला दिया है। जैसे उसके जीवनके कोरे पृष्ठ पर उसने एक रेखा बना दी है। वह रेखा जैसे उसे बार-बार चुनौती देकर कहती है कि क्या तुम मेरे रहस्यको समझे? मुझमें सत्यता और जीवनका सीधापन है। मुझसे ही जीवनके रेखा गणितका निर्माण होता है। मैं तो सीधी सादी सरलता हूं। मुझे समझलो कोई मुझे सहायता और शक्ति प्रदान करे तो मेरा यह रूप आकर्षक और रसमय बन सकता है। उफ्! वह यह सब क्या सोच रहा है।? क्या उसे यह सब सोचने का अधिकार है? वह एक पत्रिका उठा कर पढ़नेका उपक्रम करने लगा। वह मुख-पृष्ठके चित्रमें डूब गया। एक नवयौवना भय और आतंकसे हिचकिचाती, रिक्त गागर लिये, नदीके पानीमें उतर रही थी। उसके नयनोंमें भय और कुतूहल खेल रहे थे। उफ्! जीवनका यह कैसा विद्रूप है? जीवनकी कैसी छलना है?

× + *

सरिताका ब्याह हो गया। कामेश नहीं जा सका था ब्याहमें। ब्याहके पश्चात् उसे एक पत्र मिला था :

जीजाजी,

प्रणाम। आपने चाहा कि मैं अपने जीवनकी बाजी परम्पराकी वेदी पर लगा दूं। वही मैंने कर लिया है। आप अवश्य समझ चुके होंगे। आप यह भी जानते होंगे कि नारीका प्रेम जीवनमें केवल एक बार ही दान बनता है। 'वे' एक सर्कस खोल रहे हैं। मैं उसीमें प्रमुख नटी का काम करूंगी। दुनिया मेरे स्वस्थ, सुन्दर शरीरको देख कर आलोचना प्रत्यालोचना करेगी, कुछ मुझे बेशर्म और-बेहया कह कर भी मेरे पैरोंके चूमनेके लिए उतावले हो जायंगे, हजारों कामुक धनपतियोंकी कोठियोंसे मुझे आमन्त्रण आयेंगे किन्तु क्या वे यह न सोचेंगे कि वे नारीके ध्वंस को प्यार कर रहे हैं भग्न जीवनके भग्न तारोंसे सरीली तानें निकालनेका प्रयास कर रहे हैं? 'हीरेकी अगूंठी पत्थर की है' किसी दिन आपने ही तो कहा था! पत्थरके पत्थर बनकर वापस कर रही हूं!

* * *

कामेश जीवनकी वीभत्सता और समाजकी परम्परा पर रो पड़ा! सामने जुलाहा कम्बल बुन रहा था! उसने दूसरी सिगरेट जला ली और मुंह भर कर धुआं छोड़ने लगा!

—o—

यह गाड़ीवान, वह वायुयान!

श्री विजयकुमार मुन्शी साहित्य, रत्न बी० ए०, एलएल० बी०

बहता समीर
वह था प्रभात,
ऊपर नभ में-
उड़ता देखो वायुयान!
यथार्थ-भूमि-पथ पर
भाग्य-चक्र कन्ध पर
गड़ड़ गड़ड़ गड़ड़,
चलती परम्परा अमर!

यह गाड़ी वाला, वह वायु चालक
यह धरती वाला; वह नभ ग्राहक
यह गाड़ीवान, शोषण प्रतीक
वह वायुयान, धन का प्रगीत
गाड़ी : भारत की भाग्य रेख,
गाड़ी : भारत की रूढ़ि रेख,
गाड़ी : चलता किसान का सपना है।
गाड़ी : क्रमशः आगे बढ़ना है।

वायुयान : विज्ञान दान,
वायुयान : बुद्धि खान,
वायुयान : स्वप्न की लहर,
वायुयान : पूंजी का कहर।
यान : स्वप्न कल्पना का पंछी,
गाड़ी : यथार्थ का सीधा पथ है,
यान : विनाश का महा दान
गाड़ी : शोषण का सीधा अथ है!

ये गाड़ी के दो चक्र चले
ये शोषण के दो चक्र चले
ये प्यासे मानव प्राण चले
ये हारे जीवन भार चले!
चर चर चर चर
गाड़ी कहती 'रे मानव
भूल नहीं तू माटी—पुतला
जीवन से न तुझे थकना है!

वायुयान! रे वायुयान!
तू बन जा चाहे श्यामल बादल,
चाहे बन जा तू मुक्त विहग
याद रख आना तुझको धरती पर,

लो वायुयान तो चला गया
गाड़ी भी हो रही दृष्टि पार
धूसर पथ है, धूसर मन है,
औ' सम्मुख जीवन रण है

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, श्री महादेवी और राय श्रीकृष्णदासने साहित्यकार संसदकी योजना पर निम्न अपीलमें प्रकाश डाला है। हमें आशा है कि इस पुनीत प्रयासमें प्रत्येक हिन्दी भाषीका सहयोग इन साहित्य महारथियोंको प्राप्त होगा। विश्वमित्र संचालक श्री मूलचन्द्र अग्रवालने इस योजनाको सफल बनानेके लिये ११०१) प्रदान किये हैं। आशा है कि अन्य धनोमानी सज्जन भी इसका अनुकरण करेंगे। सं० वि०

गत कई दशकोंमें हिन्दी साहित्यका जिस अनुपातसे विकास हुआ है उसी उसी अनुपातसे साहित्यकारके जीवनका क्षय होता आ रहा है। परतन्त्र तथा विदेशी भाषासे आक्रान्त देशमें साहित्य-सृजन संघर्षसाध्य ही होता है, उस पर युगकी शोषक प्रवृत्तियों और विविध विषमताओंने साहित्य साधना तथा अनाहार रोग मृत्युके बीच कार्य कारण का अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। अधिकांश प्रतिभावन साहित्यकारों को जीवनकी साधारण सुविधाओं से स्वयं वंचित रहकर तथा अपने आश्रित स्वजनोंको वंचित रख कर ही अपनी अनन्य सहित्य साधनाका मूल्य चुकाना पड़ा है। प्रायः असमय ही उनकी जीवन यात्राके साथ साहित्य यात्रा भी समाप्त हो गयी है।

भाषाकी दृष्टिसे हिन्दीके महत्वके साथ उनकी कृतियोंका महत्व बढ़ा अवश्य किन्तु उसने युगकी व्यवसाय बुद्धिको इतना आकर्षित किया कि न्याय-बुद्धिके प्रवेशके लिये सब द्वार रुद्ध हो गये। परिणामतः आज पुस्तक प्रकाशनकी चकचौंधमें इस आलोकको बनाये रखनेके लिये तिल तिल घुलकर क्षार होने वाले लेखकोंकी ओर किसीकी दृष्टि नहीं जाती। साहित्यका मूल्यांकन करने वाले आलोचकोंने भी उनके भौतिक जीवनका मूल्य आंकनेकी आवश्यकता नहीं समझीं। आज तो स्थिति इस सीमा तक पहुंच गयी है कि यदि कोई विशिष्ट साहित्यकार बिना भोजन, बिना आच्छादन और बिना टना ही नहीं मानेंगे। हमें अपने ऊपर ग्लानि न होकर साहित्यकारकी उस मन्द-बुद्धि पर दया आवेगी जिसके कारण वह युगकी विषमता के साथ अपने आदर्शोंका सौदा करके सुखके साधन नहीं जुट सका।

ऐसी अस्वस्थ मानसिक स्थिति उस देशके लिये सामूहिक रूपसे हानिकारक है जो सद्यः स्वतन्त्र होकर नव निर्माणके स्वप्न देख रहा हो। लौकिक दृष्टिसे साहित्यकार विशेष सतर्क प्राणी नहीं होता; किन्तु यह स्वभाव उसे साहित्यके जीवनव्यापी कल्याणोन्मुख लक्ष्य से मिलता है। प्रत्येक विकासशील राष्ट्र अपने साहित्यकार, कलाकार आदि स्वप्न-द्रष्टाओं के हितोंका सजग प्रहरी रहकर ही नव निर्माणका अनुष्ठान आरम्भ कर सकता है, क्योंकि इनकी कृतियां ही युग विशेष की मानव समष्टिके मानसिक, बौद्धिक आदि विकासोंकी सीमायें हैं।

हमारा देश आज स्वतन्त्र हैं किन्तु हमारी स्थिति अबतक उस व्यक्ति जैसी है जो दीर्घ काल तक अन्धकारमें रह कर बाहर आनेके कारण प्रकाशकी चकाचौंधमें सब वस्तुयें ठीक ठीक न देख पाता हो। अपनी स्वाभाविक स्थिति प्राप्त करनेमें अभी हमें समय लगेगा।

हमारी साहित्यिक संस्थायें अभीतक विदेशी भाषाके संघर्षके कारण साहित्यके निर्माणसे अधिक महत्व उसके प्रचारको देती रही हैं। वे अपने गन्तव्य और पथ की इतनी अभ्यस्त हो चुकी हैं कि यह अभ्यास उनका स्वभाव बन गया है। ऐसी स्थितिमें वे साहित्यिकोंकी विषम स्थिति-में परिवर्तन ला सकनेमें असमर्थ हैं और अनिश्चित काल तक रहेंगी।

ऐसी स्थितिमें एक ऐसा साहित्यिक संघ आवश्यक हो उठा है जो एक साहित्यकारको दूसरेके सुख दुखसे परिचित करा सके, पारस्परिक सहयोग और सह यताको सुलभ कर सके और उन्हें अपनी समस्याओंके सम्बन्धमें विचार विनिमयके लिये एक मंच दे सके।

इसी अभावकी पूर्तिके लिये हिन्दीके साहित्यकारोंने व्यक्तिगत विभिन्नताको की नींव रखी है। व्यक्तिगत आस्था, जीवन-दर्शन आदि की दृष्टिसे एक साहित्यकार दूसरेकी अनुकृतिमात्र नहीं हो सकता, किन्तु सामूहिक कल्याणकी दृष्टिसे उन सबके जीवनमें 'एकोऽहं बहुस्याम' की भावना ही व्याप्त रहती है। संसद्‌का आधार साहित्यकारोंकी अनेक रूपोंमें व्यक्त महान आत्मा और उसका लक्ष्य पारस्परिक सहानुभूति और सहयोगको सक्रिय और स्वाभाविक बनाना है।

अपने विज्ञापित उद्देश्योंकी ओर संसद् अपर्याप्त साधनोंके साथ भी निरंतर गतिशील रही है।

उसकी सहायक-निधिसे अनेक साहित्य-सेवियोंको आवश्यक सहायता तथा सहयोग प्राप्त हो चुका है। लेखकके स्वाभिमानका ध्यान रखते हुए संसद्‌का सहायक-निधि-विभाग स्वयं लेखक-परिवार के सम्बन्धमें ज्ञातव्य प्राप्त करके सहयोगापेक्षी साहित्यिक बन्धुओंको अपनी सेवाएं समर्पित करता रहा है। सहायक-निधिकी वृद्धिके लिये तथा लेखकोंके लाभार्थ संसदने कुछ उत्तम पुस्तकोंका प्रकाशन भी किया है। संसद्‌के प्रयत्नसे कतिपय प्रकाशकोंने कुछ पुस्तकोंके कापी राइट लेखकोंको लौटा दिये हैं और इस प्रकार उन्हें घोर अर्थ-सङ्कटमें मुक्तिका साधन प्राप्त हो सका है। प्रस्तावित साहित्य केन्द्रके लिये संसद्‌ने प्रयागमें गङ्गा-तट पर ४५,०००) लागतका एक भवन कई एकड़ भूमिके साथ खरीद लिया है, जहां रहकर साहित्यकार अपनी साहित्य साधनाके अनुकूल शान्त वातावरण तथा अध्ययनके लिये आवश्यक सामग्री पा सकेंगे।

संसदकी आवश्यकतायें—

संसदको अपनी लेखक सहायक निधिको अधिक उपयोगी बनानेके लिये एक स्थायी कोषकी आवश्यकता है।

अनेक लेखकोंकी पुस्तकोंके कापी-राइट बिक चुके हैं और इस प्रकार वे पूर्णतया निरवलम्ब हैं। जिनके पास पुस्तकें हैं उनके सामने दो ही मार्ग हैं—या तो वे लाभकी आशा न रखकर उन्हें

प्रकाशकोंको दे दें या पाण्डुलिपियोंसे अपने घरको संग्रहालय बन जाने दें। दोनों ही स्थितियां लेखकको जीवनयापनकी सुविधा देनेकी क्षमता नहीं रखती। कतिपय लेखक रोगग्रस्त और साहित्य-सृजनमें असमर्थ हैं। इस प्रकार कुछ लेखक अपनी पुस्तकों का कापीराइट वापस पाने अथवा नयी पुस्तकोंके प्रकाशनकी आय तक और कुछ स्वस्थ होने तक लेखक सहायक निधिसे नियमित पर्याप्त सहायता पानेके अधिकारी रहेंगे। अपने इस बृहत परिवारको संभालनेके लिये साहित्यकार-संसद् के पास यदि १००,०००) का स्थायी कोष न हो तो वह अपने गुरु कर्त्तव्यके निर्वाह में असमर्थ रहेगी।

स्वाध्याय-मन्दिर तथा स्मृतिगृह—

साहित्य केन्द्रमें एक संघायतन (हांल) और ग्रंथागार भी साहित्यकार संसद की अनिवार्य आवश्यकता है। स्वाध्याय मंदिरके सम्बन्धमें संसद ने जो अभिनव और एक बड़े अभावकी पूरक योजना बनायी है उसके अनुसार तुलसी, सूर, मीरा जैसे प्राचीन मनीषियोंसे लेकर प्रसाद; प्रेमचन्द जैसे अर्वाचीन साहित्य साधकों तकके लिये भिन्न भिन्न कक्ष रहेंगे, जिनमें साहित्यिक विशेषकी प्रतिमा, तैलचित्र, उसके ग्राम, गृह, जीवन सम्बन्धी अन्य सामग्री, पाण्डुलिपियां प्रकाशित ग्रंथ तत्सम्बंधी आलोचना-साहित्य आदि संग्रहीत रहेंगे, जिससे साहित्यकार विशेषके लिये निर्दिष्ट कक्षमें प्रवेश करने वालेको उसके सामीप्यकी अनुभूति भी हो सके और उसका साहित्य भी उपलब्ध हो सके। अध्ययन गृह और साहित्यिक संग्रहालय दोनोका अभाव दूर करने वाले कक्षोंमेंसे प्रत्येकके निर्माण और उसके लिये आवश्यक प्रारम्भिक सामग्री एकत्र करनेमें अनुमानतः पच्चीस हजार व्यय होगा। संघायतन (हांल) तथा अध्ययन गृहके निर्माणमें तीन लाख व्यय होनेकी सम्भावना है। किंतु निर्मित हो जाने पर यह प्रयागके अनुरूप ही साहित्यतीर्थ तथा मंदिरोंके देशका सजीव मन्दिर सिद्ध होगा।

कुछ साहित्यकार स्थायी रूपसे और कुछ अस्थायी रूपसे साहित्य केन्द्रमें रह कर साहित्य साधना करनेके इच्छुक हैं। संसदके प्रस्तुत भवनमें इतना अधिक स्थान नहीं कि अनेक लेखकोंके आवास की समस्या सुलझ सके। इस अभावकी पूर्तिकी लिये संसदने प्रसाद, प्रेमचंद आदि आधुनिक साहित्यकारोंके नामसे सम्बद्ध कई स्मृतिगृहोंके निर्माण की योजना बनायी है। यह कुटीर इन विशिष्ट साहित्यकारोंके स्मारक भी रहेंगे और इनसे साहित्य सेवियोंके आवासकी समस्या भी सुलझ जायगी। प्रत्येक स्मृतिगृहके निर्माण और उसे आवश्यक सुविधाओंसे सुसज्जित करनेमें पच्चीस हजार व्ययका अनुमान किया जाता है।

'साहित्यकार' पत्र और प्रकाशन-

हिन्दीमें ऐसे किसी पत्रको अभाव है जो लेखकोंके जीवन तथा साहित्य-सृजन सम्बन्धी समस्याओं पर प्रकाश डालता हो तथा नियमित रूप और निश्चित दृष्टिकोणके साथ उत्कृष्ट प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य उपस्थित करता हो। साहित्यकार-संसद्के उद्देश्योंके अन्तर्गत एक ऐसे पत्रका प्रकाशन भी है जो उक्त अभावकी पूर्ति कर सके और जिसके माध्यमसे जीवनको गति और चेतना देनेवाले साहित्यके साथ लेखकोंको पर्याप्त पुरस्कारके रूपमें आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके। पत्र प्रकाशनके लिये यदि निश्चित निधि न हो तो पत्रकी असामयिक मृत्यु अवश्यम्भावी है, विशेषतः ऐसे पत्रकी जो गम्भीर हो और जनरुचिके निर्माणका उद्देश्य रखता हो।

राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके साथ साथ राष्ट्र-जीवनका नवनिर्माण और सांस्कृतिक जागरण भी अनिवार्य है।

हमारा प्राचीन साहित्य इतना समृद्ध है कि उसका परिचय भी राष्ट्र जीवनको प्रेरणा ओर स्फूर्ति देनेमें समर्थ सिद्ध होगा। अन्य प्रांतीय भाषाओंके विशिष्ट ग्रन्थोंके हिन्दी अनुवाद भी हमारी सांस्कृतिक एकता बढ़ानेमें सहायक सिद्ध होंगे। ऐसी स्थितिमें हिन्दी रूपान्तर तथा मौलिक सृजनका महत्व पूर्ण कार्य करने वालोंके जीवनयापनकी सुविधाका प्रबन्ध अनिवार्य है। जीवनकी साधारण सुविधाओंके अभावमें कदाचित ही कोई साहित्य-सेवामें समर्थ हो सके। यदि संसद् अपने प्राचीन साहित्यके अमूल्य रत्नोंकी प्राप्ति और उनके मूल्यांकनका कार्य दूसरोंके शोषणके द्वारा करे तो उस अमर साहित्य के सन्देशके साथ साथ अपने उद्देश्यके साथ भी विश्वास घात करेगी।

साहित्यकार पत्र तथा प्रकाशनकी योजनाके लिए १००,००० की निधि अधिक नहीं कही जा सकती। प्रकाशनकी सुन्दर व्यवस्थाके लिये साहित्कार-संसद् की निजी प्रेसकी आवश्यकता होगी इस सम्बन्धमें दो मत नहीं हो सकते। प्रेस तथा कार्यालयकी व्यस्थाके लिये ५०,०००) निधि आवश्यक होगी।

संसदकी योजनाओंको कार्यान्वित करनेके लिये ७ लाख अर्थ अपेक्षित है। हम अपन प्रांतीय तथा केन्द्रीय सरकार से भी सहयोगकी मांग करते हैं, किन्तु जब तक हिन्दी जगत ही हमारे इस शुभ साहित्य अनुष्ठानका पौरोहित्य न स्वीकार करे तब तक हमारी सफलता संदिग्ध ही रहेगी। केवल सरकारकी शक्तिसे चलना किसी साहित्य-संस्थाकी प्रगति नहीं कहा जा सकता। विश्वास है, हमारे स्वतन्त्र राष्ट्रके संचालक और साहित्यानुरागी दोनों ही हमारी लक्ष्यप्राप्तिको अपनी लक्ष्य-प्राप्ति जान कर हमारे पथको प्रशस्त करेंगे।

सब्जी मंडी की आनन्दीको कौन नहीं जानता ? जबसे मैं अकेले बाजार जाने लगा संसारकी सुन्दर और सलोनी छवि मेरे सामने घृणित तथा कलुषित बनकर आने लगी थी। मेरे मनमें खिंचे दुनियाके चित्रपर अनुभूतिकी रेखाएं धब्बेका काम कर जाती थीं। पास पड़ती थी और जल्दबाजीकी भागदौड़में हाथ बंटाती थी इसलिये मुझे आनन्दीकी दुकान सब तरहसे सुविधाजनक लगती थी। यही कारण था कि सांझ-सवेरेकी अनिवार्य आवश्यकताओंके सौदेसे यही निपट लिया करता था। परन्तु संसारके मेरे मनमें खिंचे सलोने चित्रमें जो अनुभूतिके धब्बे लगते गये, आनन्दीकी दुकान और उसकी परिसीमामें व्याप्त उसका विवश जीवन उनमें सबसे बड़ा धब्बा बन गया। किसीसे सुनता तो रहता था पर जब आंखोंसे देखा तभी मुझे विश्वास हो गया कि आनन्दीका बदबूदार यौवन भी तिरछी कटारियोंके साथ साथ तौलके पलड़ोंमें चढ़ता है तथा सब्जियोंके साथ-साथ पंसारियोंके भाव घायल नजरोंके ग्राहकोंमें बिकता है। यौवनकी उन्मत्त आकांक्षाओंकी लपटोंका केन्द्र आनन्दी दिन-दिन मंडीमें ख्याति पाने लगी और एक दिन वह बूढ़े पतिकी रूपवती स्त्री रूप के बाजारका सौदा बन ही गयी।

पुरुषको ऐसी स्त्रीकी भी कामना रही, जो केवल मनोविनोद और क्रीड़ाके लिये होती, जो जीवनके आदिसे अन्ततक केवल प्रेयसीही बनी रह सकती और जिसके प्रति पुरुष कर्तव्यके कठोर बन्धनोंमें न बंधा होता! पुरुषकी इसी इच्छाका परिणाम हमारे यहां की वेश्याएं हैं, जिन्हें जीवनभर केवल प्रेयसी और स्त्री ही बना रहना पड़ता है। क्योंकि प्रायः पुरुष ऐसी उत्तेजनाभी चाहता है, जिससे वह कुछ क्षणोंके लिये संज्ञाशून्यसा हो जाये। स्त्री पत्नी बनकर पुरुषको वह नहीं दे सकती जो उसकी पशुताका भोजन है। इसीसे पुरुषने कुछ सौंदर्यकी प्रतिमाओंको पत्नीत्व तथा मातृत्वसे निर्वासित कर दिया। वह स्वर्गमें अप्सरा बनी और पृथ्वीपर वाराङ्गना। कहीं स्त्रीको देवताकी दासी बनाकर पवित्रताका स्वांग रचा, कहीं मन्दिरमें नृत्य कराकर कलाकी दुहाई दी और कहीं केवल अपने मनोविनोदकी वस्तु बनाकर अपने विचारमें गुणग्राहकता दिखाई। यदि उस रूप विक्रय करनेवाली स्त्रीकी ओर देखा जाय तो निश्चयही देखनेवाला कांप उठेगा उसके हृदयमें प्यास है किन्तु उसे भाग्यने मृगमरीचिकामें निर्वासित कर दिया है। उसे जीवनभर आदिसे अन्ततक सौंदर्यकी हाट लगानी पड़ी, अपने हृदयकी समस्त कोमल भावनाओंको कुचलकर, आत्मसमर्पणकी सारी इच्छाओंका गला घोंटकर, रूपका क्रय-विक्रय करना पड़ा— और परिणाममें उसके हाथ आया निराश हताश एकाकी अन्त! पुरुषकी आवश्यकता रहेगी, इसलिये स्त्रीको अपना जीवन बेचना होगा, यह कहना तो न्याय संगत न होगा। कोई भी सामाजिक प्राणी अपनी आवश्यकताके लिये किसी अन्यके स्वार्थकी हत्या नहीं कर सकता ! *

स्वाभाविक या अस्वाभाविक इच्छाका लगातार दमन परिणाममें व्यभिचारका चोला ओढ़ लेता है। पुरुष या स्त्री अपनी स्थितिकी जिस सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक या वैचारिक सतह पर होती है उसीके अनुसार अनाचारकी प्रवृति इनमें अपना मार्ग टटोलकर प्रस्फुटित होने लगती है। राजनीतिज्ञोंका गोपनीय एकान्त, समाज सुधारकोंकी कचहरी, सार्वजनिक अथवा खास शिक्षा संस्थायें जहां भी वृत्तियोंका दमन बीज बनकर गड़ गया, उसके अंकुर

असंख्य विपरीत परिस्थितियोंमें भी मरेंगे नहीं। अनाचारके अंकुरोंका विकास किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचे बिना रुकना नहीं जानता। इसकी जड़में निसर्गकी मनुष्य रचनाका कौशलही विशेष है। वयस् के साथ वृद्धि पाने वाली प्रकृति और पुरुषकी पारस्परिक शारीरिक भूख बाहरसे आकर्षण बन जाती है और हृदयमें कुतूहल। यह प्रकट सत्य है कि रुकावट स्वाभाविक-गतिमें बाधक नहीं साबित होती बल्कि एक तरहसे सहयोगही देती है। गतिमें दोहरी उत्तेजना पैदा कर देती है। प्रकृति-पुरुषकी आकर्षणकी गतिमें सामाजिक संस्कारोंकी आड़ है। आकर्षणकी लहरोंमें जितना अधिक बल होता, यह सामाजिकताकी रुकावट शीघ्र असमर्थता प्रकट कर देती है। सामाजिकताके उक्त रोड़ेकी विच्छिन्नता और अन्तर्प्रवृत्तिके स्रोतकी विजय याने अपने सम्बलकी विफलताका ही नाम समाजने अनाचार रख दिया है।

यह अनाचारकी परिभाषा हुई लेकिन एकांगी। दूसरे पक्षकी दलील अभी सामने नहीं आयी। वह इससे अधिक सजीव और सबल हो सकती है। प्रवृत्तिके बहावको समाज केवल इसलिये अनाचार नहीं कहता कि उसकी सामाजिकताकी अटकन असमर्थ सिद्ध हुई। वरन् इस हेतुसे कि इस गतिके बहावमें व्यक्तित्व और अस्तित्व भी अस्वाभाविक गतिसे अस्त हो रहा था। उसके विशेष होनेकी संभावना थी। इसी अशुभ आशंकाके निवारणार्थ सुधारकोंकी आवश्यकता उत्पन्न हुई। सामाजिक रुकावट और बहिष्कार इन दो अस्त्रोंका आविष्कार हुआ। व्यक्तिके सामूहिक वृद्धिके विरुद्ध प्रभावको उसने इसी इच्छासे अनैतिक कहा। और व्यक्ति अथवा उसकी कृति द्वारा किये गये इसी अनैतिकताके आग्रहको समाजने अनाचार या व्यभिचार कहा है। तब ये जो हमारे आसपास हरघड़ी घटने वाली घटनायें, जीवनके विकाशका नग्न नृत्य, यौवनकी हाट और रूपके क्रयकी घृणित चित्रावली का बना रहना क्या मनुष्यकी मनुष्यताको जीवित रखनेके लिये बहुत फायदेमन्द और अनिवार्य है? विश्वास नहीं होता कि क्षितिजके अंतरालतक कोई क्षुद्र वस्तुभी प्रत्युत्तरमें 'हां' कहनेका सामर्थ्य रख सकेगी। किन्तु वासनाकी कीच में बिलबिलाते हुए कुछ घातक विषैले जन्तुओंकी इच्छा अब भी हां कहना चाहती है, उसकी वैसी ही मौजूदगीके लिये। परन्तु इस लोकका नियम नहीं है कि विष के कीड़ोंको जिन्दा रहनेके लिये गन्दी नालियोंको साफ न किया जाय तथा प्रकाश और शुध्दतासे उन्हें बचाये रखें; भलेही आसपास गन्दगीका दुष्परिणाम फैलनेदें!

यहां मध्यप्रदेशके कीर्तिशाली मंत्रिमंडलमें एक हमदर्द सज्जनने उक्त समस्या को कानूनका स्वरूप देकर हल करनेकी दृष्टिसे प्रश्न उठाया थां। पर निकृष्ट वृत्ति का परिचय देते हुए, उस व्यक्ति और उसकी हमदर्दीका भरी सभामें मजाक उड़ाया गया। इस समस्याकी ओर देखने की हमारी वृत्तिमें ही अभी गंभीरताका अभाव है यही तो बात है कि ऐसे महत्वके विषयके सम्बन्धमें हम हीन वृत्तिका परिचय देते रहते हैं। यह बात सही है और मैं भी इस पक्षमें नहीं हूं कि यह प्रश्न कानूनके बलपर दबा दिया जाय। यह तो कोढ़की तरह समाज पुरुषकी घिनौती और भयंकर बीमारी है। बीमारी जब तबीअत हो दवायी नहीं जाती; उसी तरह यह प्रश्न भी इस भांतिसे निर्मल नहीं किया जा सकता। किन्तु इसका गंभीर निष्कर्ष निकालकर किसी तथ्यपर पहुंचनेकी अपेक्षा हंसीका विषय बनाकर टालना हमारी दूरदेशीमें क्या अपवाद नहीं बन सकता? हमारे घर की मां-बहनोंकी ही तरह कोमल प्रकृति, सेवापरायण तथा कर्मण्य नारियां रूपकी हाटमें चांदीके सिक्कोंपर, पुरुषकी उबलती वासनाका बांध बनकर यौवनके कीचमें सड़ा करें, पर हमें उनकी वास्तविकतासे रत्तीभर भी सहानुभूति न हो? वरन् वैभवकी छायामें बैठें हुओंकी तसल्लीका वे सामान बनें और हमें जरा भी मलाल नहीं! क्या यही उठती हुई भारतीयताका परिचय है? ऐसा कौन होगा जिसे मांकी कोखने प्रत्येक कष्ट सहकर मनुष्य लोक तक नहीं पहुंचाया, वह कौन है जिसे मासूम बहनने स्नेहभरी आंखोंसे पहला परिचय नहीं दिया, वह कौन हो सकता है जो लाड़ली पत्नीके अवगुंठनमें एक बार भी स्वर्गीय संगीतकी झनकार न सुन सका, ऐसा कौन है जिसने अपनी युवा पुत्रीमें अतीत यौवनके स्वर्ग कलशकी आभा नहीं देखी? वह पुरुष किस कामका जो हमारे ऐसे पारिवारिक जीवनका ही वृहद् रूप यौवनकी हाटमें तुलापर तुलते देख सकता है? उसके विनाशकी नग्नता खुली आंखों ठंडे दिलसे सहलेता है?

हमारी मिथ्या प्रशंसाने नारीको भले ही ऊंचा आसन दिया हो किन्तु आदिसे अन्त तक वह तो एक बिकाऊचीज ही बनती आयी है। पितृगृहमें वह पिताकी इच्छाके अनुसार उसकी भलाई, इज्जत, कुल मर्यादा और बड़प्पनके लिये इच्छा विरुद्ध अपरिचित पुरुषको, जिसे यहां वाले पति कहते हैं; बिकी। वहां पतिके क्रूर एक छात्री साम्राज्यने यौवनके हाथों उसे बेमोल लुटा दिया वह अलग। कौन कह सकता है कि हमने नारीको देवताका आसन दिया है? उसे सजीव मानव प्राणी भी माना है। उनके स्तित्वकी सविनय पूजाकी है! परिवारकी सीमामें उसका सर्वमान्य संहार हुआ। वहां वह घुल घुल कर मिट गयी। परिवारके बाहर सार्वजनिक क्षेत्रमें व्यभिचारकी उत्तेजना बनी। स्वर्गसे पृथ्वी तक देवतासे मनुष्य तक वह किसकी छायामें निष्कलंक हंसमुख, प्रसन्न रह सकी?

अपने स्वार्थके लिये ही मनुष्य तूफान खड़ा कर सकता है। नारीकी हत्याका रङ्ग तृप्तिके स्वार्थपर ही गहरा हुआ है। अपनी इच्छाके लिये पुरुषने नारीको घर की निरीह दासी बनाया। वह आजीवन दासी बनी रहे इसलिये गृहस्थी और सन्तानोंका कटघरा तैयार हो गया। उस कटघरे की रक्षाके लिये खोखले कङ्कालवत् आदर्शोंका बवण्डर उठाया गया। नारी इस बवण्डरमें बेखबर तिनकेकी

काश्मीरकी रक्षामें नारियोंने शस्त्र धारण किया है

तरह क्षुद्र बनकर उड़ती रही और पुरुष शिशुसा दूरसे देखकर तालियां पीटने लगा कभी उसने तृणकी तरह उसका वेहिसाब यातनाओंकी गति पर नीचे ऊपर होना देखा, कभी चूर चूर होकर स्तित्व का उस बवण्डरमें पिस जाना देखा। हमारे समाजके पुरुषके विवेक हीन जीवन का सजीव चित्र देखना हो तो विवाहके समय गुलाव सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पांच वर्ष बाद देखिये । उस समय उस असमय प्रौढ़ा, कई दुर्बल सन्तानों की रोगिनी पीली मातामें कौन सी विवशता कौन सी रूला देने वाली करुणा न मिलेगी ? *' यहां भी तो नारी सस्ती, सुविधाजनक, घरेलू, वेश्या बनायी गयी उसके प्रति समाजकी सहानुभूति हाथी के दांतोंके समान बाह्य प्रदर्शनकी वस्तुभर रह गयी है। केवल शोभाकी बस्तु, निरुपयोगी और उद्देश्य हीन ! आपद्ग्रस्ता नारीके सान्मानकी रक्षामें मिटनेकी हस्ती हममें कहां है ? इस देशमें ऐसोंकी संख्या अभी नगण्य ही हैं पर कुचेष्टाओंसे उस पर फब्तियां कसने वाले उसका अनादर करने वाले कदम-कदम पर मिलेंगे। घूरकर इस तरह देखेंगे मानो वासनाकी तरेरती आंखोंसे वे उन्हें निगल ही लेंगे स्त्री क्यों अपने इस अनादरको आंख मूंदकर पी जाती है ? वह क्यों नहीं उन कुचेष्टाओंको उगलने वाला मुख बन्द कर देती अथवा उन जहरीली आंखोंको खींच लेती ; इस कटाक्ष का उत्तर तब दिया जा सकता था जब पुरुषकी नारीको निष्क्रिय निर्बल बनानेकी क्रियामें कुछ कमी रह जाती। किन्तु आज उसे इतनी निकम्मी, स्तित्व हीन निर्जीव बना डाला गया है कि वह अपनेपन तकसे अभिज्ञ है। इसमें उसका क्या दोष ?

अब उसमें चेतना पैदा हुई है। उसने करवट फेरी है। पर यह करवट फेरना खाईके तटपर सोये पथिक का करवट फेरना न सिद्ध हो। यह न हो कि एक धक्केमें ही दूसरे क्षण दुर्निवार तिमिर गर्तमें वह दफनायी दिखायी पड़े । आज नारी आन्दोलनकी जागरूकता की गति जिस ढङ्ग और तरीकें पर हैं वह गलत दिशाकी ओर करवट फेरना है। वह सदियों तक आंखें मूंदे पड़ी रहीं इसीका यह परिणाम हो सकता है पर अब तो उसने जब चलनेकी ठान ली हैं तो आंखें मूंदकर चलना अविवेकसे कम नहीं। अशिक्षाके निवारणार्थ उसी शिक्षाका समर्थन किया गया जिसने हमको पश्चिमी पतनका दृश्य दिखा दिया है । जिसने नारीको इस महत्वपूर्ण 'त्व' से हीन बना दिया । वैवाहिक कुरीतियों पर बोलने की किसीको ही इजाजत नहीं। चाहे पित अपनी पुत्री को, समाज देवताके अंगपर लगे सिंदूर को बनाये रखनेके लिये कत्ल ही करता रहे। रूपकी समस्या भी अब तक बराबर दवाई जा रही है । किसीने उसके पक्षमें आह किया कि लगा आकुलिनताका धब्बा। कहीं मानवताके इस धब्बेके खिलाफ शिकायतमें कलम चली कि तुरन्त तोड़ दी गई। गला खोलकर चीखना आरम्भ किया कि मजबूत कलाइयोंसे दबाकर घोंट दिया गया। मनुष्यकी मानवताके आगे इस तरहकी कोई समस्या भी हो सकती है :इसकी कल्पना तक साकार नहीं होने दी गयी । पर प्रकट होनेवाली शक्तिका प्रयास अथक रहा और दवाने वाले हाथोंकी अंगुलियों के मध्यसे ही उसका सबलत्व बाहर आ गया।

जब किसी भी पुरुषका कैसा भी चारित्रिक पतन उससे सामाजिकता का अधिकार नहीं छीन लेता उसे गृह जीवनसे निर्वासित नहीं कर देता, सुसंस्कृत व्यक्तियोंमें उसका प्रवेश निषिद्ध नहीं बनाता धर्मसे लेकर राजनीति तक सभी क्षेत्रोंमें ऊंचे ऊंचे पदों तक पहुंचनेका मार्ग नहीं रोक लेता। साधारणतया महान दुराचारी पुरुष भी परम सती स्त्रीके चरित्र का आलोचक ही नहीं न्यायकर्त्ता भी बना रहता हैं (क्योंकि समाज व्यवस्था उसके हाथोंमें है) ऐसी स्थितिमें पतित स्त्रियों के जीवनमें परिवर्तन लानेका स्वप्न सत्य हो ही नहीं सकता। जब तक पुरुषको अपने अनाचारका मूल्य नहीं देना पड़ेगा तब तक इन शरीर व्यवसायिनी नारियोंके साथ किसी रूपमें कोई न्याय नहीं किया जा सकता।

लन्दनमें जहाजी कानफरेन्स

(२० वें पृष्ठ का शेष)

कि इंगलैण्डके हमारे पौण्ड पावनेका भुगतान करनेका एक रास्ता यह भी है कि ब्रिटिश जहाज हमारे रजिस्टरमें चढ़ा दिये जायं। इङ्गलैण्डकी इस दलीलका कि देशकी डालरकी जरूरतके कारण पौण्ड पावनेक भुगतान रोकना पड़ेगा इस तरहके सौदे पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इसमें डालरकी कोई झंझट ही पदा नहीं होगी। अगर ग्रेट ब्रिटेन देना चाहे तो इस तरकीबसे हिन्दुस्तान का काफी कर्ज चुका सकता है। लम्बे समयकी नीतिके नाते हिन्द सरकारको हिन्दुस्तानमें ही जहाज बनानेके उद्योग को बढ़ावा देना और पैसेकी मदद करनी चाहिये। हिन्दुस्तान जैसे समुद्री किनारे वाले देशके लिये जहाज बनानेका धंधा जरूरी और महत्वका धंधा है और उसे सरकारको हर तरहकी मदद देनी चाहिये। यह उद्योग हमारे पुराने उद्योग धंधेमें से एक है जिसे अङ्गरेजोंने करीब एक सदी पहले बरबाद कर दिया था।

बदकिस्मतीसे ग्रेट ब्रिटेन आज जहाजी और निर्यात व्यापारकी बुनियाद पर आर्थिक साम्राज्य कायम करनेकी कोशिश कर रहा है। यह बुरी बात है। मालूम होता है, पिछली दो लड़ाइयोंने उसे यह सबक नहीं सिखाया कि निकट भविष्यमें आने वाली बरबादीकी निशानी सारी दुनियाको यह जाहिर करती है कि ऐसा कोई भी राष्ट्र जो किसी दिशामें अपनी माली-व्यवस्थाके निकासमें संतुलन नहीं रखता, शांति कायम नहीं रख सकता। अगर स्केण्डिनेवियाके देश लड़ाइयोंसे काफी हद तक बच सके, तो उसका यही कारण है कि उनका प्रोग्राम अपनी आवश्यकतायें खुद पूरी करने तक ही रहा है। इसका यह मतलब है कि हर देशको खेती, उद्योगधंधों, जहाजी व्यापार, यातायात, तिजारत, व्यापार और बैङ्क सबका समतोल विकास करना चाहिये। इन सारे महकमोंको देशकी आवश्यकतायें भली भांति पूरी करने लायक तरक्की करनी चाहिये। इनका आवश्यकतासे ज्यादा विकास आखिर में हिंसा और लड़ाइयोंकी तरफ ले जायगा। इस लिये दुनियाकी शांतिके खातिर आवश्यक है कि ग्रेट ब्रिटेन अपनी माली व्यवस्थाके दोनों पलड़े बराबर रखे। इंगलैण्ड अपनी आवश्यकतासे ज्यादा विकास करने वाली माली व्यवस्थाका मुकाबला करने वालेंको जबरन दबानेकी कोशिश करके शांति कायम नहीं रख सकता।

सरकारका कर्त्तव्य

हमें डर है कि हमारी हिन्द सरकार ने भी अभी यह सबक नहीं सीखा है। हमें विश्वास है कि हिन्दुस्तानके माली जीवनकी योजना बनानेमें सवालके इस पहलू पर ध्यान दिया जायगा और कायम किया जाने वाला योजना कमीशन इस बातका ख्याल रखेगा कि हमारे माली जीवनके सारे हिस्से, सबसे पहले हमारी जरूरतें पूरी करनेके लिये एक सा विकास करें। यह ध्यानमें रखते हुए कि अभी तक हमारे जहाजी उद्योगको जरा भी विकास करनेका मौका नहीं दिया गया है। सरकारके लिये यह जरूरी हो जाता है कि वह हमारे राष्ट्रकी माली व्यवस्थामें जहाजी उद्योगको उचित स्थान देनेकी अच्छीसे अच्छी कोशिश करे।

—०—

लेखक—
श्री शम्भूनाथ सक्सेना

प्रिय आशा,

तुम्हें आज अपने बचपनकी याद भी नहीं होगी। तुमने अपने इस अट्ठारह वर्ष के जीवनमें सपनेमें भी नहीं सोचा होगा कि जिसे तुम 'मां' कह कर पुकारती हो, उस नारीके अलावा भी कोई तुम्हारी मां होनेका दावा कर सकती है—बेटी तुम्हारी अभागी मां मैं हूं। मैं इस भेदका रहस्योद्घाट न करना नहीं चाहती थी और इसी कारण विवेकसे मातृत्वको दबाती रही हूं। मैंने सतत् प्रयत्न किया कि चेतनासे ममत्वको दबाये रहूं। और मुझे इस बात का सन्तोष है, कि मैं अबतक अपने प्रयास में सफल रही हूं। लेकिन इतने पर भी वात्सल्यसे प्रेरणा पाकर थोड़ी दूर रह कर तुम्हारी देख-भाल अवश्य करती रही हूं।

आशा, आज तुम्हें विवाहित और सम्पन्न जीवन व्यतीत करते देख कर मुझे कितना हर्ष होता है। इसे मैं शब्दोंमें व्यक्त नहीं कर सकती! मुझे आज प्रसन्नता है कि तुम्हारा अब समाजमें गौरवमय स्थान है और तुम्हारा विवाहित जीवन उतना ही सुखी है, जितना कि शुभ्र और मोदमय तुम्हारा बचपन रहा है। मैं जानती हूं जिन्हें तुम मां कह कर पुकारती हो, उस ममतामयी नारीने एक दिनके लिये—नहीं एक क्षणके लिये भी तुम्हारे हृदयमें इस भावनाको उदय होनेका अवसर नहीं दिया, कि उनकी तुम मुंह बोली बेटी हो। उनका प्रेम, सगी मांके प्रेमसे भी अधिक अजस्र-स्रोत-सा निरन्तर वहता रहा है।

बेटी, जैसा मैंने ऊपर लिखा है, मैं इस रहस्यको कभी न खोलती। लेकिन इस विषयमें मैं एक अपरिचितसे वचन बद्ध हूं। अपरिचित यों कि मैं अब उनका नाम धाम कुछ नहीं जानती। लेकिन मैंने एक बार वचन दिया था कि जब तुम वयस्क हो जाओगी—तुम्हारा विवाह हो जायेगा, तो मैं इस कटु-सत्यको तुम्हारे सामने एक बार अवश्य रख दूंगी। लेकिन मैं कतई नहीं चाहती कि इससे तुम्हारे वर्तमान सामाजिक जीवनमें किसी प्रकारका अवरोध पैदा हो—इसीलिये इस घटनाको तुम भुला देना। और सुनो, जब तक यह पत्र तुम्हारे हाथोंमें पहुंचेगा, मेरे प्राणपखेरू इस संसारसे सदाके लिये विदा ले चुके होंगे।

उन दिनों तुम मुश्किलसे तीन बरसकी रही होगी। मैं नित्यकी तरह शामके समय अपने कमरेमें बैठी हुई थी, कि मांजीने आकर ग्राहकोंके आनेकी सूचना दी। मैं अपनी सी पेशेवर दो अन्य लड़कियोंके साथ विक्षिप्त-सी बाहर पसन्दगीके लिये आई। वे तीन थे। उनमेंसे दोने हमें बुरी तरह घूरना—घृणित कटाक्ष करना और अश्लील चुहल करना शुरू किया। उन दोनोंके हाव-भाव और बातचीत करनेके ढंगसे स्पष्ट प्रतीत होता था, कि वे ऐसी जगह आनेके आदी हैं लेकिन उनमेंसे तीसरा एकदम गुमसुम खड़ा रहा। मुझे उसका व्यवहार देख कर प्रतीत हुआ जैसे वह हमारे सामने जबरदस्ती बांध कर लाया गया हो। अपनी इच्छाके विरुद्ध-विवश करके! अपने साथियोंकी बातचीतमें वह सहयोग नहीं दे पाता था। बल्कि बेचैनी महसूस कर रहा था। उसके इस स्वभावकी इस सादगीसे मुझे आभास मिल गया था, कि मेरे हिस्सेमें वही पड़ेगा। क्योंकि, अन्य दोनों व्यक्तियोंके जांच पड़तालके ढंगने यह स्पष्ट कर दिया था, कि वे मेरी दोनों हमजोलियोंको पसन्द करेंगे, जो मुझसे अधिक सुन्दर स्वभावसे चंचल और उम्रमें कम हैं।

अपने कमरेमें लौटते ही मुझे पता लगा, जैसा मैंने सोचा था वही हुआ। मैं पलंग पर बैठी थी, कि उन्होंने दरवाजेको अहिस्तासे थोड़ा-सा खोल कर झांका। मैंने कहा—

'चले आइये सीधे।'

और साथ मुस्करा कर बंकिम दृष्टि से उनकी ओर देखा। वह सहमें कबूतरसे कमरेमें घुसे। फिर कुछ शोच कर पीछे मुड़े। जाकर दरवाजा बन्द किया और चटखनी चढा दी। और जैसे ही वे बैठ कर मेरी तरफ बढ़े कि उनकी दृष्टि कमरे की अरगनी पर टंगी बच्चीकी फ्रांक पर पड़ी। और उसे देख कर वह ऐसे चौंके जैसे शराबी पत्थरकी ठोकर खाकर सचेत हो जाता है। यदि मैं उन्हें अपनी ओर आकर्षित न करती तो न जाने वे कबतक तन्मय होकर उस फ्रांककी ओर ही देखते रहते। मैंने अपनी आंखों में अलस मादकताका भाव व्यक्त करते हुए अंगड़ाई ली—

'इधर, यहांआइये न!'

मेरी नजरोंमें शरारत नाच उठी थी जो हम-सी पेशेवरोंके लिये व्यवसायमें बड़ी सहायक होती है। लेकिन मेरी बात का असर उन पर कुछ न हुआ। उनकी दृष्टि अब भी बेबी फ्रांककी तरफ ही लगी हुई थी। मैंने पलंगसे उतर कर उनका हाथ पकड़ कर खींचा और पलंग पर

बिठा दिया और पूछा—

'आपका नाम क्या है ?'

'हरिहर।'

'आप पहले भी कभी ऐसी जगह गये हैं ?'

उन्होंने चौक कर कहा—

'जी...क्यों नहीं, कई बार।'

लेकिन उनकी घबराहट और बोलने के ढङ्गसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था, कि वे झूठ बोल रहे हैं। तब मुझे शरारत सूझी, मैंने कुछ गम्भीर होकर अपनी आंखों द्वारा ऐसा भाव प्रदर्शित किया जैसे मुझे उनकी कही बातका मुतलक विश्वास हो गया है। मैंने अपनी आंखें उनके चेहरे पर केन्द्रित कर कहा—

'अच्छा।'

और फिर खुल कर हंस पड़ी। वे सहम गये। उन्होंने थोड़ी देर रुक कर कहा—

'मैं इस बेबी फ्राककी तरफ देख रहा था। मेरी...

मैंने उनकी बात बीचमें ही काटते हुए इस विषयको एक बारही खत्म करनेके ढङ्गसे कहा—

'यह मेरी बच्चीका फ्राक है।'

अनेक चेष्टाएं करनेके बाद भी उस समय मुझे बड़ा मानसिक परिताप हुआ कि इतनी चेष्टाओंके बावजूद मैं अपने प्रयासमें सफल नहीं हुई—उनका ध्यान मैं उस फ्राकको ओरसे हटा कर अपनी ओर न खींच सकी। उन्होंने उस बेबी फ्राककी ओर देखते हुए कहा—

'मेरे भी एक बच्ची है। उसकी भी ठीक इसी रंगकी एक फ्राक है। इसे देख कर मुझे उसका स्मरण हो आता है। मुझे उनकी बच्ची होनेकी बात सुन कर चोट लगी। सच तो यह कि मुझे उनकी यह बातही पसन्द नहीं आयी। मैंने व्यग्रता प्रकट करते हुए कहा—

'अभी मांजी बुलाती होंगी। आपका समय खत्म हो रहा है।'

प्रत्युत्तरमें वे मुस्करा दिये। मैंने बिना उनकी मुस्कराहटकी ओर ध्यान दिये फिर कहा—

'देखिये आपके साथी कमरेसे निकल रहे हैं।'

उन्होंने वैसीही मुस्कराहट अपने आनन पर दीप्त करते हुए कहा—

'आप उनकी चिन्ता न करें।'

फिर कुछ सोच कर पूछा—

'आप बतायेंगी कि आपकी बच्ची इस समय कहां है ?'

और मैंने उस कमरेकी ओर सङ्केत कर दिया जिधर बेबी पालनेमें सो रही थी। उन्होंने विनम्र होकर कहा—

'मेहरबानी करके मुझे उसी कमरेमें ले चलिये।'

इसी समय हमारे दरवाजे पर आकर मां जीने खटखटाया और फिर बड़बड़ाई भी। उन्होंने पलग पर से उठते हुए कहा—

'तुम बैठो मैं अभी आता हूं।'

लेकिन मैं भी उत्सुकतावश उनके पीछे-पीछे हो ली। बाहर जाकर उन्होंने मांजी से दस मिनिटका समय और मांगा। मांजीने पहले तो साफ मना कर दिया फिर दोनों हाथोंकी अंगूठे समेत अंगुलियां दिखाकर बोली—

'इतने लगेंगे।'

उन्होंने पर्स से दसका नोट निकाल कर मांजीको दे दिया। उनके मित्र इस समय तक कमरेसे बाहर निकल आये थे और मुझे देखकर व्यंङ्ग बर्षा कर रहे थे। उनके एक साथीने तो मुझे लेकर उनकी ओर इस बुरी तरहसे ढकेला कि मैं अपनेको बड़ी मुश्किलसे गिरतेसे बचा पाई। इसी समय वे फिर कमरेमें आ गये और अंदर मुझे करके चटखनी लगा दी। उनके मित्र फिर भी भद्दे फिकरे कसते रहे और शोरगुल मचाते रहे। उन्होंने कमरेमें प्रवेश करते ही फिर बेबी फ्राकको ओर देखा और फिर मुझे उस ओर चलनेका सङ्केत किया जहां बेबी सो रही थी। जब हम उस कमरेमें पहुंचे तो वे कुछ क्षण तक उस सोती हुई बच्ची की ओर देखते रहे। मैंने उन्हें बनानेके ढङ्गसे कहा—

'क्या वास्तवमें आपके भी बच्ची है ?

तुम्हें मेरी बातका विश्वास नहीं होता ?'

मैंने बातको पतङ्ग सी ढील देकर कहा—

'आपकी पत्नी जीवित है ?'

उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—

'मेरी पत्नी सुंदर है और मैं उसे चाहता हूं—वे जीवित हैं।

मुझे उनकी बात कुछ ऐसी लगी, जो मेरे मर्म पर जाकर वेदना करने लगी। मैंने कहा—

'तो फिर आप ऐसी जगह क्यों आते हैं ?

दूसरे ही क्षण मैंने कुछ उग्र होकर कहा—

'या तो आप जो कुछ कह रहे हैं असत्य है और सिर्फ मुझे चिढ़ा रहे हैं। नहीं तो....

तभी उन्होंने बिना मेरी बातकी ओर ध्यान दिये मुझे अंगुलीके इशारेसे चुप कर दिया, बोले—

'मेरी सुनो !'

मैं अचरजसे उनकी ओर देखने लगी। आशा, उनके कहनेके ढङ्गमें कुछ ऐसा स्वामित्व था जिसकी अवहेलना मेरी शक्तिके बाहर थी। बोले—

'जब मैं अपनी लड़कीके भविष्यकी तुलना इस बच्चीके भविष्यसे करता हूं, तो कांप उठता हूं। जवान होते ही इसे भी तुम्हारा जैसा जीवन व्यतीत करनेके लिये मजबूर होना पड़ेगा।'

मैंने अपने सामने अपने पेशेकी तौहीन सुनकर कड़क कर कहा—

'बाबूजी आप मेरा अपमान कर रहे हैं। आप भूलते हैं कि आप कहां हैं ?'

उन्होंने मेरी बातको बुरा नहीं माना। कहा—

'मैं तुम्हारे अपमानकी बात नहीं, इस बच्चीकी बात कह रहा था।'

इस समय भी मेरा हृदय अपमानसे पीड़ित था। मैंने वैसे ही गम्भीर भाव से कहा—

'हरेकका अपना समाज है। इस समाज में ही बच्चे बड़े होते हैं और फिर उस समाजके ढर्रे पर ही अपना जीवन ढाल देते हैं। मैं जहां हूं, वहां कहीं भी अपनी बच्चीका अकल्याण और दुर्भाग्य नहीं देख पाती। और फिर भी स्वरको जरा और उत्तेजित कर कहा था—

'आप जिस कामसे यहां आये हैं, उसे भूल रहे हैं। मुझे विवश होकर मांजी को बुला लेना पड़ेगा। वे मेरी बात सुनकर मुस्करा दिये। और बोले—

मैं मानता हूं हरेकका अपना समाज होता है और जो जिन परिस्थितियोंमें पलता है, उसे अपने आस-पासका वातावरण नहीं खलता।'

फिर कुछ दृढ़ होकर मेरी ओर तेजी से देखते हुए बोले —

'लेकिन तुम मां हो ! तुम अपनी लड़कीके लिये उस समाजमें प्रवेश की भी कामना करती होगी, जहां पति, देवर, ससुर और सास नामकी संज्ञा मौजूद है। कौन-सी मां अपनी लड़कीको गृहस्ती और गृहिणीके रुपमें देखना पसन्द न करेगी।

और फिर अतिशय कठोर होकर कहा था—

'और इसी सब को लेकर मैं सोचने लगा था। मैं कहता हूं तुम इस बच्चीको इसके भविष्यको उज्ज्वल बनानेके लिये अपनेसे अलग कर देना।

उन क्षणों में, मैं बेटी ! पागल—सी हो गयी थी। मैंने झपटकर तुझे पालनेसे उठा लिया था और सुबकते हुए कहा था—

'नहीं....नहीं....नहीं ! मैं अपनी बच्चीको एक पलके लिये भी अलग नहीं करूंगी। तुम कौन हो जो कहते हो कि अपनी बच्चीको मैं अपनेसे अलग कर दूं।'

लेकिन उन्होंने मेरी बातसे बिना प्रभावित हुए अनुशासनके ढङ्गसे फिर कहा—

लड़की के भविष्यके हित रक्षाके लिये तुम्हें इस बच्चीको अपनेसे अलग कर ही देना पड़ेगा। अगर तुम चाहती हो कि तुम्हारी लड़की बड़ी होकर समाजमें आदर पाये और इस दूषित वातावरणसे अछूती रहे, तो उन्हें उसे अपने साये से भी दूर रखना पड़ेगा। और मैं जानता हूं तुम मां हो—तुम्हारे अन्दर भी कोमल भावनाएं हैं—तुम्हारे अन्दर भी अपनी सन्तानको समाजके सोपान पर चढ़ते देखनेका चाव है।

मेरा पागलपन दूर हो चला था ! मैं एक टक अनिमेष दृष्टिसे अपनी बच्चीकी ओर, उसके भविष्यकी कल्पनाकर प्रातःकालीन नक्षत्र-सी क्षीण पड़ती जा रही थी। उन्होंने फिर आगे कहा था—

'ममत्व तुम्हारा मार्ग रोकेगा। पल-पल पर बाधाएं विकराल रूप ग्रहणकर मार्गसे विचिलित करने का यत्न करेंगी। लेकिन सुनो, तुम्हें उन विषम परिस्थितियों और कंटकाकीर्ण मार्गमें भी अपनी बच्चीके भविष्यका ध्यान रखना होगा।

दरवाजे पर फिर खट-खट होने लगी थी। मांजी अपशब्द बक रही थी और उनके साथी अधीर होकर मुंहमें जो कुछ आ रहा था, बकते चले जा रहे थे तभी उन्होंने जाते हुए मुझसे फिर कहा था—

'एक बात का वायदा करो ?'

मैंने स्तम्भित होकर उनकी ओर देखते हुए कहा।

'क्या ?'

तब अपनी प्राकृतिस्थ मुस्कराहट चेहरे पर बिखेरते हुए उन्होंने कहा था—

'जब यह बच्ची बड़ी हो जाये और इसका विवाह हो जाये, तो एक दिन तुम इस रहस्यको उस पर प्रकट कर दोगी।'

मैंने संयम सञ्चय कर कहा था—

'तुम बड़े निष्ठुर हो।'

लेकिन मैंने देखा वे मेरी बात की प्रतीक्षा किये बिना ही आगे बढ़ गये हैं दरवाजेके पास पहुंच गये हैं। जहां खड़ी थी वहीं से मैंने कहा—

'तुम्हें विश्वास है कि मैं अपने बचन को निभाऊंगी।

पलट कर उन्होंने केवल इतना ही कहा था—

'मैंने वचन एक मां से लिया है। पुत्री की मङ्गल-कामनाके लिये मां से अधिक प्रमाणित शब्द और किसके हो सकते हैं ?

और वे दरवाजा खोलकर बाहर निकल गये थे, जहां उनके अधीर साथी उनकी परीक्षामें विवेक हाथ से खो बैठे थे और बुरी गालियां बक रहे थे—जहां मांजी अधिक समय लग जानेके कारण उन्हें आग्नेय नेत्रोंसे घूर रही थीं और शायद कुछ बुदा बुदा भी रही थी।

पत्नी बनने के बाद !

लेखिका:—श्रीमती इन्द्राणी देवी जायसवाल

गृहस्थ जीवनकी सम्राज्ञीके रूपमें सिंहासन पर बैठतेही नारी पर बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है ! माता-पिताके उस घरसे जहां हंस कर और खेल कर जीवन बिताया—पतिगृहमें घरकी रानी बन कर आनेके बाद नारी अपनेको एक बिल्कुल नयी परिस्थितिमें पाती है।.... अपने बालपनके अल्हड़पनके कारण, देखा गया है, ससुरालमें आकर नारीके जीवनका आरम्भ निराशा व दुःख प्रद बन जाता है। यदि नारी दाम्पत्य जीवनमें प्रवेशके समय निम्न प्रश्नोंको ठीक तरह समझ ले तो पति-पत्नीका जीवन स्वर्ग बन सकता है।

पतिगृहमें !

पतिगृहमें प्रवेश करते ही सबसे पहले नारीको घरके वातावरणको अच्छी तरह समझनेका प्रयत्न करना चाहिये। घरमें प्रचलित रीति-रिवाजोंके अनुसारही स्त्रीको सभी काम करना चाहिये। घरमें प्रचलित प्रथाके खिलाफ कोई भी कार्य मत करो और न ऐसा कोई काम करो जो दूसरोंकी नजरमें खटके। यदि तुम्हारे सास-श्वसुर सबके सामने तुम्हारा पतिके साथ हंसना-बोलना पसन्द नहीं करते, तुम दोनोंका बाहर घूमना या सिनेमा-बाजार जाना आदि पसन्द नहीं करते तो वह काम मत करो। धीरे धीरे तुम्हारी सास स्वयं अपने पुत्र व बधूकी इच्छाएं पूर्ण करनेको तैयार हो जायेंगी। यदि पति भी घरके लोगोंकी इच्छाके विपरीत कोई कार्य करनेको कहें तो उन्हें प्रेमपूर्वक समझाओ कि इसमें हम दोनोंकी बदनामी होगी—एकदमसे ऐसा करना ठीक नहीं। ऐसा करनेसे गृह कलह कभी पैदा न होगा !

बहू और सास !

पतिगृहमें सबसेप्रमुख सदस्य जिसके निकट सम्पर्कमें पत्नीको हमेशा रहना पड़ता है वह है—सास। यह सास उसके पतिकी मां है। इसने पतिको पालपोस कर बड़ा किया है और बदलेमें चाहती है कि बहू और बेटा दोनों उसके आज्ञाकारी बने रहें। आजकल हर जगह सास-बहूमें कुछ न कुछ अनबन जरूर दिखायी पड़ती है जिससे सदैव कलह बना रहता है। यदि स्त्री थोड़ीसी बुद्धिमानीसे काम ले तो घरमें प्रेमका साम्राज्य रहेगा। सास यदि प्रसन्न रहे तो घरमें शांति बनी रहेगी। सास मानकी भूखी रहती है और मान मिलने पर वह बहुतही जल्द प्रसन्न हो जाती है। तुम्हें जब कहीं जाना हो तो साससे माधुर्य पूर्वक कहो—चलिये माताजी, आज सिनेमा चलें। घूमने जाना हो तो सासको साथ ले जानेका प्रस्ताव करो। कोई कपड़ा लाना हो तो उनसे जाकर कहो कि वे साथ चल कर ले दें। इसका फल यह होगा कि तुम पर सास प्रसन्न रहेगी और उनका तुम पर स्नेह बढ़ेगा। पर इसके विपरीत यदि साससे बिना पूछे या उससे छिप कर कोई कार्य करोगी तो इसे वह अपना अपमान समझ कर सोचेगी कि बहू मेरी परवाह नहीं करती। जब तुम्हारे पति मासिक वेतन-पैसा आदि लाकर तुम्हें दें तो तुम तुरन्त सासको जाकर दे देना। बस, सासका हृदय तुम्हारे इस व्यवहारसे गदगद हो जायगा और कुछ समय बाद बहुत प्रेमसे वह कहने लगेगी कि "बहूरानी, तुम्हीं यह सब सम्भालो !"

परिवारके सदस्योंके बीच !

सास जिस तरह अपनी मान प्रतिष्ठा चाहती है उसी तरह वह अपने पति (तुम्हारे ससुर) की भी मान प्रतिष्ठा देखना चाहती है। इसका तुम ख्याल रखना। सासको अपनी बेटी (तुम्हारी ननद) और बच्चे बहुत प्यारे होते हैं। तुम प्यार बच्चोंकी से देखभाल और हिफाजत करना। कभी अपने घरकी बड़ाई करके ससुरालको छोटा (नीचा) बतानेकी चेष्टा नहीं करना। घरमें किसीसे मुंहजोरी नहीं करना,सदैव शीलवती बनी रहना। अपने पतिकी आंखोंसे मत गिरना क्योंकि एक बार उनकी आंखोंसे गिरी तो सभीकी आंखोंसे गिर जाओगी !

ससुरालही तुम्हारा घर है !

ससुरालमें यदि तुम्हें कोई शिकायत हो, तो अपने घरमें या किसी दूसरेसे उसकी चर्चा नहीं करना। ससुराल तुम्हारा घर है जहां तुम्हें अपनी सारी जिन्दगी बितानी है। घरके भेद किसीको नहीं बताना ही बुद्धिमानी है। घरकी बातें छिपाकर रखनेमें ही तुम्हारे हृदयकी विशालता और महत्ता प्रकट होगी। अपने घर वालोंसे या दूसरोंसे ससुरालकी शिकायतें करके तुम

न समझना कि केवल तुम्हारे ससुराल वाले ही बदनाम होंगे और तुम्हारी बड़ाई होगी तुम्हारी बातोंसे लोग यहीं समझेंगे कि तुम छिछली हो।

आदर्श नारीके गुण !

(१) मधुर वाणी—मधुर वाणी का गृहस्थ जीवनकी सफलतामें सबसे अधिक महत्व है। मीठी वाणी जीवनके भारीसे भारी दुख, क्रोध और संताप को शांत कर देती है। अपनी वाणीमें माधुर्य घोलकर तुम चलोगी, तो जहां संसारके छोटे बड़े कष्टोंको तुम आसानी से पार कर सकोगी, वहां पतिके हृदयको भी सदा बशमें रख सकोगी।

(२) सौन्दर्य—प्रत्येक मानव हृदय सौन्दर्यका प्रेमी है इसलिये हर नारीको अपनी वेशभूषा और श्रृंगारकी ओर पूर्ण सजग रहना चाहिये। अपने आकर्षणको कम नहीं होने देना चाहिये। स्वच्छ सुन्दर वस्त्र कलापूर्ण ढङ्गसे पहनने और उचित श्रृंगारसे आकर्षण व सौन्दर्य बढ़ता है। कभी मैली कुचैली मत रहो। बाल बिखरे नहीं रहना चाहिये। इत्र, सेंट, पाउडर, स्नो, तेल, क्रीम आदि सौन्दर्यको बढ़ानेमें सहायक होते हैं पर सौन्दर्यको स्थायी बनाये रखने और हमेशा सौन्दर्य वृद्धि करनेका असली उपाय है—शरीर और स्वास्थ्यकी रक्षा। जितना शरीर स्वस्थ होगा उतना ही वह सुंदर होगा। अपने सौन्दर्यको स्थायी बनाकर तुम सदैव पतिप्रिया बनी रहोगी।

(३) सतीत्व—सतीत्व नारीका सबसे बड़ा धन है। पतिको अपनी मधुर वाणी और सच्ची सेवासे यह विश्वास दिलाती रहे कि वह सदा उसकी है। बुरी वस्तुओंका शौक, मद्यपान, बुरे लोगोंकी संगति, परपुरुषसे मिलना, बोलना या हंसना पर पुरुषके साथ ज्यादा समय रहना, बेकार कितावें पढ़ना, रद्दी सिनेमा देखना, पर-गृहमें निवास, यौवनावस्थामें दूसरोंके यहां रहना या अधिक जाना आना, पतिसे अलग रहकर इधर उधर घूमना—ये स्त्रियोंके सबसे बड़े दोष हैं जो उन्हें पतनकी ओर ले जाते हैं। हर नारीको इन दोषोंसे बचकर रहना चाहिये।

गृह लक्ष्मी !

पतिगृहमें आनेके थोड़े समय बाद ही नारी घरके जीवनमें अपनेको लीन कर देती है और वह एक साधारण नारीसे गृहलक्ष्मी बन जाती है। गृहलक्ष्मी बननेके बाद प्रत्येक नारी का शिष्टाचारका ज्ञान अवश्य रखना चाहिये। प्रातःकाल पतिके उठनेके पूर्व उठकर घरके बड़ोंको पहिली बार मिलने पर प्रणाम करना चाहिये। यदि घरमें नौकर नहीं है तो स्वयं झाड़ू आदिके काममें सासकी मदद करनी चाहिये। ज्यों ज्यों ससुरालके रङ्ग-ढङ्ग से परिचित होती जाओ, त्यों त्यों घर-बारके प्रवन्धको अपने हाथमें लेते जाना। मान मर्यादासे बैठना उठना। आदर पूर्वक और विनयके साथ बातें करना। सबसे प्रेम पूर्वक हिल मिलकर रहना।

कांवर-वाही

चल पड़ा उठा कर कांवर मैं,
दो प्यारे शब्दोंका प्यासा !
कन्धे पर दोनों ओर भार,
आगे है फैला पथ अपार।
बस इतनाही है आज ध्यान,
कब कैसे पहुंचू देव-द्वार।
वह अपने हाथों ले उतार,

यह भार यही है अभिलाषा।
बजती चलती घण्टी टन टन,
मैं दौड़ रहा उन्मन उन्मन।
आह्लाद कभी अवसाद कभी,
यह भी दो क्षण वह भी दो क्षण !
रोना हंसना, गिरना उठना,
बस यह जीवनकी परिभाषा !

झोलीमें थोड़ा सा चावल,
इतना ही है पथका संबल।
चुल्लूसे होता नीरपान,
बाहों पर सिर रख कर विहान।
चलते जाना बढ़ते जाना,

जबतक श्वांसा तबतक आशा।
छूटे जाते घरबार नगर,
छूटे कितने बनबाग डगर।
कितने छमछम पनघट छूटे,
कितने खमखम मरघट छूटे।
आते जाते हैं दृश्य सभी,
पर्दे पर एक तमाशा सा।

वह पथ है यह मैं राही हूं,
मैं क्या हूं कांवरवाही हूं।
मत पूछ कि कांवरमें क्या है,
है भार किसीका बोझा है।
मत मुझे टोक री अग-माया,

रहने दे अपनी जिज्ञासा।
मैंने कब चाहा था कांवर,
कब मांगा यह जीवन दुस्तर।
है कठिन सांसका लेना भी,
कंटकमय मग, है धूप प्रखर।
निष्फलताका अभिशाप लिये,
मैं आज काव्यमय दुर्वासा।

—'कर्मशील'

सिनेमा—

हमारी फिल्में युगके अनुकूल क्यों नहीं?

आधुनिक फिल्मों के सम्बन्धमें क्या लिखा जाय, समझमें नहीं आता। केवल एक ढर्रेके प्रेमको चित्रित करनेवाली फिल्में तैयार होती हैं और हो रही हैं। गत चार पांच वर्षों में संसारमें महान परिवर्तन हुए, भारत भी उनसे अछूता नहीं रहा यहां भी समाजके विभिन्न अवयवोंमें परिवर्तन हुए। लेकिन इस परिवर्तनका हमारी फिल्मों पर तनिक भी प्रभाव नहीं है। साहित्य क्षेत्रमें अवश्य यत्र तत्र कुछ परिवर्तन हुए हैं लेकिन फिल्म और रंग मचमें कोई परिवर्तन नहीं हुए हैं।

विश्वव्यापी महान युद्धका प्रभाव हमारे देश पर भी पड़ा। चोरबाजारी और चीजें छिपा कर ऊंचे दामोंमें बेचनेकी प्रवृत्ति बढ़ी।

अकाल पड़ा लाखों आदमी अन्न अन्न चिल्लाते चिल्लाते सदाके लिये चल बसे। लेकिन दूसरी तरफ कुछ मुट्ठी भर लोग हजार पतिसे लखपति और लखपतिसे करोड़पति बन गये। महायुद्ध बन्द हुआ लेकिन अकालके भाई बन्धुओंकी चोर बाजारी बन्द न हुई। जनताने सोचा अब नया जमाना आया है, सब ठीक हो जायगा। अन्य देशोंके फिल्म निर्माताओं और साहित्यिकोंकी भांति हमारे देशके साहित्यसेवी और फिल्म निर्माता अपने रवैयेमें अवश्य परिवर्तन करेंगे और जनताके मनोभावों का चित्रण करेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आज भी पहले जैसी पिटेपिटाये प्रेमकी फिल्में चल रही हैं। मजदूर, उदयेर पथे आदि फिल्मोंको लोग नये जमानेकी फिल्में कहते हैं लेकिन मुझे उनमें गत वर्षों में होनेवाले परिवर्तनोंकी तनिक भी झलक नहीं दिखायी पड़ती है। प्रायः देखा जाता है कि पहले जैसी कहानियां ही फिल्मोंमें आ रही हैं। बहुत हुआ तो धनी घरकी कन्या किसी गरीब घरके लड़केसे प्रेम करने लगी। युवक प्रगतिशील और आधुनिक है, मजदूर कार्यकर्त्ता या समाज सेवक है। उन दोनोंके मिलनमें बाधाएं आती हैं। लेकिन सारी बाधा-विपत्तियों पर विजय प्राप्त कर प्रेमिका अपने प्रेमी से मिलती है। बस यही आजकी फिल्मों की प्रगतिशील कहानी है अब सवाल यहहै कि ऐसी फिल्में हालमें बैठे बैठे देखनेमें ही आनन्द देती है या कुछ स्थायी प्रभाव भी छोड़ती हैं। लेकिन मेरी समझसे थोड़ी देरका मनोरंजनही ऐसी फिल्मोंका उद्देश्य हैं।

उदयशङ्कर आक्रमणकारी मुद्रामें

युद्ध मोर्च पर सनिको को प्रोत्साहन देने वाले अमेरिका के कलाकार

मनुष्य द्वारा निर्मित फिल्मोंमें समाजका चित्र क्यों नहीं? मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाजके दुख सुख व्यथा वेदनाके साथ मनुष्यका जीवन जुटा हुआ है। फिर मनुष्य द्वारा निर्मित फिल्म में समाज जीवनके इस द्वन्द्वका इतिहास क्यों नहीं रहेगा।

थोड़ी देरके मनोरञ्जनको ही उद्देश्य बनानेसे कलाका विकास सम्भव नहीं। समाज-कल्याणकी बात प्रमुख होनी चाहिये। सोवियट रूसके श्रेष्ठ फिल्मी कलाकारने कहा है कि "मानव जीवन उसकी अन्तर्निहित वाणीको चित्रित करना ही ललित कलाका उद्देश्य है। कलाकार यदि इस उद्देश्य पूर्तिमें असफल होता है तो उसकी कलाकृति सफल नही मानी जा सकती।" भारत की एक भी फिल्म शायद ही इस कसौटी पर खरी उतरे। फिल्मी कलाकार चाहे तो अपनी फिल्मोंके द्वारा समाजको भलाईके मार्ग पर खड़ा कर सकता है। लेकिन हमारे कलाकार इस मामलेमें चुप क्यों हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे फिल्मी संसारमें अधिकांश कलाकार प्रतिक्रियावादी हैं। जो फिल्में बनाते हैं और जो उसके निर्माणमें भाग लेते हैं वे साधारण समाज जीवनसे अलग अपना एक संसार बनाकर सीमित दायरेमें रहते हैं। समाज और वाह्य संसारमें चलने वाले मनुष्यको दैनिक संग्राम और जीवन प्रवाहसे इनका कुछ भी सम्बंध नहीं। इसीलिये इनकी फिल्मों पर सामाजिक

चन्द्रप्रभा

जीवनकी कोई छाप नहीं रहती है। वे नहीं समझते या समझना नहीं चाहते कि सामाजिक मनुष्य क्या चाहता है। अब जनता थोड़ी देर तक मनोरञ्जन करने वाली फिल्में देखना नहीं चाहती है वह चाहती है अपनी समस्याओंसे भरे जीवन के यथार्थ चित्र।

हमारे देशमें फिल्म बनाने वाले विलासी अभिजात्य वर्गके लोग हैं। उनका दृष्टिकोण गलत है और वे जनताकी वास्तविक स्थितिसे अनभिज्ञ हैं। साथ ही हमारे देशमें इस सम्बन्धके उपयुक्त साहित्यका अभाव। साहित्यके आधार पर ही अच्छी फिल्मोंका निर्माण होगा। लेकिनसाहित्यिक भी तो अपने साहित्यमें समाज जीवनका सही सही चित्रण नहीं कर पा रहें हैं

मुमताज शांति मोतीलाल

द्विवेदी युगमें जिन साहित्यिकोंने लेखनी उठायी थी आज वे बेकारसे नजर आते हैं। युद्धोत्तर कालमें भी वे वही लिख रहे हैं जो उन्होंने युद्धके पूर्व लिखना प्रारम्भ किया था। आज नये साहित्यकी आवश्यकता है। कहानी साहित्यकी उन्नति न होन पर अच्छी फिल्मोंका निर्माण संभव नहीं। एक असुविधा यह भी है कि पूंजीपतियोंके सहयोग से फिल्में बनतीं है और पूंजीपति यह सोचता है कि पैसा आना चाहिये। कला जाय जहन्नुम में। इस तरहके शोषकोंके हाथसे फिल्म-कलाको बचाना पड़ेगा और उसका राष्ट्रीयकरण करना पड़ेगा।

—एक दर्शक

क्लोरोफार्म

—:*:—

मेडिकल प्रोफेसर जेम्सयंग सिम्पससन ने ४ नवम्बर सन् १६४७ में क्लोरोफार्म का अनुसंधान कर मनुष्य जातिको आपरेशन इत्यादि का कटु अनुभव करनेसे रक्षा की। किन्तु यंग का यह कोई नया प्रयोग न था, २०००, वर्षों से ही जड़ी बूटियां द्वारा बेहोश करनेका प्रयत्न किया जा रहा था। १६ वीं सदींके मध्य तक उचित मात्रामें औषधियों का प्रयोग न हो सका था। बुद्धिमान सर्जन असफलता और विपत्तियोंसे डरकर उन्हें काममें न लाते थे। बेचारा मरीज उन दिनों सिर्फ पीड़ा से बेहोश होकर ही शांति प्राप्त कर सकता था।

जब सर्व प्रथम क्लोरो फार्म का अविष्कार हुआ तब सिम्पसन और उसके साथी खाना खाने बैठे हुए थे। उन्हें एकाएक याद आया कि उन लोगोंने जिस रासायनिक मिश्रणको बनाकर फेंक दिया था शायद वह सफल हो जाय। तुरन्त उन लोगोंने उसे ढूंढ़ना प्रारम्भ किया। आखिर रद्दी कागजों के एक ढेर के नीचे वह मिल ही गया उसे (टम्बलर) एक प्रकार के गिलासमें प्रयोगके लिये डालकर सिम्पसन और उसके साथी बैठे। उसकी भापसे सिम्पसन बेहोश होने लगा। साथियोंने प्रयोगको सफलीभूत होता देखा और खुद भी बेहोश होने लगे।

सिम्पसनको अज्ञानता सबसे पहले दूर हुई। उसने देखा कि उसके साथी इधर उधर लुढ़के पड़े हैं। कोई खर्राटे भर रहा है। इसके कुछ ही दिन बाद सिंपसन ने इसका तीन रोगियों पर आपरेशनके समय सफल प्रयोग किया। इसके बाद इसका काफी प्रचार हुआ। यहां तक कि सन १६५३ और १६५७ में प्रिंस लियोदोल्ड और प्रिंसेज बिट्रीस

पर भी दो बार प्रयोग किया गया था।

सारा संसार सिम्पसनके इस महान दानका कृतज्ञ है। अभी हालमें इस महान व्यक्तिकी पुण्य तिथि मनायी गयी।

* * *

गांधीजीकी प्रिय बकरी 'निर्मला का देहान्त हो गया। बड़े बड़े नेताओं और राजनीतिज्ञोंसे इसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सर स्ट्रेफर्ड क्रिप्स और पण्डित जवाहर लाल नेहरू तो उसे बहुत चाहते थे।

* * *

पश्चिमी और पूर्वी पञ्जाबकी सरकार मुसलमान और हिन्दू—सिख कैदी आपस में बदलेगीं।

* * *

राजनीतिके अखाड़ेमें कितने तरहके दांव-पेच चल सकता है इसका पता तब लगा जब बिहार शरीफ के हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ताओंने 'बेलट बक्स'में (जिसमें वोट डाले जाते हैं) तेजाब छोड़ दिया।

* * *

ब्रेजील के रियोडी जेनेरियो नामक स्थानसे विचित्र समाचार प्राप्त हुये हैं। वहां के कई बीमार और पंगु लोगोंने रातों रात आरोग्यता प्राप्त कर ली है। कहा जाता है कि एक पादरी जिसे आशीर्वाद दे देता है वही चङ्गा हो जाता है। अमेरिकाके समाचार पत्रोंमें इसकी धूम मची हुई है। अन्धे लङ्गड़े, बहरे व्यक्तियोंके चित्रोंके साथ समाचार प्रकाशित हुए हैं।

इस पादरीके गांव तक जानेके लिये लोग पचासगुना और सत्तर गुना बस भाड़ा देकर १८ घण्टे की यात्रा करते हैं। इसके घरके सामने हजारों व्यक्तियों की भीड़ लगी रहती है। दिनमें कई बार यह पादरी अपनी खिड़की पर निकलकर भीड़को आशीर्वाद दिया करता है। कहा जाता है कि इसके हाथ उठाते ही लोग

बम्बईके मानोनीत गवर्नर सर महाराज सिंह

लोगोंकी परीक्षा कर इन्हें पूर्ण रूपेण आरोग्य बताया है।

गुंटूर नामक दक्षिणी भारतके स्थान में ८ मुसलमानोंने स्वेच्छासे हिन्दू धर्म ग्रहण किया है।

* * *

बिना दाढ़ीका सिख कृपाण रख सकता है या नहीं? इस विषयको लेकर शिमला की अदालतमें मामला चल रहा है।

* * *

समुद्री जलसे धातु बनाकर अंग्रेज हवाई जहाज बना रहे हैं। यह धातु अलमुनियमसे भी हल्की है।

* * *

मद्रास असेम्बलीमें बड़ा ठहाका लगा जब बेगम अमीरूद्दीनने प्रीमियरसे पूछा कि सरकारी कर्मचारियो के लिये कौन सी विशेष वेशभूषा ठीक की जा रही है प्रधान मन्त्रीने जब सदस्योंकी राय मांगी तो बेगम अमीरुद्दीनने पं० नेहरू की वेशभूषाको सरकारी कर्मचारिओं के उपयुक्त बताया और कहा कि यह शेरवानी और पायजामा सरकारी कार्यालयोंमें विशेष रूपसे सुन्दर लगेगा।

—:—

कवियोंकी पनिहारी

(चौथे पृष्ठका शेषांश)

दूसरी ब्रज गोरियोंके साथ आही तो गयी--

सीख सिखाई न मानत है,
बरहू बस संग सखीनके आवै।
खेलत खेल नये जल में,
बिन काम वृथा कत जाम बितावै।
छोरिके साथ सहेलिन को,
कहिये यहि कौन सवाद दिखावे।
कौन परी यहि बान अरी,
नित नीर भरी गगरी ढर कावे।

इन हरकतोंकी जिम्मेदारी भोली पनिहारी पर नहीं यह वह बेचारी कहे कैसे।

प्रेम सम्मोहनका यह अनुभव जरा पाठक भी अपने हृदयमें करें और फिर रसखानकी कल्पनामें डुबकी लगावें—

भूल्यो गृहकाज लोक लाज मन मोहनी की,
मोहनको भूलि गयो बांसुरी बजायबो
कहै रसखान दिन द्वैमें बात फैल जैहै
कहां लौ सयानी यह हाथन छुपाइबो।
कालिहो कलिंदी तीर चितये अचानक'
दोउनको दोउनसौं मुरि मुसकाइबो। दोऊ
परैं पइयां, दोऊ लेत हैं बलैया,
उन्हें भूलि गई गइयां इन्हें गागरि उठाइबो

जब यह हुआ तो सनेहकी गांठ दिन प्रतिदिन कसतीही क्यों न जाती ? आखिर एक दिन ऐसा भी आया जब पनिहारी को अपनी सफाईमें कहना पड़ा—

अलि, हौं तो गई जमुना जलको सु कहा कहौं वीर विपति परी। घहरा के कारो घटा उनयी, इतनेहीमें गागर सीस धरी। रपट्यो पग घाट चढ़ौ न गयो कवि 'मंडन' ह्वैके विहाल गिरी। चिरजीवहु नन्दको बारो अरी, गहि बांह गरीबनै ठाढ़ी करी।

लेकिन सर्वज्ञ सखियोंके सामने पनिहारीकी सफाई बहुत कारगर नहीं हुई। आखिर रहस्योदघाटन होही तो गया—

चाख्यौ कै पिऊस अभिलाख्यो कै अनन्द उर, भाख्यौ न बनत 'रस' औरे जो कपट मैं। धरत कहूं को पाइ,परत कहूंको जाइ, करत कला तू माइ, जैसी नाहि नटमें।

जानन दुराव तू अजान न दुराव अहे मेरे जानु आई आज कारेकी झपट में। कालिन्दीके तीर तूं अकेली तज भीर वीर, लेन गई नीर, भरि लाई नेह घटमें।

पानीकी जगह घड़ेमें नेह भरनेवाली पनिहारिन कैसी होगी,इसकी कल्पना ब्रजभाषाके रसिक कवियों के सिवा और कौन कर सकता है।

देशी रियासतों में—

(१२ वें पृष्ठ का शेषांश)

(पाकिस्तान) का अंग्रेज गवर्नर कनिंघम काश्मीर पर आक्रमण करनेवालोंको सहायता पहुंचा कर ब्रिटेन तथा पाकिस्तानका भला कर रहा है।

दिल्ली वार्ताका निष्कर्ष नहीं ज्ञात हुआ है। लेकिन थोड़ी प्रगति हुई बतायी जाती है। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली पाकिस्तान वापस लौट कर अपनी सरकारसे विचार विमर्श करेंगे और उसके उपरांत आगे होनेवाली वार्तामें अन्तिम निर्णय हो जायगा। शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला अभी दिल्लीमें ही हैं और भारत सरकारके प्रधान मंत्री पंडित नेहरू तथा अन्य मन्त्रियों एवं महात्मा गांधी आदिके साथ काश्मीरकी स्थिति पर बातचीत कर रहे हैं। भारत सरकारकी ओरसे काश्मीरकी उन्नतिमें पूर्ण सहयोगका आश्वासन मिला है। काश्मीरकी रक्षामें भारतीय फौजें दत्तचित्त हैं। विजय काश्मीरकी होगी यह स्पष्ट है।

मं० ७

सम्पादक—देवव्रतमिश्र। ७५ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेक्ट्रिक इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन
के ३५ वें बम्बई अधिवेशनके अध्यक्ष
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

समय का महत्व
फौज में - नौ सेना में

शान्ति और युद्धकालमें, असंख्य-हजारों 'वेस्ट एण्ड' घड़ियां स्थल, जल और हवाई सेनाके सदस्यों तथा सर्वसाधारणको वेची गयी हैं। प्रत्येक कार्य क्षेत्रमें शारीरिक एवं जलवायुकी विषम परिस्थितियोंमें भी ये घड़ियां श्रेष्ठ निर्भरता और ठीक समय देनेकी दृष्टिसे सर्वोत्तम प्रमाणित हुई हैं। सैनिकोंके आदर्श के अनुसार 'वेस्ट एण्ड' घड़ी ही खरीदिये। प्रत्येक रुचि और आर्थिक क्षमताके योग्य विपुल स्टाक शीघ्र प्राप्त होनेकी आशा है।

वेस्ट एण्ड वाच कं०, बम्बई और कलकत्ता

WEST END WATCH Co.
BOMBAY CALCUTTA

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट
ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)
व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताज़ी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शिशियां हैं
सोल एजेन्ट्स :
एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

विश्वमित्र

सम्पादक—
देवदत्त मिश्र

वर्ष—३० संख्या—४६ ता० ३१ दिसम्बर १९४७ 31st December, 1947. मूल्य =) वार्षिक ६)

घिर घिर उठते आज सघन घन!

गीले पंखोंको सहलाते,
नीड़ों में पंछी सुख पाते,
भीग रहे तृण, तरु औ' पल्लव
जल बना वसुधा का कण-कण!

मेरे उर में भी घन छाये,
स्मृतियों के शिशु हैं दुलराये,
क्या व्याकुल बन गया न जाने,
मेरे प्राणों का यह स्पन्दन!

आंसू से ये गाने गीले;
सूखे पत्ते से हैं पीले,
मोह सकेंगे कैसे जग को,
ले कर व्याकुल उर का क्रन्दन!

निशिदिन मेरी एक प्रार्थना,
जीवन की है मधुर साधना,
अपने दुख सुख भूल, पा सकूं
मैं अपनी आत्मा का चिरधन!

—सुश्री तारा पाण्डे

कवियोंकी पनिहारी

श्री ब्रजकिशोर वर्मा श्याम

कवि मानसमें पनिहारी और उसके पनघटको अभिनन्दनीय स्थान प्राप्त है। सदैवसे ही ये दोनों चीजें रसिक कवियोंकी कल्पनाको आकर्षित करती रही हैं। हिंदीके आदि कवि चन्द बरदायीसे लेकर सुमित्रा नन्दन पंत तक कोई ऐसा विरलाही कवि रहा होगा जिसको पनिहारी की छलकती हुई रस गागरीने मोहित न किया हो। ब्रज भाषाके रसज्ञ शृंगारी कवियों की तो सारी कला और कल्पना पनिहारी की रूप रस माधुरी पर निछावर है। केशव, देव विहारी पद्माकर और रसखानकी कविताएं पनघट जानेको मचलती हुई अज्ञात यौवना, उसकी राहमें कुलेल करती हुई रूप गर्विता, कूएंके घाट पर चांदनी बिखेरती हुई वंचन और क्रिया विदग्धा, लौटती हुई अनुशयाना और गुप्ताकी रस चेष्टामें सराबोर हैं ब्रज भाषाके कवियोंका पनघट रूप रस काकेन्द्रबिन्दु है। इसघाटपरजी भर कर लजाती हुई मुग्धा और झिझकती हुई मध्या दोनोंका आप दर्शन कर सकते हैं। और प्रौढ़ा वह तो पनघट की रानी है। उसकी गागरमें रसिकोंके प्राण भरे हैं। जलसे भरी गगरी के साथ प्रवीणोंके दिल उसकी पकड़के ऊपर खिंचते चले जा रहे हैं। उसका मुड़ कर मुसकाना, कमलोंकी सृष्टिका कारण हो जाता है। इसीलिये किसी पकी उम्रवाले कविने कहा है—

पनघट कबहु न बैठिए
पनिहारी को ठाम
पनघट बैठे पत घटै
पनघट जाको नाम

लेकिन इस अनुभवी उक्तिको अ… कौन ध्यान देता है।। इस ओर न तो र… रस लोभी नागरिकोंने ही ध्यान दि… और न हठीली पनिहारीने ही अपनी स… की इस शिक्षाकी कोई परवाह की—

लाज घट जैहै, गृह काज घट जै…
सुख साज घट जैहै, रूप राग घट जाय…
कानि घटि जैहै, मृदु बानि घट जै…
सकु चानि घटि जैहै,उर ज्ञानघटि जाय…
रसिक विहारी ढीठ छैल सब ही को छ…
ताकी छबि देख पति धर्म घटि जाय…
तन घट जैहै, अरु मन घट जैहै अ…
पनघट जैहै ताको पन घट जाय…

रसिक बिहारी महाराज आप च… जितना भी उपदेश दें, धमकी दें आ… दें कुलकी कान और पति व्रत धर्म… दुहाई दें, सब शिक्षाओंके बावजूद… ब्रज भाषाके कवियोंकी यह प्रिया प… हारी अवश्य पनघट पर जायगी ! आप… क्या पता कि उसे इस घाट पर क्या … मिलता है ?

उधर देखिये चोरीसे बरजोरीसे

(शेष ३८ वें पृष्ठ पर)

परहित बस जिनके मनमानी।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

समझौतेंसे नहीं

मानव जातिका सम्पूर्ण इतिहास जिस प्रत्यक्ष सत्यका गवाह है उस पर तर्ककी गुंजाइश नहीं है। और वह प्रत्यक्ष सत्य यह है कि आजतक संसारमें धर्म की शक्ति अर्थात अहिंसा और प्रेम कभी शान्ति और व्यवस्था स्थापित करनेमें सफल नहीं हुए। सैन्य बल और शस्त्रादि हिंसात्मक साधनोंसे प्रतिपादित कानूनके बल पर ही शान्ति कायम की जा सकी है। ईसाई बहुत हुए पर ईसाइयत कितनों-में आयी? बौद्ध भी कम नहीं हुए पर कितने आदमी बुद्ध धर्मको मान कर उसके अनुसार चलते हैं? आजके जमाने में गांधी भक्तोंकी भी कमी नहीं है किन्तु कितने गांधी पंथके अनुयायी हैं, यह तो प्रत्यक्ष ही है। सिद्धान्त कितनाही सुन्दर क्यों न हो किन्तु मानव जातिका अबतक-का इतिहास इस बातका पर्याप्त प्रमाण है कि दुनिया बुद्ध, ईसा और गांधीके पथ पर चल सकनेमें असमर्थ है। इसी लिये भगवान कृष्णने संसारको यह उपदेश दिया कि दुष्टका दलन करनेके लिये मनुष्य हथियार उठाये, शस्त्रास्त्र धारण करे तभी संसारमें धर्म राज्यकी स्थापना हो सकती है।

यह प्रमाणित और स्वतः सिद्ध तथ्य है कि राष्ट्रोंके बीचमें होनेवाले युद्धोंको बन्द नहीं किया जा सकता क्योंकि युद्ध-मानव स्वभावमें है। युद्धकी स्थिति उत्पन्न करने वाले कारण एक नहीं अमित हैं, अतः यह कल्पना करना कि उन सब कारणोंको मिटाया जा सकता है अस-म्भव कल्पना है, मानव साध्यके बाहर है। पाकिस्तान और भारतकी समस्या पर विचार करते समय इस तथ्यको स्मरण रखना चाहिये। इसके साथ साथ यह भी स्मरण रखना चाहिये कि पाकिस्तानका राज धर्म—इसलाम—अहिंसा और प्रेमके बल पर नहीं तलवारके बल पर दुनियामें फैला। पाकिस्तानी तलवारके कायल हैं। तलवार हीसे उनको समझाया जा सकता है। काश्मीरके नेता शेख अब्दुल्ला इस तथ्यको समझते हैं, इसीसे उन्होंने कहा कि काश्मीरकी समस्या समझौतेसे नहीं तलवारसे सुलझायी जायेगी। हम चाहते हैं कि हमारे नेता भी इस तथ्यको समझें।

काश्मीरमें शेख अब्दुल्लाकी तलवारने पाकिस्तानी तलवारकी धारको जब कुंठित कर दिया तब उस पर शान रखनेके लिये समयकी आवश्यकता हुई और इसीलिये दिल्ली लाहौरमें सम्मेलनका तांता लगा हुआ है। क्योंकि शेख अब्दुल्लाने काश्मीरियोंके देश-प्रेमकी जिस उच्च भावनाको अपने ओजस्वी भाषणों और आवेगमयी वाणी द्वारा जाग्रत और उदबुद्ध किया है जबतक उसे उनकी निकृष्ट भावना जगा कर दबा नहीं दिया जाता तबतक पाकिस्तानका झण्डा काश्मीर पर गड़ नहीं सकता और इस निकृष्ट भावनाको जगाने के लिये दीन इसलामका सहारा लेनेके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। पाकि स्तानी समझते हैं कि देश प्रेमके अमृतको इसलामके नाम पर डाला गया एक बूंद विष नष्ट कर सकता है बशर्ते कि इस कामके लिये कुछ समय और सुविधाएं मिलें। ये सम्मेलन—हर्षकी बात है कि लाहौरकी तरह दिल्ली सम्मेलन भी असफल हो गया और भरत सरकार पाकिस्तानके फन्देमें नहीं आयी,—पाकिस्तानके इन दोनों मतलबोंको सिद्ध करनेमें सहायक हो रहे है। सरहदी लुटेरोंको ये सम्मेलन आजाद काश्मीर सरकारके प्रतिनिधिका रूप देकर प्रकारान्तरसे उनका मान बढ़ा रहे हैं,शेख अब्दुल्लाका प्रभाव घटा रहे हैं। सीधे हमलेकी नीति अपनाने वाले इन लीगियोंसे,-जिनको दरअसल आज जर्मनी, इटाली और जापानके नाजियों और फासिस्टोंकी तरह अन्तर्राष्ट्रीय न्याया-लयके सामने मानवताका गला घोंटनेका क्रूर अपकर्म करनेका जवाबदेह बना कर विचारार्थ उपस्थित किया जाना चाहिये था पर जो ब्रिटिश कूटनीतिके परिणाम स्वरूप पुरस्कृत हो कर आज एक स्वतंत्र देशके कर्ता धर्ता और नियन्ता बने बैठे हैं—तलवार छोड़ समझौतेके रास्ते पर चलनेकी आशा नहीं की जा सकती। परि-स्थितियां जबतक प्रतिकूल हैं तबतक धूर्त्त मनुष्य अपने प्रतिद्वन्द्वीको सन्तुष्ट करनेके लिये सदा सब कुछ करनेको प्रस्तुत दिखायी देता है। मनुष्य हो या राष्ट्र उसकी साधुताजन्य दुर्बलता कभी कभी उसके लिये प्राण घातक हो जाती है और धूर्त इस स्थितिसे सदा नाजायज फायदा उठानेकी ताकमें रहते हैं। हर्षकी बात है कि हमारे नेता इस तरफसे सतर्क हैं और वे इस स्थितिसे जरा भी हटनेको तैयार नहीं है कि लुटेरे आक्रमणकारी पाकि-स्तानकी सहायतासे पाकिस्तानके रास्ते काश्मीर और जम्मू पर हमला कर रहे हैं। पाकिस्तानका यह आचरण अन्त-र्राष्ट्रीय कानूनका उल्लंघन है, यह बात हमारे प्रधान मंत्री अपने ब्राडकास्ट भाषण में स्पष्ट कह चुके हैं। पर दुर्वृत्त आत-तायी अंतर्राष्ट्रीय कानूनकी मर्यादा रखने लगे तो फिर कोषसे यह शब्दही न उठ जाये? उसने सदा अपनी महत्वाकां-क्षाओंको ध्यानमें रखा है भलेही उसका यह काम पड़ोसीके साथ शत्रुताचरण हो या संसारके साथ।

इस बातके पर्याप्त प्रमाण पाये जा चुके हैं कि स्यालकोट और झेलमका निकट प्रदेश आक्रमणकारियोंका केन्द्र स्थल है। पाकिस्तान केवल समय निका-लने और भारतसे आर्थिक सहायता एवं अन्य सुविधाएं पानेके इरादेसे ... मामलेको भी इन सम्मेलन... रहा है। पर काश्मीरकी

स्तानने जो कदम बढ़ाया है उसे जरा भी पीछे हटानेको वह तैयार नहीं है। काश्मीरको पाकिस्तान अपनी जीवनडोर समझता है। वह जानता है कि काश्मीर को अपने अधिकारमें रख कर ही वह भारतके लिये सदा एक खतरा बना रह सकता है और तभी वह हर मामलेमें भारतसे इच्छानुकूल शर्तें मनवा सकता है। अतः इस दृष्टिसे भारत सरकार के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि काश्मीर पर पैर-रख कर पाकिस्तान सदा भारतके लिये एक खतरा बने, इसके पहले ही पूरी ताकतके साथ काश्मीरकी समस्या तलवारके बलसे सुलझा डाली जाये। इस स्थितिमें सिक्यूरिटी कौन्सिलके सामने इस मामलेको ले जाना व्यर्थ है, दुश्मनका ताकत बढ़ानेका मौका देना है, इसलामकी आवाजको बुलन्द करके काश्मीरियोंको शेख अब्दुल्लाके नेतृत्व और प्रभावसे दूर खींच ले जानेका अवसर प्रदान करना है।

१९४७—

यह वर्ष बड़ा शुभ और अशुभ बीता। भारतवर्ष स्वतंत्र हुआ पर दो खण्डोंमें विभक्त हो गया और इस तरह उसका एक भाग विदेशी बन गया। स्वतन्त्रताको पञ्जाब और बङ्गालके नागरिकोंके रक्तसे स्नान कराया गया। जूनागढ़ और हैदराबादने पैंतड़े बदले। काश्मीर पर आक्रमण किया गया। पश्चिमी पञ्जाबसे प्रायः सभी हिन्दू भारत चले आये और पूर्वी पञ्जाबसे प्रायः सभी मुसलमान पाकिस्तान चले गये। यह सब होनेके बावजूद भी भारत और पाकिस्तानके बीच एक आर्थिक समझौता हो गया है, पर कहा नहीं जा सकता कि पाकिस्तानकी काश्मीर नीतिको देखते हुए यह समझौता स्थायी होगा या नहीं। इन सब दुर्घटनाओंके बावजूद सालका तलपट शुभ ही रहा, क्यों [illegible]न्त्रताका मूल्य बहुत बड़ा है, बशर्ते [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय विनिमयके [illegible]ख सकें। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे १९४७ का तलपट शुभ नहीं कहा जा सकता। तीन महानोंके बीचमें युद्ध समाप्त होते ही खाई पड़ गयी थी वह उत्तरोत्तर चौड़ी होती गयी और अन्तमें वे लंदनमें दो दलोंमें विभक्त हो गये। युद्ध की चर्चा जोरों पर है। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस एक तरफ और रूस दूसरी तरफ है। संयुक्तराष्ट्र संघ तीन महानों के आपसी संघर्षके कारण मजबूत नहीं हो सका और अब तो अमेरिका और ब्रिटेनके नेतृत्वमें उसका भी रूपान्तर हो गया है। रूस इससे अलग है। उसने भी पूर्वी यूरोपके ९ राष्ट्रोंको लेकर तीसरे कमिण्टर्नको नये रूपमें जीवित किया है। यूनानमें विद्रोही सरकारकी स्थापना इस बातका सङ्केत है कि यूरोपमें रूस विरोधी प्रत्येक देशमें इसी प्रकारकी स्थिति उत्पन्न करके उस देशकी सरकारको गृहयुद्ध में लिप्त करनेकी चेष्टा की जायेगी, यदि अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसने रूसके विरुद्ध मोर्चेबन्दी की। गृह युद्ध धीरे-धीरे क्या रूप धारण कर सकता है यह चीनके गृह युद्धसे समझा जा सकता है। मध्य पूर्वकी स्थिति फिलस्तीनके विभाजनसे पहलेसे अधिक संगीन हो गयी है। अरब राज्य सैन्य और शस्त्र संग्रह कर रहे हैं। तीन महानोंका वैमनस्य क्या रूप धारण करेगा, मध्यपूर्वका भविष्य बहुत कुछ इस पर निर्भर है। सुदूर पूर्वमें जापान प्रायः पूर्णतया अमेरिकाके चंगुलमें आ गया है। हिन्देशिया, हिन्द चीनकी समस्या संयुक्त राष्ट्र संघकी दुर्बलतासे ज्योंकी त्यों है और धीरे धीरे साम्राज्यवादी इस अंचल पर अपनी स्थिति मजबूत करनेमें लगे हैं। बर्मा स्वतन्त्र होने जा रहा है, सीलोन और मलायाको उत्तरदायित्व पूर्ण शासन की ओर एक कदम आगे बढ़ाने वाले सुधारजारी किये जा रहे हैं। दक्षिणअफ्रीका की जातीय विद्वेषनीतिमें कोई अन्तर नहीं आया। इसके लिये भी तीन महानों का आपसी मत भेद जिम्मेदार है। स्मट्स जैसा धाकड़ राजनेता समझता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ उसे दबा नहीं सकता। आस्ट्रेलिया और कनाडा बदस्तूर अपनी पूर्व स्थिति बनाये हुए हैं और अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें इनकी दिलचस्पी इतनी ही दूर तक है कि जहां तक सम्भव हो सबके साथ सद्भाव बनाये रख कर संसारमें समुन्नत जीवन यापन करना। रङ्ग-विद्वेष इस दिशा में बाधक होगा, यह ये महसूस कर रहे हैं और तदनुकूल नीति ग्रहण करनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

अमेरिकाकी संसार पर आर्थिक साम्राज्यवाद लादनेकी प्रचण्ड अभिलाषा का ही यह परिणाम है कि १९४७ में रूस इन लोगोंसे बहुत दूर हो गया है। अणुबमके अधिकारने अमेरिकाको पहलेकी अपेक्षा अधिक युद्ध शील बना दिया है और इन सब कारणोंको देखते हुए १९४७ संसारको तीसरे विश्वयुद्धके समीप पहुंचाने में सहायक बने तो आश्चर्य क्या है।

दिल्ली वार्ता असफल—

गत सप्ताह दिल्लीमें भारत और पाकिस्तानके राज नेता एकत्र हुए यह विचार करने को, कि किस उपायसे दोनोंके बीच सौहार्द और मैत्री कायम की जा सकती है। यह पहला ही प्रयास नहीं था। दो सप्ताह पहले लाहौरमें इस प्रयासका सूत्रपात किया गया था। अन्य सब मामलों में तो कुछ गुंजाइश दिखायी दी पर काश्मीरके मामले पर पहुंचते ही वास्तविकता सामने आ गयी और वार्तालाप भङ्ग हो गया। पाकिस्तानमें शासन और व्यवस्था सम्बंधी दुर्बलताएं तो पाकिस्तानियोंको बाध्य करती हैं भारतके साथ मिलकर मित्र पड़ोसीकी भांति रहनेको पर औरङ्गजेबी स्वप्नको पूरा करनेका महत्वाकांक्षा, हिंदूकुशसे लेकर कन्या कुमारी तक इसलामी झण्डा फहरानेकी तमन्ना हर बातचीतमें सामने आ जाती है और काश्मीर पहुंचते पहुंचते यह तमन्ना इतनी प्रचण्ड हो उठती है कि समझौतेकी बातचीत इसी जगह टूट जाती है। काश्मीरका प्रश्न ही इस समय

सबसे जबर्दस्त रोड़ा बन कर इन दोनों पक्षोंके बीचमें मेलके रास्तेमें पड़ा हुआ है। किंतु जब तक पाकिस्तान अपनी मौजूदा नीति बरतता रहेगा काश्मीरके मामलेमें समझौता नहीं हो सकता। भारत की स्वतंत्रताकी रक्षाकी दृष्टिसे काश्मीर का वहीं महत्व है जो इङ्गलिश चैनेलका ब्रिटेनके लिये है। अतएव हम समझते थे कि एक ओर पवित्र आवश्यकता और दूसरी ओर भयानक महत्वाकांक्षाके मामलेमें समझौता असम्भव है और वही हुआ। भारतका पक्ष इस मामलेमें स्पष्ट है। सङ्कटके समय भारत काश्मीरका साथ नहीं छोड़ सकता। वह यह जानता है कि काश्मीरमें शेख अब्दुल्लाका नेतृत्व है, अतः आ फिर वह भूल नहीं दुहरायी जा सकती जो एक बार लीगके सम्बंधमें की जा चुकी है। काश्मीर नेशनल कानफरेन्सका महत्व और प्रधानता नष्ट करके उसका स्थान लीग प्रभावित मुस्लिम कानफरेन्सको देनेकी चाल इस समझौते वार्तामें भी चली जा रही है। काश्मीर भारतके साथ रहेगा या पाकिस्तानके, यह जाननेका समय अभी नहीं आया। पहले युद्ध बंद होना चाहिये। पाकिस्तान इसके लिये राजी नहीं है। फलस्वरूप काश्मीरसे भारतीय सैनिक तबतक नहीं हटाये जा सकते जबतक एक भी आक्रमणकारी काश्मीरमें रहेगा। पाकिस्तान मीठा मीठा गुप्प कड़वा कड़वा थू वाली नीति चरितार्थ कर रहा है। आर्थिक समझौता करके वह भारतसे सहायता चाहता है, पर काश्मीर पर आक्रमण करनेवालोंको अपनी सरहदसे बढ़ते नहीं रोक सकता। शस्त्रास्त्र और अन्य सहायताएं जो आक्रमणकारियोंको दी जा रही हैं उनको बंद नहीं कर सकता। यह समझौतेका तरीका नहीं है। लेनेके बांट और है देनेको बांट और की नीतिसे समझौता होनेके दिन बीत गये। इस नीतिसे पाकिस्तान बन गया। अब पाकिस्तानको फैलानेके लिये यह नीति काम नहीं कर सकती। इस भावपर समझौतेकी बातचीतको समाप्त करनेके सिवा भारत सरकारके सामने दूसरा रास्ता ही क्या था?

भारतके मुसलमान—

परिवर्तित स्थितिमें भारतके मुसलमानों को क्या रुख पकड़ना चाहिये, यह एक प्रश्न है। इसी सावालको हल करनेके लिये मौलाना अब्दुल कलाम आजादके सभापतित्वमें एक मुस्लिम सम्मेलनका आयोजन २७ और २८ दिसम्बरको लखनऊमें किया गया है। मौलाना आजादका मत है कि भारतमें अब मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्थाकी आवश्यकता नहीं रह गयी [illegible] लीगको तोड़ देना चाहिये। राजनीतिक मामलों में भारतके मुसलमानोंका [illegible] वादी दृष्टिकोण होना चाहिये और देश [illegible] एक नागरिक की भांति उनको आचरण करना चाहिये। राजनीतिक अधिकारों की लड़ाई उनको कांग्रेसमें शामिल होकर लड़नी चाहिये।

भारतके मुस्लिम लीगी भी कुछ-कुछ इसी तरहकी उधेड़ बुनमें थे, लेकिन गत सप्ताह कायदे आजम जिन्नाने पाकिस्तानकी मुस्लिम लीगके सम्बंधमें जो कहा है उससे यहांके मुसलमान असमंजसमें पड़ गये। जिन्ना साहब कहते हैं कि अभी समय नहीं आया कि मुस्लिम लीगको राष्ट्रीय सङ्गठनमें बदल दिया जाये। पाकिस्तानका लोकमत अभी इस स्थितिको स्वीकार करनेको तैयार नहीं है। हमें लोकतंत्रके भुलावेमें न आना चाहिये। वास्तवमें लोकतन्त्रका कोई आधारही नहीं है। जिन्ना साहबका यह वक्तव्य भारतीय मुसलमानोंके लिये गूढ़ संकेत समझा जाता है। लोकतंत्रके भुलावेमें आकर कहीं भारतके मुसलमान लीगको तोड़ न बैठें इसी अभिप्रायसे लखनऊ सम्मेलनके पहले उन्होंने यह वक्तव्य दिया है। जिन्नाका यह संकेत अपना काम कर रहा है और इस वक्तव्यके आधार पर मुस्लिम लीगको बनाये रखनेकी आवश्यकता महसूस करने वाले प्रतिक्रियावादी मुसलमानोंका पल्ला भारी पड़ गया है।

लखनऊमें होने वाले मुस्लिम सम्मेलनके सम्बंधमें अपना रुख स्थिर करने के लिये यू० पी० मुस्लिम लीगने युक्त प्रांतीय मुस्लिम लीग व्यवस्थापिकान्सरे और प्रांतीय लीगकी वर्किङ्ग कमेटीकी आवश्यक बैठक २५ और २६ दिसम्बर को बुलायी है। इसमें विभिन्न प्रांतोंसे प्रमुख लीगी नेता भाग लेंगे। छतारीके नवाब और भारतीय पार्लमेंटमें लीग दलके नेता मि० महम्मद इस्माइलको विशेष रूपसे आमंत्रित किया गया है। इस सम्मेलनमें भारतके मुसलमानोंको अब क्या रुख लेना चाहिये, इस पर [illegible] किया जायेगा। युक्त प्रांतीय [illegible] उल उलेमाके अध्यक्ष [illegible] शहीद फखरीने मि० जिन्नाकी [illegible] का जिक्र करते हुए ठीक ही कहा है कि मालूम होता है हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें हुए हालके रोमांचकारी काण्डोंसे, जिनमें लाखों निर्दोष व्यक्ति [illegible] बाद हो गये और लाखों मर मिटे, [illegible] जिन्नाने भी कोई सबक नहीं [illegible] उनकी नसीहत देशका खास कर [illegible] लमानोंका काफी नुकसान कर [illegible] भारतके मुसलमानोंने जिन्नाके [illegible] काफी नुकसान उठाया है। अब [illegible] अपनी पुरानी चालोंसे बाज आना चाहिये। हम नहीं कह सकते कि भारतके मुसलमान जिन्नाके नेतृत्वको इनकार करेंगे या नहीं पर एक बात हम जानते हैं कि हिंदुस्तान [illegible]सलमानोंकी पुरानी हरकतोंको दुहरानेका मौका हरगिज नहीं दे सकता। जिस मुस्लिम लीगने भाई को भाईका दुश्मन बना दिया रक्तकी नदियां बहायी और अंतमें हमारे प्रिय देशके दो टुकड़े कर डाले उसे अब इस मिट्टीमें नहीं पनपने दिया जायेगा। मुस्लिम लीगके लिये और उसके माननेवालोंके लिये भारत में कोई स्थान नहीं है।

हिन्दी विश्वकी महान भाषा

श्री राहुल सांकृत्यायन

अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलनके बम्बई अधिवेशनका उद्‌घाटन पण्डित गोविन्द वल्लभ पंतने किया।

बम्बईमें हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३५ वें अधिवेशनके अध्यक्ष पदसे दिये गये भाषण का वह अंश हम यहां उद्धृत कर रहे हैं जिसमें राहुलजीने बलपूर्वक इस बातका प्रतिपादन किया है कि दो-दो भाषा और दो-दो लिपिको राजभाषा बनाने का कोई कारण नहीं है। उर्दू वालोंको हिन्दी पढ़नेके लिये मजबूर किया जायेगा? इस प्रश्नका उत्तर मेंदेते हुए राहुलजी कहते हैं कि यह तो जनतांत्रिक नियम है। उर्दूको लादनेमें कोई भलाई नहीं है।

सारे संघकी राष्ट्रभाषासे अतिरिक्त हिन्दीका अपना विशाल क्षेत्र है। इसलिये यहां हिन्दीका राजभाषाके तौर पर शिक्षाके माध्यमके तौर पर स्वीकार किया जाना बिल्कुल स्वाभाविक है। कुछ राजनीतिक नेता हिन्दुस्तानीके नाम पर और न जाने किस भलाईके ख्यालसे उर्दूको भी यहां घुसेड़ना चाहते हैं। लेकिन यह तो निश्चित है, कि इस बातमें उन व्यक्तित्व कोई काम नहीं करेगा। प की सरकारने युक्त प्रांतमें हिन्दी अपनी दृढ़ता दिखलाते हुए उसे राजभाषा स्वीकार किया, उसन दखा कि हवाका रुख कि है। दो-द। १९६ और दो-दो लिपिको राजभाषा यहां अब कोई कारण नहीं है। तर्क भारतवर्ष जाता है, कि अगर यहांके उर्दू विभक्त भाषी मुसलमानोंको हिन्दी पढ़ने पर एक भाग दिया गया, तो बंटा हुआ हिन्दुपञाब और कमी एक न होगा। मानो, उर्दू स्तान राज-भाषा स्वीकार कर लेने पर बादकता निश्चित है। मेरी समझमें तो बंटे हुए हिन्दुस्तानकी एकताकी बात चलानी फजूल ही नहीं, हानिकर है। हमारी पीढ़ी जो कर सकती थी कर चुकी। एकता करनेका काम अगली पीढ़ी का है, हमें इस एकताकी बात करके उनके काममें कठिनाइयां नहीं पैदा करनी चाहिये। एकता तभी होगी, जब कि दोनों भागोंमें धर्मान्धताका स्थान राष्ट्रीयता और वैयक्तिक स्वार्थका स्थान समाज-स्वार्थ लेगा।

उर्दूको लादनेमें और क्या भलाई समझी जाती है? उर्दू वालोंको हिन्दी पढ़नेके लिये मजबूर किया जायेगा? यह तो जनतांत्रिक नियम है। जिस भाषाके अधिक बोलने वाले होते हैं, वही भाषा राकीय मानी जाती है। अल्पसख्यकों की भाषा इस तरह नष्ट हो जायेगी? यह भी आक्षेप नहीं हो सकता। मैं समझता कि हमारी सरकार उर्दू पढ़ने वालोंके में रुकावट नहीं डालेगी, लेकिन थ ही यह तो जरूर होगा, कि जिनको कारी या कल कारखानोंकी नौकरियों पानेका ख्याल है, उनके लिये हिन्दी ना आवश्यक होगा। आखिर आज ब इनके लिये वे अंग्रेजी पढ़ते रहे, हिन्दी पढ़नेमें क्या हर्ज है। ज तक हाई स्कूलोंसे युनिवर्सिटी अरबी-फारसी पढ़ते रहे, वैसे आगे भी पढ़ते रहेंगे। हिन्दी तो केवल वही स्थान लेने जा रही है, जिसे अंग्रेजीने जबर्दस्ती दखल कर रखा था। विदेशी भाषा सीखनेमें जब उजुर नहीं था, तो अपने देशकी भाषा सीखनेमें क्यों उजुर है? हिन्दी भाषा ७०० सालों से पदच्युत रहकर अब विशाल मध्यदेशमें अपना स्थान ग्रहण करने जा रही है इसके लिये हमें हर्ष होना चाहिये।

विश्वकी महान् भाषा—हिन्दी भारतीय संघकी राष्ट्रभाषा होगी और उसके आधेसे अधिक लोगोंकी अपनी भाषा होनेके कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय जगतमें अब एक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी चीनी भाषाके बाद वही दूसरी भाषा है, जो इतनी बड़ी जनसंख्याकी भाषा है। हिन्दीके ऊपर इसके लिये बड़ा दायित्व आ जाता है। हिन्दीको एक विशाल जनसमूहके राजकाज और बातचीतको ही चलाना नहीं है, बल्कि उसीको शिक्षाका माध्यम बनना है। फिर आजकलकी शिक्षा सिर्फ कविता, कहानी, और साहित्यिक निबन्धों तकही सीमित नहीं है। विश्वकी प्रत्येक उन्नत भाषाका साहित्य अधिकतर साइन्सके ग्रंथों पर अवलम्बित है। अभीतक तो साइंसकी पढ़ाई अंग्रेजीने अपने सिर पर ले रखी थी, किन्तु अब अंग्रेजोंके साथ अंग्रेजीका राज्य जा चुका है। सरह-स्वयम्भूसे पन्त निराला, महादेवी तकका हिन्दी काव्य साहित्य बहुत सुन्दर और विशाल है नाटक छोड़कर सभीअङ्गोंमें विश्वकेकिसी भी प्राचीन और नवीन साहित्यसे उसकी तुलना की जा सकती है। कथा साहित्यमें प्रेमचन्द्रने जो परम्परा छोड़ी है, वह काफी आगे बढ़ है। किन्तु अब हमें सारा ज्ञान विज्ञान लाना होगा। कुछ लोग इसे बहुत भारी शायद सदियोंका काम समझते हैं। परन्तु मेरी समझमें यह उनकी भूल है। आज जिस चीजकी मांग हो उसे साहित्य जगतमें सृजन करने वालोंकी कमी नहीं होता। अबतक उपन्यास कहानी कविताकी मांग थी, और लेखकों तथा कवियोंने इस मांगको बहुत हद तक पूरा किया।

बर्मा स्वतन्त्र हो रहा है

लेखक—श्री सतीश चन्द्र

एशिया शुरूसे ही धन-धान्यसे परिपूर्ण रहा है। इसके रत्न पूरित रत्नाकर अक्षय खनिज-भण्डार, अनमोल प्राकृतिक-निधियों आदि चीजें यूरोपवासियोंको प्राचीन कालसे ही लुभाती रही हैं। इसी कारणसे बहुत पहलेसे ही एशियाई देशोंसे सम्पर्क स्थापना करनेकी कोशिश करते आ रहे थे। किन्तु, जबतक समुद्री रास्ताका पता न चला था तब तक उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो सकी। कारण स्थल-मार्ग होकर आने-जानेमें काफी पैसे और समय लगता था। परीशानी और तबाही भी कम न होती थी। उस पर भी मार्ग सुरक्षित न था, लूट और हत्याका भय सदा ही लगा रहता था। अतः १५ वीं शताब्दीके उत्त-रार्धमें जब वासको डिगामाने यूरोप और एशियाके बीच समुद्री रास्ताका पता लगाया तो एशिया आनेका मार्ग सुगम हो गया और दलके दल यूरोपीय व्यापारी एशियाके दक्षिण पूर्वी देशोमें आने लगे। व्यापारके साथ साथ कूटनीतिके बल पर वे राजनीतिमें भी हाथ बंटाने लगे और धीरे-धीरे अपना साम्राज्य भी स्थापित करते गये।

डचोंने हिन्देशिया पर दखल जमाया, फ्रांस वालोंने हिन्द चीन और भारतके कुछ हिस्सों पर कब्जा किया अंग्रेजोंने भारत, मलाया, सिलोन आदि देशों पर कब्जा किया। फिर भला अमेरिकावाले काहे चुप रहते। उन्होंने भी फिलीपाइन पर हाथ बढ़ाया। इस तरह साराका सारा दक्षिण पूर्वी एशिया गोरी जातियोंने हड़प लिया। आखिर बर्माकी भी बारी आयी। यह भी अंग्रेजोंकी तीखी नजरोंसे बच न सका।

१८२५ ई० तक बर्मा पूर्णतः स्वतन्त्र था, जब कि भारत गुलामीकी कड़ियोंमें बंध चुका था। सर्व प्रथम १८२६ ई के युद्धमें अंग्रेजोंने बर्माके टेनासरिम नामक प्रान्त पर कब्जा किया। बर्माके पतनकी कहानी यहींसे शुरू होती है। टेनासरिममें अंग्रेजोंके पांव तो जम ही गये, फिर शेष हिस्सों पर भी कब्जा करनेकी कोशिशें चलती रही। २५ वर्षों बाद १८५२ ई में फिर लड़ाई हुई। इस द्वितीय युद्धमें बर्माका बहुत बड़ा दक्षिणी हिस्सा फिर अंग्रेजोंके हाथ आया। १८५३ ई में उत्तरी प्रान्तों पर भी पंजा बैठा दिया। किन्तु, अभी बर्माका बहुत बड़ा हिस्सा स्वतन्त्र ही था। दाव-पेंच चलते रहे। कूट नीतिके बल पर बर्माको फिर तृतीय युद्धमें घसीटा गया।। अंग्रेजोंकी नीति काम कर गयी। इस तृतीय युद्धके परिणाम स्वरूप अंग्रेजोंको शेष हिस्सोंके साथ माण्डले भी मिल गया और तभी बर्माके अन्तिम राजा थिबाको सिंहासन च्युत भी होना पड़ा। इस तरह १८८६ ई तक संपूर्ण बर्मा अंग्रेजोंके चंगुलमें आ गया।

बर्मामें अभी भी ऐसे व्यक्ति ढूढ़ने पर मिल सकते हैं, जिन्होंने राजा थिबाको सिंहासन च्युत होते देखा है। पूछने पर वे आज भी आपको अवरुद्ध कंठसे उस अशुभ घटनाका वर्णन सुना सकते हैं। वे आपको बतायेंगे, थिबा क्यों हारा, उससे जनता किस तरह रंज थी। उनके वर्णन में आप थिबाके प्रति उनकी शिकायत सुनेंगे।

बगावतका झण्डा

थिबाके सिंहासन च्युत होनेके समय बर्माकी जनताको आशा थी कि अंग्रेज फिर किसी बर्मीको राजा बना कर उसे शासन भार सौंप देंगे। अन्यायी थिबाकी जगह दूसरा न्यायी राजा गद्दी पर बैठेगा और वे सुख पूर्वक रह सकेंगे। किन्तु, जब अंग्रेजोंने किसी बर्मीको राजा न बनाया तो जनतामें विद्रोहकी लहर फैलने लगी। बर्मियोंने अंग्रेजी सत्ता स्वीकार करनेसे अस्वीकार कर दिया और बगा-वतका झण्डा उठाया। किन्तु अंग्रेजोंकी संगठित, नवजाग्रत शक्तिके सामने बर्मा का वह असंगठित स्वातन्त्र्य संग्राम सफल साथ उस विद्रोहका दमन किया। उस विद्रोहके संचालकोंको अंग्रेजोंने डाकू और लुटेरा घोषित किया। अंग्रेजोंके कागजों या नजरोंमें वे भले ही डाकू या लुटेरा हो, किन्तु बर्माका बच्चा-बच्चा तो आज उन्हें बहादुर देशोद्धारकके रूपमें ही याद करता है। कुछ भी हो विद्रोह तो तत्काल कुछ दिनोंके लिये दब ही गया। बार बारकी पराजयसे एशियाके दूसरे देशोंकी तरह बर्मा निवासियोंका भी विश्वास हो चला कि यूरोपवासी अजेय हैं। अतः इच्छा होने पर भी अंग्रेजोंके विरुद्ध जंग-आजादी छेड़नेसे डरने लगे।

संयोगवश बीसवीं शताब्दीके आर-म्भमें एशियाके छोटेसे देश जापानने वृहद काय रूसको पछाड़ दिया। जापानकी इस असंभावित विजयने एशियाके गुलाम मुल्कोंमें नयी जान डाल दी। एशियावा-सियोंकी यह धारणा कि यूरोपवासी अजेय हैं दूर हो गयी। यूरोपकी साम्राज्यवादके विरुद्ध एशियाके प्रायःसभी गुलाम मुल्कों ने बगावतका झण्डा उठाया। इस घटनासे बर्मा भी प्रभावित हुआ। उसने भी अंग-ड़ाईयां ली। वह तो तुरत ही गुलाम हुआ था। इसलिये उसके रक्तमें अभी भी काफी गर्मी बची हुई थी ही, इस अप्रत्याशित घटनासे उसमें भी नयी जिन्दगी उमड़ पड़ी। नया साहस, नयी उमंगे पैदा हुई। उसने भी अंग्रेजोंके विरुद्ध अपने स्वा-तंत्र्य संग्रामका मोर्चा कायम करनेका निश्चय किया। १९०८ ई० में स्थापित यंगमेन्स बुद्धिस्ट एशोसियेसन नामक संस्था इसी निश्चयका परिणाम था। शासन सुविधाकी दृष्टिसे अंग्रेजोंने बर्मा को भारतके अन्तर्गत एक प्रांत बना दिया था। स्वभावतः हमारी कांग्रेसके स्वतंत्रता आन्दोलनने बर्मामें भी नव जागरण पैदा किया। भारतके साथसाथ बर्मामें स्वतंत्रता आंदोलनकी प्रगति देख ब्रिटिश राजनी-तिज्ञोंने भेद नीतिसे काम लिया,फलस्वरूप अंग्रेजोंकेसंरक्षणमें बर्माको भारतसे पृथक करनेकी मांगके रूपमें एक नया आन्दो-लन चल पड़ा। इस आंदोलनकी परिणति १९३५ एक्टके अनुसार बर्माके भारतसे पृथककरणके रूपमें हुई। इस समय तक

अंग्रेज शासकों और कूटनीतिज्ञों की कृपा से बर्मामें वहांके निवासी भारतीयोंके प्रति द्वेष और घृणा भावने काफी जोर पकड़ा। अंग्रेजोंकी कूटनीति बर्मियों तथा भारतीयोंके बीचमें कटुता पैदा करनेमें जैसे सफल हु वैसे ही बर्मियोंको आपस में लड़ानेकी उनको नीति भी सफल हुई।

जिस समय १६३६ में यूरोपमें युद्ध का शंखनाद हुआ उस समय १६३५ एक्टके शासन सुधारके अनुसार बर्मामें बामाका मंत्रिमण्डल शासन कर रहा था, किंतु उसी साल बामाका मन्त्रिमण्डल भंग हो गया और उसकी जगह पर यू पूने नये मंत्रिमण्डलका संगठन किया। यूसा भी इस नये मंत्रिमण्डमें सम्मिलित थे। १६४० ई० में यूसाने अपनी अलग मिआचिट पार्टीका संगठन किया। उस पार्टीके संगठनके आधार पर यूसा कुछ ही दिनोंमें बर्माकी राजनीतिमें चमक उठा। इस बीच जापान भी युद्ध मैदानमें उतर पड़ा। भूतपूर्व प्रधान मंत्री बामा जापानसे मिले रहनेके अभियोगमें जेलमें बन्द कर दिये गये। कुछ ही दिनोंमें बामा निकल भागे और इशान रियासतमें चले गये। जापान आंधीकी तरह सारे दक्षिणी पूर्वी एशिया पर उमड़ता चला आ रहा था। अंग्रेज भी भयभीत हो उठे थे। यूसाने देखा मौका अच्छा है और वह सन्धिका संदेश लेकर लन्दन चल पड़ा। ब्रिटिश मंत्रीमण्डलके सामने उसने मांग पेश की कि युद्धमें सहायता करनेके बदले युद्ध समाप्ति के बाद बर्माको निजी सरकार कायम करनेकी स्वाधीनता दी जाय। किन्तु अनुदार दलकी ब्रिटिश सरकारने यूसाकी मांग को स्वीकार नहीं किया। यूसाकी मांगको अस्वीकार तो कर दिया किन्तु इससे ब्रिटिश सरकारकी चिन्ता बढ़ गयी। उसे भय हो गया कि कहीं यूसा बर्मा पहुंच कर युद्धमें तटस्थता न घोषित कर दे। इसी भयसे प्रेरित होकर बर्मा लौटते समय रास्तेमें ही होनो लूलूमें ब्रिटिश सरकारने यूसाको गिरफ्तार कर युगांडा में नजर बन्द कर रख छोड़ा।

यू आंग सानका युग

एक ओर तो ब्रिटिश सरकार अपना जाल फैला रही थी, दूसरी ओर बर्माका तरुण नेता यू आंग सान राजनीतिक हलचलोंको गंभीरता पूर्वक अध्ययन कर रहा था। ब्रिटिश सरकारकी लड़ खड़ाती स्थिति, जापानकी उमड़ती शक्ति देश की, उठती जागृति सब मिल कर यू आंग सान के हृदयमें उथल-पुथल मचाने लगी।

यू आंग सान ने देखा स्थिति देशकी स्ततंत्रताके लिये अनुकूल है। एक धक्के की आवश्यकता थी। ब्रिटिश सरकार लड़खड़ा रही थी। इन्ही विचारोंसे प्रेरित होकर उसने निश्चय किया कि जापानकी सहायता प्राप्त कर ब्रिटिश सरकारको खदेड़ दिया जाय। इसी उद्देश्यसे प्रेरित हो कर १६४२ ई० के प्रारम्भमें मौतसे भी खेल जाने वाले कुछ जानिसार साथियों के साथ यू आंग सान जापान जा पहुंचा। जापान सरकार से समझौतेकी बातचीत हुई। समझौता होनेमें विशेष अड़चन नहीं पड़ी। दोनों अपनी अपनी गोटियां एक ही बार लाल कर लेना चाहते थे। यू आंग सानने देखा, प्यारा स्वदेश आजाद हो रहा है। जापान सरकारने देखा आसानीसे बर्मा मिल रहा है। फिर देर क्यों? आजाद हिन्द की देखा देखी आजाद बर्मा फौजका सङ्गठन हुआ। इस फौजने जापानियोंकी साहयतासे ब्रिटिश साम्राज्य को मार भगाया। बर्मा वाले बहुत प्रसन्न हुए कि आखिर आजाद हो गये। किन्तु जापानियोंकी साम्राज्यवादी मनोवृत्तिने कुछ ही दिनोंमें उनकी आशा धूलमें मिला दी। मौलमिन और टेनासरिमपर अधिकार होने पर बर्मा वालों ने जापान सरकारसे अनुरोध किया कि वह बर्माकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर ले। जापानियोंने बहाना किया कि पहले रंगून तो ले लो फिर तो तुम आजाद हो ही। खैर यह भी सही। १६४२ के मार्च महीनेमें आखिर रंगून पर भी आजाद बर्मा फौजका झण्डा फहरा उठा। बर्मा वालोंने फिर अपनी मांग दुहरायी। जापानियोंने फिर बहाने बाजी की बार-बार की बहाने बाजीसे बर्मा वाले सशंकित हो उठे। दोनों तरफसे घात प्रतिघात चलने लगे। अन्तमें एक पुतली सरकार १६४३ ई० में जापानके इशारे पर कायम हुई और फिर जापान ही के इशारे पर मित्र राष्ट्रके विरूद्ध युद्ध घोषणा की। एक ओर जापान अपनी जड़ मजबूत करनेकी कोशिश कर रहा था दूसरी ओर यू आंग सान भी जापानसे बर्माको मुक्त करनेकी चिन्ता में लीन था। जापानियों द्वारा निर्मित बर्माकी पुतली सरकार देशमें शासन व्यवस्था कायम रखनेमें असफल सिद्ध हुई समस्त बर्मामें त्राहि त्राहि मच गयी। युद्धके फलस्वरूप बर्मा वासियों की गरीबी आखिरी सीमा पर पहुंच गयी। युद्ध जनित बीमारियां और महंगी पराकाष्टा पर जा चुकी थी। इन कारणों से जापानियोंसे बर्मा की जनता क्षुब्ध हो चली थी। परिस्थिति अनुकूल थी। पश्चिमसे अंग्रेजी फौज बढ़ती चली आ रही थी। आंग सान भी जापानियों द्वारा नव शिक्षित बर्मी सेना लेकर अंग्रेजों का सामना करने रंगूनसे प्रोमकी ओर गया। उस समय तक जापानियोंको आंग सान की नीयतका पता न चला था। उन्होंने बहुत विश्वासके साथ आंग-सानकी फौजको विदाई दी। आंग सानभी जापानियोंको विश्वास दिलाकर प्रोमकी ओर बढ़ा।

प्रोम पहुंच कर आंग सानकी फौज इरावती पारकर थायरमायोके क्षेत्रमें पहुंची। इस क्षेत्रमें जापानियोंकी शक्ति बहुत कम थी। यहीं पर समस्त जापानी अफसरोंको कत्ल कर स्वतन्त्र बर्मा सरकारकी घोषणा की गयी। किन्तु केवल स्वतन्त्र सरकारकी घोषणा कर देनेसे ही काम नहीं चलता था।

फासिस्ट विरोधी स्वातन्त्र्य संघ

बर्मा वाले तो इस तरह जापानियों से मुक्ति पानेकी चेष्टा करते ही रहें दूसरी ओरसे मित्र राष्ट्र की फौज भी जापानियोंको कुचलती आगे बढ़ रही

थी। आंग-सागने देखा मौका अच्छा है और ब्रिटिश फौजसे मिलकर संयुक्त मोर्चा कायम कर जापानियोंको खदेड़ने लगे। जापानी इनके सामने ठहर नहीं सके फलतः १९४५ ई० में बर्मासे जापानियोंकी छाया मिट गयी। जापानियोंकी छाया तो मिट गयी, किन्तु अंग्रेजोंकी छाया फिर छा गयी। किन्तु बर्मा वासी तो एक बार आजादी भोग चुके थे। फिर से गुलामी की कड़ीमें बन्ध जाना आंग-सानको पसन्द न था। ब्रिटिश सरकारकी हुकूमत मिटानेके लिये फिर उसने एक नयी संस्था बनायी। इस संस्थाका नाम रखा फासिस्ट विरोधी जन स्वातंत्र्य संघ राष्ट्रीयताकी लहर देशमें थी ही। जनता ने बड़े उत्साहसे उसमें भाग लिया। जन स्वातंत्र्य संघके साथ साथ जन स्वयं सेवक संघ दल सङ्गठित किया गया। देशके कोने कोनेके किसान युवक इसमें सम्मिलित हो गये। उन लोगोंके पास युद्ध कालके शस्त्र तो थे ही उन शस्त्रों के सहारे वे ब्रिटिश सरकारका विरोध करने लगे। जगह जगह रैलियां होने लगी हड़तालोंका सिल सिला बढ़ा। सारे बर्मामें उथल पुथल सी मच गयी। सरकारने भी दमनका आश्रय लिया। २२ हजार बर्मी युवक जेलोंमें ठूंस दिये गये। सभा जुलूस रैलियां और पत्रोंपर रोक लगा दी गयी। किन्तु दमन कारगर न हो सका। परिस्थिति अत्यधिक गंभीर हो उठी अन्तमें लाचार होकर ब्रिटिश के दक्षिणी पूर्वी सेनाके तात्कालिक कमांडर मैंटेम्यू परिस्थिति सुलझाने बर्मा आये। आंग सानको मन्त्री पद स्वीकार करनेके लिये कहा गया। किन्तु आंग-सान तो राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाके सिवा और किसी भी शर्त पर समझौता करनेको तैयार नहीं थे। उनकी सुसङ्गठित शक्तिके सामने ब्रिटिश सरकारको झुकना पड़ा फलतः अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई। और यू आंग-सान उसके अध्यक्ष बने।

पूर्ण स्वतन्त्रता

किन्तु अस्थायी सरकार बन जानेसे ही बर्मावासियों की इच्छा पूरी नहीं होती थी। उनका लक्ष्य तो था पूर्ण आजादी। राष्ट्रीय सरकारकी बागडोर हाथमें आते ही साम्राज्य विरोधी जन स्वातंत्र्य संघकी ओर से चुनौती दी गयी कि उस अस्थायी राष्ट्रीय सरकार १९४७ ई० के ३१ जनवरी तक पूर्ण अधिकार प्राप्त स्वतंत्र सरकारके रूपमें परिवर्तित कर दिया जाय और १२ महीनो के भीतर अंग्रेज पूर्णतः बर्मा छोड़ दे। स्वतन्त्र बर्माका विधान बनानेके लिये एक पूर्ण सत्ता प्राप्त और बालिग मताधिकार द्वारा निर्मित विधान परिषदकी स्थापना करनेकी सुविधा दी जाय। स्वाधीनता पूरे बर्मा के लिये होनी चाहिये।

राष्ट्रीय अस्थायी सरकारकी स्थापना और उपयुक्त चुनौती ने बर्मा और इङ्गलैंडमें एक अजीब परिस्थिति पैदा कर दी। कम्युनिस्ट पार्टी जो अबतक जन साम्राज्य विरोधी संघमें सम्मिलित थी संयुक्त मोर्चा तोड़कर अस्थायी सरकारके विरूद्ध खुले आम कार्रवाई करने लगी। कम्यूनिस्ट पार्टी तथा सरकार दोनोंको झुकना पड़ा। न कम्यूनिस्टोंके हौसले पस्त हो गये और ब्रिटिश सरकारने भी फासिस्ट विरोधी जन संघकी मांगें कुछ शाब्दिक हेर फेरकर मंजूर कर ली।

मांगे मंजूर हो जानेके बाद विधान परिषदके चुनावकी बात सबसे पहले आयी। अब तक बर्माकी दूसरी दूसरी पार्टियों और नेताओं की यह शिकायत थी कि जब वे जेलोंमें बन्द थे। तभी साम्राज्य विरोधी जन संघका प्रचार गलत तरीके से किया गया। अगर उन्हें मौका मिले तो वे देख सकते हैं कि देश की जनता किसका नेतृत्व स्वीकार करती है। ऐसी परिस्थितिमें विधान परिषद का चुनाव सभी राजनीतिक पार्टियोंको चुनौती दे रहा था। सभी प्रमुख पार्टियों ने उपयुक्त चुनावमें खुलकर अपना प्रचार किया। जो आंग सान को देशका शत्रु कहते थे उन्होंने तो सबसे अधिक शक्ति लगायी। किन्तु जब चुनाव का नतीजा मालूम हुआ तो साम्राज्य विरोधी संघकी सर्वप्रियता और नेतृत्व सभीको स्वीकार करना पड़ा। उक्त चुनावमें बहुत बड़े बहुमतके साथ साम्राज्य विरोधी संघकी जीत हुई। चुनावके बाद व्यर्थ समय न खोकर विधान परिषदका कार्य शुरू कर दिया गया।

एक ओर बर्मा आंग सानके नेतृत्व में द्रुत गतिसे स्वाधीनताकी ओर कदम बढ़ा रहा था। दूसरी ओर उसके विरोधी अभी भी बाज आने वाले नहीं। कभी सीमान्त और पहाड़ी इलाकोंमें विद्रोह हुआ तो कभी तानाशाहीका दोष लगाया फिर भी विधान परिषदका काम चलता रहा। आजाद बर्मा प्रजातन्त्र की रूप रेखा खींची जाने लगी। सहसा १९ जुलाईको कुछ व्यक्तियोंने बर्मा सरकारके मन्त्रि-मण्डल पर भीषण आक्रमण कर आंग-सानके साथ ६ मन्त्रियोंको गोलीके घाट उतार दिया। बर्माको इनकीमृत्युसेभीषणक्षति हुई किन्तु आजादीकी लड़ाई बन्द न हुई। साम्राज्य विरोधी जन संघके दूसरे कर्णधार आंग सानके चरण चिह्न पर कदम बढ़ाते गये। बर्मियोंकी दृढ़ताके सामने ब्रिटिश सरकारको फिर झुकना पड़ा। फलतः पिछले दिनों ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल और बर्माके प्रधान मन्त्री के बीच एक समझौतेमें तय किया गया कि ४ जनवरी १९४८ को बर्मा पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित कर दिया जायगा। ब्रिटेनकी लोक सभामें बर्मा स्वातंत्र्य बिल चर्चिलके घोर विरोध पर भी पास हो गया। इस कानून पर स्वीकृतिके सम्राटका हस्ताक्षर भी हो गया। यह शहीद यू आंग सानके साहस पूर्ण नेतृत्व और अद्भुत राजनीतिज्ञता का ही फल है कि हमारा पड़ोसी बर्मा ४ जनवरीको प्रायः सौ बर्षकी गुलामीके बाद पूर्ण स्वतन्त्र होने जा रहा है। इस अवसर पर भारतकी शुभ कामनाएं और सदिच्छाएं बर्माके साथ हैं, और यह बताने के लिये ही भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू स्वयं इस समारोहमें भाग लेने और बर्माको बधाई देने रंगून जा रहे हैं।

देश। रियासतोंमें

नयी दिल्लीमें भारत और पाकिस्तान डोमिनियनोंके बीच काश्मीरकी समस्या पर जो वार्ता प्रारम्भ हुई वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। काश्मीरके प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला भी दिल्लीमें उपस्थित हैं। इस मासके प्रारम्भमें भी काश्मीरकी समस्याके समाधानके लिये दो डोमिनियनोंके बीच वार्ता हुई थी लेकिन उस वार्ताका कोई विशेष परिणाम नहीं हुआ यह सभी जानते हैं। इस वार्ताका कोई अच्छा परिणाम निकलेगा, यह कहना तो कठिन है लेकिन कुछ पर्यवेक्षकोंका मत यह है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कारणोंसे परिस्थितिने बहुत ही जटिल रूप धारण कर लिया है। जो कुछ भी हो, भारत सरकार अपने संकल्प पर दृढ़ है। प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने जम्मूकी सार्वजनिक सभामें स्पष्ट घोषणा कर दी है कि काश्मीरकी समस्याके अन्तिम समाधानके लिये हम दृढ़ संकल्प हैं। किसी कामको आधा करके छोड़ देना हमारी नीति नहीं है। हम काश्मीरमें और भी फौजें भेजेंगे और जब तक विजय लाभ न हो तब तक सारी ताकत लगा कर कोशिश करते रहेंगे। पण्डित नेहरूका यह कथन इस वक्त होने वाली वार्तामें उपस्थित भारत सरकारकी नीतिकी उन शर्तों से स्पष्ट हो जाता है जिनमें कहा गया है कि भारत काश्मीर मित्रोंको उनकी आवश्यकताके वक्त पीठ नहीं देगा। काश्मीरी राष्ट्रीय सम्मेलनके नेताओंके विरुद्ध कोई भी निश्चय नहीं किया जायगा; अगर काश्मीरी जनता यह चाहे कि राज्यमें होने वाले उपद्रवों के बन्द होनेके बाद ही जन गणना संग्रह का कार्य सम्पन्न होगा तो वैसा ही होगा। और जब तक काश्मीरसे उपद्रवियोंको नहीं भगा दिया जायगा तब तक भारतीय सेनाएं वहां से नहीं हटायी जायंगी।

भारत सरकारके इस प्रकारके स्पष्ट रुख के बावजूद समस्या समाधानके लिये बारबार प्रयास किये गये है। गत ६ दिसम्बरको उप प्रधान मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेलने पार्लमेण्टमें कहा था कि सम्मव होने पर काश्मीरकी समस्याओंके समाधानके लिये हर सम्मव उपायसे काम करनेको प्रस्तुत हैं। भारत सरकारकी सद्भावनाके कारण समझौतेकी वार्ता तो शुरू हुई लेकिन पाकिस्तानकी ओरसे उपद्रवियोंकी सहायता जारी है। यद्यपि यह सच है कि काश्मीरमें उपद्रवियोंका भारतीय फौजी टुकडियोंके सामने टिकना कठिन हो गया है

हैदराबादमें दमनका जोर—

निजाम सरकारने अखबारों और संवादों पर ऐसा नियंत्रण लगा रखा है कि उसके प्रतापसे हैदराबादका बाहरी दुनियासे सम्बंध विच्छेदसा हो गया है। बाहरी लोग केवल यही जानते हैं कि हैदराबाद राज्यमें प्रतिक्रियाशील शासकके विरुद्ध प्रगतिशील जन आन्दोलन चल रहा है निजाम सरकार गंदेसे गंदे उपायों द्वारा जन आंदोलनको दबानेके लिये कटिबद्ध है! लेकिन निजामके दमनकी खबरें हमें बिलकुल नहीं प्राप्त होतीं है। कभी कभी राज्य कांग्रेसके किसी नेताके वक्तव्यसे राज्यके भीतरकी वास्तविक स्थितिका पता चलता है तो हमारा हृदय कांप उठता है। हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्दतीर्थने एक वक्तव्य दिया है जिससे वहांकी वास्तविक स्थितिका पता चलता है उनके पूरे वक्तव्यको प्रकाशित करनेकी आवश्यकता नहीं है। केवल एक अंश काफी है। स्वामीजी कहते हैं कि हैदराबाद राज्यमें जनताके ऊपर जो दमन हो रहा है वह इतना बर्बरता पूर्ण है कि उसका अविलम्ब प्रतिरोध करनेके लिये मैं भारतीय संघकी सरकारको विवेक-बुद्धिसे अनुरोध करता हूं। हैदराबादकी वर्तमान स्थिति इसी एक वाक्यसे स्पष्ट है।

भारत सरकारके इस प्रकारके स्पष्ट रुखके बावजूद समस्या समाधानके लिये बार बार प्रयास किये गये है। गत ६ दिसम्बरको उप प्रधान मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेलने पार्लमेंटमें कहा था कि सम्मव होने पर काश्मीरकी समस्त समस्याओंके समाधानके लिये हर सम्मव उपायसे काम करनेको प्रस्तुत हैं। भारत सरकारकी सद्भावनाके कारण समझौतेकी वार्ता तो शुरू हुई लेकिन पाकिस्तानकी ओर से उपद्रवियों की सहायता जारी है। यद्यपि यह सच है कि काश्मीरमें उपद्रवियोंका भारतीय फौजी टुकड़ियोंके सामने टिकना कठिन हो गया है। तथापि यत्र तत्र उपद्रव तो जारी ही है। इधर विलायतके प्रतिक्रियावादी संवादपत्रोंने काश्मीरको विभाजित करनेका नारा लगाना शुरू किया है। भारतके विभाजन को स्वीकार करने वाले नेता काश्मीर विभाजनको शायद ही स्वीकार करेंगे। पाकिस्तानी नेताओंकी अगुआई सदैव विलायती शिक्षकोंने की है लेकिन गनीमत है कि अभी तक पाकिस्तान नेताओंने उन पाकिस्तान नेताओंने उनके इस नारे को नहीं अपनाया है यह सच है कि उन्हे अपनानेमें देर नहीं होगी। पर सवाल तो काश्मीरी जनताके समर्थन का है सो मि० जिन्ना और उनके सङ्गी साथी यह जानते हैं कि काश्मीरी जनता शेरकाश्मीर के साथ है लिहाजा वहां धर्मके नाम पर दाल नहीं गलेगी।

गत १६ दिसम्बरको करांचीमें कायदे आजम मि० जिन्नाने कहा है कि काश्मीर की समस्या गम्भीर है। आगे उन्होंने कहा है कि ब्रिटेन पाकिस्तानके साथ उपेक्षा का व्यवहार कर रहा है। व्यक्तिगत रूपसे मैं पाकिस्तानको ब्रिटिश कामनवेल्थ में रखनेका इच्छुक हूं। मि० जिन्नाके इस कथनकी ब्रिटिश पत्रों पर प्रतिक्रिया होनी अनिवार्य थी। अतः कलकतिया अधगोरा स्टेटसमैन उससे कैसे बचता जिस प्रकार स्टेटसमैन भारतमें पाकिस्तान और ब्रिटेनकी भलाईका नारा लगा रहे है उसी प्रकार सीमा प्रांत

(शेष ३८ वें पृष्ठपर)

चुनी हुई पत्तियां बगीचेके ही दूसरे भागमें तौली जा रही हैं।

ऊपरी आसामके एक चाय बगीचेमें मजदूर नारियां चाय की पत्तियां चुन रही हैं।

कदाचित जितनी विचित्रता और कल्पनाका सम्बन्ध चायकी उत्पत्तिसे है उतना अन्य किसी व्यवसायिक वस्तुसे नहीं। प्राचीन दंतकथाओंके अनुसार चायका पता लगना एक प्रकारकी आकस्मिक घटनाही थी। चीनियोंका दावा है कि उन्होंने इसका पता ईसाके २७३७ वर्ष पूर्व लगाया था। चायके गुणकारी प्रभावकी जानकारी उन्हें पानीको साफ करनेके सिलसिलेमें लगी। पर भारतीयोंकी धारणा है कि चायका पता एक बौद्ध भिक्षुने लगाया। एक दिन उस बौद्ध भिक्षुने नींद और सुस्तीसे तंग आकर पासहीकी एक झाड़ीसे कुछ पत्तियोंको तोड़ कर चबाना प्रारम्भ किया। वे चायकी पत्तियां थी। उसके पश्चात नींदने उसे नहीं सताया और वह दत्तचित्त हो भगवान बुद्धकी साधनामें रहने लगा। जो कुछ भी हो, सच बात तो यह है कि चीन और जापान दोनों देशोंमें औषधियोंमें उपयोगके रूपमें ही इसका व्यवहार किया जाता था। परन्तु पाश्चात्य लोगोंके सुदूरपूर्वमें आनेके पहलेसे ही यह दोनों देशोंमें जातीय पेयके रूपमें व्यवहृत होने लगी थी। पाश्चात्य जगतको चायसे सर्व प्रथम अवगत करानेवाले व्यक्तिका नाम था— 'जियाम बतिस्ता रेमुसिओ'। यह सन १५५९ ई० की बात है। यद्यपि चायको पाश्चात्य जगतसे परिचित करानेका श्रेय इस युगके अनेकों अनुसन्धान कर्त्ताओंके नामके साथ लगा हुआ है तथापि ऐसा अनुमान है कि चाय सर्वप्रथम

आयात की गयी। यह मकाओसे जावा तथा जावासे यूरोप जहाज द्वारा भेजी गयी थी। आगे अनेक वर्षों तक डचवाले चाय समुद्रके रास्तेसे लाते रहे। पर सन १६१८ ई० में सबसे पहला चायसे लदा कारवां चीनसे रूसमें स्थल मार्गसे पहुंचा। सन १६८१ ई० के बाद ईस्ट इण्डियन कम्पनीने अपने पूर्वके एजेण्टोंको चाय भेजनेका आदेश दिया। सन १६८९ के पहले वे अमोयसे सीधे चाय नहीं मंगा सके।

क्षेत्र बहुत कुछ अंशोंमें चीनसे आयात किये गये बीजों एवं पौधोंसे चाय उत्पन्न करने एवं उसे बनाने तकही सीमित रहा। यहां जंगली चायकी खेती भी होती रही और अन्तमें इसे एक व्यवसायिक रूप प्रदान किया गया। जनवरी सन १८३९ में भारतसे आयात की गयी चायकी आठ पेटियां लंदनमें १६ शि० से ३० शि० प्रति पौण्डके दरमें बेची गयीं। उसी साल चायकी 'आसाम कम्पनी' नामक सर्वप्रथम व्यावसायिक प्रतिष्ठानकी स्थापना हुई।

उस समय ब्रिटिश बाजारोंमें चायका दर बहुत ऊंचा था और इसका विरोध भी कोई कम न था।

किन्तु १८ वीं सदीमें इंगलैण्डमें जातीय-पेयके रूपमें व्यवहृत होने लगी।

सन १८३३ में चीनका इस पर एकाधिपत्य न रहा। सन १८३४ में भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड विलियम बेंटिकने एक समिति नियुक्ति की। उस पर यह भार दिया गया कि वह भारतमें चायकी खेती कैसे उन्नत की जाय, इस विषयकी एक योजना सरकारके सामने प्रस्तुत

आज भारतमें ८७०,००० एकड़से भी अधिक भूमिमें चायकी खेती की जाती है और कुल वार्षिक उत्पादन ५५०,०००,००० पौण्ड है। १८७०—१८८० ई० के बीचमें किसी समय चायके उद्योगकी स्थापना लङ्का और जावामें सर्व प्रथम हुई। भारत, लङ्का और जावामें चायके उत्पादनके अलावा पूर्वी अफ्रीकामें भी चायका उत्पादन सन् १९०२ में प्रारम्भ हुआ।

अपने इतिहासकी तरह चायके उत्पादनकी कला कोई कम रोचक नहीं है।

कोपलो जिन्हें अंग्रेजीमें 'फ्लश' कहते हैं, बनायी जाती है। पौधेकी उत्पत्ति अस्वाभाविक ढङ्गसे रोक दी जाती है जिससे कि कोमल नवविकसित पत्तियां सदा प्राप्त होती रहे। डालियोंमें गहरी हरी नुकीली घुमावदार पत्तियां लगती हैं। 'फ्लश'के सिवा इनकी लम्बाई ४ से १० या १२ इञ्च तक होती है।

समुद्रकी सतहसे ६००० फीट की ऊंचाई तक चाय कुछ कम मुलायम सदाहरे रहने वाले पौधों पर ही उगायी जाती हैं। वह गर्म नम जलवायुमें जहां प्रचुर मात्रामें सूर्यका ताप तथा वर्षा प्राप्त हों, पैदा होती है। उष्ण और समशीतोष्ण कटिबन्धमें चायकी सबसे अधिक फसल होती है। उन स्थानोंका वातावरण कुछ कृत्रिम साधनों द्वारा गर्म रखा जाता है जिससे पौधे फल फूल सकें। पर कम ऊंचे पहाड़ी इलाकों में इससे सुन्दर किस्म की चाय पैदा की जाती है। हां, इसमें फसल अवश्य कम मात्रामें होती है। नर्सरी से छोटे छोटे पौधोंको लगानेके पूर्व मिट्टी को उसके अनुकूल बनानेके लिये काफी प्रयत्नकी आवश्यकता होती है। साधारण तया जब तक पौधा ५ वर्ष का न हो जाय पत्तियां तोड़नेके लायक नहीं बन पाती। पत्तियां तोड़नेमें भी एक कुशल मनुष्यकी आवश्यकता होती है। इस बातका पूरा प्रयत्न होना चाहिये कि कारखानोंमें अनावश्यक खराब माल न भेजा जाय।

कारखानोंमें पत्तियां आने पर वे कन्वासकी लम्बी पट्टी पर दिन भर सूखनेके लिये बिछा दी जाती है। गरम हवा इस कार्यमें सहायता करती है और इसी कारण पत्तियोंका वजन घटकर आधा ही रह जाता है। इसके पश्चात ये रोलेरोंमें डाल दी जातीं हैं। जिससे कि इनके छोटे छोटे टुकड़े हो जांय और रस बाहर निकल जाय। उस समय इनमें एक प्रकारका विचित्र सा टेढापन आ जाता है। इसके पश्चात् चायकी पत्तियां जो कुछ न कुछ हरे रङ्ग लिये रहतीं हैं भट्टी घरमें ले जाई जातीं हैं जहां सिमेंटके फर्स पर या कांच की टेबिल पर बिछा दी जातीं हैं। इसी समय चायकी पत्तियों में रासायनिक परिवर्तन होता है। यहां पत्तियोंका रङ्ग पत्तियोंका सौरभ उसका कड़ापन आदि के लिये जिम्मेदार हैं। चायकी पतियां भट्टीमें तब तक उबाली जाती है जब तक कि इनका रङ्ग बदलकर तवेसे लाल न हो जाय। भट्टीका कार्य पूरा करनेके पश्चात् चायकी पत्तियां रोटी सेंकने वाले चूल्हे की तरहकी एक भट्टीमें सुखायी जाती हैं।

उस समय काफी सतर्कताकी आवश्यकता है क्योंकि विभिन्न समयमें विभिन्न तापों की आवश्यकता होती है। इसके बाद पत्तियां अपने विभिन्न प्रकारों के अनुसार छांटी जाती हैं। इनके नाम बड़े कौतूहल जनक रखे जाते हैं जिन्हेंकि चाय पीने वाले कम या अधिक रूपमें कुछ न कुछ जानते ही है। उनमेंसे कुछको अंग्रेजीमें ओरेञ्जपीको, क्रोकन पीका और ब्रोकन ओरेञ्ज पीको कहते हैं। इन नामों का चाय की किस्मसे कोई सम्बन्ध नहीं है। ये तो केवल चायकी पत्तियोंकी (सब प्रकारके आवश्यक कार्यके पश्चात) लम्बाई चौड़ाईके अनुसार निर्धारित किये गये हैं। चायके कारखानोंमें जो अन्तिम कार्य करना रह जाता है वह यही कि चायको दूसरी किस्मके अनुसार पेटियों में भरकर अच्छी तरह बन्द कर दिया जाता है। जिससे ये अपने निश्चित स्थान तक पहुंचने तक ताजा रहें। चाय उपजाने वाले क्षेत्रों में एक सक्षिप्त कहावत प्रसिद्ध है जिसका अर्थ है कि चायका बनना खेतोंसे प्रारम्भ होता है। वास्तवमें सत्य है। क्योंकि जबतक भली प्रकारसे यह ध्यान न दिया जाय कि पौधोंसे उपयुक्त पत्तियां ही तोड़ी जाय, जबतक भली प्रकारसे टोकरियोंमेंसे अनावश्यक कूड़ा कचरा निकाल न फेंक दिया जाय; जबतक खेतोंसे कारखानेमें माल पहुंचानेका अतिशीघ्र प्रबन्ध हो जाय, जबतक माल पहुंचानेके साथ ही साथ इस बातका भी ध्यान न रखा जाय कि पत्तियोंकी प्राकृतिक विशेष गुण सुरक्षित रहें तो निस्संदेह कारखाना उत्तम किस्मकी चाय नहीं बना सकेगा। संक्षेपमें, अगर हम कहें कि चाय कारखानेमें ही बनती है तो कोई भूल न होगी।

संसारके अनेक नगरोंमें कई ऐसी गलियां भी हैं जो केवल पत्र व्यवहारका पता मात्र ही नहीं हैं बल्कि उनका अपना नाम एक विशेष महत्वपूर्ण अर्थ भी रखता है। विगत शताब्दीसे सारे संसारमें मिनसिंग लेन केवल भौगोलिक स्थान मात्र नहीं है बल्कि यह शब्द एक तरहसे चाय का पर्याय हो गया है। यद्यपि यह बात नहीं है कि संसारमें पीजानेवाले सारी चाय यहांसे ही होकर जाती है, तथापि इतना कहना कोई अत्युक्ति पूर्ण नहीं होगा कि संसारके चाय व्यापारमें 'मिनसिंग लेन' बहुत दिनों तक महत्व पूर्ण केंद्र रहा है। चाय पैदा करने वाले अपनी चायको कई तरहसे बेच सकते हैं। कुछ चहे तो सीधे कारखानेसे खरीदी जाती है। इसका अंतिम निर्दिष्ट स्थान निश्चित नहीं किया जा सकता। कारखानोंसे उसी देशमें जैसे भारत वर्षमें काफी तादादमें खप जाती है। पहले सारीकी सारी फसल या उसका कुछ अंश गुप्त संधि द्वारा बेच दिया जाता है। माल सीधा ही आयात कराने वालेंको भेज दिया जाता था। पर यह प्रथा अब नहीं रही। पूर्वके प्रधान चायके निर्यात करने वाले बन्दरगाह जैसे कोलम्बो, कलकत्ता, वटाविया और मेदान में चायके बेचनेका तरीका बड़ा ही रोचक है। कलकत्तेमें प्रत्येक सालके जून मासके अगले महीनेके मार्च मास तक नियमित रूपसे साप्ताहिक नीलामें होती हैं। कोलम्बोसे जहां दक्षिण भारत के उपजका कुछ अंश तथा सिलोनकी उपजका अधिकांश अंश बाहर भेजा जाता है। साप्ताहिक नीलामोंसे बिक्री साल भर होती रहती है। इन बाजारोंमें चाय या तो उत्पादन करने वाले देश ही में विवरण करनेके लिये या सीधे दूसरे देश
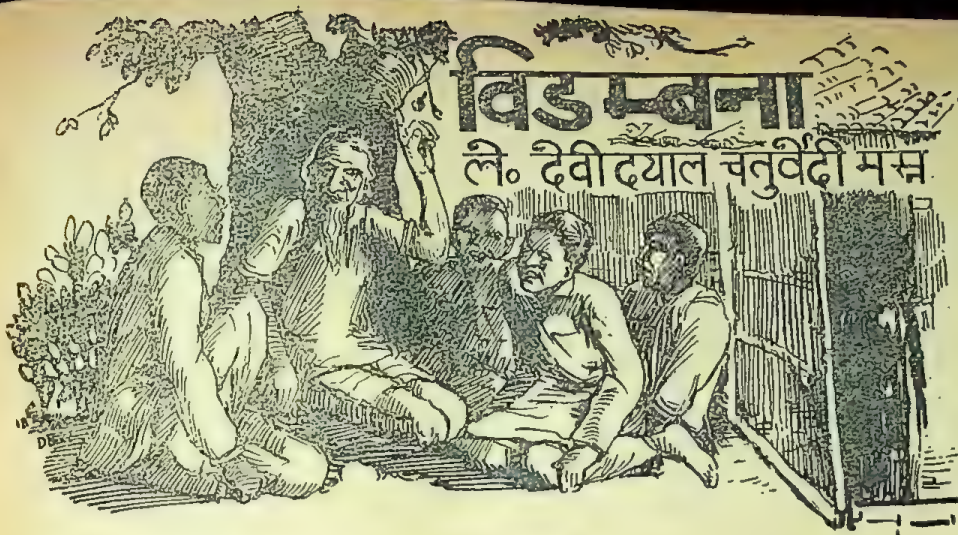
(शेष १८ वें पृष्ठ पर)

ठण्ढके दिनोंमें जब तरुण व्यक्ति लिहाफसे मुंह निकालनेमें भी डरते हैं और बार बार घड़ीकी सुइयोंको देखते हुए यह प्रतीक्षा करते रहते हैं कि घड़ीकी छोटी सुई आठ पर और बड़ी सुई बारह पर पहुंच चुकी या नहीं, तब मेरे पड़ोसमें रहनेवाले एक वृद्ध सज्जन अपने घरसे बाहर आकर खली सड़क पर नारियलका हुक्का गुड़गुड़ाते खड़े दीखते हैं।

सड़क पर इन वृद्ध सज्जनके आजाने-का ठीक-ठीक समय क्या है, यह हम स्वयं नहीं जानते। कारण, हुक्केकी गुड़गुड़ाहटके बीच जब कभी वे जोरोंसे खों-खों करने लगते हैं, तब उनका यह स्वर किसी जबर्दस्त अलार्मसे कम नहीं होता। और, जब जब उनके अलार्मसे मेरी नींद टूटी, मैंने यही देखा कि कभी साढ़े छः बज रहे हैं, तो कभी पौने छः। ऐसी दशामें सड़क पर हुक्का गुड़गुड़ाते हुए यह वृद्ध सज्जन कब आ जाते हैं, यह कह सकना मेरे लिये सम्भव नहीं।

आप शायद उत्सुक होंगे कि इन वृद्ध सज्जनका नाम क्या है। लेकिन इसके लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूं। कारण ये अभी जीवित हैं। यदि कहीं उन्हें यह पता लग जाये कि उन्हींको लेकर मैंने यह कहानी लिख डाली है, तो मेरी परेशानीका आप सहजही अनुमान लगा सकते हैं। ऐसी दशामें उनके नामके अतिरिक्त बाकी सभी बातें आप जान लीजिये और कभी अवसर मिले, तो मेरे पड़ोसमें आकर स्वयं उनके दर्शन कर लीजिये।

रुईसे भरी हुई एक बण्डी, जिसकी आस्तीनें हैं तो पूरी, लेकिन थोड़ी-सी चढ़ी हुई, खादीकी एक मोटी और मट-मैली सी धोती, जिसमें पैरोंका निम्न भाग काफीसे अधिक खुला हुआ, पैरोंमें देशी चप्पल और सिर पर किसी फटे शालका एक छोटा सा टुकड़ा बंधा हुआ। उन्नत और चौड़े-से मस्तकके नीचे दो धंसी हुई आंखें और पिचकेसे गाल, जिनके पार्श्वमें बड़ी लम्बी दाढ़ी। यही है इन वृद्ध सज्जनकी रूपरेखा।

खुली सड़क पर खड़े होकर जब ये अपना हुक्का गुड़गुड़ाने लगते, तब धीरे धीरे पास-पड़ोसमें कुछ और लोग भी उनके पास जा पहुंचते और धूपमें बैठ कर पता नहीं कहां-कहांकी महुआ केवलेकी गप्पें और कहानियां सुनते सुनाते। कभी कभी तो इतने जोरोंसे इनके कहकहे लगते कि मुझे इन पर क्रोध हो आता। यह इसलिये कि चाय पीकर नियमित रूपसे जो थोड़ा बहुत लिखनेका मुझे एक नशा-सा हो गया है, उसमें इन कह-कहोंसे बड़ी बाधा पहुंचती। लेकिन पड़ोसियोंसे इन बातोंको लेकर झगड़ा मोल लेना मैंने कभी ठीक नहीं समझा। चुप-चाप अपनी वह खिड़की बंद कर अपना काम किया करता, जो सड़ककी तरफ खुलती है।

उस दिन दांत किटकिटा देनेवाली ठण्ढ थी। हवाके झोंके तीखे शूलोंकी तरह शरीरमें चुभ रहे थे। पास-पड़ोसमें सर्वत्र एक सन्नाटा छाया हुआ था। ऐसे सन्नाटेमें अपने विस्तरसे उठ कर एक कम्बल ओढ़ कर मैं चुपचाप कहानी लिखने बैठाही था कि श्रीमती जीने लिहाफ

से मुंह निकाल कर [illegible] दिया—'अजी, ऐसे कड़ाकेकी ठण्ढ पड़ रही है और तुम्हें यह लिखनेकी धुन सवार है। परमात्मा न करे कि ठण्ढ लग जाये, तो लेनेके देने पड़ जायं। जब देखो तब डेस्क पर औंधे रहते हो और न जाने क्या क्या लिखते रहते हो!'

श्रीमतीजीका एक एक शब्द मैंने सुन लिया था, फिर भी मैं चुप रहा। मैं जानता था कि यदि कुछ बोला कि आगे लिखना असम्भव हो जायगा और कहानी अधूरी ही रह जायगी।

मुश्किलसे दस पांच पंक्तियां लिखी होंगी कि श्रीमतीजीके भी विस्तरसे उठनेकी आहट मेरे कानोंमें गूंज उठी। उनके पायलकी झनकार सुन, मैंने संतोष की एक सांस ली कि चलो, कमसे कम चाय तो अब जल्द तैयार हो ही जायगी। और, हुआ भी यही।

श्रीमतीजी चुपचुप जाकर चाय तैयार करने लगीं। वह जानती हैं कि लिखते समय यदि एकाध बार उनके कुछ कहने पर मैंने अपनी कलम न रख दी, तो फिर आगे कुछ कहने सुनने पर मैं एकदम झल्ला उठता हूं। इस दशामें कहानी का एक खण्ड जबतक मैंने लिख नहीं लिया, कोई व्यवधान सामने नहीं आया।

जब चाय तैयार हो गयी, तब मन्नू को जगा कर श्रीमतीजीने उसका हाथ मुंह धुलाया और तब उसे मेरे पास भेज कर चाय बन जानेका संकेत किया। चूंकि कहानीका एक खण्ड पूरा हो चुका था, अतः सन्तोषके साथ मैंने कलम रख दी। मन्नूका चुम्बन लिया और हाथ मुंह धोकर फौरन चाय पीने जा पहुंचा।

(२)

चाय पीते समय मैंने कहा—'देखो, आज इस सन्नाटेमें कहानी लिखना मैंने इसलिये ठीक समझा कि उन वृद्ध सज्जन का न तो हुक्का गुड़गुड़ा रहा है और न उनके खों खोंका अलार्म ही बज रहा है। बीच बीचमें जो कहकहे नायी पड़ते थे, वे भी आज बंद हैं'।

'लेकिन जानते हो' श्रीमतीजीने कहा—'आज बुढ़ऊ अबतक क्यों नहीं दीख रहे हैं?'

चायका प्याला खाली करते हुए कहा मैंने 'अरे, इस ठण्ढमें बुढ़ऊकी हिम्मत न

पड़ी होगी घरसे निकलनेकी और क्या ?'

'बुढ़ऊ ऐसी ठंढसे कभी नहीं डरते।' श्रीमतीजीने कहा—'तभी तो मैं कहती हूं कि पासपड़ोसकी जानकारी भी रखा करो थोड़ी बहुत। कहानियां तो बहुत लिखते हो, लेकिन कथानकके लिये सहायता पहुंचानेवाली बातोंकी भी तो कुछ खोज खबर रखनी चाहिये न!'

'ऐसी बातोंका पता मुझे तुमसे मिलही जाता है, फिर मैं क्यों अपना समय बरबाद किया करूं?'

श्रीमती जीने मसकराते हुए कहा—'तो अब मैं कुछ न बतलाया करूंगी। मैं अपना समय बरबाद करूं और तुम कहानी लिखो। नहीं जी, अब मैं कुछ न बतलाया करूंगी।'

मन्नू चाय पीकर अपनी पुस्तक लेकर बचकानी कुरसी पर बैठ कर पढ़ने लगा था! श्रीमतीजी अब पानके बीड़े तैयार कर रही थीं। तभी मैंने कहा—'अरे इतना मान न करो देवीजी।' और उनकी उत्सुकताको बढ़ाने तथा जो बात वह छिपानेकी कोशिश कर रही थीं, उसे सरलता पूर्वक मनोवैज्ञानिक युक्तिसे जान लेनेका प्रयत्न करते हुए मैंने कहा—'तुम्हें यह पता ही न होगा कि आज जो कहानी मैं लिख रहा हूं, वह इन्हीं वृद्ध सज्जन पर लिखी जा रही है।'

'बापरे बाप।' दांतोंसे जीभ काट कर श्रीमतीजीने कहा—'यह तुम क्या कर रहे हो? बुढ़ऊको पता चल जाये तो,........।'

'तो कुछ नहीं!' मैंने कहा—कहानीमें उनका नाम ग्राम तो दूंगा नहीं। फिर दुनियांमें अनुरूपता भी तो कोई चीज है। सारी दुनियामें क्या यही एक बुढ़ऊ ऐसे हो सकते हैं, दूसरा कोई नहीं।'

'हां, जी!' श्रीमतीजीने शायद मेरी बात समझते हुए कहा—'तुम ठीक कह रहे हो।'

'तो बताओ न, आज बुढ़ऊ अपने घरसे अबतक बाहर क्यों नहीं आये?'

'अजी, कल संध्या समय उसकी लड़की ससुरालसे भाग कर अचानक यहां आ गयी है। सुनते हैं, ससुरालवालोंने उसे इतना मारा पीटा है कि उसके शरीर पर अबतक नीले निशान हैं।

'मारपीटका कोई कारण भी तो रहा होगा। और मारनेवालोंमें ससुरालके सभी लोगोंको तुम क्यों घसीट रही हो? उसके पतिने ही मारा होगा।'

'अजी, यह बात नहीं हैं। इसीलिये तो मैं कहती हूं कि पास पड़ोसका तुम्हें को पता ही कब रहता। वह लड़की विधवा है। विवाहके एक वर्ष बादही बेचारी विधवा हो गयी थी। सुनते हैं, रिश्तेका कोई देवर है। उसीके साथ कुछ ऊंचनीच देख लिया ससुरालवालोंने। बस, एक विधवाके लिये यही क्या कम है। इसी पर उन लोगोंने उसे कस कर मारा पीटा और घरसे भी निकाल बाहर कर दिया। इस दुनियांमें उस बेचारीका ले-देकर यदि कोई सहारा है तो यही बूढ़ा बाप। सो यहीं चली आयी। कल संध्या समय जब वह यहां आयी, बुढ़ऊ घरमें नहीं थे। सभी पास पड़ोसकी स्त्रियोंने संवेदना व्यक्त की और सारी कहानी उससे पूछ ली।'

'तो रिश्तेके उस देवरसे अपने प्रणय सम्बन्धकी कहानी भी उसने स्वयं कह डाली क्या?'

'तुम भी जाने कैसी बातें करते हो? भला, कोई स्त्री यह बात भी कभी साफ साफ कहेगी? लेकिन बातोंही बातोंमें उड़ती चिड़िया पहचान ली जाती है। उसने तो सिर्फ यही कहा था कि रिश्तेके एक देवर हैं। उनसे कभी एकाध बात करती हूं, तो यह प्रसाद मिलता है—कहर बरस पड़ता है।'

'समझा! उसकी इसी बातको लेकर पड़ोसकी स्त्रियोंने यह समझ लिया कि देवरके साथ कुछ ऊंच नीच देख लिया गया होगा, तभी उसकी यह दुर्गति की गयी है।'

'इसमें अनुमानकी कोइ बात नहीं है। श्रीमतीजीने कहा—'जरूर यही बात रही होगी।'

इसी बीचमें बाहरी दरवाजे पर किसीकी कपकपाहट सुनायी पड़ी। बैठकखानेमें जाकर मैंने बाहरी दरवाजा खोला, तो देखा कि वही बुढ़ऊ खड़े थे। मैं क्षण भरके लिये विस्मय-विमुग्ध रह गया। यह बात नहीं कि इन बुढ़ऊसे मेरा कोइ परिचय न रहा हो, लेकिन इतना अवश्य था कि इस मुहल्लेमें रहते हुए मुझे पूरा सवा वर्ष हो चुका था, परन्तु न तो मैं कभी इनके घर गया था और न बुढ़ऊ कभी मेरे घर आये थे।

सदा प्रसन्न रहने वाले इन वृद्ध सज्जन के मुख पर आज किसी चिन्ताकी गहरी और स्याह लकीरें स्पष्ट दीख रही थीं।

(३)

बैठकखानेमें एक कुरसी पर उन्हें बैठनेका सङ्केत करते हुए मैंने कहा—'कहिये, सब कुशल मङ्गल तो है? मेरे योग्य कोई सेवा?'

'कुशल मङ्गल तो क्या?' वृद्ध सज्जन ने कहा—आप शायद जानते ही होंगे कि मैं तो इस दुनियामें एकदम अकेला हूं—उस सूखे वृक्षके ठूंठ जैसा, जिसकी हरित डालियां जरा जीर्ण होकर उसका साथ छोड़ चुकी हों और वह ठूंठ मानो यह प्रतीक्षा कर रहा हो कि किसी दिन कोई राहगीर उसे भी काटकर ले जाये और चूल्हेमें झोंक कर उसकी भी समाप्ति कर दे।'

'यह आप क्या कह रहे हैं।' मैंने आश्चर्य मुद्रासे कहा 'दुनियामें बुढ़ापा किसे नहीं आता? लेकिन अनुभव और मार्ग-दर्शनका जहां तक सम्बन्ध है, आप जैसे वृद्धोंकी इस दुनियाको पग-पग पर आवश्यकता पड़ती है।' और एक क्षण रुककर मैंने मन्नूको बुलाकर कहा कि पानके बीड़े ले आओ।

पानके बीड़े आ जाने पर मैंने वृद्ध सज्जनकी ओर पानकी तश्तरी बढ़ा दी। उन्होंने दो बीड़े लेकर चबा लिये। मैंने सिगरेटका डिब्बा भी उनके सामने रखते हुए कहा—'लीजिये, सिगरेट भी पीजिये। हुक्का तो आप पीते ही हैं।'

सिगरेट लेकर उन्होंने सुलगाया ही था कि पहले ही कशमें उन्हें जोरोंकी खांसी आ गयी। खांसी जब शान्त हुई तो कहा उन्होंने—'तम्बाकू पीनेकी आदत पड़ गयी है बाबूजी! और यह खांसी है कि इस तम्बाकूसे मानो चिपकती है। लेकिन आदमी तो आदतोंका गुलाम हो जाता है।'

'अजी, आदतोंकी कुछ न कहिये।' मैंने कहा—'अच्छा मेरे योग्य कोई सेवा हो, तो आप निःसङ्कोच होकर कह डालिये।'

'कल संध्या समय एक ऐसी घटना हो गयी है' वृद्धने शायद अब अपनी बात कहनी चाही—'जिसने मुझे परेशान कर रखा है। इस दुनियामें मेरी एक पुत्री है। वह भी विधवा है। मुश्किलसे उसकी अवस्था अभी सत्रह साल की है। दो साल हुए वह विधवा हो चुकी है। ससुराल वाले उसे फूटी आंखों नहीं देखना चाहते। वे समझते हैं, मेरी पुत्रीने ही उनके लड़केको खा लिया।'

'अन्धविश्वासके आधार पर हमारे समाजमें जो विचार-धाराएं चली आ रही हैं, वे समाजका बड़ा अहित कर रही हैं। इन अंधविश्वासोंको समूल नष्ट करनेकी आवश्यकता है। उस बहिनका इसमें दोष ही क्या है? ससुराल वाले अपनी संकीर्ण मनोवृत्तिका परिचय दे रहे हैं।'

वृद्ध सज्जनने मेरी बातमें सहानुभूतिका पुट पाकर कहा—'यही नहीं बाबूजी! उस लड़की पर उन दुष्टोंके हाथ भी चलने लगे हैं। उस बेचारीको उन लोगोंने इतना मारा-पीटा है कि उसके शरीर पर अब तक नीले दाग हैं।'

मेरी श्रीमतीजी पहले ही यह सब मुझे बतला चुकी थीं, लेकिन मैं यह रहस्य अप्रकट ही रखना चाहता था। कहा मैंने—तब तो वे लोग मानव नहीं, पशु हैं। लेकिन इस मारपीटका कोई कारण?'

'कारण-वारण क्या, वही अंधविश्वास जो आप अभी कह चुके हैं। कोई लड़की विधवा हुई नहीं कि उसे फिर अपने किसी सम्बन्धीसे हंसने बोलनेका अधिकार भी मानो नहीं रह जाता। मेरी लड़कीका एक देवर है। उससे कभी हंस-बोलकर वह अपना दुख भुलानेकी कोशिश भी करती है, तो ये लोग उस पर जहर बरसा देते हैं।'

ओह समझा' मैंने कहा। मन ही मन श्रीमतीजीकी उस बातका मैं कायल हो उठा कि रिश्तेके किसी देवरके साथ ऊंच-नीच का। एक क्षणके बाद मैंने कहा—'यह तो मानव स्वभाव है। अवस्थाके अनुसार ही मानव अपने मनोविकारों पर नियन्त्रण करना सीखता है। फिर भी कहा जा सकता है। परन्तु मैं ठहरा बढ़ा। घरमें अकेला हूं। ऐसी दशामें उसे मैं उसकी ससुरालमें ही पुनः पहुंचाये आता हूं। वह जो भाग आयी है, इसके लिये मैं पिताकी हैसियतसे उन लोगोंसे क्षमा मांग लूंगा।'

'लेकिन जिन अत्याचारोंकी यंत्रणाओंसे मुक्ति पानेकी आशा लेकर वह आपके पास भाग आई है. उन्हीं यंत्रणाओंके बीच आप पुनः उसे ढकेल आयेंगे? मैं नहीं समझता, यह कहां तक उचित होगा?'

'उचित हो या अनुचित, लेकिन इसके अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं।

तिब्बतके दलाई लामाके भाई श्री तख्तुसर रिमपांचे पश्चिम बंगके गवर्नर राजाजी से मिल रहे हैं।

ससुराल वाले सबसे हंसें बोलें और वह बहिन चुपचाप आंसू बहावे, यह कैसे हो सकता है? अपनी सहेलियों या बराबरी वाली सखियोंको आमोद-प्रमोद मनाते देख, वह बहिन कैसे अपने आप पर नियंत्रण रख सकती है?'

'यह तो है ही।' वृद्ध सज्जनने कहा—'लेकिन किसी तरुण पुत्रीको—विशेषतः जब वह विधवा है और उसके ससुराल वाले भी मौजूद हैं, कैसे एक पिता अपने पास रखनेकी चेष्टा कर सकता है? तरुणाई पर नियंत्रण रख सकना ससुराल वालोंके लिये तो किसी हद तक संभव फिर एक क्षण चुप रहकर बोले—'आपको इसी सम्बन्धमें एक कष्ट देने आया हूं। आज २५ तारीख है। मेरी पेन्शन मिलनेमें अभी १० दिन बाकी हैं, आप मुझे पांच रुपये दे सकें, तो बड़ी कृपा होगी। पेंशन मिलते ही पांच तारीखको मैं ये रुपये लौटा दूंगा। मैं उस लड़कीको आज ही उसकी ससुराल भेज आना चाहता हूं।

'खेद, रुपये आप ले जाइये।' मैंने कहा और बैठकखानेसे उठकर भीतर श्रीमतीजीके पास जा पहुंचा उन्हें सारी कहानी सुनायी और पांच रुपयेका

एक नोट लाकर मैंने वृद्ध सज्जनको देते हुए कहा—'यह लीजिये।'

आभार प्रदर्शन करते हुए बुढ़ऊ चले गये।

:(४)

संध्या समय दफ्तरसे लौटकर आ रहा था। सड़क पर चार पांच पड़ोसी खड़े-खड़े आपसमें कोई बात कर रहे थे। मुझे देखकर उनमेंसे एकने कहा—'जरा सुनिये बाबूजी!'

मैं आश्चर्य चकित हो उठा। ये पड़ोसी मुझे क्यों बुला रहे हैं? मैं तो कभी किसी गोष्ठीमें जाता नहीं—सदा दूर-दूर ही रहता हूं। फिर भी पड़ोसियों का ख्याल कर मुझे उनके पास जाना ही पड़ा।

तभी उनमेंसे एकने कहा—'बाबूजी आपने भी कुछ सुना या नहीं? ये सामने वाले बुढ़ऊ अपनी विधवा लड़कीको, जिसे ससुराल वालोंने मारपीटकर निकाल दिया था, पुनः उन्हीं कसाइयोंके बीच छोड़ने चले गये हैं।

'समाजके ऐसे ही अंधोंके कारण अनेक हिंदू बहिनें हमारे समाजको नमस्कार कर दूसरे समाजोंमें चली जाती हैं—लेकिन पतिता और लांछिता होनेके बाद। और, ऐसे ही अत्याचारोंसे परेशान होकर ये पतिता और लांछिता हो जाती हैं। फिर जिन्हें हम ठुकरा देते हैं, वही दूसरे समाजमें देवीकी तरह पूजी जाती हैं। मुसलमानों और ईसाइयों में ऐसी अनेक बहिनें मिलेंगी, जो हमारे हिंदू समाजके अत्याचारोंकी निशानी हैं। ऐसी बहनोंको कुलटा और भ्रष्टा बनानेमें ऐसे ही लोग सहायक होते हैं, जो उन्हें नियंत्रणोंमें ही सदा रखना चाहते हैं। आज ये बुढ़ऊ भले ही इन बातों पर विचार न करें, लेकिन भविष्यमें यदि उस लड़कीका भी ऐसा ही हाल हुआ, तो इन्हें अपनी भूलका पता लग जायगा, एक अधेड़ सज्जन ने अपना यह भाषण सुना डाला।

मुझे यह सुनकर मन ही मन ग्लानि होने लगी। तो क्या, मैं भी आज ऐसे ही पतनके मार्ग पर जाने वाली किसी बहनको कुलटा बनानेके किसी गर्हित प्रयत्नमें परोक्ष रूपसे सहायक बन गया हूं।

अपनी अस्त-व्यस्त की मनो दशा के बीच इन पड़ोसियोंसे अपना पिण्ड छुड़ाते हुए मैंने कहा—'आप ठीक कह रहे हैं। लेकिन जिसकी लड़की है, वही इन बातों पर जब विचार करना नहीं चाहता, तब हम और आप कर ही क्या सकते हैं? आज सवेरे बुढ़ऊ मेरे पास आये थे मैंने भी उन्हें समझाया था यही सब। लेकिन वह किसीकी सुने तब न? और मैं अपने घर चला आया।

घर आकर मैं बराबर इसी बिडम्बना से अभिभूत रह आया। न तो उस दिन भोजन ही बराबर कर सका, न नींद ही ले सका। रात भर करवटें बदलता रहा और पांच रुपये देकर बुढ़ऊकी सहायता बनाम किसी बहिनको कुलटा बनानेमें योग देनेकी अपनी मनोवृत्ति पर मैं अभिभूत रहा आया।

चाय की कहानी

(१४ वें पृष्ठ का शेषांश)

को निर्यात करनेके लिये या उसको मिलाने तथा पैकिङ्ग कर दूसरे देशमें जहांसे 'आर्डर' पहलेसे ही आ गया हो निर्यातके लिये या फिर बिक्रयके लिये मोल ली जाती है। जावा और सुमात्रामें नीलामसे बिक्री नहीं होती है यहां की उपजका आधेसे अधिक मात्रा बटाविया और मीदानके व्यापारियोंके हाथ बेच दिया जाता है। इनके द्वारा यह विदेश के बाजारोंमें निर्यातकी जाती है जिनमें आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका मुख्य है। पर संसारका सबसे बड़ाबाजार लंदन है जहां के भावोंका उतार चढ़ावका प्रभाव जल्दी से या देरसे संसारके बाजारों पर पड़ता है। अन्य देशोंसे निर्यातकी हुई चाय का अधिकांश भाग यहां आता है। लन्दन के नीलामोंमें खरीदने वालोंमें मिश्रितका पैकिङ्ग करनेके लिये संघटित दलों या प्रतिष्ठानोंका महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रत्येकके अपनी खास ब्राण्ड होती है। जिसकी बिक्री केवल इंगलैण्डमें ही नहीं वरन संसारके अनेक भागोंमें होती है उनके नाम जनताके जो चायसे सम्बन्ध रखते हैं, मस्तिष्कमें घर कर गये हैं।

लंदनका जहाजी कान्फ्रेंस

लेखक—प्रो० जे० सी० कुमारप्पा

पिछली १६ वीं जुलाईको हिन्दुस्तानके जहाजी प्रतिनिधि मंडल के और ब्रिटिश जहाजी प्रतिनिधि मण्डलके सदस्य लन्दनमें मिले। हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मंडलमें भारत सरकार द्वारा नामजद किये हुए अलग अलग जहाजोंके मालिक और जहाजी कम्पनियोंके प्रतिनिधि थे और ब्रिटिश प्रतिनिधियोंको इंगलैंडके राजाकी सरकारने नामजद किया था। इस कानफरेन्समें कुल तीन घंटे चर्चा हुई। सच पूछा जाय, तो उसमें कोई चर्चाही नहीं हुई। प्रमाण पत्रों और हवालेकी शर्तोंके पेश होनेके साथही कानफरेन्स भङ्ग हो गयी। इसके सिवा और हो ही क्या सकता था।

दोनों प्रतिनिधि-मंडल शुरूसे ही गलत ढंगसे बनाये हुए जान पड़ते थे। जहाजी उद्योग एक राष्ट्रीय सवाल है और उसे उन्हीं लोगोंको हल करना चाहिये, जो देशकी आर्थिक नीतिकी नुमाइन्दगी करते हैं। यातायात, जिसमें दरियाई तिजारत भी शामिल है, एक ऐसा साधन है, जिससे हम अपने आर्थिक और सामाजिक उसूलोंको दुनिया पर जाहिर कर सकते हैं। इसलिये जिन चर्चाओंमें दरियाई तिजारतके सवालके इस पहलू पर ध्यान नहीं दिया जाता, उनसे देशको कोई फायदा नहीं हो सकता। इस कानफरेन्सके दोनों पक्षोंके प्रतिनिधियोंको जिसने भी चुना हो, उसने सवालके इस पहलूका कोई खयाल नहीं रखा। हिन्दुस्तान और इंगलैंडके प्रतिनिधि जहाजोंके मालिकोंमें से चुने गये थे, जो राष्ट्रीय माली व्यवस्थाकी आड़में अपने निजी व्यापारी हितोंको आगे बढ़ानेके लिये उत्सुक रहते है।

हर एक मंडलका सदस्यने दूसरे मंडल के सदस्योंको, व्यापारके क्षेत्रमें अपने विपक्षीके रूपमें देखा। हम सभी जानते हैं कि जहाजी उद्योगमें इसका क्या मतलब होता है। सिर्फ अलग अलग देशोंके जहाजी उद्योगमें ही नहीं, बल्कि हमारे अपने देशके जहाजी व्यापारियोंमें एक दूसरेका गला काटनेकी होड़ होना आजकी मामूली बात हो गयी है।

दुनियामें जहाजी उद्योगमें सबसे बढ़े चढ़े देशोंसे तीन देश-जर्मनी, जापान और इटली आज लड़ाईमें हार कर चुपचाप बैठ गये हैं। इसलिये अब हमारे सामने चर्चाके लिये सिर्फ ब्रिटिश और अमेरिकन हित ही रह जाते हैं। इनमेंसे जहां तक हिन्दुस्तानका ताल्लुक है, उसके जहाजी उद्योग पर ब्रिटेनका एकाधिकार है। ऐसी हालतमें क्या कोई भी समझदार आदमी यह उम्मीद कर सकता है कि जो लोग जहाजी व्यापार पर अपना एकाधिकार जमाये बैठे हैं, वे हौसले वाले मगर कमजोर विपक्षियोंके फायदेके लिये अपना व्यापार छोड़ देंगे? इस कानफरेन्सके सभापति और अंग्रेज प्रतिनिधियोंके नेता सर विलियम क्यूरीने तो यहां तक कह दिया कि हम हिन्दुस्तानी प्रतिनिधियोंके दावोंकी बातें सुननेमें अपना वक्त नहीं गंवाना चाहते।

अगर हम हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि मंडलकी बनावटको देखें तो हमें पता चलेगा कि उसमें सब वे ही लोग थे जिनका जहाजी उद्योगमें स्वार्थ है और जिन्होंने अभीतक किसी बहाने यही उद्योग चलानेवाले अपने देशवासियोंको दबा रखा है। उनमें कुछ "कानफरेन्स लाइन्स"के प्रतिनिधि थे। इसका मतलब है, हजारों और जहाजी संघोंका आपसमें तय की हुई शर्तों पर मिल कर काम करना। इसमें वे अभागे व्यापारी शामिल नहीं किये जाते जो न तो इतने ताकतवर हैं कि कानफरेन्स लाइन्समें भर्ती हो सकें और न जहाजोंके मालिक हैं।

छोटे व्यापारियोंको शामिल किया जाये

बहुतसे जहाजी व्यापारी तो अपना व्यापार निजी जहाजों द्वारा न चला कर मरों द्वारा चलाते हैं। राष्ट्रीय जहाजी उद्योगके बारेमें कोई फैसला करनेके काममें, इस उद्योगमें लगा हुआ छोटे से छोटा व्यापारी भी शामिल किया जाना चाहिये। हिन्द सरकार द्वारा नामजद किया हुआ प्रतिनिधि मंडल, हिन्दुस्तानके जहाजी उद्योगमें लगे हुए सभी लोगोंका प्रतिनिधित्व नहीं करता। यह कहा जा सकता है कि वह हिन्दुस्तानके जहाजी उद्योगके उस ताकतवर पक्षका प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने ही विपक्षी देशवासीको गिरानेके लिये बुरे-से बुरे तरीके काममें लाता रहा है।

वहां अपीलके लिये इसके सिवा और कोई आधार नहीं था कि एक व्यापारी संघ दूसरे व्यापारी संघसे कहता कि वह अपने व्यापारका कुछ हिस्सा, कहने वालेके पक्षमें छोड़ दे। इसे मुश्किलसे 'अपील' कहा जा सकता है। हर एक इन्सानमें स्वार्थके साथ परोपकारकी भावना भी रहती है। हमारी अहम चर्चाओंमें हमें सामनेवाले आदमीकी आदर्श भावनाको छूना चाहिये।

तो हम मान सकते हैं कि सर विलियम क्यूरी और उनके अंग्रेज साथियोंके स्वभावका भी एक आदर्शवादी पहलू होगा और अगर ठीक तरीकेसे काम किया जाय तो उनके स्वभावके इस पहलूका उपयोग किया जा सकता है। जो लोग यह काम करें उनका इस उद्योगमें कोई निजी स्वार्थ नहीं रहना चाहिये। बदकिस्मतीसे जो पिछली कोशिश की गयी, वह पूरी तरहसे व्यापार दृष्टिसे की गयी थी जैसा कि क्लैम लाइनके लार्ड रादरविकने कहा था "ऐसा लगता है, मानो सारा 'देना' अंग्रेजोंको है और सारा 'लेना' हिन्दुस्तानियोंको।" बेसक जिस तरह चर्चाएं हुई थीं, उसे देखते हुए यह वाक्य परिस्थितिका बिलकुल सही सारांश है। इस आधार पर ब्रिटिश जहाजोंके मालिक अपने स्वार्थोंके प्रति स्वभावतः सावधान थे और इसी आधार पर हिन्द चीन लाइनके मि० केसविकने, एक दूसरेका गला काटने वाली होड़को रोकनेके लिये ऐसे

सुझाव पेश किये, जिन्हें वे अच्छेसे अच्छे समझते थे।

जहाजी उद्योगको करनेकी आजादी मिले

ऐसी हालतमें, अगर हिन्दुस्तानी जहाजी उद्योगको देशकी आर्थिक जरूरतों के मुताबिक चलना है, तो इस सवाल पर बिलकुल भिन्न दृष्टिकोणसे विचार करना जरूरी होगा। जो कान्फरेन्स इस पर विचार करे, उसमें किसी भी पक्षका ऐसा कोई व्यक्ति न रहे जिसका इस उद्योगमें कोई स्वार्थ हो। इसके बाद जहाजी उद्योग के बारेमें जो बातचीत हो, वह इस उसूलके आधार पर हो कि हर आजाद देशको अपने जहाजी उद्योग पर नियन्त्रण रख कर अपने विदेशी व्यापार पर काबू रखना चाहिये। इसके लिये आजाद हिन्दुस्तान को हिन्द-सरकारकी देखरेखमें स्टीमरोंकी मददसे अपना विदेशी व्यापार चलाना पड़ेगा। अपने निजी फायदेके लिये काम करनेवाले एकाधिकार और जहाजी संघ खत्म कर दिये जाने चाहिये।

ब्रिटिश प्रतिनिधियोंने यह इच्छा जाहिर की थी कि हिन्दुस्तानके जहाजी प्रतिनिधि-मण्डलके हर सदस्यको ब्रिटिश कम्पनियोंसे अलग अलग अपनी बात करनी चाहिये। लेकिन यह गलत कदम होता। इसे सवालका 'अमली' हल कहा गया था, लेकिन हमें डर है कि यह हिन्दुस्तानके जहाजी उद्योगका गला घोंटने और उसे ब्रिटिश कण्ट्रोलके मातहत मानोपाली या इजारेका रूप देनेका बहाना था। हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डलके सेठ वालचन्द हीराचंदकी यह प्रशंसाकी बात है कि उन्होंने इस प्रलोभनतका प्रतिरोध किया और हिन्दुस्तानी मेम्बरोंको बिखरने न दिया। हिन्दुस्तानके जहाजी प्रतिनिधि मण्डलके एक एक मेम्बरसे बातचीत करके मण्डल को तोड़नेकी कोशिश करनेका मतलब था ब्रिटेनकी 'बांटो और राज करो' की सियासी नीतिको आर्थिक क्षेत्रमें भी लागू करना।

यह दलील देना ठीक नहीं कि ब्रिटिश जहाजी उद्योग एक खानगी उद्योग है और वह खानगी कोशिशोंसे ही धीरे धीरे फला फूला है। सारी दुनियामें जहाजी उद्योग पर हमेशा राजकी निगरानी रही है। खुद इंग्लैंडमें ब्रिटिश माल-महकमेने क्यूनार्ड और ह्वाइट स्टार लाइन नामकी कम्पनियोंको जहाज बनानेके लिये समय समय पर लाखों पौंडकी मदद दी है। 'ट्रेड फॅसिलीटीज एक्ट' के मातहत सरकारने २ करोड़ ३० लाख पौंडसे भी ज्यादाकी रकम जहाजी कम्पनियोंको उधार दी है। जर्मनीमें सरकार हमेशा जहाजी कम्पनियों को पैसेकी मदद करती रही है। इसी तरह इटली और जापानने भी अपनी सरकारोंकी आर्थिक मददसे जहाजी उद्योगको बढ़ाया है। अमेरिकामें १९२७ के 'जौन्स वाइट एक्ट' के मातहत खानगी जहाज मालिकोंको अमेरिकन विदेशी व्यापार बढ़ानेके लिये हरसाल २ करोड़ १० लाख डालर दिये जाते थे।

इन बातोंको देखते हुए यह जान कर हमें ताज्जुब होता है कि जब हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डलसे ब्रिटिश प्रतिनिधिने बातचीत बन्द कर दी, तब भी हिन्द-सरकारने बातचीत चलानेमें मदद करने की जरूरत महसूस न की। शायद इसका कारण यह रहा हो कि उस समयकी हिन्द सरकार ब्रिटिश वातावरणमें काम कर रही थी, जो हिन्दुस्तानी कामकाजमें आधे मनसे मदद करता था।

सरकारकी निश्चित नीति हो

अब चूंकि हिन्दुस्तानने किसी तरहका आजाद दरजा पा लिया है, हमारा विश्वास है कि सरकार अपनी बड़ी जिम्मेदारियों को समझेगी और दूसरे समुद्र किनारेके देशोंकी मिसाल पर चल कर देशके लायक व्यापारी जहाजी बेड़ा खड़ा करनेमें मदद करेगी। शुरु शुरूमें इस उद्योगकी नींव जमे हुए हितोंवाले लोगोंको डालने देना खतरनाक होगा। जहाजी उद्योगके बारेमें सरकारकी कोई साफ और निश्चित नीति होनी चाहिये। और उसे जहाजी उद्योग पर कण्ट्रोल करके राष्ट्रकी माली व्यवस्था को बढ़ानेमें इस उद्योगको नियमित रूपसे पहला स्थान देना चाहिये। हमें यह देख कर दुःख होता है कि आजकी हिन्दी सरकारने राष्ट्रकी माली व्यवस्थाके इस पहलू पर कोई विचार नहीं किया है। वह जहाजी व्यापारके बारेमें सारी बातें खानगी लोगोंकी मर्जी पर छोड़ देनेका रुख रखती है।

आज तो ब्रिटिश रजिस्टरमें जितने जहाज दर्ज हैं उनमेंसे हिन्दुस्तानके जहाज मालिकोंके चाहने पर भी जरूरी हिस्सा नहीं मिल सकता, क्योंकि उनके दूसरी जगह भेजे जाने पर रोक लगा दी गयी है। अमेरिका भी अपने जहाज हिन्दुस्तानको नहीं देना चाहता। आज ब्रिटेन और अमेरिका सारी दुनियाके जहाजी व्यापार पर कब्जा करनेकी होड़ में लगे हैं, क्योंकि जर्मनी, जापान और इटलीके मुकाबला करने वाले लोग कुछ समयके लिये उनके साथ होड़में नहीं उतर सकते। इसलिये हिन्दुस्तानी जहाजी कम्पनियोंके मालिकोंके सामने एक यही रास्ता खुला है कि वे मिल सकने वाले साधनोंसे उत्तरी-पश्चिमी यूरोपसे जहाज हासिल करें। बाल्टिक प्रदेशके ये जहाज आम तौर पर मोटरकी ताकतसे चलाये जाते हैं। लेकिन हिन्दुस्तानमें इस लाइन के अनुभव वाले इंजीनियर नहीं मिलते इसलिये हमारी जहाजी कम्पनियोंके सामने यह बड़ी भारी रुकावट है। हिन्दुस्तान हमारे राजदूतों और ट्रेड कमिश्नरोंको बहुत बड़े सरकारी खर्चसे विदेशोंको भेजता रहा है। यह काम तभी ठीक कहा जा सकता है जब विदेशों में रहने वाले हमारे ये प्रतिनिधि लोग अपने इस अच्छे ओहदेका उपयोग हिन्दुस्तानकी जरूरतें पूरी करनेमें और उन-उन देशोंकी सरकारों पर हिन्दुस्तानकी मददके लिये ऐसा असर डालनेमें करे कि वे बेचकर या पट्टे पर जरूरी जहाज हिन्दुस्तानको दें।

जहाज बनाना महत्वपूर्ण धंधा

यहां इस बातका जिक्र कर देना ठीक होगा कि हम कई बार यह सुझा चुके हैं

(शेष २८ वें पृष्ठ पर)

नारीका ध्वंस

लेखक—श्री विजयकुमार तुंशी बी०ए०,एल-एल बी० साहित्यरत्न

कामेश विचारमग्न कुर्सी पर बैठा था। सामने डूबते सूरजकी अन्तिम झिलमिल किरणें, मकानकी मुंडेर को चूम रही थीं। दूर तक सुनसान था। गांवमें उसकी ईमारत सबसे बड़ी और सबसे आकर्षक है। कामेशकी पक्की हवेली है। वह इस गांवका जमीन्दार है। वैसे सारे गांवमें कच्चे मकानही अधिक हैं। कामेश मनमें अलस-से फैले विचारोंमें आत्म विस्मृत-सा, अब गायोंके पैरोंसे उड़ती धूलको देखने लगा। सूरजके झिलमिल प्रकाशमें, ढ़ालसे, कतारमें उतरते गायोंके झुण्ड छाया चित्र-से प्रतीत हो रहे थे। कामेश यों विचारोंमें खोया था कि फिर सरिता उसके सम्मुख आ खड़ी हुई।

'क्या सोच रहे है ?'

'कुछ नहीं सरिता। जितनाही मन बहलानेका प्रयत्न करता हूं उतनाही उदासीकी गहरायीमें उतर जाता हूं। एक शून्यता मेरे आसपास छाकर मुझे घेर लेती है। मेरा मन एक अनन्त उदासीमें डूब जाता है। सोचता हूं मैंने जीवनमें कोई महान पाप किया था जिसका प्रायश्चित भोग रहा हूं। सरिता तुम कब तक इस प्रकार खड़ी रहोगी ? बैठो जाओ न ?

सरिता कोच पर बैठ गयी वह एक टक व्यथित अपने जीजाको देख रही थी जो पत्नी-वियोगसे व्यथित होकर जीवनकी शांतिको खो चुका था। सरिता उठ कर अन्दर गयी और नाश्ता और चाय लाकर उसने टेबिल पर रखते कहा, 'नाश्ता कीजिये।'

मूर्तिवत कामेश अपने स्थानसे उठा और नाश्तेके सामने आकर बैठ गया और मिठाईका एक एक टुकड़ा खाने लगा। चायके प्यालेको उठाते वह बोला, 'तुम्हें यह गांव अच्छा लगता है ?'

'अपने जीजाका गांव किसीको बुरा लगता है ?

'यदि यह मेरा गांव न होता तो इससे तुम्हें अपनत्व या ममत्व न होता ?'

'मैं ऐसा सोचनाही नहीं चाहती।'

तुम्हें यही सोचना चाहिये। यही सोचना तुम्हें आवश्यक है। अब इस जमीन्दारीसे मैं इतना ऊब चुका हूं कि इस गांवको अब समाप्त कर देना चाहता हूं। सम्भवतः यह गांव मेरा न रहे, सम्भवतः मैं भी अपना न रहूं और सम्भवतः तुम भी ब्याह होनेके पश्चात इस प्रकार न रहो। जीवनमें सामाजिक बन्धनका विधान भी एक अभिशाप है।'

सरिताकी आंखोंमें जल भर आया। अपने ब्याहकी बात सुनकर वह विशेष आसक्त न दिखाई दी। जैसे अपने जीवन का रस उसे अपने जीजाकी जिंदगीके सम्मुख सूखता-सा प्रतीत होता है।

'जीजा ! जीवनमें इस प्रकार आप कब तक रहेंगे ? ब्याह कर लीजिये !'

'ब्याह ? वह ठहाका मार कर हंस पड़ा। यह भी जीवनका कैसा प्रिय-विरोध तुम कह रही हो सरिता ! अब ब्याह जीवन का प्रिय विरोध ही है ! मेरे जीवनका समस्त स्नेह तो तुम्हारी जीजीने ले लिया और चली गई ! अब रहा ही क्या है जिसको सम्भाल कर रखा जाय या किसी को दिया जाय ? तुम्हें देख कर एक संतोष मुझे मिलता है। सोचता हूं तुमने मेरे दर्दको समझ कर इस दीपावली पर पचास कोसका कच्चा रास्ता तय करके जो यहां आनेका कष्ट किया है यह क्या तुम्हारा चित्र मेरे सम्मुख अंकित नहीं करता ? भावनामें ही हृदयका रस व्याप्त होता है। ताज भावना का ही तो सजग, जागृत गीत है ? वह फिर रङ्ग बदलते आकाशको देखने लगा। सरिता उसके खाली प्यालेमें चाय ढालने लगी। हल्का अंधियारा गांवके शरीर पर अपनी चादर फैला रहा था। क्षितिज पर जो दो क्षण पहले स्वर्णिम आभा थी वह डूब चुकी थी और हल्की रङ्गीन रेखाएं फैल गयी थीं।

* * *

'तुम जा रही हो सरिता, तुम्हें जाना ही चाहिये। दीपावली समाप्त हो चुकी है। पिताजीकी चिट्ठी भी आयी है। दो मास बाद सम्भवतः तुम्हारा ब्याह हो जायगा। सम्भवतः मैं तुम्हारे ब्याहमें न आ सकूं। यह हीरेकी अंगूठी ले जाओ। यह मेरा उपहार है। तुमने मेरे एकाकी जीवनको प्यारका आकर्षण दिया है। तुम्हारी उपस्थितिसे मेरे हृदयको शांति मिली है। ईश्वर तुम्हें सुखी रखें—और कामेशने वह अंगूठी उसकी अंगुलीमें पहिना दी सरिताकी दृष्टि नीची थी। वह अपने अंतरसे प्रश्न पूछ रही थी कि वह किधर बही जा रही है ? क्या यह उसके लिये उचित है ? जीजाने जैसे अपने हृदयका समस्त धन उसके सम्मुख उड़ेल कर 'उसे जीवनमें एक आकर्षण दे दिया है और यह हीरेकी अंगूठी क्या है? क्या निश्छलप्यार जीवनका अभिशाप नहीं ? क्या इस निश्छलताकी पावनता पर शरीर निरंतर जला नहीं करता ? क्या जीवन की मान्यताओं पर जीवनका यथार्थ ठोकर खाकर चूर-चूर नहीं हो जाता ? अपनेको संयत कर सरिताने हीरेके दमकते नगमें झांक कर कहा, 'जीजा यह हीरा है ?'

'नहीं सरिता, यह हीरा नहीं, पत्थर है।'

'पत्थर।'

'कठोर और निर्मम पत्थर है सरिता ! इसके सिवा मेरे पास रह ही क्या गया है जो मैं तुमको दूं ?'

'इस अंगूठीको मैं यदि चूर-चूर कर दूं तो आपको दुख होगा ?'

'सरिता ? यह क्या कहती हो ? तुम इस पत्थरको भी चूर-चूर करना चाहती हो ? उफ् ! इतनी निर्ममता ही क्या मेरे लिये और आवश्यक है ?'

वह रो पड़ी। बाहर गाड़ी खड़ी थी। वह बिदा हो गयी। कामेशको दुख हुआ। सरिता अपने हृदयमें एक स्पदंनका अनुभव कर रही थी। जैसे रेगिस्तानमें एक हरा भरा वृक्ष, कहींसे लहलहा कर शुष्कता में विरोध बन कर खड़ा था !

* * *

बारह बज चुके हैं किन्तु यह कामेश

है कि सरिताको ही सोच रहा है। । अपने विगत जीवनकी अकथनीय घटनाएं, आज उसके मानस पथ पर उतरती जा रही हैं। सरिताने उसके हृदय-दीपको शक्ति दी है। हे भगवान ? उसने हीरेकी अगूंठी उसे क्यों दी ? अगूंठी बंधन है। बंधन कहीं कुवांरी लड़कीको भेंट किया जाता है ? क्या वह बंधनकी महिमा और गरिमा को समझ चुकी है ? उफ् ! जीवन भी एक खिंचा केनवासका टुकड़ा है जिस पर न जाने कितने चित्र बनते हैं, बिगड़ते हैं और फिर बन जाते हैं ?

कामेशके एकाकी जीवन पर सरिताने प्रकाश-दीप जला दिया है। जैसे उसके जीवनके कोरे पृष्ठ पर उसने एक रेखा बना दी है। वह रेखा जैसे उसे बार-बार चुनौती देकर कहती है कि क्या तुम मेरे रहस्यको समझे ? मुझमें सत्यता और जीवनका सीधापन है। मुझसे ही जीवनके रेखा गणितका निर्माण होता है। मैं तो सीधी सादी सरलता हूं। मुझे समझलो कोई मुझे सहायता और शक्ति प्रदान करे तो मेरा यह रूप आकर्षक और रसमय बन सकता है। उफ् ! वह यह सब क्या सोच रहा है। ? क्या उसे यह सब सोचने का अधिकार है ? वह एक पत्रिका उठा कर पढ़नेका उपक्रम करने लगा। वह मुख-पृष्ठके चित्रमें डूब गया। एक नवयौवना भय और आतंकसे हिचकिचाती, रिक्त गागर लिये, नदीके पानीमें उतर रही थी। उसके नयनोंमें भय और कुतूहल खेल रहे थे। उफ् ! जीवनका यह कैसा विद्रूप है ? जीवनकी कैसी छलना है ?

× + *

सरिताका ब्याह हो गया। कामेश नहीं जा सका था ब्याहमें। ब्याहके पश्चात् उसे एक पत्र मिला था :

जीजाजी,

प्रणाम। आपने चाहा कि मैं अपने जीवनकी बाजी परम्पराकी वेदी पर लगा दूं। वही मैंने कर लिया है। आप अवश्य समझ चुके होंगे। आप यह भी जानते होंगे कि नारीका प्रेम जीवनमें केवल एक बार ही दान बनता है। 'वे' एक सर्कस खोल रहे हैं। मैं उसीमें प्रमुख नटी का काम करूंगी। दुनिया मेरे स्वस्थ, सुन्दर शरीरको देख कर आलोचना प्रत्यालोचना करेगी, कुछ मुझे बेशर्म और-बेहया कह कर भी मेरे पैरोंके चूमनेके लिए उतावले हो जायंगे, हजारों कामुक धनपतियोंकी कोठियोंसे मुझे आमन्त्रण आयेंगे किन्तु क्या वे यह न सोचेंगे कि वे नारीके ध्वंस को प्यार कर रहे हैं भग्न जीवनके भग्न तारोंसे सरीली तानें निकालनेका प्रयास कर रहे हैं ? 'हीरेकी अगूंठी पत्थर की है' किसी दिन आपने ही तो कहा था ! पत्थरके पत्थर बनकर वापस कर रही हूं !

* * *

कामेश जीवनकी वीभत्सता और समाजकी परम्परा पर रो पड़ा ! सामने जुलाहा कम्बल बुन रहा था ! उसने दूसरी सिगरेट जला ली और मुंह भर कर धुआं छोड़ने लगा !

—०—

यह गाड़ीवान, वह वायुयान !

श्री विजयकुमार मुन्शी साहित्य, रत्न बी० ए०, एलएल० बी०

बहता समीर
वह था प्रभात,
ऊपर नभ में-
उड़ता देखो वायुयान !
यथार्थ-भूमि पथ पर
भाग्य चक्र कन्ध पर
गड़ड़ गड़ड़ गड़ड़,
चलती परम्परा अमर !

वायुयान : विज्ञान दान,
वायुयान : बुद्धि खान,
वायुयान : स्वप्न की लहर,
वायुयान : पूंजी का कहर।
यान : स्वप्न कल्पना का पंछी,
गाड़ी : यथार्थ का सीधा पथ है,
यान : विनाश का महा दान
गाड़ी : शोषण का सीधा अथ है !

यह गाड़ी वाला, वह वायु चालक
यह धरती वाला, वह नभग्राहक
यह गाड़ीवान, शोषण प्रतीक
वह वायुयान, धन का प्रगीत
गाड़ी : भारत की भाग्य रेख,
गाड़ी : भारत की रूढ़ि रेख,
गाड़ी : चलता किसान का सपना है।
गाड़ी : क्रमशः आगे बढ़ना है।

ये गाड़ी के दो चक्र चले
ये शोषण के दो चक्र चले
ये प्यासे मानव प्राण चले
ये हारे जीवन भार चले !
चर चर चर चर
गाड़ी कहती 'रे मानव
भूल नहीं तू माटी—पुतला
जीवन से न तुझे थकना है !

वायुयान ! रे वायुयान !
तू बन जा चाहे श्यामल बादल,
चाहे बन जा तू मुक्त विहग
याद रख आना तुझको धरती पर,

लो वायुयान तो चला गया
गाड़ी भी हो रही दृष्टि पार
धूसर पथ है, धूसर मन है,
औ' सम्मुख जीवन रण है

साहित्यकार-संसद्

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, श्री महादेवी और राय श्रीकृष्णदासने साहित्यकार संसदकी योजना पर निम्न अपील में प्रकाश डाला है। हमें आशा है कि इस पुनीत प्रयासमें प्रत्येक हिन्दी भाषीका सहयोग इन साहित्य महारथियोंको प्राप्त होगा। विश्वमित्र संचालक श्री मूलचन्द्र अग्रवालने इस योजनाको सफल बनानेके लिये ११०१) प्रदान किये हैं। आशा है कि अन्य धनामानी सज्जन भी इसका अनुकरण करेंगे। सं० वि०

गत कई दशकोंमें हिन्दी साहित्यका जिस अनुपातसे विकास हुआ है उसी उसी अनुपातसे साहित्यकारके जीवनका क्षय होता आ रहा है। परतन्त्र तथा विदेशी भाषासे आक्रान्त देशमें साहित्य-सृजन संघर्षसाध्य ही होता है, उस पर युगकी शोषक प्रवृत्तियों और विविध विषमताओंने साहित्य साधना तथा अनाहार रोग मृत्युके बीच कार्य कारण का अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। अधिकांश प्रतिभावन साहित्यकारों को जीवनकी साधारण सुविधाओं से स्वयं वंचित रहकर तथा अपने आश्रित स्वजनोंको वंचित रख कर ही अपनी अनन्य साहित्य साधनाका मूल्य चुकाना पड़ा है। प्रायः असमय ही उनकी जीवन यात्राके साथ साहित्य यात्रा भी समाप्त हो गयी है।

भाषाकी दृष्टिसे हिन्दीके महत्वके साथ उनकी कृतियोंका महत्व बढ़ा अवश्य किन्तु उसने युगकी व्यवसाय बुद्धिको इतना आकर्षित किया कि न्याय-बुद्धिके प्रवेशके लिये सब द्वार रुद्ध हो गये। परिणामतः आज पुस्तक प्रकाशनकी चकचौंधमें इस आलोकको बनाये रखनेके लिये तिल तिल घुलकर क्षार होने वाले लेखकोंकी ओर किसीकी दृष्टि नहीं जाती। साहित्यका मूल्यांकन करने वाले आलोचकोंने भी उनके भौतिक जीवनका मूल्य आंकनेकी आवश्यकता नहीं समझीं। आज तो स्थिति इस सीमा तक पहुंच गयी [illegible] विशिष्ट साहित्यकार बिना [illegible] आच्छादन और बिना लीला संवरण कर दे तो हम इसे दुर्घटना ही नहीं मानेंगे। हमें अपने ऊपर ग्लानि न होकर साहित्यकारकी उस मन्द-बुद्धि पर दया आवेगी जिसके कारण वह युगकी विषमता के साथ अपने आदर्शोंका सौदा करके सुखके साधन नहीं जुट सका।

ऐसी अस्वस्थ मानसिक स्थिति उस देशके लिये सामूहिक रुपसे हानिकारक है जो सद्यः स्वतन्त्र होकर नव निर्माणके स्वप्न देख रहा हो। लौकिक दृष्टिसे साहित्यकार विशेष सतर्क प्राणी नहीं होता, किन्तु यह स्वभाव उसे साहित्यके जीवनव्यापी कल्याणोन्मुख लक्ष्य से मिलता है। प्रत्येक विकासशील राष्ट्र अपने साहित्यकार, कलाकार आदि स्वप्न-द्रष्टाओं के हितोंका सजग प्रहरी रहकर ही नव निर्माणका अनुष्ठान आरम्भ कर सकता है, क्योंकि इनकी कृतियां ही युग विशेष की मानव समष्टिके मानसिक, बौद्धिक आदि विकासोंकी सीमायें हैं।

हमारा देश आज स्वतन्त्र हैं किन्तु हमारी स्थिति अबतक उस व्यक्ति जैसी है जो दीर्घ काल तक अन्धकारमें रह कर बाहर आनेके कारण प्रकाशकी चकाचौंधमें सब वस्तुयें ठीक ठीक न देख पाता हो। अपनी स्वाभाविक स्थिति प्राप्त करनेमें अभी हमें समय लगेगा।

हमारी साहित्यिक संस्थायें अभीतक विदेशी भाषाके संघर्षके कारण साहित्यके निर्माणसे अधिक महत्व उसके प्रचारको देती रही है। वे अपने गन्तव्य और पथ की इतनी अभ्यस्त हो चुकी है कि यह अभ्यास उनका स्वभाव बन गया है। ऐसी स्थितिमें वे साहित्यिकोंकी विषम स्थितिमें परिवर्तन ला सकनेमें असमर्थ हैं और अनिश्चित काल तक रहेंगी।

ऐसी स्थितिमें एक ऐसा साहित्यिक संघ आवश्यक हो उठा है जो एक साहित्यकारको दूसरेके सुख दुखसे परिचित करा सके, पारस्परिक सहयोग और सहृदयताको सुलभ कर सके और उन्हें अपनी समस्याओंके सम्बन्धमें विचार विनिमयके लिये एक मंच दे सके।

इसी अभावकी पूर्ति के लिये हिन्दीके साहित्यकारोंने व्यक्तिगत विभिन्नताको एकताके आधार पर साहित्यकार संसद की नींव रखी है। व्यक्तिगत आस्था, जीवन-दर्शन आदिकी दृष्टिसे एक साहित्यकार दूसरेकी अनुकृतिमात्र नहीं हो सकता, किन्तु सामूहिक कल्याणकी दृष्टिसे उन सबके जीवनमें 'एकोऽहं बहुस्याम' की भावना ही व्याप्त रहती है। संसद्-का आधार साहित्यकारोंकी अनेक रूपोंमें व्यक्त महान आत्मा और उसका लक्ष्य पारस्परिक सहानुभूति और सहयोगको सक्रिय और स्वाभाविक बनाना है।

अपने विज्ञापित उद्देश्योंकी ओर संसद् अपर्याप्त साधनोंके साथ भी निरंतर गतिशील रही है।

उसकी सहायक-निधिसे अनेक साहित्य-सेवियोंको आवश्यक सहायता तथा सहयोग प्राप्त हो चुका है। लेखकके स्वाभिमानका ध्यान रखते हुए संसद्का सहायक-निधि-विभाग स्वयं लेखक-परिवार के सम्बन्धमें ज्ञातव्य प्राप्त करके सहयोगापेक्षी साहित्यिक बन्धुओंको अपनी सेवाएं समर्पित करता रहा है। सहायक-निधिकी वृद्धिके लिये तथा लेखकोंके लाभार्थ संसदने कुछ उत्तम पुस्तकोंका प्रकाशन भी किया है। संसद्के प्रयत्नसे कतिपय प्रकाशकोंने कुछ पुस्तकोंके कापी राइट लेखकोंको लौटा दिये हैं और इस प्रकार उन्हें घोर अर्थ-सङ्कटमें मुक्तिका साधन प्राप्त हो सका है। प्रस्तावित साहित्य केन्द्रके लिये संसद्ने प्रयागमें गङ्गा-तट पर ४५,०००) लागतका एक भवन कई एकड़ भूमिके साथ खरीद लिया है, जहां रहकर साहित्यकार अपनी साहित्य साधनाके अनुकूल शान्त वातावरण तथा अध्ययनके लिये आवश्यक सामग्री पा सकेंगे।

संसद्की आवश्यकतायें—

संसद्को अपनी लेखक सहायक निधिको अधिक उपयोगी बनानेके लिये एक स्थायी कोषकी आवश्यकता है।

अनेक लेखकोंकी पुस्तकोंके कांपीराइट बिक चुके हैं और इस प्रकार वे पूर्णतया निरवलम्ब हैं। जिनके पास पुस्तकें हैं उनके सामने दो ही मार्ग हैं—या तो वे लाभकी आशा न रखकर उन्हें

प्रकाशकोंको दे दें या पाण्डुलिपियोंसे अपने घरको संग्रहालय बन जाने दें। दोनों ही स्थितियां लेखकको जीवनयापनकी सुविधा देनेकी क्षमता नहीं रखती। कतिपय लेखक रोगग्रस्त और साहित्य-सृजनमें असमर्थ हैं। इस प्रकार कुछ लेखक अपनी पुस्तकों का कापीराइट वापस पाने अथवा नयी पुस्तकोंके प्रकाशनकी आय तक और कुछ स्वस्थ होने तक लेखक सहायक निधिसे नियमित पर्याप्त सहायता पानेके अधिकारी रहेंगे। अपने इस वृहत परिवारको संभालनेके लिये साहित्यकार-संसद के पास यदि १००,०००) का स्थायी कोष न हो तो वह अपने गुरु कर्त्तव्यके निर्वाह में असमर्थ रहेगी।

स्वाध्याय-मन्दिर तथा स्मृतिगृह—

साहित्य केन्द्रमें एक संघायतन (हांल) और ग्रंथागार भी साहित्यकार संसद की अनिवार्य आवश्यकता है। स्वाध्याय मंदिरके सम्बन्धमें संसद ने जो अभिनव और एक बड़े अभावकी पूरक योजना बनायी है उसके अनुसार तुलसी, सूर, मीरा जैसे प्राचीन मनीषियोंसे लेकर प्रसाद, प्रेमचन्द जैसे अर्वाचीन साहित्य साधकों तकके लिये भिन्न भिन्न कक्ष रहेंगे, जिनमें साहित्यिक विशेषकी प्रतिमा, तैलचित्र, उसके ग्राम, गृह, जीवन सम्बन्धी अन्य सामग्री, पाण्डुलिपियां प्रकाशित ग्रंथ तत्सम्बंधी आलोचना-साहित्य आदि संग्रहीत रहेंगे, जिससे साहित्यकार विशेषके लिये निर्दिष्ट कक्षमें प्रवेश करने वालेको उसके सामोप्यकी अनुभूति भी हो सके और उसका साहित्य भी उपलब्ध हो सके। अध्ययन गृह और साहित्यिक संग्रहालय दोनोका अभाव दूर करने वाले कक्षोंमेंसे प्रत्येकके निर्माण और उसके लिये आवश्यक प्रारम्भिक सामग्री एकत्र करनेमें अनुमानतः पच्चीस हजार व्यय होगा। संघायतन (हांल) तथा अध्ययन गृहके निर्माणमें तीन लाख व्यय होनेकी सम्भावना है। किंतु निर्मित हो जाने पर यह प्रयागके अनुरूप ही साहित्यतीर्थ तथा मंदिरोंके देशका सजीव मन्दिर सिद्ध होगा।

कुछ साहित्यकार स्थायी रूपसे और कुछ अस्थायी रूपसे साहित्य केन्द्रमें रह कर साहित्य साधना करनेके इच्छुक हैं। संसदके प्रस्तुत भवनमें इतना अधिक स्थान नहीं कि अनेक लेखकोंके आवास की समस्या सुलझ सके। इस अभावकी पूर्तिकी लिये संसदने प्रसाद, प्रेमचंद आदि आधुनिक साहित्यकारोंके नामसे सम्बद्ध कई स्मृतिगृहोंके निर्माण की योजना बनायी है। यह कुटीर इन विशिष्ट साहित्यकारोंके स्मारक भी रहेंगे और इनसे साहित्य सेवियोंके आवासकी समस्या भी सुलझ जायगी। प्रत्येक स्मृतिगृहके निर्माण और उसे आवश्यक सुविधाओंसे सुसज्जित करनेमें पच्चीस हजार व्ययका अनुमान किया जाता है।

'साहित्यकार' पत्र और प्रकाशन-

हिन्दीमें ऐसे किसी पत्रका अभाव है जो लेखकोंके जीवन तथा साहित्य-सृजन सम्बन्धी समस्याओं पर प्रकाश डालता हो तथा नियमित रूप और निश्चित दृष्टिकोणके साथ उत्कृष्ट प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य उपस्थित करता हो। साहित्यकार-संसद्के उद्देश्योंके अन्तर्गत एक ऐसे पत्रका प्रकाशन भी है जो उक्त अभावकी पूर्ति कर सके और जिसके माध्यमसे जीवनको गति और चेतना देनेवाले साहित्यके साथ लेखकोंको पर्याप्त पुरस्कारके रूपमें आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके। पत्र प्रकाशनके लिये यदि निश्चितनिधि न हो तो पत्रकी असामयिक मृत्यु अवश्यम्भावी है, विशेषतः ऐसे पत्रकी जो गम्भीर हो और जनरुचिके निर्माणका उद्देश्य रखता हो।

राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके साथ साथ राष्ट्र-जीवनका नवनिर्माण और सांस्कृतिक जागरण भी अनिवार्य है।

हमारा प्राचीन साहित्य इतना समृद्ध है कि उसका परिचय भी राष्ट्र जीवनको प्रेरणा और स्फूर्ति देनेमें समर्थ सिद्ध होगा। अन्य प्रांतीय भाषाओंके विशिष्ट ग्रन्थोंके हिन्दी अनुवाद भी हमारी सांस्कृतिक एकता बढ़ानेमें सहायक सिद्ध होंगे। ऐसी स्थितिमें हिन्दी रूपान्तर तथा मौलिक सृजनका महत्वपूर्ण कार्य करने वालोंके जीवनयापनकी सुविधाका प्रबन्ध अनिवार्य है। जीवनकी साधारण सुविधाओंके अभावमें कदाचित ही कोई साहित्य-सेवामें समर्थ हो सके। यदि संसद् अपने प्राचीन साहित्यके अमूल्य रत्नोंकी प्राप्ति और उनके मूल्यांकनका कार्य दूसरों के शोषणके द्वारा करे तो उस अमर साहित्य के सन्देशके साथ साथ अपने उद्देश्यके साथ भी विश्वास घात करेगी।

साहित्यकार पत्र तथा प्रकाशनकी योजनाके लिए १००,००० की निधि अधिक नहीं कही जा सकती। प्रकाशनकी सुन्दर व्यवस्थाके लिये साहित्कार-संसद् की निजी प्रेसकी आवश्यकता होगी इस सम्बन्धमें दो मत नहीं हो सकते। प्रेस तथा कार्यालयकी व्यस्थाके लिये ५०,०००) निधि आवश्यक होगी।

संसदकी योजनाओंको कार्यान्वित करनेके लिये ७ लाख अर्थ अपेक्षित है। हम अपने प्रांतीय तथा केन्द्रीय सरकार से भी सहयोगकी मांग करते हैं, किन्तु जब तक हिन्दी जगत ही हमारे इस शुभ साहित्य अनुष्ठानका पौरोहित्य न स्वीकार करे तब तक हमारी सफलता संदिग्ध ही रहेगी। केवल सरकारकी शक्तिसे चलना किसी साहित्य-संस्थाकी प्रगति नहीं कहा जा सकता। विश्वास है, हमारे स्वतन्त्र राष्ट्रके संचालक और साहित्यानुरागी दोनों ही हमारी लक्ष्यप्राप्तिको अपनी लक्ष्य-प्राप्ति जान कर हमारे पथको प्रशस्त करेंगे।

सब्जी मंडी की आनन्दीको कौन नहीं जानता? जबसे मैं अकेले बाजार जाने लगा संसारकी सुन्दर और सलोनी छवि मेरे सामने घृणित तथा कलुषित बनकर आने लगी थी। मेरे मनमें खिंचे दुनियाके चित्रपर अनुभूतिकी रेखाएं धब्बेका काम कर जाती थीं। पास पड़ती थी और जल्दबाजीकी भागदौड़में हाथ बंटाती थी इसलिये मुझे आनन्दीकी दुकान सब तरहसे सुविधाजनक लगती थी। यही कारण था कि सांझ-सबेरेकी अनिवार्य आवश्यकताओंके सौदेसे यही निपट लिया करता था। परन्तु संसारके मेरे मनमें खिंचे सलोने चित्रमें जो अनुभूतिके धब्बे लगते गये, आनन्दीकी दुकान और उसकी परिसीमामें व्याप्त उसका विवश जीवन उनमें सबसे बड़ा धब्बा बन गया। किसीसे सुनता तो रहता था पर जब आंखोंसे देखा तभी मुझे विश्वास हो गया कि आनन्दीका बदबूदार यौवन भी तिरछी कटारियोंके साथ साथ तौलके पलड़ोंमें चढ़ता है तथा सब्जियोंके साथ-साथ पंसारियोंके भाव घायल नजरोंके ग्राहकोंमें बिकता है। यौवनकी उन्मत्त आकांक्षाओंकी लपटोंका केन्द्र आनन्दी दिन-दिन मंडीमें ख्याति पाने लगी और एक दिन वह बूढ़े पतिकी रूपवती स्त्री रूप के बाजारका सौदा बन ही गयी।

पुरुषको ऐसी स्त्रीकी भी कामना रही, जो केवल मनोविनोद और क्रीड़ाके लिये होती, जो जीवनके आदिसे अन्ततक केवल प्रेयसीही बनी रह सकती और जिसके प्रति पुरुष कर्तव्यके कठोर बन्धनोंमें न बंधा होता! पुरुषकी इसी इच्छाका परिणाम हमारे यहां की वेश्याएं हैं, जिन्हें जीवनभर केवल प्रेयसी और स्त्री ही बना रहना पड़ता है। क्योंकि प्रायः पुरुष ऐसी उत्तेजनाभी चाहता है, जिससे वह कुछ क्षणोंके लिये संज्ञाशून्यसा हो जाये। स्त्री पत्नी बनकर पुरुषको वह नहीं दे सकती जो उसकी पशुताका भोजन है। इसीसे पुरुषने कुछ सौंदर्यकी प्रतिमाओंको पत्नीत्व तथा मातृत्वसे निर्वासित कर दिया। वह स्वर्ग में अप्सरा बनी और पृथ्वीपर वाराङ्गना। कहीं स्त्रीको देवताकी दासी बनाकर पवित्रताका स्वांग रचा, कहीं मन्दिरमें नृत्य कराकर कलाकी दुहाई दी और कहीं केवल अपने मनोविनोदकी वस्तु बनाकर अपने विचारमें गुणग्राहकता दिखाई। यदि उस रूप विक्रय करनेवाली स्त्रीकी ओर देखा जाय तो निश्चयही देखनेवाला कांप उठेगा उसके हृदयमें प्यास है किन्तु उसे भाग्यने मृगमरीचिकामें निर्वासित कर दिया है। उसे जीवनभर आदिसे अन्ततक सौंदर्यकी हाट लगानी पड़ी, अपने हृदयकी समस्त कोमल भावनाओंको कुचलकर, आत्मसमर्पणकी सारी इच्छाओंको गला घोंटकर, रूपका क्रय-विक्रय करना पड़ा— और परिणाममें उसके हाथ आया निराश हताश एकाकी अन्त! पुरुषको आवश्यकता रहेगी, इसलिये स्त्रीको अपना जीवन बेचना होगा, यह कहना तो न्याय संगत न होगा। कोई भी सामाजिक प्राणी अपनी आवश्यकताके लिये किसी अन्यके स्वार्थकी हत्या नहीं कर सकता। *

स्वाभाविक या अस्वाभाविक इच्छाका लगातार दमन परिणाममें व्यभिचारका चोला ओढ़ लेता है। पुरुष या स्त्री अपनी स्थितिकी जिस सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक या वैचारिक सतह पर होती है उसीके अनुसार अनाचारकी प्रवृत्ति इनमें अपना मार्ग टटोलकर प्रस्फुटित होने लगती है। राजनीतिज्ञोंका गोपनीय एकान्त, समाज सुधारकोंकी कचहरी, सार्वजनिक अथवा खास शिक्षा संस्थायें जहां भी वृत्तियोंका दमन बीज बनकर गड़ गया, उसके अंकुर

असंख्य विपरीत परिस्थितियोंमें भी मरेंगे नहीं। अनाचारके अंकुरोंका विकास किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचे बिना रुकना नहीं जानता। इसकी जड़में निसर्गकी मनुष्य रचनाका कौशलही विशेष है। वयस् के साथ वृद्धि पाने वाली प्रकृति और पुरुषकी पारस्परिक शारीरिक भूख बाहरसे आकर्षण बन जाती है और हृदयमें कुतूहल। यह प्रकट सत्य है कि रुकावट स्वाभाविक-गतिमें बाधक नहीं साबित होती बल्कि एक तरहसे सहयोगही देती है। गतिमें दोहरी उत्तेजना पैदा कर देती है। प्रकृति-पुरुषकी आकर्षणकी गतिमें सामाजिक संस्कारोंकी आड़ है। आकर्षणकी लहरोंमें जितना अधिक बल होता, यह सामाजिकताकी रुकावट शीघ्र असमर्थता प्रकट कर देती है। सामाजिकताके उक्त रोड़ेकी विच्छिन्नता और अन्तर्प्रवृत्तिके स्रोतकी विजय याने अपने सम्बलकी विफलताका ही नाम समाजने अनाचार रख दिया है।

यह अनाचारकी परिभाषा हुई लेकिन एकांगी। दूसरे पक्षकी दलील अभी सामने नहीं आयी। वह इससे अधिक सजीव और सबल हो सकती है। प्रवृत्तिके बहावको समाज केवल इसलिये अनाचार नहीं कहता कि उसकी सामाजिकताकी अटकन असमर्थ सिद्ध हुई। वरन् इस हेतुसे कि इस गतिके बहावमें व्यक्तित्व और अस्तित्व भी अस्वाभाविक गतिसे अस्त हो रहा था। उसके विशेष होनेकी संभावना थी। इसी अशुभ आशंकाके निवारणार्थ सुधारकोंकी आवश्यकता उत्पन्न हुई। सामाजिक रुकावट और बहिष्कार इन दो अस्त्रोंका आविष्कार हुआ। व्यक्तिके सामूहिक वृद्धिके विरुद्ध प्रभावको उसने इसी इच्छासे अनैतिक कहा। और व्यक्ति अथवा उसकी कृति द्वारा किये गये इसी अनैतिकताके आग्रहको समाजने अनाचार या व्यभिचार कहा है। तब ये जो हमारे आसपास हरघड़ी घटने वाली घटनायें, जीवनके विकाशका नग्न नृत्य, यौवनकी हाट और रूपके क्रयकी घृणित चित्रावली का बना रहना क्या मनुष्यकी मनुष्यताको जीवित रखनेके लिये बहुत फायदेमन्द और अनिवार्य है? विश्वास नहीं होता कि क्षितिजके अंतरालतक कोई क्षुद्र वस्तुभी प्रत्युत्तरमें 'हां' कहनेका सामर्थ्य रख सकेगी। किन्तु वासनाकी कीच में बिलबिलाते हुए कुछ घातक विषैले जन्तुओंकी इच्छा अब भी हां कहना चाहती है, उसकी वैसी ही मौजूदगीके लिये। परन्तु इस लोकका नियम नहीं है कि विष के कीड़ोंको जिन्दा रहनेके लिये गन्दी नालियोंको साफ न किया जाय तथा प्रकाश और शुध्दतासे उन्हें बचाये रखें; भलेही आसपास गन्दगीका दुष्परिणाम फैलनेदें!

यहां मध्यप्रदेशके कीर्तिशाली मंत्रिमंडलमें एक हमदर्द सज्जनने उक्त समस्या को कानूनका स्वरूप देकर हल करनेकी दृष्टिसे प्रश्न उठाया था। पर निकृष्ट वृत्ति का परिचय देते हुए, उस व्यक्ति और उसकी हमदर्दीका भरी सभामें मजाक उड़ाया गया। इस समस्याकी ओर देखने की हमारी वृत्तिमें ही अभी गंभीरताका अभाव है यही तो बात है कि ऐसे महत्वके विषयके सम्बन्धमें हम हीन वृत्तिका परिचय देते रहते हैं। यह बात सही है और मैं भी इस पक्षमें नहीं हूं कि यह प्रश्न कानूनके बलपर दबा दिया जाय। यह तो कोढ़की तरह समाज पुरुषकी घिनौती और भयंकर बीमारी है। बीमारी जब तबीअत हो दबायी नहीं जाती; उसी तरह यह प्रश्न भी इस भांतिसे निर्मूल नहीं किया जा सकता। किन्तु इसका गंभीर निष्कर्ष निकालकर किसी तथ्यपर पहुंचनेकी अपेक्षा हंसीका विषय बनाकर टालना हमारी दूरदेशीमें क्या अपवाद नहीं बन सकता? हमारे घर की मां-बहनोंकी ही तरह कोमल प्रकृति, सेवापरायण तथा कर्मण्य नारियां रूपकी हाटमें चांदीके सिक्कोंपर, पुरुषकी उबलती वासनाका बांध बनकर यौवनके कीचमें सड़ा करें, पर हमें उनकी वास्तविकतासे रत्तीभर भी सहानुभूति न हो? वरन् वैभवकी छायामें बैठे हुओंकी तसल्लीका वे सामान बनें और हमें जरा भी मलाल नहीं! क्या यही उठती हुई भारतीयताका परिचय है? ऐसा कौन होगा जिसे मांकी कोखने प्रत्येक कष्ट सहकर मनुष्य लोक तक नहीं पहुंचाया, वह कौन है जिसे मासूम बहनने स्नेहभरी आंखोंसे पहला परिचय नहीं दिया; वह कौन हो सकता है जो लाड़ली पत्नीके अवगुंठनमें एक बार भी स्वर्गीय संगीतकी झनकार न सुन सका, ऐसा कौन है जिसने अपनी युवा पुत्रीमें अतीत यौवनके स्वर्ग कलशकी आभा नहीं देखी? वह पुरुष किस कामका जो हमारे ऐसे पारिवारिक जीवनका ही बृहद् रूप यौवनकी हाटमें तुलापर तुलते देख सकता है? उसके विनाशकी नग्नता खुली आंखों ठंडे दिलसे सहलेता है?

हमारी मिथ्या प्रशंसाने नारीको भले ही ऊंचा आसन दिया हो किन्तु आदिसे अन्त तक वह तो एक बिकाऊचीज ही बनती आयी है। पितृगृहमें वह पिताकी इच्छाके अनुसार उसकी भलाई, इज्जत, कुल मर्यादा और बड़प्पनके लिये इच्छा विरुद्ध अपरिचित पुरुषको, जिसे यहां वाले पति कहते हैं; बिकी। वहां पतिके क्रूर एक छात्री साम्राज्यने यौवनके हाथों उसे बेमोल लुटा दिया वह अलग। कौन कह सकता है कि हमने नारीको देवताका आसन दिया है? उसे सजीव मानव प्राणी भी माना है। उनके स्तित्वकी सविनय पूजाकी है! परिवारकी सीमामें उसका सर्वमान्य संहार हुआ। वहां वह घुल घुल कर मिट गयी। परिवारके बाहर सार्वजनिक क्षेत्रमें व्यभिचारकी उत्तेजना बनी। स्वर्गसे पृथ्वी तक देवतासे मनुष्य तक वह किसकी छायामें निष्कलंक हंसमुख, प्रसन्न रह सकी?

अपने स्वार्थके लिये ही मनुष्य तूफान खड़ा कर सकता है। नारीकी हत्याका रङ्ग तृप्तिके स्वार्थपर ही गहरा हुआ है। अपनी इच्छाके लिये पुरुषने नारीको घर की निरीह दासी बनाया। वह आजीवन दासी बनी रहे इसलिये गृहस्थी और सन्तानोंका कटघरा तैयार हो गया। उस कटघरे की रक्षाके लिये खोखले कङ्कालवत् आदर्शोंका बवण्डर उठाया गया। नारी इस बवण्डरमें बेखबर तिनकेकी

काश्मीरकी रक्षामें नारियोंने शस्त्र धारण किया है

तरह क्षुद्र बनकर उड़ती रही और पुरुष शिशुसा दूरसे देखकर तालियां पीटने लगा कभी उसने तृणकी तरह उसका वेहिसाब यातनाओंकी गति पर नीचे ऊपर होना देखा, कभी चूर चूर होकर स्तित्व का उस बवण्डरमें पिस जाना देखा। हमारे समाजके पुरुषके विवेक हीन जीवन का सजीव चित्र देखना हो तो विवाहके समय गुलाब सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पांच वर्ष बाद देखिये । उस समय उस असमय प्रौढ़ा, कई दुर्बल सन्तानों की रोगिनी पीली मातामें कौन सी विवशता कौन सी रूला देने वाली करुणा न मिलेगी ? *' यहां भी तो नारी सस्ती, सुविधाजनक, घरेलू, वेश्या बनायी गयी उसके प्रति समाजकी सहानुभूति हाथी के दांतोंके समान बाह्य प्रदर्शनकी वस्तुभर रह गयी है। केवल शोभाकी वस्तु, निरुपयोगी और उद्देश्य हीन ! आपद्ग्रस्ता नारीके सान्मानकी रक्षामें मिटनेकी हस्ती हममें कहां है ? इस देशमें ऐसोंकी संख्या अभी नगण्य ही हैं पर कुचेष्टाओंसे उस पर फब्तियां कसने वाले उसका अनादर करने वाले कदम-कदम पर मिलेंगे। घूरकर इस तरह देखेंगे मानो वासनाकी तरेरती आंखोंसे वे उन्हें निगल ही लेंगे स्त्री क्यों अपने इस अनादरको आंख मूंदकर पी जाती है ? वह क्यों नहीं उन कुचेष्टाओंको उगलने वाला मुख बन्द कर देती अथवा उन जहरीली आंखोंको खींच लेती। इस कटाक्ष का उत्तर तब दिया जा सकता था जब पुरुषकी नारीको निष्क्रिय निर्बल बनानेकी क्रियामें कुछ कमी रह जाती। किन्तु आज उसे इतनी निकम्मी, स्तित्व हीन निर्जीव बना डाला गया है कि वह अपनेपन तकसे अभिज्ञ है। इसमें उसका क्या दोष ?

अब उसमें चेतना पैदा हुई है। उसने करवट फेरी है। पर यह करवट फेरना खाईके तटपर सोये पथिक का करवट फेरना न सिद्ध हो। यह न हो कि एक धक्केमें ही दूसरे क्षण दुर्निवार तिमिर गर्तमें वह दफनायी दिखायी पड़े । आज नारी आन्दोलनकी जागरूकता की गति जिस ढङ्ग और तरीके पर हैं वह गलत दिशाकी ओर करवट फेरना है। वह सदियं तक आंखें मूंदे पड़ी रहीं इसीका यह परिणाम हो सकता है पर अब तो उसने जब चलनेकी ठान ली हैं तो आंखें मूंदकर चलना अविवेकसे कम नहीं। अशिक्षाके निवारणार्थ उसी शिक्षाका समर्थन किया गया जिसने हमको पश्चिमी पतनका दृश्य दिखा दिया है । जिसने नारीको इस महत्वपूर्ण 'त्व' से हीन बना दिया । वैवाहिक कुरीत्तियों पर बोलने की किसीको ही इजाजत नहीं। चाहे पिता अपनी पुत्री को, समाज देवताके अंगपर लगे सिंदूर को बनाये रखनेके लिये कत्ल ही करता रहे। रूपकी समस्या भी अब तक बराबर दवाई जा रही है । किसीने उसके पक्षमें आह किया कि लगा आकुलिनताका धब्बा। कहीं मानवताके इस धब्बेके खिलाफ शिकायतमें कलम चली कि तुरन्त तोड़ दी गई। गला खोलकर चीखना आरम्भ किया कि मजबूत कलाइयोंसे दवाकर घोंट दिया गया। मनुष्यकी मानवताके आगे इस तरहकी कोई समस्या भी हो सकती है। इसकी कल्पना तक साकार नहीं होने दी गयी । पर प्रकट होनेवाली शक्तिका प्रयास अथक रहा और दवाने वाले हाथोंकी अंगुलियों के मध्यसे ही उसका सबलत्व बाहर आ गया।

जब किसी भी पुरुषका कैसा भी चारित्रिक पतन उससे सामाजिकता का अधिकार नहीं छीन लेता उसे गृह जीवनसे निर्बासित नहीं कर देता, सुसंस्कृत व्यक्तियोंमें उसका प्रवेश निषिद्ध नहीं बनाता धर्मसे लेकर राजनीति तक सभी क्षेत्रोंमें ऊंचे ऊंचे पदों तक पहुंचनेका मार्ग नहीं रोक लेता। साधारणतया महान दुराचारी पुरुष भी परम सती स्त्रीके चरित्र का आलोचक ही नहीं न्यायकर्त्ता भी बना रहता हैं (क्योंकि समाज व्यवस्था उसके हाथोंमें है) ऐसी स्थितिमें पतित स्त्रियों के जीवनमें परिवर्तन लानेका स्वप्न सत्य हो ही नहीं सकता। जब तक पुरुषको अपने अनाचारका मूल्य नहीं देना पड़ेगा तब तक इन शरीर व्यवसायिनी नारियोंके साथ किसी रूपमें कोई न्याय नहीं किया जा सकता।

लन्दनमें जहाजी कानफरेन्स

(२० वें पृष्ठ का शेष)

कि इंगलैण्डके हमारे पौण्ड पावनेका भुगतान करनेका एक रास्ता यह भी है कि ब्रिटिश जहाज हमारे रजिस्टरमें चढ़ा दिये जायं। इङ्गलैण्डकी इस दलीलका कि देशकी डालरकी जरूरतके कारण पौण्ड पावनेक भुगतान रोकना पड़ेगा इस तरहके सौदे पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इसमें डालरकी कोई झंझट ही पदा नहीं होगी। अगर ग्रेट ब्रिटेन देना चाहे तो इस तरकीबसे हिन्दुस्तान का काफी कर्ज चुका सकता है। लम्बे समयकी नीतिके नाते हिन्द सरकारको हिन्दुस्तानमें ही जहाज बनानेके उद्योग को बढ़ावा देना और पैसेकी मदद करनी चाहिये। हिन्दुस्तान जैसे समुद्री किनारे वाले देशके लिये जहाज बनानेका धंधा जरूरी और महत्वका धंधा है और उसे सरकारको हर तरहकी मदद देनी चाहिये। यह उद्योग हमारे पुराने उद्योग धंधोंमें से एक है जिसे अङ्गरेजोंने करीब एक सदी पहले बरबाद कर दिया था।

बदकिस्मतीसे ग्रेट ब्रिटेन आज जहाजी और निर्यात व्यापारकी बुनियाद पर आर्थिक साम्राज्य कायम करनेकी कोशिश कर रहा है। यह बुरी बात है। मालूम होता है, पिछली दो लड़ाइयोंने उसे यह सबक नहीं सिखाया कि निकट भविष्यमें आने वाली बरबादीकी निशानी सारी दुनियाको यह जाहिर करती है कि ऐसा कोई भी राष्ट्र जो किसी दिशामें अपनी माली-व्यवस्थाके निकासमें संतुलन नहीं रखता, शांति कायम नहीं रख सकता। अगर स्केण्डिनेवियाके देश लड़ाइयोंसे काफी हद तक बच सके, तो उसका यही कारण है कि उनका प्रोग्राम अपनी आवश्यकतायें खुद पूरी करने तक ही रहा है। इसका यह मतलब है कि हर देशको खेती, उद्योगधंधों, जहाजी व्यापार, यातायात, तिजारत, व्यापार और बैङ्क . . का समतोल विकास करना चाहिये। इन सारे महकमोंको देशकी आवश्यकतायें भली भांति पूरी करने लायक तरक्की करनी चाहिये। इनका आवश्यकतासे ज्यादा विकास आखिर में हिंसा और लड़ाइयोंकी तरफ ले जायगा। इस लिये दुनियाकी शांतिके खातिर आवश्यक है कि ग्रेट ब्रिटेन अपनी माली व्यवस्थाके दोनों पलड़े बराबर रखे। इंगलैण्ड अपनी आवश्यकतासे ज्यादा विकास करने वाली माली व्यवस्थाका मुकाबला करने वालोंको जबरन दबानेकी कोशिश करके शांति कायम नहीं रख सकता।

सरकारका कर्त्तव्य

हमें डर है कि हमारी हिन्द सरकार ने भी अभी यह सबक नहीं सीखा है। हमें विश्वास है कि हिन्दुस्तानके माली जीवनकी योजना बनानेमें सवालके इस पहलू पर ध्यान दिया जायगा और कायम किया जाने वाला योजना कमीशन इस बातका ख्याल रखेगा कि हमारे माली जीवनके सारे हिस्से, सबसे पहले हमारी जरूरतें पूरी करनेके लिये एक सा विकास करें। यह ध्यानमें रखते हुए कि अभी तक हमारे जहाजी उद्योगको जरा भी विकास करनेका मौका नहीं दिया गया है। सरकारके लिये यह जरूरी हो जाता है कि वह हमारे राष्ट्रकी माली व्यवस्थामें जहाजी उद्योगको उचित स्थान देनेकी अच्छीसे अच्छी कोशिश करे।

—०—

लेखक—
श्री शम्भूनाथ सक्सेना

प्रिय आशा,

तुम्हें आज अपने बचपनकी याद भी नहीं होगी। तुमने अपने इस अट्ठारह वर्ष के जीवनमें सपनेमें भी नहीं सोचा होगा कि जिसे तुम 'मां' कह कर पुकारती हो, उस नारीके अलावा भी कोई तुम्हारी मां होनेका दावा कर सकती है—बेटी तुम्हारी अभागी मां मैं हूं। मैं इस भेदका रहस्योद्घाट न करना नहीं चाहती थी और इसी कारण विवेकसे मातृत्वको दबाती रही हूं। मैंने सतत् प्रयत्न किया कि चेतनासे ममत्वको दबाये रहूं। और मुझे इस बात का सन्तोष है, कि मैं अबतक अपने प्रयास में सफल रही हूं। लेकिन इतने पर भी वात्सल्यसे प्रेरणा पाकर थोड़ी दूर रह कर तुम्हारी देख-भाल अवश्य करती रही हूं।

आशा, आज तुम्हें विवाहित और सम्पन्न जीवन व्यतीत करते देख कर मुझे कितना हर्ष होता है। इसे मैं शब्दोंमें व्यक्त नहीं कर सकती ! मुझे आज प्रसन्नता है कि तुम्हारा अब समाजमें गौरवमय स्थान है और तुम्हारा विवाहित जीवन उतना ही सुखी है, जितना कि शुभ्र और मोदमय तुम्हारा बचपन रहा है। मैं जानती हूं जिन्हें तुम मां कह कर पुकारती हो, उस ममतामयी नारीने एक दिनके लिये—नहीं एक क्षणके लिये भी तुम्हारे हृदयमें इस भावनाको उदय होनेका अवसर नहीं दिया, कि उनकी तुम मुंह बोली बेटी हो। उनका प्रेम, सगी मांके प्रेमसे भी अधिक अजस्र-स्रोत-सा निरन्तर बहता रहा है।

बेटी, जैसा मैंने ऊपर लिखा है, मैं इस रहस्यको कभी न खोलती। लेकिन

वृद्ध हूं। अपरिचित यों कि मैं अब उनका नाम धाम कुछ नहीं जानती। लेकिन मैंने एक बार वचन दिया था कि जब तुम वयस्क हो जाओगी—तुम्हारा विवाह हो जायेगा, तो मैं इस कटु-सत्यको तुम्हारे सामने एक बार अवश्य रख दूंगी। लेकिन मैं कतई नहीं चाहती कि इससे तुम्हारे वर्तमान सामाजिक जीवनमें किसी प्रकारका अबरोध पैदा हो—इसीलिये इस घटनाको तुम भुला देना। और सुनो, जब तक यह पत्र तुम्हारे हाथोंमें पहुंचेगा, मेरे प्राणपखेरू इस संसारसे सदाके लिये विदा ले चुके होंगे।

उन दिनों तुम मुश्किलसे तीन बरसकी रही होगी। मैं नित्यकी तरह शामके समय अपने कमरेमें बैठी हुई थी, कि मांजीने आकर ग्राहकोंके आनेकी सूचना दी। मैं अपनी-सी पेशेवर दो अन्य लड़कियोंके साथ विक्षिप्त-सी बाहर पसन्दगीके लिये आई। वे तीन थे। उनमेंसे दोने हमें बुरी तरह घूरना—घृणित कटाक्ष करना और अश्लील चुहल करना शुरू किया। उन दोनोंके हाव-भाव और बातचीत करनेके ढंगसे स्पष्ट प्रतीत होता था, कि वे ऐसी जगह आनेके आदी हैं लेकिन, उनमेंसे तीसरा एकदम गुमसुम खड़ा रहा। मुझे उसका व्यवहार देख कर प्रतीत हुआ जैसे वह हमारे सामने जबरदस्ती बांध कर लाया गया हो। अपनी इच्छाके विरुद्ध-विवश करके ! अपने साथियोंकी बातचीतमें वह सहयोग नहीं दे पाता था। बल्कि बेचैनी महसूस कर रहा था। उसके इस स्वभावकी इस सादगीसे मुझे आभास

पड़ेगा। क्योंकि, अन्य दोनों व्यक्तियोंके जांच पड़तालके ढंगने यह स्पष्ट कर दिया था, कि वे मेरी दोनों हमजोलियोंको पसन्द करेंगे, जो मुझसे अधिक सुन्दर स्वभावसे चंचल और उम्रमें कम हैं।

अपने कमरेमें लौटते ही मुझे पता लगा, जैसा मैंने सोचा था वही हुआ। मैं पलंग पर बैठी थी, कि उन्होंने दरवाजेको अहिस्तासे थोड़ा-सा खोल कर झांका। मैंने कहा—

'चले आइये सीधे !'

और साथ मुस्करा कर बंकिम दृष्टि से उनकी ओर देखा। वह सहमें कबूतरसे कमरेमें घुसे। फिर कुछ शोच कर पीछे मुड़े। जाकर दरवाजा बन्द किया और चटखनी चढा दी। और जैसे ही वे बैठ कर मेरी तरफ बढ़े कि उनकी दृष्टि कमरे की अरगनी पर टंगी बच्चीकी फ्रांक पर पड़ी। और उसे देख कर वह ऐसे चौंके जैसे शराबी पत्थरकी ठोकर खाकर सचेत हो जाता है। यदि मैं उन्हें अपनी ओर आकर्षित न करती तो न जाने वे कबतक तन्मय होकर उस फ्रांककी ओर ही देखते रहते। मैंने अपनी आंखों में अलस मादकताका भाव व्यक्त करते हुए अंगड़ाई ली—

'इधर, यहांआइये न !'

मेरी नजरोंमें शरारत नाच उठी थी जो हम-सी पेशेवरोंके लिये व्यवसायमें बड़ी सहायक होती है। लेकिन मेरी बात का असर उन पर कुछ न हुआ। उनकी दृष्टि अब भी बेबी फ्रांककी तरफ ही लगी हुई थी। मैंने पलंगसे उतर कर उनका हाथ पकड़ कर खींचा और पलंग पर

बिठा दिया और पूछा—

'आपका नाम क्या है ?'

'हरिहर।'

'आप पहले भी कभी ऐसी जगह गये हैं ?'

उन्होंने चौक कर कहा—

'जी...क्यों नहीं, कई बार।'

लेकिन उनकी घबराहट और बोलने के ढङ्गसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था, कि वे झूठ बोल रहे हैं। तब मुझे शरारत सूझी, मैंने कुछ गम्भीर होकर अपनी आंखों द्वारा ऐसा भाव प्रदर्शित किया जैसे मुझे उनकी कही बातका मुतलक विश्वास हो गया है। मैंने अपनी आंखें उनके चेहरे पर केन्द्रित कर कहा—

'अच्छा।'

और फिर खुल कर हंस पड़ी। वे सहम गये। उन्होंने थोड़ी देर रुक कर कहा—

'मैं इस बेबी फ्राकको तरफ देख रहा था। मेरी...

मैंने उनकी बात बीचमें ही काटते हुए इस विषयको एक बारही खत्म करनेके ढङ्गसे कहा—

'यह मेरी बच्चीका फ्राक है।'

अनेक चेष्टाएं करनेके बाद भी उस समय मुझे बड़ा मानसिक परिताप हुआ कि इतनी चेष्टाओंके बावजूद मैं अपने प्रयासमें सफल नहीं हुई—उनका ध्यान मैं उस फ्राकको ओरसे हटा कर अपनी ओर न खींच सकीं। उन्होंने उस बेबी फ्राककी ओर देखते हुए कहा—

'मेरे भी एक बच्ची है। उसकी भी ठीक इसी रंगकी एक फ्राक है। इसे देख कर मुझे उसका स्मरण हो आता है। मुझे उनकी बच्ची होनेकी बात सुन कर चोट लगी। सच तो यह कि मुझे उनकी यह बातही पसन्द नहीं आयी। मैंने व्यग्रता प्रकट करते हुए कहा—

'अभी मांजी बुलाती होंगी। आपका समय खत्म हो रहा है।'

प्रत्युत्तरमें वे मुस्करा दिये। मैंने बिना उनकी मुस्कराहटकी ओर ध्यान दिये फिर कहा—

'देखिये आपके साथी कमरेसे निकल रहे हैं।'

उन्होंने वैसीही मुस्कराहट अपने आनन पर दीप्त करते हुए कहा—

'आप उनकी चिन्ता न करें।'

फिर कुछ सोच कर पूछा—

'आप बतायेंगी कि आपकी बच्ची इस समय कहां है ?'

और मैंने उस कमरेकी ओर सङ्केत कर दिया जिधर बेबी पालनेमें सो रही थी। उन्होंने विनम्र होकर कहा—

'मेहरबानी करके मुझे उसी कमरेमें ले चलिये।'

इसी समय हमारे दरवाजे पर आकर मां जीने खटखटाया और फिर बड़बड़ाई भी। उन्होंने पलग पर से उठते हुए कहा—

'तुम बैठो मैं अभी आता हूं।'

लेकिन मैं भी उत्सुकतावश उनके पीछे-पीछे हो ली। बाहर जाकर उन्होंने मांजी से दस मिनिटका समय और मांगा। मांजीने पहले तो साफ मना कर दिया फिर दोनों हाथोंकी अंगूठे समेत अंगुलियां दिखाकर बोली—

'इतने लगेंगे।'

उन्होंने पर्स से दसका नोट निकाल कर मांजीको दे दिया। उनके मित्र इस समय तक कमरेसे बाहर निकल आये थे और मुझे देखकर व्यङ्ग बर्षा कर रहे थे। उनके एक साथीने तो मुझे लेकर उनकी ओर इस बुरी तरहसे ढकेला कि मैं अपनेको बड़ी मुश्किलसे गिरतेसे बचा पाई। इसी समय वे फिर कमरेमें आ गये और अंदर मुझे करके चटखनी लगा दी। उनके मित्र फिर भी भद्दे फिकरे कसते रहे और शोरगुल मचाते रहे। उन्होंने कमरेमें प्रवेश करते ही फिर बेबी फ्राककी ओर देखा और फिर मुझे उस ओर चलनेका सङ्केत किया जहां बेबी सो रही थी। जब हम उस कमरेमें पहुंचे तो वे कुछ क्षण तक उस सोती हुई बच्ची की ओर देखते रहे। मैंने उन्हें बनानेके ढङ्गसे कहा—

'क्या वास्तवमें आपके भी बच्ची है ?

तुम्हें मेरी बातका विश्वास नहीं होता ?'

मैंने बातको पतङ्ग सी ढील देकर कहा—

'आपकी पत्नी जीवित है ?'

उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—

'मेरी पत्नी सुंदर है और मैं उसे चाहता हूं—वे जीवित हैं।

मुझे उनकी बात कुछ ऐसी लगी, जो मेरे मर्म पर जाकर वेदना करने लगी। मैंने कहा—

'तो फिर आप ऐसी जगह क्यों आते हैं ?

दूसरे ही क्षण मैंने कुछ उग्र होकर कहा—

'या तो आप जो कुछ कह रहे हैं असत्य है और सिर्फ मुझे चिढ़ा रहे हैं। नहीं तो....

तभी उन्होंने बिना मेरी बातकी ओर ध्यान दिये मुझे अंगुलीके इशारेसे चुप कर दिया, बोले—

'मेरी सुनो !'

मैं अचरजसे उनकी ओर देखने लगी। आशा, उनके कहनेके ढङ्गमें कुछ ऐसा स्वामित्व था जिसकी अवहेलना मेरी शक्तिके बाहर थी। बोले—

'जब मैं अपनी लड़कीके भविष्यकी तुलना इस बच्चीके भविष्यसे करता हूं, तो कांप उठता हूं। जवान होते ही इसे भी तुम्हारा जैसा जीवन व्यतीत करनेके लिये मजबूर होना पड़ेगा।'

मैंने अपने सामने अपने पेशेकी तौहीन सुनकर कड़क कर कहा—

'बाबूजी आप मेरा अपमान कर रहे हैं। आप भूलते हैं कि आप कहां हैं ?'

उन्होंने मेरी बातको बुरा नहीं माना। कहा—

'मैं तुम्हारे अपमानकी बात नहीं, इस बच्चीकी बात कह रहा था।'

इस समय भी मेरा हृदय अपमानसे पीड़ित था। मैंने वैसे ही गम्भीर भाव से कहा—

'हरेकका अपना समाज है। इस समाज में ही बच्चे बड़े होते हैं और फिर उस समाजके ढर्रे पर ही अपना जीवन ढाल देते हैं। मैं जहां हूं, वहां कहीं भी अपनी बच्चीका अकल्याण और दुर्भाग्य नहीं देख पाती। और फिर भी स्वरको जरा और उत्तेजित कर कहा था—

'आप जिस कामसे यहां आये हैं, उसे भूल रहे हैं। मुझे विवश होकर मां जी को बुला लेना पड़ेगा। वे मेरी बात सुनकर मुस्करा दिये। और बोले—

मैं मानता हूं हरेकका अपना समाज होता है और जो जिन परिस्थितियोंमें पलता है, उसे अपने आस-पासका वातावरण नहीं खलता।'

फिर कुछ दृढ़ होकर मेरी ओर तेजी से देखते हुए बोले—

'लेकिन तुम मां हो ! तुम अपनी लड़कीके लिये उस समाजमें प्रवेश की भी कामना करती होगी, जहां पति, देवर, ससुर और सास नामकी संज्ञा मौजूद है। कौन-सी मां अपनी लड़कीको गृहस्ती और गृहिणीके रुपमें देखना पसन्द न करेगी।

और फिर अतिशय कठोर होकर कहा था—

'और इसी सब को लेकर मैं सोचने लगा था। मैं कहता हूं तुम इस बच्चीको इसके भविष्यको उज्ज्वल बनानेके लिये अपनेसे अलग कर देना।

उन क्षणों में, मैं बेटी ! पागल—सी हो गयी थी। मैंने झपटकर तुझे पालनेसे उठा लिया था और सुबकते हुए कहा था—

'नहीं....नहीं....नहीं ! मैं अपनी बच्चीको एक पलके लिये भी अलग नहीं करुंगी। तुम कौन हो जो कहते हो कि अपनी बच्चीको मैं अपनेसे अलग कर दूं।'

लेकिन उन्होंने मेरी बातसे बिना प्रभावित हुए अनुशासनके ढङ्गसे फिर कहा—

लड़की के भविष्यके हित रक्षाके लिये तुम्हें इस बच्चीको अपनेसे अलग कर ही देना पड़ेगा। अगर तुम चाहती हो कि तुम्हारी लड़की बड़ी होकर समाजमें आदर पाये और इस दूषित वातावरणसे अछूती रहे, तो उन्हें उसे अपने साये से भी दूर रखना पड़ेगा। और मैं जानता हूं तुम मां हो—तुम्हारे अन्दर भी कोमल भावनाएं हैं—तुम्हारे अन्दर भी अपनी सन्तानको समाजके सोपान पर चढ़ते देखनेका चाव है।

मेरा पागलपन दूर हो चला था ! मैं एक टक अनिमेष दृष्टिसे अपनी बच्चीकी ओर, उसके भविष्यकी कल्पनाकर प्रातः कालीन नक्षत्र-सी क्षीण पड़ती जा रही थी। उन्होंने फिर आगे कहा था—

'ममत्व तुम्हारा मार्ग रोकेगा। पल-पल पर बाधाएं विकराल रूप ग्रहणकर मार्ग से विचिलित करने का यत्न करेंगी। लेकिन सुनो, तुम्हें उन विषम परिस्थितियों और कंटकाकीर्ण मार्गमें भी अपनी बच्चीके भविष्यका ध्यान रखना होगा।

दरवाजे पर फिर खट-खट होने लगी थी। मांजी अपशब्द बक रही थी और उनके साथी अधीर होकर मुंहमें जो कुछ आ रहा था, बकते चले जा रहे थे तभी उन्होंने जाते हुए मुझसे फिर कहा था—

'एक बात का वायदा करो ?'

मैंने स्तम्भित होकर उनकी ओर देखते हुए कहा।

'क्या ?'

तब अपनी प्राकृतिस्थ मुस्कराहट चेहरे पर बिखेरते हुए उन्होंने कहा था—

'जब यह बच्ची बड़ी हो जाये और इसका विवाह हो जाये, तो एक दिन तुम इस रहस्यको उस पर प्रकट कर दोगी।'

मैंने संयम सञ्चय कर कहा था—

'तुम बड़े निष्ठुर हो।'

लेकिन मैंने देखा वे मेरी बात की प्रतीक्षा किये बिना ही आगे बढ़ गये हैं दरवाजेके पास पहुंच गये हैं। जहां खड़ी थी वहीं से मैंने कहा—

'तुम्हें विश्वास है कि मैं अपने बचन को निभाऊंगी।

पलट कर उन्होंने केवल इतना ही कहा था—

'मैंने बचन एक मां से लिया है। पुत्री की मङ्गल-कामनाके लिये मां से अधिक प्रमाणित शब्द और किसके हो सकते हैं ?

और वे दरवाजा खोलकर बाहर निकल गये थे, जहां उनके अधीर साथी उनकी परीक्षामें विवेक हाथ से खो बैठे थे और बुरी गालियां बक रहे थे—जां मांजी अधिक समय लग जानेके कारण उन्हें आग्नेय नेत्रोंसे घूर रही थीं और शायद कुछ बुदा बुदा भी रही थी।

अहः हः
"लालशर" तो मेरे लिये अमृत है!
लाल-शर
(लाल शरबत)
बच्चोंको मोटा,ताजा,स्वस्थ और प्रसन्नचित रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा
सब जगह मिलता है।
डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰ कलकत्ता

पत्नी बनने के बाद !

लेखिका:—श्रीमती इन्द्राणी देवी जायसवाल

गृहस्थ जीवनकी सम्राज्ञीके रूपमें सिंहासन पर बैठतेही नारी पर बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है ! माता-पिताके उस घरसे जहां हंस कर और खेल कर जीवन बिताया—पतिगृहमें घरकी रानी बन कर आनेके बाद नारी अपनेको एक बिल्कुल नयी परिस्थितिमें पाती है।.... अपने बालपनके अल्हड़पनके कारण, देखा गया है, ससुरालमें आकर नारी के जीवनका आरम्भ निराशा व दुःख प्रद बन जाता है। यदि नारी दाम्पत्य जीवनमें प्रवेशके समय निम्न प्रश्नोंको ठीक तरह समझ ले तो पति-पत्नीका जीवन स्वर्ग बन सकता है।

पतिगृहमें !

पतिगृहमें प्रवेश करते ही सबसे पहले नारीको घरके वातावरणको अच्छी तरह समझनेका प्रयत्न करना चाहिये। घरमें प्रचलित रीति-रिवाजोंके अनुसारही स्त्रीको सभी काम करना चाहिये। घरमें प्रचलित प्रथाके खिलाफ कोई भी कार्य मत करो और न ऐसा कोई काम करो जो दूसरोंकी नजरमें खटके। यदि तुम्हारे सास-श्वसुर सबके सामने तुम्हारा पतिके साथ हंसना-बोलना पसन्द नहीं करते, तुम दोनोंका बाहर घूमना या सिनेमा-बाजार जाना आदि पसन्द नहीं करते तो वह काम मत करो। धीरे धीरे तुम्हारी सास स्वयं अपने पुत्र व बधूकी इच्छाएं पूर्ण करनेको तैयार हो जायेंगी। यदि पति भी घरके लोगोंकी इच्छाके विपरीत कोई कार्य करनेको कहें तो उन्हें प्रेमपूर्वक समझाओ कि इसमें हम दोनोंकी बदनामी होगी—एकदमसे ऐसा करना ठीक नहीं। ऐसा करनेसे गृह कलह कभी पैदा न होगा !

बहू और सास !

पतिगृहमें सबसेप्रमुख सदस्य जिसके निकट सम्पर्कमें पत्नीको हमेशा रहना पड़ता है वह है—सास। यह सास उसके पतिकी मां है। इसने पतिको पालपोस कर बड़ा किया है और बदलेमें चाहती है कि बहू और बेटा दोनों उसके आज्ञाकारी बने रहे। आजकल हर जगह सास-बहूमें कुछ न कुछ अनबन जरूर दिखायी पड़ती है जिससे सदैव कलह बना रहता है। यदि स्त्री थोड़ीसी बुद्धिमानीसे काम ले तो घरमें प्रेमका साम्राज्य रहेगा। सास यदि प्रसन्न रहे तो घरमें शांति बनी रहेगी। सास मानकी भूखी रहती है और मान मिलने पर वह बहुतही जल्द प्रसन्न हो जाती है। तुम्हें जब कहीं जाना हो तो साससे माधुर्य पूर्वक कहो—चलिये माताजी, आज सिनेमा चलें। घूमने जाना हो तो सासको साथ ले जानेका प्रस्ताव करो। कोई कपड़ा लाना हो तो उनसे जाकर कहो कि वे साथ चल कर ले दें। इसका फल यह होगा कि तुम पर सास प्रसन्न रहेगी और उनका तुम पर स्नेह बढ़ेगा। पर इसके विपरीत यदि साससे बिना पूछे या उससे छिप कर कोई कार्य करोगी तो इसे वह अपना अपमान समझ कर सोचेगी कि बहू मेरी परवाह नहीं करती। जब तुम्हारे पति मासिक वेतन-पैसा आदि लाकर तुम्हें दें तो तुम तुरन्त सासको जाकर दे देना। बस, सासका हृदय तुम्हारे इस व्यवहारसे गदगद हो जायगा और कुछ समय बाद बहुत प्रेमसे वह कहने लगेगी कि "बहूरानी, तुम्हीं यह सब सम्भालो !"

परिवारके सदस्योंके बीच !

सास जिस तरह अपनी मान प्रतिष्ठा चाहती है उसी तरह वह अपने पति (तुम्हारे ससुर) की भी मान प्रतिष्ठा देखना चाहती है। इसका तुम ख्याल रखना। सासको अपनी बेटी (तुम्हारी ननद) और बच्चे बहुत प्यारे होते हैं। तुम प्यार बच्चोंकी से देखभाल और हिफाजत करना। कभी अपने घरकी बड़ाई करके ससुरालको छोटा (नीचा) बतानेकी चेष्टा नहीं करना। घरमें किसीसे मुंहजोरी नहीं करना,सदैव शीलवती बनी रहना। अपने पतिकी आंखोंसे मत गिरना क्योंकि एक बार उनकी आंखोंसे गिरी तो सभीकी आंखोंसे गिर जाओगी !

ससुरालही तुम्हारा घर है !

ससुरालमें यदि तुम्हें कोई शिकायत हो, तो अपने घरमें या किसी दूसरेसे उसकी चर्चा नहीं करना। ससुराल तुम्हारा घर है जहां तुम्हें अपनी सारी जिन्दगी बितानी है। घरके भेद किसीको नहीं बताना ही बुद्धिमानी है। घरकी बातें छिपाकर रखनेमें ही तुम्हारे हृदयकी विशालता और महत्ता प्रकट होगी। अपने घर वालोंसे या दूसरोंसे ससुरालकी शिकायतें करके तुम

न समझना कि केवल तुम्हारे ससुराल वाले ही बदनाम होंगे और तुम्हारी बड़ाई होगी तुम्हारी बातोंसे लोग यहीं समझेंगे कि तुम छिछली हो।

आदर्श नारीके गुण !

(१) *मधुर वाणी*—मधुर वाणी का गृहस्थ जीवनकी सफलतामें सबसे अधिक महत्व है। मीठी वाणी जीवनके भारीसे भारी दुख, क्रोध और संताप को शांत कर देती है। अपनी वाणीमें माधुर्य घोलकर तुम चलोगी, तो जहां संसारके छोटे बड़े कष्टोंको तुम आसानी से पार कर सकोगी, वहां पतिके हृदयको भी सदा वशमें रख सकोगी।

(२) *सौन्दर्य*—प्रत्येक मानव हृदय सौन्दर्यका प्रेमी है इसलिये हर नारीको अपनी वेशभूषा और शृंगारकी ओर पूर्ण सजग रहना चाहिये। अपने आकर्षणको कम नहीं होने देना चाहिये। स्वच्छ सुन्दर वस्त्र कलापूर्ण ढङ्गसे पहनने और उचित शृंगारसे आकर्षण व सौन्दर्य बढ़ता है। कभी मैली कुचैली मत रहो। बाल बिखरे नहीं रहना चाहिये। इत्र, सेंट, पाउडर, स्नो, तेल, क्रीम आदि सौन्दर्यको बढ़ानेमें सहायक होते हैं पर सौन्दयको स्थायी बनाये रखने और हमेशा सौन्दर्य वृद्धि करनेका असली उपाय है—शरीर और स्वास्थ्यकी रक्षा। जितना शरीर स्वस्थ होगा उतना ही वह सुंदर होगा। अपने सौन्दर्यको स्थायी बनाकर तुम सदैव पतिप्रिया बनी रहोगी।

(३) *सतीत्व*—सतीत्व नारीका सबसे बड़ा धन है। पतिको अपनी मधुर वाणी और सच्ची सेवासे यह विश्वास दिलाती रहे कि वह सदा उसकी है। बुरी वस्तुओंका शौक, मद्यपान, बुरे लोगोंकी संगति, परपुरुषसे मिलना, बोलना या हंसना पर पुरुषके साथ ज्यादा समय रहना, बेकार किताबें पढ़ना, रद्दी सिनेमा देखना, पर-गृहमें निवास, यौवनावस्थामें दूसरोंके यहां रहना या अधिक जाना आना, पतिसे अलग रहकर इधर उधर घूमना—ये स्त्रियोंके सबसे बड़े दोष हैं जो उन्हें पतनकी ओर ले जाते हैं। हर नारीको इन दोषोंसे बचकर रहना चाहिये।

गृह लक्ष्मी !

पतिगृहमें आनेके थोड़े समय बाद ही नारी घरके जीवनमें अपनेको लीन कर देती है और वह एक साधारण नारीसे गृहलक्ष्मी बन जाती है। गृहलक्ष्मी बननेके बाद प्रत्येक नारी का शिष्टाचारका ज्ञान अवश्य रखना चाहिये। प्रातःकाल पतिके उठनेके पूर्व उठकर घरके बड़ोंको पहिली बार मिलने पर प्रणाम करना चाहिये। यदि घरमें नौकर नहीं है तो स्वयं झाड़ू आदिके काममें सासकी मदद करनी चाहिये। ज्यों ज्यों ससुरालके रङ्ग-ढङ्ग से परिचित होती जाओ, त्यों त्यों घर-बारके प्रबन्धको अपने हाथमें लेते जाना। मान मर्यादासे बैठना उठना। आदर पूर्वक और विनयके साथ बातें करना। सबसे प्रेम पूर्वक हिल मिलकर रहना।

कांवर-वाही

चल पड़ा उठा कर कांवर मैं,
दो प्यारे शब्दोंका प्यासा !
कन्धे पर दोनों ओर भार,
आगे है फैला पथ अपार।
बस इतनाही है आज ध्यान,
कब कैसे पहुंचूं देव-द्वार।
वह अपने हाथों ले उतार,
यह भार यही है अभिलाषा।
बजती चलती घण्टी टन टन,
मैं दौड़ रहा उन्मन उन्मन।
आह्लाद कभी अवसाद कभी,
यह भी दो क्षण वह भी दो क्षण !
रोना हंसना, गिरना उठना,
बस यह जीवनकी परिभाषा !

झोलीमें थोड़ा सा चावल,
इतना ही है पथका संबल।
चुल्लूसे होता नीरपान,
बाहों पर सिर रख कर विहान।
चलते जाना बढ़ते जाना,
जबतक श्वांसा तबतक आशा।
छूटे जाते घरबार नगर,
छूटे कितने बनबाग डगर।
कितने छमछम पनघट छूटे,
कितने खमखम मरघट छूटे।
आते जाते हैं दृश्य सभी,
पर्दे पर एक तमाशा सा।

वह पथ है यह मैं राही हूं,
मैं क्या हूं कांवरवाही हूं।
मत पूछ कि कांवरमें क्या है,
है भार किसीका बोझा है।
मत मुझे टोक री जग-माया,
रहने दे अपनी जिज्ञासा।
मैंने कब चाहा था कांवर,
कब मांगा यह जीवन दुस्तर।
है कठिन सांसका लेना भी,
कंटकमय मग, है धूप प्रखर।
निष्फलताका अभिशाप लिये,
मैं आज काव्यमय दुर्वासा।

—'कर्मशील'

सिनेमा—

हमारी फिल्में युगके अनुकूल क्यों नहीं?

आधुनिक फिल्मों के सम्बन्धमें क्या लिखा जाय, समझमें नहीं आता। केवल एक ढर्रेके प्रेमको चित्रित करनेवाली फिल्में तैयार होती हैं और हो रही हैं। गत चार पांच वर्षों में संसारमें महान परिवर्तन हुए, भारत भी उनसे अछूता नहीं रहा यहां भी समाजके विभिन्न अवयवोंमें परिवर्तन हुए। लेकिन इस परिवर्तनका हमारी फिल्मों पर तनिक भी प्रभाव नहीं है। साहित्य क्षेत्रमें अवश्य यत्र तत्र कुछ परिवर्तन हुए हैं लेकिन फिल्म और रंग मचमें कोई परिवर्तन नहीं हुए हैं।

विश्वव्यापी महान युद्धका प्रभाव हमारे देश पर भी पड़ा। चोरबाजारी और चीजें छिपा कर ऊंचे दामोंमें बेचनेकी प्रवृत्ति बढ़ी।

अकाल पड़ा लाखों आदमी अन्न अन्न चिल्लाते चिल्लाते सदाके लिये चल बसे। लेकिन दूसरी तरफ कुछ मुट्ठी भर लोग हजार पतिसे लखपति और लखपतिसे करोड़पति बन गये। महायुद्ध बन्द हुआ लेकिन अकालके भाई बन्धुओंकी चोर बाजारी बन्द न हुई। जनताने सोचा अब नया जमाना आया है, सब ठीक हो जायगा। अन्य देशोंके फिल्म निर्माताओं और साहित्यिकोंकी भांति हमारे देशके साहित्यसेवी और फिल्म निर्माता अपने रवैयेमें अवश्य परिवर्तन करेंगे और जनताके मनोभावों का चित्रण करेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आज भी पहले जैसी पिटेपिटाये प्रेमकी फिल्में चल रही हैं। मजदूर, उदयेर पथे आदि फिल्मोंको लोग नये जमानेकी फिल्में कहते हैं लेकिन मुझे उनमें गत वर्षों में होनेवाले परिवर्तनोंकी तनिक भी झलक नहीं दिखायी पड़ती है। प्रायः देखा जाता है कि पहले जैसी कहानियां ही फिल्मोंमें आ रही हैं। बहुत हुआ तो धनी घरकी कन्या किसी गरीब घरके लड़केसे प्रेम करने लगी। युवक प्रगतिशील और आधुनिक है, मजदूर कार्यकर्त्ता या समाज सेवक है। उन दोनोंके मिलनमें बाधाएं आतीं है। लेकिन सारी बाधा-विपत्तियों पर विजय प्राप्त कर प्रेमिका अपने प्रेमी से मिलती है। बस यही आजकी फिल्मों की प्रगतिशील कहानी है अब सवाल यहहै कि ऐसी फिल्में हालमें बैठे बैठे देखनेमें ही आनन्द देती है या कुछ स्थायी प्रभाव भी छोड़ती हैं। लेकिन मेरी समझसे थोड़ी देरका मनोरंजनही ऐसी फिल्मोंका उद्देश्य हैं।

उदयशङ्कर आक्रमणकारी मुद्रामें

युद्ध मोर्च पर सनिकाको प्रोत्साहन देने वाले अमेरिका के कलाकार

मनुष्य द्वारा निर्मित फिल्मोंमें समाजका चित्र क्यों नहीं? मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाजके दुख सुख व्यथा वेदनाके साथ मनुष्यका जीवन जुटा हुआ है। फिर मनुष्य द्वारा निर्मित फिल्म में समाज जीवनके इस द्वन्द्वका इतिहास क्यों नहीं रहेगा।

थोड़ी देरके मनोरञ्जनको ही उद्देश्य बनानेसे कलाका विकास सम्भव नहीं। समाज-कल्याणकी बात प्रमुख होनी चाहिये। सोवियट रूसके श्रेष्ठ फिल्मी कलाकारने कहा है कि "मानव जीवन उसकी अन्तर्निहित वाणीको चित्रित करना ही ललित कलाका उद्देश्य है। कलाकार यदि इस उद्देश्य पूर्तिमें असफल होता है तो उसकी कला-कृति सफल नही मानी जा सकती।" भारत की एक भी फिल्म शायद ही इस कसौटी पर खरी उतरे। फिल्मी कलाकार चाहे तो अपनी फिल्मोंके द्वारा समाजको भलाईके मार्ग पर खड़ा कर सकता है। लेकिन हमारे कलाकार इस मामलेमें चुप क्यों हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि

हमारे फिल्मी संसारमें अधिकांश कला-कार प्रतिक्रियावादी हैं। जो फिल्में बनाते हैं और जो उसके निर्माणमें भाग लेते हैं वे साधारण समाज जीवनसे अलग अपना एक संसार बनाकर सीमित दायरेमें रहते हैं। समाज और बाह्य संसारमें चलने वाले मनुष्यको दैनिक संग्राम ओर जीवन प्रवाहसे इनका कुछ भी सम्बंध नहीं। इसीलिये इनकी फिल्मों पर सामाजिक

चन्द्रप्रभा

जीवनकी कोई छाप नहीं रहती है। वे नहीं समझते या समझना नहीं चाहते कि सामाजिक मनुष्य क्या चाहता है। अब जनता थोड़ी देर तक मनोरञ्जन करने वाली फिल्में देखना नहीं चाहती है वह चाहती है अपनी समस्याओंसे भरे जीवन के यथार्थ चित्र।

हमारे देशमें फिल्म बनाने वाले विलासी अभिजात्य वर्गके लोग हैं। उनका दृष्टिकोण गलत है और वे जनताकी वास्त विक स्थितिसे अनभिज्ञ हैं। साथ ही हमारे देशमें इस सम्बन्धके उपयुक्त साहित्यका अभाव। साहित्यके आधार पर ही अच्छी फिल्मोंका निर्माण होगा। लेकिनसाहित्यिक भी तो अपने साहित्यमें समाज जीवनका सही सही चित्रण नहीं कर पा रहें हैं

मुमताज शांति मोतीलाल

द्विवेदी युगमें जिन साहित्यिकोंने लेखनी उठायी थी आज वे बेकारसे नजर आते हैं। युद्धोत्तर कालमें भी वे वही लिख रहे हैं जो उन्होंने युद्धके पूर्व लिखना प्रारम्भ किया था। आज नये साहित्यकी आवश्य-कता है। कहानी साहित्यकी उन्नति न होने पर अच्छी फिल्मोंका निर्माण संभव नहीं। एक असुविधा यह भी है कि पूंजी पतियोंके सहयोग से फिल्में बनतीं है और पूंजीपति यह सोचता है कि पैसा आना चाहिये। कला जाय जहन्नुम में। इस तरहके शोषकोंके हाथसे फिल्म-कलाका बचाना पड़ेगा और उसका राष्ट्रीयकरण करना पड़ेगा।

—एक दर्शक

क्लोरोफार्म

—:※:—

· मेडिकल प्रोफेसर जेम्सयंग सिम्पससन ने ४ नवम्बर सन् १९४७ में क्लोरोफार्म का अनुसंधान कर मनुष्य जातिको आपरेशन इत्यादि का कष्ट अनुभव करनेसें रक्षा की। किन्तु यंग का यह कोई नया प्रयोग न था, २०००, वर्षों से ही जड़ी बूटियों द्वारा वेहोश करनेका प्रयत्न किया जा रहा था। १६ वीं सदींके मध्य तक उचित मात्रामें औषधियोंका प्रयोग न हो सका था। बुद्धिमान सर्जन असफलता और विपत्तियोंसे डरकर उन्हें काममें न लाते थे। बेचारा मरीज उन दिनों सिर्फ पीड़ा से वेहोश होकर ही शांति प्राप्त कर सकता था।

जब सर्व प्रथम क्लोरो फार्म का अविष्कार हुआ तब सिम्पसन और उसके साथी खाना खाने बैठे हुए थे । उन्हें एकाएक याद आया कि उन लोगोंने जिस रासायनिक मिश्रणको बनाकर फेंक दिया था शायद वह सफल हा जाय । तुरन्त उन लोगोंने उसे ढूंढ़ना प्रारम्भ किया। आखिर रद्दी कागजों के एक ढेर के नीचे वह मिल ही गया उसे (टम्बलर) एक प्रकार के गिलासमें प्रयोगके लिये डालकर सिम्पसन और उसके साथी बैठे। उसकी भापसे सिम्पसन बेहोश होने लगा। साथियोंने प्रयोगका सफलीभूत होता देखा और खुद भी वेहोश होने लगे।

सिम्पसनको अज्ञानता सबसे पहले दूर हुई। उसने देखा कि उसके साथी इधर उधर लुढ़के पड़े हैं। कोई खर्राटे भर रहा है। इसके कुछ ही दिन बाद सिंपसन ने इसका तीन रोगियों पर आपरेशनके समय सफल प्रयोग किया। इसके बाद इसका काफी प्रचार हुआ। यहां तक कि सन १९५३ और १९५७ में प्रिंस लियोदोल्ड और प्रिंसेज विट्रीस

पर भी दो बार प्रयोग किया गया था।

सारा संसार सिम्पसनके इस महान दानका कृतज्ञ है। अभी हालमें इस महान व्यक्तिकी पुण्य तिथि मनायी गयी।

* * *

गांधीजीकी प्रिय बकरी 'निर्मला का देहान्त हो गया। बड़े बड़े नेताओं और राजनीतिज्ञोंसे इसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सर स्ट्रेफर्ड क्रिप्स और पण्डित जवाहर लाल नेहरू तो उसे बहुत चाहते थे।

* * *

पश्चिमी और पूर्वी पञ्जाबकी सरकार मुसलमान और हिन्दू—सिख कैदी आपस में बदलेगीं।

* * *

राजनीतिके अखाड़ेमें कितने तरहके दांव-पेच चल सकता है इसका पता तब लगा जब विहार शरीफ के हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ताओंने 'बेलट बक्स'में (जिसमें वोट डाले जाते हैं) तेजाब छोड़ दिया।

* * *

ब्रेंजील के रियोडी जेनेरियों नामक स्थानसे विचित्र समाचार प्राप्त हुये हैं। वहां के कई बीमार और पंगु लोगोंने रातों रात आरोग्यता प्राप्त कर ली है। कहा जाता है कि एक पादरी जिसे आशीर्वाद दे देता है वही चङ्गा हो जाता है। अमेरिकाके समाचार पत्रोंमें इसकी धूम मची हुई है। अन्धे लङ्गड़े, बहरे व्यक्तियोंके चित्रोंके साथ समाचार प्रकाशित हुए हैं।

इस पादरीके गांव तक जानेके लिये लोग पचासगुना और सत्तर गुना ब[illegible] भाड़ा देकर १८ घण्टे की यात्रा करते हैं। इसके घरके सामने हजारों व्यक्तियों की भीड़ लगी रहती है। दिनमें कई बार यह पादरी अपनी खिड़की पर निकलकर भीड़को आशीर्वाद दिया करता है। कहा जाता है कि इसके हाथ उठाते ही लोग [illegible]

बम्बईके मानोनीत गवर्नर सर महाराज सिं[illegible] लोगोंकी परीक्षा कर इन्हें पूर्ण रूपे[illegible] आरोग्य बताया है।

गुंटूर नामक दक्षिणी भारतके स्था[illegible] में ८ मुसलमानोंने स्वेच्छासे हिन्दू धर्म ग्रहण किया है।

* * *

बिना दाढ़ीका सिख कृपाण र[illegible] सकता है या नहीं ? इस विषयको लेक[illegible] शिमला की अदालतमें मामला चल र[illegible] है।

* * *

समुद्री जलसे धातु बनाकर अंग्रे[illegible] हवाई जहाज बना रहे हैं । यह धा[illegible] अलमुनियमसे भी हल्की है।

* * *

मद्रास असेम्बलीमें बडा ठाहा[illegible] लगा जब बेगम अमीरू द्दीनने प्रीमि[illegible] यरसे पूछा कि सरकारी कर्मचारि[illegible] के लिये कौन सी विशेष वेशभूषा ठीक [illegible] जा रही है प्रधान मन्त्रीने जब सदस्यों [illegible] राय मांगी तो बेगम अमीरुद्दीनने प[illegible] नेहरू की वेशभूषाको सरकारी कर्मचा[illegible] रियो के उपयुक्त बताया और कहा [illegible] यह शेरवानी और पायजामा सरका[illegible] कार्यालयोंमें विशेष रूपसे सुन्दर लगेग[illegible]

—:—

कवियोंकी पनिहारी

(चौथे पृष्ठका शेषांश)

दूसरी व्रज गोरियोंके साथ आही तो गयी--

सीख सिखाई न मानत है,
बरहू बस संग सखीनके आवै।
खेलत खेल नये जल में,
बिन काम वृथा कत जाम बितावै।
छोरिके साथ सहेलिन को,
कहिये यहि कौन सवाद दिखावे।
कौन परी यहि बान अरी,
नित नीर मरी गगरी ढर कावे।

इन हरकतोंकी जिम्मेदारी भोली पनिहारी पर नहीं यह वह बेचारी कहे कैसे।

प्रेम सम्मोहनका यह अनुमव जरा पाठक भी अपने हृदयमें करें और फिर रसखानकी कल्पनामें डुबकी लगावें—

भूल्यो गृहकाज लोक लाज मन मोहनी की, मोहनको भूलि गयो बांसुरी बजायबो कहै रसखान दिन द्वैमें बात फैल जैहै कहां लौ सयानी यह हाथन छुपाइबो। कालिह्यो कलिंदी तीर चितये अचानक दोउनको दोउनसौं मुरि मुसकाइबो। दोऊ परैं पइयां, दोऊ लेत हैं बलैया, उन्हें भूलि गई गइयां इन्हें गागरि उठाइबो।

जब यह हुआ तो सनेहकी गांठ दिन प्रतिदिन कसतीही क्यों न जाती? आखिर एक दिन ऐसा भी आया जब पनिहारी को अपनी सफाईमें कहना पड़ा—

—अलि, हौं तो गई जमुना जलको सु कहा कहौं वीर विपति परी। घहराके कारी घटा उनयी, इतनेहीमें गागर सीस धरी। रपटयो पग घाट चलौ न गयो कवि 'मंडन' ह्वैके बिहाल गिरी। चिरजीवहु नन्दको बारो अरी, गहि बांह गरीबनै ठाढ़ी करी।

लेकिन सर्वज्ञ सखियोंके सामने पनिहारीकी सफाई बहुत कारगर नहीं हुई। आखिर रहस्योदघाटन होही तो गया—

चाख्यौ कै पिऊस अभिलाख्यो कै अनन्द उर भाख्यौ न बनत 'रस' औरे जो कपट मैं। धरत कहूं को पाइ,परत कहूंको जाइ, करत कला तू माइ, जैसी नाहि नटमें। जानन दुराव तू अजान न दुराव अहे मेरे जानु आई आज कारेकी झपट में। कालिन्दीके तीर तूं अकेली तज भीर बीर, लेन गई नीर, भरि लाई नेह घटमें।

पानीकी जगह घड़ेमें नेह भरनेवाली पनिहारिन कैसी होगी,इसकी कल्पना व्रजभाषाके रसिक कवियोंके सिवा और कौन कर सकता है।

देशी रियासतों में—
(१२ वें पृष्ठ का शेषांश)

(पाकिस्तान) का अंग्रेज गवर्नर कनिंघम काश्मीर पर आक्रमण करनेवालोंको सहायता पहुंचा कर ब्रिटेन तथा पाकिस्तानका भला कर रहा है।

दिल्ली वार्ताका निष्कर्ष नहीं ज्ञात हुआ है। लेकिन थोड़ी प्रगति हुई बतायी जाती है। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री मि० लियाकत अली पाकिस्तान वापस लौट कर अपनी सरकारसे विचार विमर्श करेंगे और उसके उपरांत आगे होनेवाली वार्तामें अन्तिम निर्णय हो जायगा। शेख काश्मीर शेख अब्दुल्ला अभी दिल्लीमें ही हैं और भारत सरकारके प्रधान मंत्री पंडित नेहरू तथा अन्य मन्त्रियों एवं महात्मा गांधी आदिके साथ काश्मीरकी स्थिति पर बातचीत कर रहे हैं। भारत सरकारकी ओरसे काश्मीरकी उन्नतिमें पूर्ण सहयोगका आश्वासन मिला है। काश्मीरकी रक्षामें भारतीय फौजें दत्तचित्त है। विजय काश्मीरकी होगी यह स्पष्ट है।

सम्पादक—देवव्रत मिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, विश्व इलेक्ट्रो इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र ... द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

ब्रिटेन और भारतके बीच मैत्री स्थापित करनेके लिये शिष्टमण्डल भारत आया हुआ है। चित्रमें उक्त मिशनका कलकत्ते में स्वागत किया जा रहा है।—"विश्वमित्र"

Lever movements jeelled wrist watches in fancy shapes, 36 hours winding with second hand, thick crystal glass, most reliable and accurate time keepers, guaranteed for 3 years, nickle silver cases with a nice strap and box.

Prices Rs. 26, Postage As. 12 (free for 2)
for white Chromium case Rs. 2 and Radium Dial Rs. 3 extra.
LIMITED STOCK NO ORDER FOR MORE THAN 3 ACCEPTED.

ORIENT WATCH SYNDICATE Dept. (14B) Colony Rd. DUM DUM

स्वीटजरलैंडकी बनी। बिलकुल ठीक समय देने वाली। प्रत्येक को गारंटी ३ साल। सुपरब वाली क्रोमियम केस—२०॥), सुपीरियर २५), स्क्वाट क्रोमियम केस-३०), सुपीरियर ३७) रोल्डगोल्ड (१० वर्ष गारंटी)—५५) रेकट गुलर, टोनो व कर्भशेप क्रोमियम केस ४२), रोल्ड गोल्ड ६०), १५ जुएल्स रोल्डगोल्ड—६०), अलार्म टाइम पीस १८), २२), सुपीरियर २५) बीग बेन-४५) पैकिंग पोस्टेज अलावे, एक साथ ३ लेने से माफ। एच. डेविड एण्ड कं० पो० ब० नं० ११४२४, कलकत्ता

यदि आप नाई को सिर्फ तीन हजामत के ही लिये छः आने तक दे देते हैं तो सात दिनों में से चार दिन आप ऐसे दिखेंगे—खुरदरे और अव्यवस्थित।

यदि आप स्वयं ही प्रतिदिन "सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड से हजामत बनाते हैं तो आप उस सुव्यवस्थित आकृति को प्राप्त कर सकेंगे जो सफलता की जननी है। आप पैसे की भी बचत करेंगे। ब्लेडों का एक पैकेट हफ्तों चलता है।

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेड बाजार में सर्वश्रेष्ठ हैं। ये अतिरिक्त तेजी के लिये तीन स्तरों वाले श्रेष्ठतम इस्पातसे बनाये जाते हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ' क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज़्यादा हजामत और कम खर्चा देते हैं
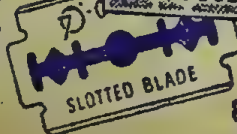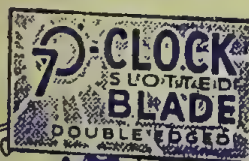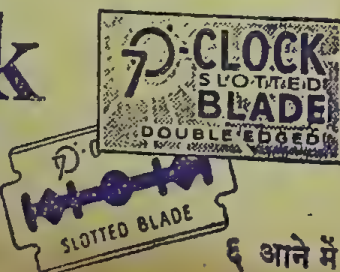
६ आने में
५ का प्रत्येक पैकेट

सफेद बाल काला

इस तेलसे बालोंका पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दुगना मूल्य वापिस की शर्त लिखा लें यह तेल सिरके दर्द व सिरमें चक्कर आना आदि को आराम कर आंखको रोशनी को बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

श्रीइन्दिरा फार्मेसी पो० बेगूसराय, मुंगेर

वर्ष—३० संख्या—४८ ता० २४ दिसम्बर १९४७ 24th December, 1947. मूल्य =) वार्षिक ६)

क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे

क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?
एकाकी पनका मार गया,
यह मधुर-मिलनका प्रात नया,
ये स्वप्न नये, अभिलाष नयी,
विकसा जीवन जलजात नया,
मधुमास लौटकर आया है, जीवनके चित्र मदिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?
अवसाद गया, आह्लाद नया,
कविका जीवन हो आज नया,
प्राणोंकी सरस दिवाली है,
देखो, कैसा सुख-साज नया ?
आशा फटी है अन्तरसे, बीते सुन्दर दिन फिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?

अब म्लान नहीं जीवन कलिका,
सप्राण हुई, अम्लान हुई,
अब बहती जो जीवन सरिता,
तीखी उसकी मधु तान हुई,
सुखका चंदा चमका, सुखकी रातें, सुखके पल थिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?
अब याद नयी, इतिहास नया,
जो बीत गया सो बीत गया,
ये ढुलक रहे सुखके मोती,
इनका कुछ है अब मोल नया,
संसार नया, अब प्यार नया, मधु गान लजीले फिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?

—प्रो० मित्तल एम०ए०

नारी

नभका दीप अधमुंदी आंखोंसे तन्द्रिल धरतीको निहार रहा है। इस तीसरी वेलामें तुम भी आये हो नारी का रूप देखने, ओ जीवन-पथके थके, हारे, भ्रमित बटोही !

तुम कैसे देख पाओगे। तुम पर दया आती है। नारीका कौनसा रूप देखना चाहते हो राही ? अपनेको तोल तो लो।

लज्जा, संकोच, स्नेह, भ्रम विभ्रम, आग और पानी। यह है नारी। क्या लोगे ? वह तो अतुल है न ?

जान लो, नारीका श्रद्धा रूप सबसे सुन्दर है। वह पाती है, श्रद्धा देकर। पुरुषका भ्रम तुम न पालना कहीं।

नारीसे ही नर अमर है। नारी वह है कि तुम जिस रूपमें उसे देखो, वह वही है। आज तक कोई समझ सका कि वह क्या है ? पुस्तकके पन्नेकी भांति खुली होने पर भी वह मायासी अस्पष्ट है मनकी प्यासी वह है। वही प्यासे पुरुषकी तृप्ति है और नारीकी तृप्ति ही नरकी प्यास। चिरंतन। वह छलना हैकि जिसे छलने जाकर छल स्वयं ठगा सा रह जाता है। जो सुलझाना चाहे, स्वयं उलझ कर रह जाये और नारी फिर भी आकाश की टिमटिम नीहारिकासी दूर अज्ञेय किन्तु पंथरानी।

तुम्हारा अज्ञान उसे अज्ञानी समझता है, उसका चरम ज्ञान उसे मौन बना देता है। छुई मुई सी, रजनी गंधा सी नारी समाजका भारी शव ढो रही है। किन्तु कौन इसे समझेगा ?

बोलो, भूले पंथी ! नारी[illegible] अब भी, इस तीसरी वेलामें भी, देखना चाहते हो ? यदि हां तो सुन लो, अपनी भूख, अपनी तृप्तिके आगे नारीकी प्यास, नारीका सुख हलका न करो। उसकी दुनियासे खेल मत करो। पाने जाकर भी तुम भिखारी ही बने रहोगे। सागरके तट पर खड़े होकर तुम एक बूंदके लिये छटपटाते रहोगे। आखिर तृप्ति तुम्हें कहां !!

समर्पण चाहते हो न ? तो समर्पित होना सीखो, ओ जीवन पथके थके, हारे, भ्रमित बटोही।

सुश्री चन्द्रमुखी 'सुधा'

परहितबस जिनके मन माही।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥
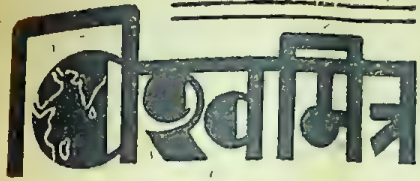
युगकी मांग

हमारा देश १५ अगस्तके बाद जिन परिस्थितियोंसे होकर गुजर रहा है, हमारे बीचमें कुछ ऐसे तत्व मौजूद हैं जो राष्ट्रके हितोंको चोट पहुंचा कर भी उनसे नाजायज फायदा उठाने की उधेड़-बुनमें हैं। समाजका वर्तमान स्वरूप कुछ इस प्रकारका है कि सब तरहका अनाचार और भ्रष्टाचार करके भी ये अपना समाजमें सम्मान और प्रभाव बनाये हुए हैं। समाज का वह भाग जिसके पास शक्ति और सत्ता, अधिकारऔर नियंत्रण है,इस वर्गका पोषक और सहायक है। यही कारण है कि हमारी आजकी सरकारको इन तत्वोंको ठीक रास्तेपर लानेमें कठिनाइयां महसूस हो रही ह। देशके सामने सर्वनाश उपस्थित है, फिर भी परिस्थितियां ऐसी हैं कि हमारी सरकार उनका सामना करनेके लिये कठोर उपायोंसे काम लेनेमें इतस्ततः कर रही है। हम सरकारकी इस इतस्ततःको उसकी दुर्बलता नहीं समझते किन्तु यह अवश्य महसूस करते हैं कि राजरोग का निदान भी उसके अनुकूल होना चाहिये। देशके संकटसे नाजायज फायदा उठानेकी आदत जिनकी पड़ी हुई है उनको लल्लो चप्पो द्वारा त्याग और बलिदान करनेके लिये प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। किसीकी चिताभस्मपर राजमहल खड़ा करनेमें जो अलौकिक आनन्द और उल्लासका अनुभव करता है उसकी पैशाचिकताको वशीभूत करनेके लिये हमें राम और कृष्णकी भांति कठोरता धारण करने की आवश्यकता है। बुद्ध और महात्माका आदर्श मायावी पिशाचका हृदय-परिवर्तन करनेमें कभी सफल नहीं हुआ, [illegible] सकता। इस सर्वनाशका सामना हमें करना है, क्योंकि यह समाज और राष्ट्रकी जड़ोंको क्रमशः खोखला बनाता जा रहा है। पर सामना करनेकी बात कहना जितना सहज है काम उतनाही कठिन है, इसीलिये सरकार इतना इतस्ततः कर रही है।

देशकी मौजूदा हालतमें नयी सरकार को अधिकाधिक शक्तिशाली बनानेकी आवश्यकता है। यहबात हमें भूल न जाना चाहिये कि सरकारमें दोनोंही तत्व मौजूद है। दक्षिण पंथी और वाम पंथी दोनों तत्वोंसे मिलकर बनी सरकारके सामने हमेशा असमंजस बना रहताहै, यदि सरकारके बाहर दोनों दलोंकी शक्तियां पूर्ण संगठित और किसीभी स्थितिका सामना कर सकनेकी शक्ति और सामर्थ्य रखती है। किन्तु बाहर दोनों दलोंका शक्ति संतुलन न होनेसे प्रबल दलका प्रतिनिधित्व करनेवाले वर्गका ही सरकारमें प्राधान्य चलता है। युद्ध कालमें भारत सम्बन्धी नीतिके मामलेमें हम देख चुके हैं कि ब्रिटिश सरकारमें श्रमिक दलको सदा ही टोरी दल की नीतिके सामने झुकनापड़ा हमारी सरकारके प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरूके सामने पद पद पर दक्षिण पंथियों की ओरसे कठिनाइयां उपस्थितकी जा रहीं हैं,यह राजनीतिके समझदारोंको शायद बतानेकी आवश्यकता नहीं है। आचार्य कृपलानीका कांग्रेस अध्यक्ष पदसे त्यागपत्र इसी बातका स्पष्ट संकेत है। खेदकी बात यह है कि देशके दक्षिण पंथी जितना संगठित और एक अनुशासनमें शृंखलाबद्ध हैं बामपंथी उतनाही असंगठित और एक दूसरेसे दूर हैं। इस स्थितिसे लाभ उठानेके लिये दक्षिणपंथी पर्याप्त चतुर और शक्तिशाली हैं। वे चाल चल रहेहैं। सरकारके नेता पंडित जवाहरलाल नेहरूके बार बार स्पष्ट यह कहने परभी कि देशके मुख्य और मौलिक उद्योग धन्धों को धीरे-धीरे राज्यके नियंत्रण और प्रबंध में लाना हमारी नीति है, फिरभी पूंजीवादी उद्योगपतियोंको विश्वास नहीं होता कि अन्तमें सरकार यही नीति अवलम्बन करने जा रही है, क्योंकि मन्त्रिमण्डलके भीतरसे इसके विपरीत दूसरी क्षीणआवाज भी आ रही है। शायद इसीसे उस दिन दिल्लीमें उद्योग सम्मेलनमें सेठ घनश्याम दास बिड़लाने यह कहनेका साहस किया कि सरकारकी दो आवाजें हैं। वह निश्चित और स्पष्ट रूपसे एक आवाजमें बोले। इस तरह प्रकारान्तरसे बजट अधिवेशनमें पार्लमेण्टमें निकली श्री षम्मुखम चेटीकी क्षीण आवाजको अश्वासन और बलप्रदान किया गया है।

दक्षिण पंथी तैयार हो रहे हैं, संगठित होरहे हैं। देशकी अतुल धनराशि, सरकारके अधिकारके स्थानोंपर ब्रिटिश सरकारके पुराने नमकखोर कर्मचारी और प्रतिगामी साम्प्रदायिक ताकतें इस दक्षिण पंथके पीछे हैं। यही कारण है कि देशके घोर संकट कालमें इस वर्गकी काली करतूतें देखकर भी नेहरू सरकार उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही कर सकनेमें अपनेको असमर्थ पा रही है और कमेटियां तथा कमीशन बैठाकर समाज विरोधी हरकतें करने वालोंकी जांचपड़ताल करके दण्ड विधानकी व्यवस्था कर रही है। इन कमीशनोंका परिणाम क्या हो सकताहै, हम भलीभांति समझ सकते हैं। अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारी सरकार समाजीकरण की नीतिकी दिशामें अग्रसर हो तो देशके तमाम बाम पंथियोंका यह कर्त्तव्य है कि अपने आपसी मतभेदोंको दूरकर संगठित रूपसे नेहरू सरकारके हाथ मजबूत करें। सम्पूर्ण रूपेण सरकारको दक्षिण पंथके प्रभावसे मुक्तकर वाम पंथियोंके नियंत्रणमें ला चुकनेके बाद इस बातका फैसला किया जाये कि सोशलिस्ट प्रधान सरकार बने या कम्यूनिस्ट प्रधान। अभी तो दक्षिण पंथ प्रधान सरकारके होनेके पूरे लक्षण दिखायी दे रहे हैं और इस अभिशापसे देशकी रक्षा करनेके लिये वाम पंथियोंको एकता देश और युगकी मांग है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन—

हिन्दी संसारके प्रसिद्ध विद्वान् डा० अमरनाथ झाने प्रयाग विश्वविद्यालयमें भाषण देते हुए कहा है कि संयुक्तप्रांतकी राजभाषा हिन्दी हो गयी है इसलिये संयुक्तप्रांतके भाषाभाषियोंपर भारी उत्तर-

दायित्व आ गया है। यदि वे हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीकृत कराना चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि अहिन्दी भाषियोंकी कठिनाइयोंको समझें। अहिन्दी भाषियोंकी मुख्य कठिनाई हिन्दीके व्याकरणके कारण है, विशेषकर लिङ्ग भेदके विषयमें, जोकि संस्कृत व्याकरणके नियमके अनुसार नहीं है। मुझे विश्वास है कि हम इस समस्याको शीघ्र ही सुलझा सकेंगे। डा० अमरनाथ झाके विचार बहुत सुन्दर और सही हैं। हिन्दी संसारको और खासकर बम्बईमें होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलनको इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। हम चाहते हैं कि अपने विद्वान और प्रगतिशील सभापतिके नेतृत्वमें सम्मेलन इस दिशामें रचनात्मक कदम उठाये। हिन्दी साहित्य सम्मेलनका आजतक जो रूप रहा है वह बहुत कुछ 'राष्ट्रभाषा प्रचार सभाका सा रहा है। लेकिन अब इसकी उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्यको समृद्ध करनेकी है। हमें आशा है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन परिवर्त्तित स्थितिको देखते हुए अपने इस उत्तरदायित्वको समझेगा और साहित्य सेवियों, हिन्दी भाषा भाषियोंके सहयोगसे उसे पूरा करनेके लिये कोई सुन्दर रचनात्मक कार्यक्रम देशके सामने उपस्थित करेगा तो उसे इस कार्यमें जनता और सरकार दोनोंका ही सहयोग प्राप्त होगा।

इनकमटैक्स चोर—

यह हर्षकी बात है कि भारत सरकार का ध्यान चोर बाजारियों, बेजा मुनाफा खोरों और अवैध संचय कारियोंकी तरफ इनकम टैक्स चारोंकी तरफ भी गया है। अभी हाल ही एक इनकम टैक्स जांच कमीशन नियुक्त किया गया है। इस कमीशनका काम होगा इस बात की जांच करना कि किस तरह और कहां तक बावजूद इनकम टैक्स एक्ट और अतिरिक्त मुनाफा कर कानूनके रहते ये 'चोर' इनकम टैक्स गोल कर जाते हैं। नेहरू-भारतके प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल यह देखकर हैरान हैं कि हिंदुस्तान जैसे देशमें इतना भारी इनकमटैक्स होते हुए भी लोगोंके तोंद इतना कैसे बढ़ते और फैलते जा रहे हैं। चोर या ठगसे ऐसे ही बचना सहज नहीं है फिर कानून और देशके आला दिमाग जब उनके सहायक हो जाते हैं तब उनसे भगवान ही बचाये। ठीक ठीक न्याय करनेमें न्यायालयको सहायता देने और निर्दोषीकी रक्षा करने के उद्देश्यसे वकीलोंकी परिपाटी आरम्भ की गयी थी। किन्तु आज इनकी सहायता ठीक विपरीत दिशामें हो रही है। देशमें बढ़ते हुए अनाचार को रोकनेमें सहायक होने के बजाय ये वकील उसे बढ़ानेमें किसी से पीछे नहीं रहे। हत्या, लूटपाट, चोरी,ठगी, जालसाजी, बलात्कार, व्यभिचार, अनाचारको बराबर वकीलों की जेबमें शरणमिलीहै। इनकम टैक्सके मामलेमें सरकारको ठगनेमें व्यापारीके प्रयत्न में इनकमटैक्स वकील सबसे अधिक सहायक हैं। किन्तु यह दोष उनका नहीं है बल्कि वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का है। जबतक यह समाज व्यवस्था—रहेगी तबतक राष्ट्र और समाज देश और सरकारको कानूनसे बचकर ठगने का काम जारी रहेगा। इसे इन जांच कमीशनों की नियुक्ति द्वारा बन्द नहीं किया जा सकता।

छठवां महादेश !!

भारतमें पाकिस्तानकी स्थापना हुए अभी जुम्मे जुम्मे आठ दिन भी नहीं बीते कि मध्य एशियामें इस्लामके नामपर छठवें महादेशके गठनकी बातें उठने लगी है। इन बातोंको उठानेवाले हैं कायदे आजमके मुखपत्र 'डान' के सम्पादक साहब। अतः इन बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती। कराचीमें मिस्रके पत्रकारोंके सम्मानमें आयोजित सभामें उन्होंने कहा है कि 'पाकिस्तानकी स्थापनाके साथ साथ मध्यपूर्वकी सीमा और भी पूर्वकी ओर बढ़ आयी है। उत्तर अफ्रीका, तुर्की, अरब देश समूह, ईरान, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तानको मिलाकर पृथक महाराष्ट्रके रूपमें छठवें महादेशकी स्थापना का समय क्या अभी नहीं आया है ? उपर्युक्त सभी राज्य इस्लामके सिद्धान्तोंके बन्धनोंमें बद्ध हैं। यह बन्धन भौगोलिक बन्धनोंसे भी अधिक मजबूत है। जनताके समर्थनसे प्रस्तावित छठवें महादेशकी स्थापना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। मिस्रके पत्रकारोंने इसका क्या उत्तर दिया यह तो मालूम नहीं हो सका है। लेकिन उन्होंने प्रस्ताव सुन अवश्य लिया है। देखें वे अपने देश लौटकर इस सम्बन्धमें क्या करते हैं। इस ओर सतर्कता रखनेकी आवश्यता है। आजके संसारमें धर्मके नामपर राज्य और देशकी स्थापना और उसको अधिक दिनोंतक चलाते रहना असम्भव ही है। एक खास धर्मके नामपर चलनेवाले राज्यमें दूसरे धर्मवालोंके साथ कैसा व्यवहार हो सकता है, पाकिस्तान इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

हिन्दी बिहारकी राजभाषा—

बिहार हिन्दी भाषाभाषी प्रांत है। लेकिन उसने अभीतक हिन्दीको राजभाषा के रूपमें स्वीकार नहीं किया। जबकि उसके पड़ोसी युक्तप्रांतने पहले ही हिन्दी को राजभाषा और देवनागरीको राजलिपि स्वीकार कर लिया। बिहार सरकारके ऐसे रुखके कारण जनतामें काफी हलचल पैदा हुई और हिन्दीको राजभाषा माननेके लिये प्रदर्शन हुए। अब पता चला है कि बिहार मन्त्रिमण्डलने हिन्दीको राजभाषा और देवनागरीको राजलिपि स्वीकार करनेका निश्चय किया है। बिहार सरकार का यह निश्चय प्रशंसनीय है। ऐसी साधारण बातके लिये बिहारमें प्रदर्शनोंकी आवश्यकता पड़ी यही आश्चर्यकी बात है। बिहार हिन्दी भाषाभाषी प्रांत है, लिहाजा वहां कोई हिचकिचाहट क्यों ?

बधाई वाजपेयीजीको—

हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक और समालोचक विद्वान पण्डित नन्द दुलारे बाजपेयी सागर विश्वविद्यालयके कला विभागके 'डीन' के पद पर डाक्टर शब्दे के विरुद्ध बहुमतसे निर्वाचित हुए हैं। वाजपेयीजीके निर्वाचित होनेसे हमें और हिन्दी संसारको प्रसन्नता हुई है और यह स्वाभविक ही है। हिन्दी जगतको वाजपेयीजीका परिचय देनेकी आवश्यकता नहीं है। पिछले प्रायः पच्चीस वर्षोंसे सफल समालोचक, पत्रकार, अध्यापक और साहित्य नियन्ताके रूपमें वाजपेयीजीने राष्ट्रकी जो सेवाएं की हैं उन्हें देखते हुए उनकी योग्यता और साधनाका जितना सम्मान किया जाये कम है ?

अफगानिस्तानकी समस्या

लेखक—श्री कृष्णाचार्य साहित्यरत्न एम० ए०

अंग्रेजी शासनमें भारत अफगानिस्तान की समस्या को नहीं सुलझा सका। यद्यपि अफगानिस्तान भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे भी भारतसे भिन्न रहा है फिर भी भारत और अफगानिस्तानके बहुतसे स्वार्थ ऐसे हैं जो अब बुद्धिमत्तापूर्वक सुलझाए जा सकते हैं। अंग्रेजोंने तो अफगानोंको जीतनेकी चेष्टा भी की थी, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। हां, इतना अवश्य हुआ कि अमानुल्ला जैसे स्वतन्त्र विचारके शासक नहीं टिक सके। कहावत प्रसिद्ध है बिल्ली दूध पी नहीं सकती तो फैलानेसे पीछे क्यों हटे ? यही नीयत इन विदेशी शासकोंकी रही। रूसके विरुद्ध सीमाबन्दी करनेके लिये तथा पूरे अरब जगतपर नियंत्रणकी इच्छासे अंग्रेजोंने सदैव यह प्रचार किया कि अफगानिस्तान भारतका ही अङ्ग रहा है। इस नीतिके प्रमाणमें एक उदाहरण यथेष्ट होगा। सन् १९२९ में लेफ्टिनेंट जनरल सर जार्ज मेकमन महोदयने 'अफगानिस्तान' शीर्षक से साढ़े तीन सौ पृष्ठकी एक पुस्तक लिखी। भूमिकामें आप लिखते हैं कि:—

"वास्तवमें प्रागैतिहासिक युगसे अफगानिस्तान भारतका स्वाभाविक अंग रहा है, हमें यह दृष्टिकोण व्यापक अर्थमें अपनाना चाहिये-वह यह कि यह हिन्दू देश रहा है, यहांके निवासी कभी हिन्दू थे। जाति, भूगोल और राजनीतिक दृष्टिसे दोनों एक रहे हैं।" यहां तक लिखना कोई बड़ा भारी अनैतिहासिक कार्य न था। लेकिन आगेकी पंक्तिमें लेखक महोदयका मंतव्य स्पष्ट हो जाता है, आप लिखते हैं "सन् १८३१ और ३२ की अंग्रेजी नीति इसी आधारपर थी, और वह ठीक थी।" अतः अब स्पष्ट हो गया कि क्यों अंग्रेज भाई भारत और अफगानिस्तानको एक करना चाहते थे। और ठीक इसके विपरीत बर्माको भारतसे सदैव प्रथक् बतलाया गया।

जो कुछ भी हो। अंग्रेजोंकी नीतिने अफगानिस्तानके वीर और स्वातन्त्र्य प्रेमी निवासियोंको अपना शत्रु बना लिया। ऊपरसे जो भाव रहा हो, अफगान भीतरसे अंग्रेजोंपर विश्वास नहीं कर सकता, यह एक कटु सत्य है। लेकिन अब भारत और अफगानिस्तानके बीचकी बनावटी राजनीतिक दीवार हटा दी गई है, अतः अब पुनः दोनों पड़ोसियोंको समयकी गतिके साथ आगे बढ़नेका अवसर मिला है। यह सत्य है कि हम दोनोंके बीचमें भी पाकिस्तान नामक एक अंग्रेजी परस्त नकली राष्ट्र खड़ा कर दिया गया है। पुनः यह भी सत्य है कि धोखेकी टट्टी कितने दिन खड़ी रहेगी। इसे स्वयं गिरना पड़ेगा।

(२) आजकी समस्याएं

आज भारत और अफगानिस्तानके बीच कई ऐसी समस्याएं हैं कि जिनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। उनकी अवहेलना करनेसे तो हम दोनोंका ही अहित होगा। दुर्भाग्यसे समस्याएं विकट हैं और एक दो से अधिक हैं। मूल रूपमें तीन रुकावटें हैं—आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक।

१—राजनैतिक समस्या-तो यह है कि भारत, रूस और अफगानिस्तानकी सीमाएं मिलती हैं। इस समय तो हम काश्मीर होकर ही अफगानिस्तानसे अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। तो सीमा सम्बन्धी समझौतोंके अतिरिक्त हम आपसमें किन आधारोंपर एकताके सूत्रमें आबद्ध हो सकते हैं ?

२—आजकी दुनियामें आर्थिक पहलू पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। पाकिस्तानका उदाहरण हमारे आपके सम्मुख है। अफगानिस्तानके सम्बन्धमें भी हमें ज्ञात है कि वह अति गरीब देश है। वहां रेल, तार आदिका अभाव है। अफगानी आज भी सोलह और सत्रहवीं शताब्दीके वातावरणमें है। हां पिस्तौल और बंदूकों जैसे आधुनिक शस्त्रादि देशकी मेवा, ऊन की आवश्यकता बनी ही रहती है। कोयला और लोहा भी अफगानिस्तानमें है, लेकिन वैज्ञानिक हाथोंके अभावमें आज तक केवल जूता, सलाई और साबुन आदिके कारखाने ही खुल सके हैं। भारत और अफगानिस्तानके बीच कोई सुदृढ़ आर्थिक आधार निकल आये तो दोनों देशोंका कल्याण है।

(३) सामाजिक समस्या

भारत और पाकिस्तानके बीच सामाजिक समस्याएं भी हैं। उनमें प्रमुख समस्या है कवायली क्षेत्रोंका पुनर्निमाण ! भारतके ४ करोड़ चांदीके टुकड़ोंने उनके दिमाग खराब कर दिये हैं। शिक्षाका उनमें नाम नहीं है, फिर भला वह सभ्यताको क्या समझें। भारत और अफगानिस्तानके सहयोगसे ही इनको सुशिक्षित और स्वशासित समुदाय के रूपमें बदला जा सकता है। हम दोनोंके सुदृढ़ सम्बन्धके लिये यह नितांत आवश्यक है कि बीचमें बसने वाले इन लोगोंको उच्छृंखल और शासन हीन वातावरणसे हटाकर सामाजिक ढङ्ग से रहना सिखलाया जाय।

सामाजिक समस्याओंमें हम ऐशिया वासियों को एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिये, वह यह की समस्त ऐशिया ही हम लोगोंका समाज है। जब तक हम सब व्यापक तत्वको समझें बिना आगे न बढ़ेंगे तब तक हम लोगोंका कल्याण नहीं है। अगर हम सामाजिक समस्याओं में भी राजनीतिक चालोंका समावेश करने लगे और सहायताके नाम पर 'डालर नीति' और 'चार्टर नीति'का अनुसरण करने लगे तो हम पिछड़े ऐशिया वासियोंकी स्थिति क्या हो जायगी—यह कल्पना इस योरपके सङ्कटग्रस्त बादलोंको देखकर कर सकते हैं। पठानिस्तानकी स्थापना से सीमा सम्बन्धी विवादका अंत तो होगा ही साथ ही पठानोंको अपनी उन्नतिका रास्ता मिलेगा।

(४) पठानिस्तानकी कल्पना

पठानिस्तान संज्ञासे उन्हें राजनीतिक एकता प्राप्त होगी और उसके आधार पर वह समाजिक और आर्थिक सङ्गठन कर सकेंगे।

इस दृष्टिसे पठानिस्तानकी कल्पना बहुत ही सुन्दर है। कबायली क्षेत्रों का स्थान उसी स्थितिमें हो सकता है जबकि हम उनमें आत्म विश्वास पैदा करें। आत्म विश्वास की भावना उन्हें पठानिस्तान देनेसे मिल सकती हैं। यों क्षुद्र दृष्टिसे देखें तो हमको सीमा प्रांतका घाटा ही रहेगा। लेकिन व्यापक दृष्टि यह बतलाती है कि इस स्वातंत्र्य प्रेमी पठान जातिको जिम्मेदारीका बोझ देकर अधिक अनुशासन प्रिय बनाया जाय। योग्य, अनुशासित, शक्तिशाली और एकता के सूत्र में बंधा पठानिस्तान, वर्तमान लूट मार करने वाले जन समूहसे कहीं अधिक कल्याण प्रद होगा। और यह कल्याण भारत और अफगानिस्तान दोनोंकी दृष्टिसे शोभनीय है। इस कल्याण में वास्तविकता ने भी रूपरङ्ग भरना प्रारम्भ कर दिया है। समाचारोंसे तो ऐसा ही लगता है कि काबुलमें आजाद पठानिस्तान सरकार स्थापित हो गयी है। और यह भी सुना जा रहा है कि काबुल सरकार भारत सरकारसे उक्त सरकारको मान लेनेकी बात पर जोर द रही है। लेकिन नई सरकारको इस तरह नहीं माना जा सकता। यह समस्या तो मताधिकार (रेफरेन्डम) के आधार पर ही सुलझाई जा सकती है। पाकिस्तान राज्य कबतक वल्पूर्ण शासन करेगा। उसके सम्मुख भी तो समस्याएं हैं। वह कबीलों की आर्थिक मांग पूरी नहीं कर सकती। वह सीमाप्रांतका अतिरिक्त व्यय नहीं दे सकती। तो फिर क्यों न उन्हें स्वतंत्र कर अपना और उनका भला करे। पाकिस्तान या कोई भी जनमतकी अवहेलना नहीं कर सकता। पठानोंमें स्वतंत्र होनेकी हार्दिक इच्छा है तो उन्हें कोई नहीं रोक सकता।

अंग्रेजोंके समय से ही अफगानिस्तान भारतके लिये समस्याके रूपमें ही आता है। उससे पहले मुगलोंके समयमें वह भारतका सीमाप्रांत था काबुलमें इस प्रांतका प्रधान केन्द्र था। मुगलोंसे पहले सैयद और लोदी वंशोंने भारतपर राज्य किया था, वे सब अफगानिस्तानके निवासी थे। कहनेका सीधा सा तात्पर्य है कि उस समयसे पूर्व अफगानिस्तान और सीमा प्रांत पर विदेशियोंका शासन रहा या भारतीयों का! परस्पर भय या आशङ्का की गुंजायश कभी न रही।

आज भारत नये युगमें प्रवेशकर रहा है। अतः नवीन परिस्थितियोंमें नवीन जिम्मेदारियां भी बढ़ गयी हैं। सहस्रों वर्षों की परतन्त्रताका प्रथम कुफल तो यह था कि हम अपने पड़ोसियों को भूल गये या हमने उनसे बुरे सम्बन्ध स्थापित कर लिये। इस तथ्यका उद्घाटन पं० जवाहर लाल नेहरूने ऐशियाई सम्मेलनके अवसरपर प्रथम सन्देशमें बड़े ही काव्यमय ढंगसे किया था। आज सहस्रों वर्ष की बिछुड़ी हुई परम्पराको जीवनदान देनेके लिये यह आवश्यक है कि हम अफगानिस्तानके सम्बन्धमें अधिकसे अधिक जानें।

(५) अफगानिस्तानकी सीमाएं

अफगानिस्तानके उत्तरमें सोवियत संघकी प्रजातन्त्र रियासतें, पश्चिममें ईरान, पूर्वमें काश्मीर, काशगर और भारतका सीमाप्रांत और दक्षिणमें बलूचिस्तान है। स्पष्ट है कि भारत अफगानिस्तानसे दो ओरसे घिरा है और दोनों ओरसे आवागमनके रास्ते हैं। सीमाप्रांतसे खैबरके दर्रेसे लेकर डूरंड लाइन (अफगानिस्तान की सीमा) तक अब आने जानेमें सुभीता है। प्लामू यहांकी प्रसिद्ध नदी है जो सोवियतकी सीमापर ४०० मीलकी सीमाबंदी करती है। और छोटी नदियां भी हैं जो यातायातके साधनमें नहीं आतीं क्यों कि पहाड़ी देशमें अति तीव्र बहती है, हां विद्युत उत्पादनके कामकी है।

जलवायु

हम सब जानते ही हैं कि अफगानिनिस्तान पहाड़ी देश है। दसवां हिस्सा ही कृषि योग्य है। रात अति शीतल और सुहावना रहता है। जाड़े कड़ाके के! हां दक्षिण और दक्षिण पश्चिम इतने ठिठुरने वाले नहीं। मेवोंके देशके ये पठान लम्बे चौड़े सुन्दर और तन्दुरुस्त होते हैं। पहाड़ी देशमें उत्पन्न होनेके कारण सहनशीलता और आत्म विश्वासकी मात्रा पठानोंमें बहुत है। पूर्वी देशोंके बहुत से राष्ट्रोंकी तरह पठान भी अतिथि सेवा और सत्कारको परम धर्म समझते हैं। पठान असभ्यता कर सकता है, क्रोध आनेपर मार भी सकता है, लेकिन उसे झूठ, धोखा और छल फरेबसे घृणा है।

व्यापार-भेड़ोंका देश

देश भर में भेड़ चरानेके दृश्य दीख पड़तेहैं। भारतमें काश्मीरही उत्तम ऊन पैदा करताहै। यों भेड़ अफगान संस्कृति का प्रमुख अंगहै, यह वहां का मुख्य मांसाहारहै, और उसी की पूंछ का तेलही मक्खन का कार्य करताहै। दूध और दही भी भेड़के दूधका ही मिलेगा। क्या व्यापार की दृष्टिसे और क्या खाद्य पदार्थकी दृष्टि से अफगान भेड़ शून्य होकर नहीं रह सकता। हमारे जीवनमें जो महत्व गायका है वही उनके जीवनमें भेड़ का, हां भेड़में धार्मिक भावना का आरोप वे लोग नहीं करते। ऊन उत्पादनका केन्द्र होनेके कारण अफगानिस्तान कंबल गलीचा आदि ऊनी कारीगरी की चीजों के लिये दूर दूर तक प्रसिद्धहै। अतः सैकड़ों वर्षों से युवा और वृद्ध अफगान अपने पुराने तरीकों पर एक से एक सुन्दर कलाकृतियां प्रस्तुत करतेरहते हैं। ये मजबूत और सुन्दर कालीन पश्चिम में यूरोप के भवनोंसे लेकर पूरबमें बादशाहोंके महलों को बहुत दिनोंसे सुशोभित करते आतेहैं।

भारतमें काबुल के घोड़े भी प्रसिद्धहैं। पठान और मुगलदारीसे लेकर आज तक भारतीय सेनाओंमें काबुली घोड़ोंकी सराहना होती रहीहै। अफगानिस्तानके उत्तरी भागमें घोड़ों का अच्छा व्यवसाय होताहै। हैरात, काबुल, कंधार और लयमान में रेशमके कीड़े पाले जातेहैं और रेशमी कपड़ोंका व्यवसाय भी न्यूनाधिक मात्रा में होता है।

(शेष १२ वें पृष्ठपर)

श्रम और पूंजीका संघर्ष

—पंडित नेहरू

भारतकी आर्थिक नीतिके आधार पर विचार करते समय सबसे पहले भारतीयोंके हितको ध्यानमें रखा जायेगा और इससे सम्बन्धित अन्य तमाम विषयों और प्रसंगों पर इसी बातको प्रधान मानकर विचार किया जायेगा।

भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने उस दिन कलकत्तेकी अपनी चौबीस घण्टेकी यात्रामें अङ्गरेजोंके सम्मिलित व्यवसायिक सम्मेलन (एसोशियेटेड चैम्बर्स आफ कामर्स) में देशकी अर्थ व्यवस्थासे सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उक्त वक्तव्यकी घोषणा की थी। यूरोपियन व्यवसायियों और उद्योगपतियोंको उद्देश्य करके ही पण्डितजीने साफ-साफ कहा कि देशकी प्रगतिमें किसी रुकावटको बर्दाश्त नहीं किया जा सकता और उसे रास्तेसे हटना या हटाना ही पड़ेगा।

राज्य नियन्त्रण

देशके उद्योग धंधोंका आज जिस तरह निजी स्वार्थके लिये अंधा-धुंध संचालन हो रहा है उसे देखते हुए जनताकी सरकारका ध्यान इस निरंकुशताकी ओर जाना स्वाभाविक था। देश और विदेशके पूंजीपतियोंको स्वार्थलिप्साने जो स्थिति उत्पन्न कर दी है उसे अधिक काल तक अनियन्त्रित रखना देशके साथ विश्वासघात होता। नेहरू सरकार इसे समझती है वह धीरे धीरे मौलिक और मुख्य-मुख्य उद्योग धंधोंको अपने नियंत्रण और प्रबन्धमें लेनेकी योजना तैयार कर रही है, यह संकेत भी उक्त सम्मेलनमें नेहरूजीने स्पष्ट रूपसे दिया और बताया कि निजी व्यवसाय वाणिज्य सीमित दायरे तक ही फलने-फूलने पायेगा। इन चेतावनियोंके साथ-साथ पण्डितजीने यूरोपियन अर्थपतियोंको इस बातका आश्वासन भी दिया कि विदेशी पूंजी और कला-कौशलका पूर्ण बहिष्कार करने हम नहीं जा रहे किन्तु ऐसी किसी प्रणालीको प्रश्रय नहीं दिया जा सकता जिससे देशकी आर्थिक स्वतन्त्रता कुण्ठित हों।

व्यवसायियोंकी ओरसे इस बातका दबाव डालना शुरू हो गया है कि सरकार उद्योग धंधोंको अपने रास्ते चलने दे और सरकारी हस्तक्षेप न किया जाये। पण्डित नेहरू इस सुझावको माननेको तैयार नहीं हैं। वे कहते हैं कि यह असम्भव है कि कोई सरकार पूंजीपति और श्रमिक, किसान और जमींदारके सम्पर्कों में दिलचस्पी न ले। खासकर जब इन दोनों सत्तामदमत्त वर्गोंके कारनामे सबके सामने हैं। नेहरू सरकार इन सब अभिशापोंसे भलीभांति अवगत है और

(ऊपर) मजदूर संघर्ष से........

(नीचे) जादूगर माउंट बैटन, सुननेमें आया है, हिन्दुस्तान पाकिस्तान एक कर देंगे।

इसीलिये वह देशको इनके रक्तशोषक पंजेसे मुक्त करनेकी योजना लेकर आगे बढ़ना चाहती है। देशके विभाजन और उसके फलस्वरूप पञ्जाब, फ्राण्टियर और काश्मीरमें उत्पन्न भयंकर स्थितिने इस दिशाकी प्रगतिमें जबर्दस्त रुकावट खड़ी कर दी है, फिर भी सरकारको विश्वास है कि जन साधारण और श्रमिकोंका सहयोग मिलनेसे शीघ्रातिशीघ्र वह देशकी काया पलट देनेमें समर्थ होगी।

उद्योग सम्मेलन

इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता कि आज देशकी प्रथम और सबसे बड़ी आवश्यकता उत्पादन बढ़ानेकी है। किन्तु देशकी वर्तमान आर्थिक प्रणाली और उसका संचालन उत्पादन वृद्धिके मार्गमें सबसे बड़े रोड़े हैं। जिन कारणोंने हमारे उद्योग धंधोंकी गर्दन पर फांसी की रस्सी कस रखी है उनको कैसे दूर किया जाये और उत्पादन बढ़ानेके लिये किन उपायोंसे काम लिया जाये आदि बातों पर विचार करनेके लिये भारत सरकारकी ओरसे गत सप्ताह दिल्लीमें एक उद्योग सम्मेलनका आयोजन किया गया था। इस सम्मेलनमें प्रांतों, राज्यों उद्योग और व्यवसाय एवं श्रमिकोंके प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। सरकारके उद्योग सचिव डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जीने इसका उद्घाटन करते हुए ठीक ही कहा कि यह कितने दुर्भाग्यकी बात है कि हमारी जैसी शस्यश्यामला, उर्बरा, रत्नगर्भा, प्राकृतिक और मानवी शक्ति और साधनोंसे सब भांति सम्पन्न देश दयनीय दरिद्रताका घर बना हुआ है। देश धनधान्यसे पूर्ण है, फिर भी लोग भूखों मर रहे हैं हमें इस गोरखधंधेको सुलझाना है।

खबर है कि मि० जिन्ना पाकिस्तान के प्रधान स्काउट बनाये गये हैं—

दो आवाजें

इस गोरखधंधेको सुलझानेके लिये सरकारको दो नाव पर पैर रखनेकी नीतिको तिलाञ्जलि देनी पड़ेगी। जो लोग देशमें एक तरफ अपार धनराशि और दूसरी ओर भयंकर गरीबीके लिये जिम्मेदार हैं उन पूंजीपतियों और उद्योगपतियोंको जब तक सरकार यह कहनेका अवसर देती रहेगी कि "सरकारकी वस्तुतः दो आवाजें हैं" अर्थात जब तक सरकारमें जनताके हितोंको रौंदकर पूंजीपतियोंकी समृद्धि चाहनेवाले श्री षम्मुखम चेट्टी जैसे व्यक्ति रहेंगे तब तक यह गोरखधंधा भी रहेगा। इसीसे १५ दिसम्बरको भारत सरकारके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूके व्यवसायियों और उद्योगपतियों की महत्वपूर्ण बैठक में स्फटिक तुल्य स्पष्ट और सरल शब्दों में यह घोषणा करने पर भी कि सरकार धीरे-धीरे देशके मौलिक और मुख्य-मुख्य उद्योगोंको राज्यके नियंत्रण और प्रबन्धमें लानेकी नीति" अपनाने जा रही है एवं निजी उद्योगके लिये सीमित क्षेत्र रह जायेगा" सेठ घनश्याम दास बिड़ला को दूसरे दिन दिल्लीमें उद्योग सम्मेलनमें यह कहनेका साहस हुआ कि "सरकारकी दो आवाजें" हैं। नेहरूकी इस घोषणाकी अपेक्षा भारतके उद्योग पतियोंको सर षम्मुखम जैसे व्यक्तियोंकी बातोंमें अधिक बल मिलता है और स्वभावतः ये सर षम्मुखमके हाथ मजबूत और पण्डितकी ताकत कमजोर करनेके लिये घृणितसे घृणित षडयन्त्र कर सकते हैं। सरकारकी आवाजें दो नहीं है एक है और वह एक आवाज पण्डित नेहरूकी है जिस दिन बिड़ला, ताता और डालमियां समझ लेंगे उसी दिन यह गोरखधंधा या तिलिस्म टूटेगा कि धनसे लबालब पूर्ण देशमें लोग भूखों क्यों मर रहे हैं।

उत्पादन बढ़ाना चाहिये

पांसा किधर पड़ता है, सरकारकी एक आवाज जनताकी आवाज रहती है या जनता वेशधारी पूंजीपतिकी आवाज होती है, इसका फैसला दूरकी बात है। आजकी बात यह है कि इस समय देश जिस तङ्गीका शिकार हो रहा है उससे बचानेके लिये आवश्यक है कि तत्काल उत्पादन बढ़ाया जाये। गत वृहस्पतिवार को उद्योग सम्मेलनमें बोलते हुए भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलालने इसी समस्या पर प्रकाश डाला और कहा कि स्थितिका तकाजा है कि इस समय श्रम और पूंजीका संघर्ष युद्ध विराम संधि द्वारा रोका जाये। उत्पादनका ह्रास रोकना आवश्यक हो गया है। पण्डित नेहरू कहते हैं कि पिछले कई महीने भारत सभी तरहके जबर्दस्त सङ्कटोंसे होकर गुजरा है और हमें सामने उपस्थित पर्वताकार समस्याओंका सामना करना है। इसके विपरीत हम देख रहे हैं कि आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही है। हम वितरणकी चर्चा करते हैं और ठीक ही करते हैं। इसके महत्व को इनकार नहीं किया जा सकता किन्तु वितरणका क्रम आरम्भ करनेके पहले हमारे पास वितरणके लिये कुछ पर्याप्त होना भी तो चाहिये। उत्पादन बहुत-सी बातों पर निर्भर है और इनमेंसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि उत्पादानका मनोभाव हममें होना चाहिये। इस मनोभावके अभावमें उत्पादनका गिरना अनिवार्य है। उत्पादन गिरनेके बहुत कारण हैं। युद्धके बाद कठिन काम जन्य क्लान्ति आती ही है। विभाजनसे राजनीतिक उलट-फेर, साम्प्रदायिक झगड़े ऐसे ही और भी कारण हैं। किन्तु औद्योगिक सम्पर्कमें सबसे बड़ी बात, जिसका हमें सामना करना है वह मनोवैज्ञानिक पृष्ठ भूमि है जिससे श्रमिक समझता है कि उसके साथ इनसाफ नहीं किया जा रहा है।

मालिक समझते हैं कि उनके सामने खतरे ही खतरे हैं और श्रमिक अपनी शक्ति भर काम नहीं कर रहा, निरंतर हड़तालोंकी धमकियां दे रहा है, कामकी प्रगतिको मन्द कर रहा है और भी इसी तरहकी कितनी ही बातें हैं। परिणामस्वरूप पूंजीपति और श्रमिक एक दूसरे को पूर्ण अविश्वाससे ही नहीं बल्कि चरम शत्रुताकी दृष्टिसे देखते हैं। इस स्थिति से कैसे पार हुआ जाये?

इस सम्बन्धमें पण्डितजीका कहना है कि श्रमिकको ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये किराष्ट्रको चोट लगे। मालिकोंका जहां तक अम्बन्ध है पिछले युद्धके दौरानमें एक वर्गने अच्छा सलूक नहीं किया। दरअसल यह कहना चाहिये कि इन लोगोंने बेहद ज्यादतियां कीं। न्याय की कौन कहे इन्होंने अपनी बात छोड़कर और किसीकी चिंता ही नहीं की। अभी तक मैं यह नहीं समझ सका कि हिन्दुस्तानमें इतना जबर्दस्त टैक्स होते हुए भी कतिपय व्यक्तियों अथवा गुटोंने कैसे अतुल धन कमाया। इस तरहके निर्लज्ज घृणित व्यापार को जो राष्ट्र और अन्योंको क्षति पहुंचा कर लाभ उठाया जा रहा है, रोकनेके लिये हमें उचित उपायों और प्रणालीका अवलम्बन करना होगा। यह बात सही है कि हम प्रत्येकको देवता नहीं बना सकते। लेकिन ऐसे हालात तो पैदा ही किये जा सकते हैं कि जो देवता नहीं हैं वे सहजही रोकड़ बाकी न बढ़ा सकें और अपने इस कर्ममें उनको कठिनाइयां महसूस हों। कहनेका तात्पर्य यह है कि यदि ये बड़े आदमी सीधेसे ईमानदारी और न्यायके मार्ग पर न आयें तो ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाये कि दूसरे मार्गमें पद पद पर असुविधाएं उनके सामने खड़ी हों। किन्तु यह स्थिति अभी आनेमें देर है। तबतक बीचका कोई रास्ता निकालना चाहिये। वह रास्ता यह है कि फिलहाल कुछ दिनोंके लिये युद्ध विराम सन्धि हो जानी चाहिये।

——o——

भारतके दंगे—उनका आर्थिक आधार

लेखक श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डे

'दंगा' शब्द के सुनते ही राजनीतिक कारणों के परिधान से लदा हुआ एक ढांचा सामने आ जाता है। और वस्तुत: बातभी ऐसी ही है क्योंकि दंगों का राजनीतिक पक्ष काफी सबल है। इनके धार्मिक या सामाजिक पक्षभी होते हैं। परन्तु यहां मेरा अभिप्राय भारतके वर्तमान दंगों से है जिनमें राजनीतिक पक्षकी प्रधानता स्पष्टही है अर्थात किसी निश्चित राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति की दिशामें ही इन दंगों का संचालन और प्रारम्भ हुआ है।

भारतके ये दंगे किसी एक ही स्थल तक सीमित नहीं रहे। पूरब में बंगालके कलकत्ता और नोआखाली तथा ढ़ाका से लेकर पश्चिममें सिन्धके करांचीतक; उत्तरमें पश्चिमोत्तर प्रदेशसे लेकर दक्षिणमें बम्बई और हैदराबाद तक इनका देश- व्यापी प्रभाव रहा। बिहार, यू० पी०, पञ्जाब और काश्मीरमें भी जो नृशंसताएं हुई उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। बंगाल और पञ्जाबमें जिन क्रूरताओंका प्रदर्शन किया गया उन्हें कोई भी पुरुष, कोई भी जाति और कोई भी देश इस मानव- जीवन के इतिहासमें फिर से दुहरा नहीं सकता—क्योंकि वे अपनी सीमाएं लांघ चुकी हैं और इतनी ही भीषण भी हैं।

परन्तु क्या देश के स्त्री और पुरुष इतनी असह्य कठिनाइयां झेलते है केवल राजनीतिक उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये ही! क्या उनके विचारोंमें आर्थिक उद्देश्योंका कोई स्थान नहीं होता? होता है क्यों नहीं? आर्थिक कारण ही तो हर जगह राजनीतिक उपद्रवों और युद्धोंकी जड़में वर्तमान हैं। यह तो सुनिश्चित ही है कि किसी भी युद्धके जितने भी कारण हो सकते हैं उनमें आर्थिक कारणोंका एक महत्वपूर्ण स्थान है। और युद्ध? दो देशों के परस्पर स्वार्थों में मुठभेड़ हो जानेहीका तो फल है। फिर स्वार्थ और 'अर्थ' का घनिष्ट संबंध। कोई देश धनी होना चाहता है। धनी बनने के लिये व्यापारमें वृद्धि होनी आवश्यक है। व्यापार- वृद्धिके लिये कच्चे माल और बाजार चाहिए। बस, तब क्या! चले बाजार खोजने और छिड़ गया युद्ध— क्योंकि धनी तो सभी होना चाहते हैं। कोई एक ही देश धनी होनेके लिये पट्टा थोड़े ही लिखा सकता है। अस्तु स्वार्थों की प्रतिकूलता और स्वार्थों के मूलमे आर्थिक कारण ही युद्धके चक्रव्यूहकी रचना करते हैं।

युद्ध छोटे भी होते हैं और बड़े भी। देश और देशके बीचमें युद्ध होते हैं और समुदाय तथा समुदायके बीच भी— जब कि कुछ देश एक समुदायमें एकत्रीभूत होते हैं और कुछ अन्य देश दूसरे समुदाय का पक्ष लेते हैं और उसकी सहायता करते है। परन्तु एक ही देशके भीतर भी विभिन्न समुदायों में परस्पर युद्ध होते हैं जिन्हें गृह- युद्ध अर्थात 'अपने घर यानी देशमें लड़ाई' इस नाम से पुकारते हैं। गृह- युद्धों का दूसरा नाम दंगा भी हो सकता है। भारतमें अभी हाल में जो दंगे हुए और हो रहे हैं वे मुस्लिम सम्प्रदाय और हिन्दू सम्प्रदायके बीच हैं। हिन्दू सम्प्रदाय के भीतर अछूत और सिख सम्मिलित हैं। भारतके ये दंगे एक छोटे पैमाने पर युद्ध की प्रतिमूर्ति कहला सकते हैं। अस्तु हम युद्धकी ही भांति दंगोंके मूलमें भी आर्थिक कारणोंको यानी इन भारतीय उपद्रवोंके आर्थिक आधार को उपस्थित कर सकते है।

अर्थशास्त्र का उद्देश्य मानव- जीवन को अधिकसे अधिक सुखमय बनानेका है। अर्थशास्त्र पर लिखी गयीं पुस्तकोंके पृष्ठ के पृष्ठ उन नियमोंके भारसे बोझिल हैं जो उसके उद्देश्यकी प्राप्तिमें सहायक कहे जाते हैं। परन्तु अर्थशास्त्रका कोई भी नियम यह नहीं बताता कि दंगे भी किसी भी

(ऊपर) कलकत्ते के प्रगाढ़ प्रेमसे नेहरूजी को भय! (नीचे) पूर्वी पाकिस्तानमें राष्ट्र-भाषाके प्रश्नपर भयानक प्रतिद्वन्दिता

भांति सुख- समृद्धिमें सहायक हो सकते हैं। फिर भी यह जानना चाहिये कि किसी एक खास सम्प्रदायको सुखी और समृद्धिशाली बनानेकी भावना दंगोंके मूलमें निहित है। और उस सम्प्रदायका ऐसा विचार हो कि हम अधिक सुखी, समृद्धिशाली तथा दूसरे सम्प्रदाय की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ बने, दंगा करा बैठता है। भारतमें मुस्लिम सम्प्रदाय, हिन्दू सम्प्रदायसे अलगहोकर अपनेको अधिक सुखी और श्रेष्ठ देखना चाहता है; और यही है इन भारतीय दंगों का आर्थिक आधार— क्योंकि सुखी और प्रसन्न होना ही अर्थशास्त्रका अन्तिम और एक मात्र उद्देश्य है।

पर प्रश्न यह हो सकता है कि मुस्लिम सम्प्रदायमें हिन्दू सम्प्रदायसे अलग होनेकी भावना और फिर अलग होकर अधिक श्रेष्ठ सुखी और समृद्धिशाली बनने की भावना क्यों पैदा हुई! इसके उत्तर में अनेक कारण

उपस्थित किये जा सकते है; परन्तु हमें तो तात्पर्य है केवल आर्थिक कारणों से। मुस्लिम सम्प्रदायका अपना यह विश्वास है कि हिन्दू- समाज में हमारा आर्थिक-शोषण हो रहा है। उन्होंने यह भी सोचा कि यहां हमारे हितों और स्वार्थों की रक्षा ठीक- ठीक नहीं हो सकती; अस्तु, और स्वार्थ और 'अर्थ' का जो अन्योन्याश्रय संबंध है उसे हम पीछे बता चुके हैं। प्रश्न का दूसरा भाग जो अधिकतर श्रेष्ठ और सुखी बननेकी भावना से सम्बन्धधितहैं, वह प्रतिस्पर्द्धाका विषय है।

और फिर अधिक शक्ति इकट्ठा करके हिन्दू सम्प्रदाय पर आर्थिक गुलामी लाद देदाभी अप्रत्यक्ष रूपसे उनका एक उद्देश्यहो सकता है—चाहे भले ही वह स्वप्नमें भी कार्यरूप में परिणत न किया जा सके तो क्या ? उन्होंने समझा होगा कि मुसलिम साम्प्रदाय का एक अपना-अलग राज्य होगा। केवल उनके लिये नौकरियां होंगी। उनके अपने व्यापार और व्यवसाय होंगे। उनके निजी बैंक होंगे। उनके लिये यातायातके अच्छे साधन रहेंगे। उनका अपना उत्पादन होगा। उत्पादनके साधन रहेंगे। उनका वितरण होगा। वे हीउसका उपभोग करेंगे। और रहेंगे उनके अपने ही टैक्स उनकीही सुविधाओंके अनुसार। उनकी अपनी शिक्षा—योजना चलेगी, उनकी अपनी खेती की स्कीम होगी और करेंगे वे अपने स्वास्थ्य का प्रबन्ध। ये विचार भले ही कार्यान्वित न किये जा सके, परन्तु उनके इने—गिने नेताओंके मस्तिष्क में इनका स्थान तो अवश्य ही होगा। और इनका अर्थशास्त्र के ज्ञान तथा प्रयोगसे कितना संबंध है।

अन्तमें दंगाके परिणाम् पर बिना दृष्टिपात किये विषय अधूराही छूट जायगा। देश के प्रत्येक भागमें जहां कहीं भी ये उपद्रव हुएहैं वहांको जनताको काफी आर्थिक क्षति उठानी पड़ीहै। परन्तु जिस विरोधी सम्प्रायका वहां बोलबाला रहा उसे आर्थिक लाभ भी हुआहै। यह कैसे, इसे यहां बतानेकी कोई आवश्यकाता नहीं। पर इतना तो अवश्य कहा जासकताहै कि हिन्दू सम्प्रदाय को बहुत अधिक आर्थिक क्षति उठानी पड़ी है। उन्हें प्रत्येक स्थल पर अपने घर, अपनी जमीन, अपने जानवर, अपने रुपये पैसे तथा अपने कपड़े और आभूषणों से भी हाथ धोना पड़ा हैं और जो जानें गयीं हैं सो अलग। उनकी आर्थिक क्षतिके मुकाबले दूसरे विरोधी सम्प्रदाय की और नहीं तो कमसे कम आर्थिक क्षति नहीं के बराबरहै। क्योंकि प्रायः प्रत्येक स्थान पर हिन्दू सम्प्रदाय को ही आर्थिक—प्रभुत्व प्राप्तहै। अतएव, दंगों केपरिणामका भी 'अर्थ' से घनिष्ट सम्बन्ध है और उनके करणोंके मूलमें तो आर्थिक आधार है ही।

हिन्दू चले जाएंगे तो ...?

एक गैर सरकारी खबर है कि पाकिस्तानके गवर्नर जेनरलने सीमाप्रांतके गवर्नरको निर्देश दिया है कि वहांके गैर मुसलमान दूसरी जगह नहीं चले जायं, इसकी पूरी खबरदारी रखी जाय। डेरा इस्माइल खांके मुस्लिम लीगियों एवं कुर्रम उपत्यकाके निवासियोंने मि० जिन्नाको सूचित किया है कि हिन्दू और सिखोंके घरवार छोड़कर चले जानेसे आर्थिक सङ्कट उपस्थित हो जायेगा तथा वाणिज्य-व्यवसायका मार्ग पूर्ण रूपसे बन्द हो जायेगा। अगर सरकार का जान हिन्दुओं नहीं रोकेगी तो विद्रोह हो जा सकता है। ऐसी सूचना पाकर मि० जिन्नाने सीमाप्रांतके गवर्नर कनिङ्गहमको डेराइस्माइलखां और कुर्रम उपत्यकाका दौरा करनेका निर्देश दिया। उपर्युक्त निर्देशके अनुसार सर जार्ज कनिङ्गहम उक्त स्थानोंपर गये और उन्होंने—गैर मुसलमानोंसे अपने घरबार छोड़कर न जानेका अनुरोध किया। लेकिन इतना सब होनेपर भी हिन्दू और सिख अब पाकिस्तानमें रहना नहीं चाह रहे हैं। कई हिन्दू और सिख परिवार अफगानिस्तान चले गये हैं। कुछ परिवार शीघ्र ही सीमाप्रांत छोड़नेकी प्रतीक्षामें हैं।

अफगानिस्तानकी समस्या

(८ वें पृष्ठका शेषांश)

जातियां और भाषाएं

अफगानिस्तानमें केवल अफगान जाति केलोगही नहीं रहते। हां बहुमत उन्हींका है, वही शासकहैं। इनके अतिरिक्त वहां और भी जातियांहैं जिनका संक्षिप्त विवरण भी प्रथम लेख का विषय है। यहां इतना जान लेना आवश्यकहै कि अधिकतर संख्या पुश्तू बोलने वालों की है। स्कूलोंमें मातृभाषाके रूपमें पुश्तू और फारसी ही पढ़ाई जातीहै, ये दोनों आर्य भाषाएं हैं। अरबी और तुर्की विदेशी भाषाओं के साथ वैकल्पिक विषयके रूपमें पढ़ाई जातीहै। अफगानिस्तानमें शिक्षा का प्रसार काबुल विश्वविद्यालय स्थापित (१९३२ में) होनेसे बहुत हुआ है। देशमें उर्दू और रूसी भाषाओं के पढ़नेके साधन नहींहै, फिरभी व्यापारियों के निरंतर आवागमन का परिणाम यह हुआहैकि अफगानी इन दोनों भाषाओं को समझ लेतेहैं, और टूटी फटी अवस्थामें बोल भी लेतेहैं। भारत और काबुलके आपसी अध्ययनके लिये यह आवश्यकहै कि भारतके कुछ विद्यार्थी वहां की संस्कृति का अध्ययन करने जांय और कुछ विद्यार्थी वहां से यहां आवें।

आजके विश्व की चंचल स्थितिमें भारत और अफगानिस्तानकी सुदृढ़ मैत्री लोककल्याणका प्रथम सापानह।

राष्ट्र और नारी

लेखिका—श्रीमती उषारानी

आधुनिक समाजका राष्ट्रीय आदर्श लोकतन्त्र है। वस्तुतः जिस सरकारके पीछे जनताकी आस्था नहीं है वह कभी भी स्थायी न हो सकती है। एकमात्र लोकतन्त्र सिद्धान्तोंके आधार पर गठित सरकार ही देशकी सब श्रेणियोंकी जनताके हितोंके अनुकूल शासन व्यवस्था कर सकती है। यूरोपमें इङ्गलैण्ड, फ्रांस, रूस, तुर्की और अमेरिकाकी शासन व्यवस्था लोकतन्त्रके सिद्धान्तोंके अनुसार चल रही है। वहांका प्रत्येक आदमी सोचता है कि सरकारकी व्यवस्थामें उसका भी आंशिक दायित्व है। वहां पुरुषके समान नारीकी भी सब तरहकी स्वाधीनता स्वीकार कर ली गयी है, वहां नारीका जीवन केवल घर-गृहस्थी के दायरे तक ही सीमित नहीं है। यूरोप और अमेरिकाकी नारीको सामाजिक राष्ट्रीय और आर्थिक क्षेत्रोंमें अधिकार प्राप्त हैं।

यूरोप और अमेरिकाकी जनता जानती है कि नारीके न्यायसङ्गत अधिकार स्वीकार न करने पर लोकतन्त्र सफल नहीं हो सकता। पुरुषके बगलमें नारी अगर जीवनके सभी क्षेत्रोंमें कर्मशक्तिके परिचय देनेका सुयोग प्राप्त करे तभी देशकी सर्वांगीन उन्नति सम्भव है। नारीकी सर्वांगीन उन्नति न होने पर समाजका भविष्य गौरवमय नहीं बन सकता है।

एकमात्र शिक्षित माता ही देशकी आदर्श सन्तानोंका निर्माण कर सकती है। संसारके प्रसिद्ध राष्ट्र नेताओंके जीवन

पूर्व और पश्चिमकी दो सुन्दरी प्रतिनिधियोंका मिलना चित्रमें कुमारी दिलीप सिंह लेडी पामेला माउण्टबेटेनसे बातें करती दिखायी दे रही हैं। कुमारी दिलीप ओसलोमें अन्तराष्ट्रीय युवा सम्मेलनमें भारतका प्रतिनिधित्व करके वापस आयी हैं। इस उपलक्ष में दिल्लीमें आयोजित एक समारोहमें आपने ओसलो कानफरेन्सके अपने संस्मरण बताये

होता है। दरअसल, जाति और राष्ट्रके गठनमें पुरुष और नारी उभयका उत्तरदायित्व समान है। नारीको छोड़कर आदर्श समाजका गठन असम्भव है।

संसारके प्रत्येक देशमें नारीने क्रमशः सामाजिक और राष्ट्रीय अधिकार प्राप्त किये हैं। यूरोपकी नारीने साबित किया है उपयुक्त सुयोग और सुविधा मिलने पर वे सभी क्षेत्रोंमें पुरुषके समान कार्यदक्षता दिखा सकती है। साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान और राष्ट्रीय विषयोंमें उन्होंने जो दक्षता दिखायी है वह वास्तवमें प्रशंसा योग्य है। यूरोपके अन्यान्य देशों

(ऊपर) ये तीन महान् अब किधर, कहां बढ़े ? (नीचे) उड़ीसा और मध्य प्रदेश के देशी नरेशों द्वारा अपने गुरु सरदार पटेलको साष्टांग दण्डवत ।

लन्दन सम्मेलनकी असफलताकी अमेरिकामें जो प्रतिक्रिया हुई है उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे इसकी प्रतीक्षामेंही थे । किन्तु युद्ध देहिके वज्र घोष करनेवाले अमेरिकन युद्धवादी शक्ति सामर्थ्यकी दृष्टिसे यदि हिटलर और जर्मनीकाही प्रतिरूप स्तालिन और रूसमें दखते हैं तो वे भयंकर भूल कर रहे हैं । यदि वे यह समझ लें तो उनके साथ साथ संसार अब भी तीसरे युद्ध की भयंकर विभीषिकासे बचाया जा सकता है । उनको स्मरण रखना चाहिये कि संसारमें आज स्तालिनके समान शक्तशाली व्यक्ति दूसरा नहीं है । उनकी शक्तिको केवल रूसकी शक्ति और स्वरूपसेही नहीं मापा जाना चाहिये । स्तालिन केवल एक विशाल राज्यके एकछत्र शासकही नहीं वे एक अत्यन्त बलशाली और प्रभावशाली विचारधारा एवं लोकमतके नेता भी हैं जिसने संसारके तमाम शोषितों और पीड़ितोंको अपनी ओर आकृष्ट कर रखा है । उनकी शक्तिको ठीक ठीक पहचाननेके लिये यह समझना आवश्यक है कि जर्मन सरहदसे लेकर प्रशान्त तक फैले हुए विशाल रूस साम्राज्यके बाहर भी प्रायः प्रत्येक देशमें एक ऐसा जबर्दस्त राजनीतिक दल है जिसका सूत्र संचालन स्तालिनके कट्टर समर्थकोंके हाथोंमें है ।

जिस बातकी आशंका थी वह होकर रही और चार महान परराष्ट्र मंत्रियोंका लन्दन सम्मेलन भंग हो गया । यद्यपि इधर उधरसे यह क्षीण आवाज आती है कि अभी दरवाजा बन्द नहीं हुआ । अमेरिका कह रहा है कि याल्टा, जहां रूजवेल्ट स्टालिन और चर्चिलने मिल कर इस संगठनको जन्म दिया था, मर चुका अब फिर इस सम्मेलनके बैठनेकी आशा नहीं है, कमसे कम अमेरिकाकी तरफसे रूसके साथ सम्मेलन करनेके लिये कोई आग्रह नहीं दिखाया जायेगा । सवाल यह है कि अब क्या होगा ? ये लोग क्या करेंगे ? इसका जबाव बड़े बड़े राष्ट्रोंकी शस्त्र निर्माणकी दौड़में पाया जा सकता है । पूंजीवादी देशोंकी असंख्य पूंजी शस्त्रास्त्रोंमें लग रही हैं, इसका लाभ तो युद्धारम्भ होनेसे ही मिल सकता है । अमेरिकन राजनीतिज्ञ और प्रचारक इस बातका ढोल बजा रहे हैं कि लन्दन सम्मेलनकी असफलताके लिये रूस दोषी और जवाब देह हैं ।

रूस ठीक इसके विपरीत कह रहा है । अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसने मिल कर समझौता नहीं होने दिया । क्षतिपूर्ति सम्बन्धमें पोटसडममें जो समझौता हुआ था वह रूसके अनुकूल समझ कर आज यदि ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस माननेको तैयार न हो आश्चर्य क्या है ? अपने अपने जिन स्वार्थों की रक्षाके लिये उस समय किसी तरह रूसको राजी करके समझौता करना आवश्यक समझा गया था आज उन्हीं स्वार्थों के लिये रूसको नाराज किया जा सकता है, क्योंकि तब और अबमें अन्तर हो गया है। उस समय नाराज करनेमें खतरा था आज राजी करनेमें उससे जबर्दस्त खतरा है।

इस झगड़ेका केन्द्र विन्दु वही है जो मैत्रीका था अर्थात् जर्मनी। ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० बेविनने साफ साफ कहा है कि जर्मनीके चालू उत्पादनसे क्षतिपूरन करनेका ब्रिटेन कभी समर्थन नहीं कर सकता और जब तक रूस अपनी इस मांगको छोड़नेको तैयार न होगा एकता हरगिज नहीं हो सकती । रूस शायद ही अपनी मांग पर झुकनेको तैयार हो, इसीसे उसे अलग करके अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन मिल कर जर्मनी और यूरोप सम्बन्धी स्वतन्त्र नीति स्थिर करें, यह चर्चा शुरू हो गयी है । ब्रिटेनके भूतपूर्व परराष्ट्र सचिव और पार्लमेंटमें विरोधी दलके उपनेता मि० एण्टनी ईडेनने कहा है कि अब तो पश्चिमी यूरोपके उद्धारके लिये ब्रिटेन और अमेरिकाको एक दूसरेके साथ सम्पूर्ण मिल जुल कर काम करना चाहिये । मार्शल योजनाने यूरोपमें जिस स्थितिकी सृष्टि की थी वह अब चरम सीमामें पहुंच गयी है । ब्रिटिश सरकारके पूर्व सलाहकार लार्ड बन्सीटर्ट कहते हैं कि अब ये सम्मेलन बन्द होने चाहिये । अमेरिकाके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मि० बायर्नीस एक कदम आगे बढ़ कर कहते हैं कि जर्मनी के साथ ४० साला अनाक्रमणात्मक संधि और पूरे पैमानेमें एक सम्मेलन, रूस माग

(शेष २० वें पृष्ठपर)

फख्र और दोस्ती

गांधीजी कहते हैं कि एक दोस्तने मुझे फख्रकी एक ऐसी मिसाल सुनायी है, जिसका तेज दुःखदायी परिस्थितियोंमें भी कम नहीं होता और दोस्तीका ऐसा उदाहरण बताया है, जो कड़े-से-कड़े वक्तमें भी खरी उतरती है। यह नारायण सिंह नामके एक पुराने अफसरकी कहानी है। उन्होंने पश्चिमी पंजाबमें अपनी बहुत बड़ी मिल्कियत खो दी है। अब वह दिल्ली में हैं। उनके पास कुछ भी नहीं बचा है। इसलिये या तो उन्हें अब भीख मांगनेपर लाचार होना पड़े या मौतका शिकार होना पड़े। वह अपने एक पुराने दोस्तसे मिले, जिसे वह अपने साथ दुखी नहीं होने देना चाहतेथे क्योंकि अपनेपर आयेहुये दुर्भाग्य की उन्हें बिलकुल परवाह नहीं थी। वह सिक्ख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अलीशाहसे मिलकर बेहद खुश हुए। अलीशाह भी अपना सब कुछ खो बैठे हैं। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नहीं, बल्कि किसी और कारणसे बदकिस्मतीके शिकार हुए हैं। वह भी नारायण सिंहकी तरह ही बहादुर हैं, और दोनोंको एक दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनों अपनी पच्चीस सालकी जुदाईके बाद जब मिले, तो इतने खुश हुए कि अपने दुर्भाग्यको भूल गये।

अब असहयोगकी जरूरत नहीं

एकप्रार्थना-सभामें भाषण देते हुए गांधीजीने कहा कि मुझे एक ही शख्सकी तरफ से दो चिटें मिली हैं, जिनमेंसे एकमें लिखने वाले भाईने कहा है कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी है और वे मेरे मातहत काम करना चाहते हैं। दूसरी चिटमें उन्होंने प्रार्थनामें एक भजन गानेकी अपनी इच्छा जाहिर की है। उनकी पहली इच्छाके बारेमें मुझे कहना पड़ता है कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर गलती की है। ... दिनोंमें मैंने लोगोंको सरकारसे असहयोग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब ऐसी जरूरत नहीं है। अगर कोई आदमी चाहे, तो वह अपनी रोजी कमानेके लिये कहीपर नौकरी करते हुए भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमाने वाला शख्स, अगर वह ईमानदारीसे और किसी भी किस्मकी हिंसा किये बगैर ऐसा करता है, देश सेवा ही करता है। लेखकको यह मालूम करना चाहिये कि मेरे पास उनके लिए कुछ काम नहीं है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते हैं, तो उन्हें हमारी गोशालामें अपनी सेवाएं देनी चाहियें।

मानवसे

सुप्त मानव जाग।

* * *

मार्ग संकट पूर्ण तेरा,
मार्ग कंटक पूर्ण तेरा,
मार्ग में तेरे अंधेरा-
पर न साहस त्याग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

प्रलय की काली घटायें,
मचलती पथ पर व्यथायें,
पर न पग पीछे हटाये-
धधकती हो आग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

क्रांति की चिनगारियों में-
वीर वर नर नारियों में-
धनी रंक भिखारियों में-
राष्ट्र का हो राग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

हो रहा अब है सबेरा,
ले रहा तम है बसेरा,
सोच क्या कर्त्तव्य तेरा,
रक्त से रच फाग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

आर्त देश पुकारता है,
द्रवित नेत्र निहारता है,
कौन जीवन वारता है।
हृदय भर अनुराग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

—श्री सुशील कुमार दीक्षित काव्य-भूषण

निराश्रितोंके बीच सहयोग

इसके बाद निराश्रितोंकी समस्यापर बोलते हुए गांधीजीने कहा कि उनमें डाक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्सें वगैरा हैं। अगर उन्होंने गरीब निराश्रितोंसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने ऊपर पड़े हुए एकसे दुर्भाग्य से कोई सबक नहीं ले पायेंगे। मेरी राय है कि सब व्यवसायी और गैर-व्यवसायी, धनवान और गरीब निराश्रित एक साथ रहें और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोंने लाहौरको आदर्श शहर बनाया-और जिसे हिन्दुओं और सिक्खोंको लाचार होकर खाली करना पड़ा-उस तरह वह भी आदर्श शहर बसायें। ये शहर, दिल्ली जैसी घनी आबादी वाले शहरोंका बोझ हलका करेंगे और इनमें रहने वाले लोगोंकी तन्दुरुस्ती बढ़ेगी और उनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी बड़ी छावनीमें रहने वाले दो लाखसे ऊपर निराश्रित बाहरी और भीतरी सफाईके मामलेमें आदर्श बन गये, अगर व्यवसायी और धनवान निराश्रित गरीब निराश्रितों के साथ बराबरीके आधारपर रहे, अगर उन्होंने तम्बुओंकी इस बस्तीमें अच्छी सड़कें बनाकर सन्तोषकी जिन्दगी बिताई, अगर वे सफाईसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिन भर किसी-न-किसी उपयोगी काममें लगे रहे, तो वे सरकारी बजटपर बोझ नहीं रह जायंगे। और उनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोंमें रहने वाले लोग सिर्फ उनकी तारीफ करके ही नहीं रह जायंगे, बल्कि उन्हें अपने जीवनपर शर्म मालूम होगी और वे निराश्रितोंकी सारी अच्छी बातों की नकल करेंगे। तब मौजूदा कड़ुवाहट और आपसी जलन एक मिनटमें गायब

हो जायंगी ; तब निराश्रित लोग, चाहे वे कितनी ही बड़ी तादादमें क्यों न हों, केन्द्रीय और मुकामी सरकारोंके लिए चिन्ताके विषय नहीं रह जायंगे। लाखों निराश्रितों द्वारा बिताई गई ऐसी आदर्श जिन्दगीकी दुःखी दुनिया तारीफ करेगी।

निराश्रितोंकी बदनियतती

बाद मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग छोटी-मोटी चोरियां भी करते हैं। मैं उनसे पूरी ईमानदारी और खरे बरतावकी आशा रखता हूं। मुझे यह रिपोर्ट दी गई है कि निराश्रितोंको जाड़ेसे बचनेके लिए जो रजाइयां दी जाती हैं उनमेंसे कुछ चीर दी जाती हैं, उनकी रूई फेंक दी जाती है और छींटके कमीज वगैरा बना लिये जाते हैं। मुझे इसी तरहकी दूसरी बहुत सी बातें बताई गई है, लेकिन मैं निराश्रितोंके सारे बुरे कामोंका वर्णन करके आपका वक्त नहीं बरबाद करना चाहता। मैं आज शामके विषयपर जल्दी ही आना चाहता हूं।

अफसरोंके बारेमें

जब मैं निराश्रितोंके बारेमें बोल रहा हूं, तब कुछ ऐसे दोषोंके बारेमें उनका ध्यान खींचना चाहूंगा जो मुझे बताये गये हैं। मुझसे यह कहा गया है कि निराश्रितों में आपसमें ही काला बाजार चल रहा है। जिन अफसरोंके जिम्मे निराश्रितोंकी देखभालका काम है, वे भी दोषी बताये जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोंके हाथमें छावनियोंका इन्तजाम है, उन्हें घूंस दिये बिना वहां जगह पाना मुमकिन नहीं है। दूसरी तरफसे भी उनका बरताव दोषसे परे नहीं माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नहीं हो सकते, लेकिन एक पापी सारी नावको डुबो देता है।

फौज़ और पुलिस

मैं एक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। मुझे एक छावनी की कहानी सुनाई गई, जिसमें फौजपर असभ्य बरतावका इलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता व सफाईका नमूना होना चाहिये। इसकी रक्षाके लिये दोनों को एक-दूसरीसे बढ़कर कोशिश करनी चाहिये। इसलिए मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गई है, वह कानून और व्यवस्थाके इन रक्षकोंपर आमतौरपर लागू नहीं की जा सकती-वह एक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहले आजादीकी चसक और उत्साह महसूस करना चाहिये। उनके बारेमें लोगों को यह कहनेका मौका न मिले कि ऊपर से लादे हुए भयानक संयम और पाबन्दियोंमेंही उनसे अच्छा बरताव कराया सकता है है। उन्हें अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना ह कि वे भी दूसरों की तरह हन्दुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक हो सकते हैं। अगर ये कानूनके रक्षक ही कानूनको ठुकरायेंगे, तब तो राज चलाना भी नामुमकिन हो सकता है और अखिल भारत कांग्रेस कमेटीके ठहरावोंको ठीक तरहसे अमलमें लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

भारतीय पार्लमेण्टका पहला अधिवेशन

भारतके प्रधान मन्त्री नेहरूजी

भारतीय पार्लमेण्ट का पहला अधिवेशन गत १२ दिसम्बरको समाप्त हो गया। इस अधिवेशनकी सबसे विशेषता यह है कि इस एक अधिवेशनमें जितना व्यवस्था कार्य हुआ, जितने कानून बने पहले की व्यवस्थापिका परिषदके किसी अधिवेशनमें उतना काम नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि लोकप्रिय सरकारको जन प्रतिनिधियोंका पूर्ण समर्थनप्राप्त रहनेसे उसे विशेष विरोधका सामना नहीं करनापड़ा। इस प्रथम अधिवेशनमें २१ बैठकें हुई जिनमें २३ सरकारी बिल पास हुए, पांच सेलेक्ट कमेटी के सिपुर्द किये गये और एक लोकमत जाननेके लिये प्रचारित किया गया।

इस अधिवेशनकी दूसरी विशेषता यह थी कि पहले कमी-कमी किसी बहुत ही दिलचस्प और महत्वपूर्ण विषय पर विचारके समय दर्शकमन्च ठसाठस मरा करता था। इसबार प्रत्येक बैठकमें दर्शक मंच पर तिल मात्र जगह खाली नहीं देखी गयी। दर्शकोंमें ५८७५ पुरुषों ६४३ महिलाओं और ३३४ विशिष्ट व्यक्तियोंकी उपस्थिति हुई। इनके सिवा सैकड़ों प्रेसिडेण्टकी गैलरीमें बैठे और परराष्ट्र विभाग प्रति दिन दस टिकट कूटनीतिज्ञोंके लिये जारी करता था।

पार्लमेण्टकी कुल सदस्य संख्या २६१ है किन्तु उपस्थितिका औसत प्रतिदिन आधेसे अधिक नहीं हुइ। सर्वाधिक उपस्थिति १७४२० नवम्बरको सबसे कम १२६ थी ६ दिसम्बरको इसका एक कारण तो यह है कि रियासतोंके प्रतिनिधियोंकी पार्लमेण्टके मुख्य कार्यसे सीधी दिलचस्पी न होनेके कारण वे बहुत कम माग लेते थे। दूसरा कारण यह है कि कांग्रेस पार्टीका यह आदेश निकल गया

पार्लमेण्टके स्पीकर श्री मावलंकरजी

सरकारके चीफ ह्विप श्री सत्यनारायण सिनहा के साथ श्रीमियर पन्त।

था कि जो सदस्य प्रांतीय व्यवस्थापिकाओं के मी सदस्य हैं वे पार्लमेण्टमें भाग न लें।

कार्यकी सुन्दर प्रगतिका श्रेय कांग्रेस पार्टीको है जिसने बड़ी योग्यता और उत्तमताके साथ संचालन किया। जो संशोधन या प्रस्ताव विवादग्रस्त समझे जाते थे उन पर पहले पार्टीमें विचार होता था और पार्लमेण्टके सामने वही विषय लाये जाते थे जिनकी स्वीकृति मिल जाती थी। पार्लमेण्टके गैर कांग्रेसी सदस्य सङ्गठित नहीं हैं और मुस्लिम लीगके सदस्य साधारणतया कम प्रमावशाली थे। सङ्गठित विरोधके न होनेसे बहसके समय उस सरगर्मी और उत्तेजनाका साधारणतया अभाव ही रहा लेकिन वर्षोंसे विरोधके अभ्यस्त कांग्रेसी सदस्य यह

अभाव खटकने न देते थे और इसमें जान डाल ही देते थे। साम्प्रदायिक पार्टियोंका स्तित्व स्वीकार करनेके पक्षमें पार्लमेण्ट का भाव न होनेके कारण ऐसा समझा जाता है कि आगामी अधिवेशनमें बैठनेकी व्यवस्था प्रांतीय आधार पर की जायेगी। किन्तु यह व्यवस्था भी सुन्दर नहीं है क्योंकि प्रांतीय आधार पर यह विभाजन प्रांतीयताको भारतीय पार्लमेण्टमें भी जिलाये रखेगा। एक खतरेसे बचकर यह दूसरा खतरा मोल लेना ठीक नहीं है।

इस अधिवेशनमें खास-खास कामोंमें रेलवे बजट, साधारण बजटकी स्वीकृति उल्लेखनीय है। साधारण बजटकी एक मदकी भी कटौती नहीं हुई। किन्तु अर्थ सचिव की बजट सम्बन्धी वक्तृताने जन साधारणमें सन्तोषकी जगह असन्तोष ही पैदा किया। रक्षाके लिये बजटमें की गयी व्ययकी व्यवस्थाकी जरा भी नुक्ताचीनी नहीं हुई। सदस्य स्वयं इस पक्षमें थे कि यदि आवश्यकता समझी जाय तो यह मद बढ़ा दी जाये। पिछली असेम्बलीने रेलवे टिकट और माल भाड़ामें२५ प्रतिशत वृद्धि करनेसे इनकार कर दिया था किन्तु इस बार उसने भाड़ेमें ३२ करोड़ रुपयेकी वृद्धिकी अनुमति दे दी।

तीसरी खास विशेषता यह देखी गयी कि एक भी काम रोको प्रस्ताव पर बहस नहीं हुई, प्रस्ताव पर एक भी डिवीजन अर्थात् हाथ उठाकर नहीं, हां या नहीं कह कर स्वीकृति नहीं मांगी गयी। पहलेकी असेम्बलीमें इन बातों द्वारा ही सरकारकी दुर्गत बनायी जाती थी।

महत्वपूर्ण घोषणाएं

पहले देखा जाता था कि इस अधिवेशनमें सरकारको अविश्वासके प्रस्तावके भयसे नीति सम्बन्धी घोषणाएं करनेका वक्तव्य देनेका साहस न होता था और बादके अधिवेशनके लिये इनको रख छोड़ा जाता था किन्तु नेहरू सरकारने इस तरह की घोषणाएं तत्काल की, उदाहरणार्थ, भारतकी खाद्य नीतिमें परिवर्तन, हैदराबाद के साथ यथास्थिति समझौता और पाकिस्तानके साथ आर्थिक समझौतेकी महत्वपूर्ण घोषणाएं इसी अधिवेशनमें की गयीं।

लार्ड माउण्ट बेटेनकी अनुपस्थितिमें भारत के गवर्नर जेनरल राजाजी और नेहरू

लेकिन जैसा हम ऊपर कह आये हैं अर्थसचिवकी बजट सम्बन्धी वक्तृता जनहितकी दृष्टिसे घोर निराशाजनक हुई, वैसे ही अन्य कई विभागोंके बिलोंमें भी पुरानी नौकरशाहीकी बू बनी हुई थी। हमारी स्वतन्त्र पार्लमेण्टकी दृष्टि समाजवादी गणतन्त्रकी ओर है, यह बात पंडित नेहरूके वक्तव्योंको बाद दे देनेसे अन्यत्र नहीं दिखायी दी। वही पुरानी अर्थ-व्यवस्था और उसके आधारपर शासन व्यवस्था देशको अधिक दिनतक सन्तुष्ट नहीं रख सकती, यह बात केन्द्रीय सरकारके सभी मिनिस्टर जितना जल्दी समझ लें, अच्छा है।

प्रश्नकाल

जनवादी पार्लमेण्टोंमें प्रश्नकाल गैर-सरकारी सदस्योंकी दृष्टिसे और सरकार के कार्यों पर जनसाधारणका ध्यान आकर्षित करनेकी दृष्टिसे बड़ा महत्वपूर्ण होता है। हमारे मिनिस्टरोंकी तत्काल उत्तर देनेकी तत्परतासे बहुतसे महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी हुई। इसी कालमें यह देशको मालूम हुआ कि पाकिस्तानसे शरणार्थियोंको कैसे निकाल लाया गया और उनको बसानेके लिये क्या किया जा रहा है। यह भी मालूम हुआ कि भारतमें शीघ्र हवाई-जहाज बनेंगे, विदेश स्थित भारतीय सेना इस महीनेतक वापस बुला ली जायेगी, चीनीका कण्ट्रोल हट गया, दो तीन सालमें नमक पर्याप्त होने लगेगा और भारत स्वावलम्बी हो जायेगा। यह सनसनी खेज घोषणा भी प्रश्नकालमें ही सुनी गयी कि ब्रिटिश अफसर द्वारा निकम्मे, मात्र लोहा घोषित किये गये ८५ हवाई जहाजों में प्रायः सभी कामके निकले।

गैर-सरकारी प्रस्ताव

गैर-सरकारी प्रस्तावों में डा० पट्टाभिसीतारामैयाका राष्ट्रीय सैन्य दल सङ्गठनका प्रस्ताव बड़ा सामयिक रहा जिसे सरकारने तत्काल मान लिया। शरणार्थी समस्या और खाद्य-नीतिपर बहसके लिये सरकारने विशेष व्यवस्था की। पार्लमेण्टके अध्यक्ष श्री मावलङ्करको पूर्वापेक्षा अधिक अनुकूल वातावरणमें कार्य सञ्चालनमें विशेष कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा और नवीन तथा आकस्मिक विषयों पर पक्ष या विरोधमें रूलिङ्ग (निर्णय) देनेके अप्रिय कार्यसे बिलकुल बचे रहे। देशके सर्वप्रिय नेताओं के हाथों में शासनसूत्र रहनेका यह परिणाम है कि स्वल्प समयमें एक अधिवेशनमें जितना अधिक शासन कार्य हुआ और इस तरह समय और धन दोनों की बचत हुई। पर देश अपने इन नेताओं से इससे अधिक कुछभी आशा रखता है। अभी हमारी पार्लमेण्टको जनता की पार्लमेण्टका रूप देना है। हमें विश्वास है कि पण्डित नेहरूके नेतृत्वमें हमारी सरकार अवकाश पाते ही इस दिशामें द्रुत-गतिसे अग्रसर होगी और जो अभीतक इस प्रगतिमें बाधक हैं वे या तो अपना रवैय्या बदलेंगे या सरकारके बाहर दिखायी देंगे।

कहानी

चम्पेका फूल

—:**:—

विजयकुमार मुन्शी साहित्यरत्न
बी० ए० एल-एल बी०

वह चम्पेका मन्दिर लता-कुञ्ज था जिसके पास नन्दा खड़ी थी। चम्पेके फूलों की भीनी महकसे वातावरणकी प्याली छलक रही थी। सुदूर नीमकी डालीपर कोयलियाकी मधुर कुहुक मन प्राणमें रस घोल रही थी। पास ही लहराती झीलकी चञ्चल लहरें बार-बार कगारोंको चूम-चूम अलग हो जाया करती थीं। हरे चम्पे के कुञ्जसे कोई बीस हाथ दूरीपर भैरोंजी की पक्की बनी एक डेरी है जिसके आस-पास कुछ मिट्टीके बर्तन, टेढ़े लकड़ीके चाट, सुडौल और बेडौल पत्थर पड़े हैं। पत्थरोंके पास ही दो बदशक्ल बच्चे खेल रहे हैं। ऐसे बच्चे जिन्हें इस दुनियामें प्यार नहीं, बेबसी ही मिली है। दिन ढल रहा है, ढलते सूरजकी ढलती किरणें आम बौरोंसे ढलती जा रही हैं। जङ्गल की राह, एक दो किसान बैलोंकी डोर थामे, चिर-परिचित स्वरमें बैलोंको उलाहने देते अथवा उनके पुष्ट शरीरोंको थपथपाते घर जा रहे हैं। एक भीलकी लड़की लकड़ीका एक बोझ सिरपर धरे चुपचाप चली जा रही है, उसकी गतिमें एक यंत्रके टुकड़ेकी विवशता और एकरसता है। फटी चोलीमें कसा उसका श्यामा यौवन और चेहरेमें जड़ी मोती-सी साफ दो आंखें किसीको बरबस दो क्षण अपनी ओर मोह लेती है।

यह सब देख लेनेके बाद मैं लताकुञ्ज के पास जाकर खड़ा हो गया। नन्दा झुरमुटमें घुसकर चम्पेकी महकको मानों पकड़ कर फूलको झुरमुटसे निकालनेको आतुर हो रही थी। दो फूल वह तोड़ चुकी है जिनकी सुरभिसे वातावरण मुस्करा रहा था।

मैंने यों ही प्रश्न किया, 'यह बाग किसका है?'

'बाग तो सेठका है और रखवाली मैं करती हूं!'

'क्या देता है तुमको ?'

है। दिनभर यहां मजदूर काम करते हैं। शामके बाद ही रखवाली करनी पड़ती है।'

'इन चम्पेके फूलोंका क्या करोगी ?'

वह मुस्करा पड़ी, फिर बोली, 'एक छोकरा इधर घूमने आता है और इन्हें महंगे दाममें मोल लेता है।'

मैंने मनमें विचार किया कि उस लड़केसे इसको प्यार होगा। कुछ उसके हृदयकी थाह पानेकी इच्छासे पूछा 'वह छोकरा मुह मांगे दाम देता है या भावताव करता है ?'

वह प्रत्युत्तरमें केवल मुस्करा पड़ी। उसके नयनोंमें अथाह आवेगका मानों एक सागर लहरा उठा। जैसे मैंने उसके हृदय के कोमल अन्तस्तलको फूलकी कोमलतासे छू दिया है और जिसकी कोमल अनुभूति से यह नंदा पुलकित हो उठी है।

'तुम्हारा ब्याह हो चुका है ?'

हां, ब्याह तो होता ही है। एक वयस्क आदमीके घरमें बैठ गयी हूं। उसे मेरी परवाह नहीं, मेरे कामकी, रोटीकी परवाह है। मैं उसे समय पर रोटी देती हूं, काम करती हूं। वह खुश रहता है। दिलका गुलशन उसका जैसे उसका पतझर बन गया है...देखो वह आया...और मैंने देखा कि एक खांसता-खखारता, तीस चालीस वर्षका आदमी भैरोंजीकी डेरीके पास आकर बैठ गया। उसकी सांस धमनी सी चल रही थी।

'जरा लकड़ी लाओ न।' नंदाने कहा।

वह आदमी टोकरा उठा, धुमिल सांझ के अंधियारेमें डूब गया। मुझे लगा कि नंदा मेरे बातमें रस ले रही है। इसी बीच बनियेका छोकरा आ गया। वह डील डौलमें मस्त प्राणी था। इस तरफ चहल कदमीको आता तो कुछ पैसे फेंक चम्पे के फूल खरीद लिया करता। मुझे देख कुछ सकपका गया।

'फूल लो!'

वह कुछ न बोला। वह जा रहा था। मैंने देखा नंदाकी आंखोंमें आंसू आ गये हैं। उसने फिर पुकारा किन्तु उस युवकने जैसे सुना ही न हो।

उस लड़कीने जोरसे कहा अपनी क्या तलवारसे खेल सकता है। प्रेममें तलवारकी धारकी तीक्ष्णता है!'

'यही वह युवक है।'

वह चुप रही और अपना सिर उसने हिला दिया।

कितना डरपोक है। तुम्हें देखकर डर गया। जब मैं अपने आदमीकी परवाह न कर इसके साथ भागना चाहती हूं तो इसमें इतनी भी शक्ति नहीं है कि मुझे सहारा दे। यह तो कुत्ता है। कोई असली भील होता जान पर खेल कर पहाड़ों पर मुझे भगा ले जाता। शहरका आदमी बातकी ताकत रखता है.... ।'

'ये बच्चे तुम्हारे हैं ?'

उसने एक बार अपने शरीर पर दृष्टि दौड़ायी और फिर बोली 'नहीं तो। मेरे आदमीके हैं। एक औरत इसकी मर गयी है। यह रोटीका भूखा है—बेचारा! और वह एक बेबस हंसी हंस पड़ी। ऐसी जिसमें जीवनकी प्रतारणा बज उठती हैं! उसकी अवसादमयी वाणीमें अब आवेग नहीं, शिथिलता थी!

अब तक उसने पांच फूल तोड़ लिये थे। वह उन फूलोंको अञ्जलीमें भर, उनसे खेल रही थी। गाढ़ेकी ओढ़नी में भी उसका स्वस्थ यौवन दमक रहा था। मैंने जेबसे एक रुपया निकाल उसकी ओर फेंक ही रहा था कि एक कुत्ता दो बजरेकी बड़ी बड़ी रोटियां अपने दांतोंमें दाब भैरोंजीकी डेरी परसे भागा —उसने कुत्तेको देख हाथके फूल फेंक दिये और कुत्तेकी ओर बेहताशा भागी। कुत्ता दूर भाग गया। वह लौट आयी। चम्पेके फूल धूलमें पड़े मानों सिसक रहे थे। उसका स्वर कांप रहा था। मैंने फूलोंको जमीन परसे उठा लिया और हाथमें थमा एक रुपया उसकी ओर फेंकते कहा 'लो।'

'नहीं ले जाओ!'

और वह दुःखित भैरोंजीकी डेरीकी ओर जा रही थी। सामनेसे उसका आदमी आ रहा था। मैं रुपया ले चला आया किन्तु चम्पेके फूलोंके साथ बंधी कहानी को चौबीस घंटे बाद भी नहीं भूल पा रहा हूं जब वे ही फूल यहां मेरे सामने सूख कर बिखर रहे हैं।

अन्तराष्ट्रीय

(१४वें पृष्ठका -शेषांश)

ले या न ले, होना चाहिये। इस सम्मे-सम्मेलनमें जर्मनी और आस्ट्रियाके साथ संधिपत्र तैयार किया जाये।

समझ-बूझकर

धन और अणुबमके बलपर गर्वोन्मत्त अमेरिका आज युद्धकी भाषा बोल रहा है। वह यह समझ सकनेमें असमर्थ है कि रूसकी उपेक्षाका क्या भयङ्कर परिणाम हो सकता है। मद बड़े-बड़े ज्ञानीकी आंखों की दृष्टि धुंधली कर देता है। अमेरिका आज आभिजात्य मदका शिकार हो रहा है। उसकी दृष्टिमें एशियाई बर्बर और खूंखार लगते हैं। एशियायियोंको वह सांस्कृतिक दृष्टिसे हेय और घृणित समझता है। रूसका एक हिस्सा यूरोपमें होते हुए भी अमेरिका उसे एशियाई ही मानता है क्योंकि वह समझता है कि ऐसा करके जातीय विद्वेषके सहारे रूस विरोधको प्रचण्ड बनानेमें काफी सफलता मिल सकती है। यह स्पष्ट और प्रत्यक्ष है कि अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसकी गुटबन्दी पूर्वीय और पश्चिमी संसारोंके सम्पर्कोंमें खिंचावकी स्थिति उत्पन्न करेगी। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि जिस जर्मनीको इस मतभेदका केन्द्रविन्दु बनाया गया है उसके सामने इस स्थितिने घोर निराशा पैदा कर दी है। इस मतभेदसे और जर्मनीके हित से कोई सम्पर्क नहीं है। दिखाया यह जा रहा है कि जर्मनीके हितकी भावनासे प्रेरित होकर उसके चालू उत्पादनसे रूसके क्षतिपूर्ति करनेका विरोध किया जा रहा है, पर बात ऐसी नहीं है। जर्मनीका हित यदि इनको अभीष्ट होता तो ये उसके एकीकरणकी योजनाका विरोध न करते और अनिश्चितकालतक उसे खण्डखण्ड अलग रखनेका प्रतिपादन न करते। क्षतिपूर्तिका सवाल ऐसा नहीं है जो हल नहीं किया जा सकता। बहरहाल वास्तविकता यह है कि चार परराष्ट्र सम्मेलन असफल हो गया और यदि जिनकेहितकी दुहाई दी जाती रही है उस जर्मनी और उस यूरोपके हितका ध्यान अपने निजी हितसे ऊपर देखा जाता तो अन्तमें मोलोटोव, मार्शल, बेविन और विदों किसी न किसी समझौतेपर अवश्य पहुंचे होते।

मुनियाका पति एक महीनेकी बीमारीके बाद आखिर डेढ़ सालका बेटा, साढ़े तीन सालकी बेटी और उन्नीस सालकी मुनियां को इस दुनियामें निस्सहाय छोड़कर चल बसा!

और आज मुनियाकी साढ़े तीन वर्षीया बिटिया रानी भी मोटरसे कुचल कर अपने पितासे भेंट करने चली गयी और उसकी मां सिर्फ दो बून्द आंसू गिरा कर देखती रह गयी।

जो कुछ मुनियांके मालिककी कमाई थी वह उठ चुकी थी उसीके दवादारू, कफन और क्रिया-कर्म में।

○ ○ ○

आज मुनियाके घरमें एक दाना अन्नका नहीं था, भीख कभी उसने मांगी न थी, लज्जा उसके नस-नसमें समायी थी, परन्तु लाचारी जो न कराये वह थोड़ा। मुनिया, बेटेको लेकर भीख मांगने निकल पड़ी और एक पथ-तरुकी छांहमें बैठ गयी। किन्तु लाजके कारण न तो दयनीय दर्द भरे शब्द ही निकले और न भीख ही मिली। मिली उसे अपने यौवनकी बदौलत इक्के-तांगेवालेंकी आवाजकशी, कटाक्ष और कामातुर दृष्टि। वह रातको खाली हाथ घर लौट आयी और निराहारही सो गयी।

एक ही दिनमें मुनिया दुनिया देख चुकी। उसके लिये अब दुनियामें शेष रह गया था पीनेको आंसू और खानेको ठोकर। वह निराहार बेटेका मुंह देखती और उसका मातृ-हृदय फटने लग जाता। घृणात्मक विचार उसके मस्तिष्कमें घूमने लग जाते। कभी वह आत्महत्या करनेकी सोचती तो दूसरे ही क्षण बेटेका मुंह निहार कर हिम्मत हार जाती। कभी वह निश्चय करती कि वह भी क्यों नहीं अपना यौवन बेचकर अपना और बेटेका पेट पाले, किन्तु उसी क्षण दूसरा विचार उठता कि वह कैसे अपनी नग्न देह हर एकको सौंपेगी और आत्मग्लानिसे वह जल कर राख हो जाती। फिर दूसरा भाव उठता कि क्यों न वह अपना दूसरा घर-बार कर ले। कल्लू तांगे वाला रोज कहता भी है और उस दिन उसने कितनी खुशामद भी की थी। किन्तु इसके लिये भी उसका दिल गवाही न देता। यही सब सोचते-सोचते मुनियांको अपनी विवशता पर रुलाई आने लग जाती।

○ ○ ○

दूसरे दिन मुनिया उठी और उठते ही भूखसे बिलखते बेटेको डांटने लगी। परन्तु बच्चे भी कहीं माने आज तक। वह और चिल्ला-चिल्लाकर मिट्टीमें लोटने लगा। मुनिया खीझ उठी—"मरता भी नहीं छोकरा। बदनसीब........खून पीता है मेरा खून। खन भी तो चूस लिया। अब क्या हड्डी चूसेगा?......." तड़ातड़-तड़ातड़ वह बेटेको थप्पड़ और धौल जमाने लगी और जितना ही वह बिलखता उतना ही वह उसे और पीटती। पाषाणहृदया बन चुकी थी वह आज।

पीट-पाटकर जब मुनिया थक गयी तो सिर थामकर बैठ गयी। अब उसका क्रोध उसे ही जला-जला कर सताने लगा। हृदयमें बेटेके प्रति ममता उमड़ आयी और नेत्रोंसे अश्रु बहने लगे। उसने बेटे को पुचकार कर गोदीमें उठाया और अपने दुग्धहीन स्तन उसके मुंहमें देकर उसे सुखका अनुभव कराने लगी और थपकियां दे दे कर सुलाने लगी।

मुनिया सब दुख झेल सकती है, सब विपत्तियां ठेल सकती है किन्तु अपनी आंखोंके सम्मुख अपने लालको भूखसे तड़प-तड़प कर मरते नहीं देख सकती। मुनियांने देखा बेटा सो गया है। वह तत्काल तड़प कर उठी और उसके कदम बढ़ने लगे ट्रेनकी पटरी की ओर। वह पटरी पर लेट गयी। दूरसे धड़धड़ाती हुई ट्रेन दौड़ी आ रही थी। जब ट्रेन करीब पहुंची तो 'मां···मां, . . .मां, . . .' मुनियां को आभास हुआ उसका बेटा मांके बगैर बिलख रहा है। केवल एक मिनटका अन्तर रहा वह पटरी परसे हटी और ट्रेन धड़-धड़ाती हुई निकल गयी। मुनियांका रोयां-रोयां भयसे कांप उठा। वह पसीने से तरबतर हो गयी और उल्टे पांव लौट पड़ी।

मुनिया हांफते-हांफते घर पहुंची और बेटेको कसकर हृदयसे चिपटा लिया। "मांऽ भूक लदी है!", बेटेकी तोतली वाणीमें मुनियां अपने को भूल गयी और मातृहृदयमें वात्सल्य प्रेम छा गया, और उसकी आंखें भर आयीं।

त्याग दिया मुनियांने आत्महत्या करनेका इरादा। कूद पड़ी वह जीवन-संग्राममें। ठान ली उसने निर्लज्जा बनकर भीख मांगनेकी, सायङ्कालको चल पड़ी वह अपने बेटेको लेकर भीख मांगने, अपनी झोली फैलाने, दर-दरकी ठोकरें खाने और मनुष्यताका प्रसाद मांगने। पहुंची वह अपनी गलीसे बाजार, जहां किसी भी वस्तुकी कमी न थी, चांदीके सिक्कोंसे होली खेली जा रही थी। अपार जन-

समूह समुद्रकी लहरोंकी भांति उमड़ा चला आ रहा था। रङ्गविरङ्गी साड़ियोंमें लिपटी स्त्रियां जनसमूहको अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। इक्के-तांगे और साइकिलोंका तांता बंधा था। बड़े लोगों की मोटरें धूल उड़ाती हुई छोटे लोगोंके नाकमें दम किये थीं।

मुनियां भी पिल पड़ी इस रेलेमें, इक्के-तांगेवाले उसे कोसते जा रहे थे —'बचना माई, ए भिखमंगी एक तरफ हट कहां चल रही बीच रास्तेमें अंधीकी बच्ची मरती है.....।

'मरती' है की डांटने मुनियांकी सुप्त स्मृतिको पुनः जाग्रत कर दिया। उसकी आंखोंमें अपनी बेटीका मोटरसे कुचलनेका दृश्य घूम गया। वह इसी सोचमें थी कि एक साइकिलसे उसकी टक्कर हो गयी और वह गिर पड़ी। उसके हाथ—पांव छिल गये और उसमेंसे खून बहने लगा। चारों तरफसे भीड़ जमा हो गयी और उसीके ऊपर गालियां पड़ने लगी—'बीच सड़कमें चलती है मानो इसीके बापने बनाया है, चलनेका कायदा नहीं जानती, ठीक हुआ यही होना था, मरेगी नहीं तो और क्या होगा ?...'

मुनियां उठी और धूल झाड़ती हुई आगे बढ़ गयी दायें-बायें जिस तरफ उसकी दृष्टि जाती वह चकाचौंध हो जाती और विस्मित हो कह उठती, "कैसे भाग्य-वान हैं ये रुपये वाले"

बाजारमें करीनेसे सजी रङ्ग-विरङ्गी आकर्षित वस्तुओंको देखकर मुनियांका बेटा पग-पगपर मचलने लगा। यह दे, वह दे, वह हठ करता। जब कोई व्यक्ति कुछ खरीदता तो मुनियां उसे टुकुर-टुकुर देखने लगती और अपना आंचल फैला देती। आंचलमें पैसा-वैसा तो कुछ पड़ता नहीं, पर झिड़कियां जरूर पड़ती और वह आगे बढ़ जाती।

चलते-चलते मुनियां एक हलवाईकी दुकानसे गुजरी, वह वहांसे भाग निकलना चाहती थी किन्तु मिठाइयोंकी सुगन्धने उसका मन हर लिया। मिठाइयोंके थालके थाल सजे थे। मिठाइयोंको देखकर उसकी लार टपकने लगी और बच्चा भी मचलने लगा, "मां मिताई, मां मिताई।"

बढ़ न सकी मुनिया दुकानसे आगे। बेड़ियां पड़ गयी उसके पावेमें। क्षुधाग्नि भड़क उठी। नीयतकी चाबी खुल गयी। भरोसा न रहा स्वयं अपनेपर। उथल-पुथल मच गयी हृदयमें। दबे पांव पहुंची दुकानके निकट।

"मां मिताई, मां मिताई" बेटा मुनियांकी गोदमें मचलने लगा। वह सोच में पड़ गयी—'मिठाई। मिठाई॥ कहांसे दूं मिठाई। पल्लेमें कौड़ी नहीं। फिर ? चोरी करूं ? नही-नहीं, चोरी करना पाप है, महापाप। चोर नरकमें जाता है। वहां उसे यमदूत आरीसे चीरते हैं। मैं ऐसा काम नहीं करूंगी। तो फिर मिठाई। ...मैं हलवाईसे बिनती करूंगी। अपने लालके लिये मिन्नत करूंगी। गिड़गिड़ाऊंगी। वह जरूर एक टुकड़ा फेंक ही देगा। इतने थाल भरे पड़े हैं ? वह जरूर देगा। जरूर देगा।...'

मुनियां मचलते बेटेको लेकर हलवाई के सामने खड़ी हो गयी और देखने लगी आशा भरी मुद्रासे उन भाग्यवान व्यक्तियों को जो ठनसे रुपया निकाल कर फेंकते और एक थैली दबाकर चलते बनते।

ग्राहकोंकी भीड़ छंटी। हलवाईकी दृष्टि मुनियां पर पड़ी और चट बांकी नजर मार कर पूछा, "क्यों री, क्या खड़ी है ? क्या चाहती है?"

हलवाईके हाव-भाव को देखकर मुनियांकी लज्जासे पलकें झुक गयी और वह लौटने लगी। पर जब बेटा लौटने दे। वह उसकी धोती पकड़ कर धरती में लोटने लगा। यह देख हलवाई हंसने लगा—"जब बच्चेको खिला नहीं सकती है तो बच्चा पैदा करनेमें क्या मजा मिलता है ? फिर अपनी भरी जवानी लेकर गलियोंमें भीख मांगती फिरती है---ले, बच्चेको मत रुला।" इतना कहकर हल-वाईने एक जलेबी मुनियांको दे दी।

मुनियांने शरमाते हुए जलेबी थाम ली, आधी खुद खायी और आधी बेटेको दी, बेटा तो शान्त हो गया परन्तु उसकी क्षुधाग्नि और भड़क उठी। वह जलेबीका टुकड़ा निगल कर पासके बम्बेमें गयी और पेट भर पानी पीकर दूसरे हलवाई की दुकानमें जाकर खड़ी हो गयी। भूखने उसकी लज्जा-हया सब मिटा दी थी। उसने हलवाईसे मिन्नत की "ज्यादा नहीं, जरा सी मिठाई, सिर्फ एक बरफीका टुकड़ा इस बच्चेके लिये, भूखा है, भगवान भला करेगा' इतना वह सब एक सांसमें कह गयी, और उसका चेहरा आसक्त हो गया।

"टके हैं पल्ले में ?" हलवाईने व्यङ्ग वाण छोड़ा।

"टके ! कहां से आये मेरे पास। मैं..."

"पासमें टके नहीं ! खायेगी बरफी ! चल दूर हट, भाग यहां से।"

मुनियां झिड़की खाकर, बेटेको गोदमें उठाकर तीसरे हलवाई की दुकानमें पहुंच गयी। उसकी आंखोंमें हलवाईकी दुकान की एक एक थाल नाच रही थी। नाकमें मिठाइयोंकी सुगन्ध बस रही थी। साथ ही साथ सोचती भी जा रही थी,"——मैं इस चालाकीसे मिठाई पार करूंगी कि हलवाईको पता भी न चलेगा। यूं सबोंकी आंखें बचा कर—अगर किसीने मुझे देख लिया, मैं पकड़ गयी—वह सिहर उठी। नहीं नहीं, मैं क्यों पकड़ी जाऊंगी। मैं सब इतनी सफाईसे करूंगी कि किसी को मालूम भी न होगा।—यदि—खैर जो कुछ होगा देखा जायगा। यह चोरी थोड़ी हुई। मैं भूखसे व्याकुल हो रही हूं, मेरा लाल भूखसे तड़प रहा है,—"

मुनियां हलवाईकी आंख बचाते हुए दुकानके एक कोनेमें दुबक कर खड़ी हो गयी, उसके हाथ ही के सामने लड्डू का थाल भरा रखा था।

अवसर अच्छा था। हलवाई ग्राहकों से मोल तोल करनेमें व्यस्त था। हाथ आगे बढ़ने लगे। आखें चारों तरफ देखने लगी। कान चौकन्ने हो गये, हृदय धड़-कने लगा, तात्पर्य यह कि मुनियाकी एक एक इन्द्रियां अपना अपना कार्य पूर्ण योग्यता और तत्परताके साथ करने लगी।

मुनियांके हाथमे एक लड्डू आया ही था कि एक ग्राहकको नजर उसपर पड़ गयी और उसने हलवाईको बतला दिया,

(शेष २४ वें पृष्ठपर)

हमारी खाद्य समस्या

लेखक—श्री महेश दत्त दीक्षित बी० ए०

हमारे देशका अन्न सङ्कट एक दीर्घ-जीवी (chronic) महाव्याधि बन गया है। पिछले कई वर्षों में हम भूख-मरीसे बहुत परिचित हो गये हैं। बङ्गाल का अकाल एक ऐतिहासिक दुर्घटना थी। पूर्वीय संयुक्त प्रदेशका अन्नसङ्कट कभी-कभी इतना बढ़ गया है, कि मनुष्य भी पत्तियों पर गुजर करता रहा है। आज भी हमारे देशका अन्नसङ्कट इतना बड़ा है कि हम स्वस्थ खूराक नहीं पाते। आखिर यह सब क्यों ? माना, इस दुर्भिक्ष के जनयिता पूंजीपति भी रहे हैं जिन्होंने चांदीके सिक्कोंके आगे मानवके प्राणोंके मोल भी खत्तियोंमें भरा अन्न नहीं बेचा, पर केवल वे ही तो कारण नहीं हैं। हमारे देशमें प्रतिवर्ष बढ़ते हुए पचास लाख देवता और हमारी बढ़नेवाली उत्पत्ति ही इसका मूल कारण रही है। पूंजीपतियोंकी अन्न-एकत्रण प्रथा (Hoarding) तो अवैधानिक करार दी जा सकती है, पर अन्न उत्पादनमें वृद्धि करना एक समस्या रह जाती है जो वस्तुतः उतना आसान नहीं जितना हम सोचनेके आदी हो गये हैं।

आज हम अपना माथा ऊंचा करके आसमानके सितारों की ओर देखना चाहते हैं, क्यों कि हम स्वतन्त्र हो गये हैं, पर सचमुच केवल राजनीतिक स्व-तन्त्रताका कोई भी मूल्य नहीं, अगर हम दूसरे देशोंके आर्थिक गुलाम बने रहे। हम परोपजीवी होकर बहुत दिन नहीं जी सकते। दूसरे देशोंसे मंगाये अन्नसे बहुत दिनों तक अपनी उदरपूर्त्ति नहीं कर सकते। अन्तःराष्ट्रीय व्यापार आपसके आदान-प्रदान पर ही टिक सकता है। आज हम स्पष्टतः ऐसी अव-स्थामें नहीं कि हमारा आयात हमारे निर्यातके बराबर हो। हम अपने देशका औद्योगीकरण (industrialisation). करना चाहते हैं, पर उसकी मशीनोंके लिये हम परमुखापेक्षी हैं। हम अपने-अंगोंको बचानेके लिये कपड़ा चाहते हैं, पर उसके लिये हम दूसरोंका मुंह ताकते हैं और जीवनकी सबसे अनिवार्य आव-श्यकता अन्नके लिये भी हम आस्ट्रेलिया और अमेरिकासे आनेवाले जहाजोंका रास्ता देखते हैं। सचमुच ऐसी परिस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हमारा साथ बहुत दूर तक नहीं देगा। और फिर विदेशी सामानका भरोसा ही कितना ? रोज बदलने वाली राष्ट्रीय परिस्थितियां ऐसी दशामें कोई भी सङ्कट उपस्थित कर सकती हैं। इससे अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति हमें स्वयं ही करनी चाहिये। स्वयं - साहाय्य श्रेष्ठ साहाय्य (self help is the best help). है। और जहां तक खाद्य सामग्रीका प्रश्न है, भारत जैसे खेतिहर देशके लिये यह सर्वथा सम्भव भी है कि हम अपनी आवश्यकताएं स्वयं पूरी कर लें।

पर यह सब हम करें तो कैसे करें ? हम देखें कि अच्छी फसल किन-किन चीजों पर निर्भर रहती है, और वैसे ही सुधार करनेसे लाभ होगा।

मामूली तौरपर हम देखते हैं कि अच्छी उपजके लिए ये प्रमुख साधन हैं—

१. अच्छी जमीन
२. सिंचाईकी सुविधा
३. अच्छी खादकी सुविधा
४. अच्छे बीजकी प्राप्ति
५. खेती करनेके सही तरीकोंकी जानकारी।

अच्छी जमीन खेतीकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। अच्छी भूमिसे हमारा तात्पर्य चिकनी या रङ्गीन जमीनसे नहीं है। खेतीके लिए वही भूमि अच्छी है जिसमें अधिकसे अधिक अन्न उग सके। पिछले हजारों वर्षोंसे हम अपनी इसी जमीनपर खेती करते आये हैं—फसलें उगती हैं, धीरे-धीरे भूमिकी उत्पादक शक्ति कम होती जाती है। पर कुछ खेतिहरोंके उपाय और कुछ प्रकृतिका प्रसाद भूमिकी जनन शक्ति अक्षुण्ण रहती है। आज कल तो वैज्ञानिक ढङ्गसे हम ऊसर भूमिको भी उपजाऊ बना सकते हैं। हमारे गांवोंमें ऐसे ढङ्ग प्रचार पायें, इससे हमारी भूमिकी उपज बढ़ेगी साथ ही सरकार नीचे लिखी बातोंमें उनकी सहायता करे—

१. सिंचाईके साधनोंमें बढ़ती।
२. नई भूमिकी जुताई।
३. भूमिकी चकबन्दी।

सिंचाईके साधनोंमें कुआं सबसे सस्ता और (मैदानी भागोंमें) आसान तरीका है। भारतके खेतोंका बहुत बड़ा भाग कुओंसे सींचा जाता है। पर कुछ किसान कैसा भी कुआं नहीं बनवा सकते और कुछ जो बनवा सकते हैं वे अधिक से अधिक कच्चे कुएं जिनकी जिन्दगी तीन-चार बरसातसे ज्यादा नहीं होती। साथ ही, किसानोंके खेत गवई प्रथा (manorial system) जैसे तितर-बितर हैं। हरएक फैले हुए खेतमें कुआं बनवाना तो सर्वथा असम्भव है। सरकार बड़ा उप-कार करे अगर पक्के कुएं बनवा दे, (ग्राम-सुधार संस्थाने इस ओर कुछ काम किया है, पर आवश्यकताको देखते हुए नगण्य) जिससे आसपासके किसान अपने खेत सींचे और छोटी-छोटी किश्तों में कुयें बनवानेका व्यय अपने-अपने हिस्से के अनुसार चुकता करदें।

सरकार नहरों की संख्या बढ़ानेका (जहां जहां बन सकती हैं और बन सकती है, विशेषतः मैदानी भागमें) प्रयत्न करे। इनका लाभ हम भूल तो नहीं सकते। पञ्जाबकी कैनाल कालौनी (canal colony) इसका उदाहरण है। पर किसानोंका सह-योग सर्वथा अनिवार्य है। चीनके किसानों का सहयोग प्रशंसनीय है। वहां राजाज्ञा है कि प्रत्येक १० या १५ एकड़ भूमिमें एक तालाब होना चाहिये—इससे वे किसान पानी भी पाते हैं और मछली भी। भारत-में भी ऐसा ही नियम कुओं (मुख्यतः मैदानोंमें) और तालाबों (मुख्यतः पथरीली भूमिमें) के लिये बना दिया जाये तो लाभ बहुत अधिक होगा—पर पहिले व्ययके लिये सरकारको मदद करनी पड़ेगी। सिंचाईसे केवल उपज ही नहीं बढ़ती है, एक फसलवाले खेतोंमें दो फसलें भी आसानीसे उगायी जाती हैं।

सिचाईके ऐसी ही आवश्यक खाद भी हैं। खादकी आवश्यकता धरतीका उपजाऊ पन बढ़ानेके लिये होती है। आजकल वैज्ञानिक ढङ्गकी खादें इज़ाद की गयी हैं, जैसे चिलीका शोरा और अन्य (फर्टिलाइजर) उत्पादक पर हमारा अभाग्य है कि हमारे किसान अपढ़ हैं और वे इन खादोंका प्रयोग समुचित रूपसे नहीं कर सकते हैं। कभी कभी वे अधिक खाद डाल देते हैं जिससे पौदे पनपते ही जल जाते हैं। ऐसे प्रयोग से हानि ही अधिक होती है। अच्छा यह हो कि सरकारकी ओरसे कुछ ऐसे निरीक्षक रहें जो ऐसी खादोंके प्रयोगकी विधियां बताते रहें।

मेरे विचारसे अपढ़ किसान मण्डली के लिये पुरानी खादें ही अभी अच्छी हैं। भारतीय किसान अपने जानवरोंके गोबर का प्रयोग करते हैं--गोबर की खाद वस्तुतः बहुत ताकतवर होती है पर उसको तैयार करने का भी ढङ्ग होता है। देहातों में हम देखते हैं कि गोबरके ढेर लगे रहते हैं-- यह सही तरीका नहीं है। गोबर की खाद गांवसे हटकर गड्ढोंमें बनानी चाहिये जिससे उसमें सूरजकी रोशनी प्रविष्ट हो सके और उसके लाभदायक तत्व (प्रोपरटीज) नष्ट न हो सकें। हरी पत्तियों, सरपत और पनीली घासकी खाद भी बड़ी अच्छी होती है। पिछले कुछ दिनोंसे सरकारने कम्पोस्ट फैक्टरी खोली हैं जिनमें खाद्य बनानेका प्रयत्न किया गया है, पर इनकी संख्या बहुत कम है। सच पूछिये, इनकी आवश्यकता हर कस्बे, हर गांवमें है।

बीजका भी अपना महत्व है। कमजोर बीजकी फसल बड़ी कमजोर होती है। अच्छे बीजके खेत हरे-भरे हंसते रहते हैं। हमारे किसान इससे अनभिज्ञ तो नहीं, पर उनकी दशाही ऐसी है कि वे या तो अच्छा बीज खरीद ही नहीं सकते या अगर खरीद सकते हैं तो उसे रद्दी किस्मके बीजमें मिलनेसे बचा नहीं सकते।

किसान बड़े कर्जग्रस्त हैं। ज्योंही उनका अन्न तैयार होता है वे उसे बेच देते जिससे वह अपने कर्जका कुछ भाग अदा कर सकें। अतएव अकसर उनके पास इतना बचताही नहीं कि अपने व्यय के अतिरिक्त अगली फसलके बीजके लिये भी बचा सकें। बीज बोनेके समय फिर कर्ज लेते हैं और जैसा भी बीज मिलता है, लेकर वह अपने खेतोंमें बो देता है।

इसके अलावा, बीजकी उत्तमता नष्ट होनेका दूसरा कारण भूमिका बहुविभाजन है। छोटे-छोटे खेत आपसमें मिले रहते और बीज बोने या फसल काटनेमें बीज अकसर दूसरे खेतोंमें आ मिलते हैं। अगर आसपासकी चकमें एक ही प्रकारका बीज बोया जाये तो यह दूर हो सकता है। पर इसके लिये गांवकी पंचायतकी आवश्यकता होगी, क्योंकि वही ऐसी जगह है जहां एक चकमें एक विशेष प्रकारके बीजका निर्णय हो सकता है।

लाइनदार जोत और अन्य साधनभी उपज बढ़ानेमें सहायक होते हैं। दूर-दूर कतारोंमें बोये खेतोंमें मूंगफली, गन्ना और मकई अच्छी होती है।

पर चकबन्दी आसान प्रश्न तो नहीं है। कुछ किसान अपने खेतोंको छोड़ना ही नहीं चाहेंगे। उनके खेतोंकी घरसे अपनी-अपनी दूरियां हैं, अच्छी बुरी किस्मे हैं और पुश्तोंसे जुड़े हुए अपने-अपने मोह हैं। अतः बिना सरकारके हस्तक्षेपके चकबन्दी असम्भव है यद्यपि अनिवार्य हैं।

दकियानूसी हलका प्रयोग भी हानिकर है। पर हर एक किसानके अधमरे कमजोर बैल मेस्टन हल खींच भी तो नहीं सकते। ऐसी दशामें यह अच्छा हो अगर गहराई तक जोतनेवाले हलोंका प्रयोग जहां तक सम्भव हो बरसातमें अवश्य किया जाये। उन दिनों जमीन गीली रहती है और कम खिचावमें ही जोती जा सकती है।

इनके अतिरिक्त चकबन्दी, अपनी रुचि और शांति भी अपना महत्व रखती हैं।

चकबन्दीकी कमी भारतका दुर्भाग्य रहा है। चकबन्द खेतोंमें एक ही किसान सब खेतोंकी दिन और रातमें देखरेख कर सकता है। उसे इधर उधर इस खेतसे उस खेत और उस खेतसे इस खेतमें दौड़ना नहीं पड़ता है। और चकबन्द खेतोंसे एक मनोवैज्ञानिक तृप्ति और आह्लाद भी मिलता है जिससे खेतोंमें रुचि बढ़ती है।

कुटुम्बी और आर्थिक झगड़े भी शांति भंगके कारण होते हैं। आर्थिक झगड़ेकी जड़ ही नष्ट हो सकती है अगर कोओपरेटिव-सोसायटी खोली जायें जो धन, औजार और बीज कम-से-कम व्याज पर दे सकें और शीघ्रही दे सका करें। ग्राम पञ्चायतें आपसी झगड़े तय करनेके बड़े अच्छे और सस्ते स्थान हैं।

हम जब इतनी समस्यायें सुलझा सकेंगे—जिनमें समय और शक्ति लगेगी—इतनी कठिनाइयां दूर कर सकेंगे—तब हमारा देश अन्नके लिये स्वयं-सम्पूर्ण (self sufficient) होगा और तभी हमारा लक्ष्य पूरा होगा।

सुखिनः सर्वे सन्तु
सर्व सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा--कश्चित् दुःखमाप्नुयात्।

(२२ वें पृष्ठका शेषांश)

देखो, देखो, इसने तुम्हारा लड्डू चुरा लिया, मुनिया यह सुन स्तम्भित रह गयी उसके हाथका लड्डू हाथ ही में रह गया हलवाईने चोर चोर का शोर मचाया और थोड़ी देरमें एक अच्छी खासी भीड़ जमा हो गयी और हो-हल्ला मचने लगा। यह गुल-गपाड़ा देखकर एक पुलिस कांसटेबिल भी आ पहुंचा और मुनियांको हवालातमें ले जाकर बन्द कर दिया।

आज दो दिनकी भूखी मुनियांको सरकार की तरफसे हवालातमें खानेको मिला। तत्पश्चात अर्धरात्रिमें दो पुलिस कांसटेबिलस उसकी कोठड़ीमें घूसे और--

वह मनियांके जीवनकी प्रथम रात्रि थी जो उसने पर पुरुषके साथ बितायी केवल एक लड्डु के कारण, और सवेरे वह हवालातसे रिहा कर दी गयी।

अंधेरे के बीच

लेखक—श्री राजेन्द्र सक्सेना

पश्चिममें सूर्यकी किरणें अन्तिम बार, सोना लुटाकर विदा होने लगीं। सारी धरतीका रक्त आलोक लुप्त हो गया और श्यामल छाया संध्याके आगमनकी सूचना लिये वृक्षोंसे उलझकर पृथ्वीपर उतरने लगी। रीताने खिड़कीके बाहर देखा, उस गलीकी सब दूकानें बन्द होने लगी थीं। केवल एक पानवालेकी दुकान पर धुंधली-सी लालटेन प्रकाशके स्थान पर धुंआं अधिक उगल रही थी। लालटेनका क्षीण आलोक बढ़ते हुए अंधेरेके धुंधलकेमें अन्धकारको चीरनेका निष्फल प्रयास कर रहा था, ठीक उसी प्रकार जैसे कि इन दिनों शहरोंमें शांति-कमेटियां होनेके बावजूद हिन्दू-मुस्लिम दंगे नहीं रुकते।

रीताने खिड़की बन्द कर दी और आगेके कमरेमें, जिसे आप ड्राइङ्ग-रूम या बैठक कह सकते हैं—आ खड़ी हुई। तीन बरसकी लड़की अनीता या अन्नो ज्वरमें अब भी जल रही थी। पतिका अबतक पता न था यद्यपि आफिससे लौटनेका समय कभीका हो चुका था। रीताने एक बार अन्नोंका माथा छुआ और फिर उसे चादरसे भली प्रकार ढक दिया। रीताके स्पर्शसे अन्नोकी डूबती-सी चेतना फिर लौट आयी। धीरेसे आंखें खोलकर वह बोली 'मां ऽ ऽ' और आगेकी बात उसके गले हीमें रह गयी। रीताने अन्दाज कर लिया कि अन्नो जरूर प्यासी है और पानी ही मांग रही होगी। रीताने चम्मचसे पानीके कुछ बूंद उसके हलकके नीचे उतार दिये। फिर एक टक उसका चेहरा देखने लगी। तीन दिनके ज्वरने अनीताको अत्यन्त दुर्बल कर दिया था। उसके पीले मुखपर एक अजीब-सी उदासी आ गयी थी।

सतीशने द्वार खट-खटाया। रीताने उठकर किवाड़ खोल दिये। पतिने फाइलें कोनेमें रखी हुई मेजपर पटक दीं और पूछा—"कैसी है अन्नो ?" "अभी ज्वर नहीं उतरा, बेहोश-सी पड़ी है"—बोली रीता।

आज दवा बदली है, कदाचित रातमें उतर जाये—कहता हुआ सतीश कपड़े बदलकर हाथ-मुंह धोने चल दिया। रीता अन्नोके सिरहाने बैठी रही। यह अन्नो कभी ठीक नहीं रहती। जब देखो ज्वर, खांसी कुछ न कुछ बना ही रहता है। मन ही मन झुंझलाने लगी रीता। क्या परेशानी है, क्या इसीका नाम जीवन है। चिन्तायें हैं और रीता है, जैसे सतीश और अन्नोके साथ-साथ वे भी उस परिवारकी संगिनी बन गयी है। कब मिटेंगी यह चिन्तायें ? कहीं अन्त है इनका. . . ?

एक सांस लेकर रीताने दीवारपर दृष्टि डाली। सुभाष बोसका एक चित्र शीशेमें जड़ा हुआ झूल रहा था। उसके इर्द-गिर्द रीताकी बनाई हुई कपड़ेकी कतरनोंकी रङ्गीन माला लिपटी हुई थी। सुभाष बोसके चित्रसे कुछ हटकर रीता और सतीशका ग्रूप फोटो था, जिसे सतीश ने विवाहके अवसरपर खिंचवाया था। फोटोमें रीता और सतीश सटकर बैठे थे। रीता धीमे-धीमे मुस्करा रही थी और सतीशके दांत होठोंसे बाहर झांकते हुए यह दिखा रहे थे कि वह फूला नहीं समा रहा है। किन्तु रीता अनुभव करती है कि वह फोटोवाली मुसकान और हंसी उनके वैवाहिक जीवनमें स्थायी नहीं रह सकी है। जीवनमें सर्वत्र विषाद ही विषाद बिखरा हुआ है।

और यह सुभाष वाली तसवीर—सतीशने डेढ़ साल पूर्व अत्यन्त चावसे खरीदा था जबकि आजाद हिन्द फौजके केप्टन सहगल शाहनवाज और ढिल्लन लालकिलेसे रिहा हुए थे, और उस खुशी में राजधानीमें दिवाली मनायी गयी थी और जुलूस निकला था। उस दिन रीता का हृदय जोशसे भर गया था। और तीन-चार दिनमें ही उसने अन्नोको 'जयहिन्द' करना सिखा दिया था। अन्नो अब भी अभिवादनके लिये उच्च स्वरसे 'जयहिन्द' कहती है और रीताको सन्तोष होता है।

सुभाष बोसकी तसवीरसे हटकर रीता की दृष्टि फिर अन्नोकी ओर लौट आयी अन्नो अब भी बेसुध पड़ी थी। रीताने उसका शरीर टटोला तो देखा, वह पसीने में भीग रही थी। रीताने 'टावेल' से पसीना पोंछना शुरू किया कि अंगुलीमें कुछ लग गया। रीताने हाथ खींच लिया। फिर देखा अन्नोकी फ्राकमें लगे हुए पिनने उसकी अंगुली छेद दी थी, जिसके द्वारा छोटासा तिरंगा झंडा टंका हुआ था। रीताने झंडा निकाल कर अलग रख दिया। और रीता जानती है, यदि अन्नो सचेत होती तो कभी इस प्रकार अपनी फ्राकसे उसे पृथक न होने देती। और सचमुच अन्नो पंद्रह अगस्तसे आजतक उसे प्रतिदिन फ्राकमें लगाये रहती है।

और इस पंद्रह अगस्तको जब देश स्वतंत्र हुआ था, रीताने ईश्वरसे यही प्रार्थना की थी कि वह देशसे गरीबी और कंगाली दूर कर दे। चिन्ताओंका सिलसिला समाप्त होकर जीवनमें फिर ताजगी और उत्साह समा जाये, किन्तु यह न हो सका। पञ्जाबमें भयंकर अत्याचार हुए। मानवता फिर एक बार क्रन्दन कर उठी। बङ्गालके पश्चात पञ्जाब ने भी रक्त-स्नान किया। और पञ्जाबसे उठी हुई लपटें राजधानीकी ओर बढ़ी। दिल्लीने भी लहू-लुहान दिन देखे। शून्य सड़कें, रातका भयानक सन्नाटा, घण्टों गोलियोंके चलनेकी आवाज, आहें और धुंआं। करफ्यू आर्डर और परेशानियां।

रीताको नहीं मालूम कि कमरेमें आकर सतीश खड़ा हो गया।

दूसरे दिन अनीताका ज्वर उतरा। रीताकी जैसे एक बहुत बड़ी बाधा दूर

हुई। डाक्टर गुप्ताकी दवाका बिल सतीश ने अभी अभी चुकाया था। चार दिनकी दवाके छै-सात रुपयेके करीब हुए थे। यह खर्च रीताको बहुत अखरा। और फिर उसका सारा रोष अन्नो पर उमड़ आया। अनीता एक महीने भी तो स्वस्थ नहीं रहती। पर अन्नोका इसमें क्या दोष है ?... रीता सोचती है। स्वयं रीताका स्वास्थ्य गिर रहा है, और सतीश—सारे दिन आफिसमें परिश्रम करनेके पश्चात् घर भी काम करना पड़ता है। फिर खाने की भी उचित व्यवस्था नहीं है। घी के स्थान पर 'डालडा'। दूध तो शुद्ध मिल ही नहीं सकता। दूधवाला आधेसे अधिक तो पानी मिलाकर लाता है। वह भी भाव चढ़ाकर। यदि कुछ कहा जाये तो दूसरे ही दिनसे आना बन्द कर देगा। दूध, तरकारी, सब ही कुछ तो मंहगा है। आखिर यह मंहगाई कब दूर होगी ? रीता जैसे-तैसे महीना काट पाती है। वह गृहस्थी चला रही है, बस।

धूप काफी चढ़ चुकी थी। सतीश कमरेमें सिर झुकाये आफिसका काम पूरा कर रहा था। बरामदेमें अन्नो पड़ोसके कपूर बाबके चार वर्षके लड़के यतीनके साथ खेल रही थी। रीताने चायका प्याला लाकर सतीशके सामने रख दिया। फिर अन्नोको पुकारा। अनीता ठोमनसे आयी। कई दिनोंके पश्चात् उसे यतीनके साथ खेलनेका अवसर मिला था। यतीन ने कुछ समय अन्नोके लौटनेकी प्रतीक्षा की और फिर अपने घर चला गया। यतीनको देखकर रीताको जैसे कुछ स्मरण हो आया और वह बोली—"कपूर बाबूसे बात हुई ?" यह कपूर बाब कण्ट्रेक्टर हैं, और यह मकान जिसमें सतीश रहता है, उन्हींका है। कपूर बाबने अब एक के चार मकान कर लिये हैं। चारों किराये पर उठाकर स्वयं एक छोटेसे फ्लेटमें रहते हैं। सतीश वाले मकानका किराया वे बढ़ाना चाहते हैं, क्योंकि कुछ 'रिफ्यूजी' उन्हें दुगुना किराया तक देनेको तय्यार हैं। रीताने सतीशसे उसीके विषयमें पूछा था। सतीशने बताया, कपूर मानने वाले आदमी नहीं है और बढ़ा हुआ किराया अगली पहली तारीख से ही देना पड़ेगा।

अन्नो कुछ देर रसोई घरकी खिड़की के पास खड़ी रही और फिर थकेसे कदम रखती हुई बरामदेमें चली गयी। यतीन वहां न था। रीताने रसोई बनाना शुरु किया। रीताने लकड़ियोंकी राख झाड़कर फूंक मारी। लकड़ियोंसे लौ निकली और फिर धुंआ बनकर उड़ गयी। फूंक मारते मारते रीता की आंखोंमें आंसू भर आये। धुंएंकी तीव्र कड़वाहट सांसके साथ पेटमें उतरने लगी। कुछ देर यही क्रम रहा और फिर लकड़ियां भक् से जल गयीं। रीताने रोटियां सेक डालीं। फिर सतीशकी थाली परोस दी। अनीता को पुकारा, उत्तर न मिला। रीताने बरामदेमें जाकर देखा, फर्श पर अन्नो न जाने कब सो गयी थी। रीताने अन्नोको जगाना चाहा कि वह चौंक पड़ी। अन्नोको ज्वर हो गया था। एक धक्का लगा रीता को। अन्नोको उसने कमरेमें लिटा दिया।

अन्नोका ज्वर दो दिन नहीं उतरा। तीसरे दिन भी वह ज्वरमें जल रही थी। रीता उसे गोदमें लिये बैठी थी। अन्नोकी बिखरी और रुखी लटोंको वह सम्भाल रही थी। सतीश दवा लेकर लौट आया। अन्नो दवा पीनेसे इनकार कर रही थी। रीताने पुचकार कर कहा-'दवा पी ले बेटी, बड़ी रानी है फिर खिलौने मंगाऊगी अपनी बेटीके लिये।" "और मिठाई मां" अन्नोने अपनी रुचि बताई। "हां मिठाई भी" बोली रीता "कल दिवाली है, बहुतसे दिये जलायेंगे, पूजा होगी।" मिठाई, खिलौने और पूजाकी मधुर कल्पना में डूबती हुई अन्नोने दवा पी ली। अन्नो चारपाईपर लेट गयी। सामने कपूर साहब की फ्लेटमें ऊपर रेलिंगपर मजदूर वार्निश कर रहे थे। कमरेमें रेडियोपर कोई फिल्मी रेकार्ड बज रहा था और उसकी मधुर आवृत्तियां रीता साफ-साफ सुन रही थी। रातके जागरणसे रीता अनमनी सी झपकियां ले रही थी।

दिवालीके दिन रीता न मिठाई ही मंगा सकी न खिलौने ही। अन्नोको टाइफाइड हो गया था और न्यमोनियां भी। सामने कपूर साहबके यहां सुबह से ही चहल-पहल थी। बच्चे शोर मचा रहे थे और सारे नौकर व्यस्त थे। आज शाम को ही कपूर साहब दिवालीकी खुशी में मित्रों और कुछ ऊंचे अफसरोंको पार्टी दे रहे थे। रीताकी बगल वाले फ्लेटमें कंट्रोल विभागका कोई इन्स्पेक्टर रहता था। सुबहसे उसके यहां दिवाली आ गयी सजनीका रेकार्ड ग्रामोफोनपर कई बार बज चुका था। शाम होते होते अन्नो की तबीयत अधिक खराब हो गयी। अनीता पसीनेमें तर हो रही थी। ज्वर और तेज हो गया था। अन्नो रह रहकर धीमे स्वर में कराह रही थी। रीताने उसके शरीरको टटोला और फिर शंकित दृष्टिसे व्यग्र पतिकी ओर देखकर बोली—"डाक्टर को दिखा दीजिये। अन्नोकी हालत ठीक नहीं मालूम होती।" सतीश चला गया।

कपूर साहबके फ्लेटके सामने कई मोटरें शोर मचाती हुई रुक गयीं। रंग-बिरंगे लट्टू जल उठे। कुछ समय बाद सतीश लौट आया। अकेला ही। धक् से हो गयी रीता की छाती।

"डाक्टर गुप्ताने तो आनेसे इन्कार कर दिया और कुरेशी कहीं चले गये हैं।" निराश सा बोला सतीश। "तो अब क्या होगा ?" रीताने एक दीर्घ निश्वास छोड़ा। 'आज दिवालीका दिन है, एक दिया तो जला दीजिये, और देखिये यह अन्नो को क्या हो रहा है ?....यह घरर घरर की आवाज ?" रीता सिसकने लगी। पतिने देखा और दो चम्मच पानी अन्नोके गले में डाल दिया।....अन्नोके गलेकी घरघराहट चौगुनी बढ़ गयी। फिर एक अस्फुट सी आवाज निकलकर शून्य में समा गयी।

सामने कपूर साहबके यहां लक्ष्मी-पूजन हो रहा था। रुपयेके ढेर पर घीके दिये जल रहे थे। सतीश देखता रहा—उसी समय डाक्टर गुप्ता की चमचमाती कार कपूर साहबके फ्लेटके सामने रुकी और वे उतर कर तेजीसे ऊपर चढ़ गये। इसी समय रीता क्रन्दन कर उठी। सामने प्रकाशपुंजोंका समूह उमड़ रहा था और रीता अंधकारमें

(शेष २८ वें पृष्ठपर)

एक हल्की बातचीत—

नया बंगाल

——※※——

लेखक—श्री पन्नालाल महता

भारतका यदि कोई सबसे अच्छा सांस्कृतिक प्रांत होनेका दावा कर सकता है तो वह बङ्गाल ही है। संस्कृति ही क्यों साहित्य और राजनीतिमें भी अपने भाव को उसी ऊंचाईमें रखनेका साहस एक मात्र बङ्गालने ही किया है। बङ्गालको स्वर्ण भूमि करार देनेमें और बनानेमें बङ्गाल का बच्चा बच्चा अपनी आहुति देनेमें कभी पीछे नहीं रहा। सशस्त्र क्रांतिकी तैयारी और उसकी रूपरेखा तैयार करनेमें बङ्गालने अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी है। फांसीके तख्ते पर चढ़नेमें बङ्गालका कदम बराबर आगे रहा है। रवि,शरत बंकिम जैसे युगान्तकारी साहित्यिक बङ्गालमें ही पैदा हुए हैं। आशुतोष मुखर्जी जैसे जीवट वाले महापुरुषोंको बङ्गालनेही जन्म दिया है और सुभाष बोसकी तरह जान पर खेलनेवाले सेनानी बङ्गालकी मिट्टीमें ही पैदा हुए हैं। रत्न गर्भा भारतके दामनसे मिला हुआ बंगाल अपनी मिट्टीको सोना कहनेका हक रखता है और उसका यह हक अपनी जगह सही भी है। अपनी मातृभूमिको अगर कोई स्वर्ण भूमि कहता है तो क्या बुरा करता है।

दमदम एयरोड्रममें भारतके प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू सलामी ले रहे हैं।

भारतवर्ष पर पड़नेवाली सूर्यकी किरणें प्रथम प्रथम बङ्गालकी जमीन चूम कर ही आगे बढ़नेका साहस करती हैं। पर बङ्गालको अपने आपसे लिपटा देख कर हम कभी कभी उसके आचरणसे चौंक उठते हैं; विक्षुब्धसे हो जाते हैं और अगर हमारी बुद्धि जवाब न दे दे तो हम पागल भी हो जा सकते हैं। हरिपुरा कांग्रेसके बादसे बङ्गालका इतिहास हमारे लिये बड़ा मर्मान्तक संस्मरण रखता है। बङ्गालमें हमारे देशके चोटीके नेता बुरी तरह परेशान किये गये। उन पर जूते फेंके गये—गालियां दी गयी और न जाने क्या किया गया। विक्षुब्ध सुभाषने सारे बङ्गालको पागल बना दिया। बङ्गालने इस राजनीतिक हलचलमें अपने गौरवको अस्त होता हुआ समझा। बोसके इस्तीफे को उसने अपनी "मूंछ" का सवाल मान लिया। क्या राजनीतिमें इसके लिये कोई स्थान है?

नये बङ्गालके गवर्नर राजगोपालाचारी

बङ्गालका अकाल संसारके अकालके इतिहासमें बेजोड़ है। मां ने अपने बच्चेको इसलिये बेच दिया कि उसके पेटको दो रोटी मिली। मानवताका इतना बड़ा पतन इसी प्रांतमें हुआ और इसी प्रांतके महा-मानवोंका इसमें हाथ रहा। पैंतालिस लाख निरपराध व्यक्तियोंकी हत्याका टीका लगा कर इस प्रांतके महापुरुषोंने अकाल के कारण पर जो कुछ भी प्रकाश डाला वह युक्ति संगत नहीं था। इस स्वर्ण भूमिको कीचड़में गिरते देख विज्ञ लोगोंने सोचा था अब कमलके रूपमें यह भारत के आंगनमें फिर खिलेगा। पतनके बाद उत्थानकी ही बारी आती है न। लेकिन यह नहीं हो सका। बङ्गाल सम्भल नहीं सका या यों कहें कि उसे सम्भालने के लिये किसीने अपनी बलिष्ट भुजाओं को इसके सामने नहीं फैलाया। सन् तैंतालीसका नाजुक जमाना उसे कीचड़में पटक कर आगे बढ़ गया। इस धींगा-धींगीमें पड़कर अस्तव्यस्त हो जानेवाले

प्राणी शांतिकी,जी भर कर दो चार, सांस खींच भी नहीं पाये थे कि इसके आकाशमें पुच्छल तारा प्रकट हुआ। लीगी मिनिस्ट्री जातिगत आबादीके नाम पर लोगोंको परेशान करने लगी। व्यवसायी समाजके प्राण पत्तेकी तरह कांप उठे। लीगी अत्याचारके नाटकका यह पहला दृश्य था। धैर्य आखिर कब तक साथ दे। लीगी मिनिस्ट्री अपने इन कारनामों के कारण बदनाम हुई और दफा ९३ की तलवार इस प्रांतकी गरदन पर झूल उठी। देशके नेता जेलसे बाहर आये तब तिरानवे का फन्दा बङ्गालकी गरदनसे छूटा। सुहरावर्दी साहब प्रांतके प्रधान मन्त्री बने और फिर वही लीगी नाटक खेला जाने लगा।

पाकिस्तानी लड़ाईकी दुन्दुभी १६ अगस्त १९४६ को बङ्गालमें बज उठी और कलकत्ता युद्ध क्षेत्र बन गया। उसके बाद इस स्वर्ण भूमि पर जो कुछ भी हुआ वह कहा नहीं जा सकता। लेखनीको इतनी पतिता बनाया भी तो नहीं जा सकता है। सारा भारत एक बार पागल हो उठा— दो हिस्सोंमें बंटा और फलस्वरूप इस स्वर्णभूमिके भी दो टुकड़े कर दिये गये। बङ्गालका श्रेष्ठ व्यवसायिक और व्यापारिक हिस्सा पाकिस्तानके पाकेटमें पहुंच गया। अब पश्चिमी बंगालके रूपमें बच रहा है। वह बङ्गाल ही है किन्तु—।

यह नया बङ्गाल इतनी परेशानियोंके बाद अपने लुप्त होने वाले गौरवकी रक्षा कर सकेगा या नहीं,नहीं कहा जा सकता। इस विक्षुब्ध बङ्गालकी आत्माकी शांतिके लिये जिस नुस्खेकी जरूरत है वह जान बूझ कर इसे नहीं दिया जा रहा है। जातीयता और प्रांतीयताके नाम पर अपना उल्लू सीधा करनेके लिये कुछ लोग इसे गलत नेतृत्व दे रहे हैं और उनके नेतृत्वका फल भविष्यके गर्भमें है। डा० विधान चन्द्र रायको युक्त प्रांत का गवर्नर बननेसे रोका गया है। भाषा के आधार पर प्रांतोंका पुनर्गठन करनेका आश्वासन पा जाने पर भी बङ्गालके नये लोग मारपीट करनेसे बाज नहीं रहे हैं।

पूर्व बङ्गालके प्रधानमन्त्री
ख्वाजा नजीमुद्दीन

"लड़के लेंगे पाकिस्तान" का एक नारा अभी समाप्त भी नहीं हुआ कि दूसरा नारा लगाना शुरू हो गया है। इस समय जबकि सारे भारतकी एकता इस महाभारतके बाद इस्पातकी तरह मजबूत होनी चाहिये, बालूकी भीतकी तरह कमजोर की जा रही है। हम यह भूले जा रहे हैं कि कुछ ही दिनों पहले हम भाई भाईकी तरह एक दूसरेके मानापानको अपना मान कर अपनी कर्मवीरताका परिचय दे चुके हैं। इस प्रमाणके बाद भी यदि अविश्वासका प्रश्न पैदा किया जा रहा है तो यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। जान बूझ करके यदि हम दुर्भाग्यको आमन्त्रित करते हैं तो फिर उसके लिये किसे दोष दिया जाय।

इतिहास हमारे सामने है। जातीयताके आधार पर गठित हिटलरका सर्वश्रेष्ठ जर्मन राष्ट्र अपने पापके बोझसे खुद डूबा जा रहा है। आज तो उसकी अछूती जातीयता भी खतरेमें पड़ गयी है। चार हिस्सोंमें बंटा जर्मनी चार तरहकी शिक्षा पा रहा है और यह शिक्षा उसे तब तक आपसमें लड़ाती रहेगी जब तक उस में गान्धी या ईसाकी तरह कोई महा-पुरुष जन्म नहीं लेता। जातीयताके नाम पर गठित पाकिस्तान आज कहां जा पहुंचा यह सर्वविदित है। घरमें पाकिस्तान और सीमा परकाश्मीर उसके लिये बड़े मंहगे पड़ रहे हैं। अगर इसी आधार र इस नये बङ्गालका गठन किया जा रहा है तो यह गलत काम किया जा रहा है। यह नया बङ्गाल सब कुछ होते हुए भी हिन्दुस्तान ही है। हाथ शरीरका ही एक अविभाज्य अङ्ग कहलायेगा उसकी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं हो सकती। यदि कोई इस कथनको गैर प्रमाणित करना चाहेगा तो वह अपने शरीरके साथ अन्याय करेगा।

हम नहीं जानते भविष्य हमें कहां खींचे लिये जा रहा है। फिर भी हमें अपने प्रति सजग और सचेष्ट रहना चाहिये।

(२६ वें पृष्ठका शेषांश)

बीच अन्नोको छातीसे चिपकाये रो रही थी। मृत्युका शोक छाया और अन्नोका जीवनदीप बुझ गया।....

और यह जो कपूर साहबके यहां मोटरोंमें लोग आये हैं, उनकी परम्पराने ही सतीश रीता और अन्नो जैसे कितनेही व्यक्तियोंके छल और चैनका अपहरण किया है.... और दीपावली पर्व पर फैला हुआ यह उज्ज्वल प्रकाश रीता, सतीश और अन्नोके अंधकारमय जीवनको आलोकित करनेमें असमर्थ है, क्यों? यह आप उन्हींसे पूछिये....

यह हमारी पृथ्वी

लेखक—प्रोफेसर एस० पी० कमल
बा० ए० औनर्स (लन्दन)

मुझे आप जड़वादी क्यों न कहें, मैं तो पृथ्वीका प्रेमी हूं, मैं जिस पृथ्वी पर रात दिन चलता हूं उसीको दण्डवत नमस्कार करता हूं। यह साधारण शिष्टाचार है, यह आचार शास्त्रकी मांग है, यह आत्मिक शास्त्रका उत्तम साधन है।

मैं पृथ्वीको उतना ही शुद्ध और पवित्र तथा महान समझता हूं, जितना कि लोग ईश्वरको, या ब्रह्मको शुद्ध और पवित्र तथा महान समझते हैं। कारण यह है कि पृथ्वीका कोई ऐसा कोना नहीं जिसे कि मनुष्य जातिकी पद धूलने पवित्र न किया हो। पृथ्वीका प्रत्येक परमाणु मनुष्य जातिके पूर्वजोंके जीवन-इतिहाससे पूर्ण है। यह मनुष्य आत्माके पारससे आत्मवान हो गया है, आज सारी पृथ्वी ही मनुष्य जातिकी सामूहिक आत्मा बन गयी है, इसलिये पृथ्वीका सम्मान मनुष्य जातिका सम्मान है, मनुष्यके अज्ञेय आदर्श उत्साहका सत्कार है। इसलिये आप पृथ्वी पर सम्भल कर पग धरिये क्योंकि पृथ्वी पूर्वजोंकी धूल है।

यदि मनुष्यमें खड़े होनेका दुर्गुण उत्पन्न न होता तो वह अपने पूजनीय देशको भावहीन आकाशमें न ढूंढ़ता, न निराकार ब्रह्ममें ही ढूंढ़ता, परन्तु भाव पूर्ण और आकार-युक्त पृथ्वीपर ढूंढ़ता। खड़े होनेकी दुर्घटनासे मनुष्य घमंडी हो गया। उसकी दृष्टि पृथ्वी-वृत्तिके स्थान पर आकाश-वृत्तिकी हो गयी। वह जिस पृथ्वी पर खड़ा था उसीको भूल गया। उसकी उन्नतिशील बुद्धिके लिये यह दुर्घटना श्राप बन गयी। आकाश-वृत्ति रख कर उसने अपने पूज्य देवके सम्बन्धमें आकाशमें विचारोंकी दौड़ लगायी, परन्तु आकाश भावहीन है इसलिये उसकी बुद्धिकी दौड़-धूपका परिणाम व्यर्थ प्रमाणित हुआ। उसके सिद्धांतका अध्ययन कीजिये। क्या विचार विरोधोंका समूह है? उसने ईश्वरको हर स्थान पर उपस्थित बताया है परन्तु उसके पानेके लिये सारा जीवन भी यथेष्ट नहीं। प्रत्येक व्यक्तिकी आत्माको ब्रह्मका अंश बताया है। परन्तु इसकी अनुभूति असाधारण मनुष्योंके लिये भी असाधारण आदर्श बताया है। पुनः ईश्वरको एक ही घड़ीमें सगुणी और निर्गुणी बताया है और निराकार शक्तिको स्वरूपोंका सृष्टि कर्ता बताया है। जब सब कुछ ही ईश्वर और ब्रह्म है तो जीवमें यह मायाका पर्दा कैसे पड़ गया? इस व्यर्थ खोजमें मनुष्यने अपनी समस्त बुद्धि लगा दी है। विचार विभिन्नताको, अपने विचारोंका हास्यास्पद खोखलापन देखनेके बजाय वास्तविकताका नियम बताया है। यदि पशु मनुष्यकी भाषा समझ सकते तो मनुष्य सिद्धान्त पर हंसते न थकते।

मनुष्य, यदि पृथ्वी पर दृष्टि रखता तो उसे पृथ्वी पर ही सब विरोधहीन, ईश्वरीय गुण मिलते। ईश्वरका अर्थ सृष्टि रचना है। आकाश कोई रचना नहीं करता। पृथ्वीकी रचना देखिये, सब जीवों, फलों तथा फूलोंको देखिये। भला इससे अधिक सृजनका दृश्य कहीं हो सकता है? यह रचना नाटक हर घड़ी हो रहा है, प्रत्येक स्थान पर हो रहा है, और

अमेरिकन स्वतन्त्रताका स्मरण दिलानेवाली संसारकी बृहद मूर्ति

करता है। प्रकृतिक वाह्य तथा आंतरिक रूपों में जो सौन्दर्य सन्निहित अथवा प्रस्फुटित है, उसीके सहारे काव्य अपना वितान तानता है। काव्यका यह अनुसन्धान सहज, सरल, विभिन्न तथा उपदेशात्मक होता है।

यदि हम सूक्ष्म रूपसे देखें तो हमें ज्ञात होगा कि वह वस्तु जिसे हम ज्योति अथवा आलोक नामसे सम्बोधित करते हैं केवल सूर्य-रश्मि द्वारा वायु कणों से विकीर्ण संज्ञाका नाम है; उसी प्रकार सौन्दर्य भी कुछ पार्थिव-पदार्थों के समन्वय-स्वरूप एक अनुभूतिका नाम है जो केवल आत्मिक-रूपसे अनुभव-गम्य होती है। हमारी कल्पना जो हमारी आत्माकी सहेली है उसे हमारे मानस-पटल पर व्यक्त करती है जिसके द्वारा हमें सौन्दर्य अनुभूति सहज-रूपमें होती रहती है। सौन्दर्य की अनुभूति केवल मानसिक विडम्बना नहीं वरन उसमें वही अमर तत्व हैं जो किसी भी प्राकृतिक अथवा भौगोलिक नियमों में होते हैं। जब कभी किसी विशेष पार्थिव-अवयवोंका सामञ्जस्य प्रस्तुत होगा, सौन्दर्य की प्राण-प्रतिष्ठा अवश्य होगी। सौन्दर्य और काव्यका चोली-दामनका सम्बन्ध है।

काव्यका बीजारोपण तभी होता है जब वाह्य प्रकृतिका कोई दृश्य, अथवा इतिहासकी कोई घटना, अथवा कोई मानवी अनुभव अथवा आध्यात्मिक सत्य, हमारे मनको गहरे रूपमें प्रभावित कर हमारी कल्पना तथा परि-कल्पना (फैन्सी) को उत्तेजित करता है। इसी उत्तेजना के कारण हमारे मनोभावेंमें उमंगकी लहरियां उठने लगती हैं और काव्य-चित्र बनने लगते हैं। मनोभाव, उमंगकी कूंची द्वारा काव्यका इन्द्र-धनुष अनुरञ्जित करता है। अंग्रेजी भाषाके महान कवि वर्ड्सवर्थका कथन है कि प्रभावपूर्ण-मनोभावों के स्वच्छन्द बहुल प्रवाहमें काव्य निहित है और उनकी एकान्त पुनरावृतिमें ही इसका मूल-स्रोत है। उनका यह भी विश्वास है कि काव्य केवल पुरुष तथा प्रकृतिके सम्बन्धसे ही आविर्भूत है। कदाचित् मानवसे सम्बन्धित ऐसा कोई अनुभव, मनोभाव अथवा सत्य नहीं जो काव्य-रूपमें परिणत न हो जाय। इसी विस्तारमें काव्यका देश

स्वतंत्र भारत में घरेलू उद्योग-धन्धे

भारत अपना हो गया। हम स्वतन्त्र हो गये। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमारा उद्देश्य सर्वथा पूर्ण हुआ। जिस उद्देशकी पूर्तिके लिये हमें स्वतंत्र भारतकी आवश्यकता थी वह उद्देश्य तो अभी शेष है। देशकी आर्थिक-अवस्थाको उन्नत करके देशवासियोंके जीवन-स्तरकी वृद्धि करना हमारा प्रधान उद्देश्य था और अब स्वतंत्र भारत बननेसे हमें वह सुविधा मिल गयी है जिसकी सहायतासे हम उक्त उद्देश्यकी पूर्ति कर सकेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय सरकारके स्थापित होनेसे देशका आर्थिक-नकशा अवश्य बदलेगा।

श्री गिरिराज प्रसाद गुप्त, एम. काम. मेरठ

यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं है कि आर्थिक-उन्नतिके लिये जिन प्रमुख वस्तुओंकी आवश्यकता है वे सब भारतमें विद्यमान हैं। देश विशाल है। देशमें आर्थिक-उन्नतिके साधन महान हैं और उन साधनोंका प्रयोग करनेके लिये भी मनुष्य बल भी संसारके अन्य देशों से कहीं अधिक है। देशको बड़े पैमानेपर उद्योगी बनानेके लिये प्रत्येक सुविधा अधिक मात्रामें पायी जाती है। परन्तु आवश्यकता केवल इस बात की है कि घरेलू उद्योग-धन्धोंका पुनर्निर्माण हो।

भारत एक कृषि-प्रधान देश है। लगभग ७० प्रतिशत लोग खेती करके जीविकोपार्जन करते हैं-अतः यह आवश्यक है कि इतनी बड़ी आबादीके जीवन-स्तर को उन्नत बनानेके लिये घरेलू उद्योग-धंधों को फिरसे जीवित किया जाय। भारतके प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरूने भी अपनी 'नेहरू-योजना'में घरेलू-उद्योग-धंधों को देशकी एक आवश्यकता समझकर अधिक स्थान दिया है। भारत जैसे देशके लिये, जहां ७ लाखसे अधिक गांव ही हैं और जहांके अधिकांश लोग या तो भूखे मजदूर हैं या नंगे कृषक हैं, ऐसे उद्योगों की आवश्यकता है जो कमसे कम पूंजी तथा कमसे कम मशीनके प्रयोगसे चलाये जा सकें यह बात निर्विवाद सत्य है कि जब तक तीन-चौथाई भारत-निवासी जो केवल कृषि पर ही निर्भर हैं, कृषिसे हटा कर अथवा कृषि-धंधेके साथ साथ अन्य धंधों पर न लगाये जांय तब तक भारत का भाग्य नहीं सुधर सकता। हमारी समस्या केवल उपज-वृद्धिकी ही नहीं है वरन् उस उपजके वितरण की भी है। जब तक हम देशके प्रत्येक व्यक्तिको काम बांटकर उसकी रोटीका प्रबन्ध नहीं करते तब तक हमारी आर्थिक समस्या हल नहीं हो सकती। कुछ थोड़ेसे पूंजीपति या गिने हुए बड़े पैमानेके कारखाने भारत संघकी ३० करोड़की आबादीको पूरा पूरा काम नहीं दे सकते। अतः घरेलू उद्योग धन्धों को शीघ्रसे शीघ्र संगठित करना होगा। इसलिये हमारे राष्ट्र-निर्माणमें उद्योग-धन्धोंका अधिक महत्व है। देशकी भलाईके लिये राष्ट्रकी किसी भी योजनामें चर्खा तथा अन्य धन्धोंको हमें अवश्य ध्यान देना होगा।

कार्य कलामें सहायक

आर्थिक दृष्टिकोणके अतिरिक्त घरेलू उद्योग धन्धोंमें एक महानताका स्वरुप निहित है। ऐसे धन्धे मनुष्यको केवल मशीन तथा औजारोंकी गुलामी से मुक्त ही नहीं करते वरन् उसकी कार्य कला की वृद्धिमें भी सहायक होते हैं। इन धंधों के पुनर्निर्माणके साथ साथ हमारी मानवता, सभ्यता तथा कलाका पुनर्जन्म होगा। देशकी स्थिति बदल जायेगी और लोगोंको अपने नये नये कार्यों में दिलचस्पी होगी। गांवोंमें एक नया जीवन होगा और कंगाली तथा दुर्भिक्ष इस समृद्धशाली कहलाने वाले भारतको छोड़ देंगे।

इन कारखानोंको अनेक विपत्तियोंका सामना करना पड़ा है परन्तु फिर भी जीवित रह सके हैं। सरकार ऐसे कारखानोंको खतम नहीं कर सकती और न करना चाहिये। बड़े पैमानेके कारखानों तथा घरेलू उद्योग धंधोंमें सहयोगकी आवश्यकता है। बड़े कारखानों, जिनसे उपज तथा कलामें वृद्धि हो रही है और जिनके कारण किसी जाति, समाज या लोगोंको कोई अड़चन नहीं है, अवश्य स्थिर रह सकते हैं—भारत सरकारको इस प्रकारके कारखानोंको सहायता देनी चाहिये। सम्भव है घरेलू उद्योग धंधोंको सङ्गठित करनेके लिये भारत सरकारको आरम्भमें कुछ अड़चनोंका सामना करना पड़े। परन्तु ये अड़चनें सरकारके प्रबंधों द्वारा आसानीसे दूर हो सकेंगी। उचित मात्रामें कच्चा माल बिना पैदा किये किसी भी प्रकारका धंधा सुचारु रूपसे नहीं

चलाया जा सकता। इस समय मुख्य अड़चन अच्छे किस्मका कच्चा माल पैदा करना है जिससे धंधोंका काम आसानी से चल सके। अच्छे प्रकारका कच्चा माल घरेलू धंधोंको तभी मिल सकता है जब बड़े बड़े कारखाने और मिलें छोटे छोटे धंधोंसे कम्पटीशनकी नीतिको छोड़ दें और घरेलू धंधोंके काम करने वालोंको भी अच्छा कच्चा माल दिया जाये।

खोजका काम

दूसरी अड़चन यह है कि घरेलू धंधों पर काम करने वालेके औजार या तो पुराने हैं या टूटे फूटे हैं जिनसे अच्छा पक्का माल तैयार नहीं हो सकता। सरकारको इस कमीको दूर करनेके लिये मशीनों तथा औजारोंकी खोज करनी चाहिये। विदेशी सरकारने अपने स्वार्थके कारण अब तक इस क्षेत्रमें कोई सहयोग नहीं दिया। परन्तु अब राष्ट्रीय सरकार को चाहिये कि प्रान्तीय सरकारोंके साथ साथ एक 'खोज विभाग' खोले जिसके मशीनों और औजारोंकी खोज की जाये। 'अखिल भारतवर्षीय ग्रामोद्योग समिति द्वारा निश्चित किये गये औजारों का प्रयोग होना चाहिये। अगर उचित वैज्ञानिक-अनुसन्धान होते रहे तथा तत्विषयक शिक्षाको प्रबन्ध भी हो तो उद्योगोंके मशीन व औजारोंकी समस्या शीघ्र ही हल हो सकती है।

उद्योग धंधोंको चलानेके लिये अर्थ सामग्रीको प्राप्त करना भी एक समस्या हो सकती है। यद्यपि घरेलू धंधोंमें आर्थिक पूंजीकी आवश्यकता नहीं होती फिर भी भारतके गरीब कृषकोंकी ओर देखनेसे थोड़ी आवश्यकता भी अधिक जान पड़ती है। गरीब ग्रामीण जनता सस्ते और अच्छे पक्के मालको खरीदननेमें सर्वथा असमर्थ होती है। इसके अतिरिक्त पक्के मालको ठीक और उचित मूल्य पर बेचना भी एक समस्या है। इन समस्याओंको सुलझानेके लिये भारत सरकारको इस आशयका एक विभाग खोलना होगा जो धन्धेंको अर्थ सामग्री देगा और पक्के मालको उनसे खरीद कर उचित मूल्यपर बेच कर अपना रुपया वसूल करके पूरा बचा हुआ लाभ धन्धे करनेवालेंको लौटाती रहेगी। आशा है स्वतन्त्र भारत सरकार इस विषयमें पूरा ध्यान देगी।

ट्रांसपोर्टमें सुधार

भारत सरकारको धन्धोंको उन्नत करनेके लिये रेलवे नीतिमें परिवर्तन करना होगा। रेलका किराया घटाना होगा और रियायत देनी होगी जिससे घरेलू धन्धों का माल दूसरे बाजारोंमें पहुंच कर सस्ता बेचा जा सके। कर नीतिमें भी परिवर्तन करना होगा। इस प्रकारकी असुविधाएं तभी दूर हो सकती हैं जबकि स्वतन्त्र भारत सरकार इस कार्यमें जनताको पूरा पूरा सहयोग दे। सरकारको संरक्षण नीतिका पालन करना होगा, समय आने पर रियायत भी देनी पड़ेगी जिससे विदेशी कम्पीटशन द्वारा धन्ध नष्ट न हो जायं। सरकारको चाहिये कि इन धन्धों तथा उनकी पैदाकी हुई वस्तुओंका प्रदर्शन कराये और विज्ञापन करे जिससे देशमें इन धन्धोंके प्रति लोगोंका विश्वास बढ़े। प्रदर्शनियों तथा धन्धोंकी पैदा की गयी वस्तुओंके संग्रहालय स्थान स्थान पर बना कर सरकार इन धन्धोंको बहुत ऊंचा उठा सकेगी। प्रत्येक जिलेकी इस विषयमें पूरी खोज करनी चाहिये कि किस प्रकारका धन्धा अमुक जिलेमें चलाया जा सकता है और उसके लिये आवश्यक सुविधाएं वहां मिल सकती हैं या नहीं। इन सब प्रकारकी सरकारकी सहायता तथा जनताके सहयोगसे भारत देश एक बार फिर नया राष्ट्र निर्माण करके अपने चिरवांछित देशकी पूर्तिमें सफल हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

"काव्य का मूलस्रोत"

लेखक—डा० एस० पी० खत्री, विश्वविद्यालय, प्रयाग

-::***::*::**::-

मनुष्य और प्रकृतिमें दैवी सम्बन्ध है। मानव-आत्मा प्रकृतिके वातावरणमें अठखेलियां करती फिरती हैं और अपने रुचिअनुकूल दृश्योंको चुन चुनकर उनका हिंडोला बनाती हैं। इस हिंडोलेमें झूल कर कभी वह हास्य तथा हर्ष, रोदन तथा करुणा तथा शांत रसके वातावरणमें डूबती तिराती रहती है। यह आत्मा कभी पक्षियोंके गुञ्जनको शांत-चित्त हो सुनती है; कभी जल-प्रपातों और निर्झरोंके किनारे बैठ उनका सन्देश समझनेकी चेष्टा करती है और कभी झंझांके आवेगसे क्षुब्ध हो उठती है। मानव-आत्मा तथा प्रकृतिके प्रेमालिंगनमें काव्यका मूल-स्रोत है।

काव्य, मानव-आत्मा तथा प्रकृतिकी रंगरलियोंका प्रदर्शन मात्र है। वह प्रकृतिके सत-रंगे इन्द्रधनुषकी प्रत्यंचाके समान है जिसको मानव-आत्मा पूरी शक्तिसे खींच खींच कर अनुभव-रूपी वाण मारती है और एक अज्ञात लक्ष्यकी ओर एकटक देखती रहती है। अपने अक्षय तूणीरसे मानव-आत्मा आदिकालसे अबतक इसी अज्ञात लक्ष्यका भेदन करनेमें प्रयत्न-शील है। कदाचित् उसका प्रयत्न अब तक सफल नहीं हुआ है और शायद न भी हो। यदि लक्ष्य-भेद सफल हो गया तो वह दिवस काव्यको निष्प्राण कर देगा; इसकी असफलतामेंही काव्यका अमरत्व है।

संसारके श्रेष्ठ काव्यके अध्ययनसे यह ज्ञात होता है कि उसमें सदैव किसी ऐसे अज्ञात लक्ष्यकी ओर संकेत रहता है जिसकी परिभाषा अथवा नाम-करण कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। श्रेष्ठ काव्य सतत इसी संकेतको यथा सम्भव स्पष्ट करनेकी चेष्टा करता है; इसी चेष्टामें वह आदिकालसे अब तक संलग्न है। इसी अनवरत संलग्नतामें काव्यकी मनमोहकता, हृदय ग्राहिता तथा उसका गौरव है। यह काव्य लक्ष्य इस जगतके परे है; वहां मनुष्यकी पार्थिव दृष्टि नहीं पहुंच पाती है परन्तु काव्य अनेकों रूपों तथा अनेक उपकरणों द्वारा उसको समझने तथा उसको अनुभव-गम्य बनानेकी चेष्टा किया करता है। कभी वह उपमेयोंका सहारा लेता है; कभी वह भाषाका सहारा लेता है और कभी वह कल्पनाकी शरण ले प्रकृति-प्रांगनमें उसका प्रतीक ढूंढ़ता फिरता है। उसकी दशा उस छोटे खोये हुए बालकके समान है जिसकी माताका साथ छूट गया हो और वह पूछने पर केवल एक ही शब्द मांका उच्चारण करता है। कभी वह किसी एक ओर जाता है और कभी दूसरी ओर प्राणपणसे अपने माताका रूपरङ्ग वर्णन करने की चेष्टामें थक कर केवल 'मां' शब्दका ही उच्चारण कर पाता है। इसी संकेत तथा लक्ष्य-भेदमें काव्यकी सार्थकता है।

वास्तवमें काव्यका मुख्य ध्येय मनुष्य और प्रकृतिके सम्बन्धको समझना तथा उसको सरलसे सरल रूपसे व्यक्त करना है। मानव-आत्मा तथा प्रकृतिकी आत्माकी भित्ति-स्वरूप जो शक्ति अज्ञात रूपसे कार्य करती रहती है और जो दोनोंका अनुशासन करती रहती है, काव्य उसीके दिग्दर्शन करानेमें संलग्न रहता है। श्रेष्ठ काव्यके इस गुणको संसारके सर्वश्रेष्ठ कलाकारोंने सराहा है। जिस शक्तिके स्पष्टी करणमें काव्यकी महानता है उसे हम ईश्वरके नामसे सम्बोधित कर सकते हैं।

उपरोक्त विश्लेषणके फलस्वरूप हम काव्यके तीन प्रमुख तत्वोंका समावेश देखते हैं। ये प्रमुख तत्व हैं; मनुष्य, प्रकृति तथा ईश्वर। श्रेष्ठ अथवा महान काव्यों में, ईश्वर-रूपी तीसरा तत्व, किसी न किसी रूपमें सन्निविष्ठित रहता है। कभी तो काव्य स्पष्टतया उस शक्तिके सन्मुख विनत हो उसकी पूजा तथा अर्चना करता और कभी वह मनुष्य तथा प्रकृतिके अन्तस्तलोंमें उसकी छाया ढूंढ़ता फिरता है। काव्य, अपने इस ईश्वरीय अनुसन्धान में दर्शन तथा वेदांतका सहारा ग्रहण करता है। वह कल्पनाकी सहायतासे, इन तीनों तत्वोंमें सहजरूपसे संचरण करता है और स्वान्तः सुखाय कभी एक, कभी दूसरे और कभी तीसरेको केवल एक ही शब्द एक ही वाक्यांश अथवा एक ही पंक्तिमें व्यक्त कर देता है। इसी कारणसे कोई भी काव्य, प्रकृति, मनुष्य और ईश्वरसे पृथक नहीं रह सकता है। यदि काव्य मनुष्यका गुणानुवाद करता है तो उसमें कहीं न कहीं प्रकृति तथा ईश्वरकी भावना भी अव्यक्त रूपमें रहती है।

प्रकृति, वास्तवमें हमारी रसेन्द्रियों द्वारा वाह्य संसारकी अनुभूति मात्र है। मनुष्यके सामने जो प्रकृतिका साम्राज्य फैला हुआ है, वह उसे ग्रहण करना चाहता है। अपनी सम्पूर्ण-शक्ति लगाकर वह इस वाह्य साम्राज्यको अपनेमें समा लेना चाहता है और मनुष्यकी रसेन्द्रियां तथा ज्ञानेन्द्रियां उसकी सहायता करती रहती हैं। अपनी घ्राण-शक्तिसे वह प्रकृति के सौरभ-पूर्ण पुष्पोंका पराग तथा उनके सौरभका अनुभव करता है; अपनी त्वचा से वह प्रकृतिके कोमल तथा चिकने, खुरदुरे तथा विषम स्थलोंको ढूंढ़ता रहता है; अपनी जिह्वासे वह मधुर तथा अम्ल तथा कटु पदार्थोंका रस लेता है; अपनी श्रवण शक्ति द्वारा वह प्रकृतिका कोमल कलरव तथा कर्कश नाद सुनता है और अपने मस्तिष्क तथा हृदयसे सम्पूर्ण-प्रकृतिके जीवोन्माद तथा उसके रहस्यको समझनेका प्रयास किया करता है। दर्शनशास्त्र, प्रकृतिकी चेतनता, वेदांत, प्रकृतिके प्राण तथा काव्य प्रकृतिके

असीमित रूपोंमें हो रहा है। इनकी चका-चौंध करने वाली रचना भिन्नताको देखिये—प्रत्येक पौधा एक दूसरेसे भिन्न है और प्रत्येक पौधेकी अनगिनत किस्में हैं। रचना रहित पृथ्वी भला यह आश्चर्य जनक रचनात्मक नाटक कैसे रच सकती है? इसके अतिरिक्त मनुष्यकी जननी भी तो पृथ्वी है। इस जननीने शताब्दियोंके अथक संग्राम, दुःख और त्यागके पश्चात मनुष्यको जन्म दिया है। जब मनुष्यने विज्ञान-दृष्टि धारण करके पृथ्वीको ढूंढा तो उसको अनुभव हुआ कि किस प्रकार पृथ्वीने अपने असफल बच्चोंको अपने जिगरके साथ चिपका कर उनके अस्तित्वकी रक्षा की है। और अपनी सन्ततिके पालनके हेतु उनकी आवश्यकताओंके अनुसार अपने आपको आहार बनाती रही है व बना रही है। इससे अधिक रचनाकार और पालनहार ईश्वरका और क्या साक्षात प्रमाण हो सकता है? हां ईश्वर हर जगह और हर स्थान पर वर्तमान है परन्तु उसके ढूंढनेके लिये सारी आयुकी आवश्यकता नहीं, क्षण भरकी दृष्टि ही यथेष्ट है। मनुष्य यदि पृथ्वीको देखे तो उसे अपने ईश्वरका अनुभव हो जाये। ब्रह्म जिसका कि मनुष्य अंश है, वह पृथ्वी ही है। मनुष्य पृथ्वीके गर्भसे ही उत्पन्न हुआ है। वह पृथ्वी ही है कि जिसके साथ मनुष्य अपना सम्बन्ध स्थापित करता है, क्यों कि उसीके साथ उसे लय होना है।

जड़वाद, जड़ पदार्थों के साथ मोहका नाम है, पूजाका नाम नहीं। धनका लोभी, धनका मोही है, धनका पुजारी नहीं। पूजा और मोहमें बुनयादी अन्तर है। मोहमें स्वार्थ भावना है, मोह विषय का दुरुपयोग है। पूजा में अहं और लोभ-त्याग है। पूजा विषयका पवित्र प्रेम है। मोही सदा ही मोहक वस्तुकी मांगे करता रहता है, पुजारी सदा ही अपने आपको और अपने लाभोंको अर्पण करता रहता है। मोहमें मोहकी वस्तुके लिये कोई आदर व सम्मान नहीं, पूजामें पूजनीयके लिये आदर और सम्मान होता है। मोहमें मोहकी वस्तु अपना अङ्ग लगती है, पूजामें पूजनीय अपने से अलग तथा ऊंचा स्थान रखता है। आज विज्ञानने खड़े होने के श्रापसे हमें कुछ न कुछ मुक्ति दी है। हमारी दृष्टि आकाशकी ओरसे पृथ्वीपर भी फेरी है। इसी को ही यथार्थ वाद की वृति कहते हैं। परन्तु विज्ञानने पृथ्वी की पूजा नहीं सिखायी उसे मोहका साधन बनाया है। विज्ञान मनुष्यमें पृथ्वीके प्रति उस बर्बर सिपाहीकी दृष्टि उत्पन्न करनेमें सहायक हुआ है, जो सिपाही बनने पर अपनी मां को कहता था कि 'मां अब मैं तुझे चाबुक से मारा करूंगा।' पृथ्वीने विज्ञानवादियोंपर तरस खाकर उन्हें अपनी गुप्त सचाइयोंका ज्ञान दे दिया। परन्तु

हैदराबाद आंदोलनके नेता स्वामी रामानन्द तीर्थ दिल्लीमें डा० केसकके साथ।

मनुष्यने विज्ञान शक्ति पाकर, पृथ्वी माता, मातृभूमिके प्रति कठोर दुर्व्यवहार किया। उसके खजानोंका अपने लाभके लिये लोभके कारण बेतहाशा दुर्व्यवहार किया। कइयों का तो विचार यह है कि पृथ्वी की उपजाऊ शक्तिके दुरुपयोग के कारण उसकी असीमित उत्पत्तिकी शक्ति कम होती जा रही है। यह मोह का चिन्ह है। यह दुरुपयोग ही जड़वाद है। यह पूजा नहीं। पृथ्वी-पूजा, पृथ्वीकी रचना शक्तिका सम्मान है, उसके मातृ-रूपके प्रति श्रद्धा है। यही पूजा आत्मिक पूजा है, आदर्श पूजा है।

यह आदर्शवादी लोग अपने ईश्वर और ब्रह्मके पूज्य स्थान भी, ऐ पृथ्वी, तेरी धूलसे बनाते हैं। तेरी निन्दा करके यह कृतघ्न लोग अपने महा उत्साह और आदर्शोंकी पूर्त्तिके लिये तुझे सेवामें लगाते हैं। तेरे बिना मन्दिर शिवालय और तीर्थ स्थान व ताज महलकी वास्तविकता ही कहां है? तेरे उत्पन्न किए रंगोंके बिना, कला और साहित्य क्या वास्तविकता रखते हैं? मनुष्यकी सब इच्छाओंके प्रकाश का साधन तू है। प्रकाशके बिना इच्छा शक्तिका कोई अस्तित्व नहीं, इसलिये तू ही मनुष्यके अस्तित्वकी दाता है तेरी ही पूजा न हो तो और किसकी हो?

मनुष्यने चांद तथा सितारोंको आदर्श की वस्तु समझा है। कवियोंने अपने ईश्वरीय सगीतोंके लिये इन्हींमें अपनी प्रेरणाका स्रोत पाया है और इन्हें आकाश की प्रेम-क्रीड़ा-बताया है महाराजाओं तथा मजदूरोंने, शाहजादों तथा किसानोंने, इनमें अपने भाग्य व दुर्भाग्यको देखा है। परन्तु इन्हें क्या पता कि वे अज्ञात रुपसे, हे पृथ्वी, तुझको ही यह श्रद्धांजलि चढ़ा रहे हैं। शताब्दियों पश्चात मनुष्यको विज्ञान द्वारा यह अनुभव हुआ कि चांद और सितारे भी तेरे ही समरुपी हैं केवल इनकी असीमित सुन्दरता तेरी सुन्दरताका सुदूर निर्शदन है। मनुष्यका दुर्भाग्य यह है कि उसकी सराहना-दृष्टि सूक्ष्मदर्शी नहीं, स्थूलदर्शी है। इसलिये उसने तुझको भूल कर चांद और सितारोंकी असीमित सुन्दरतामें तल्लीनता और भावुकता दिखायी है। परन्तु मन की इस मग्नता तथा भावुक नृत्यकी, हे पृथ्वी, तू ही अधिकारिणी है।

यदि किसीको तेरी महानताको मूर्त रूपमें देखना है तो हिमालयकी उत्तुङ्ग चोटियोंको देखे, इन महाबली अजेय पर्वतों को देखकर कौन सा मनुष्य हृदय है जो चुपचाप ही तेरे सम्मुख पूजाकी अवस्था में समाधिस्थ न हो जा सके? और आंखे खुलनेपर जो घुटनों के बलझुक कर तेरा चुम्बन न लेता हो?

———

कुछ मनोरंजक बातें

(एक फिल्मी पत्रकार)

शूटिंगके समय 'शाट लेनेमें जब किसी कलाकारका मूड' अनुकूल नहीं होता है, तो निर्देशकको बड़ी परेशानी होती है। परिस्थिति ठीक करनेमें उन्हें तरह तरहके तरीकोंका व्यवहार करना पड़ता है। एक-बार जब स्वर्गीय कलाकर सहगलका एक चित्रमें घबराया हुआ 'शाट' लेना था तो इसी तरहकी दिक्कत हुई। सहगल साहब अपनी मस्तीमें थे और निर्देशक साहबकी हुलिया 'ठीक नहीं' से तंग थी। घण्टों समय निकल गया, पर नतीजा कुछ नहीं निकला। लाचारीमें एक युक्ति निकली। सेट पर ही सहगल साहबका फोन आया कि उनकी पत्नी सीढ़ी परसे गिर कर सख्त घायल हो गयी है। फोन सुना और उन्होंने निर्देशकसे कहा—'जल्दी कीजिये, मेरे घर पर दुर्घटना हो गयी है'। निर्देशकने कहा—संवाद बोलिये। 'शाट' बिलकुल ठीक ठीक आया। सहगल साहबको बधाई और चाय मिली पर वे विचारे घर भागने को तैयार थे। मुश्किलसे कुछ देर ठहरे तो उन्हें कहा गया कि यह फोन जो अभी आपने सुना है यह भी एक अभिनय था, तब वे प्रकृतिस्थ हुए।

* * *

फिल्मोंमें सफल और स्वच्छन्द अभिनयके लिये भारतीय अभिनेता मोतीलालका बड़ा नाम है—जिसका दावा है कि उसके अभिनयके लिये कोई अनुकूल संवाद नहीं लिख सकता। प्रत्येक दृश्यमें निर्देशनकी प्रतीक्षा किये बिना वह अपनेको खपा देता है। एक बार एक चित्रमें निर्देशकने कहा कि आपके कपड़े कुछ फटे और धूल-धुसरित होने चाहिये। मोतीके कपड़े दूसरे क्षण फट गये और वह वहीं सड़क पर लोट पोट कर तैयार हो गया। लेकिन एक चित्रमें बड़ा मजा आया। तालाबमें कूदने का दृश्य था। निर्देशकने निर्देश किया और आपने बाजाप्ता तालाबमें कूदनेकी तैयारी की। कपड़े संभाले और अन्तिम आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। कैमरे वालोंको आर्डर मिला 'स्टार्ट' और मोती साहब पूरी तैयारीसे कूद पड़े। लेकिन तालाबमें मुश्किलसे एक हाथ पानी था। पूरी चोट लगी और आप झुंझला उठे। निर्देशकने स्थिति पर प्रकाश डाला तो आप बोले-मुझे क्या पता कि यह नकली तालाब है?

डा० कोटनीसमें जयश्री

* * *

फिल्म देखते समय जब दर्शकोंमें रसानुभूति होती है तो लोगों पर पूरा प्रभाव पड़ता है और दृश्य गत स्थितिके साथ वे हंसने या रोने तक लग जाते हैं। किन्तु कभी कभी इसका विचित्र प्रभाव भी पड़ता है। एक बार किसी सिनेमा हाउसमें 'गंगावतरण' चित्र चल रहा था। धार्मिक चित्र होनेकी वजह देहातके भी बहुत दर्शक उसे देखने आये और देख कर खुशी अनुभव करने लगे। जब गंगाकी धाराके प्रदर्शनका स्थल आया तो कुछ धोती संभाले कुर्सी पर खड़े होने लगे। पीछेके लोगोंको आश्चर्य हुआ कि यह क्या बात है और उन्होंने पूछा—ऐसा क्यों कर रहे हो? तो इन लोगोंने जवाब दिया—देखते नहीं—गंगाजी बढ़ी चली आरही हैं? खड़े नहीं होनेसे कपड़े नहीं भींग जायेंगे? बहुत समझाने बुझाने पर बात देहातियोंकी समझमें आयो।

जिन लोगोंने स्टूडियो नहीं देखा है उन्हें उसे और शूटिङ्ग देखनेकी उत्कट अभिलाषा रहती है। एक तरहका कौतूहल उनके दिमागमें चक्कर काटता है। एक सिने पत्रकारने एक बार अपने पांच-सात मित्रोंको आमंत्रित किया, एक स्टूडियोमें और उन्हें 'सेट' पर बैठा दिया। कार्य शुरू हुआ—प्रकाश फैला—साउण्ड वालेने स्वीकृति दी और लगातार तीन चार 'शाट' लेलिये गये। कामसे फर्सत पाकर जब पत्रकार महोदयने मित्रोंसे पूछा कि सबकुछ देख लिया न? तो मित्रगण बोले—देखा तो, लेकिन 'शूटिङ्ग' कब होगी? पत्रकारने समझाया यही 'शूटिङ्ग' है और यही काम यहां पर होता है।

* * *

अमर कलाकार सहगल अपनी लोकप्रियता और हाजिर जवाबीके लिये अपना अलग स्थान रखते थे। अपने अभिनय-कालमें तमाम प्रमुख निर्माताओंके यहां कार्य किया और उनके सम्पर्कमें आये। अपनेको श्रेष्ठ बताना फिल्म क्षेत्रमें उसी तरह आवश्यक है, जिस तरह पानमें जर्दा और श्री सहगलको भी इनलोगोंसे निपटना ही पड़ता। एक बार एक निर्माताने कहा—क्यों सहगल साहब, मैं तो श्रेष्ठ निर्माता हूं? आपने छूटते ही कहा—श्रेष्ठ क्यों? सर्वश्रेष्ठ कहिये सर्वश्रेष्ठ।

* * *

छमथना छरया

अमिनेत्रियोंका आकर्षण एवं उसकी कल्पना फिल्म संसारके लिये एक विचित्र चीज़ है, जिसका अक्सर लोग अतिरंजित चित्र अपने मस्तिष्कमें बना लेते हैं। रंगे पूते मेक-अप किये हुए चेहरे और कैमरोंकी सफाईमें गलत धारणा स्वाभाविक भी है। अमिनेत्री काननदेवीके लिये इसी तरहकी कल्पना करने वाले एक मित्रने स्टुडियोके एक कर्मचारीसे प्रार्थना की कि जैसे हो एक बार काननदेवीको दिखाईये। जब कर्मचारीने बताया कि वह उनके सामने ही बैठी है तो आप जैसे आसमान परसे जमीन पर आगये। बोले—क्या यही काननदेवी हैं ? मैंने तो कुछ और समझा था। कर्मचारी चाय पीनेके लिये बाहर निकल गया।

* * *

बम्बईके फिल्म क्षेत्रमें विभिन्न धोखा धड़ियोंमें जो एक विचित्र और विशेष धोखाधड़ी है—वह यह है कि नकली निर्देशक या गीतकार बन कर किसी प्रसिद्ध व्यक्तिके बदले-अपरिचित आदमी को ठगना और किसी तरह रुपया बनाना। इसी तरह एक बार निर्देशक सन्तोषी सज्जन बन कर एक किसी सेठ की गद्दीमें पधारे। अपने चित्रोंकी तारीफ की कुछ लोगोंकी शिकायत और घण्टों फिल्म क्षेत्रकी आलोचनाके बाद सिर्फ ५) रुपयेकी मांगकी। लोगोंने समझा—संभव है, सन्तोषजी बाजार निकले हैं-कुछ जरुरत पड़ गयी। रुपये देनेको तैयार थे कि एक सन्तोषीजीके मित्र पहुंचे। परिचयमें उन्हें इनका परिचय दिया गया तो वे चौंके और उन्होंने कहा कि मैं अभी अभी सन्तोषीजीको नीचे छोड़ कर आ रहा हूं। फिर तो नकली सन्तोषीजीकी हुलिया न पूछो।

———

(१३ वें पृष्ठका शेष)

की तुलनामें रूसके नारी समाजने अधिक उन्नति की है। रूसमें नारी और पुरुष के अधिकार सभी क्षेत्रोंमें समान रूपमें स्वीकार किये गये है। सम्भवत: यही उनकी उन्नतिका अन्यतम कारण है। रूसमें पुरुषकी तरह नारी भी सोचती है कि देशकी शासन व्यवस्थाके सञ्चालनमें उसका भी आंशिक दायित्व है।

क्रान्तिके पूर्व रूसमें स्वेच्छाचारी जारशाहीमें नारीको किसी तरहकी स्वाधीनता नहीं थी। वे केवल विलास-वासना की सामग्री समझीं जाती थीं। देशमें अन्याय और नौकरशाहीका बोलवाला था। लेकिन रूसमें क्रान्तिके बाद जो पंचायती शासन व्यवस्था प्रचलित हुई उसमें नारीको पूर्णरूपेण उसके अधिकार प्राप्त हुए। रूसी नारीने प्रमाणित किया है कि वह किसी भी क्षेत्रमें पुरुषसे कम नहीं है। गत रूस-जर्मन महायुद्धमें रूसी नारीने जिस गौरवमय इतिहासकी रचना की है वह सभी देशोंकी नारियोंके लिये अनुकरणीय है।

हमारे देशमें भी आज सभी नारीकी शिक्षा और उन्नति की बातें सोच रहे हैं। समाज और राष्ट्रके गठनमें नारीके सहयोग सहायताकी एकान्त आवश्यकता है, आज यह सभी अनुभव कर रहे हैं। इधर भारतीय नारीने भी विश्व सभामें अपनी प्रतिभाका चमत्कार दिखाया है। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित और श्रीमती सरोजिनी नायडू प्रमुख नेत्रियोंने भारतीय नारी समाजका उज्ज्वल आदर्श स्थापित किया है।

उपयुक्त सुयोग और शिक्षा प्राप्त करने पर भारतीय नारी भी एक दिन संसारके अन्यान्य देशोंकी नारियोंकी भांति अपनी योग्यता दिखा सकेगी इसमें सन्देह नहीं है। दो सौ वर्षों की लम्बी अवधिके बाद भारत स्वाधीन हुआ है। आशा है कि सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रोंकी प्रगतिके साथ साथ भारतीय नारी सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रोंमें अपना अधिकार प्राप्त करेगी। हमारे विचारसे दूसरे रचनात्मक कार्यों की भांति यह भी राष्ट्रकी भलाईका कार्य है।

एटम बम

—**—

अब तक संसारका "रहस्य" कैसे रह सका !

द्वितीय महायुद्धकी सबसे महान् निधि क्या है ? निश्चित है कि आप कहेंगे-'एटम बम' किन्तु 'एटम बम' का आविष्कार उतना कठिन कार्य न था जितना कि इस आविष्कारके सम्बन्धकी बातोंको गुप्त रखना !

'एटम बम' को गोपनीय रखने के लिये एक दल तैयार किया गया। 'दिक्रीप्स' इसका नाम पड़ा। गुप्त रूपसे इस दलमें सैकड़ों युवक और युवतियां भर्ती किये गये। अधिकतर इसमें वही लोग लिये गये जो कानून विभागमें या गुप्तचर विभागमें कार्य करते थे।

'क्रीप्स' और अन्य कार्यकर्ता एक विशेष सांकेतिक भाषाका प्रयोग किया करते थे जिसमें भी समय २ पर परिवर्तन कर दिया जाता था। दलके गुप्तचर उन तमाम ठेकेदारों और कम्पनियोंके नौकरों को जांचते रहते थे जो इस 'अनुसन्धान' से किसी प्रकार भी संबन्धित थे बम वर्षक विमानों और धुरी राष्ट्रके गुप्तचरों से बचनेके लिये 'अनुसन्धान' कई भागों में विभक्त कर कई शहरोंमें बांट दिया गया था।

'अनुसन्धान' से सम्बन्धित किसी कागज पत्रके गुम होते ही तहलका मच जाता था चाहे सप्ताह लगे या महीना कागज मिलना ही चाहिये। प्रत्येक रात्रि को बिखरे हुए कागजात इकट्ठे कर दिये जाते थे। कहीं कोई रद्दी कागज भी नहीं फेंका जाता था। मेजोंकी हर दराज को अच्छी तरह जांचकर ताला लगा दिया जाता था। कभी २ प्रेसीडेंट रूजवेल्ट को लिखित रिपोर्ट भेज दी जाती थी किन्तु उन्हें युद्ध मन्त्री खुद ले जाया करते थे और अपने सामने ही पढ़वा कर वापस ले आते थे।

एक बार कुछ कार्यकर्ताओंपर अणु का प्रभाव पड़ा जिन्होंने अपने डाक्टरों से राय लेली। 'क्रीप्स'के सदस्योंने प्रत्येक डाक्टरके यहां जाकर उनसे गोपनीयता की शपथ खिलवायी।

पूरे 'अनुसन्धान' में छः लाख व्यक्तियोंने कार्य किया और प्रत्येकने गोपनीयताके शपथ पत्र पर हस्ताक्षर किये। ४ वर्षमें २००० कानूनी व्यक्ति पकड़े गये।

वैज्ञानिकों की समस्या सबसे अधिक गम्भीर थी। अगर जर्मन जान पाते कि अमेरिकाके उच्च वैज्ञानिक कहां हैं तो उन्हें परिणाम निकालनेमें देर न लगती इसलिये प्रत्येक वैज्ञानिकके नाम बदल दिये गये और उनके साथ अङ्ग रक्षक रहने लगे। यह लोग सावधान रहा करते थे किन्तु एक वैज्ञानिकने एक भाषणके सिलसिलेमें कुछ रहस्य खोल दिया, तथा दूसरे ने तो आवश्यक कागजातोंसे भरा हुआ एक सूटकेस ट्रेनके डब्बेमें छोड़ दिया, छः गुप्तचरोंने सारी रात अथक परिश्रम कर उसे ज्यों का त्यों खोज निकाला। वैज्ञानिकों का भी विश्वास न किया जाता था। इनके पीछे भी गुप्तचर लगा दिये जाते थे।

'एटम बम' के रहस्योंका पता लगाने की चेष्टामें तमाम 'गुप्तचर' पकड़ लिये गये। नाजियोंने इस रहस्यके उद्घाटनके लिये आकाश पताल एक कर दिया किन्तु वे असफल रहे।

अमेरिकामें अब भी 'स्टोनिक इनर्जी कमीशन' के कार्यालयके रद्दी कागज जला दिये जाते हैं। 'क्रीप्स' अब भी मुस्तैद है। संसारका हर राष्ट्र 'एटम बम' को बनानेकी विधि मालूम करनेके लिये सचेष्ट है किन्तु अमेरिका भी इस रहस्य को बिल्लीकी तरह दबोचे हुये हैं।

*　　*　　*

दिल्लीमें शरणार्थी महिलायें तांगा चला कर जीविका निर्वाह कर रही हैं। उनकी रायमें भिक्षाटनसे यह पेशा अधिक मान्य है।

*　　*　　*

ब्रिटिश राजकुमारी एलिजाबेथको विवाहोपलक्षमें शाही परिवारके सदस्योंसे प्राप्त उपहार

पदार्थ विज्ञानपर इस वर्ष नोवुल पुरस्कार प्राप्त करनेवाले ब्रिटिश वैज्ञानिक
सर एडवर्ड एप्लीटन

कलकत्तेमें पंडित नेहरूका स्वागत करनेके लिये दस लाख जनताकी विशाल भीड़ इकट्ठी हुई। पं० नेहरूने भी स्वीकार किया कि इतनी बड़ी भीड़ उन्होंने जीवन में प्रथम बार देखी। ४०० पुरुष, महिलायें और बच्चे भीड़में कुचले गये।

* * *

करांचीमें मुस्लिम लीग कौंसिलकी बैठकमें मि० जिन्नाने इंगलिशमें भाषण किया जिसका सरदार अब्दुर रबनिश्तरने अनुवाद किया।

मि० जिन्ना पाकिस्तानके प्रधान स्वयंसेवक बनाये गये हैं।

* * *

ढाका यूनिवर्सिटीकी कौंसिलने विश्वविद्यालय को रमजान और ईदके उपलक्षमें ३५ दिन तक बन्द रखनेका निश्चय किया है।

* * *

दिल्लीमें भयङ्कर ठंड पड़ रही है लोग ठिठुरे जा रहे हैं। विश्ववंद्य महात्मा गांधी पर इसका कोई असर नहीं पड़ता उनकी लंगोटी और चादर उनके लिये काफी है। जब दिल्ली वाले ऊनी कम्बलों और रजाइयोंमें घुसे रहते हैं, बापू प्रातः ४ बजेसे कार्यमें व्यस्त हो जाते हैं-धन्य हो बापू!

* * *

पाकिस्तान आगामी १ अप्रैल १६४८ से अपने नोट और सिक्के चलायगा। भारतीय सिक्के और नोट क्रमशः पाकिस्तानसे लौटा लिये जायंगे।

* * *

कोडाइकनालकी आवजर्वेटरीसे पुच्छलदार तारा दिखायी पड़ा।

रेडियो द्वारा बच्चोंकी शिक्षा

शिकागो विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रावर्ट हचिंसके अनुसार दो एटम बम अगर एक साथ गिरा दिये जायं तो सारा अमेरिका बसने योग्य न रह जाय। तथा इन बमों पर पहले गिराये गये बमोंसे हजारगुना कम खर्च बैठेगा।

* * *

बनारसके जिन छात्रोंको पोस्ट ग्रेजुयेटकी परीक्षामें सफल होने पर डिग्रियां मिली हैं उनमें एक छात्र रिक्शा चलाता था। गरीब होनेके कारण मेट्रिकुलेशनके बादकी पढ़ाई जारी रखनेमें अपनेको असमर्थ पाकर उसने रातको रिक्शा चलाना प्रारम्भ किया और ६ साल तक नित्य तीन रुपये कमाकर उससे पढ़ायी जारी रखी।

* * *

मास्कोमें १२५ पाउंडका एक तरबूज पैदा किया गया है— (सुननेमें आया है कि भारतमें इससे भी बड़े तरबूज उप-

"भारतीय नारी मात्र को मेरा यह परामर्श है कि वे अपने मामूली उपचार के लिए डेट्टल पर निर्भर करें। यह विष से सर्वथा रहित एवं प्रतिक्रिया हीन है - बच्चा भी इस्तेमाल कर सकता है। क्या आप अपने घर में डेट्टल हमेशा तैयार रखने की सीख मानेंगे।"

'DETTOL'

TRADE MARK

डेट्टल आधुनिक एन्टिसेप्टिक

एटलान्टिस इस्ट लि०, चेतला रोड, कलकत्ता।

यह अवश्य

गुणकारी है

A LITTLE'S ORIENTAL BALM PRODUCT

सभी चर्मरोगों के लिये

लिटिल्स ओरियण्टल बाम का

एक उत्पादन

'लालशर' तो मेरे लिये अमृत है!

लाल-शर

(लाल शरबत)

बच्चों को मोटा ताजा स्वस्थ और प्रसन्नचित रखने की प्रसिद्ध पेटेंट दवा

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि० कलकत्ता

सम्पादक—देवव्रतमिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलस्ट्रेटेड गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

सचित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

पश्चिमी बंगालके गवर्नर श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आपकी वर्षगांठ १० दिसम्बरसे १६ दिसम्बर तक मद्रासमें ससमारोह मनानेका आयोजन किया जा रहा है।

यह पाकिस्तान है !

लाहौरमें शुद्ध दूधकी तो बातही क्या मिलावट वाला दूध भी दुर्लभ हो गया है। लोग स्वास्थ्य तथा कार्पोरेशन विभागके कर्मचारियोंकी अकर्मण्यतासे तंग आकर उनभूतपूर्व हिन्दू अधिकारियोंकी याद कर रहे हैं जिन्होंने मिलावट वाले दूध तथा अन्य वस्तुओंके विक्रयको बंद करने में सफलता प्राप्त की थी। साथही पाकिस्तानके टाइम्स नामक पत्रिकासे ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तानकी शाही टकसाल के उच्च अधिकारी मजदूरोंसे अपने घरेलू काम ले रहे हैं और सरकारी सामानको निजी व्यवहारमें ला रहे हैं। पक्षपातका बाजार गर्म है। इसके अलावा डाक विभागकी अव्यवस्थाके एक उदाहरणमें बतलाया गया है कि लाहौरसे गुजरानवाला पहुंचनेमें हवाई डाक द्वारा एक पत्रको १ महीना और दो दिन लगे थे।

वर्ष—३० संख्या—४६ ता० १० दिसम्बर १९४७ DECEMBER 10, 1947. मूल्य=)

गीत,

मुक्त मां ने नयन खोले !

'१'

खुल गया प्राची क्षितिज का
अमल- ज्योतित- द्वार सुखकर !
झांकता निकला तिमिर से
सुख- विभा का बाल दिनकर !
धुल गई कालिख गगन की
हो उठीं रंजित दिशाएं !
मान भरने को चलीं,
सज स्वर्ण बिखराती उषाएं !
वाद्य-स्वर बन पक्षियों का सौम्य कलरव गान गूंजा
मंदिरों के देवता जड़, मुसकुरा कर आज बोले !
मुक्त मां ने नयन खोले !

२

स्वर्ण कर से धो प्रभा-हत
हिम मुकुट अपना संवारा !
कनक— रत्नों से अलंकृत
हरित नव अंचल निहारा !
कंठ हीरक हार झिलमिल
हस्त जगमग स्वर्ण कंकण !
हो उठा निर्बन्ध लखकर,
पुलक स्पन्दित हृदय क्षण क्षण ;
हंस पड़े मृदु अधर अरुणिम, हंस पड़ी मुख श्री नवीना,
वंदिनी के रुदन के स्वर, वेदना बन आज बोले ॥
मुक्त मां ने नयन खोले ॥

गंगाप्रसाद श्रीवास्तव 'नलिन'

—o—

अपरिचित देश

—:*:—

संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी!

(१)

जाल फैला, देखता कोई कहीं है गुप्त होकर!
थक जो जाता, उलझ वह छट पटाता जिन्दगी भर!
मार्ग का प्यासा बटोही भी यहां पानी न मांगे,
एक छोटी भूल भी आफत लिये आती यहां पर!
'क्षणिक यह जीवन'-अगर यह सत्य कोई भूल जाये!
भटक कर इस घोर बन में वह सदा ही छट पटाये!
बस उसे रह जायगा निज 'आह' का धन शेष साथी!
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी!

(२)

देखलो, कितने यहां पर आंसुओंके गीत गाते!
निज हृदयकी आगको वह डालकर इंधन बढ़ाते!
जी रहे कितने लहूका घूंट पीकर लोग साथी!
पी रहे दिलकी कसकको, फूल जीवनका चढ़ाते!
वेदना को जानते, मिलते मगर उसके गले से!
बोलती रह-रह व्यथाएं किसी खोये दिल-जले से!
है नहीं कोई यहां, जो दे सके उपदेश साथी!
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी!

(३)

हृदयकी ज्वाला धधक, आकाश छूती हर घड़ी है!
चिताएं जलतीं, कईका नाश होता हर घड़ी है!
उस गलीसे उठ रही है मर्सिया की तान साथी!
कौन बैठा है वहां पर आज हो म्रियमाण साथी!
सुलगता तन-मन प्रतिक्षण, उठ रहा धुंआं वहां पर!
किन्तु ज्वालाको छिपानेको सभी आकुल वहां पर!
फूंक कर घर देखते सब, मूक सब का वेश साथी!
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी!

(४)

चल रहा जादू, बढ़ाना पैर आगे को संभलकर!
लोग पल-पल फस रहे हैं, छूटना दुस्तर यहां पर!
'यह अजब जादूगरी है'-बात लो यह जान साथी!
एक पगका डगमगाना कैद कर देगा यहां पर!
जिन्दगीकी राह लम्बी तय करोगे किस तरह फिर!
हाय, बन्दी बन बजाना जिन्दगी भर हथकड़ी फिर!
मुक्ति कौन दिलायेगा, यह तो निरा पर देश साथी!
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी!

(५)

पगों में छाले पड़ेंगे, कंटकों से पूर्ण मग है!
पंख पाकर भी न जाने छट पटाता क्यों विहग है!
सेज शूली पर बिछा, देखे पिया की राह कोई,
तुम न जाना उस गली में, वंचना से पूर्ण जग है!
देखना तो, बुझ न जाये प्रेम का दीपक तुम्हारा!
मुक्त होकर तुम चले, रोके यहां फिर कौन कारा!
तुम न पाओगे यहां सुखका तनिक लव लेश साथी!
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी!

— 'शक्र'

परहित बस जिनके मन माही।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

भारतकी वैदेशिक नीति

आजकी दुनियामें यह समझना बड़ा कठिन है कि किस देशकी वैदेशिक नीति क्या है और कल क्या होगी। साधारण राष्ट्रोंकी तो बात ही नहीं है महा शक्तियोंके सम्बन्धमें, जो प्रत्यक्ष और प्रकारान्तर दोनों प्रकार, संसारकी वैदेशिक नीतिको प्रभावित कर रही हैं—निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि अमुक महान राष्ट्र वैदेशिक मामलेमें किस दिशामें जा रहा है। अपनी सीमाओंके अन्दर घिरे हुए भारतने, गत एक वर्षके भीतर अपनी वैदेशिक नीतिका संपादन जिस योग्यता और दूरदर्शिताके साथ किया है, उससे अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंचमें हमारा मान और गौरव बढ़ा है। उस दिन जवाहर लाल नेहरूने भारतीय पार्लमेण्टमें वैदेशिक नीति पर हुई बहसके उत्तरमें आजके महान राष्ट्रोंकी वैदेशिक नीतिका चित्रण सुन्दर शब्दोंमें करते हुए भारतकी वैदेशिक नीतिकी सुन्दर विवेचना की है। पण्डितजीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि "जहां तक शक्ति और सम्भव होगा भारत किसी युद्धमें भाग न लेगा, पर यदि वह अपनेको युद्धसे अलग न रख सकेगा तो समय आनेपर वह इस बातपर विचार करेगा कि किस पक्षका साथ देना उसके लिये हितकर है।"

भारत सदा सर्वदासे शान्तिप्रिय रहा है। उसकी सभ्यता और संस्कृतिका विकास भौतिकवादपर नहीं अध्यात्मवादकी नींवपर हुआ है। युद्धवाद और सैनिकवाद उसका कभी आदर्श नहीं रहा। आज भी उसके इस आदर्शमें जरा भी मौलिक अन्तर नहीं आया। वह सबके साथ सहयोग करके रहना और चलना चाहता है। इसीसे नेहरूजी कहते हैं कि हम अमेरिकाके साथ सहयोग रखना चाहते हैं। वैसे ही हम सोवियट रूसके साथ भी सम्पूर्ण सहयोग रखना चाहते हैं। यही कारण ह कि भारत संयुक्तराष्ट्र संघके किसी गुटका अन्ध समर्थक नहीं है। इस समय जितने अन्तर्राष्ट्रीय गुट हैं भारत सबसे अलग है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह सबसे तटस्थ है। भारत स्वयं एक महान राष्ट्र है, संसारके भावी स्वरूप सुख, शान्तिके सम्बन्धमें उसके अपने आदर्श और सिद्धान्त हैं। उन आदर्शों और सिद्धान्तोंमें सहायक राष्ट्रोंके साथ प्रसन्नता पूर्वक भारत सहयोग करेगा। इस सहयोगको सुन्दर और सुदृढ़ बनानेमें सहायक वैदेशिक नीतिका निर्माण और विकास करना हमारी सरकारका लक्ष्य होना चाहिये और है। पर पंडितजीका यह कहना यथार्थ है कि किसी देशकी वैदेशिक नीति उसकी अर्थ नीति पर अवलम्बित होती है। जबतक यह निश्चित नहीं कि भारतकी अर्थ नीतिके ढांचेका अन्तिम स्वरूप क्या होगा तबतक उसकी वैदेशिक नीति कोई निर्दिष्ट पथ ग्रहण नहीं कर सकती। अतः यह नितान्त आवश्यक है कि पहले हमारी अर्थ नीतिका आधार स्थिर हो जाये। आज संसारमें जितने झगड़े हो रहे हैं सब इसी अर्थ-नीतिके चलते। प्रत्येक महान राष्ट्र, अमेरिका, रूस और ब्रिटेन, अपनी अर्थनीति संसार पर लादना चाहता है। यही कारण है कि शान्ति और व्यवस्थाका राग अलापते हुए भी वैदेशिक मामलेमें ये तीनों महान बराबर एक दूसरेके खिलाफ पैंतड़ेबाजी करते दिखायी पड़ते हैं। अतः केवल शान्ति और स्वतन्त्रताकी बात निरर्थक है जब तक संसारका प्रत्येक देश अपनी अर्थनीति पहले अपने ऐश्वर्य और प्राधान्यको दृष्टिगत रख कर स्थिर करता रहेगा।

इसमें सन्देह नहीं है कि किसी सरकार की वैदेशिक नीतिका अन्तिम लक्ष्य अपने देशका हित साधन करना होता है। हम कितना ही अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, शांति और स्वतन्त्रताकी चर्चा करें, यह मानना ही पड़ेगा कि सरकार अपने देशके हितको दृष्टिमें रखकर काम करती है। किसी देशका चाहे वह, साम्राज्यवादी अथवा सोशलिस्ट अथवा कम्यूनिष्ट हो पर-राष्ट्र सचिव मुख्यतया अपने देशके हितकी बात ही करता है। लेकिन अन्य परिणामों और परिस्थितियोंकी उपेक्षा करके केवल अपने देशके स्वार्थोंकी चिन्ता करना भिन्न बात है। भारत इस आदर्शको मानता है कि केवल अपना हित देखने ही से शांति नहीं हो सकती। अपना हित देखते समय दूसरेके हित और असुविधा का भी ध्यान रखना चाहिये। इसीलिये पण्डित जवाहरलाल कहते हैं कि हमारी वैदेशिक नीति होगी 'विश्व सहयोग और विश्व शांतिकी रक्षाके प्रसंगको सामने रखकर भारतके हितको देखना।" पण्डित नेहरूके नेतृत्वमें जबसे भारतका वैदेशिक विभाग आया है अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें इसी सिद्धान्तका पालन किया जा रहा है और यही कारण है कि अपेक्षाकृत स्वल्प समय में ही उसने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसने कभी इस बातकी परवाह नहीं की कि उसके इस कार्यसे अमुक गुट प्रसन्न होगा या अप्रसन्न। भविष्यमें भी भारतकी यही नीति रहेगी, यह आश्वासन पण्डित जवाहरलाल नेहरूने दिया है।

आजाद या जल्लाद

काश्मीरके राष्ट्रवादी नेता शेख अब्दुल्ला और बख्शी गुलाम महम्मदने भारत सरकारके साथ मिलकर जिस बहादुरी और दूरदर्शिताके साथ पाकिस्तानकी चालोंको व्यर्थ कर अपनी प्यारी मातृभूमिको खंखार जालिमोंके पंजेके भीतर पड़ने से बचाया है, काश्मीरके नरनारी, उसे सदा कृतज्ञताके साथ स्मरण करेंगे। अभी उस दिन बख्शी गुलाम महम्मदकी इस वीर गर्जनाका भारतीय मात्रने हृदयसे

स्वागत किया है कि "काश्मीरके भाग्यका फैसला हम तलवारके जोरसे करनेके लिये कृत संकल्प हैं।" पाकिस्तानी अंचल और उसके संरक्षणमें संगठित आजाद नामसे जल्लाद काश्मीर सरकार, काश्मीरके इन जन-नेताओंके नेतृत्वमें काश्मीरके जन-प्रतिरोधको देखकर दंग रह गयी और तलवारका जवाब तलवारसे पाकर इनके होश फाख्ते हो गये। अब यह धूर्त मण्डली फिर धूर्तता और मक्कारीकी शरण लेकर अपनी स्थिति संभालनेके लिये फरेबी चालें चल रही हैं। बेहयाईकी भी एक हद होती है। जिस पाकिस्तान सरकारने काश्मीर-पर आक्रमणकी योजना प्रस्तुत की, आक्र-मणके लिये तमाम आवश्यक और उपयोगी युद्ध साधनोंकी व्यवस्था की वही आज पंच बनकर समझौता करानेकी बात कहती है। यह पंचायत कैसी और किसके बीच? लुटेरों और जल्लादोंके गरोहोंको यदि सर-कारकी संज्ञा दी जाने लगे तो संसारमें फिर जनता द्वारा प्रतिष्ठित सरकारें कहां जायें। लाहोरमें पाकिस्तानी नेता इस समय फिर वही पुराना नाटक नये रूपमें रच रहे हैं। कांग्रेसके साथ समझौतेकी बातचीत करके तिलसे ताल बननेवाली लीग जानती है कि ये समझौते और पंचायतें क्या से क्या कर सकती हैं। वह जानती है कि अगर इन चालोंसे एक कौमको दो कौम बनाया जा सकता है, एक देशके दो टुकड़े कर दिये जा सकते हैं और उन टुकड़ोंमें भी निजाम हैदराबादकी तरह स्वतन्त्र राज्य स्थापनाके लिये तिकड़म रचानेकी स्थिति पैदा की जा सकती है तो आजकी लुटेरों और खूनियोंकी सरकार-को कल बाकायदा काश्मीरकी सरकार भी बनाया जा सकता है बशर्ते कि उसका पांसा सीधा पड़ जाये। जुआड़ीको जो दांव एकबार रवां हो जाता है भले ही उसका उसी दांवसे सर्वनाश क्यों न हो वह अपने रवां दांवको शायद ही मुश्किलसे कभी छोड़ता हो। काश्मीरकी हारका बदला निकालनेके लिये पाकिस्तान सरकार आज फिर पुराना दांव चलाने जा रही है। लाहौरमें इस समय पश्चिमी पाकिस्तानी प्रांतोंके प्रधान मंत्री पाकि-स्तानके प्रीमियर मियां लियाकत अली खांके साथ बातचीत कर रहे हैं। आजाद काश्मीर सरकार नामधारी लुटेरी सरकार के प्रतिनिधि भी इस बातचीतमें भाग ले रहे हैं। यह सब उस नाटककी तैयारीकी भूमिका है जो लाहौरमें पाकिस्तान और भारत सरकारके बीचमें आपसी समझौते की बातचीतके प्रसंगमें खेला जाने वाला है। पाकिस्तान सरकारको पंच मानकर यदि भारत सरकारके प्रतिनिधि काश्मीर के मामलेमें तथाकथित आजाद सरकारके साथ किसी तरह की बातचीतमें प्रविष्ट हुए तो फिर वही गलती दुहराई जायेगी जो एक बार मुस्लिम लीगके सम्बन्धमें की जा चुकी है। यह नाटक काश्मीरके जन नेता शेख अब्दुल्ला और बख्शी गुलाम महम्मदके प्रभावको घटाने और काश्मीर के लीगी गुण्डोंको प्रमुखता देनेके इरादेसे अभिनीत करनेका उपक्रम किया जा रहा है। हम आशा करते हैं कि हमारी सरकारके प्रतिनिधि जानबूझ कर इस बिछाये गये जाल पर पैर रखनेसे इनकार करेंगे और काश्मीरके मामलेमें पाकिस्तान सरकार और उनके गुर्गोंसे बातचीत करना कदापि स्वीकार न करेंगे।

बर्मामें अराजकता—

यह दुर्भाग्यकी बात है कि बर्मा धीरे धीरे पूर्ण स्वतन्त्रताके जितना अधिक निकट होता जा रहा है देशमें उतनी अरा-जकता बढ़ती जा रही है। ब्रिटिश सरकार घोषणा कर चुकी है कि ४ जनवरीको बर्माको पूर्ण अधिकार हस्तान्तरित कर दिये जायेंगे। बर्माको स्वतन्त्रता प्रदान करनेवाला बिल ब्रिटिश पार्लमेंटकी कामन और लार्ड, दोनों सभाओंसे पास हो चुका है। सम्राटके दस्तखत हो जाते ही बिल कानूनका रूप ले लेगा। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलसे बाहर बर्माका भावी विधान बनकर तैयार हो गया है। इसके अनुसार बर्मा जनवादी प्रजातन्त्र संघ राज्य होगा जिसमें बिना किसी धर्म, जातिया सम्प्र-दायके भेदभावके बर्माके नागरिक समान अधिकार उपभोग करेंगे। इतने स्वल्प समयमें बर्मा इस स्थितिमें पहुंच सका इसका श्रेय बर्माके कत्ल कर दिये गये जननेता जेनरल आंगसानको है? खेदकी बात है कि इतना बड़ा बलिदान हो जानेके बाद भी अभी तक बर्मा अराजकतासे मुक्त नहीं हुआ। बर्माके कम्यूनिस्ट बर्माके पूर्ण स्वतन्त्र होनेके समय देशमें जो अराजकताकी सृष्टि कर रहे हैं, यह निन्दनीय है। समाचार आया है कि तीन जिलोंमें कम्यूनिस्टोंने प्रतिद्वन्द्वी सरकारकी स्थापना की है। बर्मा हमारा पड़ोसी है। इस संकटमें उसके साथ हमारी पूरी सहानुभूति है। बर्माके साथ हम अपनी मैत्री मजबूत करना चाहते हैं। इसी समय बर्मासे एकशिष्टमण्डलप्रधानमंत्री थाकिननूके साथ यहां आया है जो हमारे प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूका इस समय दिल्लीमें अतिथि बना हुआ है। एशियाई देशोंके साथ हमारी सहानुभूति और दिल-चस्पी स्वाभाविक है। हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि हमारी तरह बर्मा भी केवल हमारे ही साथ नहीं अन्य एशियाई देशोंके साथ भी घनिष्ट सम्पर्क रखना चाहता है। दिल्लीमें भारत और बर्माके प्रधान मन्त्रियों के बीचमें जो वार्तालाप हो रहा है, हमें आशा है कि उसके फलस्वरूप हम दोनों मिलकर आम एशियाई देशोंके सहयोगसे एक ऐसी नीति निर्धारित कर सकनेमें सफल होंगे जो जिसके परिणाम स्वरूप केवल बर्मा और भारतको ही नहीं सम्पूर्ण एशियाको स्वार्थी विदेशियों द्वारा फलायी गयी अरा-जकतासे पूर्णतया मुक्तकर सकेंगे।

नियन्त्रण हटेगा?—

खाद्यपदार्थ नीति निर्धारण कमेटीकी बहुमत समर्थित सिफारिशें और भारत सरकारके खाद्य सचिव डा० राजेन्द्र प्रसाद ने गत सप्ताह बम्बईमें एक प्रेस सम्मेलन में नियन्त्रण हटानेके सम्बन्धमें जो वक्तव्य दिया है उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि ८ या १० दिसम्बरको भारत सर-

कार नियंत्रण हटानेके पक्षमें अपना अन्तिम फैसला दे देगी। चीनीपरसे नियंत्रण हटानेकी सरकारी घोषणा होते ही चीनीके दाम जितना बढ़ गये हैं उसीसे यह सहज अनुमान किया जा सकता है कि खाद्य पदार्थों और वस्त्र परसे नियंत्रण हटते ही लोगोंका रहन सहन १०० से दो सौ प्रतिशत अधिक महंगा हो जायेगा। सम्भवतः इसी बातको लक्ष्यमें रखकर डा० राजेन्द्र प्रसादने यह कहा है कि सरकारी कर्मचारियों और औद्योगिक तथा व्यवसायिक श्रमजीवियोंको अतिरिक्त महंगाई भत्ता देनेकी सिफारिशके प्रश्न पर सरकार विचार कर रही है। अतीत का अनुभव हमारे सामने है। जीवनके लिये आवश्यक एवं उपयोगी वस्तुओंके मूल्यमें जितनी वृद्धि हुई है साधारण, सरकारी और व्यावसायिक श्रमजीवियोंके पारिश्रमिकमें उस अनुपातसे बहुत कम वृद्धि हुई। फलतः सम्पूर्ण युद्धकाल और युद्ध समाप्तिके बाद अबतक श्रमजीवी मात्रको साधारणतया अधभूखा और अधनंगा ही समय काटना पड़ा ह। स्वतंत्र भारतकी हमारी राष्ट्रीय सरकारको आज इस प्रश्नपर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये। नेहरू राज्यमें भी यदि साधारण श्रमजीवी जीवनके लिये आवश्यक वस्तुएं न प्राप्त कर सके तो इसकी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया कहां तक हो सकती है, यह सहज ही समझा जा सकता है।

श्रमिकोंको आश्वासन—

गरीब जनताके रहन सहनके स्तरको ऊपर उठानेके प्रश्नको ही सर्वोपरि रख कर कांग्रेसनें सर्वाधिक लोक प्रियता प्राप्त की। आज स्वतंत्रता प्राप्त कर लेनेके बाद कांग्रेस सरकारका सर्व प्रथम यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने अबतकके किये वादोंको पूरा करनेकी दिशामें कदम बढ़ाये और दरिद्रता एवं कष्टोंके भारसे पिसे जाते श्रमजीवियों और किसानोंको शोषण एवं उत्पीड़नके चंगुलसे मुक्त करके वास्तविक अर्थोंमें जनताका राज्य स्थापित करे। हर्षकी बात है कि कांग्रेस अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसादने उस दिन बम्बईमें हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघकी एक सभामें हिन्दुस्तानके तमाम श्रमजीवियोंको इस बातका आश्वासन दिया है कि भारत सरकार असंख्य श्रमिकोंके प्रति अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वको पूर्णतया पहचानती है। उनकी भलाई राज्यकी प्रथम चिन्ता है और भारत सरकार इस दिशामें सुविस्तृत योजना तैयार कर रही है। डा० राजेन्द्रप्रसादने श्रमिकोंसे भी यह आशा प्रकट की है कि देशके भविष्यके निर्माणमें खास कर आजके जैसे नाजुक समयमें, उनको देशके औद्योगिक उत्पादनको चोटी पर पहुंचा कर परम महत्वपूर्ण हिस्सा बटाना है। हमें विश्वास है कि सरकार श्रमिकोंको अपने कर्त्तव्य पालनमें रंच मात्र पीछे नहीं देखेगी बशर्ते कि वह उद्योगपतियोंको भी आजके नाजुक समयमें उनका कर्त्तव्य महसूस करा सके।

बंग विशेषाधिकार बिल—

पश्चिम बङ्गाल असेम्बलीमें प्रस्तावित विशेषाधिकार बिलमें सरकारी कर्मचारियों एवं पुलिस अफसरोंको विशेष अधिकार देनेका प्रस्ताव किया गया है। इस बिलके पक्ष और विपक्षमें काफी चर्चा हो रही है। कोई इसे नागरिक स्वाधीनताके लिये घातक और कोई समयोपयोगी बता रहे हैं। कुछ वाम पंथी राजनीतिक दलोंने इस बिलके विरोधमें काफी आंदोलन मचा रखा है। पश्चिम बङ्गालके प्रधान मन्त्री डाक्टर प्रफुल्ल घोषने बिलके विरोधियोंको उत्तर एवं जनताको आश्वासन देते हुए साफ कहा है कि निम्नलिखित चार गंभीर विषयोंके सिवा इस बिलका प्रयोग नहीं किया जायगा। वे चार विषय ये हैं—साम्प्रदायिकताका दमन, गैर कानूनी हथियार, तोड़-फोड़, चोरीसे सीमा पर जाने वाले सामान और गुण्डईको रोकना। प्रधान मन्त्री डाक्टर घोष कांग्रेसके तपे-तपाये नेता और जनताके अपने हैं इसलिये वे कोई काम ऐसा करेंगे जो उसके ही विरुद्ध हो, यह असम्भव है। हम उनके आश्वासन पर विश्वास करते हैं। लेकिन साथ ही पश्चिमी बङ्गाल सरकार और डा० घोषसे यह कह देना चाहते हैं कि प्रस्तावित बिल का आशय कितना भी पवित्र क्यों न हो उसकी भाषा इतनी उलझन भरी है कि उससे भ्रम होना स्वाभाविक है। बिलके पढ़नेसे पता चलता है कि कोई भी सरकारी अफसर किसी भी व्यक्तिको 'खतरनाक' कहकर गिरफ्तार कर सकता है। वह खतरनाक है भी या नहीं इसके प्रमाणकी भी आवश्यकता नहीं। उसका इरादा खतरनाक काम करनेका है--बिलके अनुसार इतना कहना ही काफी होगा। इस सिलसिलेमें हम इतना ही कहना चाहते हैं कि जनमतको परखकर ही हमारी सरकारोंको कानून बनाने चाहिये। यह तो अंग्रेजी राज्यकी परम्परा थी कि जनता चिल्लाती ही रह जाती थी कानून बन जाते थे। कांग्रेस सरकारोंको कानूनके जरिये 'विशेषाधिकार' प्राप्त करनेकी आवश्यकता ही नहीं है जब उनके पास जनता द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकार मौजूद है।

फिलस्तीनका बटवारा

संयुक्त राष्ट्र संघने पर्याप्त बहुमतसे अरब और यहूदी दो राज्योंमें फिलस्तीनके विभाजनका फैसला कर दिया है। किन्तु इस फैसलाके हो जानेसे ही संकट टल जायेगा, यह नहीं कहा जा सकता। खेदकी बात है कि संघने इस मामलेमें फिलस्तीनको संघ राज्य में परिणत करने एवं प्रत्येक यूनिटको स्वायत्त अधिकार प्रदान करनेके भारतके सुझावको नहीं स्वीकार किया। निस्सन्देह संघ राज्यका नियन्त्रण तो अरब बहुमतके हाथमें रहता किन्तु यहूदी प्रदेशोंको स्वायत्त शासनाधिकार रहता। पर बड़ी बड़ी शक्तियां फिलस्तीनके बंटवारे पर तुली हुई थीं और वही होकर रहा। भारत जानता था कि अरब बटवारेको सहज ही नहीं हो जाने देंगे, इसीसे उसने इसका जबर्दस्त विरोध किया। वही हो

रहा हैं। अरब इस बटवारेके विरोधमें जबर्दस्त सैन्य संगठन कर रहे हैं। फिलस्तीनमें इस समय अराजकता फैली हुई हैं। अरब तुले हुए हैं कि यहूदी राज्य-की स्थापना हरगिज नहीं होने देंगे। अतः इसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण मध्यपूर्वमें अशान्ति, अराजकताकी सृष्टि होनी अनिवार्य है और इसका उत्तर-दायित्व ब्रिटेन, अमेरिका और रूस तीनों पर हैं।

चार बड़ोंका सम्मेलन—

लन्दनमें होनेवाला चार बड़े वैदेशिक मन्त्रियोंका सम्मेलन किसी महत्वपूर्ण निर्णय पर पहुंचे बिना समाप्त होगा, यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है। सोवियट रूसके परराष्ट्र सचिव मोलोटोवने यह प्रस्ताव उपस्थित किया था कि सम्मेलन दो मास तकके लिये स्थगित कर दिया जाय। उनके प्रस्तावमें कहा गया था कि चार बड़े परराष्ट्र सचिव याल्टा और पोटसडमके निर्णयोंके आधारपर जर्मनी के साथ शांति सन्धिका निश्चय करें। और वे दो मासके अन्दर अपने प्रस्ताव पेश कर दें। मि० मार्शल कहते हैं कि याल्टा और पोटसडमकी भाषाका जो अर्थ रूस लगाता है वह हम नहीं लगाते। उन्होंने कहाकि ज्यादा विलम्ब करना उचित नहीं। इन समस्याओंका समाधान होना चाहिये। मो० मोलोटोवने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। इसके सिवा जर्मन सन्धिके विषय में अभीतक कोई निर्णय नहीं हुआ हैं और न फिल हाल होनेके लक्षण ही मालूम हो रहे हैं क्योंकि सबके अलग अलग स्वार्थ हैं और उन्हींके अनुसार आचरण।

फ्रांसमें गतिरोध—

फ्रांसमें देश व्यापी हड़तालें और तोड़-फोड़का बाजार गर्म है। मर्साई, पेरिस आदि शहरोंमें पुलिस और हड़तालियोंमें संघर्ष भी हुए हैं और यत्रतत्र होनेके संवाद प्राप्त हो रहे हैं। फ्रांसकी वर्तमान सरकारके सामने महान सङ्कट उपस्थित हो गया है। हड़तालों और तोड़-फोड़को रोकनेके लिये उसने तोड़-फोड़ विरोधी कानून बनाया है। इस कानूनके अनुसार किसी भी व्यक्तिको हड़तालके लिये प्रोत्सा-हन देने या काम करनेमें बाधा पहुंचाने पर ५०,००० फ्रांक जुर्माना देना पड़ेगा। किसीके पास अस्त्र-शस्त्र बरामद होने एवं कोई तोड़-फोड़का काम करने पर उसको इससे दूनी सजा भोगनी पड़ेगी। अब प्रश्न है कि आखिर फ्रांसमें यह सब क्यों हो रहा है। इसके कारणोंमें सबसे पहली बात वहांके श्रमिकोंकी दयनीय स्थिति, द्वितीय, सत्ता प्राप्त करनेकी चालें और तीसरे विदेशी शक्तियोंका प्रोत्साहन और कूटनीति है। फ्रांसकी राजनीतिसे दिलचस्पी रखने वाले जानते हैं कि वहां सत्ता प्राप्तिके लिये ऐसी घटनाएं इधर कई वर्षोंसे होती चली आ रहीं हैं। महायुद्ध की समाप्तिके बाद फ्रांसमें ब्रिटेन औररूसके सिवा अमेरिका भी पहुंच गया है। यूरोप के अन्य छोटे-मोटे देशोंकी भांति वह फ्रांस पर भी अपना पूरा आधिपत्य चाहता है। अमेरिकाके प्रधान मन्त्री मि० मार्शलने फ्रांसमें गतिरोधका अध्ययन करनेके लिये और अपने अनुकूल लोगों-को सलाह देनेके लिये एक 'मिशन' भेजा है। यदि फ्रांसके सभी दलोंने मिलकर इस गतिरोधका शीघ्र अंत न किया तो स्थिति बिगड़ती नजर आती है।

कांग्रेस प्रेसिडेण्ट भी—

विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि भविष्यमें संघ मन्त्रिमण्डलकी आपसी बैठकोंमें कांग्रेस प्रेसिडेण्ट भी आमन्त्रित रूपमें भाग लेगा। कहा गया है कि कांग्रेस और सरकार के बीचमें घनिष्ट सम्पर्क रखनेके ख्यालसे इस प्रकारका निश्चय किया गया है। यद्यपि बाकायदा प्रस्ताव पास कर यह फैसला नहीं हुआ किन्तु इस सुझावको सभीने स्वीकार किया है। हम नहीं कह सकते कि इस समाचारमें कहां तक सत्यता है, किन्तु यदि यह सत्य हो तो इसका अर्थ यह है कि कांग्रेसके भीतर आचार्य कृपलानी गुटको सन्तुष्ट करनेके लिये ही यह मार्ग अवलम्बन किया गया है। स्वतन्त्र जनवादी सरकारकी स्वस्थ प्रगतिके लिये हम इस प्रकारके मार्ग अवलम्बनको अवांछनीय और अनाव-श्यक हस्तक्षप समझते हैं।

राजेन्द्रजयंती--एक मजेदारघटना—

गत सप्ताह ३ दिसम्बरको देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसादकी वर्षगांठ थी। उस दिन उन्होंने ६४ वें वर्षमें पदार्पण किया देश भरमें राजेन्द्र जयन्ती मनायी गयी और देशवासियोंने अपने प्यारे देशरत्नके प्रति श्रद्धा प्रकट की एवं उनके दीर्घजीवनकी प्रार्थना की। इस सिलसिलेमें बम्बईमें एक दिलचस्प घटना घटी। उसका उल्लेख करना आवश्यक है। श्री एस० के० पाटिलके नेतृत्वमें उस दिन कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंका एक दल चुपचाप राजेन्द्रबाबूके बम्बई स्थित निवास स्थानपर आ उपस्थित हुआ। राजेन्द्र बाबू उस समय प्रातःकालीन जलपानमें व्यस्त थे। कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उनको मालाएं पहनायी। इस प्रकार अचानक मालाएं पहनानेसे वे चौंके और अभिनन्दन करनेवालोंकी ओर चाह भरी नजरसे देखा मानो वे पूछ रहे हों कि आखिर यह मामला क्या है? कांग्रेस कार्य-कर्त्ताओंने उनके मौन प्रश्नका आशय समझकर बता दिया कि अभिनन्दनका कारण क्या है। राजेन्द्र बाबू चुपचाप सुननेके बाद बोले कि इसके पहले मैंने कभी भी अपनी वर्षगांठ नहीं मनायी। और सच बात यह है कि आज ही मेरा जन्मदिवस है और आज ही मैंने ६४ वें वर्षमें पदार्पण किया है—यह मुझे अभी मालूम हुआ है। डाक्टरराजेन्द्रप्रसादके सम्मानकार्य व्यस्त नेताके लियेइस प्रकारकी बात स्वाभाविक ही है। विधान परिषद और कांग्रेस जैसी दो संस्थाओंके वे सभापति हैं लिहाजा उनको अपनी वर्षगांठ की याद रखनेका अवकाश कहां? साथ ही यह भी बात सत्य है जो नेता देश और जनताके बारेमें इतना तन्मय होगा उसे देश कभी नहीं भूलेगा।

दो नावों पर पैर रखनेमें खतरा है

लेखक—श्री देवदत्त मिश्र

भारतीय पार्लमेण्टके सामने स्वतंत्र भारतके प्रथम अर्थ सचिव द्वारा २६ नवम्बरको पहला बजट उपस्थित किया गया। निस्संदेह हमारे अर्थ सचिव श्री षण्मुखम चेट्टीकी पहली बजट वक्तृता सुनकर देशके धनपति, उद्योगपति और पूंजीवादके समर्थक एवं पोषक अर्थ शास्त्री आश्वस्त और प्रसन्न हुए होंगे, उन्होंने राहतकी सांस ली होगी और मन ही मन अपने भगवानको धन्यवाद दिया होगा कि उठते बैठते, सुबह शाम, दिन रात समाजवादी अर्थ प्रणालीके प्रचलनकी चर्चा करने वाली कांग्रेसकी सरकारने, गनीमत है, कम से कम इस बार तो फिर देशका शोषण करनेका पट्टा जारी ही कर दिया। एक गांठ तो कटी। पूर्व स्थिति बनाये रखते और पूंजीवादी समाजको निर्भय करते हुए ओटाव पैक्टके समय देशके स्वार्थों की उपेक्षा करनेवाले चतुर षण्मुखम चेट्टीने अपनी असमर्थता पर बनावटी अश्रुपात द्वारा युग युगसे शोषित वर्गों की सहानुभूति खींचनेका प्रयास करते हुए कहा है "साधारण स्थितिमें यह भाव प्रकट करते लज्जा होती। एक पुश्तसे हम ऐसी स्वतन्त्रताके लिये सतत संघर्ष नहीं कर रहे थे, कि स्वतन्त्रता मिलने पर भी वही पुराना ढर्रा जारी रहे और हमें उसी पर सन्तोष करना पड़े। स्वतंत्रताका सच्चा अर्थ यह है कि हम अभाव व्यवस्थाकी पुरानी अर्थ को प्रगतिशील विस्तारकरनेवाली अर्थ व्यवस्थामें परिणत करें" आंसू बहाकर दूसरोंके आंसू सुखानेका प्रयत्न करते समय भी श्री षण्मुखमने इस बातका ध्यान रखा है कि कहीं भावुकता और सहृदयता उनको पराभूत न कर ले। इसलिये बड़ी सावधानीके साथ खूब सोच समझकर आपने प्राचीन कालीन अभावकी अर्थ व्यवस्थाको प्रगतिशील फैली हुई अर्थ व्यवस्थामें' परिणत करनेकी बात कही है। किंतु यह कहते समय उन्होंने शायद इस बातका ध्यान नहीं रखा कि जिन कोटि कोटि अर्द्ध बुभुक्षित और अर्द्ध नग्न नरनारियोंके आंसू पोछनेका प्रयत्न उन्होंने किया है वे यह टेढ़ी मेढ़ी, घुमाव फिरावकी भाषा कम समझते हैं। वे तो स्वतंत्र भारतके प्रथम अर्थ सचिवसे यह सुनना चाहते थे कि उनको भरपेट अन्न, आवश्यकतानुसार वस्त्र मिलने वाली अर्थ व्यवस्था, जो देशके मुठ्ठी भर लोगोंके लौहागारमें जंजीरोंसे जकड़ी बिलख रही है, कब मुक्त वातावरणमें विचरण करेगी। यही कारण है कि उनकी लच्छेदार भाषा, जिसने अवश्य ही देशके कुबेरपतियोंके हृदय कमलोंको प्रफुल्लित कर दिया है, जनसाधारणके हृदय द्वार तक भी नहीं पहुंच सकी और वे उसकी रस माधुरीका उपभोग करनेसे वंचित ही रहे।

बजट—संक्षेपमें

श्री षण्मुखमने १५ अगस्त १९४७ से ३१ मार्च १९४८ तक अर्थात साढ़े सात महीनेके लिये बजट पेश किया है जिसमें आमदनी १७२ करोड़ ८० लाख और खर्च १९७ करोड़ ३९ लाख बताया गया है। खर्चमें ९२ करोड़ ७४ लाख रक्षा, २६ करोड़ शरणार्थियों और २४ करोड़ अन्नाभावकी पूर्त्तिमें सहायता पर खर्च किया जायेगा। वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए जहां तक खर्चकी मदें हैं ठीक ही हैं। इस खर्चके अनुसार २६ करोड़ २४ लाखका घाटा है, पर इस घाटेको पूरा करनेके लिये सरकारकी आमदनी बढ़ाने को कोई नये उपाय नहीं सुझाये गये। स्पष्ट है कि अर्थ सचिव देशके पूंजीपतियोंकी लम्बी जेबमें हाथ डालना नहीं चाहते। हमारे आर्थिक जीवनकी कठिनाइयोंको बढ़ाने वाली दो बातें हैं—रुपयेकी नकली कीमत जिसे स्फीत मुद्रा या इनफ्लेशन कहते हैं और अन्नाभाव। अर्थ सचिवने इन दोनों कठिनाइयोंका सामना करनेके लिये एक ही उपाय बताया है। और वह है उत्पादन। आप कहते हैं जीवनोपयोगी तमाम वस्तुओंका उत्पादन बढ़ानेमें देश अपनी तमाम शक्ति लगा दे। दूसरे शब्दोंमें उन्होंने यह कहा है कि देशके श्रमिकऔर किसानोंका कर्तव्य है कि वे उत्पादकाकी आमदनी पर अतिरिक्त भार न लाद कर वर्तमान स्थितिको स्वीकार कर पूरी तरह उत्पादन बढ़ायें इस प्रयत्नमें वे भले ही मरमिटें पर देशके अर्थ पतियोंकी वर्तमान आम दनी पर आंच न आने पाये। आपने श्रमिकोंको अर्थ पतियोंकी सुविधाओंके सामने भाड़में झोंक दिया है। उत्पादनके लिये वर्तमान अवस्थामें जितनी पूंजी देशको चाहिये वह धन कुबेरोंके तहखानोंसे निकालनेका प्रयत्न न करके उसे वहीं दबी ही रहने दिया है और यह भय प्रकट किया है कि यदि अतिरिक्त मुनाफे या उसी तरहके अन्य टैक्स लगाकर थोड़ेसे हाथोंमें संचित राष्ट्रकी सम्पत्ति निकालनेकी कोशिश की जायेगी तो देशके सामने भयङ्कर स्थिति उत्पन्न होगी क्योंकि उस हालतमें उत्पादनके लिये पर्याप्त पूंजी न मिलेगी अर्थात पूंजीवादी समाज अपने पास पहुंची पूंजीको भूगर्भस्थ कर देगा और इस तरह समाजका अस्तित्व ही खतरेमें पड़ जायेगा। हमें आश्चर्य है कि स्वतंत्र

भारतका अर्थ सचिव इसप्रकार बोल रहा है। किन्तु आश्चर्य शायद इसलिये होता है कि हम यह भूल जाते हैं कि आजका स्वतन्त्र भारतका अर्थ सचिव देशके उन गण्यमान्य व्यक्तियोंमें एक हैं जिन्होंने ब्रिटिश शासन-कालमें देशके स्वतन्त्रता आन्दोलनका सदा विरोध किया और हर आड़े समयमें देशके विरुद्ध ब्रिटिश सरकारका साथ दिया। हमें खेदके साथ लिखना पड़ता है कि आज भी हमें यह भूलने नहीं देते।

यदि उद्योग कुछ व्यक्तियोंके लाभके लिये संचालित करनेका रास्ता नहीं अख्तियार किया जाता है तो हमारे अर्थ सचिव यह कहते हैं कि वैसी हालतमें उद्योगको चलाने के लिये पर्याप्त पूंजीका अभाव होगा और ऐसी स्थिति दरिद्रता और निराशा पैदा करेगी। हम यह जानना चाहते हैं अर्थ सचिवसे नहीं अपनी पहली स्वतंत्र सरकारसे—जिसके नेताओंने अधिकारमें आनेके पहले देशके कोटि-कोटि निवासियोंका विश्वास डंकेकी चोट यह ऐलान करके प्राप्त किया कि सबसे पहले गरीबी और दुरवस्थाका अन्त किया जायेगा—यह पूछना चाहते हैं कि देशके रहन सहनके स्तरको ऊंचा उठाने और अन्न वस्त्राभावसे मुक्त करनेके इरादेसे देशकी औद्योगिक उन्नतिके लिये आवश्यक पूंजी प्राप्त करनेके लिये कौनसे उपाय काममें लाये जा रहे हैं? अर्थ सचिवकी बजट वक्तृता इस पर प्रकाश तो डालती ही नहीं उलटे व्यक्तिगत स्वार्थोंसे प्रेरित होकर पूंजी रोकनेवालोंकी हिमायत करती है। आपको इस बातका क्षोभ है कि पिछले बजटमें अतिरिक्त मुनाफा करके रूपमें राजस्व बढ़ानेकी चेष्टा की गयी और कहते हैं कि इसीका प्रभाव है कि "उत्पादन कार्यके लिये पूंजी के संगठनमें रुकावटें आ रही हैं।" यही कारण है कि उन्होंने अपने बजटमें इस तरहके किसी टैक्सकी परिकल्पना तक नहीं की। वे हमारे राष्ट्रीय उद्योग धन्धेको पूंजीके अभावमें 'अविकसित स्थितिमें पड़े रहना देख सकते हैं किन्तु पूंजी पतियोंको असन्तुष्ट करनेका साहस नहीं कर सकते। साहस कहें या दुस्साहस उन्होंने किया है प्राइवेट उद्योगको प्रोत्साहन दे कर। आज जब कांग्रेस और कांग्रेसकी सरकारके प्रधान नायक राष्ट्रके मुख्य मुख्य उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणकी बातें कर रहे हों, समाज वादी आर्थिक व्यवस्था कायम करके देशको सदियोंके शोषण और निष्पेषणसे मुक्त करनेका आश्वासन दे रहे हों उस समय प्राइवेट उद्योगको प्रोत्साहन देनेका अर्थ समाजी करणकी प्रगतिको अवरुद्ध करनेके सिवा और क्या हो सकता है? क्या हम यह समझें कि हमारी राष्ट्रीय सरकार इतना कमजोर है कि वह मुट्ठी भर शोषकोंकी चढ़ी हुई भृकुटियोंसे डरकर उन कोटि कोटि नर नारियोंके मौलिक स्वार्थोंकी उपेक्षा करने जा रही है जिनके बल पर उसने परम शक्तिशाली ब्रिटिश सरकारका तख्ता उलट दिया। क्या हम यह समझें कि जिस सरकारको पंडित गोबिन्द बल्लभ पन्त, जो संयुक्त प्रान्तके प्रधान मंत्री और कांग्रेस हाई कमाण्डके एक सदस्य हैं, इतना शक्तिशाली बताते हैं कि "संसारकी कोई ताकत उसे हिला नहीं सकती और विश्वासके साथ मैं यह कह सकता हूं कि तीन अथवा चार महीनेकी अग्नि परिक्षाओंमें हम सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हुए हैं और अब किसीमें ताकत नहीं है कि हमारी स्वतंत्रता ले सके अथवा हमें आगे बढ़नेसे रोक सके" वह सरकार इतना कमजोर और साहसहीन है कि आज उसके अर्थ सदस्यको मुट्ठी भर पूंजीपतियोंको सन्तुष्ट करनेके लिये यह कहनेकी आवश्यकता पड़ती है कि "हमारे आर्थिक ढांचेका अन्तिम स्वरूप कुछ भी क्यों न हो, मेरा यह विश्वास है कि अभी बहुत बर्षों तक उद्योगके क्षेत्रमें निजी अध्यवसायकी आवश्यकता और गुंजाइश है। हमारी औद्योगिक अर्थ व्यवस्थाके निर्माणमें निजी उद्योग व्यवसायने जो दीर्घकालीन अनुभव प्राप्त किये हैं उसे खो देनेकी स्थितिमें हम नहीं हैं। मेरा विश्वास है कि हमारी अर्थ व्यवस्थाका जो साधारण स्वरूप होगा उसमें प्राइवेट और स्टेट दोनों अध्यवसायोंके लिये गुंजाइश रहेगी।"

अभी उस दिन तकके 'सर' षण्मुखम चेट्टीसे इसके सिवा और आशा ही क्या की जा सकती है! किंतु हमारा यह विश्वास है कि मात्र साढ़े सात महीनेके लिये बजट तैयार करनेके समय हमारी कांग्रेस सरकार घरेलू और बाहरी समस्याओंके समाधानमें इतना अधिक व्यस्त थी कि इस दिशामें वह सम्यक रूपेण पर्याप्त ध्यान नहीं दे सकी, अन्यथा इसमें जनताकी आवश्यकताओंकी जैसी उपेक्षा की गयी है और धनपतियोंको जिस तरह चिकनी चुपड़ी बातोंसे प्रसन्न करनेकी कोशिश की गयी है, वह न हुआ होता। दो नावों पर पैर रख कर संकटकी नदी पार करनेका प्रयत्न कितना खतरनाक है यह कांग्रेसके बतानेकी आवश्यकता नहीं है। देशकी आवश्यकताओंके सम्बन्धमें कांग्रेसकी नीति बिलकुल स्पष्ट है। गैर कांग्रेसी मिनिस्टर, अब कांग्रेसमें शामिल हो चुके हैं, उनको अपनी नीति और रुख वैसा ही बनाना पड़ेगा। यदि वे अपने स्वभावकी लाचारीके कारण देशको अपनी सेवाओंसे वंचित रखनेकी धमकी देंगे जैसा श्री षण्मुखमने उद्योगपतियोंके लिये कहा है कि हम उनके अनुभवसे वंचित रहनेकी स्थितिमें नहीं हैं तो उनको हम स्मरण करा देना चाहते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी भी यही कहा करते थे कि हिंदुस्तान अभी इस स्थितिमें नहीं है कि ब्रिटेनके बिना उसका काम चल सके। यदि हम अंगरेजोंके बिना अपना काम चला सकते हैं और ब्रिटिश सरकारको भारतके सम्बन्धमें अपनी पूर्व नीति और विचार बदलनेको बाध्य कर सकते हैं तो इन गैर कांग्रेसी मिनिस्टरोंकी क्या बिसात है। या तो ये अपने सड़ी पुराने सड़े विचार और धारणाएं बदलेंगे या उस आसनको रिक्त करेंगे जिसपर जनताका सच्चा प्रतिनिधि ही बैठा रह सकता है। आशा है कि हमारे अर्थ सचिव इस तथ्यको मार्च १९४८ के पहले ही समझ लेनेकी कोशिश करेंगे, यही उनके लिये श्रेयस्कर है।

भाषावार विभाग

आचार्य श्री मन्नारायण अग्रवाल लिखते हैं:—

"नयी नयी विद्यापीठें खोलनेके बारेमें आपका लेख 'हरिजन' में पढ़ा। मैं यह मानता हूं कि भाषावार प्रान्तोंकी रचनाके पहले नयी विद्यापीठें स्थापित करनेमें कठिनाई होगी। लेकिन प्रांतोंको भाषाके आधार पर बनानेमें कांग्रेसकी ओरसे इतनी ढिलाई क्यों हो रही है, यह मैं समझ नहीं सका हूं। कांग्रेस सन १९२० से ही यह मानती आई है कि प्रांतोंकी पुनर्रचना विविध भाषाओंके अनुसार हो। लेकिन मौका आने पर अब इस कामको लम्बानेकी या टालनेकी कोशिश की जा रही है, ऐसा मेरा खयाल है। विधान-परिषदमें भी इस विषयको स्थगित सा कर दिया गया है। यह बात मुझे उचित नहीं जान पड़ती। बिना भाषावार प्रान्त-रचना हुए न तो शिक्षाका माध्यम मातृभाषाको बनाना आसान होगा और न अंग्रेजीको राजभाषाके स्थानसे हटाना सरल होगा। बम्बई, मद्रास और मध्य प्रांत बरार जैसे बेढंगे और बहुभाषी प्रातोंका हमारे नये विधानमें स्थानही नहीं होना चाहिये। और अगर हमने इस प्रश्नको टालनेकी कोशिश की, तो एक ही प्रान्तके विभिन्न भाषा बोलनेवालोंका पारस्परिक विद्वेष अधिक बढ़ता जायगा। बहुभाषी प्रान्त रखनेसे भाषा द्वेष कम नहीं होगा, बल्कि दिन दिन बढ़ेगा, यह स्पष्ट है। आज देशके सामने हिन्दू-मुस्लिम समस्याने भयंकर रूप धारण किया है और हमारे नेताओंकी शक्तियां उसी ओर अधिक लगी है, यह ठीक है। लेकिन अगर देशका बंटवारा करना ही था, तो कई साल पहलेही कर लेना था। उस हालतमें इतनी खूनखराबी न होती। इसी तरह अगर हमें प्रान्तोंका बंटवारा भाषावार करना है, तो देरी करनेसे कोई फायदा नहीं होगा। नुकसान ही होगा, क्योंकि कटुता बढ़ती जायगी।"

मुझे कबूल है कि जो उचित है, उसे अब करना चाहिये। बगैर कारणके रुकना ठीक नहीं। इससे नुकसान भी हो सकता है। पापके साथ हमारा कोई सरोकार नहीं हो सकता।

फिर भी भाषावार सूबोंके विभागमें देर होती है, उसका सबब है। उसका कारण आजका बिगड़ा हुआ वायुमण्डल है। आज हर एक आदमी अपना ही देखता है, मुल्कका कोई नहीं। मुल्ककी ओर जानेवाले, उसका भला सोचनेवाले लोग है जरूर, लेकिन उनकी सुने कौन? अपनी ओर खींचनेवाले लोग शोर मचाते हैं, इसी लिये उनकी बात सब सुनते हैं। दुनिया ऐसी हैं न?

आज भाषावार सूबोंका विभाग करने में झगड़ेका डर रहता है। उड़िया भाषा को ही लीजिये। उड़ीसा अलग सूबा बन गया है, फिर भी कुछ-न-कुछ खींच रही ही है। एक ओर आंध्र, दूसरी ओर बिहार और तीसरी ओर बंगाल है। कांग्रेसने तो भाषावार विभाग सन १९२० में किया। बाकानून तो उड़िया बोलनेवाले सूबेका ही हुआ। मद्रासके चार विभाग कैसे हो? बम्बईके कैसे? आपसमें मिल कर सब सूबे आवें और अपनी हद बना लें, तो बाकानून विभाग आज बन सकते हैं। आज हुकूमत यह बोझ उठा सकती है? कांग्रेसकी जो ताकत १९२० में थी, वह आज है? आज उसकी चलती है?

आज तो दूसरे हकदार भी पैदा हो गये हैं। ऐसे मौके पर हिन्दुस्तान बेहाल सा लगता है। आज तो संप (मेल) के बदले कुसंप (फूट) है, उन्नतिके बदले अवनति है, जीवनके बदले मौत है! जब कौमी झगड़े बन्द होंगे, तब हम समझ सकेंगे कि सब ठीक हुआ है। ऐसी हालतमें भाषावार विभाग लोग आपसमें मिल कर कर लें, तो कानून आसान होगा; अन्यथा शायद नहीं।

बहादुरी या बुजदिलीकी मौत

एक बङ्गाली दोस्तने पूरबी पाकिस्तानसे हिन्दुओंके हिजरत करने पर बङ्गालीमें एक लम्बा खत लिखा है। उसका सार यह है कि अगरचे उन जैसे कार्यकर्त्ता मेरी दलीलको समझते और उसकी तारीफ करते हैं, और साथही बहादुरी और बुजदिलीकी मौतके फर्कको भी समसमझते है, मगर मामूली आदमीको मेरे बयानमें हिजरत करनेकी ही सलाह नजर आती है। वह कहता है कि "अगर हर हालतमें मौतसे ही पाला पड़ना है, तो धीरज रखनेकी कोई कीमत नहीं रह जाती है। क्योंकि इंसान मौतसे बचनेके लिये ही जीता है।"

इस दलीलमें उस बातको पहलेसे ही मान लिया गया है जिसे साबित करना है। इन्सान सिर्फ मौतसे बचनेके लिये ही नहीं जीता। अगर वह ऐसा करता है, तो मेरी सलाह है कि वह ऐसा न करे। उसे मेरी सलाह है कि अगर वह ज्यादा न कर सके, तो कमसे-कम मौत और जिन्दगी दोनोंको प्यार करना सीखे। कोई कह सकता है कि यह एक मुश्किल बात है और इसपर अमल करना और भी मुश्किल है। मगर हर अनुचित और महान काम मुश्किल तो होता है। ऊपर उठना हमेशा मुश्किल होता है। नीचे गिरना आसान है और उसमें अक्सर फिसलन होती है। जिन्दगी वहीं तक जीने लायक होती है, जहां तक मौतको दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त माना जाता है।

हवाई-यात्राका एक पहलू

-:*:-

लेखक—प्रो० जे० सी० कुमारप्पा

जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे हैं वैसे वैसे कमसे कम अमीरोंके लिये हवाई यात्रा एक मामूली बात होती जा रही है। इस किस्मकी यात्राको बढ़ावा देनेके लिये हर तरीकेसे कोशिश की जा रही है। इसलिये समाजमें हवाई यात्रा स्थानको समझ लेना हमारा फर्ज हो जाता है।

जब हम किसीको 'काफी घूमा हुआ आदमी' कहते हैं तो उसपरसे हमलोग यात्राको कितना महत्व देते हैं इसकी कल्पना आ जाती है। ऐसे आदमीसे हम उम्मीद करते हैं कि उसने हर तरहके लोगों और विभिन्न अवस्थाओं तथा परिस्थितियोंसे अनुभव प्राप्त किया होगा। इसलिये दूसरे लोगोंके जीवनका निकट परिचय प्राप्त होनेके कारण हम ऐसा आदमी विकसित दृष्टिकोण वाला, जानकार और सुसंस्कृत होनेकी आशा रखते हैं। इस तरह यात्राके साथ बहुत से लाभ सम्बन्धित हैं। पुराने जमानेमें भारतमें तीर्थयात्राएं यात्राके इन्हीं सांस्कृतिक पहलुओं पर आधारित थीं, यद्यपि उनको धार्मिक रंग दे दिया गया था।

मुसाफिरको सफरमें अलग-अलग समयोंमें अलग-अलग प्रकारके लोगोंसे पाला पड़ता है। वह उन लोगोंसे बातचीत करता है, उनकी विचारधारासे परिचय प्राप्त करता है, उनके रस्म रिवाजों पर ध्यान देता है और इन सबकी अपने घर की परिस्थितिसे तुलना करता है। यही आदत अन्ततोगत्वा सांस्कृतिक उन्नतिका साधन बनती है। इसीलिये हम अपने बालकोंको यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें पढ़नेको प्रोत्साहित करते हैं जिससे उन्हें शिक्षा मिल सके और मानवके बारेमें उनकी जानकारी बढ़ सके। यदि यात्राको इस निगाहसे देखें तो 'हवाई यात्रा' की उक्ति गलत साबित होती है। आज जो हवाई-यात्रा है वह साफ-साफ वस्तुएं ढोना भर है। अभी आदमी यहां है, दूसरे क्षण हवाई जहाजके द्वारा वह दूर पहुंच जाता है। एक मुसाफिर आज सुबह कराचीमें है और आज ही आजमें रातको लन्दन में पहुंच सकता है। लेकिन उसके ज्ञान, संस्कृति अथवा जानकारीमें कोई भी वृद्धि नहीं होगी। यह सामानका ही ढोना हुआ जैसा कि दूसरे मालोंका, उदाहरणार्थ कपासको एक गांठका होता।

यह दलील पेश की जा सकती है कि इसमें समयका बचाव होता है। पर क्या इस समय की बचतसे आदमीकी जिन्दगी की लम्बाईमें कुछ इजाफा हुआ नहीं! इसका तो केवल यही मतलब हुआ कि आदमीने अपनी जिंदगीके समयका कुछ अंश सांस्कृतिक विकासमें न लगाकर अपने व्यवसायमें लगा लिया। क्या जब छोटे बच्चेको स्कूल न भेजकर उसे मवेशी चरानेके लिये भेजते हैं तो उसके समयकी बचत होती है? हम उस बालकको उसके संस्कृतिके हिस्सेसे वंचित कर देते हैं। जिन्दगीका मतलब अपना समय, सारा का सारा समय अपने ही व्यवसायमें लगा देना नहीं होगा। यदि आदमीको सामाजिक जीव बना रहना है तो उसे अपना विकास करके अपने भाई बहनोंसे नजदीकी रिश्ता कायम करना होगा। हवाई यात्रा आदमीको सामाजिक जीव बनने देने के बजाय एकाकी और खुदगर्ज बना देती है। कह सकते हैं कि वह स्वार्थको प्रोत्साहन देती है। इसलिये समयकी बचत असलमें समयको सांस्कृतिक बातोंसे निकालकर स्वार्थ कामोंमें लगानेका ही दूसरा नाम है। जब हम जिन्दगीकी खूबसूरतीको उसके भौतिक रूपमें न देखकर उसे सांस्कृतिक विकासके पैमानेसे नापते हैं तो समयकी बचतमें कोई गुण नहीं दिखाई देता। दूसरे शब्दोंमें कहें तो यह जीवनके मानवी पहलूका संकोचकर पाशविक पहलूका विस्तार करना है। तनहा या एकान्त कैदकी भी यही नींव है। हवाई सफरमें पंखेकी बहरा बनानेवाली आवाज और जगहकी तंगीमें साथी मुसाफिरोंसे कोई बातचीत कर सकना नामुमकिन सा हो जाता है।

यह बिलकुल इसी तरह है जैसे कि किसी आदमीको कमरेकी सब खिड़कियां बन्द करके उसमें एक कुर्सीपर यात्रा-काल तक लगातार बैठा रहनेको कहा जाय। कुर्सी चाहे कितनी ही आरामदेह क्यों न हो वह असहनीय हो जाती है। चारों तरफ देख नहीं सकते—एक तो खिड़कियां छोटी छोटी होती हैं और दूसरे खाली आंखसे कुछ दिखाई भी नहीं देता। लम्बी दूरियां तय करनेवाले जहाज जमीन से १५ से १८ हजार फुटकी ऊंचाईपर उड़ते हैं। इसका मतलब हुआ कि आप तीन मील दूरकी चीज ही देख सकते हैं। इससे ज्यादातर नीचे धुंधला नीला और ऊपर गहरा नीला दिखाई देता है और उतरनेकी जगहोंके आसपासको छोड़कर बहुत कम पेड़ या इमारतें तक पहचानमें आती हैं। दिमाग बन्द, नजर धुंधली और कान बहरे, ऐसी हालतमें मुसाफिर घण्टों—दिन हो या रात—एक जगह बैठा रहता है और जब उतरता है तो पीठ दर्द करती है और वह "लक्ष्य स्थान तक पहुंच गये," कहता हुआ ठण्ढी सांस लेता है। यह है आधुनिक यात्रा'!

(शेष ३६वें पृष्ठपर)

हिन्दी या उर्दू

डाक्टर - ब्रजमोहन.
पी. एच. डी. काशी विश्वविद्यालय

किसी देशमें किस ढंगका नाज पैदा होता है, कौन कौनसे फल होते हैं, किस प्रकारकी तरकारियां होती हैं—यह सब बातें देशके जलवायु पर निर्भर हैं। जलवायुका प्रभाव देशके निवासियों पर भी पड़ता है—उनके रहन सहनका ढंग उनकी भाषा, उनके कपड़े, उनके रीति रिवाज—यह सब जलवायुके प्रतिबिम्ब हैं। भारतवर्ष में कपड़ेकी अधिकांश मिलें बम्बई प्रांतमें ही क्यों है, इसका कारण लोग यह बताते हैं कि वहां एक प्रकारकी काली मिट्टी होती है जो कपासकी खेतीके लिये बहुत उपयुक्त है। गेहूं पंजाबमें क्यों अधिक होता है इसके भी कई कारण हैं। कलईके बर्तन मुरादाबादमें ही क्यों अधिक होते हैं, इसका भी कारण है और विश्वविद्यालयोंमें ही प्रौक्सी क्यों अधिक होती है, इसका भी कोई न कोई कारण अवश्य होगा।

जलवायुका प्रभाव हमारे जीवनपर इतना अधिक पड़ता है कि यदि हमारा वातावरण बदल दिया जाय तो हमें कष्ट होता है।

जलवायुका प्रभाव हमारे खान पान पर भी बहुत गहरा पड़ता है। लाहौरसे आप पंजाब मेलमें बैठकर कलकत्तेके लिये चलिये, रास्ते भर खिड़कीसे बाहर मुंह मत निकालिये। स्टेशनों पर जो आवाजें खोमचे वालोंकी आपके कानोंमें आयेंगी, उन्हीं से आप पहचानते चले जायेंगे कि कौन से प्रांतमें चल रहे हैं।

(१)

इसी प्रकार हमारी भाषाका गठन भी जलवायु पर निर्भर है। मद्रास प्रान्तकी भाषाओंमें ड और ड़ बहुत अधिक आता है, इस बातका सम्बन्ध वहांके जलवायुसे अवश्य कुछ न कुछ होगा। बंगाल की बोली बहुत कोमल है, पंजाबका उच्चारण सख्त है युक्त प्रांतकी बोली न इतनी कोमल है जितनी बंगला, न इतनी सख्त है जितनी पंजाबी। बंगलामें कुछ क्रियायें हैं चलिबे, खावे, पीवे, जावे, युक्तप्रान्तमें कहते हैं चलोगे, खाओगे, जाओगे या नहीं जाओगे; पंजाबमें कहेंगे जावेंगा कि नहीं जावेंगा, खावेंगा कि नहीं खावेंगा। बंगालमें अक्षरोंका उच्चारण है कौ, खौ, गौ, घौ, ङौ, युक्तप्रांतका उच्चारण है क, ख, ग, घ, ङ, पंजाबका उच्चारण है का, खा, गा, घा, ङा। यदि बंगालकी बोली को 'पड़ी बोली' कहें तो युक्तप्रांतकी है 'बैठी बोली' और पंजाबकी है 'खड़ी बोली'। यह शब्दावली मेरी अपनी ही है।

यह अन्तर तो बहुत स्थूल है। इनके अतिरिक्त भिन्न २ स्थानोंकी बोलियोंमें सूक्ष्म अन्तर भी होते हैं। किसी बड़े देश में भाषा एक हो सकती है परन्तु बोलियां अनेक होती हैं। भाषा और बोलीमें अन्तर है। आप लोग पूछेंगे कि क्या अन्तर है। भाषा भाषा ही है बोली बोली ही है। बोली उसे कहते हैं जो जबान से बोली जाये। भाषासे मतलब साहित्यिक भाषासे है। भाषा और बोलीमें सदैव अन्तर रहा है और रहेगा। यद्यपि इंगलैंड एक छोटासा देश है तथापि उसमें भी कई बोलियां हैं। उदाहरणार्थ एक शब्द लीजिये 'फर' वेल्समें इसको कहते हैं फर। इसमें 'आर' का अक्षर आवर्त दशमलवकी तरह घूमता है। दक्षिणी इंगलैंड वाले कहते हैं 'फर,' उत्तरी इंगलैंड वाले कहते हैं 'फः'—उसमेंसे र उड़ जाता है—स्कौटलैंड वाले कहते हैं 'फै'।

फ्रांसमें भी दो तरहकी बोलियां हैं, दक्षिणी फ्रैंच और पेरिसकी फ्रैंच। जिस शहरको हमलोग पेरिस कहते हैं उसे दक्षिणी फ्रांसमें कहते हैं पेर—एस तो बोला नहीं जाता। पेरिसकी फ्रैंचमें र का उच्चारण लगभग ऐसा होता है जैसा हमारे ग का। इसलिये उत्तरी फ्रांसमें पेरिसका उच्चारण हैं 'पेग'।

युक्त प्रान्तकी भाषा मुख्यतः हिन्दी है परन्तु बोलियां कई एक हैं। एक कहावत है कि हर बारह कोस पर बोली बदल जाती है। इस प्रकार तो युक्त प्रान्तकी बोलियां ही असंख्य हो जायंगी, परन्तु मान लीजिये कि इस प्रान्तको हम भाषाके आधार पर तीन भागोंमें बांटते हैं: पश्चिमी भाग, मध्य भाग, और पूर्वी भाग। पश्चिमी भागमें कहते हैं "हम नहीं जायेंगे," मध्य भागमें कहते हैं "हम नाहीं जइहैं" और पूर्वी भागमें कहते हैं "हम नाहीं जाइब"। यह तीनों बोलियां अलग अलग हैं, परन्तु भाषा तीनोंकी हिन्दी ही है। दस वर्ष पहले जब मैं बनारसमें पहले पहल आया था, तो यहांकी बोलीसे बिल्कुल अनभिज्ञ था।

यहां पहली बार मैंने 'पान' को 'पनुआ' और 'दवाई' को 'दवइया' कहते सुना था। उन्हीं दिनों का जिक्र है कि मैंने नौकरसे कहा कि एक धोबी ढूंढ़ ला। सन्ध्या समय नौकरने कहा 'बाबूजी धोबी पइलन'। उसका मतलब था कि एक धोबी उसे मिल गया। मैंने उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया। मैंने समझा कि 'पइलन' किसी धोबीका नाम है। 'पइलन' नाम पर आश्चर्य तो अवश्य हुआ, परन्तु मैंने सोचा कि दुनियामें अजीब अजीब ढंगके नाम होते हैं। एक दिन मैंने किसी अखबारमें एक व्यक्तिका नाम पढ़ा था 'स्टेशनसिंह'। मैंने सोचा यदि 'स्टेशनसिंह' नाम हो सकता है तो पइलन नाम भी हो सकता है। अगले दिन सुबह जब धोबी आया तो नौकर बोला 'बाबूजी धोबी अइलन'। मैंने सोचा कि अभी 'पइलन' नामके धोबीसे तो मैं निपट ही न पाया था कि अइलन नामका दूसरा धोबी आन पहुंचा। खैर, उस समय मैं किसी काममें व्यस्त था इसलिये मैंने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी। आधे घण्टे बाद जब मैं अपने कामसे निपटा तो मैंने नौकरसे पूछा कि धोबी कहां है? नौकर बोला, "बाबूजी धोबी गइलन"।

अब प्रश्न यह उठता है कि हमारी राष्ट्र भाषाकी क्या रूप रेखा होनी चाहिये। इस बात पर तो अब बहुमत हो गया है कि राष्ट्र भाषा 'हिन्दी उर्दू या हिन्दुस्तानी- इन्हीं तीनोंमेंसे कोई हो सकती है। ऊपर जो कुछ मैं कह चुका हूं उससे मेरा तात्पर्य है कि राष्ट्र भाषा एक ऐसी भाषा होनी चाहिये जो हिन्दुस्तानमें ही पैदा हुई हो। इसी देशमें पनपी हो और इसी देशमें पुष्पित, पल्लवित और फलित हुई हो। अब इस कसौटी पर हिंदी और उर्दूको कस कर देख लीजिये।

उर्दू का जन्म

उर्दूकी उत्पत्तिके बारेमें कई मतमतांतर हैं। कुछ लोग कहते हैं कि उर्दूके माने है 'बाजार' अतः उर्दू बाजारमें भिन्न भिन्न प्रान्तोंके निवासियोंके सम्पर्कसे पैदा हुई। दूसरा मत यह है कि उर्दूका अर्थ है लश्कर। यह भाषा मुगल राजाओंकी छावनीमें पैदा हुई। एक तीसरा सिद्धांत यह है कि उर्दू मुगल राजाओंकी दरबारी भाषा थी। इन तीनों सिद्धांतोंमें से कौन सा ठीक है इस पचड़ेमें तो मैं पड़ना नहीं चाहता। मैं यह मानता हूं कि उर्दू किसी प्रकार भी पैदा हुई हो, परन्तु इसी देशमें उत्पन्न हुई है और इस लिये एक स्वदेशी वस्तु है। परन्तु अब जरा उर्दूके विकास पर विचार कीजिये। जिस समय उर्दूकी उत्पत्ति हुई थी उस समय यह एक शुद्ध स्वदेशी भाषा थी। परन्तु अब उर्दूके पक्षपातियों की संकीर्णताके कारण यह भाषा दिन पर दिन विदेशी जामा पहनती जा रही है। यह बात मैं उर्दू कविताके तीन नमूने लेकर दर्शाता हूं।

वली दक्षिणके एक बहुत पुराने कवि हुए हैं। इनका रचना काल लगभग १७०० ईसवी था। इनको कुछ लोग 'उर्दूका' बाबा आदम कहते हैं। जिस भाषामें इन्होंने कविता की उसे दक्षिणी उर्दू या केवल दक्षिणी कहते हैं। इनकी कविताका नमूना देखिये।

मत गुस्सेके शोले सों
जलते को जलाती जा।
टुक महर के पानी सों
यह आग बुझाती जा॥
इस रैन अंधेरी में,
मत भूल पड़ूं तिससों।
टुक पांवके बिछुओं की,
आवाज सुनाती जा॥
तुझ मुखकी परिस्तिश मे,
गयी उम्र गुजर मेरी।
ऐ बुतकी पुजनहारी,
इस बुतको पुजाती जा।
तुझ इश्कमें जलजल कर,
सब तनको किया काजल।
यह रोशनी अफजा है,
अंखियनको जलाती जा॥
(कुल्लियाते वली नं० ४४)

यह थी प्राचीन उर्दूकी रूपरेखा। इस कविताके भाव बिल्कुल हिन्दी हैं, 'बिछुओं की आवाज, 'मूर्त्ति पूजा' 'आंखों का काजल—सब हिन्दुस्तानी भाव हैं। इसकी भाषामें अधिकतर शब्द हिन्दीके हैं, अरबी फारसीके शब्द भी काफी हैं। परन्तु उनमेंसे अधिकतर ऐसे हैं जो मामूली बोलचालकी हिन्दीमें आ चुके हैं जैसे गुस्सा, आवाज, गुजर, बुत। केवल तीन शब्द ऐसे हैं जिन्हे हिंदी भाषी नहीं समझ सकते, महर, परिस्तिश, रोशनी अफजा।

यदि आजतक उर्दू इसी रंगमें रङ्गी रहती, तो हिन्दी-उर्दूका झगड़ा उठही न पाता। इस ढङ्गकी उर्दू यदि आज भी कोई कवि लिखे, तो हिन्दी प्रेमी उसका खुले दिलसे स्वागत करेंगे। परन्तु हुआ क्याः—

जब वली दिल्ली पहुंचे, उस समय दिल्लीके तख्त पर शादुल्ला गुलशन राज्य करते थे। उन्हें वलीका हिन्दीपन पसन्द न आया। उन्होंने वलीको एक पत्र लिखा कि "यह इतने सारे फारसीके मजमून जो बेकार पड़े हुए हैं, उनको अपने रेख्तेमें इस्तेमाल कर। कौन तुझसे हिसाब लेगा?"

(उर्दू रिसाला १७६ अप्रैल १९३२ ई०)

यदि यह पत्र न लिखा गया होता तो कदाचित आज उर्दूकी यह रूपरेखा न होती जो दिखाई दे रही है। पत्रके मिलते-ही वली अपनी कविताको फारसीके सांचे में ढालने लगे। उसके बादकी उनकी कविताका नमूना देखिये।

जब सनम को खयाले बाग हुआ।
तालिबे नशः ए फुराग हुआ॥
रश्क सो तुझ लबां की सुरखी के।
जिगरे लाला दाग-दाग हुआ॥
(कुल्लियात नं० ५८)

इस रचना और पिछली रचनामें कितना अन्तर है। इस रचनामें आधेसे अधिक शब्द अरबी फारसीके हैं। परन्तु अभी तक वली हिन्दी पनको बिल्कुल खो नहीं पाये थे। इसमें 'तुझ लबां' का वाक्यांश आया है। इसमें लबांका शब्द फारसी 'लब'

(शेष २०वें पृष्ठ पर)

फिलिस्तीनकी उलझन पूर्ण समस्या

श्री जीवन

फिलस्तीनकी समस्या कोई नई नहीं, वरन् यह उसके जन्मके साथही उलझन पूर्ण रही , जिसका आज तक समाधान नहीं हो सका है। उसकी भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक एवं धार्मिक परिस्थित तथा उसके निवासी—सभी निरंतर उसके लिए नई-नई समस्याएं पैदा करते रहे हैं। उसकी समस्याको सुलझानेकी बराबर कोशिशें होती आई हैं। पर 'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की, की नाई समस्या, सुलझनेके बदले उलझती ही गई। अब इस सम्बन्धमें संसारकी सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था—संयुक राष्ट्रसंघ—ने अपना कदम उठाया, किन्तु वह भी असफल रही, क्योंकि फिलस्तीन-को अरब और यहूदी दो राज्योंमें बांट देनेके उसके फैसलेसे अरब उसके विरुद्ध युद्धकी तैयारियां कर रहे हैं।

फिलस्तीन भूमध्यसागरके पूर्वी किनारे पर बसा हुआ है। देशका क्षेत्रफल १२, ४२६वर्गमील और आबादी प्रायः१८लाख है। उसके उत्तरमें सीरियाकी सरहद, दक्षिणमें स्वेजनहर तथा मिस्र और पूरबमें गर्डन नदी है। वह पुरानी दुनियांके मध्य में एशिया, यूरोप और अफ्रीका इन तीन महादेशोंसे मिला हुआ है, जिससे उसकी भौगोलिक स्थिति बड़ी ही महत्वपूर्ण है। मध्य पूर्व अपने तेलको लेकर प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए हैं। ईराकका तेल किरकुक की पाईप लाइन द्वारा फिलस्तीन ही आता और वहींसे जहाजों द्वारा बाहर भेजा जाता है। फिलस्तीनमें हवाई अड्डे तथा बन्दरगाह भी हैं भौगोलिक स्थिति को लेकर ही साम्राज्यवादी फिलस्तीन पर अपना अधिकार स्थापित करनेको लालायित रहे हैं।

धार्मिक दृष्टिसे फिलस्तीन विभिन्न धर्मोंका केन्द्र एवं पवित्र स्थान रहा है। वहां प्राचीन सेमाइट, आर्य, स्लाव,हूण, अर्मीनियन, अरब, तुर्की, यहूदी, ईसाई आदि अनेक जातियोंके लोग बसे हुए हैं, एक दूसरेसे धर्म और मजहबके नामपर लड़ते रहते हैं। वह विभिन्न धर्मोंके अनेक महापुरुषों तथा प्रवर्त्तकोंकी जन्मभूमि रहा है। वहां न सिर्फ बेबिलोनियन और सीरियन आध्यात्मिक महापुरुष ही पैदा हुए थे, वरन जेसस क्राइस्ट और कौंस्टेंटाइनके समान ईसाई, मुहम्मद और उमर के समान मुसलमान, मोसेस, जरामिया, डेविड और सोलोमनके समान इजरेली, पौंपी और हिरोदेके समान रोमन, मामलुक खलीफा और सेलजुक तुर्कोंके समान मिस्री पैगंबरों और आध्यात्मिक गुरुओं-की अनेक शाखाएं-प्रशाखाएं वहां विद्यमान हैं। प्राचीन धार्मिक सिद्धांतोंके माननेवालोंका खयाल है कि महाप्रलयके समय सभी आत्माएं ईश्वरके समक्ष उपस्थित होती हैं और उनके पाप-पुण्यका लेखा-जोखा कयामतके दिन हुआ करता है। उस समय ईसा मसीह ईसाइयोंकी वकालत करेंगे, मुहम्मद साहब मुसलमानोंका पक्षपात करेंगे। मोसेस यहूदियोंकोस्वर्ग पहुंचानेकी चेष्टा करेंगे और ऐसे ही अन्य महापुरुष अपने-अपने मतावलंबियोंका पक्ष लड़ेंगे। जेरूसलेमभी धर्मोंका पवित्र तीर्थ स्थान है। कहा जाता है कि यहीं यहूदियों के खुदा जेहोवा मोसेसके सम्मुख उपस्थित हुए थे और उन्हें 'ओल्ड टेस्टामेंट' दिया था। यहीं यहूदियोंकी 'रोनेवाली दीवाल' है, जिसके दर्शनके लिए शताब्दियोंसे सारे संसारके यहूदी आया-जाया करते हैं और जिसके बारेमें कहा जाता है कि प्रतिदिन रातमें एक श्वेत बत्तख इस दीवाल पर बैठकर दर्द भरे स्वरमें कूका करती है। यही ईसाइयोंका 'चर्च आव नेटिविटी' है, जहां ईसा मसीहकी पैदाइश हुई थी और यहीं उनकी कब्र भी है, जहां उन्हें दफनाया गया था। मुसलमानोंकी पाक मस्जिद' भी यहीं है, जहां मुहम्मद साहब स्वर्गमें खुदासे बातें करने गए थे। यहां आवे दस शैतान (शैतानके पुजारी) भी रहा करते हैं। देशकी आबादीमें अधिक संख्या अरबी मुसलमानोंकी है। यहूदयों-की संख्या लगभग एक तिहाई है। ऐसे ही-ऐसे अनेक मतों-सम्प्रदायोंके लोग फिलस्तीनमें बसे हुए हैं। इस प्रकार फिलस्तीन विभिन्न धर्मोंका प्रबल गढ़ है और यही वजह है कि ३०० सालोंके धर्म-युद्धके जमानेमें फिलस्तीन विभिन्न कार्रवाइयोंका केंद्र-स्थल रहा।

फिलस्तीनका इतिहास कोई चार हजार वर्षोंका लिखित रूपमें विद्यमान है। 'तेल-एल-आमरा' के कुर्सी नामासे ज्ञात होता है कि प्राचीन कालमें फिलस्तीन मिश्रका ही अंग था। इसके बाद एक-एक कर बेबिलोनवालों, असीरियनों, फीनिशियनों और यूनानियोंने फिलस्तीन पर चढ़ाईकर अपनी-अपनी हुकुमतें कायम कीं। तत्पश्चात विजयी रोमनोंने फिलस्तीन पर कोई पाच सौ सालों तक राज्य किया। उन्होंने यहूदियोंको खदेड़ दिया और तभीसे यहूदियोंका जीवन अनिश्चित-सा हो गया। ७ वीं सदीमें अरबी मुसलमानोंने फिलस्तीनको जीत लिया और अपने शासन-कालमें उसे उन्नतिशील बनाया। उन्होंने नया जेरूसलेम बसाकर वहां एक विश्वविद्यालय भी स्थापित किया था। ११ वीं और १० वीं सदियोंमें फिलस्तीनमें ही यूरोपीय इतिहास प्रसिद्ध धर्म युद्ध (क्रूसेड्स) हुए। इसके बाद फिलस्तीन पर मिस्रके मामलूक वंशका शासन आरंभ हुआ। परंतु १६ वीं शताब्दीमें तुर्कोंने फिलस्तीन पर कब्जा किया और पूरे चार सौ सालों—१५१७से १९१७—तकके फिलस्तीनपर शासन करते रहे।

इस बीच प्रथम विश्व-महायुद्ध आरंभ हो गया था, जिसमें तुर्कीके सुल्तान इस्लामी विश्व-बंधुत्वके खलीफा यानी प्रधान अधिकारी माने जाते थे। अंग्रेजोंको इस

बातका भय था कि कहीं सारी दुनियाके मुसलमान तुर्कोंको लेकर अंग्रेजी साम्राज्यके खिलाफ न हो जायें। भारतीय मुसलमानोंको भी शांत रखनेकी जरुरत थी। इसलिये अंगरेजोंने कूटनीतिक चाल से काम लिया। उन्होंने अल हुसैन नामक एक अरबी नेताको जो मक्काके शरीफ कहलाते थे, अपनी ओर मिला लिया और उनके साथ २५ अक्तूबर, सन १९१५में सर हेनरीमैकमेहोनने एक स्वतन्त्र अरब राज्यकी स्थापना करनेका वादा किया। जिसे जेरूसलेमके दरवाजेसे प्रवेश करते वक्त लार्ड एलेनबीने भी सन १९१७ में स्वीकार किया था। सन १९१८ में लार्ड बैलफोरने फिर इसे दुहराया और लार्ड कर्जनने भी सन १९१९में इसे स्वीकृत करते हुए राजा फैजेलके साथ वादा किया। परन्तु, तबतक जर्मनोंने समुद्री सुरंगों, बम बरसाने वाले जेप्लिन वायुयान आदि नये नये वैज्ञानिक आविष्कार कर डाले थे, जिनके चलते अंग्रेजी साम्राज्य का अस्तित्व ही खतरेमें पड़ गया था। जर्मनीके इन नूतन भयङ्कर अस्त्र शस्त्रों का भेद केवल जर्मनीके रहनेवाले यहूदियोंको ही मालूम था और अंग्रेजों को अपने साम्राज्यकी रक्षा करनी थी। फलस्वरुप यहूदियोंको अपने पक्षमें किसी भी कीमतपर मिलानेके लिये अंग्रेज तैयार हो गये और यहूदियोंने भी इस शर्तपर भेद बताना तथा अंग्रेजों की सहायता करना स्वीकार कर लिया कि फिलस्तीन यहूदियोंका वास-स्थान बनेगा। यद्यपि यह सत्य है कि यहूदियोंके लिये वासस्थान और जियोनिस्ट आन्दोलनकी भावना सन १८८० के बादसे हीशुरू हो गयी थी, फिर भी यहूदियोंको अबतक इस दिशामें सफलता नहीं मिली थी। २ नवम्बर १९१७ को यानी राजा फैजलके साथ वादा किये जानेके तीन सप्ताहोंके अन्दरही बैलफोरने यहूदी फेडरेशनके अध्यक्ष लार्ड राथचाइल्डके साथ फिलस्तीनमें यहूदियोंके राष्ट्रीय गृहकी स्थापना का वादा कर दिया।

प्रथम विश्व-युद्ध समाप्त हुआ। मित्र राष्ट्रोंकी विजय हुई। युद्ध घोषणाके समय ही मित्र राष्ट्रोंने सन १९१४ में कहा था कि हम युद्धके नाश और छोटे राष्ट्रोंकी रक्षाके लिये युद्ध करने जा रहे हैं और इससे संसारके छोटे तथा पराधीन राष्ट्रोंको बड़ी बड़ी आशाएं बंधी थीं, पर युद्ध समाप्त होते ही मित्र राष्ट्रों का रुख बदला और पीड़ित एवं पराधीन राष्ट्रोंकी आशा पर पानी फिर गया। युद्धकी समाप्तिके पश्चात लीग आवनेशन्सकी स्थापना हुई और उसने सन १९१० में फिलस्तीनकी संरक्षताका भार ब्रिटिश सरकारको सौंप दिया। उसके कानूनोंकी एक धारामें बताया गया कि फिलस्तीनको स्वतन्त्र समझा जाय, किन्तु इस शर्त पर कि जबतक वह अपने पैरों पर आप खड़ा होने लायक न हो जाय, एक शासनादेश (ब्रिटिश शासना देश) के अन्तर्गत रहे। अरबोंके साथ तो अंगरेजोंने ही पहले वादा किया था कि अरब एक स्वतंत्र राज्य होगा लेकिन वेही अंगरेज अब फिलस्तीन पर शासना-देशके बहाने राज्य करनेको आए। इसके अलावे अरब वाले फिलस्तीनमें यहूदियों को बसाने के भी विरुद्ध थे। फलतः सन १९२०, २१, २९ और ३३ में फिलस्तीनमें घोर अशांति मची रही, हत्याओं और विद्रोहोंका प्रावल्य रहा।

यद्यपि सम्राट पंचमजार्जने ७ जुलाई १९२० को अपना संदेश देते हुए कहा था कि अंगरेजी सरकार फिलस्तीनमें निष्पक्षतासे काम लेगी और देशमें जितनी जाति एवं धर्मवाले हैं, उनके अधिकारों का समादर किया जायगा। फिर भी फिलस्तीनमें पहले अंगरेजोंकी नीति यहूदी समर्थक एवं पक्षपात पूर्ण रही। सम्राट पंचमजार्जकी घोषणा अस्पष्ट थी और इससे यहूदियोंने काफी लाभ उठाया। यह तो प्रायः सभी जानते हैं कि यहूदी संसारमें सबसे धनी जाति है। अरबी मुसलमान मुख्यतया किसान और गड़ेरिये है। यहूदियोंने काफी पैसे खर्च कर गरीब अरबोंकी जमीनें खरीदना शुरू किया। अरबी लोगोंकी जगह बाहर से यहूदी मजदूर ही बुलाबुला कर फिलस्तीनमें भरे जाने लगे। इस बीच हिटलर ने सन १९२८ से ही यहूदी विरोधी नीति अख्तियार की, क्योंकि उसका विश्वास था कि प्रथम महायुद्धमें यहूदियोंके विश्वास घातके कारण ही जर्मनोंकी हार हुई थी। हिटलरने यहूदियोंको अपने देशसे बाहर निकालना शुरू किया। यहूदियों पर नाजी जर्मनों द्वारा तरह-तरहके जुल्म किये गये। ये निष्कासित यहूदी लाखों की संख्यामें फिलस्तीनमें आ-आकर बस गये। फिलस्तीनकी खेती और उद्योग में करोड़ों रुपये लगा कर उन्होंने अरबों को बहुत पीछे छोड़ दिया। नये नये वैज्ञानिक साधनोंको अपनाकर देशकी कृषि एवं उद्योगकी अत्यधिक उन्नति कर डाली। उनके कारण नये नये शहर बस गये, बस रहे हैं और पुराने शहरोंका जीर्णोद्धार हुआ है, हो रहा है। यहूदियोंने अपनी अनेक शिक्षण संस्थाएं खोलकर शिक्षाका प्रचार किया और अपनी भाषा तथा संस्कृतिकी रक्षा और जीर्णोद्धार किया, उसे विकसित बनानेके लिये कुछ उठा न रखा। दूसरी ओर, अरबोंमें अशिक्षा और गरीबी फैली रही। यहूदी अपने कल कारखानोंमें अरबोंको नौकरी नहीं देते और उनकी जमीनें हड़पते जा रहे हैं। साम्राज्यवादी अंगरेजों और अमेरिकनोंके साथ धनीमानी यहूदियोंकी सांठ गांठ रही है और उसीका परिणाम है कि दूसरे विश्वयुद्धके बाद अब फिलस्तीन में यहूदी राज्य स्थापित होने जा रहा है।

भारतीयताके प्रतीक—डा० राजेन्द्रप्रसाद

लेखक—श्री विनोदकुमार मिश्र

दिल्लीके चांदनी चौकमें लाखों नर-नारियों और युवकोंके जन-समूहके बीचमें, एक दुबला-पतला आदमी धोती और कुरतेके ऊपर देहातियों जैसी काली ऊनी बण्डी पहने हुए और कन्धे पर एक ऊनकी लोई डाले हुए मौन होकर चुप-चाप शान्तिके साथ पैदल चल रहा है। जनता बड़ी उत्सुक है कि राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादजी कहां हैं ? सर्दी पड़ रही है। जनता सर्दीके मारे कांप रही है, किन्तु फिर भी वह अपने राष्ट्रपतिका दर्शन करना चाहती है। कुछ मिनटोंके बाद जन-समूहके कानोंमें आवाज आयी कि वही बीचमें चलने वाले हमारे प्यारे देहाती राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू हैं। जनता यह सुन-कर सन्न रह गयी। फिर लाखों नर-नारियों और युवककोंने जय घोषसे आकाश गुंजायमान कर दिया। यह घटना १९३४-३५ की है। राजेन्द्र बाबूके जीवनमें ऐसी अनेक घटनाएं हैं। बम्बई कांग्रेस जब होने जा रही थी तब कुछ राजेन्द्र बाबूको ठीक न जानने वाले लोगों ने उन्हें देखा और कहा—यह 'गंवार-सा' यह 'सिम्पुलटन' ऐसे कठिन समयमें कांग्रेस का पथ प्रदर्शन क्या करेगा ? चुपचाप सेवा भले कर ले।' पर, जानने वाले जानते हैं कि राजेन्द्र बाबू ही पहले राष्ट्र-पति थे जिन्होंने अपनी असाधारण कार्य क्षमता दिखायी और देशमें तूफानी दौरा कर घर-घर कांग्रेसका सन्देश पहुंचाया।

उपर्युक्त घटनाओंसे राजेन्द्र बाबूकी सादगीका पता चलता है। राजेन्द्र बाबू देशके लाख लाख किसानोंके सच्चे प्रति-निधि—भारतीयताके यथार्थ प्रतीक हैं। राजेन्द्र बाबूकी शक्ल-सूरतमें कोई विशेष आकर्षण नहीं है। आकर्षण तो दूर रहा उल्टे उनकी शक्ल-सूरत करुणोत्पादक जान पड़ेगी। कमजोर शरीर, गांधी टोपीके नीचे सिरसे सटाकर कटे हुए छोटे-छोटे बाल, लम्बी नाक, बड़ी-बड़ी किन्तु बिखरी हुई वे तरतीब मूंछे, खद्दरका कुर्ता-धोती, दमेकी पुरानी बीमारीसे कुछ मर्राई-सी आवाज—ये सब चीजें उनके बाह्य रूपको एक प्रकारसे दयनीय बना देती हैं।

परन्तु उस खद्दर की टोपीसे ढके हुए मस्तिष्कमें अनोखी बुद्धिमत्ता है उन कोटरोंमें, धंसी हुई आंखोंमें वह ज्योति है। जो देशके उज्ज्वल भविष्यको देख सकती हैं। उन बिखरी मूंछोंके नीचेके ओठोंसे निकलने वाली मर्राई-सी आवाजमें सच्चाई की मिठास और ज़बर्दस्त दृढ़ता है। उनकी दमेसे पीड़ित प्रत्येक सांस राष्ट्रके हितके लिये और जनताके परोपकारके लिये उत्सर्ग है। उनकी दुर्बल भुजाओंमें वह शक्ति है, जो वर्षोंसे संसारकी सबसे शक्तिशाली शक्तिसे लोहा लेती रही है उनके सूखे चेहरे पर उच्च चरित्रकी छाप है और उस दुर्बल शरीरमें निवास करने वाली आत्मा ऐसी महान है, जिस पर कोई भी देश गर्व कर सकता है। इन सब के साथ साथ उनमें बच्चों-सा भोलापन, स्फटिक-सी पारदर्शी निष्कपटता, कुन्दन-सी खरी ईमानदारी तथा विरोधियोंके प्रति भी उदारता है और अतुलनीय विनम्रता।

आरम्भसे अन्त तक राजेन्द्र बाबू एक सेवक हैं। इस सेवाके साथ वह किञ्चित साधक भी हो गये हैं। और उन्होंने एक सीधा भक्ति एवं श्रद्धाका मार्ग पकड़ा है। इस मार्गमें सन्देह नहीं है, शंका नहीं है। संशय नहीं है। यह विश्वासका पथ है, यह आत्मदानका पथ है। गंगाके समान मानवताके विशाल क्षेत्रमें यह नदी बह रही है। इसमें सोनकी उग्रता नहीं और नर्मदाकी वक्रता भी नहीं। इसकी अपनी एक ही धुन है और एक ही आकांक्षा है—दरिद्रनारायणकी सेवा। इस सेवामें सत्य उसका लक्ष्य है, अहिंसा उसका साधन है और निष्कपट हृदय इसका प्रबलअस्त्र है। सन १९१० में राजेन्द्रबाबू श्री गोखलेके सम्पर्कमें आये थे। आप श्री गोखलेकी 'भारत सेवक समिति' में शामिल होना चाहते थे लेकिन स्वर्गीय बड़े भाई महेन्द्रबाबू की अनुमति प्राप्य न होनेके कारण शामिल नहीं हुए। उस समय आपने अपने बड़े भाइको जो पत्र लिखा था। उसकी एक एक पंक्ति आज चिल्ला कर कह रही है कि राजे-न्द्रबाबूमें सेवाकी जन्मजात भावना है। राजेन्द्रबाबूने उस पत्रमें लिखा था—"यदि मेरे जीवनमें कोई महत्वाकांक्षा रही हतो यही कि मैं अपने देशकी किंचित सेवा कर सकूं। मुझे में माताकी सेवाके अतिरिक्त कोई और महत्वाकांक्षा नहीं हैं।" आजसे ३७ वर्ष पहले लिखे गये इस पत्रमें राजेन्द्रबाबूका सम्पूर्ण जीवन बोलता है। राजेन्द्रबाबू आरम्भसे अन्त तक सेवक हैं। राजेन्द्रबाबू गांधीजीके सच्चे अनुयायी हैं। वे अन्ध भक्त नहीं—समझदार भक्त हैं।

राजेन्द्र बाबूके विकासमें उनके बड़े भाई महेन्द्रजी, जिन्हें राजेन्द्रबाबू पिताके समान मानते थे, कितने सहायक हुए इसका जिक्र करनेकी आवश्यकता नहीं। स्वदेशका प्रेम राजेन्द्रबाबूमें उनके भाईने स्कूलसे पैदा कर दिया था। जब १९०५ में बंग-भङ्ग आन्दोलन शुरू हुआ तो राजेन्द्रबाबू का वह स्वदेश प्रेम पूर्ण रूपेण विकसित हुआ। राजेन्द्रबाबूने अपनी आत्मकथामें लिखा है कि ७ अगस्त १९०५ की बड़ी सभामें जिसमें विदेशी वस्तुओंका बायकाट और स्वदेशीके प्रचारका निश्चय हुआ, मैं शरीक था। उसमें बहुत उत्साह था। लोगोंने व्रत लिया कि स्वदेशीका ही वे व्यवहार करेंगे। मेरे लिये इसमें कोई कठिनाई नहीं थी। क्योंकि मैं बहुत

पहले ही से केवल स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार किया करता था।

राजेन्द्रबाबू बड़े मेधावी छात्र थे। कलकत्ता विश्वविद्यालयसे सन १९०२ में आपने एन्ट्रेन्सका परीक्षामें सर्व प्रथम स्थान पाया था। उस समय बंगाल, बिहार आसाम और बर्मा आदिके छात्र कलकत्ता विश्वविद्यालयके अन्तर्गत ही परीक्षाओंमें बैठते थे। राजेन्द्रबाबू प्रथम बिहारी थे, जिन्होंने यह सम्मान प्राप्त किया। उसके बाद राजेन्द्रबाबूने कलकत्ता विश्वविद्यालयकी कई परीक्षाएं पास की और प्रायः सबमें प्रथम रहे। शिक्षा समाप्त कर आप वकील हुए और ऐसे वैसे नहीं काफी नामी। राजेन्द्रबाबूने कलकत्ता हाईकोर्ट वकालत शुरू की थी। शमसुलहुदा साहबने उनको कई मुकदमे दिलवाये थे। प्रत्येक पेशीके पहले राजेन्द्रबाबू कानून पढ़ कर कोर्टमें जाते। एक बार जस्टिस आशुतोष मुखर्जीके इजलासमें एक मुकदमेकी पेशी हुई। राजेन्द्रबाबूके सीनियर वकील बहस कर रहे थे। राजेन्द्रबाबू मदद दे रहे थे। और नजीर पर नजीर पेश करनेके लिये उनके हाथमें देते जा रहे थे। सर आशुतोष सब देख रहे थे। कुछ देर बाद उन्होंने राजेन्द्रबाबूसे पूछा कि और कौन नजीर वहां है। बता दो किताबें मंगाई। उस मुकदमेका फैसला लिखा गया, जो अपने ढंगका नामी माना जाता है। राजेन्द्रबाबू उसी दिनसे सर आशुतोषकी आंखोंमें आ गये। सर आशुतोषने राजेन्द्रबाबूको ला कालेजका प्रोफेसर बनाया। कलकत्ता और पटना दोनों हाईकोर्टमें राजेन्द्रबाबूकी वकालत अच्छी चल रही थी। रुपयोंकी आमदनी भी बढ़ी, लेकिन राजेन्द्रबाबूकी 'कामरियापर चढे न दूजा रंग'। वे बराबर पहले जैसे ही रहे। सन १९१७ में गान्धीजीने चम्पारन-सत्याग्रह छेड़ा और राजेन्द्र बाबू उनके दाहिने हाथ बने। सत्याग्रह सफल हुआ। देशने गान्धीजीको महात्मा और राजेन्द्र बाबूको 'विहारका गान्धी' की उपाधि प्रदान कर सम्मान किया। अब राजेन्द्र बाबू सेवाके राज मार्गपर थे। सन

राजेन्द्र बाबू राजनीतिक नहीं एक साहित्याचार्य भी हैं। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे आपका संबंध बहुत पुराना है। कलकत्ता अधिवेशनके स्वागत मंत्री और पटना अधिवेशनके आप स्वागताध्यक्ष थे। नागपुर अधिवेशन में आपको अध्यक्ष बनाया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष पदसे दिया गया आपका भाषण हिन्दी साहित्यकी कीमती चीजोंमें एक है। राजेन्द्र बाबूको सरल सुबोध और मुहावरेदार भाषा लिखनेमें कमाल हासिल है। आपकी स्मरण शक्ति गजबकी है आपको बड़ी-से बड़ी और छोटी से छोटी बातोंकी याद भी हमेशा बनी रहती है। आप कभी किसी से पहचान हो जानेपर उसे नहीं भूलते हैं।

राजेन्द्रबाबूने बिहारसे 'देश' नामक का हिन्दी साप्ताहिक पत्र भी निकाला था और उसका वर्षों तक सम्पादन किया। हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनानेके आप बड़े पक्ष पाती हैं। पटना विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालयमें हिन्दीको माध्यम बनानेके लिये आपने बराबर आवाज उठायी है। इसके अलावा आपने विहार विद्यापीठकी स्थापनाकर राष्ट्रीय शिक्षाको प्रोत्साहन दिया। राजेन्द्रबाबूकी 'चम्पारनमें गान्धी,' 'खण्डित भारत', आत्मकथा आदि पुस्तकें हिन्दी साहित्यके अमूल्य रत्न हैं। राजेन्द्र बाबूके भाषणोंमें उत्तेजना नहीं रहती है, लेकिन वे एक शिक्षककी भांति अपनी विवेक पूर्ण बातें लोगोंके गले उतार देते हैं। वे राजनीतिज्ञों जैसी घूमा फिरा कर बातें करना नहीं जानते। अंग्रेजी भाषाका अगाध ज्ञान होनेपर भी उनकी हिन्दी 'खिचड़ी' नहीं होती है।

महाराजा जनक भगवान बुद्ध और सम्राट अशोकके विहारका प्रतिनिधि—राजेन्द्र बाबू आज देशके स्वतन्त्र हो जाने पर—हमारा राष्ट्रपति, देशका विधान प्रस्तुत करने वाली संस्था 'विधान परिषद' का अध्यक्ष और नवगठित भारतीय सरकारका खाद्य एवं कृषि मन्त्री हैं। वह देश का सच्चा सेवक है इसलिये राष्ट्रपति है, वह विधान और कानूनका अगाध पण्डित हैं, इसलिये विधान परिषदका अध्यक्ष है और वह लाख-लाख किसानोंका प्रतिनिधि, उन्हींकी तरह रहन-सहन और वेष भूषा वाला है इसलिये खाद्य और कृषि मन्त्री है। कृषि और खाद्य मन्त्रीकी हैसियतसे उसने इतना खाद्यान्न जमाकर दिया है कि देशके सिरसे अकालका भूत हट गया है। उसके विधान परिषदके अध्यक्ष होनेसे जनवादी विधान बन रहा है और उसके राष्ट्रपति होनेसे राष्ट्रके सामने उपस्थित तमाम उलझनोंका समाधान अनिवार्य है। उसके जीवन पर प्रकाश डालना इतने छोटे लेखमें सम्भव नहीं। अन्तमें हम सुमनजीके शब्दोंमें कहते हैं:—

—और राजेन्द्र बाबूका विश्लेषण क्या किया जाय? उनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। यहां तो सब दूध ही दूध है इसमें मिलावट नहीं पानी नहीं। उनके रंग-रूप और उनकी आन्तरिक महत्ता दोनोंको देखकर तो ऐसा मालूम होता है मानों एक अटपटी और बेडौल हांडीमें भगवानने आकण्ठ अमृत भर दिया हो। जो स्वभावसे ही किसीका अकल्याण चाहनेमें असमर्थ है जो दूसरोंके प्रति पूर्ण ईमानदार है—वह हैं राजेन्द्र प्रसाद।

यह शरीर सेवा। यह जीवित श्रद्धा। यह मूर्त्त त्याग। इसे हम क्या कहें। इसे तो हम ले ही ले सकते हैं और वह देनेमें कब कुण्ठित हुआ है, उसने आत्मदानमें कबप्रवञ्चना की है?

नरेश ही देशको स्वाधीन करायें

लेखक—राजा महेन्द्र प्रताप

मेरा सदैवसे ऐसा मानना रहा है कि हमारे भारतीय नरेश ही इस देशको आजाद करा सकते हैं और उन्हें ऐसा चाहिये भी। यह सत्य है कि मैं एक कांग्रेसी हूँ, किन्तु मैं उन कांग्रेसी कार्यकर्ताओंसे जो ऐसा सोचते हैं कि वर्तमान युगमें राजाओंका होना निष्प्रयोजन है, सहमत नहीं। यदि इंगलैंडका बादशाह आज भी सिंहासन पर बैठ एक महान गणतान्त्रिक देशका शासन सूत्र संभाल सकता है तो हमारे देशके राजे, महराजे और नवाब भी हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृतिको आगे रख कहीं उससे भी अधिक कर सकते हैं।

मेरा विश्वास है कि हम एक ऐसे युगमें रह रहे है जब कि हमारी प्राचीन आध्यात्मिक महत्ताएं समाजको शांतिप्रिय बना कर रखनेके लिये की गयी कितनी ही खोजोंके लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।

राजे या तो उस विचारधारा द्वारा, कि जिसका प्रपोषक वर्तमान रूस है उठाये गये तूफानमें विलीन हो जायंगे और नहीं तो एक ऐसी आर्य सरकारकी स्थापना करेंगे जो कि पूंजीवादी अमेरिका और साम्यवादी रूसमें शान्ति स्थापित करानेकी दिशामें अग्रसर हो सकेगी। मेरा विश्वास है कि महात्मा गांधीके सिद्धान्त विश्वसंघ की स्थापना, धर्मोंका समन्वय और सहकारात्मक प्रणालीके मेरे दृष्टिकोणसे मिल मानवताको युद्धोंकी ओर उन्मुख होनेसे रोक सकेंगे और समूचो—मानवशक्तिको मानवमात्रके सुखी परिवारकी स्थापनाकी दिशामें प्रवाहित कर सकेंगे।

हमारे स्वतन्त्र विकास मार्गकी सबसे बड़ी कठिनाई पराधीनता है। १५ अगस्त को प्राप्त नकली आजादीके बावजूद भी हम ब्रिटेनके ही पीछे जुटे हुए हैं। इंगलैंड में एक महान संघर्ष छिड़ा हुआ है। धन सम्पन्न और शक्तिशाली वर्ग ब्रिटिश श्रमिकों से टक्कर ले रहा है। हम भारतीयोंको एक अथवा दूसरे ब्रिटिश पक्षका साथ देनेके लिये बाध्य किया गया है। केवल भारतीय शासक ही ऐसी संकटपन्न स्थितिमें देशकी वास्तविक रक्षा कर सकते हैं। हम हर प्रकारकी ब्रिटिश दासतासे मुक्त होना चाहते हैं और इस महान उद्देश्यकी पूर्तिमें हमारे राजे ही अपने सैन्य बल द्वारा जनता की सहायता कर सकते हैं। हर प्रकारकी बहकानेवाली बातें हमारे मध्य फूटके बीज बो पारस्परिक कलह मचानेके उद्देश्यसे कही गयी हैं।

काले अथवा भूरे शोषणकीप्रवञ्चना पूर्ण बातें हमें विदेशी शासनसे मुक्ति पानेके लिये प्रयत्नशील न होनेके लिये ही रची गयी हैं। मेरा कहना है कि सबसे पहले हम विदेशी बन्धनसे मुक्ति पालें, इसके बाद एक उच्च कोटिकी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था स्थापित करनेके लिये हमारे पास यथेष्ट अवकाश होगा। वे लोग जो कि वर्तमान में समाजवाद अथवा साम्यवादकी डींग मारते हैं, निस्संदेह हो वे हमारे विचारोंको असली दिशामें बढ़ने देनेसे रोकते हैं और विदेशी शासनका ही मार्ग निष्कंटक बनाते हैं।

हिन्दू मुसलमान अथवा सिखके रूपमें फैली हुई विषमता, जो कि वैज्ञानिक ढंगसे रची और विकसित की गयी है, विदेशियों का ही स्वार्थ साधती है।

यह उन नरेशोंका कर्तव्य है कि ईरान से आसाम तक फैले हुए आर्योंको पूर्ण स्वाधीनता दिलानेकी दिशामें कदम बढ़ायें। किन्तु इन नरेशोंको हर सम्भव प्रकारसे बदनाम किया गया है और एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी गयी है, जिससे कि उनका बच सकना भी असम्भव हो गया है। मेरा सुझाव तो यह है कि वर्तमान नेता केवल ब्रिटिश सत्ताका विरोध मान करके ही 'नेता' बने हैं, किन्तु नरेश ब्रिटिश सत्ताको समूल अन्तकर नेता बनें।

मैं शासकोंको यह विश्वास दिला देना चाहता हूँ—कि यदि वे पूर्ण स्वाधीनताको ही अपना चरमलक्ष्य मानकर उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होंगे तो वे अवश्य ही जनताके दिलोंपर काबू पालेंगे और जन्म जात नेताके रूपमें माने जायंगे। जनताने दीर्घकाल तक बलशाली और विजयी नरेशों के गीत गाये हैं।

हमारे इस समाजमें जैसे कि ब्राह्मणों, सैय्यदों, बनियों, बोहरों कायस्थों और खत्रियोंने बौद्धिक क्षेत्र में नेतृत्व किया है, उसी प्रकार राजपूतों, पठानों, जाटों और मरहठोंने सदियों तक धरापर शासन किया है। यदि हमारे नरेश जो कि अतीत के वीरोंकी संतान हैं, अपने वीरत्वका परिचय देनेके लिये एकबार फिरसे मैदान में आ डटते हैं तो हमारे दुखोंका शीघ्र अन्त हो जाना निश्चित प्राय है।

श्रमिक, कृषक, किसानी अथवा घरका एक मामूली नौकर शांति और समृद्धिके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता। विधिवत स्थापित और रक्षित सरकारकी स्थापना कर केवल तुम्हीं [नरेश] उनको भरपेट रोटी दे सकते हो। धोखेबाज नेता उनको बहकाकर यत्र तत्र अशांतिकी आग भड़का रहे हैं। निम्न श्रेणीके लोगोंको इन नेताओं की हर मांगको पूरी करनेके लिये घोर परिश्रम करना पड़ता है। मैं कहता हूँ कि हम हर झोपड़ीके द्वार तक पूर्ण स्वतन्त्रता का जय घोष पहुंचा सकते हैं और श्रमिकों को देशकी सम्पत्तिका भागीदार बना सकते हैं। प्रजामण्डलों तकने भी नगण्य ग्रामोंके लिये अपनेको संघर्ष रत बनाया है। किन्तु नरेश अपनी हर प्रजा, हर कृषक और श्रमिकके साथ हो, मातृभूमिकी रक्षा कर ईरानसे आसाम तकके आर्योंको पूर्ण स्वाधीन बना सकते हैं।

हिन्दी या उर्दू

(१४वें पृष्ठका शेषांश)

से निकला है। परन्तु इसका बहुवचन 'लवां' फारसी व्याकरणके अनुसार नहीं बनाया, ग्रामीण हिन्दीके अनुसार बनाया है। इसलिये कह सकते हैं कि वलीकी उर्दूका कलेवर बदल चुका था परन्तु उसकी आत्मा अभी तक हिन्दी थी।

उर्दू कविताके रचनाकालको मैं तीन भागोंमें बांटता हूं—प्राचीन काल, मध्य काल और आधुनिक काल। प्राचीन काल की रचनाका एक नमूना मैं आपको वली की कवितामें से दे चुका हूं। अब मैं आपको दो उदाहरण मध्य कालकी कविता में से देता हूं। प्राचीन कालमें तो उर्दू हिन्दीका ही रूपान्तर मात्र थी। मध्य कालमें उर्दूने अपना पृथक अस्तित्व स्थापित कर लिया था, परन्तु उर्दू कवितामें अधिकतर शब्द मामूली बोल-चालके आते थे। अकबर कवि मध्य कालके अन्तिम प्रतिनिधियोंमें से थे। उनका एक शेर तो प्रसिद्ध हो गया है।

जब गम हुआ चढ़ा लीं दो बोतलें इकट्ठी।
मुल्लाकी दौड़ मस्जिद, अकबरकी दौड़ भट्टी॥

अकबरने लैला और मजनूंके विषय में एक कल्पित कहानी पद्यमें लिखी है।

कहा मजनूंसे यह लैला की मांने।
कि बेटा, तू अगर करले एम०ए० पास॥
तो फौरन ब्याह दूं लैलाको तुझसे।
बिला दिक्कत मैं बन जाऊं तेरी सास॥
कहा मजनूंने यह अच्छी सुनायी।
कहां आशिक, कहां कालिजकी बकवास॥
बड़ी बी आपको क्या हो गया है।
हिरन पर लादी जाती है कहीं घास॥
यह अच्छी आपने की कद्रदानी।
मुझे समझा है कोई हरचरनदास॥

इन रचनाओंमें फारसीके शब्द काफी हैं, परन्तु उनमेंसे अधिकतर ऐसे हैं जिनका मतलब सब कोई समझ लेते हैं। इनकी भाषाको 'सलीस उर्दू' अर्थात सरल उर्दू कह सकते हैं।

अब एक नमूना आधुनिक उर्दूकी कविताका देखिये। यह मैं उर्दूके मौजूदा कवि 'जोश' मलीहाबादी की कवितामेंसे लेता हूं।

ऐ तू कि तेरी नाजुक हस्तीमें काम आई।
फितरत की इन्तहाई, तखईले दिल रुबाई॥

यह शेर सोलह आने आधुनिक उर्दू कविताका शेर है। यद्यपि मैंने हाईस्कूलकी परीक्षा उर्दू लेकर पास की थी तथापि मेरे लिये भी इस शेरका समझना आसान न था। यह आजकलकी उर्दू 'हिन्दुस्तानियत' अर्थात 'स्वदेशीपन' से कोसों दूर है। यह प्रसंग मेरे इस निबंधका केन्द्र विन्दु है इसलिये इसकी आलोचना विस्तार पूर्वक फिर करूंगा।

द्विवेदी युगकी महान—विभूति

व्याकरणाचार्य पं० कामताप्रसाद गुरु

लेखक—श्री उमाशंकर शुक्ल

हिन्दीको राष्ट्र भाषाका गौरवशाली पद प्राप्त हुआ-वह राजभाषा बनने जा रही है। हिन्दीके लिये जिन महान साहित्यिकों ने जीवन भर परिश्रम व त्याग किया—उनमेंसे स्व० कामता प्रसाद गुरुका भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है और उनकी साधना व तपस्याका ही फल है जो आज हिन्दीको हम इस रूपमें फलता फूलता देख रहे हैं। आज हिन्दीपर महान संकट आया हुआ है और ऐसे समयमें पं० कामता प्रसाद गुरुका हमारे बीचसे उठ जाना—एक बहुत ही दुःखद घटना है। मृत्युपर आज तक किसीने विजय नहीं प्राप्त की। मृत्युने सबपर विजय प्राप्त की—यह मृत्यु की विशेषता है।

संस्कृतमें महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी मुख्यतः व्याकरणका सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ है। उसका सम्बन्ध प्रधानतया संस्कृत भाषा तथा उसकी सूक्ष्म भाषा सम्बन्धी बारीकियोंसे है। संस्कृत साहित्य का इतिहास इसका विषय न होते हुए भी भाषा की खूबियोंको अच्छी तरह से दिखलानेमें विद्याके अन्य विभागोंका स्थान स्थानपर उल्लेख करना पड़ा है। वह इतने महत्वका है कि संस्कृत साहित्यके अनेक अज्ञात ग्रन्थ रत्नोंका इससे परिचय मिल जाता है। हिन्दीमें गुरुजीने व्याकरणका निर्माण कर इतना बड़ा कार्य किया है कि उन्हें हिन्दीका पाणिन कहा जाने लगा है। हिन्दी जगत उन्हें द्विवेदी युगके महान साधक के रूपमें देखता रहा है। हिन्दी भाषाके रूपरेखा और उसके सुडौलपनका श्रेय गुरुजीको ही है। उन दिनों जब भाषा की व्याकरणका कोई साहित्य न था और विदेशी कलमसे लिखी गयी भाषा भास्कर का प्रचार था—उस समय इन्होंने हिन्दी व्याकरणको जन्म दिया। भाषामें सौन्दर्य लाये। उसे प्रवाहमय बनाया। इसकार्य के लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया और वह काम इतना बड़ा है कि युगों तक पं० कामता प्रसाद गुरुका नाम नहीं भुलाया जा सकेगा। हजारों वर्ष बाद भी लोग गुरुजी के कार्य को आदर व श्रद्धाकी दृष्टिसे देखेंगे।

बाल जीवनकी एक घटना

पर वे सिर्फ व्याकरणाचार्य ही नहीं थे, किंतु हिंदीके सुकवि, मंजे हुए लेखक तथा सफल सम्पादक भी थे। 'सरस्वती' और 'बालसखा' का सम्पादन भी कुछ समय तक आपने किया था। बच्चोंके लिये लिखना बड़ा कठिन होता है और बहुत कम लोगोंको उसमें सफलता मिलती है पर गुरुजी बच्चोंके लिये बराबर लिखते रहे। यहां तक कि 'बालसखा' के वार्षिक विशेषांकमें भी उन्होंने लिखा। १९४६ के वार्षिक बालसखामें 'बचपनकी एक घटना' शीर्षक लेखमें उन्होंने लिखा था कि "मैं अपने नटखट स्वभावसे घरमें सभीको तंग किये हुए था। गरमीके दिनोंमें दोपहरको जब सब लोग कमरेमें आराम करते; तब मैं अपने उपद्रवोंकी सूचीमें से निश्चय करता कि मुझे आज दोपहरको कौन सा उपद्रव करना है; तालाबमें कूदकर दूर तक तैरते निकल जाना,वृक्ष पर चढ़ जाना, घोड़ेपर चढ़कर दूर निकल जाना बहुत मामूली बातें थीं।'

आगे चलकर उन्होंने लिखा है कि--इसी उपद्रवी स्वभावके कारण मैं अपने उस पहाड़ी घोड़ेकी मृत्युका कारण बना जिसके कारण कुछ दिन पूर्व पिताजीने मुझे पीटा था। जहां घोड़ा बांधा जाता था, उसी स्थानके पास बर्रों का छत्ता था। मैं एक दिन दो पहरको अस्तबल गया और बिना समझे बूझे उन बर्रों को भड़काकर मैं भाग खड़ा हुआ। मैं तो बच निकला—एकाध ने ही शायद, हाथमें काटा, पर बेचारा घोड़ा उनके आक्रमणसे न बच सका। उन बर्रोंने समूह रूपसे घोड़ेपर हमला किया। घोड़ेको बड़ा कष्ट हुआ। हर प्रकारकी कोशिश और चिकित्सा की गयी पर वह तीन दिन बाद तड़प तड़प कर मर गया। इस घटनाकी याद कर मैं आज भी, अपनी नादानीके कारण, प्यारे घोड़े की मृत्युपर खेद प्रकट किया करता हूं।

पाठक देखेंगे कि गुरुजीने बच्चोंके लिये कितनी सीधी साधी और सरल भाषाका प्रयोग किया है। पर आजके हमारे लेखक जब बच्चोंके लिये लिखने बैठते हैं तो वे यह भूल ही जाते हैं कि वे बच्चोंके लिये लिख रहे हैं और अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित करनेके लिये कठिनसे कठिन शब्दोंका प्रयोग कर देते हैं और यही कारण है कि हमारा बाल साहित्य अन्य देशी भाषाओंके बाल साहित्यसे पिछड़ा हुआ है। आज हिन्दीमें गिजू भाई नहीं हैं।

बेटी की बिदा-अमर रचना

कविताएं भी इन्होंने खूब लिखीं—पर जितना माधुर्य और करुणा इनकी 'बेटीकी बिदा' कविता में है—उतना शायद अन्य कवितामें नहीं। 'बेटीकी बिदा' कविता—पढ़कर तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। जब मैं बीस वर्ष पूर्व हिन्दीकी चौथी कक्षामें पढ़ता था- उस समय हमें जो हिन्दीकी चौथी पुस्तक पढ़ाई जाती थी उसमें गुरुजीकी यही कविता थी। वह कविता जब मैं अपनी मांको पढ़कर सुनाता था तो वे रो देती थीं और उस दिन जब मैंने अपनी मां से कहा कि 'अम्मा तुम जानती हो--मैं छुटपनमें तुम्हें 'बेटीकी बिदा' कविता सुनाता

था और तुम रोती थीं। मांने कहा--हां जानती हूं--कहो क्या बात है। मैंने उत्तर दिया कि बात यह है कि उसी कविताको बनानेवाले पं० कामताप्रसाद गुरुका देहांत ७४ वर्षकी आयुमें गत १६ नवम्बरको जबलपुरके विक्टोरिया अस्पतालमें हो गया है। मां बहुत दुखित हु। मां की आंखोंसे दो आंसू ढुलक पड़े। न जाने, उन कितनी ही माताओंकी आंखोंसे उनके निधनका समाचार सुनकर आंसू ढुलके होंगे जिन्होंने 'बेटीकी बिदा' सुनी होगी। वह कविता मुझे इतनी अच्छी लगी कि जब मैं पांच वर्ष पूर्व चौथी कक्षाकी पाठ्य पुस्तक बनानेके लिये बैठा तो मैंने उसे स्थान दिया। यद्यपि मेरे कुछ सहयोगी कहते थे कि कविता पुरानी है--पर मैंने उन्हें कहा था कि पुरानी है तो क्या हुआ अच्छी तो है। मैं यहां पर उस कविताकी कुछ पंक्तियां उद्धृत करनेका लोभ नहीं संवरण कर सका हूं—

बेटीकी बिदाके अवसर पर मां अपनी समधनसे कहती हैं—

"पूजे कई देवता हमने
तब इसको है पाया।
प्राण समान पालकर इसको
इतना बड़ा बनाया।
आत्माही यह आज हमारी
हमसे बिछुड़ रही है।
समझाती हूं जी को तो
भी धरता धीर नहीं है।
बहिन ढिठाई माताकी तुम
मनमें नेक न धरियो।
इस कोमल बिरवाकी रक्षा
बड़े चावसे करियो।
है यह नम्र मेमने से भी
भीरु भृगीसे बढ़ कर।
कड़ी बात या चितवन से
यह कंप जाती है थरथर॥
है गंवार यह भोली भाली
नहीं शिष्टता जाने।
तिस पर भी गुरुजन की
आज्ञा बड़े प्रेमसे माने।
सांचेमें तुम इसे ढालियो
कभी न यह तड़केगी।
बहिन सिखानेसे चतुराई
बेटी सीख सकेगी॥

*　　*

द्विवेदी-युगके स्तंभ

गुरुजी बहुतही नम्र तथा सरल स्वभावके व्यक्ति थे। विनोदी भी खूब थे। हिन्दीकी उन्होंने जन्मभर तक सेवा की है और अन्तिम दिनों तक वे हिन्दी के भण्डारको भरते रहे। दुःख है कि उनका जितना सम्मान हिन्दीवालोंको करना चाहिये था—उतना नहीं किया गया। हिन्दीवालोंका दोष नहीं—यह उनकी आदत है। न जाने कितने साहित्यिक हमारे बीचसे उठ गये—सबका यही हाल रहा। मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, पं० रामचन्द्र शुक्ल आदिका हिन्दीवालोंने उनके जीवन कालमें सम्मान नहीं किया। हिन्दी वालोंके लिये यह लज्जाकी बात है। मध्यप्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन उन्हें अपना अध्यक्ष तक न बना सका और तो और। एक बार अध्यक्ष बनानेका निर्णय किया भी गया तो वे बीमार हो गये। गुरुजीने हिन्दीको बहुत दिया है। उनका प्रकाशित साहित्य इस प्रकार है—अंत्याक्षरी पद्यपुष्पावली, पार्वती और यशोदा, सुदर्शन, हिन्दुस्तानी, शिष्टाचार, देशोद्धार सत्य प्रेम, भौमासुर बध, विनय पचासा, हिन्दी व्याकरण। साहित्यकारके नाते गुरुजी की ख्याति द्विवेदी युगके सेवियों की कोटिमें है।

जीवन शिक्षण

आपका जन्म पौष कृष्ण ६ सम्वत १९३२ को परकोटा सागरमें हुआ था। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आपका आस्पद पाण्डेय है। तथापि पूर्वजोंकी दीक्षावृत्तिके कारण वंशानुक्रमसे आप 'गुरु' कहलाते थे। आपके पूर्वज तीन सौ वर्ष पूर्व कानपुर जिलेसे आकर सागर जिलेके गढ़पहरामें बसे थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सागरमें हुई थी। सन १८९२ में आपने सागर हाई स्कूलसे मैट्रिक परीक्षापास की। बादमें वहीं शिक्षक हो गये थे। आपका झुकाव साहित्यकी ओर था और आपने उर्दू व फारसीका भी अध्ययन किया। सागरमें तीन वर्ष शिक्षक पद पर काम करने के बाद रायपुर हाईस्कूलमें बदली हो गयी। पांच वर्षके बाद वहींके नार्मल स्कूलमें आपने अपनी बदली करा ली। साहित्यका अध्ययन बराबर जारी था। छुईखदानके राजकुमारके शिक्षकका भी काम मिला! फिर वे कालाहंडी रियासतके मिडिल स्कूलके हेडमास्टर तथा डिप्टी इंस्पेक्टर नियत हो गये। उड़िया भाषाका भी अध्ययन किया। आप फिर जबलपुर नार्मल स्कूलमें बदल कर आ गये। तीस वर्ष तक शिक्षक पद पर काम करनेके बाद सन् १९२८ में अवकाश ग्रहण किया। जबलपुरमें रहने लगे। सरस्वती शुभचिंतक आदिमें लेख लिखने लगे! सन १९१८ में एक वर्षकी छुट्टी लेकर आप इंडियन प्रेस प्रयागमें 'बालसखा' व 'सरस्वती' का संपादन करने गये थे। आप अच्छे समालोचक भी थे। बंगला, मराठी, गुजराती भाषाओंका आपको अच्छा ज्ञान था। इस छोटेसे लेखमें गुरुजीके जीवनकी विस्तृत बातोंपर प्रकाश डालना असंभव है—इसके लिये तो एक पुस्तक ही चाहिये। संक्षिप्तमें गुरुजी एक प्रतिभा—सम्पन्न साहित्यिक, व्याकरणाचार्य, अखड़ संपादक, सुकवि तथा हिन्दीके वरदपुत्र थे।

*　　*　　*

विनम्र श्रद्धांजलि

उनके निधनसे हिन्दी संसारकी अपूरणीय क्षति हुई है। मध्यप्रांतमें बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानुके बाद ये दूसरे साहित्य महारथी हैं जिनका निधन हुआ है। हम हिन्दी जगतकी वाणीको संस्कार प्रदान करने वाले महान तपस्वी साहित्यिकको विनम्र श्रद्धांजलिअर्पित करते हुए ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्माको शांति दे।

सुधनवाकी मा

कहानी

लेखक—श्रीरामशर्मा 'रा.'

सुधनवाकी मांने जाने कितने यत्नसे जोड़-तोड़ करके पांच सौ रुपये एकत्र किये थे। उसने पीसने पीसकर, अपने सुधनवाको पाल लिया और पढ़ा भी लिया। अब उसका विचार था कि उसके जीते-जी सुधनवाका विवाह हो जाये। घर बस जाये, तो वह सुख-शांतिकी सांसलेती हुई, उस जीवनके किनारेसे चली जाये,—दूर हो चायें वह सुधनवाकी मां! किन्तु कैसी विवशताकी बात थी कि उसका सुधनवा पढ़ लिख कर, कामसे लग कर भी और अपनी जाति-बिरादरीके बहुत-से लड़कोंमें सुन्दर होकर भी, कोई लड़की वाला उसकी ओर नहीं देखता। "सो कोई नहीं चाहता कि सुधनवा पिसनहारीका पुत्र भलेही हो, पर है सात्विक, भला और मिलनसार, इसलिये उसको अपनी लड़की देना कोई भी खोटेकी या बेइज्जती की बात नहीं। किन्तु बैश्य कुलमें जन्म लेकर भी पिसनहारीका पुत्र बनना, पैसे-पैसे से मोहताज होना ही, जैसे सुधनवाके जीवनमें एक ऐसी रेखा खिंच गयी थी कि जिसे उसका समाज अच्छी दृष्टिसे नहीं देख पाता। वह—यह अनुभव नहीं करता कि अगर पैसा नहीं, तो क्या! शिक्षित तो है और सभ्य! कमाऊ और सच्चरित्र! लेकिन, उस समाजके लिये पैसेका न होना मानो जीवनका एक ऐसा कलंक था कि जो न धोया जा सकता था, न मिटाया जा सकता था। निदान, जहां-तहां सुधनवाके विवाहकी बात चली, वह इसी कारण दब गयी कि वह पैसेसे खाली था। कुछ रुपयों की नौकरी करता था। पिसनहारीका बेटा था।

एक दिन जब मुहल्लेके समाजमें सुधारवादियोंकी एक बैठक हुई, तो एक विचारक और सुधारकके नाते सुधनवाभी वहां गया। बहु विवाह प्रथाके ऊपर चल रही थी। वहां युवक भीथे और प्रौढ़ भी। निर्धन और धनिक भी। सुधनवा कह रहा था कि विवाहमें दहेज न देना चाहिये, न लेना चाहिये। उसके पक्षमें स्वभावतः मध्यम वर्ग अधिक था। किन्तु जो पैसे-वाले थे और जिनका मत यह था कि विवाह एक खुशीका अवसर होता है, इस-लिये ऐसा प्रतिबन्ध न लगाना चाहिये,—वे इस विषयमें विरुद्ध मत रखते थे।

बात दोनों ओरसे उठ रही थी। बीच-बीचमें गरमागरम बहस भी हो रही थी।

एकबार फिर सुधनवा खड़ा हुआ। वह इस बार कुछ अधिक तेज और अप्रतिम होकर बोला—महाशय, यह ठीक है कि विवाह एक खुशीका अवसर है। परन्तु इस खुशीका जो सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप है, उसे पैसेने दबा दिया है। हुआ यह है कि इस पैसेके कारण अनेक घरोंकी ललनाएं अविवाहित बैठी हुई हैं। दुराचार बढ़ा है। पैसेके कारण अधिकांश कुमारियां ग्रामीण पात्रोंको सौंप दी गयी हैं। घरोंमें आहें फूट रही हैं...ललनाएं सिसक रही हैं! मैं कहता हूं, धनिक-समाजका यही पाप है...यही अन्धापन!'

इतना सुनकर एक प्रौढ़ सज्जनने कहा—'मुझे दीखता है कि आपने पैसेका मूल्य नहीं समझा। वहां कुछ अनधिकार रूपसे भी बोला गया है। .... पिसनहारीके पुत्र एक बड़े समाज पर उंगली उठा सकते हैं, यह देखकर मुझे अचम्भा है। ....शायद इनका यह भी कहना है, कि सब झोपड़ियों में रहें और जंगलके चारे पतेपर गुजर करते रहें। पैसा भी क्या है ....मनुष्य...।

उसी समय कई तरफसे आवाजें आईं—'आप बैठ जाइये .... आप....'

लालाजीने क्रोधित होकर कहा—'हम नहीं बैठेंगे! हम नहीं सुनेंगे इन छोकरों की बातें!'

उस समय सुधनवाने देखा कि वह बैठा रहेगा, तो झगड़ा बढ़ेगा। आपसमें संघर्ष हो जायगा। अतएव, वह उठा और पहिलेसे अधिक विनम्र होकर कहने लगा-'सज्जनों', लालाजीके मुंहसे अपनेको पिसनहारीका पुत्र सुनकर, विश्वास कीजिये, मुझे दुःख नहीं हुआ। मुझे गर्व हुआ, भले ही मैं मखमली गद्दों और फूलोंके पालनोंमें नहीं पला, परन्तु मैं जिस पिसनहारी माताकी गोदका प्यार पा सका, मैं पूछता हूं, ऐसा निर्मल और पवित्र प्यार, बताइये, ग्राममें कितने हैं, जिन्होंने पाया। लालाजी जिस वस्तुको उपेक्षा की दृष्टिसे देखते हैं, मेरे लिये वही गर्व है। वही सुख। इसलिये आप इस विषय पर विवाद मत कीजिये। आप जिस विषयको लेकर चले हैं, उसी पर रहिये।'

किन्तु लाला नवजादिक लालने जिस तैशमें आकर सुधनवाको पिसनहारीका पुत्र कहा, उससे तो वह हिलनेवाले थे नहीं। उसके लिये उनके पास सद्भावना का भी अभाव था। अतएव, वे सभासे उठे और अन्य व्यक्तियोंके साथ वहांसे चले गये।

यह देख कर संयोजकोंने सभाको विसर्जित कर दिया।

किन्तु वहांसे चल कर जब सुधनवा अपने घर पहुंचा, तो उसे यह जान कर अचरज हुआ कि किसीने उसकी माको यह पता दिया कि आज लाला नवजा-दिकलालने सुधनवासे क्या कह दिया।

फलस्वरूप, उसको देखते ही मा बोली—लोग अपने दिनोंको बहुत जल्दी भूल जाते हैं, सुधनवा !'—उसने कहा—यह लाला नवजादिकलाल रात दिन रोटियोंसे मोहताज था। दिन बदले, तो पैसेवाला बन गया। मनुष्य पापकी कमाई करते भी नहीं थकता। इसने पैसा क्या पाया; पापका एक बड़ा बोझ अपने सिर पर रख लिया।

लेकिन, उस समय, सुधनवाके मनकी अवस्था सर्वथा ही प्रतिकूल थी। उसके मनमें तो स्वतः ही यह बात उठ रही थी कि आदमी पैसा पाता है, तो जरूर अपने दिनोंको भूल जाता है...हां, उसे भूल ही जाना चाहिये, अपने वे पिछले दिन ! किन्तु इस बातके साथ, जो उसके मनमें अशांति और अस्थिरताका उद्रेक पैदा हो गया था और बरबसही, उसके हृदयका मंथन कर रहा था, वह सचमुच ही क्रूर और कठोर था। उसे दीखा कि पैसा ही जैसे बड़ा है—इस भाग्यका निर्माता और पोषक ! किन्तु कैसी कठिनाई थी। सुधनवा इतनी सी बात को जो सरल और सीधी थी, स्वीकार करनेके लिये तैयार नहीं था। उसका मन इसे नहीं मान रहा था कि पैसा ही बड़ा हैं—आदमी हीन ! वह कह रहा था, पैसा उत्पादन है, उत्पादक नहीं। पैसा जड़ है, चेतन नहीं। और आदमी चेतन हैं। सृष्टा है। संज्ञा है। लिंग है। जीवन का जितना ऐश्वर्य है, शान है, विभूति और परम्परा है, उसका यह व्यक्ति ही तो कर्ता है, करण है और कारण है। इसीने सबका निर्माण किया है। इस लिये—तब—।

सुधनवाके मनमें उठ रहा था कि इस व्यक्तिने—व्यक्तिके पैसेने,—अहंभावने—मानो निश्चय ही, इस व्यक्तिको व्यक्तिसे तोड़ दिया है,—दूर-दूर कर दिया है, इस मानवको। वह बोला-'मानव तभी दीन है ! उपेक्षित है। जरा और जड़ है यह मानव ! मानो धीरे-धीरे उस युवक सुधनताके मनमें खारा-खारा-सा कोई तरल पदार्थ उतर आया था। वही उसको "प्राणोंके द्वार पर भी आ खड़ा हुआ था। वह कब, कितनी देरमें उस सरलताको,—उस अश्रुजलको—गालों पर बहा देगा, मानों इसका भी उसे पता नहीं रह गया था,—सुधनवा ! सरल और भावुक। वह पल-पल पर ही इतना कठोर, दुःसह और विषम बनता चला कि जैसे उसके हृदयका मधुर,सुघड़ और सलोना कोई पदार्थ था। वह उससे दूर होता जा रहा था। वह मानो सुधनवाका नहीं था। यही करण था कि माके पाससे जाकर जब वह अपनी चारपाई पर पड़ गया और ऊपर तारों भरे आसमानको देखने लगा, तो लगा कि चन्द्रमाकी वह शीतल चांदनी, निश्चय ही, तरल और निर्मल नहीं थी। वह आग बरसा रही थी। आसमानके वे तारे, मानो शुभ्र और मनोरम नहीं, आगके पतंगे थे, वे सभी एक-एक कर उस व्याकुल, दुःसह सुधनवाके अन्तरमें घुसे जा रहे थे और उसे जला रहे थे।

सुधनवा बड़ी बेचैनी और व्यथापूर्ण अवस्थामें बार-बार करवटें ले रहा था। उसका मस्तक दुःख रहा था। लाला नवजादिक लालाने भरी सभामें उसका अपमान तो किया ही, साथ ही, उसकी मा का भी अपमान किया था। उस लाला ने जिस स्वरमें, जिस लहजेमें और जिस धारणाकी अवस्थामें उसे पिसनहारीका बेटा कहा, वह निश्चय ही, उसकी मा का अपमान था,—नारी का—मा का ! और सुधनवा फिरभी चुप ! फिर भी शांत और स्थिर !

यह चारपाईसे उठकर बैठ गया। उसको लगा कि शांति मिट गयी। आग लग रही है, उसके वदनमें ! मानो कोई बोटी-बोटी काट रहा है, उसके हृदयकी।

सुधनवा चारपाई छोड़ कर घूमने लगा। हाथोंकी मुट्ठियां बांध लीं और जाने कितनी गहरी, कातर दृष्टिके साथ, उसने दूर तक निगाह दौड़ाई,—जैसे निरुद्देश्य और निर्भयताके साथ !

उसी समय मा वहां आई, वह देरसे जाग रही थी, जिस अवस्थामें उसका पुत्र था-उसीमें वह भी डूब रही थी। किन्तु जब पुत्रको उसने व्याकुल पाया, तो वह अपनी दशाको भूल गयी, उसने चारपाई छोड़ दी, पास जाकर बोली,

बेटा—

सुनते ही, तपाकसे, व्याकुल स्वर लिये हुए सुधनव ने कहा 'मां' यह समाज गन्दा है. क्रूर !

मैं जानती हूं, बेटा ! मैं सबको पहचानती हूं।

मैं इसमें नहीं रहूंगा। मैं दूर हो जाऊंगा।'

यह सुनकर मा ने एकाएक कुछ नहीं कहा। जब वह कुछ देर मौन रही, तो फिर गहरी सांस छोड़कर दूर तारों भरे अन्तरिक्ष की ओर देखने लगी। मानो वह हंस रहा था,—खिलखिल !

उसी समय, सुधनवाने कहा--लाला नवजादिकलालने जो कुछ कहा, मेरे दिल में वही चुभा है। मुझे वार वार वही याद आता है, अब सोचता हूं कि क्यों न उसका गला पकड़ लिया और घोट दिया। उसे मार देता। एक नीच को समाजसे दूर कर देता।

मांने कहा--'जो समस्या है, उसका हल तो इस प्रकार नहीं हो पाता। एक नवजादिक को मार कर हजार नवजादिकों का जन्म हो जाता। वह बोली—यहां तो सभी ऐसे हैं।

'उसने तेरा अपमान किया भरी सभा में। यह अपमान नहीं सत्यका बखान किया, उसने—मा बोली—तू सोच तो बेटा, तेरी मा कितनी भाग्यवान है कि पीसने पीसकर तुझे पाला, बड़ा किया, तो सभीने स्वीकार किया कि एक सुधनवा की मा है,—पिसनहारी—जिसने अपने पौरूषपर पुत्रको आदमी बना दिया।

झटका-सा खाकर सुधनवाने कहा—क्या जाने मा... क्यां।

माने कहा—न बेटा यही ठीक है। यही सत्य !

(शेष २८ वें पृष्ठपर)

कुछ प्रसिद्ध नगरोंके प्राचीन नाम

श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम'

हमारे आधुनिक नगरोंका इतिहास मनुष्यों, वंशों तथा जातियोंकी भांति ही रोचक है, जिस तरह वचपनका वीरु बड़ा होने पर वीरेन्द्र कुमार, पढ़ लिखकर योग्य बनने पर मि० वीरेन्द्र कुमार और नौकर होने पर मिस्टर सिन्हा और सरकारकी सेवा करने पर रायवहादुर वीरेन्द्र कुमार सिन्हा इत्यादि होजाता है। ठीक इसीतरहसे नगरोंके नाम भी, युग और परिस्थितिके अनुसार परिवर्त्तित होते रहते हैं। इन-कालमोंमें कुछ प्रसिद्ध नगरोंके नामोंका प्राचीन इतिहास देनेका प्रयत्न किया जाता है।

आगरा

इसका प्राचीन नाम 'अग्रवन' था, जिसका अर्थ है 'आगे वाला वन या जंगल' बात ऐसी है भी। ब्रज मण्डल, जहां पर कृष्ण भगवानका जन्म हुआ था और जहां वे अपनी गायोंके साथ बिहार करते और रास रचते थे, प्राचीन कालमें घोर जंगलों से आच्छादित था और इसमें वृन्दावन आदि अनेक बन थे। प्राचीन कालमें इस ब्रजमण्डलकी बड़ी महिमा थी। ब्रजमण्डल के बनोंमें सबसे पहला या अगला बन वहां पड़ता था, जहां आजकल आगरा है। अतः यात्रियोंने इसका नाम अग्रवन रख दिया। सम्भवतः बादमें बन कटजाने और वहां पर लोगोंके बस जानेके बाद इसके नाम से वन शब्द निकाल दिया गया और यह केवल 'अग्र' कहलाता रहा और बादमें बिगड़ कर 'अग्र' या 'आग्रा' अथवा 'आगरा' हो गया। इस नगरको नये सिरेसे बहलोल लोदीने १५वीं शताब्दीमें बसाया था और तभी से यह 'आगरा' कह-लाने लगा। इसके लड़के सिकन्दर लोदीने जब राजधानी दिल्लीसे बदल कर आगरा कर दी तब से ही इस नगरका महत्व अधिक बढ़ गया। इब्राहिम और बाबरने भी इसी नगरमें अपनी राजधानी बनायी थी और आगे चलकर अकबरने प्रसिद्ध किला और शाहजहांने विश्व विख्यात ताज-महल बनवाया तब से यह एक प्रसिद्ध नगर हो गया।

लखनऊ

इसको श्रीराम चन्द्रजीके भाई लक्ष्मण-जीने बसाया था, अतः यह आरम्भमें लक्ष्मणपुरी कहलाता था। स्मारक रूपमें लक्ष्मण टीला अभी भी मौजूद है। बादमें लक्ष्मणजीके लाड़ प्यारके नाम लखनके ऊपर इसका नाम लखनपुर हो गया। धीरे-धीरे यह लखनौती कहलाने लगा और आजकल लखनऊ कहलाता है।

आमेर

प्राचीन कालमें इसका नाम 'अम्बर' था, जो कि अम्बरीष नामका अपभ्रंश है।यह प्राचीन कालमें जयपुर प्रदेशकी राजधानी था। पुराणोंमें लिखा है कि राजा अम्बरीष यहांपर राज्य करते थे। इन्होंने ही इस नगरको अम्बरीष नगरके नामसे बसाया जो आगे चलकर संक्षिप्त होकर अम्बर रह गया। संस्कृतसे हिन्दीमें आने पर 'म्ब' आम में परिवर्तन हो जाता है और उसके पूर्वका अक्षर दीर्घ हो जाता है। अतः अम्बरका आमर हो जाना स्वाभाविक ही है। आमर शब्द बोलनेकी सुविधाके लिये आगे चलकर आमेर हो गया। अकबरके समयमें आमेरका राजा मानसिंह था जिसने यहां दिलोराम बाग लगवाया।

बनारस

प्राचीन कालमें यह नगर वाराणसीके नामसे प्रसिद्ध था। इसका कारण यह था कि बनारस 'वर्ना' और 'असि' दो नदियों के संगमपर बसा है। प्राचीन कालमें जब नदियों द्वारा व्यापार बड़े जोरोंसे होता था और नदियां ही एक बड़ा यातायात मार्ग थीं और उनका बड़ा महत्व था, तभी इन दोनो नदियों वर्णा और असिके नामपर इस नगरका नाम वर्णासि हो गया। बादमें लोग इस संधिको भूल गये और उन्होंने वर्णाके 'ण' को असिके साथ मिला दिया अतः असि का तो 'णसि' हो गया और 'वर' का बारा हो गया। इस प्रकार बारा-णसी बन गया। संस्कृत 'ण' का हिन्दी में 'न' हो जाना साधारण सी बात है। अतः वाराणसीका नाम वारानसि और बादमें 'वारानस' हो गया। तत्पश्चात 'र' और 'न' में उलटफेर हो गया और 'बरा-नस' का 'वानारस' हो गया जोकि बादमें बिगड़कर बनारस बन गया।

एक प्रश्न यह भी है कि बनारसको काशी क्यों कहते हैं। किसी समय पुरुरवा वंशमें एक राजा 'काश' हुए जिन्हें काशिराज भी कहते थे। उन्होंने गंगा और गोमतीके संगमपर एक नगर बसाया जिसका नाम अपने नामपर काशी रखा। धीरे-धीरे काशिराजका प्रताप बढ़ता गया और साथ ही काशीका महत्व भी। अतः काशीके आसपासका भाग भी काशी ही कहलाने लगा और काशी तथा बनारसमें कोई भेद नहीं रह गया, यद्यपि दोनोंमें अन्तर कई मीलका है। बात यह थी कि काशिराज बड़ा पुण्यात्मा राजा था उसने अनेक मंदिर और घाट बनवाये, अतः काशीकी महिमा बढ़ गयी और बाहरके यात्री बनारसको भी काशी कहने लगे। बादमें जब बनारसमें रेशमी साड़ीके तथा पीतलके वर्तनोंका व्यापार बढ़ गया तो बनारसकी ख्याति बढ़ने लगी और बनारस एक प्रसिद्ध नगर हो गया और काशी उसका एक बड़ा मोहल्ला मात्र रह गया।

मथुरा

इसका प्राचीन नाम मधुबन था। मथुरासे पांच मीलकी दूरी पर महोली नामक स्थानमें अब भी मधुबन नामका एक जंगल है जो कि प्राचीन 'मधुबन का स्मारक है। पुराने समयमें जब रामराज्य था तो वहां पर एक बड़ा भारी जंगल था जिसमें मधु नामका एक बड़ा राक्षस था। यह जंगल उसीके नाम पर मधुवन कहलाता था। वह स्थान जहां मधु तथा उसके वंशवाले तथा अन्य राक्षस रहते थे, मधुपुरी अथात मधुका नगर कहलाता था। यह स्थान ठीक वहां पर था जहां आजकल महोली है। रामचन्द्रके समयमें इसका लड़का लवन इस जङ्गलमें राज करता था। रामके भाई शत्रुघनने इसे मार कर जंगल साफ करा कर वहां नगर बसाया। यह नगर बादमें बढ़ कर वह सब नगर बस गया जिसे आजकल मथुरा नगरी कहते हैं।

'मधुबन' मथुरा कैसे कहा जाने लगा, यह भी एक प्रश्न है। रामायणके उत्तर काण्डमें मथुराका नाम मधुरा दिया है। सम्भव है बादमें मधुबन अथवा मधुपुरी संक्षिप्त होकर मथुरा हो गया हो।

सारनाथ

इसका प्राचीन नाम 'सारंगनाथ' था। 'सारनाथ' सारंगनाथकाही संक्षिप्त रूप है। सारंगनाथ दो शब्दोंसे संयुक्त है—सारंग और नाथ। 'सारंग' के अर्थ है हिरन और 'नाथ' माने 'स्वामी' अथवा मालिक। इस प्रकार सारंगनाथके माने हुए हिरनोंका स्वामी। प्राचीन कालमें वहां पर जहां आजकल सारनाथ है, एक बड़ा भारी जंगल था, जिसमें बहुतसे हिरन रहते थे। यदि इस जंगलको हिरनोंका घर कहें तो अनुचित न होगा। यही कारण है कि इसे मृगदात्र कहते भी थे। इन हिरनोंका एक राजा भी था, जिसका बड़ा भारी घर था। कहते हैं कि यह हिरन बोधि सत्वका अवतार था और इसकी बड़ी ख्याति थीं। उसे सारंगनाथ कहते थे। बादमें उसके रहनेके स्थान अथवा जंगलको ही सारंगनाथ कहने लगे। धीरे धीरे सारंगनाथ बिगड़ कर सारनाथ हो गया। बुद्धकालमें इसकी ख्याति बहुत अधिक थी।

जौनपुर

सका प्राचीन नाम यवनपुर था। १३६० ई० में दिल्लीके बादशाह फिरोजने यहां पर किला बनवाया और इसे बसाया और इसका नाम अपने चचेरे भाई फकीरुद्दीन जोवनाके ऊपर जौवनपुर रखा। १४१८ ईस्वीमें सुल्तान इब्राहीमने एक बौद्धमठके नसानेसे अठला मसजिद बनवायी। फिर १४८० ई० में सुल्तान महमूदकी बीबी रजी' ने लाल दरवाजा विद्यालय बनवाया। १५ वीं शताब्दीमें खां जहांने जौनपुरमें ही अपना महल बनाया। इब्राहीम शर्कीके समयमें यह शिक्षाका बहुत बड़ा केन्द्र था। शेरशाह सूरीने यहीं पर एक कालेजमें शिक्षा प्राप्त की थी। इस कारण यह यवनोंका एक विशाल नगर हो गया। आज भी यवनोंकी आबादी यहां अधिक है। यही कारण है कि लोग इसे जोवनपुरकी जगह यवनपुर कहने लगे। धीरे धीरे यवनपुर बिगड़ कर जवनपुर हुआ और आज वही जवनपुर जौनपुरके नामसे विख्यात है।

अलीगढ़

इसका प्राचीन नाम कोइल था। यहां पर कृष्णके भाई बलरामने कोल नामके राक्षसको मारा था। अतः इसका नाम कोल पड़ गया। बादमें कोल बिगड़ कर कोइल हो गया था। मुसलमान कालमें अलीनामके किसी अमीर अथवा बादशाह ने यहां अपना किला बनवाया तबसे इसका नाम अलीगढ़ हो गया।

भारतका सिल्क व्यवसाय

लेखक—श्री परिपूर्णानन्द शर्मा

स्वतन्त्र भारतके औद्योगिक पुनर्निर्माणमें सिल्कका भी विशेष स्थान है। गत महायुद्धके समय हमारे सिल्क व्यवसायकी विचित्र दशा हो गयी थी। लड़ाई छिड़नेके पहले हम ५० लाख पौण्ड कच्चा सिल्क हर साल खर्च करते थे जिसमेंसे २५ लाख पौण्ड बाहरसे आता था। २२० लाख पौण्ड सिल्कका सूत हम बाहरसे मंगाते थे। इस प्रकार देखनेमें तो हमारा सिल्क व्यवसाय काफी उन्नत मालूम होता था पर देशको उससे घाटा ही होता था। असलमें हमको बाहरसे सिल्क मंगानेकी कोई जरूरत भी नहीं थी। सिल्कके कीड़ों से ही तो सिल्क पैदा होता है। फ्रांस तथा इटलीमें सालमें एक बार यह फसल पैदाकी जाती है। आबोहवा प्रतिकूल होनेपर भी वे एक फसल पैदा कर लेते हैं। चीनकी इतनी गिरी दशा होनेपर भी वह सालमें तीन फसल पैदा कर लेता है। जापान आबोहवाकी प्रतिकूलता पर भी तीन फसल कर लेता है। पर भारतकी आबोहवा तो ऐसी आदर्श है कि विशेषज्ञोंके अनुसार साल में सात फसल पैदा की जा सकती है, पर कठिनाईसे दो हो पाती है। इसीलिये बाहरसे काफी माल मंगाना पड़ता है। मैसूर, बंगाल, मद्रास तथा काशीके उद्योग इसी कारण पनप नहीं पाते। जापानने अपनी सरकारकी सहायतासे यह उद्योग इतना बढ़ा लिया था कि जहां सन् १९१४-१५ में वह विश्वकी समूची खपतका २० प्रतिशत देता था, वही सन् १९३९ में ७६ प्रतिशत देने लगा। इसका कारण उसका वैज्ञानिक प्रयत्न भी है। इस कामको सिखानेके लिये वहां ३ विश्वविद्यालय है जिनके २७६ स्कूल हैं। ४४ प्रयोगशालायें हैं तथा इसके अतिरिक्त सरकारी प्रयोगशालायें तथा खोजके कार्य भी हैं। भारत में ऐसी कोई चीज है ही नहीं। जापानमें सन् १९३९ में सिल्क व्यवसायपर ३६० विशेषज्ञ अनुसंधान कर रहे थे-भारतमें ऐसे दो व्यक्ति भी नहीं मिलेंगे।

लड़ाईके दिनमें सरकारने ऐसी धांधली मचा रखी थी कि कुछ न पूछिये। वह बाजारमें स्वयं ३०) रुपया पौण्डकी दरसे कच्चा सिल्क खरीदती थी और उधर उससे हल्का चर्खा सिल्क ९०-१२० पौण्डके दर पर वह स्वयं बाजारमें बेचा करती थी। मि० राघवन नायर (सेक्रेटरी दक्षिण भारत चैम्बर आव कामर्स) का तो यह कहना है कि कण्ट्रोल दरपर १९) रुपये पौण्ड माल खरीद कर सरकार खुले बाजार में ६०-७० पौण्ड रुपयेबेचा करती थी। इससे सिल्कके व्यवसायी तबाह होते गये। एक अमेरिकन कांग्रेसमैन (वहां की व्यवस्थापक महासभाके सदस्य) ने लिखा था कि सन् १९४५ में भारत सरकारने ७५० पौण्ड सिल्क भारतमें खरीदकर ब्रिटिश फर्मोंको दे दिया और उन्होंने ७,५०,०००, रुपये कीमत पर उसे चीनके हाथ बेच दिया। इसीप्रकार संयुक्त राज्य अमेरिकाके हाथभी माल लुटाया जारहा था युद्ध समाप्त होनेके बाद इस व्यवसायके लिये अगर कोई काम सरकारने किया है तो यही कि मैसूरके मि० एन० रामारावकी अध्यक्षतामें एक कमेटी बनादी गयी है। दो वर्ष हो गये अभी तक उस कमेटीकी किसी रिपोर्टका पता तक नहीं है,।

व्यवसायका भविष्य

यदि सरकार जरा भी सहायता दे तो यह व्यवसाय बहुत उन्नति कर सकता है और हम इस दिशामें सबसे आगे बढ़ सकते हैं। सन १९३९ में सभी सूबोंके डाइरेक्टर आव इंडस्ट्रीजका जो सम्मेलन हुआ था उसने यह स्वीकार किया था कि उचित प्रोत्साहन मिलने पर हिन्दुस्तानमें कमसे कम ४०,००,००० गांठ सिल्क हर साल तैयार हो सकता है, जिसमें से १६,००,००० तो अकेले मैसूरमें, १२ लाख बंगालमें तैयार हो सकता है। इस समय हम अनुमानतः १८ लाख पौंड ही तैयार करते हैं यानी २२ लाख पौंडकी वृद्धिकी गुंजायश है। सन १९३९की टैरिफ बोर्डकी रिपोर्टके अनुसार हमने २० लाख पौंड तैयारी सिल्क भारतके बाहर भेजा था पर, वह जमाना हाथसे निकल गया अब तो हम हर साल लगभग २२,५०,००० पौंड कच्चा सिल्क, २,७०,००,००० गज तैयारी सिल्क तथा ८०,००,००० गज सूती तथा सिल्क मिला कपड़ा बाहरसे मंगाते हैं। सब लोग अपने व्यवसायमें उन्नति करते हैं, हम अवनति कर रहे हैं,

इस अवनतिका अनुमान तो इसीसे लग सकता है कि सन १८९३-९४में हमने लगभग १९,००,०००) रुपयेका माल बाहर भेजा था और सन १९०३-४ में ७,५०,००० रुपयेका और सन १९३४-३५ में १,५४,०००) रुपयेका। हमारे प्राचीन सिल्क व्यवसायकी—उस व्यवसायकी जिसका जिक्र ऋग्वेदमें भी आया है, यह दुर्दशा है। जो वस्तु देशके भीतर तथा बाहर, हर जगह जरुरी है, उसीकी ओर हम इतने उदासीन क्यों हैं,

प्रान्तोंमें प्रगति

लड़ाईके दिनोंमें केवल पाराशूट (हवाई जहाजसे उतरनेके लिये छतरी) बनानेमें ही काफी सिल्कका उपयोग हुआ और इस उपयोगके कारण जनताको सिल्क बनाने बुननेकी भी रुचि हुई उन दिनों सरकारने इस व्यवसायकी सहायताके लिये १८,५०,०००) रुपये भी दिये थे। ब्रिटिश तथा भारतीय सरकारकी ओरसे मद्रासके कोलीगल स्थानमें एक कारखाना खोला गया। १,५०,००० पौंड सिल्क हर साल तैयार हो सकता है। सैकड़ों एकड़ भूमिमें वहां शहतूतके झाड़ लगा दिये गये हैं जिससे सिल्कके कीड़े पैदा हों,

मद्रास, मैसूर तथा काश्मीरमें ३ लाख पौंड सिल्क सन १९४६ में तैयार हुआ था। सन १९४७ में ६ लाख पौंड हो गया है। मैसूरसे सन १९४०-४१ में ३९,००० एकड़ भूमिमें शहतूतके झाड़ लगे थे, सन १९४४-४५ में ७५ हजार एकड़में यही खेती हुई। वहांके डेढ़ लाख परिवार इसी व्यवसाय पर निर्भर करते हैं।

मैसूर सरकारने अपने यहां इस व्यवसाय-को काफी उन्नत किया है और सरकार-की ओरसे इस कार्यके लिये एक बोर्ड ही बना दिया गया है। पांच वर्षमें यह बोर्ड पांच लाख रुपया खर्च करेगा।

ब्रिटिश भारतमें सबसे अधिक सिल्क मद्रासमें पैदा होती है। औसतन दो लाख पौण्ड सिल्क हर साल तैयार होता है। अकेले कोलेगनके पासही ८००० एकड़ भूमिमें शहतूतकी खेती होती है।

काश्मीरके पसमीनासे कौन नहीं परिचित हैं। वहां पर आदर्श गृह-उद्योगके रुपमें यह व्यवसाय होता है, देहातोंके कमसे कम ५० हजार तथा शहरके ४००० परिवार इस काममें लगे हैं; अनुमान है कि लगभग १५०० पौण्ड सिल्क रोज तयार हो सकता है। कहते हैं कि श्रीनगर सिल्क फैक्टरी संसारमें अपने ढङ्गका सबसे बड़ा कारखाना है। काश्मीरकी सर-कारने भी अपने यहां मैसूरके ढंग पर काम करनेकी योजना बनाना शुरू कर दिया है।

बिहारके भागलपुर जिलेमें सिल्क-का बहुत बड़ा मशहूर कारोबार होता है। किन्तु लगभग २३ लाख रुपये सालसे अधिक माल अभी तैयार नहीं हो रहा है। बिहारसे अधिक काम बंगालमें होता है, यहां लगभग ५ लाख पौण्ड सिल्क (सवा करोड़ रुपये कीमतका) हर साल तैयार होता है। ८००० हजारजुलाहे यही काम करते हैं।

मध्य प्रांतका कोशा सिल्क भी बहुत मशहूर है। विलासपुर जिला इसका केन्द्र है, छत्तीसगढ़ डिवीजन ही इस चीजके लिये प्रख्यात है। संयुक्त प्रांतमें बनारस इसके तैयारी मालके लिये मशहूर है तथा प्राचीन व्यापारिक केंद्र है। नैनीताल, बरेली तथा देहरादूनके जिलेमें सिल्कके कीड़े बहुतायतसे पैदा होते हैं और पैदा किये जा सकते हैं। लगभग १,५५,००० जुलाहे तथा मददगार यह काम करते हैं। लगभग सवा करोड़ रुपयेका माल तैयार होता है।

किन्तु, यदि समुचित प्रोत्साहन मिले तो सालमें ८ महीने यह काम हो सकता है। सन १९३९ की डायरेक्टर आव इण्डस्ट्रीजकी कानकरेंसके अनुसार नीचे लिखे सूबोंसे जो माल तैयार हो सकता है, वह इस प्रकार है:—

प्रांत	पौण्ड (वज़न)
मैसूर	१६,००,०००
बङ्गाल	१२,००,०००
मद्रास	५,००,०००
काश्मीर	५,००,०००
अन्य प्रान्त	२,००,०००
कुल	४०,००,०००

विकासकी सम्भावना

ऊपर लिखी बातोंसे यह साफ है कि इस दिशामें विकासकी काफी गुंजाइश है और यदि हमारी सरकारने थोड़ा भी ध्यान दिया तो करोड़ों रुपयेका माल मिलने लगेगा और भारतीय व्यवसायमें एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जायेगा। इस समय दत्त-चित्त होकर हमारे उद्योग-विभागको इस दिशामें काफी छानबीन करके प्रयत्न करना चाहिये।

सुधनवाकी मा

(२४ वेंपृष्ठका शेषांश)

सुधनवा फिर अपनी चारपाईपर पड़ गया। स्पष्ट था कि वह सन्तुष्ट नहीं हुआ। न मा की बातसे, न अपनी स्थिति से।

दिल चल रहा था, आप भी चल रहा था। मानो वह हवाके साथ-साथ बह रहा था— कभी धीरे कभी द्रुत!

सुधनवा अपनी मा को तीर्थ कराने गया था। घरसे दूर जब वह द्वारिकाजी पहुंचा, तो भगवानके दर्शन कर मा के साथ उस ओर निकल गया, जहां कंगलों अपाहिजोंका जमघट था। सुधनवाकी मा जब एक भिखारीको चना चबेना देनेके लिये झुकी तो बलात उसका हाथ रुक गया। उसने पूछा तुम कौन?

भिखारीने कहा— सुधनवाकी मा,— लक्ष्मीदेवी!

मां ने कहा--लाला नवजादिक लाल

नवजादिकलालके मुंहसे बात नहीं निकली, आंखोंसे झर झर आंसुओंका वेग बह आया।

सुधनवाकी मा को पता था कि लाला नवजादिकलालका व्यापार बिगड़ गया। दिवाला भी निकल गया। लेकिन यह उसने अब देखा कि जिनका रुपया देना था, उनकी दृष्टिसे दूर होनेके लिये ही उन्होंने उस दूर प्रांतमें भिखारीका रुप धारण कर लिया था।

मां ने कहा--'रोओ मत' लाला जी।

लालाजी ने कहा सुधनवाकी मा—

तुम फिर फलो-फूलो, मैं भगवानसे इसकी प्रार्थना करती हूं।

लालाजीने इस बातका जवाब नहीं दिया। जाने उनके मनमें क्या आया कि उसी क्षण, उस विशाल भीड़में उन दोनोंको छोड़ वहांसे पलायन कर दिया कि जैसे वे चोर थे और उन्होंने जीवनमें एक बड़ा अपराध उन दोनो मा बेटेके साथ भी किया था।

इतना देख वेदनापूर्ण स्वरमें सुधनवा ने कहा—हायरे मनुष्य!

मा ने कहा—चल बेटा!—वह बोली आज ही चल देंगे घर। घर ही तीर्थ है। घर ही स्वर्ग।

यह सुनकर सुधनवा हंस दिया। तुरन्त ही उसके मनमें आया क्या ऐसे ही रहेगा यह मानव—यह लाला नवजादिक लाल!.. पैसेका दास... पैसेका अपराधी!

लीगने मुसलमानोंको धोखा दिया

—शेख अब्दुल्ला

अखिल भारतीय देशीराज्य लोकपरिषदके अध्यक्ष शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाने दिल्लीकी एक सार्वजनिक सभामें भाषण करते हुए कहा कि मुस्लिम लीगने अपने पाकिस्तानके नारेके जरिये भारतके मुसलमानोंको धोखा दिया है। करोड़ों मुसलमान आज अपना सब कुछ गवांकर भूखों मर रहे हैं क्या ऐसे ही प्रचारके लिये मि० जिन्ना धुआंधार प्रचार कर रहे थे।

काश्मीरकी स्थिति—

काश्मीरकी स्थितिमें पहलेसे काफी सुधार हुआ है लेकिन फिर भी अभी वहां आक्रमणकारियोंका उपद्रव अभी जारी है। आक्रमणकारी पूंचपर अधिकार जमाने के लिये उरी और नौशेरा और जंघर इलाकेके उत्तर-पश्चिमसे दोतरफा आक्रमण कर रहे हैं। वहां आक्रमणकारियोंकी संख्या एक हजार बतायी जाती है। उनके पास आधुनिक अस्त्र शस्त्र काफी तादाद में है। भारतीय फौजी दस्ते आक्रमणकारियोंको करारी मार दे रहे हैं। उन्होंने पूंचके उत्तर-पूर्वसे आक्रमणकारियोंका नाम निशान मिटा दिया है। पूंचके उत्तर-पश्चिममें चार मील दूर आक्रमणकारियोंका बीस लारियोंपर एक काफिला देखा गया था। डुंगी इलाकेमें तीन सौसे अधिक आक्रमणकारियोंको घेर लिया गया है। भीमम्बर-अखनूर इलाकेमें कहते हैं कि आक्रमणकारी अखनूरकी ओर बढ़ रहे हैं। अखनूर जम्मूसे २३ मील दूर है।

जम्मू नगरमें शरणार्थी बराबर आ रहे हैं। पश्चिमी पंजाबके शरणार्थी जम्मूसे पठान कोट होकर पूर्वी पंजाब भेजे जा रहे हैं। जम्मूकी स्थिति अब ठीक है।

नेहरूजी जम्मू को

पण्डित जवाहरलाल नेहरू जम्मू जा रहे हैं और वहांकी स्थितिका अवलोकन करके उसी दिन वापस आ जायेंगे। सोमवारको पण्डितजी संयुक्त रक्षासमितिकी बैठकमें भाग लेने के लिये लाहौर जायेंगे।

नरेशोंका प्रतिवाद

दिल्लीमें नौ देशी राज्योंके शासक और एक रियासतोंके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन हुआ जिसमें काश्मीरपर कबीले वालों और पश्चिमी पंजाबसे होनेवाले आक्रमण की एक प्रस्ताव पास कर निन्दा की गयी। देशी नरेश अपना एक संगठन बना कर ऐसे कार्यों का प्रतिवाद करनेपर विचार कर रहे हैं।

आक्रमणकारियोंकी दुसरी चाल

काश्मीरपर आक्रमण करनेवाले भारतीय फौजी दस्तोंका मुकाबला करनेमें असमर्थ है। इसलिये वे अब हिटलरी सैनिकोंसे भी गन्दी गन्दी चालोंसे काम ले रहे हैं। बलात्कार, अपहरण और नीरीह जनता को तरह तरहके उत्पीड़न देना आक्रमणकारियोंके लिये साधारण सी बात है। गत सप्ताह शलारङ्ग पुलके आक्रमणकारियोंका एक जासूस जिसका नाम रहमतुल्लाह बताया है गिरफ्तार किया गया था। उसने जो पुलिसको बयान दिया है उससे पता चला है कि रावलपिण्डीमें काफी सशस्त्र सैनिक प्रस्तुत किये गये हैं और शीघ्र ही काश्मीरके सीमापर भेजे जायेंगे। अपने काश्मीर आनके कारण उसने यह बताया है कि मुझे पठानोंको रास्ता दिखानेके लिये तैनात किया गया था। उसने यह भी बताया है कि आक्रमणकारी लूटका माल और गैर मुस्लिम लड़कियों-युवतियोंको पाकिस्तान ले जानेके लिये शिक्षित किये जा रहे हैं।

श्री अन्नदा प्रसाद चौधरी प्रसाद चौधरी आप पश्चिम बंगालके अर्थसदस्य हैं।

कराचीसे सवालाख शरणार्थी आये

श्री टी०टी० कृष्णमचारीके एक प्रश्नके उत्तरमें श्री गोपाल स्वामी ऐंयगर ने कहा कि १५ अगस्तके बादसे लगभग १,२०,००० हिन्दू और सिख शरणार्थी कराचीसे बम्बई या काठियावाड़के विभिन्न मार्गोंमें आये हैं। उनमेंसे लगभग ७५००० शरणार्थी बम्बई पहुंचे हैं! पाकिस्तान जानेवालोंमें पाकिस्तानी सेनाके ६०२७ व्यक्ति और ४१८१० मुस्लिम नागरिक बम्बईसे कराची गये। उसी प्रकार काठियावाड़के विभिन्न स्थानोंसे भी ५५६३ नागरिक पाकिस्तान गये।

इण्डोनेशिया और भारतमें घनिष्ट मित्रताके लिये प्रयत्न शील डाक्टर शहर यार

कोरिया-अमेरिकनसाम्राज्यवादका शिकार

संयुक्त राष्ट्र संघकी राजनीतिक कमेटीने एक कमीशनके नायकत्वमें कोरियाकी स्वतंत्रताके विकास सम्बन्धी अमेरिकन प्रस्तावको स्वीकार कर लिया था। परन्तु रूसने इसका प्रतिवाद किया। इसने कहा कि कोरियाको अपने भाग्य पर छोड़ कर रूस तथा अमेरिकाको यहांसे चला जाना चाहिये। इस बीच अमेरिकाने बतलाया कि कोरिया स्वशासनके लिये पूर्ण अयोग्य है, इस लिये इसको दूसरेकी संरक्षकता अनिवार्य है। कोरियाका दक्षिणी भाग जहां पर की अमेरिकन शासन है; की दशा यहांके उत्तरी भाग जहां पर रूसी अधिकार है अत्यन्तही शोचनीय हैं। लोग अमेरिकनोंसे घृणा कर रूसियोंका सम्मान करने लगे हैं। और ऐसा बहुतही सम्भव है कि रूस अमेरिकाके चले जाने पर यहांके उत्तरी भागके कम्यूनिस्ट दक्षिणी भागमें अपना शासन जारी कर दें। और जो अमेरिकाके हकमें बहुतही हानिप्रद होगा।

कोरियनोंमें स्वतन्त्रताकी भावना अत्यन्तही तीव्र होती जा रही है और इस हालतमें संयुक्त राष्ट्रका यह प्रस्ताव कि कोरियाका स्वातंत्र्य विकास एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन द्वारा कराया जाय, सिर्फ इसकी स्वतंत्रतामें विलम्ब लानेकी अमेरिकन चाल है। और इसके फलस्वरूप कोरियाको संयुक्त राष्ट्रसे भी घृणा हो जायगी। यदि संयुक्त राष्ट्र इस सम्बन्धमें रूसी प्रस्तावका समर्थन करती तो रास्ता साफ था। परन्तु यहां तो ऐसा जान पड़ता है कि अमेरिका कोरिया की स्वतंत्रताके लिये नहीं चिन्तित हैं बल्कि वह यहां पर रूसी प्रसारकी आशंका से भयभीत है।

फ्रांसमें तोड़फोड़

दो सप्ताह पूर्व फ्रांसमें कम्यूनिस्टोंने हड़तालें शुरू की थी वे अभी तक चल रही है। हड़तालके कारण पेरिस आदि कई नगरोंकी हालत खराब हो गयी है। जर्मन युद्धकी समाप्तिके बाद यह पहला मौका है जब पेरिसकी सड़कों पर वख्तरबंद पुलिस गश्त लगा रही है। लाखों मजदूर हड़ताली हो गये हैं। दक्षिण फ्रांसमें दो हजार हड़तालियोंने ब्रेवके रेलवे स्टेशन पर कब्जा कर लिया है। आधे पेरिसमें अंधकार है क्योंकि हड़तालियेंाने बिजलीके तार काट दिये हैं। कई जिलोंमें गैस खराब कर देनेसे नागरिकोंको पानी नहीं मिल रहा है। ट्रेड यूनियन कांग्रेसके गैर कम्यूनिस्ट सदस्य एवं फ्रांसके समाजवादी हड़तालियोंको काम पर वापस जानेको कह रहे हैं।

हड़तालोंको खत्म करनेके लिये फ्रांसकी सरकारने राष्ट्रीय असेम्बलीमें 'तोड़फोड़ विरोधी बिल' १८३ के मुकाबले ४१३ वोटसे पास करा लिया है। नीसमें हड़तालियोंने पोस्ट आफिसके काम में बाधा पहुंचाई। उसके बाद पुलिस और हड़तालियोंके बीच मुठभेंड़ हो गयी जिससे बीस आदमी बुरी तरह घायल हुए हैं। फ्रांसकी कम्यूनिस्ट पार्टीने सर्वत्र अपने सदस्योंसे 'परिचय पत्र' फाड डालने के लिये कहा है ताकि वे पहचाने नहीं जा सकेंगे। कुछ लोगोंने पेरिस स्थित कम्यूनिस्ट पार्टीके दफ्तरपर भी आक्रमण किया है।

रूस और ईरानकेबीच तनातनी

रूस अपने बाकूके तेल खानके बावजूद दक्षिणमें ईरानके तेलको काममें लानेकी इच्छा करता है। गत साल रूस और ईरानके बीच तेल सम्बन्धी एक समझौता हुआ था जिसके द्वारा उत्तरी ईरानके तेल पर रूसी अधिकार स्वीकार किया गया, परन्तु ईरान इस समझौतेके अनुसार आचरण नहीं कर सका। उसकी पार्लमेंट ने यह समझौता बिलकुल ही मान्य नहीं हुआ; क्यों कि दक्षिणी ईरानके तेल पर अंग्रेजोंका अधिकार जायज रखते वह भेद पूर्ण समझौता किया गया था। रूसने इस समझौतेके प्रति बादमें एक धमकी सहित पत्र पार्लमेन्टके पास भेजा। ईरान परन्तु ईरानको अमरिकी सहायताका पूरा आश्वासन प्राप्त है। यदि रूस इसकी सुरक्षाको भंग करनेमें आगे कदम बढ़ाया तो अमेरिका जो ईरानको अभी प्रोत्साहन दे रहा है, इस संकटके समय मदद करनेमें कुछ भी कसर उठा नहीं रखेगा।

आधुनिक कवि सम्मेलनका एक चित्र—

पुरस्कार का प्रश्न

—श्री विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त—

बिजलीके बल्व, शामियानेकी छतके अतिरिक्त उस पंडालमें जिधर दृष्टि घुमाइये, मनुष्यकी उत्सुक आकृति ही दिखलाई पड़ती थी। सभीकी उत्सुक दृष्टि मंचकी ओर उठ रही थी—जहां कुछ मनुष्य नामधारी विशिष्ट जीव विशेष गर्वमें डूबे हुए विराजमान थे।

मैंने भी एक ओर, कोनेमें स्थान ढूंढ़ हो लिया। यदि स्थान ढूंढनेकी चर्चामें हिन्दू विश्वविद्यालय और कलकत्ता यूनिवर्सिटीके उन तीन-चार विद्यार्थियोंका उपकार स्वीकार नहीं करूं, जिन्होंने जगह ढूंढनेमें साहससे काम लिया और जो आदि से अन्त तक वहां मेरे साथ उपस्थित थे तो निश्चय ही अन्याय होगा।

एक विद्यार्थीने मंचकी ओर ध्यानसे देखकर कहा, "यहां तो सभी स्थानीय कवि बैठे हैं।"

पास ही बैठे एक महाशय बोल उठे, 'अभी दीवान साहब आये नहीं। उनके आते ही बाहरवाले भी आ जायेंगे।"

राजके कर्णाधार दीवान साहब 'बरदान' की तरह कामधेनु रूप उस राज्यका अधिकार प्राप्त करनेमें समर्थ हुए हैं, जैसे जनाब जिन्ना साहब पाकिस्तान प्राप्त करनेमें समर्थ हुए हैं। सफलताकी विजय का उत्सव उत्साह पूर्वक नहीं मनाना ही आश्चर्यकी बात होती। धूमधामसे मेला लगाया गया। 'कवि सम्मेलन' उसी धूम धामका एक साधारण या असाधारण ढंग था।

मंचके सामने कुछ परिवर्तन दिखलाई दिया। हमारी दृष्टि उस ओर उठी। हमने देखा, एक स्थानीय कवि महाशय अपने स्थानसे उठे और मंचके बीचमें आकर, चीखने लगे।

'यह क्या? कोई पागल है?'—किसी एकने आश्चर्य प्रकट किया।

'कवि है। सुनिये, कविता-पाठ कर रहा है?'—किसी दूसरे ने कहा।

'कवि? अभी दीवान साहब आये नहीं सभापतिका पता नहीं और कविता-पाठ?'

दीवान साहब भोजन-वोजन से निश्चित होकर चलेंगे! और देर होते देख स्थानीय कवियोंने शायद सोचा है हमलोगों को कविता उगलनेका अवसर नहीं मिलेगा। —इसलिये इस स्वर्ण सुयोगको हाथसे जाने देनेकी मूर्खता न करें!'—कौतुक-प्रिय एक विद्यार्थीने कहा।

'आठ बजे समय निश्चित था और ९ बज रहे हैं।'—

आजाद होकर समयकी कैदमें रहना उचित नहीं।

विद्यार्थीके इस व्यंग्यने सुननेवालोंको हंसनेके लिये मजबूर कर दिया।

स्थानीय 'कवि नामधारी जन्तुओंमेंसे एकके बाद दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवा आ-आ कर मनका गुबार निकालने लगा। असाधारण परिवर्त्तन हुआ। दीवान साहब आ गये। शेष उपस्थित कवियोंकी मनकी मनमें ही रह गयी।

दीवान साहबके मुसाहब भी उनके साथ ही मंचपर आये। स्थानके लिये 'जरा' 'कृपा' तनिक हमें भी 'क्षमा कीजियेगा' की बौछार होने लगी।

दीवान साहब उठकर चारो ओर सरसरी दृष्टिसे देख गये। एक ओर उनकी दृष्टि अटक गयी।

'इस मंचपर जितने विद्यार्थी बैठे हों—स्थान खाली कर दें।'—दीवान साहबका शासन भरा स्वर।

सन्नाटा छा गया। सभीकी उत्सुक दृष्टि उधर जम गयी। किन्तु, कहींसे कोई उठता दिखाई नहीं दिया।

'मैं कहता हूँ, विद्यार्थी यदि मंचसे नहीं हटेंगे—तो मैं अपने साथी प्रसिद्ध कांग्रेसी नेताओंके साथ नीचे बैठ जाऊंगा।'—जवाहरलालके स्वरकी नकल।

पत्थर पर तीर मारनेके समान प्रयत्न व्यर्थ। सभी अपने-अपने स्थानपर अडोल रहे।

दीवान साहबने अपने मुसाहबोंके साथ मंचसे नीचे बैठ कर अपना वचन पालन किया। उनके साथ आये हुए बाहर वाले दो कवि जहां बैठ गये थे—बैठे रहे।

आधा घंटा और बीत गया। उपस्थित जनताका धैर्य छूटने लगा।

पंडालसे बाहर दीवान साहबके संकेतसे एक आदमी जाता था और दस-मिनटके बाद लौट कर उनसे कुछ कहता था। एक बार एक दूसरा आदमी उठा और लौट कर फिर वही दृश्य दुहराया।

इस अप्रिय नाटक का कारण जाननेके लिये जनता कानाफूसी करने लगी। जनता की आवाज हमारे कर्ण कुहरोंमें पहुंच कर कौतूहल बढ़ाने लगी:

"सभापतिके साथ बाहरसे आये हुए कुछ कवि हैं—जो अधिक रुपयेके लिये रूठ कर बैठे हैं।"—

"उनको रूठने के लिये यही अवसर उपयुक्त जचा, पहले तय कर लिये होते।"—

"अपनेको पागल सिद्ध करने वाले कवि यदि ऐसा अवसर उपस्थित न करें-तो आश्चर्य करना चाहिये।"—

"अधिकतर ऐसे कवि भी मिलते हैं जो 'कवि सम्मेलन' की सूचना निकलते ही यश लूटनेके लिये, अपने पैसे खर्च कर, निश्चित तिथि और निश्चित स्थानपर सूंघते-सूंघते पहुंच जाते हैं।"—

"किन्तु, जिनकी अधिक पूछ होने लगती है-वह पैसे मांगनेमें साहससे काम लेते हैं।"—

"मुंडन, नकछेदन, पाणिग्रहणमें भी पैसेके लिये ये कवि नामधारी विशेष जीव मनोरंजनार्थ पहुंचने लगे हैं।"—

"तो क्या इस मेलामें ये साहित्य-सेवा के लिये बुलाये गये हैं।'—

"यह बात है तो प्रतिवर्षकी तरह इस साल भिखारी ठाकुरका विदेशिया-नाच क्यों नहीं बुलाया गया।"—

"विदेशियाके नाचमें खर्च अधिक लगता और प्रभाव कम पड़ता। सभ्य कहे जाने वाले नाचमें नहीं पहुंचते और नहीं दीवान साहबकी शोहरत होती।"—

एक पण्डितजी महाराज क्षुब्ध होकर, बोले, "रुपयेके टुकड़ों पर सरस्वतीको अपमानित करने वाले 'कवि' और 'वेश्या' में कोई अन्तर नहीं।"

हृदयमें धक्का लगा। काश हमारे कवि बन्धुओंके कानोंमें ये आवाजें पहुँच पातीं और वे कवि-सम्मेलनोंकी बाढ़में अपनी प्रतिष्ठाके पानी पर नियंत्रण रखनेमें समर्थ हो पाते?

अपने निकटसे, राज्यके एक परिचित कर्मचारीको, जाते हुए देख मैंने उसे रोक कर पूछा, "यह कौनसा तमाशा हो रहा है?"

उसने धीमे स्वरसे कहा, "स्वराज्य मिल गया तो क्या हुआ? अभी धनी गरीबका सवाल जल्दी टलनेको नहीं है। बाहरसे आये हुए दो धनी कवियोंको दीवान साहबने अपने बंगले पर ठहराया और गरीब सभापतिके साथ अन्य गरीब कवियों को...."

बात पूरी न हो सकी। तालियोंकी गड़गड़ाहटसे पंडाल गूंज उठा। मैंने मंच की ओर देखा। सभापतिके साथ अन्य शेष कवि आ गये थे। कर्मचारी, लोगोंको शांत करानेके प्रयत्नमें लग गया किंतु उसकी अधूरी बातोंका अर्थ मेरी समझमें आ गया। वास्तविक कलाकार अपमानके तीर खाकर विद्रोही हो जाता है।

कवि सम्मेलन जब समाप्त हुआ,—जनता दीवान साहबके प्रभावका बोझ अपने हृदय पर लेकर विदा हुई। और आधुनिक युगके विशेष दयनीय व्यक्ति गरीब कवि?

मैंने दूसरे दिन सुबहमें ही वह नगर छोड़ दिया किंतु मेरे मस्तिष्कसे कवियोंके "पुरस्कारका प्रश्न" हट न सका।

लग भग पन्द्रह बार सूर्य्य उदय और अस्त हुआ। मैं उस महान कलाकारके कमरेके द्वारके सामने खड़ा था जिसने दीवान साहब द्वारा आयोजित उस कवि सम्मेलनके सभापतित्वका भार अपनी योग्यताकी शक्तिसे निबाहा था।

"आइये!"—उसके अधरपर प्रसन्नताकी रेखा खिंच गयी। मैंने चारपाई पर बैठ कर, साधनाका सजीव चित्र सरस्वतीके विशिष्ट पुजारीको कौतूहल-भरी दृष्टिसे देखा जो चूल्हे पर चढ़ी हुई कड़ाहीमें लौकी के टुकड़े डाल रहा था।

परिचय प्राचीन था। किंतु उनके निवास-स्थान पर जानेका प्रथम अवसर मिला था। मेरा अनुमान था, इस अन्तर्प्रान्तीय ख्याति-प्राप्त कलाकारका कमरा किसी विलासी ऐश्वर्यशालीके कमरे से अधिक सुसज्जित नहीं तो उसकी समानताका दावा करनेवाला अवश्य होगा किन्तु वहां कृत्रिमताका नाम मात्र नहीं था। मेरे नेत्रोंके सम्मुख कविकी सरलता और कमरेकी स्वच्छता नृत्य कर रही थी।

विधुर कवि द्वारा भोजनके लिये किया गया आग्रह व्यर्थ न गया। भोजन करनेके पश्चात् मेरे मानस-पटल पर अमिट छाप लग गयी—यह कवि कलमका धनी ही नहीं किन्तु पाक विज्ञानका पूर्ण पण्डित भी है।

मैं उस कवि द्वारा सुसम्पादित एक 'महाकवि' का अधूरा अभिनन्दन ग्रंथ उलट पुलटकर देखने लगा जो हिन्दी साहित्यके भण्डारमें अद्वितीय प्रमाणित होगा।

'इसकी छपाई शीघ्र समाप्त क्यों करा लेते?'—मैंने प्रश्न किया।

'पैसेका अभाव है।'—उत्तर मिला। आपको...?'—

आश्चर्यकी बात नहीं। कालेजसे जो कुछ मिलता है--वह भोजन आदि आवश्यक व्ययके लिये भी पूर्ण नहीं होता।'—इसी समय पोस्टमैन एक मनीआर्डर द्वारा भेजे गये पचास रुपये दे गया। यू० पी० के एक प्रमुख नगरसे एक कवि सम्मेलनके संयोजकने मार्ग-व्ययके लिये वे रुपये भेजे थे और एक सौ वहां बिदाके समय देनेके लिये लिखा था।

'कवि सम्मेलनों और मासिक-पत्रिकाओंसे आपको विशेष रुपये मिल जाते हैं?'—मैंने पूछा।

'...व्ययके अतिरिक्त जो शेष रहते हैं--अभिनन्दन ग्रंथको पूर्ण करनेके प्रयत्नमें लगाते हैं।'--वह बोले।

किसी प्रकाशकको क्यों नहीं सौंपा दिया? मुझे अकस्मात××× राज कवि सम्मेलन स्मरण हो आया। मैं पुरस्कारके सम्बन्ध में जाननेकी अपनी इच्छाओं नहीं दबा सका।

"×××राज कवि-सम्मेलनमें दीवान साहबकी ओरसे आपको कितने रुपये पुरस्कार मिले?"—मैंने प्रश्नकर ही दिया।

"कुछ भी नहीं। मार्ग व्ययके लिये जेब खाली करनी पड़ी, यद्यपि--मुझको काफी प्रलोभन दिया गया था और मेरा अनुमान था, अभिनन्दन-ग्रंथके दो चारफरमे इस यात्राके पश्चात् अवश्य छप जायेंगे।"

दीवान साहब अपने जिलाके सुप्रसिद्ध कांग्रेसी-नेता हैं। नमकके आन्दोलनमें जेल के 'ए' क्लासमें रहनेका कष्ट भुगत चुके हैं। अपनी मोटरसे, गरीबोंके दुःखसे दुखी होकर, देहाती सड़कोंकी धूल उड़ाते हुए, ग्राम णोंके बीच सात-आठ-बार भाषण भी कर चुके हैं। इनके मुसाहबोंका कहना है, प्रांतका प्रधान मंत्री नहीं बना कर इनके साथ भारी अन्याय किया गया। ऐसे गरीब-पालकका इस गरीब साहित्य-सेवीके प्रति ऐसा व्यवहार? मैं आश्चर्यमें पड़ गया। "अन्य कवियोंको क्या मिला?"—मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी।

उन्होंने सहज सरल स्वरमें कहा, "जब ट्रेन खुल रही थी-मैंने देखा, कवियोंके सामने एक लम्बी सूची रखी गयी जिसमें उनके नामके सामने कुछ रुपये अंकित थे जो उनके मार्ग-व्ययके लिये भी पूर्ण नहीं होते—किसीने स्वीकार नहीं किया।"

अपमानका कड़वा घूंट कलाकार सहन नहीं कर सकता। और जब मैं विदा लेकर, वहांसे लौट रहा था, मानसमें विचार-तरंगें उठ रही थीं:

काश दीवान साहब यह समझ पाते कि 'बेगारमें पकड़कर लाये गये आसामी की तरह इन कलाकारोंको भी आवश्यक खर्चके रुपयोंकी आवश्यकता होती है।"

सरकार की नियंत्रण उठाने की घोषणा

डा० राजेन्द्र प्रसादका वक्तव्य

भारतके खाद्य सचिव एवं कांग्रेस प्रेसिडेण्ट डा० राजेन्द्र प्रसादने गत सप्ताह बम्बईमें ३ दिसम्बरको एक प्रेस सम्मेलनमें यह बताया कि नियंत्रण हटानेके सम्बन्धमें सरकारी निर्णय की घोषणा ८ दिसम्बरको की जायेगी। विश्वसनीय सूत्रोंसे मालूम हुआ है कि सरकारने नियंत्रण हटा देनेका फैसला कर लिया है।

खाद्य सचिवने अपने उक्त वक्तव्यमें यह आश्वासन दिया है कि सरकार इस बातका ध्यान रखेगी कि असाधारण स्थितिं न उत्पन्न होने पाये जिससे जन-साधारणको कष्ट हो। एक प्रश्नके उत्तरमें डा० राजेन्द्र प्रसादने कहा कि खाद्य पदार्थों और रेशनके अन्तर्गत आनेवाली वस्तुओंके दाम चढ़ जानेकी हालतमें सरकारी कर्मचारियों तथा औद्योगिक और व्यावसायिक श्रमजीवियोंको अतिरिक्त महंगाई भत्ता देनेकी सिफारिशके प्रश्न पर सरकार विचार करेगी।

खाद्यान्नकी धीरे-धीरे रेशनिङ्ग और मूल्य नियन्त्रण घटानेकी नीति पर विचार करनेको प्रान्तीय सरकारोंसे कहा गया है। केन्द्रीय सरकारने यह निर्देश प्रांतीय सरकारों और देशी रियासतोंको खाद्यान्न नीति समिति द्वारा की गयी सिफारिशोंके आधार पर भेजा है। भारत सरकार इन सिफारिशोंको कार्यान्वित करनेके प्रश्न पर विचार कर रही है और आठ दिसम्बरको सरकारका निर्णय घोषित किया जायेगा।

मूल्य बृद्धि

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित खाद्यान्न नीति कमेटीकी मुख्य सिफारिशें ये हैं कि जो खाद्यान्न नियंत्रित हैं उनका मूल्य भाव बढ़ा दिया जाय रेशनिङ्ग और मूल्य नियंत्रण धीरे-धीरे उठा लिया जाये और विदेशसे आये खाद्य पदार्थों पर अबलम्बनकी नीति छोड़ी जाये।

रेशनिङ्ग और मूल्य नियंत्रण उठाने के सम्बन्धमें यह सुझाया गया है कि श्रीगणेश पहले उन पदार्थोंसे किया जाये जो हाल सालमें रेशनिङ्ग और नियंत्रणमें लाये गये हैं। इस बातका ध्यान रख कर कि जितना शीघ्र सम्भव हो सरकारी नियंत्रण हटे स्थानीय हालतोंको देख सुनकर उनके आधार पर ही नियंत्रण हटाया जाना चाहिये। इस समितिके तीन सदस्यों ने उक्त सिफारिशोंका सम्पूर्ण विरोध किया है और यह सुझाव दिया है कि १९४८ में खाद्यान्न पर मौजूदा नियंत्रणमें जरा भी शिथिलता न आनी चाहिये। नियंत्रण ढीला करनेका सवाल उस समय उठता है जब १२ औंसके आधार पर देश भरमें खाद्यान्न पहुंचा सकने एवं किसी आकस्मिक स्थितिके उत्पन्न होने पर उसका सामना कर सकनेके लिये पर्याप्त अन्नकी सप्लाई मिलनेका भरोसा हो जाये।

श्री ईश्वरदास जालान आप सर्व सम्मितसे पश्चिम बङ्गाल व्यवस्थापिका परिषद्के स्पीकर निर्वाचित हुए हैं।

डा० राजेन्द्र प्रसादने यह भी कहा कि पहले विदेशसे चीनी मंगानेकी बात थी लेकिन ऐसा करना उचित नहीं समझा गया। इसका प्रथम कारण तो यह है कि भारतके विनिमयके साधन अत्यन्त सीमित हैं अतएव बहुत सावधानीके साथ उनका उपयोग किया जाना चाहिये। दूसरा कारण यह है कि गेहूं, चावल जैसे खाद्यान्न बहुत बड़े परिमाणमें भारतको इम्पोर्ट करना है जिसके लिये काफी विनिमय मुद्रा उसे खर्च करना आवश्यक है।

चीनी ३५) मन

भारतीय पार्लमेण्टमें पण्डित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने नियंत्रण उठ जाते ही चीनीका दाम ५०) मन हो जानेका हवाला दिया था। इस सम्बन्धमें इण्डियन शूगर सिण्डीकेटके मंत्रीने इस आशयकी एक विज्ञप्ति प्रेषित की है कि चीनीका दाम ४१) से ऊपर नहीं चढ़ा। बादेके सौदे फाटकियोंके बीचमें ३८) के आसपास ही हुए हैं। सिण्डीकेटने दाम बहुत कम रखनेका निश्चय किया है। सिण्डीकेट खुल्लम-खुल्ला ३५) मनमें चीनी बेचता है। यह दाम गत वर्ष स्थिर किये गये नियंत्रित मूल्यसे अधिक है किन्तु गन्ना, श्रम और ऐसी ही अन्य पदों पर बढ़ी हुई लागतको देखते हुए यह अधिक नहीं है। यद्यपि गन्नेका दाम युक्त प्रांत और बिहारकी सरकारोंसे सलाह करके निश्चित किया जायेगा सिण्डीकेट किसानको ६० प्रतिशत अधिक देनेको तैयार है। सिण्डीकेटने चीनीका जो दाम बांधा है उसकी ८० प्रतिशतसे अधिक गन्ना और श्रम पर लागत बैठेगी। अवस्था अनुकूल होनेसे सिण्डीकेट दाम घटानेकी कोशिश करेगी।

———

छुआछूत मिटानेके लिये बिल स्वीकृत

श्री मुन्नी स्वामी पिल्लेका परिगणित जातियोंकी हालत सुधारनेके लिये सरकार से पर्याप्त कार्वाई करनेके अनुरोधका प्रस्ताव सेठ गोविन्द दासके संशोधनके साथ स्वीकार हो गया। संशोधित प्रस्तावको स्वीकार करते हुए स्वास्थ्य मंत्रिणी राजकुमारी अमृतकौरने कहा कि "हम इसे पूर्ण करनेका पूरा प्रयत्न करेंगे और तब तक चैन न लेंगे जब तक कि परिगणित जाति शब्द हमारे शब्दकोषसे निकल न जायगा।

ज्ञानी गुरुमुख सिंह मुसाफिरने बिलपर बोलते हुए कहा कि बीसवीं शताब्दीमें भी छूआछूतका होना भारतके लिये एक कलंककी बात है। उन्होंने यह भी कहा कि चूंकि पाकिस्तानमें हरिजनोंको आतंकित किया जा रहा है और वे जबर्दस्ती मुसलमान बनाये जा रहे हैं इसलिये भारत सरकारको उन्हें वहांसे हटानेकी उचित व्यवस्था करनी चाहिये।

भारतीय पार्लमेण्टने गैर सरकारी बिलोंपर विचार किया और भारतीय अपराध विधानमें संशोधनके लिये श्री ठाकुर प्रसाद भार्गवने जो बिल पेश किया था उसको जनमतके लिये प्रचारित करनेकी स्वीकृति दी।

पार्लमेण्टने दो और सरकारी बिल पास किये हैं। एक भारतीय आयकर एक्ट १९२२ में संशोधन तथा दूसरा व्यापार आयकर एक्ट १९४७।

अनिवार्य सैनिक शिक्षा

पण्डित हृदयनाथ कुंजरुने पूछा कि यह क्या सत्य है कि रक्षा मंत्रीने कुछ सप्ताह पूर्व सार्वजनिक रूपसे घोषित किया था कि देशके नवयुवकके लिये अनिवार्य सैनिक शिक्षणकी योजना प्रस्तुतकी जा रही है। सरदार बलदेव सिंहने कहा कि मैं २८ जून १९४७ में जोधपुरमें सैनिक स्कूलके शिक्षार्थियोंके सामने भाषण करते हुए मैंने कहा था कि हम एक ऐसी योजना प्रस्तुत करनेका विचार कर रहे हैं कि देशके प्रत्येक युवकको नौसेना, विमान सेना और स्थल सेनाकी शिक्षा दी जा सके।

अन्न और बिजलीके साधनोंमें वृद्धि

प्रश्नोत्तरके समय नेहरूजीने घोषणा की है कि देशके अन्न और बिजली संबंधी साधनोंमें वृद्धि करनेकी विभिन्न योजनाओंको शीघ्रसे शीघ्र कार्यान्वित करनेके प्रश्नको भारत सरकार सबसे अधिक महत्व देती है। उन्होंने यह भी बताया कि इन योजनाओंको शीघ्रसे शीघ्र कार्यान्वित करानेके उद्देश्यसे सरकार विदेशोंकी सहायतासे पूरा-पूरा लाभ उठानेका विचार कर रही है और अमेरिकाके विशेषज्ञोंसे ठेकेके आधारपर बड़ी-बड़ी योजनाएं उपस्थित करनेके लिये लिखा पढ़ी कर रही है।

नेहरूजीको एटलीका निमंत्रण

प्रोफेसर रङ्गाने पूछा कि क्या पण्डित नेहरूको ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीने लन्दनमें बुलाया है? पण्डित नेहरूने उत्तर दिया: "मुझे प्रधान मंत्रीने किसी खास विषयपर विशेष परामर्शके लिये आमंत्रित नहीं किया। वास्तवमें यह बात इससे उठा कि मुझे राजकुमारी एलिजाबेथ के विवाहमें सम्मिलित होनेका निमंत्रण मिला था। उस समय मैं नहीं जा सका इसलिये बादको विभिन्न विषयोंपर चर्चा करनेके लिये जा सकूं तो उन्हें प्रसन्नता होगी। यदि मौका मिला तो मैं वहां जा सकता हूं।

पश्चिमी बंगालमें खाद्य नियन्त्रण

पश्चिमी बंगालके प्रधान मंत्री डाकर प्रफुल्लचंद्र घोषने घोषणा की है कि पश्चिमी बङ्गालकी सरकारने एक वर्ष तक और खाद्य नियंत्रण चालू रखनेका निश्चय किया है। नियंत्रण चालू रखनेकी आवश्यकताके सम्बन्धमें कहा गया है कि नियंत्रण उठानेसे गरीब लोग भूखों मर जायेंगे। धनी वर्गकी बात अलग हैं उस पर कोई असर न होगा।

ध्येयपूर्ति न होनेपर आंदोलन चलेगा

हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ अपने सहयोगी श्री जी० एस० मालकोट और श्री कृष्णचारी जोशीके साथ विमान द्वारा हैदराबादसे मद्रास पहुंचे हैं। राज्य कांग्रेसकी कार्य कारी समितिका यहां बैठक होने जा रही है जिसमें भावी कार्य उप निश्चित् किया जायगा। स्वामी रामानन्द तीर्थने एक वक्तव्यमें रहा है कि राज्य कांग्रेस जो चाहती थी उसकी पूर्ति नहीं हुई है। गत चार मासमें रियासतके अन्दर जो कुछ हुआ है उससे जनताकी भावनाका पता स्पष्ट चलता है। स्वामीजीने कहा है कि जब राज्यमें उत्तर दायी सरकारकी स्थापना और हैदराबाद भारतोय संघमें शामिल नहीं हो जाता है तब तक हमारा आ दोलन बन्द नहीं होगा।

सरदार पटेलने भारतीय पार्लमेण्टमें अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि गत जुलाई में हमने रियासतोंके भारतीय डोमिनियन में प्रवेश करनेके सम्बन्धमें उनसे बातचीत प्रारम्भ की थी। रियासतोंके सहयोगके परिणाम स्वरूप १५ अगस्तसे पूर्व हैदराबाद, काश्मीर तथा जूनागढ़को छोड़कर सबरियासतें भारतीय डोमिनियनमें शामिल हो गयीं। निजाम के प्रतिनिधियोंसे भी हमारी बातचीत हुई लेकिन १५ अगस्त तक समझौता न हो सका। निजाम बातचीत भंग करना नहीं चाहते थे अतएव उनकी प्रार्थनापर हमने उन्हें दो महीनेकी मुहलत दी। फिर गवर्नर जेनरलने हमारी ओरसे बातचीत की। दो मास पूर्व समझौता भी हो गया था लेकिन प्रतिनिधि मण्डलने इस्तीफा दे दिया और उसके स्थानपर निजामने नया प्रतिनिधि मण्डल भेजा। उसके साथ भी हमारा पहले जैसा ही समझौता हो गया। इस समझौतेसे स्पष्ट है कि हैदराबाद पाकिस्तानमें शामिल नहीं होना चाहता। हैदराबादको जो स्थिति है उसके अनुसार उसका भाग्य अटूट रूपसे भारतके साथ बन्धा हुआ है।

समझौतेकी शर्तें

समझौतेकी मुख्य बातें ये हैं:—निजाम सरकार मैसूरकी तरह किसी भी स्थानपर अपने व्यापार एजेण्ट नियुक्त कर सकेगी। ये एजेण्ट हमारे व्यापार कमिश्नर और कूटनीतिज्ञोंके सहयोगसे कार्य करेंगे जिसका अर्थ यह है कि वे उनके नियंत्रण और देख भालमें कार्य करेंगे। निजाम विदेशोंमें तथा ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके देशों

निजामकी हत्याकी चेष्टा

में अपने कूटनीतिज्ञ एजेण्ट नियुक्त नहीं कर सकेगा। रियासत किसी भी दूसरे देशमें शस्त्र नहीं खरीद सकेगी। शस्त्रोंके मामले भी भारत सरकार केवल न्याययुक्त आवश्यकताओंको ही पूरा करेगी। निजामकी सेना और पुलिसके शासन सम्बन्धी मामलोंके बारेमें भारत सरकार से बादमें बातचीत की जायगी। रियासतमें

स्वामी रामानंद तीर्थ

स्थित भारतीय सेनाको धीरे धीरे फरवरी तक वापस बुला लिया जायगा। रेल-तार डाक आदिके प्रश्नपर बादमें विचार किया जायगा। जब भारत सरकारके प्रादेशिक कमिश्नरके लिये स्थान दे दिया जायगा। तब रेजीडेण्टके भवनको खाली कर दिया जायगा। मुद्रा और सिक्केके बारेमें वर्तमान प्रबन्ध ही चालू रहेगा। यह समझौता एक वर्षके लिये हुआ है।

नया मंत्रिमण्डल

निजामकी पुरानी शासन परिषद् भंगकर अन्तःकालीन सरकार गठित हो गयी है। मि० मीर लायक अली नये प्रधान मन्त्री बनाये गये हैं। मन्त्रिमण्डलमें चार मन्त्री नामजद तथा चार मुसलमान और चार हिन्दू जिनमें दो वर्तमान सरकारके मन्त्री भी शामिल है, होंगे। राजबन्दियोंकी रिहाई शुरु हो गयी है। राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ को१५ अगस्तको गिरफ्तार किया गया था, अब अन्य कर्मियोंके साथ रिहा कर दिया गया है। लेकिन कांग्रेस नयी सरकारमें शामिल होगी या नहीं—यह अभी स्पष्ट नहीं है। सद्यमुक्त कांग्रेस नेताओंने जो वक्तव्य दिये हैं उनसे पता चलता है कि कांग्रेस नेताओंको 'अन्तःकालीन सरकारके गठनके तौर-तरीकोंसे सन्तोष नहीं है। यह भी सम्भव है कि कांग्रेस नेता शीघ्र ही मंत्रिमण्डलमें शामिल होनेसे इनकार कर दे। क्योंकि कांग्रेस दलको दो सीटोंसे अधिक मिलनेकी गुंजाइश नहीं मालूम पड़ती है। स्वामी रामानन्द तीर्थने एक मुलाकातमें बताया है कि जब तक बुनियादी बातोंपर कांग्रेस सन्तुष्ट नहीं हो जाती है तब तक उसके लिये सरकारमें शामिल होना कठिन है।

हैदराबाद बराबरका हिस्सेदार

हैदराबाद प्रतिनिधि दलके नेता नवाब-जंगने भारत और हैदराबाद राज्यके बीच होनेवाले समझौतेके सम्बन्धमें कहा है कि वर्तमान समझौतेकी शर्तें सन्तोषजनक है क्योंकि भारतीय संघने हैदराबादको एक अधीनस्थ राज्यके बजाय बराबरके हिस्से-दारके रूपमें स्वीकार किया है। रक्षाके लिये भारत सरकारने हैदराबादको उचित मात्रामें अस्त्र देना स्वीकार किया है। नवाब मुईन नवाज जंगसे जब यह पूछा गया कि छतारीके नवाबके नेतृत्वमें जब समझौता हुआ था तब इत्तेहादुल मुसल-मीनने विरोधी प्रदर्शन किया था लेकिन इस बार वह क्या सन्तुष्ट है। नवाब साहबने कहा कि पहले प्रतिनिधि मण्डल-में सभी लोग हैदराबादके बाहरके निवासी थे लेकिन वर्तमान प्रतिनिधि मण्डलमें सभी आदमी मुल्की थे जिनमें इत्तेहादुल मुसलमीनका भी प्रतिनिधि शामिल था।

जांचके बाद अस्त्र दिये जाय

हैदराबाद राज्य कांग्रेसकी कार्य-कारी समितिके अध्यक्ष श्री डी० जी० बिन्दुने एक वक्तव्यमें कहा है कि भारत सरकार निजामको हथियार देनेसे पूर्व हैदराबादकी स्थितिके सम्बन्धमें कर जांच कर लेगी अभी हालहीमें हैदराबादकी पुलिस और फौजमें वृद्धिकी गयी है हजारों नेशनलगार्ड पूरी तरहसे सशस्त्र कर दिये गये हैं। भारत सरकार इस स्थितिमें जो भी शस्त्र देगी वह जनताको कुचलनेमें काममें लाये जायेंगे। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि कांग्रेस इन सुधारोंको स्वीकार न करेगी। राज्यकी जनता जब तक अपना आन्दोलन नहीं बन्द करेगी तब तक जनताकी सार्वभौम सत्ता स्थापित नहीं हो जाती और हैदराबाद भारतीय संघमें सम्मिलित नहीं हो जाता।

निजामकी हत्याकी चेष्टा

निजामकी हत्या करनेके लिये बम फेंका गया लेकिन दूर गिरा और निजाम बाल-बाल बच गये। कहते हैं कि निजाम जब महलसे बाहर जा रहे थे तब रास्तेमें किसीने उन पर बम फेंका, जो सड़क पर गिर कर जोरदार आवाजके साथ फटा। सड़क पर खड़े पांच आदमी घायल हुए। आक्रमणकारीको पकड़नेके लिये कुछ लोगोंने जिनमें अरब भी थे अपनी तलवार खींच ली। वह पकड़ा गया और उसके बाद दो बम और बरामद हुए। निजामने अपनी मोटर रोकी और अभियुक्तको पुलिसके हवाले करनेको कहा। निजाम नित्य ६ मील शहरसे होकर हवाखाने जाते हैं। उस समय सड़कका यातायात बन्द हो जाता है! दर्शक सड़कके दोनों ओर खड़े हो जाते हैं। हैदराबादके नये प्रधान मन्त्रीने रेडियो ब्राडकास्टमें इस गन्दे आक्रमणकी निन्दा की है।

राजाजी और पंडित नेहरू

हवाईयात्रा

(१२वें पृष्ठका शेषांश)

जहां तक भोजनका सम्बन्ध है, खाद्य-सामग्रीके पैकेट खानेके बन्धे घण्टोंपर दिये जाते हैं। अभी तक भोजन परसनेमें हिन्दुस्तानका कोई ख्याल नहीं रखा जाता! चाहे मुसाफिर निरामिष भोजी हो अथवा नहीं, पैकेटमें ठण्ढे मांसहारी खाद्य-पदार्थ ही होते हैं। बड़ी कठिनाईसे अपनी जरूरतके लिये अलगसे मक्खन-रोटीका टुकड़ा मिल पाता है। यह सुझाव दिया जा सकता है कि जो हवाई-माल हिन्दुस्तानसे होकर जाते हैं उनमें निरा-मिष भोजियोंके लिये व्यवस्था लाजिमी होनी चाहिये।

रास्तेपर मोटरसे और रेलोंपर रेल-गाड़ीमें सफर करनेमें जो मजा आता है उसका कारण यह है कि आदमीको तेज सफरका एक खास आनन्द महसूस होता है। जन्तुकी तरह छोटासा यह मनुष्य ४०, ५० या ६० मील प्रति घण्टाकी रफ्तारसे हवासे सरसराता हुआ जब निकलता है तो उसे बेहद आनन्द प्राप्त होता है क्योंकि वह जानता है कि अपने तई इतनी गति प्राप्त करना उसे संभव नहीं। परन्तु हवाई सफरमें यह आनन्द भी नहीं आता। इतनी ऊंचाईपर स्थित होनेसे यह होता है कि यद्यपि जहाज ३०० मील प्रति घण्टाकी गतिसे ही क्यों न चल रहा हो, नीचेकी जमीन मस्त बादलकी तरह धीरे धीरे सरकती दिखाई देती है। इस तरह रफ्तार-प्रियताकी मान-विक इच्छा भी पूरी नहीं हो पाती।

अगर सफरके इस ढंगका शास्त्रीय विवेचन करें तो हमें दीखता है कि इसमें पेट्रोल बड़ी भारी मात्रामें खर्च होता है। यह वस्तु निश्चित मात्रामें ही मिल सकती है और संसारके विभिन्न भागोंमें भूगर्भ से निकाली जाती है। इसके स्टाकमें जैसे जैसे कमी होती जाती है वैसे वैसे उप-भोक्ताओंमें दूसरे संग्रह स्थलोंको हथि-यानेकी इच्छा बढ़ती जाती है। इससे आखिरकार लालच, बैर, घृणा और संदेह का बाजार गर्म होता है, और परिणाम-स्वरूप जागतिक महायुद्ध छिड़ जाते हैं। इसलिये, यात्राके इस ढंगमें अस्वाभाविक वृद्धिसे पड़ोसियोंमें कटुताका प्रादुर्भाव होगा।

इस सबका मतलब यह नहीं है कि हवाई-यात्रा रहे ही नहीं, परन्तु केवल इतना ही कि इसकी बुराइयोंसे हम साव-धान रहें और इसके इस्तेमालमें पूरी पूरी सावधानी बरतें। तथा कथित समयकी बचत इतनी नहीं है कि उसके साथ जुड़े हुए अनेकों दुर्गुणोंको दर-किनार कर दिया जाय। आजकी हवाई यात्राको तो हवाई ढुलाई, कहना ही अधिक उचित होगा।

अपनी बेवकूफियां ! डायरी रखिये !

प्रकाशचन्द्र शर्मा

एलबर्ट हब्बर्ड कहा करते थे कि, प्रत्येक व्यक्ति कमसे कम पांच मिनटके लिये रोजाना 'बेवकूफ' बन जाता है, बुद्धिमानी इसीमें है कि समयकी यह सीमा और न बढ़े।

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डेल कार्नेगीने तो अपनी एक फाइल बना रखी जिसमें वे अपनी बेवकूफियोंका ब्योरा लिखा करते हैं। फाइलका नाम उन्होंने 'मेरी बेवकूफियां' रखा है। वे कहा करते हैं कि 'मैं इस फाइल कोपढ़कर अपनी कठिनसे कठिन, समस्या सुलझा लेनेमें समर्थ होता हूँ।'

एच० पी० हावेल एक मामूली क्लर्कसे उन्नति कर अमेरिकाके धनकुबेर हो गये थे। अपनी सफलताका कारण वे अपनी 'मुलकाती डायरी' बतलाया करते थे जिसमें उन्होंने मुलाकातोंकी सूची लिख रखी थी। प्रत्येक सप्ताहके अन्तमें आप हर भेंटकी आलोचना कर अपने आपसे प्रश्न किया करते थे। मैंने उस भेंटमें क्या गलती की? मैं किस प्रकार अपनेको सुधार कर और अधिक सफलता प्राप्त कर सकता था ? इत्यादि !

कभी कभी इस आलोचनासे उन्हें दुःख भी पहुंचता था किन्तु वे कहा करते थे कि यही मेरी सफलताकी कुंजी है।

बेन फ्रेंकलिन रात्रिको दिन भरकी अवांछित घटनाओंपर विचार किया करता था। इस प्रकारके अन्वेषणसे उसने अपने आपमें १३ बुराइयां पायीं जिनमें निम्न तीन प्रमुख हैं—समयका दुरुपयोग, निठल्ले बैठे रहना, लोगोंसे बहस करना।

फ्रेंकलिन अपने किसी एक दोषको चुनकर एक सप्ताह उस तक से द्वन्द्व करना प्रारम्भ करता था। रोजाना वह नोट कर जाता था कि किस दिन किसकी जीत हुई। दूसरे सप्ताहमें अन्य दोषको चुना करता था। दो वर्ष ऐसा करनेके बाद उसका मत था कि संसारमें तीन चीजें बहुतअधिक कड़ी है। इस्पात हीरा और अपने आप को पहचाना।

मान लीजिये आपको किसीने 'बुद्धू'कह कर डपट दिया। आप क्या करेंगे ? लिंकन ने एक राजनीतिज्ञको प्रसन्न करनेके लिये अपनी सेनाकी टुकड़ीको स्थान बदलीकी आज्ञा दे दी। युद्ध मन्त्रीने इसे भारी भूल समझकर आज्ञा माननेसे इनकार कर दिया और कहा कि ऐसा कर लिंकनने अपनेको 'निरा बुद्धू' साबित कर दिया।

लिंकनको जब यह मालूम हुआ तो उसने कहा कि जब युद्ध मन्त्रीने मुझे 'निरा बुद्धू' कहा है तो अवश्य ही मैं बुद्धू हूंगा क्योंकि वह कभी गलती नहीं करता। मैं अपनी आज्ञा की खुद जांच करूंगा। बादमें उक्त मन्त्रीने यह साबित कर दिया कि उसकी आज्ञा गलत थी। लिंकनने उसे वापिस ले लिया।

हम लोग 'आलोचना' से घबड़ाते हैं, डरते हैं, चिढ़ते हैं, कभी कभी क्रोध भी प्रकट कर बैठते हैं। 'किन्तु यह निश्चित है कि चार बारमें हम तीन ही बार सही हो सकते हैं'—कमसे-कम थियोडोर रूजवेल्ट का यही ख्याल था। आइन्सटाइन जैसा विद्वान गणितज्ञ भी स्वीकार करता था कि सौ में से निन्यानवे बार उसके परिणाम भी गलत हो जाते हैं।

स्वस्थ आलोचनाका मि० ई० एच० लिटिल स्वागत किया करते थे। पुराने जमानेमें आप कालगेट साबुनोंके सेल्समैन थे किन्तु बिक्री न होनेकी वजहसे आपको नौकरी छूटनेका भय हुआ इसलिये बादमें आप जब भी साबुन बेचनेमें असफल हो जाते थे, बेधड़क आप उसी व्यापारीके यहां पहुंचकर पूछते, 'मैं आपका नेक सलाह और आशीर्वाद प्राप्त करने फिर आया हूँ, कृपया साफ साफ बतलावें कि आपने अभी अभी मेरा साबुन खरीदनेसे क्यों इनकार कर दिया। इस प्रकार व्यापारियों के यहां आपने स्थान पा लिया, उनसे काफी घनिष्ठता हो गयी। और आज आप 'पामोलिव फरम्युर्स' जैसे विशाल और ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठानके अधिष्ठता हैं।

आपके पति......

—क्रोधी हैं ? आप नम्र बनें, उनके स्वभावमें सुधार निश्चित है।

—का कद छोटा है ?-टिप्पणियोंकी परवाह न करें-याद रहे अपनी चीज, अपनी ही चीज है।

—धनी हैं ? आप अनादि काल तक उनकी ऋणि नहीं। वे जो कुछ भी देते हैं आप उसके योग्य हैं—अगर आप गुणी हैं ?

—निर्धन हैं ? दोषारोपण न करें, जो है उससे ही सुधा बरसायें, उन्हें अपनानेकी चेष्टा करें, उन्हें नीची देखनेको अवसर न दें।

—अतिव्ययी हैं ? कुटुम्बके आर्थिक कार्य क्रमका भार ग्रहणकरनेमें पीछे न हटें, यह आदत सराहनीय नहीं, इसे किसी भी मूल्य पर रोकें।

—चतुर हैं ? उनसे प्रतिद्वन्द्विता करनेको चेष्टा न करें। ऐसे लोग शांत और नेक पत्नी पसंद करते हैं

—घरमें रहना ही अधिक पसन्द करते हैं ? आप उन्हें घरपर आराम और सुखदें, वे आपको बाहर अवश्य ले जायेंगे !

संसारका श्रेष्ठ कैदखाना

संसारको जेलोंमें टर्कीको कैदखाना उत्तम माना जाता है। यहां कैदियोंके चरित्र के निर्माणकी चेष्टा की जाती है। कैदखाना इमराली नामक द्वीप पर बसा हुआ है। इस 'कोलोनी' को कैदियोंने ही बनाया है। बहुत सी बड़ी बड़ी झोपड़ियां और

ऐसे ऐसे विशाल भवन बना कर ब्रिटेनमें मकानोंके अभावको दूर किया जा रहा है

कान इन लोगोंने बनाये हैं। इन्हें खेती बारी सिखलाई जाती है। खेतोंकी फसलसे जो आय होती है उसे कैदियोंमें बांटकर उसके एकाउन्टमें जमाकर दिया जाता है। इस तरह मुक्त होने तक उसके पास अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये काफी पूंजी इकट्ठी हो जाती है। यह देखनेके लिये कि बाहर के अनधिकारी व्यक्ति द्वीपमें न आयें केवल दो वार्डेन रहा करते हैं—पहरा देनेकी आवश्यकता नहीं।

प्लास्टिक युग

'प्लास्टिक' लोहेसे भी कड़ा, कागज और कपड़ेकी तरह मुलायम, शीशेकी तरह पारदर्शी और सुन्दर वस्तु है। वह दिन दूर नहीं जब प्लास्टिककी मोटरें, रेल हवाई जहाज, साइकिल, कुर्सी टेबिल, कागज कपड़े, जूते और आभूषणोंका इतनी तेजीसे उत्पादन होगा कि नित्य काममें आनेवाली चीजें साधारण व्यक्तियों तक पहुंच सकेंगी।

'प्लास्टिक' कोई नई खोज नहीं, इसका नाम हमारे लिये नया है। ७० वर्ष पहले ब्रिटेनमें इसका सर्व प्रथम निर्माण हुआ था महारानी विक्टोरियाके काममें। धनी वर्ग अपने कांटे और चम्मचों पर सुन्दर हेंडिल लगवाना चाहते थे, हाथी दांत तो इतना था नहीं, कि सबपर लगवाया जा सके इसलिये एलेक्जेण्डर पार्कस नामक व्यक्तिने सन् १८६५ में 'यूटिलिटी-आइवरी' (कामचलाऊ हाथी दांत) का अविष्कार किया। ८० साल बाद उसीको हम और आप 'सेल्यूलाइड' कहा करते हैं। इसके पश्चात् एक अंग्रेज और एक आस्ट्रियन ने 'यूरिया' नामक प्लास्टिककी खोज की—इसीका टूथ ब्रूस बनता है।

'प्लास्टिक' निम्नलिखित पदार्थोंसे तैयार किया जाता है—कोयला, मोटर तेल, छोआ [गुड़], एक प्रकारका कंकड़, लकड़ी, रूई, कोचीन [दूधसे हर तरहका तत्व निकाल लेनेके बाद का बचा हुआ हिस्सा] इसके अलावा पानी और हवाका भी उपयोग किया जाता है। इन खनिज पदार्थोंसे सत्रह प्रकारके प्लास्टिक तैयार होते हैं।

हम जो दूषित वायु सांस लेकर बाहर निकालते हैं उसे 'कार्बन डायोक्साइड' कहते हैं। रसायनज्ञ इसे कोयले पर मांप फूंककर पैदा करते हैं। वे एक प्रकारकी और गैस भी बनाते हैं। जिसे वे 'एमोनिया गैस' कहते हैं। इन दोनों गैसोंको आपसमें जोरोंसे दबा दिया जाता है जिससे 'यूरिया' नामका नमककी तरह एक ठोस पदार्थ उत्पन्न होता है।

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

AT AMAZINGLY LOW PRICE

Lever movements jeelled wrist watches in fancy shapes, 36 hours winding with second hand, thick crystal glass, most reliable and accurate time keepers, guaranteed for 3 years, nickle silver cases with a nice strap and box.

Prices Rs. 26, Postage As. 12 (free for 2) for white Chromium case Rs. 2 and Radium Dial Rs. 3 extra.

LIMITED STOCK NO ORDER FOR MORE THAN 3 ACCEPTED.

ORIENT WATCH SYNDICATE Dept. (14B) Colony Rd. DUM DUM

घाव को आराम पहुंचाता, परिष्कृत करता और भरता है।

५० से अधिक वर्षों से विख्यात

जम्बक, वनस्पति मलहम चर्म रोगों और घावों के लिए शीघ्र गुणकारी, कीटाणु नाशक, अत्यन्त सफल औषधिके रूपमें सारे संसार में प्रसिद्ध है।

जम्बक के परिष्कृत वनस्पति तैल लोम कूपों में प्रवेश करके क्षतिग्रस्त या रोगग्रस्त चर्म की मांसतन्तुओं को साफ करते हैं और दर्द जलन तथा सूजन को शीघ्र दूर करते हैं। इस प्रकार घाव सूखकर अच्छा हो जाता है।

जम्बक

व्यवहार करें

पशु चर्बी रहित होने की गारण्टी

विश्व विख्यात वनस्पति मल्हम

एजेण्ट्स : स्मिथ स्टेनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्टाली कलकत्ता।

नं० १

युद्ध-पूर्व से भी कम मूल्य

स्वीटजरलैंडकी बनी। बिलकुल ठीक समय देने वाली। प्रत्येक को गारंटी ३ साल। जुएल-वाली क्रोमियम केस—२०॥), सुपीरियर २५), फ्लाट क्रोमियम केस-३०), सुपीरियर ३८) रोल्डगोल्ड (१ वर्ष गारंटी)—५५) रेक्टेंगुलर, टोनो व कर्भशेप क्रोमियम केस ४२), रोल्ड गोल्ड ६०), १५ जुएल्स रोल्डगोल्ड—९०), अलार्म टाइम पीस १८), २२), सुपीरियर २५) बीग बेन-४५) पैकिंग पोस्टेज अलावे, एक साथ ३ लेने से माफ। एच. डेविड एण्ड कं० पो० ब० नं० ११४२४, कलकत्ता

'लालशर' तोमेरे लिये अमृत है!

लाल-शर

(लाल शरबत)

बच्चोंको मोटा, ताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित रखने की प्रसिद्ध मीठी दवा

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि० कलकत्ता

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

यह गांधीजीका वह तैल चित्र है गत सप्ताह जिसका मद्रास व्यवस्थापिका परिषद् भवनमें प्रान्तके गवर्नरने उद्घाटन सम्पन्न किया।

वर्ष—३० संख्या—४७ ता० १७ दिसम्बर १९४७ 17th December, 1947 मूल्य =) वार्षिक ६)

मनुष्य

कहीं अनादि का पता लगा रहा,

कहीं अनंत का अलख जगा रहा,

कहीं थहा रहा अगम्य सिन्धु को

कहीं प्रसिद्ध

सिद्ध औ'

तपोधनी !

कहीं उठा रहा पहाड़ शीश पर

कहीं प्रबल प्रवाह रोकता निडर,

कहीं बुला रहा समीप इंदु को

कहीं समृद्ध

जन-समाज

अग्रणी

कहीं किरण वितान के तले खड़ा,

कहीं तुषार - बिन्दु की तरह जड़ा,

कहीं निकुंज में पराग — सा झड़ा,

कहीं असिद्ध

रूप—राग

का ऋणी !

भारतका दुलारा गांधी है

कविवर "विस्मिल" इलाहाबादी

आजादी पर मरने वाला
इस बात का दम भरने वाला
दुनिया से नहीं डरने वाला
हर काम नया करने वाला
एक एक को प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

आंधी की तरह चलने वाला
दीपक बन कर जलने वाला
वह हाथ नहीं मलने वाला
दुश्मनको नहीं छलने वाला
एक एक को प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

सोये थे बहुत बेदार किया
इसने हमको हुशयार किया
लड़ने के लिये तैयार किया
चरखे से हमेशा वार किया
एक एक को प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

दुश्मन ने भी लोहा मान लिया
खूब अच्छी तरह पहचान लिया
क्या चीज है इसको जान लिया
अहसान किया अहसान लिया
एक एक को प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

चुपचाप सितम सहने वाला
जो सच है वही कहने वाला
दुनिया में निडर रहने वाला
लहरों की तरह बहने वाला
एक एक को प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

वह दिल से अहिंसा धारी है
उपदेश इसी का जारी है
यह नीति बस उसको प्यारी है
शुभ चिंतक है हितकारी है
एक एक का प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

दुख दर्द से यह आजाद रहे
खुशहाल रहे दिल शाद रहे
'विस्मिल' की दुआ बस याद रहे
यह लाख बरस आबाद रहें
एक एक को प्यारा गांधी है
भारत का दुलारा गांधी है

परहित बस जिनके मन माही।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

जरा सोच समझकर

दानवको मानव बनानेके लिये मानवको दानव बनना पड़ता है। युग युगान्तर से चली आती यह परिपाटी आज तक तदवत चली जा रही है। बीच बीचमें बुद्ध, ईसा और गांधीने इस परिपाटीको बदलनेकी कोशिश की, उनकी इस चेष्टाके लिये संसारने उनको महामानव, देवता भगवान सब कुछ माना पर उनके बताये मार्गपर वह कभी नहीं चला। क्योंकि दानवको मानव बनकर जीतनेकी जब तक चेष्टा की जाती रही उसकी दानवता प्रचण्ड ही पड़ती गयी। हिटलर और जिन्ना इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। देशका बंटवारा हो जानेके बाद भी जिन्नाकी रक्त की प्यास नहीं मिटी। मिट भी नहीं सकती, क्योंकि इस प्यासने ही जिन्नाको कायदे आजम, शाहंशाह पाकिस्तान बनाया है। दानवताकी पूजा तभी तक होती है जब तक मनुष्यके भीतर नर रक्तकी-युद्ध की-प्यास बना रखी जाती है। जिन्ना जानते है कि मुसलमानोंपर अपना नेतृत्व तभी तक बना रह सकता है जब तक अपने अनुयायियोंके भीतर युद्ध और विध्वंसकी चाह बनी रहेगी, क्योंकि निर्माण और प्रगतिके मार्गपर चलानेके लिये जिस प्रतिभा और चरित्र बल, सत्य और मानवताकी आवश्यकता है जिन्ना साहब उससे कोसो दूर हैं। इसलिये उनका एकमात्र बल और सम्बलहै मनुष्यके भीतर छिपी खूंखारीको जगाये रखकर उसकी नर रक्तकी प्यासको न बुझने देने में। जिस दिन उसकी यह प्यास बुझ गयी उसी दिन पाकिस्तानमें जिन्नाका प्रभाव, प्रभुता, अधिकार और नेतृत्व सब समाप्त। आज जहां लोग जिन्नाका नाम सुन कर झूम उठते हैं, गर्वसे छाती फुलाकर कायदे आजमके बखान करते नहीं थकते उसी भूमिमें जिस दिन युद्ध और विध्वंसका स्थान प्रेम और निर्माण, घृणा और अविश्वासकी जगह सहानुभूति और सदभावने लिया जिन्ना एक साधारण व्यक्ति मात्र रह जायंगे। इसी लिये पाकिस्तानमें आज भी युद्ध खेलकी तैयारियां हो रही हैं।

मनुष्यमें शहादत और कुरबानीकी तमन्ना रहती ही है। गर्व और गौरवकी भावना पैदा करके उससे सब कुछ कराया जा सकता है। जिन्ना विनाशके देवता हैं निर्माणके शत्रु। जब तक उनमें शक्ति और सत्ता है तब तक विनाश लीला चलती ही रहेगी, भारत सरकार इस बातको समझकर पाकिस्तानके साथ समझौते की चर्चा या प्रेमालाप करे। दानव जितना क्रूर और विध्वंसक होता है उतना ही मायावी होता है। पाकिस्तानके जाहिरा इरादोंपर विश्वास करके उन्हींके अनुसार चलने लगनेमें खतरा है। हैदराबादमें जो कुछ हो रहा है, पश्चिमी पंजाब और फ्रांटियरमें जो तैयारियां हो रही हैं और कूटनीति और धूर्त नीतिमें दुनियामें अपनी सानी न रखने वाले पुराने अंगरेजोंको पाकिस्तानमें खासकर पश्चिमी पंजाब और फ्रांटियरमें अन्धकारके स्थानोंपर जो बैठा रखा गया है, आदि बातें हमारे कथन का समर्थन करती हैं। यूनाइटेड प्रेस आफ अमेरिकाके संवाददाता जेम्स माइकेल्स कहते हैं कि उत्तर पश्चिम सीमाप्रान्तके गवर्नर सर जार्ज कनिंघम पाकिस्तान और सरहदी कबीलोंके साथ वैसा ही सम्पर्क बनाये हुए हैं जैसा वे कभी सम्राट की सरकारके लिये रखते थे। अन्तर केवल इतना है कि आज इन कबीलोंको हिन्दुस्तानकी सरहदके भीतर घुसकर उपद्रव करनेके लिये केवल भड़काया ही नहीं जा रहा, सब तरहकी मदद भी उनको दी जा रही है। इन पंक्तियोंके लिखनेके समय यह समाचार मिला है किजम्मू प्रांतमें प्रायः एक दर्जन गांव हमला बाजों द्वारा जला दिये गये। इनकी तादाद प्रायः तीन हजार थी और वहांसे आये हुए शरणार्थी बताते हैं कि उनमें अधिकांश पठान थे, कुछ घोड़ोंपर थे और उनके पास स्टेनगनें तथा छोटी-छोटी बन्दूकें थीं। यह सब कौन किसके इशारे पर कर रहा है? शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाने साफ ही साफ कहा है कि काश्मीर पर किये गये आक्रमणके पीछे पाकिस्तानका सीधा हाथ है और इसे प्रमाणित करनेके लिये भारत सरकारके पास पर्याप्त प्रमाण हैं।

हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्दतीर्थ कहते हैं कि यहप्रकट रहस्य है कि हालमें ही हैदराबादकी फौजी और पुलिस ताकत बढ़ायी गयी है। इतना ही नहीं हजारोंकी तादादमें इत्तिहादुल मुसलमीनके नेशनल गार्ड सर से पांव तक हथियारबन्द कर दिये गये हैं। उनकी हथियारोंकी मांग मुलम्मासाजी है अपनी फौजी ताकत बढ़ाने और प्रतिक्रियाके हाथ मजबूत करनेके लिये। जब फौज और पुलिस की नीयत साफ नहीं होगी तो हैदराबादको दी गयी एक एक गोली जनता और उसके जनवादी आन्दोलनको कुचलने के काममें आयेगी। हैदराबादमें जैसा धुंआधार दमन चक्र चल रहा है उसे देखते यह स्पष्ट है कि भारत सरकारसे एक सालकी जो मुहलत मिली है उसमें पाकिस्तानी शक्तियोंको मजबूत बनानेकी तैयारी की जायेगी। ऐसी हालतमें भारत सरकारको बहुत सोच समझकर कोई कदम उठाना चाहिये। बड़े बिकट जीवसे पाला पड़ा है। हिटलरके प्रति रूसने जो नीति अख्तियार की थी आज पाकिस्तान के साथ जो सब समझौते हो रहे हैं उनके पीछे यदि वही रूस वाली नीति न रखी गयी तो हमें भय है कि भारतकी आज की सदाशयता एक दिन उसके लिये घातक सिद्ध हो सकती है।

भारतीय पार्लमेण्टमें

गत सप्ताह भारतीय पार्लमेण्टमें देश विदेशके सम्बन्धमें कई महत्वपूर्ण घोषणाएं और वक्तव्य दिये गये। भारतकी खाद्य-नीतिकी घोषणा करते हुए डा० राजेन्द्र प्रसादने कहा कि चावल, धान और गेहूं पर नियंत्रण रहेगा पर भारत सरकारने

निश्चय किया है कि धीरे धीरे खाद्य पदार्थों परसे नियंत्रण हटता रहेगा। मूल्य निर्धारणका भार प्रांतोंपर छोड़ दिया गया है। ब्रिटेनने अभी तक यह नियंत्रण नहीं उठाया। अमेरिका और आस्ट्रेलिया आवश्यकतासे अधिक अन्न उपजाने वाले देश हैं फिर भी ये पुनः नियन्त्रण जारी करनेकी सोच रहे हैं। भारतमें अन्नकी कमी होते हुए भी भारत सरकारने महात्मा गांधीके नियन्त्रण विरोधसे प्रभावित होकर इस आशा पर नियन्त्रण उठानेका निश्चय किया है कि भारतीय व्यवसायीने १९४३ में बङ्गाल दुर्भिक्षके समय जिस मनोवृत्तिका परिचय दिया था अब उसकी पुनरावृत्ति न होगी। यदि ऐसी स्थिति आयी तो साधु स्वभाव डा० राजेन्द्र प्रसादने यह चेतावनी दी है कि इतनी कठोरतासे काम लिया जायगा, कि व्यापार ही मिट जायगा हमारे उप प्रधान सचिव सरदार वल्लभ भाई पटेलका पाकिस्तानके साथ आर्थिक समझौता सम्बन्धी वक्तव्य कम महत्व पूर्ण नहीं है। लाहोरमें दोनों डोमिनियनों के अधिकारियोंके बीचमें शरणार्थी,अपहृता नारियों और बच्चोंकी समस्याके लिये एक संयुक्त सङ्गठनसे लेकर काश्मीर एवं आर्थिक प्रश्नों पर जो वार्तालाप हुए उसीका परिणाम है कि सरदार पटेल यह घोषणा कर सके कि पंचायती अदालतके सामने भारत और पाकिस्तानके जितने मामले पेश किये गये थे हर्षकी बात है कि इन सबका आपसी और सन्तोष प्रद समझौता हो गया और अब वे सब मामले उठा लिये गये हैं। भारतने पाकिस्तानकी आर्थिक कठिनाइयोंको समझकर उसकी एक मित्रकी तरह सब भांति मदद करने का आश्वासन दिया है और सरदार पटेल ठीक ही यह उम्मीद करते हैं कि पाकिस्तान और उसकी सरकारको इस समझौते को अपने प्रति भारतकी मैत्री और सद्भावाका निदर्शन समझना चाहिये। हमें प्रसन्नता होगी। सरदारकी इस आशाको पूर्ण हुई देखकर। द०अफ्रिकामेंभारतीयोंके प्रश्नपर हमारे प्रधान मन्त्री पं०जवाहरलाल नेहरूका वक्तव्य भी कम महत्व नहीं रखता। उन्होंने जोरदार आवाजमें संकल्प और विश्वासके साथ कहा है कि 'दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंके लिये न्याय प्राप्त करनेके हमारे सङ्कल्पसे हमें कोई डिगा नहीं सकता। साथ ही हम यह भी कहते हैं कि अपने इस ध्येयकी पूर्तिके लिये हम संयुक्त राष्ट्र संघके घोषणा पत्रकी भाषा और भावके अनुकूल उपायोंका ही अवलम्बन करेंगे। इसके साथ साथ पण्डितजीने यह भी बताया कि गत वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघमें इस सम्बन्धमें जो प्रस्ताव पास हुआ था। वह इस वर्षके प्रस्तावसे रद्द नहीं होता। वह बना हुआ है। हमें विश्वास है कि पण्डित नेहरूके नेतृत्वमें भारत वैदेशिक मामलों और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें सदा सम्मानके साथ आगे बढ़ता रहेगा।

बीकानेर बढ़ रहा है—

कोई भी बुद्धिमान नरेश समयके संकेतके विरुद्ध चलना पसन्द नहीं करेगा। बीकानेर नरेश उन कतिपय नरेशोंमें एक हैं जिन्होंने परिवर्तित स्थितिका ध्यान रखकर भारत सरकारके साथ सहयोग करनेकी नीतिमें ही हित समझा है। बीकानेर नरेश एवं उन जैसे कतिपय नरेशोंके प्रयत्नका ही परिणाम है कि किसी न किसी रूपमें नरेन्द्र मण्डलको पुनर्जीवित करने और भारतीय पार्लमेंटमें नरेशों का एक अलग गुट बनानेका प्रयास त्याग दिया गया है। गत सप्ताह अपने आठके मन्त्रिमण्डलमें तत्काल चार लोकप्रिय मन्त्रियोंकी नियुक्ति और शासकके लिये संरक्षित अधिकार रखकर दो वर्ष बाद राज्यमें उत्तरदायी सरकारकी स्थापनाकी घोषणा करके बीकानेर नरेशने यह बताने की चेष्टा की है कि वे जन-मांग की ओरसे उदासीन नहीं हैं। उत्तरदायी सरकारकी जो रूप रेखा घोषित की गयी है उसके अनुसार दो परिषदोंकी व्यवस्थापिका होगी। राज सभा और धारा सभा में क्रमशः ३२ और ५५ सदस्य होंगे। राज सभाके तीन सदस्योंके सिवा सब तथा धारा सभाके सभी सदस्य निर्वाचित होंगे। मताधिकार आजकी अपेक्षा अधिक विस्तृत कर दिया गया है। निर्वाचन प्रणाली संयुक्त होगी किन्तु मुसलमानों, सिखों और अछूतोंके साथ-साथ व्यवसाय और उद्योग, श्रमिक, जमीन्दार और जागीरदार, महिला, और स्नातक जैसे विशिष्ट स्वार्थोंके लिये सीटें सुरक्षित रहेंगी। प्रति चौथे वर्ष राज सभा की एक तिहाई सीटें रिक्त घोषित कर उनकी पूर्त्तिके लिये निर्वाचन होगा। किसी आकस्मिक सङ्कटके समय सरकारके तमाम अधिकार स्वयं महाराजा अपने हाथमें ले लेंगे। कुछ मदोंको छोड़ सालान बजट परिषदके सामने स्वीकृतके लिये पेश किया जायेगा। हिन्दी राजभाषा होगी। नागरिक अधिकारोंके अन्तर्गत वैयक्तिक और धार्मिक स्वतन्त्रता, भाषण, सभा और प्रकाशन की गारण्टी दी गयी है, इस प्रतिबन्धके साथ कि ये स्वतन्त्रताएं सार्वजनिक शान्ति और नैतिकताके विरुद्ध काममें न लायी जायं। यद्यपि ये वैधानिक सुधार पूर्णतया जन-मांगको सन्तुष्ट नहीं करते फिर भी इस दिशामें यह कदम उठानेके लिये हम बीकानेर नरेशको बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि उनका नेतृत्व राज्यमें ऐसी स्थिति उत्पन्न करनेमें सहायक होगा जिसमें राज्यकी सम्पूर्ण सत्ता जनताके हाथोंमें रहेगी और वे मात्र वैधानिक नरेश होकर रहेंगे। ये सुधार यदि इस स्थितिको लाने की दृष्टिसे कार्यान्वित नहीं किये जायंगे तो ये जन असन्तोषको रोक सकनेमें सफल होंगे, इसमें सन्देह है।

फ्रेंच भारतका भविष्य—

हिन्दुस्तानमें फ्रांसके अधिकारमें जो प्रदेश हैं उनका भविष्य क्या होगा? हिन्द चीनमें वीयत नाम प्रजातन्त्रके प्रति फ्रांसने जो रुख अख्तियार किया है, उससे यह सहज ही अनुमान लगाया जाता है कि साम्राज्यवादी दुराकांक्षाओंमें वह उच्च सर-

कारसे रञ्च मात्र पीछे नहीं है । अवश्य ही भारतमें फ्रांस इस स्थितिमें नहीं है कि वह हिन्द चीनके अपने कारनामोंकी पुनरावृत्ति यहां भी कर सके । स्वतन्त्रता आंदोलनकी शक्ति देख कर फ्रांसको यहां कुछ सुधार करनेको बाध्य होना पड़ा, किन्तु इन सुधारोंसे काम नहीं चलेगा, यह वह भलीभांति समझता है । फ्रांसने यह प्रस्ताव रखा है कि भारतमें फ्रेंच अधिकृत अंचलोंको सांस्कृतिक मण्डलों में परिणत कर दिया जाये । जनताके विरोधको शांतकरके उसकी सुधारोंमें दिलचस्पी बढ़ानेके इरादेसे यह मिथ्या प्रचार कराया गया है कि भारत सरकार सुधारोंके पक्षमें है । किसी देशका भविष्य क्या होगा ? यह निर्णय करना उसके निवासियोंका कर्त्तव्य है । भारत सरकार चाहेगी कि इस कर्त्तव्य पालनमें किसी अंचलसे कठिनाई न पेश की जाये और इसके लिये वह प्रयत्न भी कर रही है। फ्रांसके राजदूत भारत आ गये हैं । फ्रेंच अधिकृत स्थानोंकी स्थितिके भविष्य पर ऐसी आशा की जाती है कि इस सप्ताह दोनों सरकारोंके बीच वार्तालाप आरम्भ होगा । इन प्रदेशोंमें चलनेवाले स्वतन्त्रता आंदोलनोंके प्रति भारतकी सम्पूर्ण सहानुभूति ही नहीं वह इनको अपने आंदोलन समझता है । इस तथ्यको आधार मानकर वार्तालाप आगे बढ़ानेमें ही हित है, आशा है कि फ्रेंच राजदूतको यह बात आरम्भमेंही समझा दी जायगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ—

संयुक्तराष्ट्र संघकी स्थापना को विश्व सुरक्षा, स्वतन्त्रता और समानताके लिये खास कर दुर्बल और पीड़ित राष्ट्रोंके लियेएक अनुपम वरदान बताया गया था । स्थापना के समय इस संघके सम्बन्धमें बड़े-बड़े बखान किये गये थे । किन्तु नगारेकी चोटों पर गाये गये वे सब गान आज व्यर्थ होते दिखायी दे रहे हैं । संघके कर्त्ताधर्त्ता आपसी स्वार्थ संघर्षमें लिप्त हैं । संघको इनके आपसी झगड़ोंसे इतनी फुर्सत नहीं मिलती कि वह संसारकी अन्य समस्याओं पर ध्यान दे सकें । इसका असर छोटे-छोटे राष्ट्रोंपर अच्छा नहीं पड़ रहा है और धीरे-धीरे उनका यह विश्वास मजबूत पड़ता जाता है कि दरअसल तीन महानोंके अपने स्वार्थकी पूर्त्तिमें अन्य राष्ट्रोंको सहायक बनानेके उद्देश्यसे ही संघका इतना विशाल ढांचा खड़ा किया गया है। आजतक संघने एक भी ऐसा काम नहीं किया जिससे उसकी न्याय बुद्धिकी कोई मुक्तकण्ठसे प्रशंसा कर सके । फिलस्तीनका उसका फैसला सामने है । दक्षिण अफ्रीका, हिन्देशिया और स्यामके मामलोंको कबसे लटका रखा गया है । रोगीकी औषधिकी व्यवस्था जो वैद्य समयपर नहींकरसकता तो उसपर कैसे किसीकी आस्था रह सकती है । हिन्देशियाके प्रजातन्त्र और डच सरकारके झगड़े मिटानेके लिये संघने एक कमीशन महीनों पहले नियुक्त किया था । यह वार्तालाप अब आरम्भ हुआ है बटाविया हारबर स्थित 'रैनविल' नामक एक अमेरिकन जहाजपर । यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि अटलांटिक चार्टर और जापान सधिपर हस्ताक्षर भी जहाजपर ही हुए थे । आशा की जाती है कि उसी तरह इस वार्तालापका परिणाम भी सुखद होगा । अमेरिकन प्रतिनिधि डा० फ्रैंक ग्राहमने दोनों दलोंसे कहा कि हम कोई जादू साथ नहीं लाये । उनके यह कहनेकी आवश्यकता नहीं थी । जादूके दिन चले गये । प्रश्न यह है कि न्याय बुद्धि साथ लाये हैं या वह भी कहीं रख आये हैं ?

गुरखा सैनिक—

अपनी बहादुरीके लिये गुरखा सैनिक संसार भरमें प्रसिद्ध हैं । कदमें छोटे या नाटे होते हुए भी उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया है कि वीरता और साहसके लिये कद्दावर लम्बा डील-डौल कोई खास विशेषता नहीं रखता । गुरखे बड़े निर्भिक और जीवटके सिपाही होते हैं यह पिछले दो विश्व युद्धोंमें सिद्ध हो गया है । इनमें दूसरा विशेष गुण यह है कि ये अनुशासन को बहुत मानते हैं । यही कारण है कि इनकी सेवाएं प्राप्त करनेके लिये भारत सरकार और ब्रिटिश सरकार दोनों उत्सुक थीं । उस दिन भारतीय पार्लमेंटमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने बताया कि भारत, नेपाल और ब्रिटेनके बीचमें त्रिदली समझौता हो गया है, जिसके अनुसार भविष्यमें भारत और ब्रिटेनकी सेनाओंमें गुरखे भर्ती किये जायंगे । यद्यपि अभी कुछ बातों पर अन्तिम फैसला बाकी है लेकिन मुख्य सिद्धांतों पर समझौता हो गया है। पण्डित नेहरूने यह बताया कि भारत सरकारको सन्तोष है कि यह समझौता उसकी आवश्यकताएं पूरी करता है। भारत जिन-जिन गुरखा यूनिटोंको सेनामें बनाये रखना चाहता था नेपाल सरकारने उनकी अनुमति दे दी है। नेपालका रुख भारतके प्रति घनिष्ट मैत्री और सद्भावनाका है, यह पण्डितजीके वक्तव्यसे बिलकुल स्पष्ट है । हम चाहते हैं कि दोनों राज्योंके बीचमें मैत्री उत्तरोतर दृढ़ होती रहेगी और सङ्कटके समय एक दूसरेका सहायक होगा।

शरणार्थी कैम्पमें शादी

अन्धकारके बीच प्रकाशकी एक किरणने उस दिन लाहोरके डी० ए० बी० कालेज शरणार्थी कैम्पमें प्रसन्नताकी लहर फैला दी जब १७ वर्षीया सरस्वती देवीका विवाह श्री मनोहर लाल नायक युवकके साथ हुआ । नववधू शेखूपुराके एक धनी जमीन्दारकी लड़की है । पिछले अगस्तमें जब शहरमें कत्लेआम और लूटका बाजार गर्म था लुटेरे उसके माता पिता को मौतके घाट लगा उसे उड़ा ले गये थे । बादमें लाहोरके भगवानपुरा के एक माझाके साथ उसका विवाह कर दिया गया । लेकिन मनोहर लालने लड़की के भाईके साथ मिलकर सरस्वती देवीका पता लगाया । परिणाम स्वरूप दो वर्ष पहले जिनका तिलक हो चुका था उस दिन वैदिक रीतिसे पति पत्नी बनाये गये । इस अवसर पर डिप्टी हाई कमिश्नर मि० के० एल० पञ्जाबी सरदार सम्पूरण सिंह और ब्रिगेडियर मोहितके अलावा अन्य कितने हीउच्चभारतीयअफसर उपस्थित थे । इस शादीका खर्च कुछ अधिकारियों और कैम्पमें रहने वालोंने वहन किया । हम इसे आदर्श विवाहसमझते हैं और मनोहरलाल को अपहृताको अपनी पत्नी बनानेके लिये बधाई देते हैं ।

बङ्गाल सुरक्षा-विल---

बङ्गालमें अराजकता

पश्चिमी बङ्गालके प्रस्तावित सुरक्षा विलको लेकर एक तरहके राजनीतिक विचारोंके लोगोंने अराजकता उत्पन्न कर दी है। उनके प्रदर्शनोंसे अब स्थिति बहुत ही गम्भीर हो गयी है। गत बुधवार को प्रदर्शनकारियोंने असेम्बली भवनको चारों ओरसे घेर लिया और ईंट पत्थर वरसाये एवं सदस्योंको भीतर जानेसे रोका। सदस्योंने प्रदर्शनकारियोंको काफी समझाया लेकिन उनपर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा उलटे उन्होंने सदस्यों पर आक्रमण किये। अन्तमें वाध्य होकर पुलिस ने अश्रुगैस छोड़ी लेकिन प्रदर्शनकारी नहीं हटे। ऐसा मालूम पड़ रहा था कि प्रदर्शनकारियोंको उपयुक्त शिक्षा दी गयी है क्योंकि पुलिस जब अश्रुगैसका 'सेल' फेंकती थी तो प्रदर्शनकारी, जो रवड़के दस्ताने पहने हुए थे, उसको उठाकर पुलिस पर फेंक रहे थे। अश्रुगैस और लाठी-चार्जके बाद भी भीड़ नहीं हटी और उपद्रव चरमसीमापर पहुंच गये तो गोलियां चालायी गयीं, जिनसे एक व्यक्तिके प्राण गये और कई घायल हुए। अनेक व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है जिनमें कुछ महिलाएं भी शामिल हैं। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादने प्रदर्शनकारियोंके आचरण की निन्दा की है और उन्होंने कहा कि वे नियन्त्रित रुपसे अपना विरोध प्रकट कर सकते हैं हिंसात्मक कार्य करना और असेम्बलीके कार्योंमें बाधा देना उचित नहीं है।

पश्चिमी बङ्गाल सुरक्षाविल वर्तमान स्थितिमें पश्चिमी बङ्गालका शासनकार्य चलानेके लिये सरकारकी ओरसे विशेषाधिकारकी मांगके साथ प्रधानमन्त्री डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोषने एक विल उपस्थित किया, जो सिलेक्ट कमेटीके सिपुर्द किया गया सिलेक्ट कमेटीको उक्त बिल सुपुर्द करनेका प्रस्ताव स्वीकार कर असेम्बलीने विलकी मूलनीति स्वीकार कर ली है, यानी असेम्बलीने यह स्वीकार कर लिया है कि वर्तमान स्थितिमें शासनकार्य चलानेके लिये सरकारको विशेषाधिकारकी आवश्यकता है। ध्यान देनेकी बात है कि असेम्बलीमें जब प्रधानमन्त्री इस बिल को पेश कर रहे थे तब उनके विरुद्ध केवल दो सदस्य खड़े हुए। सो भी कम्यूनिस्ट थे। अतः इस बिलके विरोधियोंके सामने यह स्पष्ट है कि असेम्बलीके प्रायः सभी सदस्य बिलकी आवश्यकता समझते हैं। ख्याल रखनेकी बात है कि अंग्रेजी शासन कालमें भी सरकारके हाथमें विशेषाधिकार दिये जाते हैं लेकिन वह तरीका आपत्तिजनक था लेकिन आज तो राष्ट्रीय सरकार है अब तो उन तरीकोंसे काम नहीं हो सकता। आजकी सरकार जनताके प्रतिनिधियों द्वारा गठित हुई है इसलिये तनिक भी स्वेच्छाचारी होनेपर इसकी जड़ें उखाड़ना जनताके हाथकी बात है। खैर, पश्चिमी बङ्गाल असेम्बलीके इस विलसे जनतामें काफी हलचल है। कुछ राजनीतिक इसका समर्थन और तीव्र विरोध कर रहें हैं। अंग्रेजी, बङ्गला और हिन्दीके अखबारोंने बिलकी अखवारोंसे सम्बन्धित धाराओंका विरोध किया है। अखबारोंका कहना है कि अभी ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हुई है कि इस विलकी आवश्यकता तो अगर कहीं स्थिति उत्पन्न हो तो अखवार सबसे पहले उसके अनुकूल जनमत तैयार करनेमें सबसे आगे रहेंगे। आज आवश्यक कानून और विशेषाधिकारकी आवश्यकता नहीं। असल समस्या तो जनताके अभाव अभियोगों-को दूर करना है। अन्न, वस्त्र और रहनेकी जगह आज तीन प्रमुख प्रश्न हैं, यानी सरकारको प्रत्येक व्यक्तिके लिये जीवनयापनकी व्यवस्था करनी चाहिये। अगर हमारी सरकार इन समस्याओंके हलके लिये खड़ी हो जाय तो उसे इस तरहके विशेषाधिकारकी आवश्यकता नहीं।

कांग्रेस-चुनाव घोषणा पत्रमें जो कहा गया था उसका पालन होना चाहिये। अगर वैसा किया जाय तो स्पष्ट है कि ऐसे विल की फिर आवश्यकता ही न हो।

पश्चिम बंगाल सरकारके विशेषाधिकार विलके सम्बन्धमें कांग्रेसनेता श्री किरण शङ्कर रायने आपत्ति की है कि पाकिस्तानमें इसकी जबर्दस्त प्रतिक्रिया होगी। किरण बाबू जैसे एक समझदार नेताने ऐसी बात क्यों कही समझमें नहीं आता है। पश्चिम बंगालकी सरकार मुसलमानोंका दमन करनेके लिये तो इस बिलको पेश नहीं कर रही है फिर पाकिस्तानमें इसकीप्रतिक्रिया की आशङ्का क्यों? पाकिस्तानमें तो पहले ही श्री मेहरचन्द खन्ना और चोइथराम गिडवानीको गिरफ्तार किया गया है। वह किसकी प्रतिक्रिया है।

श्री शरतचन्द्र बोसने इस बिलका विरोध करते हुए एक प्रेस सम्मेलनमें कहा है कि गत डेढ़ सौ वर्षोंमें इस बिलके समान कोई बिल नागरिक स्वाधीनता और अधिकारों पर इतना प्रहार करनेवाला नहीं था।

भारतीय पत्रकार संघने भी एक विशेष बैठक बुलाकर इस विलपर विचार किया है जिसमें व्यक्ति स्वातंत्र्यके दृष्टि-

(शेष १० पृष्ठ पर)

गत ११ दिसम्बरको पश्चिम बङ्गाल असेम्बलीमें प्रस्तावित सुरक्षा बिलपर सिलेक्ट कमेटी द्वारा संशोधित धाराओं पर विचार कर अन्तिम निर्णय होनेवाला था लेकिन असेम्बलीकी बैठक शुरू होनेके पहले कांग्रेस पार्टीने ५ जनवरीतक बिलपर विचार करना स्थगित रखनेका निश्चय किया। ५ जनवरीतक बङ्गाल असेम्बलीकी बैठक भी स्थगित की गयी है। साथ ही उक्त बिलके सम्बन्धमें संघ सरकारके साथ बङ्गाल सरकारकी बातचीत हो रही है। इस बातचीतमें विरोधी प्रदर्शन करनेवालोंके कथनको भी दृष्टिगत किया जा रहा है।

भारतकी खाद्य नीति

भारत सरकारने निश्चय किया है कि वर्तमान खाद्य नीतिमें परिवर्तन आवश्यक है। संशोधित और परिवर्तित नीति होगी, खाद्य पदार्थों परसे क्रमशः उत्तरोत्तर कण्ट्रोल हटाते जाना। इस मौलिक निश्चयके अनुसार भारत सरकारने प्रांतीय सरकारों और राज्योंको यह सलाह दी है कि रेशनिङ्गकी प्रणाली और नियंत्रित वितरण सम्बन्धी अपने उत्तरदायित्वोंको उत्तरोत्तर घटाते जायं और घटानेका क्रम रेशनिङ्ग और नियंत्रण जारी करनेसे ठीक उलटा हो अर्थात् पहले उन वस्तुओंको नियन्त्रणसे मुक्त किया जाये जो सबसे पीछे नियंत्रणमें लायी गयी हैं। जितना शीघ्र सम्भव हो रेशनिङ्ग और नियंत्रण हटा देनेका दृष्टिसे इस उत्तरोत्तर क्रमके अनुसार काम किया जाये। विदेशसे खाद्यान्नका मंगाना१९४८में जारी रहेगा। लेकिन भारत सरकारही इम्पोर्ट करेगी। वर्तमान मौलिक योजना चलती रहेगी। मूल्य निधारणका फैसला प्रांतीय सरकारों पर छोड़ दिया है। चावल (धानभी), गेहूं, (आटा और मैदा भी) जुआर, बाजरा और इसी तरहके अन्य अन्नों पर कण्ट्रोल रहेगा। मौजूदा नियंत्रण प्रणालीकी अपेक्षा भारत सरकारकी यह नयी नीति इस आशा पर है कि कण्ट्रोल हटा देनेसे मालका स्टाक अधिक बाहर होगा। हर तीसरे महीने मंत्रियोंके स्तरके सम्मेलनमें इस स्थिति पर विचार किया जाता रहेगा। यदि आवश्यकता समझी गयी तो कठोरसे कठोर नियंत्रण पुनः जारी करनेमें जरा भी द्विधा नहीं की जायेगी। भारत सरकारके खाद्य सचिव डा० राजेन्द्र प्रसादने गत सप्ताह १० दिसम्बरको भारतीय पार्लमेण्टमें सरकार की नयी खाद्य नीति पर प्रकाश डालते हुए तीन बातकी आशाएं प्रकट की हैं। आप आशा करते हैं कि उत्पादक अन्न अधिक पैदा करेगा, उपभोक्ता अन्नका उपयोग कम करेगा और व्यापारी अपना हक ईमानदारीके साथ अदा करेगा। राजेन्द्र बाबू कहते हैं कि प्रस्तावित नियंत्रण-युक्तिकी सफलता इन तीन आशाओं पर ही अवलम्बित है। वे निश्चय पूर्वक यह कह सकनेकी स्थितिमें नहीं हैं कि इसका परिणाम अच्छाही होगा। इसीसे वे कहते हैं कि "यह मैं नहीं कह सकता कि स्थिति सुधरेगी ही। मैं तो यही कह सकता हूं कि सुधर भी सकती है।

पार्लमेण्टमें विभिन्न मत

भारतीय पार्लमेण्टमें खाद्य नीति पर विचार करते समय तीन तरहके मत प्रकट किये गये। कुछ लोग तो इस पक्षमें थे कि अभी अनुकूल समय नहीं है जो देश कण्ट्रोल हटानेका खतरा जान बूझ कर मोल ले। कुछ ऐसे भी थे जो अभी तक पशोपेशमें पड़े हैं और यह फैसला नहीं कर पा सके कि नियंत्रण हटना अच्छा है या नहीं। अधिकांश सदस्योंने सरकारकी नीतिका खुलकर समर्थन किया। इनमें कुछने शायद इसीलिये समर्थन किया कि महात्माजी जिस बातका समर्थन करते हैं मैं उसका विरोध कैसे करूं। पण्डित बालकृष्ण शर्मा नवीन महात्मा गांधीके परम प्रशंसकों और भक्तोंमें हैं पर इस मामलेमें वे उनका समर्थन नहीं कर सके क्योंकि वे गांधीजीसे अधिक वास्तविक जगतमें विचरण करते हैं। अन्न और वस्त्रके अभावसे पीड़ित मानवोंके और उनके मौतसे अपनी झोली भरनेवाले महामानवोंके संसर्गमें वास्तविक रूपसे आनेका अवसर जितना शर्मा जीको मिलता है शायद महात्माजीको उतना अधिक अवसर नहीं मिलता। गांधीजीको अधिक समय तो वही लोग घेरे रहते हैं जो आजकलकी साहित्यिक भाषामें लक्ष्मीके वर प्राप्त बेटे कहे जाते हैं। सम्भवतः यही कारण है कि नवीनजी ने भारत सरकारकी इस नीतिको समयसे पीछे और घातक बताया। १९४३ के बङ्गाल और युद्धकालसे आजतकके चीन का चित्र उनकी आंखोंके सामने था। इसीसे उन्होंने कहा कि बङ्गाल दुर्भिक्षमें जब हजार हजार लाख लाख मनुष्य दाने-दानेके लिये तड़प-तड़पकर मर रहे थे उस समयकी व्यापारियोंकी कहानी याद कीजिये। उस समय वे ईमानदार नहीं रह सके, आज हम उनसे यह कैसे आशा करें कि वे ईमानदार रहेंगे।

आगसे खेलना है—

पण्डित हृदयनाथ कुंजरू भी सरकार-की इस नीतिका समर्थन नहीं कर सके और इसलिये नहीं कर सके कि वे ऐसा करना आत्मप्रवंचना, अपने आपको ठगना समझते हैं। "नियन्त्रण हटनेसे मामला ठीक हो जायेगा हमारा नैतिक आचरण सुधर जायेगा और उत्पादन बढ़ जायेगा" वह साधु कामना किसी ठोस वास्तविकता-वादीको कैसे सन्तुष्ट कर सकती है। इसीसे वे इसे आत्मप्रवंचना कहते हैं। पण्डित कुंजरूने कहा कि "यह नयी नीति उपभोक्ताकी पीठपर इस आशासे छुरा भोंकनेके समान है कि रक्त नहीं बहेगा, घाव नहीं होगा।"

नीतिके अन्य विरोधियोंने सरकार-का ध्यान विश्वकी अन्नस्थितिकी ओर खींचते हुए कहा कि ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे भारतसे अधिक सम्पन्न देशोंसे हमें सबक लेना चहिये जिन्होंने कण्ट्रोल युद्धके बाद भी बना रखा है या जहां उठा दिये गये हैं वहां फिर जारी करनेकी कोशिश की जा रही है। कण्ट्रोल हटाकर जब अन्य देश नहीं सके तो भारत कैसे सकेगा? इस समय कण्ट्रोल हटाना आगसे खेलनेके समान है।

समर्थकोंका दृष्टिकोण

सरकारकी इस खाद्य नीतिके समर्थकोंने यह तर्क पेश किया कि नियन्त्रणोंसे देशमें बहुत बड़ा नैतिक पतन आया है। अफसरों, व्यापारियों और उपभोक्ताओंको नैतिक पतनकी पराकाष्ठा पर इस कण्ट्रोलने ही पहुंचाया है। कण्ट्रोल हटते ही सब बातें अपने स्वाभाविक रूप में होने लगेंगी। डा० राजेन्द्र प्रसादने बहसके उत्तरमें बहुत संयमसे और विनम्रतासे स्पष्ट बोले। सुफलकी आशा

(शेष १० वें पृष्ठ पर)

स्वर्गीय भाई परमानन्द

गत ८ दिसम्बरको जलन्धरमें भाई परमानन्दका स्वर्गवास हो गया।

भाई परमानन्दका जन्म १८७५ में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने १९०५में आर्य समाजके मिशनरीकी हैसियतसे दक्षिण अफ्रीकाका दौरा किया। १९०८ में भाईजी वहांसे लौटे और उन्हें राजनीतिक कारणोंसे गिरफ्तार किया गया। १९१० में वे दक्षिणी अमेरिका गये वहांसे वापस आते ही पुनः गदर आंदोलनके सिलसिलेमें गिरफ्तार किये गये। भाईजीको फांसीकी सजा दी गयी लेकिन बादमें आजीवन कारावासमें बदल दी गयी। ६ वर्षकी सजा भुगत कर छटे और १९२० में असहयोग आंदोलनमें शामिल हुए। उसके बाद भाईजी कांग्रेससे अलग होकर हिन्दू महासभामें शामिल हुए। हिन्दू संगठनके भाईजीने जबर्दस्त आंदोलन किया। हिन्दू महासभाको प्राण प्रतिष्ठा करनेवालेंमें वे एक थे। १९३३ में उनको अखिल भारतीय हिन्दू महासभाके अधिवेशन का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। वे हिन्दू, हिन्दी और हिन्दके कट्टर समर्थक ही नहीं बल्कि इनके लिये लड़ने वाले वीर योद्धा थे।

भारतकी खाद्य

(६ वें पृष्ठका शेषांश)

प्रकट करते हुए भी आशंकाओंको ध्यान में रखा है और इस ओर सरकार सदा सचेष्ट रहेगी, यह आश्वासन दिया है। स्थितिके बिगड़नेके आसार दिखायी देते ही कठोरसे कठोर उपायका अवलम्बन किया जायगा, बिना किसी द्विधा या कुण्ठा के। उनके भाषणसे यह भी विदित हुआ कि मन्त्रिमण्डलमें भी इस प्रश्न पर मतभेद था। वे कहते हैं कि सरकारी नीतिके समालोचकोंने इनफ्लेशन (स्फीत मुद्रा) के अभिशापकी चर्चा की है लेकिन मेरे सामने कण्ट्रोलका अभिशाप है। एक कण्ट्रोलसे अनेकों कण्ट्रोलकी सृष्टि हुई और इसका अन्त कहां होगा यह नहीं कहा जा सकता। सरकार जागरुक है। यदि वह देखेगी कि देश की साधारण अर्थ व्यवस्थामें विश्रृंखलता आ रही है तो वह उस स्थितिका सामना करनेको तैयार रहेगी। सरकार इस समय विदेशसे अन्न मंगानेमें बेशुमार खर्च कर रही है। इसकी जगह अपने आदमीको अधिक क्यों न मिले? महात्माजीकी सलाह पर मुझे विश्वास है। अपने ३० वर्षके सम्पर्कमें मैंने देखा है कि अक्सर मेरा मेरा तर्क गलत निकला है उनकी दिव्य दृष्टि या आत्माकी पुकारके बल पर दी गयी सलाह ठीक निकली है। संशोधित खाद्य नीतिके फलस्वरूप चीजोंके दाम चोर बाजारकी तरह अनाप-शनाप बढ़ेंगे ऐसा मैं नहीं समझता। मुझे विश्वास है कि सब पार्टियोंके सहयोगसे नयी नीति सफल होगी लेकिन साथ-साथ यह चेतावनी भी मैं दे देना चाहता हूं कि यदि यह प्रयोग असफल हुआ तो इतना कठोर नियन्त्रण किया जायगा कि व्यापार हमेशा के लिये मिट जायेगा। किसी आकस्मिक स्थितिका सामना करके लिये सरकार सतर्क है पर समझती है कि उसे फिर कण्ट्रोल जारी करके कदम पीछे नहीं उठाना पड़ेगा।

बङ्गालमें अराजकता

(८वें पृष्ठका शेषांश)

कोणसे विरोध किया गया। कुछ पत्रकारोंने बिलके पक्षमें भी भाषण किये लेकिन अन्तमें सभी लोगोंने पत्रकार संघके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। छात्र संस्थाएं और कुछ वामपंथी राजनीतिक दल जिनका नेतृत्व श्री शरतचन्द्र बोस कर रहे हैं इस बिलका जबर्दस्त विरोध कर रहे हैं। बिल विरोधी छात्रोंका नेतृत्व नेताजीके भतीजे श्री अरविन्द बोस कर रहे हैं और छात्रके प्रदर्शन नित्य जारी हैं। असेम्बलीके सामने प्रदर्शनकारियोंपर अश्रुगैसका भी प्रयोग किया गया है। उस दिन बङ्गाल असेम्बलीमें चोरबाजार विरोधी बिलपर विचार होनेवाला था लेकिन श्री अरविन्द बोसके नेतृत्वमें छात्रोंने विरोधी प्रदर्शन किया और बारबार कहनेपर भी न हटे तब अन्तमें बाध्य होकर पुलिसको अश्रुगैस छोड़नी पड़ी तथा कई युवकोंको गिरफ्तार किया गया। उस दिन अधिकांश सदस्य असेम्बलीमें नहीं जा सके लिहाजा बिलपर विचार करना स्थगित किया गया।

बिलके सम्बन्धमें प्रधानमन्त्री डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोषने अपने रेडियो ब्राडकास्ट में कहा है कि पश्चिम बङ्गालकी सुरक्षा के लिये हमने असेम्बलीमें जो बिल पेश किया है। इस सम्बन्धमें गलतफहमी फैलानेके लिये कई दिनोंसे एक संयुक्त षड़यन्त्र किया जा रहा है। किसी राजनीतिक संस्था या कानूनी श्रमिक आन्दोलनका दमन करनेके उद्देश्यसे पश्चिम बङ्गाल विशेषाधिकार बिल तैयार नहीं किया गया है। बिलका उद्देश्य साम्प्रदायिक उपद्रवोंको रोकना, गैर-कानूनी हथियारोंको जमा न करने देना, गुण्डई बन्द करना नवगठित राज्यकी सुरक्षा और राज्यकी भलाईके लिये सरकारके हाथमें विशेषाधिकार देना है। हमारे राज्यको नष्ट करने के लिये अनेक व्यक्ति और दलोंका आविर्भाव हुआ है। अगर ऐसे लोगोंको नहीं रोका गया तो हम देशको विपत्तिके मुंह धकेल देंगे। बम्बई, युक्तप्रान्त और अन्य कांग्रेसी प्रान्तोंमें ऐसे बिल पास हुए हैं। देशकी आज जैसी अवस्था है उसमें इसके सिवा दूसरा मार्ग नहीं है।

युगका सब से बड़ा सवाल

डा० राजेन्द्र प्रसाद

यह दुनियां बहुरूप रङ्गवाली है पर इसके सब स्वरूपोंके दिग्दर्शनकी न तो इस वक्त जरूरत है और न सुविधा। पर इसके कुछ विशेष स्वरूपोंकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करना जरूरी मालूम होता है। मौजूदा दुनियाकी प्रधान विशेषता जिसकी तरफसे कोई भी प्राणी उदासीन नहीं हो सकता, है प्रकृति पर मनुष्यकी प्रभुता। युगों तक मानव प्रकृतिका खिलौनामात्र था। उस कालमें उसकी बेबसी और गरीबीकी कोई हद न थी। जीवन एक भार था और पृथ्वी एक कारागार। उस समय मानवकी तीव्रतम् आकांक्षा यही थी कि वह इस कारागारसे जल्दसे-जल्द छुटकारा पा जाय। उसके स्वप्नोंकी दुनियां और उसकी कल्पनाका जगत एक ऐसा लोक था जिसमें न किसी प्रकारका अभाव था और न कोई रोग और न संताप। उसके जीवनकी साधि इसी स्वर्गलोककी प्राप्ति थी। यह बात सत्य थी कि उसे यह स्वर्ग मरकर ही प्राप्त हो सकता था पर अपनी इस आशा पर वह जीवनके भारी बोझ ढोता चलता था।

आज मनुष्यकी स्थिति बदल गयी है। अब प्रकृति उसकी स्वामी न रहकर दासी बन गयी है। अब वह न तो असहाय है न दुर्बल और न निर्धन। विज्ञानने उसे ऐसा गुरुमंत्र दे दिया है जिससे कुदरतके बहुत छिपे हुए खजानोंके दरवाजे सहजमें ही खुल जाते हैं और देवताओंके हथियार उसे सहजमें ही मिल जाते हैं। आज काम-धेनु और कल्प-वृक्ष कल्पना ही न रह कर बहुत कुछ वास्तविक सत्य बन गये हैं। आज समुद्र मन्थन केवल देवताओं और असुरोंकी एक काल्पनिक कहानी नहीं बल्कि यह आदमियोंका रोजमर्राका काम बन गया है। आज मनुष्य ने पैदावारके इतने साधन इकट्ठा कर लिये हैं कि किसी भी व्यक्तिको भूखा, नंगा बे-घरबार रहनेकी मजबूरी नहीं रह गयी है। यदि इन साधनों उचित प्रयोग हो तो संसारसे गरीबी हमेशाके लिये मिट जाये। मनुष्यकी इस वस्तु सम्पन्नताकी वजहसे स्वर्ग केवल कल्पना और स्वप्नका लोक ही नहीं रहा बल्कि मनुष्यके वास्तविक जीवनके बहुत पास आ गया है। आज मुमकिन है कि इस पृथ्वी पर इसी जीवनमें प्रत्येक मानव स्वर्गके सब सुखोंका उपयोग कर सके।

आधुनिक दुनियामें दूसरी खूबी है। मनुष्य जीवनकी सार्वभौमिक एकता। पुराने जमानेमें सबसे ऊंचा आदर्श यही माना जाता था कि व्यक्ति वसुधा भरके प्राणियोंको अपने कुटुम्बियोंके समानही मानें, पर यह वसुधैव कुटुम्बकम् वाला आदर्श आधुनिक जीवनकी पहली सीढ़ी बन गया है। विज्ञानने दूरीको इतना जीत लिया है कि वह अब आदमी आदमीमें, जाति जातिमें और देश देशमें कोइ दीवार नहीं खड़ी कर पाती, उनके आपसी व्यवहारमें कोई रुकावट नहीं डाल पाती। आज दुनियाकी विभिन्न जातियां मानव समुदायकी विभिन्न श्रेणियां बन गयी हैं और दुनियाके विभिन्न देश बन गये हैं पृथ्वी नाम वृहत् नगरके विभिन्न मुहल्ले। इस वृहद् नगरकी सुख और शांति, स्वास्थ्य और शक्ति, धन और धान्य सब मिले-जुले हैं। इस वृहद् नगरके हर एक मुहल्लेका भाग्य दूसरोंपर अवलम्बित है। दूसरे शब्दोंमें दुनियाकी शांति, स्वतन्त्रता, शक्ति, सम्पनता, समृद्धि, वैभव सब कुछ एक हैं अखण्डित हैं और अखण्डित अवस्थामेंही रह सकते हैं। इसीलिये आज बिना वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्शको माने मनुष्य जीवनका आगे चलना असम्भव हो गया है।

तीसरी खूबी जो मौजूदा जिन्दगीमें पायी है उसकी तेज रफ्तार। आज मनुष्य जिस तेजीसे अपना काम सम्पादन कर रहा है उसकी तुलनामें आंधी और तूफानकी रफ्तार न कुछके बराबर ठहरती है। इस तेज रफ्तारकी वजहसे आज कुछ लहमोंमें इतना काम पूरा लेता है जितना उसके पुरखा वर्षोंमें नहीं कर पाते थे। एक तरहसे उसने वक्तको अपना गुलाम बना लिया और आज उसकी आयुके दस वर्ष उसके पुरखाओंकी आयुके सौ वर्षके बराबर हैं।

पर किस्मतकी कैसी मार है कि देवताओंकी यह ताकत हासिल करक भी आदमी न तो सुखी है और न सुरक्षित। उसकी यह ताकत ही उसके लिये दुश्मन बन गयी मालूम होती है। दुनियामें लड़ाई है, अशांति है, भूख है, महामारी है, बेघरबारी है और हर तरहकी कमी है। आज यूरोप आर एशियामें करोड़ों आदमी भरपेट खाना नहीं नहीं पाते और तन ढकनेको कपड़ा नहीं ले सकते। ऐसे लाखो ही आदमी,औरत हैं जिनको सोनेके लिये केवल सड़कें हैं या स्टेशनोंके प्लेटफार्म। यह शोचनीय हालत संसारके और देशोंकी ही नहीं हमारे देशकी भी है।

हम आजाद जरूर हैं पर हम अभी न तो खुशहाल हैं और न पूरी तरह सुरक्षित। हमारी यह बदकिस्मती है कि हमारे देशका बंटवारा हो गया है और भारतके लाखों ही नर-नारियोंको बिना किसी अपराध या पापके अपना सब कुछ खो देना पड़ा है। देशके एक हिस्सेमें बेरहमी और बर्बरताने खुलकर ताण्डव नृत्य किया है, आज भी भारतके स्वर्ग समान काश्मीर प्रदेशमें बड़ी करुण और दुखमय घटनायें हो रही हैं।

मनमें यही विचार उठता है कि यह सब क्यों है जब प्रत्येकके लिये पर्याप्त धन दौलत है, सामग्री है तो फिर यह लूट-पाट क्यों? देश देश की, श्रेणी श्रेणी की, व्यक्ति व्यक्ति को इस प्रकार शत्रुता क्यों? क्या मानव पागल है, क्या वह भी अपनी भलाई-बुराई नहीं समझता, क्या वह जङ्गली जानवरोंकी तरह विवेकहीन है? ऐसा तो नहीं। फिर यह व्यर्थकी लड़ाई क्यों?

वर्तमान युगका यही सबसे महत्वपूर्ण सवाल है। इसका जवाब जान लेना आप सबका कर्त्तव्य है। मेरे विचारमें यह विषम अवस्था इसलिये पैदा हुई है कि मानवने प्रकृति विजयकी धुनमें अपनी आत्माको भुला दिया है और उसने दौलत इकट्ठी करनेमें धर्मको तिलांजलि दे दी है और शक्ति संचित करनेमें स्नेहका परित्याग कर दिया है।

प्रकृति विजय कोई बुरी बात नहीं। बल्कि यह कहना गलत न होगा कि बिना प्रकृति विजय किये मनुष्य आत्माकी पुकार भी पूरी तरहसे नहीं सुन सकता। पर प्रकृति विजय जब मनुष्य जीवनका पूरा ध्येय बन जाती है तो यह बहुत हानिकर हो जाती। ज्ञान जीवनके लिये है न कि जीवन ज्ञानके लिये दूसरे लफ्जोंमें ज्ञान केवल एक साधन है जिसके जरिये आत्मा अपनी असली शक्तिको पहिचानती है। आम जिन्दगी की भाषामें हम इस सचाई को यों बयान कर सकते हैं कि मनुष्यका सारा ज्ञान उसके जीवनको सत्यम् शिवम् सुन्दरम् बनानेका केवल एक साधन है। यदि ज्ञान स्वयं ध्येय बन जाय तो वह मृत्यु और अन्धकारकी ओर ले जाता है। इसी सचाई की ओर ईशोपनिषत्में यह कह कर संकेत किया गया है कि अविद्या और विद्या दोनों ही मानवको ऐसे अन्धकारमय लोकमें ले जातीं हैं जहां वह कुछ नहीं देख सकता केवल आत्म विद्या अथवा पूरा विद्या ही उसको सच्ची मुक्ति दे सकती है। आजकी दुनिया पर दृष्टि डालनेसे यह सचाई भलीभांति जाहिर हो जाती है। आज विज्ञानने आत्मासे सम्बन्ध विच्छेद कर रखा है। वैज्ञानिकका काम है केवल प्रकृति सम्बन्धोंका अन्वेषण। उन सम्बन्धोंका मानव जीवनमें अच्छा प्रयोग होता है अथवा बुरा, इससे वैज्ञानिकको कोई मतलब नहीं। इस दृष्टिकोणका नतीजा यह है कि वैज्ञानिक अपनी अन्वेषण बुद्धिको रुपये पैसेके लिये बिना पाप-पुण्यका ध्यान किये बेचनेको तैयार है। इसका परिणाम तो आप सबके सामने ही है। आज वैज्ञानिक खोजोंका ठग और साधु दोनों अपने कार्य सिद्धि में इस्तेमाल कर रहे ह पर ज्यादा फायदा विज्ञानसे ठगोंको ही हो रहा है। हिरोशिमाके ध्वंसावशेषोंसे आज भी उन लाखों निरपराध नर-नारियोंकी आह की ध्वनि आती है जिनका जीवन असमयमें ही विज्ञानकी सबसे बड़ी विजय परिमाणु बमने समाप्त कर दिया। आज जमीनपर ऐसी कोई जगह नहीं, कोई कोना नहीं, जहां विज्ञानके दिये हुए अस्त्रों से मनुष्यकी आत्माका हनन न हुआ हो। विज्ञानके कारण मनुष्यकी आत्माका जीवनके हर क्षेत्रमें नाश हो रहा है। उसके दिये हुए कल मशीनोंसे अस्त्र शस्त्रों से मनुष्य मनुष्यका शोषण कर रहा है, हननकर रहा है। सचही आज इस विज्ञाने मानवको ऐसी अन्धेरी दुनियांमें पहुंचा दिया है, जहां उसको अपना फैलाया हुआ हाथ भी नहीं दिखायी देता। यदि इस विज्ञानने मनुष्यकी आंखोंपर अहंकारकी मोटी पट्टी न बांध दी होती तो क्या यह सम्भव होता कि परमाणु बमके घातक परिणामोंकी जानते हुए भी प्रत्येक राष्ट्र इन्हीं बमोंके बनानेमें प्रत्येक दिन करोड़ों रुपये खर्च करता होता और वह भी उस वक्त जब लाखों ही नर नारी भूखसे तड़प तड़प कर जानें दे रहे हों।

हमारे प्राचीन मुनियोंने इसीलिये जोरके साथ कहा था कि आत्म विजय ही सबसे ऊंची विजय है। इसी देशमें आज दो हजार वर्षसे भी अधिक पहले एक महान सम्राटने युद्ध विजयको त्याग धर्म विजयको अपनाया था। आज भारत के इसी प्राचीन संदेशको पुनः महात्मा गांधी इस देशके बासियोंको वर्षोंसे सुना रहे हैं। आधुनिक प्रवृति विजयीनी सभ्यता की तड़क भड़कसे चौंधियायी हुई हमारी आंखें चाहे धर्म विजयकी महत्ताको न देख पायी हों, और कल कारखानोंके शोरसे बहरे हुए हमारे कान इस धर्म घोषको चाहे न सुन सके हों पर हमको और सारी दुनियाको इस आत्म विजयकी ओर अपना ध्यान ले जाना है और वह भी शीघ्र। यदि मानव समाज समय पर न चेता तो मृत्यु उसको अवश्य ही खा डालेगी पर मुझे विश्वास है कि मनुष्य अपनी मूर्खताको शीघ्र ही पहिचान लेगा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयमें १२ दिसम्बर को दिये गये दीक्षान्त भाषणका एक अंश सं० वि०।

जानबुल यहूदियों और अरबोंके झगड़ेका

पाकिस्तान और भारतीय संघके बीच

अबुल कलाम 'आजाद'

प्रोफेसर माहेश्वरी सिंह 'महेश' एम० ए०

"होनहार बिरवानके होत चीकने पात" यह महान सत्य मौलाना अबुलकलाम 'आजाद' के सम्बन्धमें खूब फबता है। घटना बम्बई की है। उस समय अबुल कलाम 'आजाद' मात्र १४ वर्षके थे। लेकिन सारे उर्दू जगतमें एक महान संपादकके रूपमें विख्यात थे। उर्दूके सम्बन्धमें वे कुछ ऐसी बातें कह रहे थे--कुछ ऐसे सुझाव रख रहे थे कि सभी चमत्कृत हो उठे। और तो और बम्बई के स्वनाम धन्य मौलाना शिबली उनसे मिलनेके लिये लालायित हो उठे। आखिर एक दिन दोनोंके मिलनेका समय निश्चित हुआ। मौलाना शिबली नियुक्त समयके बहुत पहले प्रतीक्षामें बैठे हुए सोच रहे थे कि अब एक प्रौढ़ अनुभवी दाढ़ी बढ़ाये, चश्मा लगाये उनके सामने आयेगा। ठीक इसी समय कमरेका दरवाजा खुला और उनके सामने एक मौन युवक आ खड़ा हुआ। मौलानाने सोचा कि शायद आजाद साहब नहीं आये और मुमकिन है कि यह युवक संभवतः उनका लड़का उनके नहीं आनेका कारण बताने और एतदर्थ क्षमा मांगने आया हो। मौलाना साहब आजाद साहबकी प्रशंसा करने लगे। बातचीत शीघ्र ही उर्दूके विषयपर आ गयी। उस किशोरने कुछ बातें कहीं। जिन्हें सुनकर शिबली साहब ने कहा—"हां तो अबुल कलाम साहबने इन्हीं बातोंके कहनेके लिये आपको तकलीफ दी है।" उत्तर मिला—"अबुल कलाम ही मैं हूं।" शिबली साहब आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगे।

दूसरी घटना लाहौरकी है। अंजुमन हयात इस्लामका सालाना जलसा हो रहा था। उसमें भाषण करनेके लिये अबुल कलाम आजाद साहबको विशेष रूपसे आमंत्रित किया गया था। सर मुहम्मद इकबाल एवं महाकवि हाली जैसे लोग जलसेको सफल बनाने वालोंमें थे। और इन महानोंके आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा जबकि यह विशेष वक्ता एक १६ वर्षका युवक निकला।

तीसरी घटना और भी अद्भुत है। यह जरा बादकी है। सर सैयद अहमदका जमाना था। वे जोरोंमें जातीयताका प्रचार कर रहे थे। उन्होंने मुसलमानोंको हिन्दुओंके खिलाफ खड़ा किया और समझाया कि मुसलमान हिन्दुओंसे सर्वथा विपरीत हैं। उन्हें अंग्रेजोंके खिलाफ हिन्दुओंका साथ नहीं देना चाहिये। वे (सैयद) हिन्दू-मुसलिम एकताकी जड़ ही उखाड़ फेंकनेके लिये तुले थे एवं एतदर्थ उन्होंने मुसलिमलीगकी स्थापना की। किसी भी कोनेसे इसके खिलाफ कोई चूं भी नहीं कर रहा था। सहसा "अल-हिलाल"ने अबुल कलाम साहबके, जिनकी उम्र केवल २४ वर्षकी थी, संपादकत्वमें अपनी आवाज बुलंद की। उन्होंने अकेले समस्त प्रतिक्रियावादी मुसलमानोंको चुनौती दी। केवल एक सप्ताहके अन्दर सर्वत्र सनसनी फैल गयी। मौलानाके विचार इतने परिपक्व, उनकी वाणी इतनी तेज उनका प्रकाशन इतना दृढ़ था कि लोग आश्चर्य चकित हो गये। सारा देश उनकी जादू और अमृत भरी लेखनीका कायल हो गया। अल-हिलालकी एक एक प्रति प्रत्येक मुसलमानके हाथमें थी। सच पूछिये तो हिन्दू-जगतमें नवयुवक बंगाली अरविन्दके बन्देमातरम्‌का जो स्थान था वही स्थान मुसलमानी दुनियामें अल-हिलालका था। अबुल कलाम मारे तो नहीं गये किन्तु उनके अखबारका गला सरकार द्वारा घोंट दिया गया। लेकिन उसकी भस्म-राशिपर शीघ्र ही "अल-बलाग" नामक दूसरा पत्र निकला। इसने आजादीका प्रदीप प्रज्वलित किया। इस-बार सरकारने इस प्रदीपको प्रज्वलित करने वालेपर ही धावा बोल दिया। अबुल कलाम साहब जेलमें ठेल दिये गये।

अबुल कलाम साहब चार वर्षों तक रांची में निर्वासित रहे। और १९२० ई० में जब वे मुक्त हुए तब उन्होंने गांधीजीके असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलनका साथ दिया। मुश्किलसे १२ महीने बीते होंगे कि वे फिर पकड़े गये और उन्हें एक सालकी सजा दी गयी। सजा-समाप्ति पर जब वे बाहर निकले तो वे पुनः राजनीतिक कामोंमें पिल पड़े। इस बार वे कांग्रेसके राष्ट्रपति बनाये गये। कांग्रेसके इतिहासमें यह पहला मौका था जब कि इतनी कम उम्रका व्यक्ति इतने महान पदको सुशोभित कर रहा था। वे १९४० ई० में दूसरी बार सभापति पदपर आये और अभी हाल तक स्वतंत्रता प्राप्तिके कुछ ही दिन पहले तक

इस पदको गौरवान्वित किया। इसमें संदेह नहीं कि हमारी इस अलभ्य और अनुपम स्वतंत्रताकी प्राप्तिमें इनकी एकनिष्ठदेश-भक्ति एवं दर्प पूर्ण त्यागकी बड़ी महत्ता रही।

मौलाना साहबकी इस सेवाका सांस्कृतिक मूल्य कहीं ज्यादा है। इस धातुके आदमी संसारमें प्रायः कमही होते हैं। मौलाना साहबमें विभिन्न सांस्कृतिक धाराओंका संगम हुआ है। इनके पिता एक भारतीय मुसलमान थे, जिन्होंने १८५७ ई० में विद्रोहके बाद भारत छोड़ मक्काकी शरण ली थी। वे एक जाने और माने विद्वान और कुशल लेखक थे। वे जहां कहीं गये वहीं उन्होंने अपने बहुत बहुत भक्त बनाये। एक समय उनके भक्त, इराक, टर्की, फिलस्तीन, मिस्र तथा अन्य मध्य पूर्वीय देशोंमें भरे पड़े थ। मौलाना अबलकलाम आजादको इन्हीं पूज्य चरणोंमें धर्मकी शिक्षा मिली थी। यह शिक्षा कट्टर नहीं, उदार थी। इस शिक्षाका लालन पालन अंतर्राष्ट्रीयताकी गोदमें हुआ था—इस शिक्षाका आधार था : विचार स्वातंत्र्य।

मौलानाका जन्म १८८८ में मक्कामें हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा मुसलिम संसारके सर्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय अल अजहर (कैरो) में हुई थी। फारसी और अरबीमें उन्होंने अपार पांडित्य प्राप्त किया था एवं मुसलमानी आचार और दर्शनकी चोटीकी विद्वत्ता पायी थी। उन्होंने मुसलिम जगतको नहीं—मानव जातिको एक नूतन दिशाकी ओर आह्वान किया।

तबका भारत नव निर्माणके पथसे बढ़ रहा था। वहां विभिन्न शक्तियां विभिन्न परम्परायें एवं विभिन्न विचार-धारायें अबाध रूपसे गतिवती थी। पर-इन सबमें राजनीति सर्वोपरि थी। और जिस समय मौलानाने इसके नवजीवनमें प्राण फंका। देशने उन्हें एक महान राज-नीतिज्ञके रूपमें देखा। उन्होंने कुछही दिनोंमें प्रमाणित कर दिया कि वे समाज और राष्ट्रके सबसे बड़े हितचिन्तक नेता हैं। यह उन्हींका काम था कि १९२६ ई० में लीग और कांग्रेस एक साथ हो ऐतिहासिक लखनऊ समझौता प्रस्तुत कर सकी। शुद्धि और तबलीगके उन संघर्षमय दिनोंमें उन्होंने केवल एकता सम्मेलनकी रचना कर गांधीजीकी, जिन्होंने लम्बा अनशन किया था; प्राण रक्षाही नहीं की प्रत्युतउस संकटापन्न परि-स्थिमें देशको बचाया भी। सचमुच उस समय नष्ट होती हुई कांग्रेसको बचानेका श्रेय इन्हींको है। १९२२ ई० में कौन्सिल प्रवेशके प्रश्नको लेकर गया—कांग्रेस में बड़ी सनसनी फैली। एक ओर जहां कौन्सिलके विरुद्ध गांधीजी थे वहां दूसरी ओर देशबन्धु दास सरकारके घरमें घुस कर देश-मुक्तिकी कल्पना कर रहे थे। उस समय मौलानाने बड़ी सफलता और सतर्कतासे पंचका काम किया था।

इसके बादही जमीन्दारोंका प्रश्न आया। उन्होंने शोषित दरिद्र किसानोंका साथ दिया। अन्य मौकों पर भी उनका कार्य संचालन बड़ा एवं अतिबुद्धि मत्ता पूर्ण था। हां, एकाध बार थोड़ी भूल भी हुई। जिसे वे भी स्वीकार करेंगे। इस सम्बन्धमें श्री सुभाषबोसका चुनाव और क्रिप्स-प्रस्तावकी अस्वीकृतिका उल्लेख पर्याप्त होगा। लेकिन इन बातों-के लिये कितने और भी कारण बताये जा सकते हैं।

जो हो, आजाद साहब आधुनिक भारतके एक ज्योति-स्तम्भ हैं। वे भार-तीय गौरवके जाज्वल्यमान नक्षत्र है, उनकी सचाई और बुद्धिमत्ता अनुपम है, उनकी चुप्पी उनका अहंकार नहीं वरन् उनकी सरलता है अधुना शायद ही कोई व्यक्ति उनके व्यक्तित्वसे प्रभावित हुए बिना रह सकता है। उन्हें सभा-समितिसे अपना पुस्तकालय कहीं ज्यादा प्यारा और पसन्द है। वे अधिकसे अधिक चुप रहने का प्रयत्न करते हैं किन्तु जब कभी अपना मुंह खोलते हैं—मालूम पड़ता है ज्ञान और दर्शनका हिमालय से झरना बहा हो। यह उन्हींका काम है कि मिस्रकी प्राचीनता और अमेरिकाकी अर्वाचीनता पर एक तरहसे संलाप कर सकें। यों तो लिखकर काम करनेकी उनकी स्वाभा-विकता है किन्तु मित्रोंके आग्रह और अनुरोधने उन्हें भारतका ही नहीं संसार का एक श्रेष्ठ वक्ता बना दिया है। वे बड़े शांत, बड़े नम्र और हलचलसे भागने वाले हैं। इस अवसर पर एक घटनाका उल्लेख उचित होगा देशबन्धुका देहांत हो गया था। गांधीजी स्वयं मौलाना साहबके यहां पहुंचे कि वे देशबन्धुके रिक्त स्थानकी पूर्ति करें। उन्हें कलकत्ता मेयरत्व प्रांतीय कांग्रेस कमेटीका सभा-पतित्व एवं स्वराज्य पार्टीका नेतृत्व अर्पित किया गया, लेकिन उन्होंने इन सब चीजों को छोड़ एकांतमें रह कुरान भाष्य लिखना अच्छा और आवश्यक समझा।

कुरानका यह भाष्य सारे मुस्लिम जगतमें सर्वोत्तम माना जाता है। आज भले ही जातीयताके दलदलमें फंसे भार-तीय मुसलमान उन्हें नहीं चाहते हैं, किन्तु उस समय जब कि यह अज्ञान तिमिर दूर होगा उनकी सेवा उनके त्याग एवं उनके पाण्डित्यकी कद्र हुए बिना नहीं रहेगी।

मौलानाके नहीं चाहने पर भी भारत-वर्षके दो टुकड़े हो गये। लेकिन वह दिन दूर नहीं जब कि वे दोनों ही अपनी-अपनी भूल महसूस करेंगे और दो गुम-राह भाई गले-गले मिलेंगे। उसी समय—हां उसी समय मौलानाका मूल्य विशेषतः इस्लामके माननेवाले आंक सकेंगे। मेरा विश्वास है मुस्लिम जगत में इतना बड़ा पण्डित न भूतो न भविष्यति।

फ्रेंच कहानी—

लाबेल सूजन

लेखिकाः—जर्मन बोमंट

[फ्रांसकी प्रख्यात उपन्यास लेखिका । गत अट्ठारह वर्षोंसे वह 'मैटिन' प्रकाशनके संपादक मंडलमें है । पंद्रहवें वर्षसे लेखन शुरू किया । इनके उपन्यास टेकनीक तथा यथार्थवाद की दृष्टिसे श्रेष्ठ माने गये हैं]

अनुवादक—प्रो० प्रभाकर माचवे एम० ए०

"पापांकी कहानी आपको सुनना है ?-है न ? सुनाता हूं । सब कुछ सुनाता हूं । बिलकुल जैसे कुछ घटित हुआ, क्रमबद्ध, ज्यों-का-त्यों सुनाता हूँ । न अपनी ओरसे नमक मिर्च मिलाऊंगा, न पंख तोड़कर अलग करूंगा । थोड़ेसे थोड़े शब्दोंमें सब-कुछ कहडालना मेरा काम है; आपको जो राय कायम करनी हो, आप करते रहें, समझें । सुनो तो—

अभी जो छोटासा बंगला आप देख आये, उसपरसे पापां कैसा है—कैसा 'था' चाहें तो कहें— इस बातकी कुछ न कुछ कल्पना आपने प्राप्त की होगी ही । मैं उसका मित्र; इसलिये मैंने तुम्हें अपना जो बंगला बताया उसके आधे हिस्सेमें पापां रहता था, किराया देकर और महीनेकी पहिली तारीखको किराया देता था । कुछ पैसा पापांके पास था और एक मामूली सरकारी नौकरी भी वह करता था। उसने मुझे बेचा हुआ वह सब सामान देखा है न ? सब पापांका सामान है वह । वे बिलकुल दो लकड़ीकी कुर्सियां 'वह सादा मेज' दो पितलके दीये-बिजलीके दीये उसने नहीं खरीदे थे ! बिलकुल सादा चौकट वाली वे तीनचार रंगीन तसवीरें-यह सब देखकर पापांकी आर्थिक दशाकी पूर्ण कल्पना कर सकते हैं । वैसे पैसा बेचारेके पास था ही नहीं । और होता भी तो वह सादगी न छोड़ता । बड़ा सादा था हमारा पापां । उसे फिजूल खर्ची, फैशन, स्वच्छंदता बिलकुल पसंद नहीं थी । सादा, नियमित जीवन वह जीता था वही उसे पसंद भी था ।

नौकरी पर काम करनेके लिये रोज सवेरे पापां जाता था । दोपहरको एक सस्ते होटलमें खाता और शामको आप घरपर खाना खाने आते । आधे दिनके लिये उसने रसोइया रखा था । शामका खाना हुआ कि वह 'पाइप' सुलगा लेता और फिर बंगलेके सामनेके उस छोटेसे बगीचेमें या उसके सोनेके कमरेमें या कभी मेरे बरामदेमें गप्पें चलतीं हमारी । गप्पें भी क्या थीं—इधर-उधरकी अफवाहों पर चर्चा, बहुत करके राजनीति प्रमुख विषय था । हम दोनोंही अविवाहित, हमें न औरत न औलाद, न मां न बाप । न भाई न बहन, न दूसरे दोस्त ! ! हम एक दूसरेके आप्त-मित्र जो कुछ कहते थे । और जब समय मिलता खूब दिल खोलकर हमारी बातें घुटती थीं ।

कई बरसोंतक हमारा यह नित्यक्रम चलता रहा । और आगे भी अनेक वर्षों तक चलता रहता । परन्तु कभी-कभी एकछोटी-सी मामूली जान पड़नेवाली बात कितनी महत्व पूर्ण हो जाती है-देखो तो । अगर उस दिन पापांने पुरानी कुर्सियां खरीदने-वालेके दूकानमें जानेका निश्चय न किया होता— और मजा यह कि आखिर वह गया नहीं ही—तो हम दूर नहीं होते । हां, तो मैं क्या कह रहा था ? समझे—उस दिन पापांसे किसीने कह दिया कि पेरिसमें सादी लकड़ीकी कुर्सियां काममें लानेका रिवाज (फैशन) कलसे चली है और पापांके पास जैसी कुर्सियां थी उनकी कीमत खूब बढ़ गयी है ! पेरिसमें आप जानते ही हो किस वक्त किस चीजकी फैशन चल पड़ेगी कौन कर सकता है—वह एक बीमारी ही है ! हसते हंसते पापां घर आया और मेरे कंधे पर थपकी देकर आंखें अंध मूंदी करके बोला-'दोस्त ! बस, कल वे दो लकड़ीकी कुर्सियां बेच डालूंगा और उनके बजाय बेतकी दो नयी कुर्सियां खरीद लाऊंगा । और इस सौदेमें कुछ पैसे भी जेबमें आ सकेंगे ।'

अर्थात मैं उसमें क्या जानूं ? मैंने उसे उसीकी पुरानी कुर्सीपर बैठाया और कहा—'भले आदमी, यह क्या नयी आफत है !'-और पापांने मुझे सब कह सुनाया । और हम दोनों पेरिसवालोंकी फैशनपर स्तोपर काफी देर तक हंसते रहे ।

दूसरे दिन शुक्रवार था । सवेरे दफ्तर पर जानेसे पहिले पापांने मेरे कमरेमें आकर कहा दोस्त पेरिसके पागल लोग, ऐसी सादा, लकड़ीकी कुर्सियोंकी क्या कीमत देंगे यह पहिले देखना चाहिये । और हां; अपनी कुर्सियां आखिर पुरानी हैं, सेकेंड-हैंड । वे हमलोग बेचेंगे पुराने लकड़ीके सामान बेचने खरीदनेवाले को । और वह हमें कहीं ठग बैठा तो । इससे तो अच्छा यह होगा कि लकड़ीकी नयी कुर्सियोंके दाम जरा देख आऊं ।—देखा, पापां कैसा था ? उस दिन शामको मैं उसके साथ जा ही नहीं सकता थो—मगर अगर मैं जाता तो शायद पर शायद ही है, उसे मैं 'लाबेल सूजन' घर न लाने देता । ला बेल सूजन लकड़ीका नाम नहीं है । वह है एक छोटेसे पालवाला जिसे लगे थे ऐसे जहाजका नाम । था तो खिलौनेवाला ही जहाज, मगर बड़ा सुन्दर था । और मजा यह कि वह एक साधारण बड़ी सी बोतलमें रखा गया था । छोटे मुंहकी बोतलोंमें ये जहाज या हवाई जहाज कैसे भरे जाते हैं यह शायद आपको मालूम ही होगा । मगर मैं और पापां वह देखकर ठगेसे रह गये । 'सूजन' बड़ी ही मनोहारी थी मुझे भी वह पसन्द आयी । पापांने तो उसे पूरे पूरे दाम देकर खरीदा था तो उसे वह बहुत ही अच्छी लगी होगी । इसमें क्या आश्चर्य ! नयी कुर्सियोंकी कीमतकी तलाश करने गया था पापां । उलटे वह 'ला बेल सूजन' ले आया । और दूसरे दिनकी शामतक पुरानी कुर्सियां

नेचनेका उद्योग व्यर्थ है यह निश्चय करके वह घर लौटा। 'सूजन' उसकी बैठकमें दीवार में एक काली लकड़ीकी तख्तीपर जमा दी गयी। उस तख्तोपर पहिले पापां अपनी घड़ी रखता था अब 'सूजन' आनेपर घड़ी के स्थानांतरमें क्षणभर भी देर न हुई।

कुछ दिन बीते। एकबार मैं उसके कमरेमें गया तो हैंडलवाले एक मोटे चश्मे की कांचमेंसे वह 'सूजन' का निरीक्षण कर रहा था, ऐसा दिखाई दिया। वह कह रहा था --यह एक माल ले जानेवाला जहाज है। दोस्त, आजकल मैंने जहाजोंकी काफी जानकारी हासिल की है। यह देखो। यह है जहाजका दिशा यन्त्र--इससे जहाज घुमाया जा सकता है। और यह लङ्गर देखो। बड़ा भारी होता है यह। और ये पाल देखो। हमें पता भी नहीं है कि जब आंधी चलती है।, तब इन पालोंको लपेटकर फिर गोल बनानेमें बड़ी भारी ताकत की जरूरत होती है, समझे, महाराज! और यह जो खंम्भासा दीखता है, इसे कहते हैं मस्तूल, अपनी 'सूजन' छोटी है, इसलिये मस्तूल भी छोटी है, मगर बड़े जहाजका मस्तूल? अरे, वह तो बादलोंको छू लेता है!.. ऐसो न जाने कितनी-कितनी बातें वह बतलाता था।

और कुछ दिन बीत गये!

दोस्त कुछ भी कहो, परन्तु अपनी 'ला बेल सूजन' से कल्पना शक्तिको कुछ नयी ही स्फूर्ति मिलती है।

मैं कुछ नहीं बोला। इधर पापां बहुत बदल गया था। हमेशा अपने ही विचारों में डूबा-डूबा सा रहता और आते जाते हुए 'सूजन' के सामने मिनिट-आधा-मिनट रुकता।

इसके बाद दूसरे हफ्तेमें एक दिन उसने कहा—"दोस्त कल यहांके नौसंग्रहालय (मरीन म्यूनिजियम)में मैं गया था। वहां जो कुछ मैंने देखा, कभी आजीवन न भूलूंगा! और इसके बाद वह घंटे दो घंटे बराबर बोल रहा था। किसीको लगता, जैसे इस आदमीकी पूरी जिन्दगी समुद्र पर ही बीती हो। मैं बहुत परेशान हो गया था उस दिनसे। एकाकी जीवनका भोक्ता पापां इतना कैसे बदल गया, यही मैं समझ नहीं पाया।

उसके बाद कुछ दिन बीच बीचमें कोई मल्लाह दोस्त पकड़ कर घर लाता और बादमें तो वह छुट्टीके दिन मल्लाहोंके साथ ही बिताता। फिर जानबूझ कर छुट्टी लेकर वह मलाहोंके साथ छोटी छोटी सैर करने जाता।

ऐसे ही एक दिनकी नदीपरकी सैरसे लौटकर वह आया और अचानक मेरे कमरेमें आकर बोला—'क्या है यह भी कोई जिन्दगी है? वही-वही हमेशा करते रहना। हु हूं, मैं तङ्ग आ गया। ऐसे पेरिसमें सड़कर मरनेकी मेरी जरा भी इच्छा नहीं। हिन्दुस्तान, चीन जापान सारी दुनिया में प्रवास करूंगा। समुद्रकी तरङ्गों पर तैरते हुए अलग देश देखनेमें जो आनन्द है वह लूटूंगा। बस मेरा निश्चय हो चुका।

—और जैसे वह आया था वैसे ही मेरे कमरेसे चला गया। आज कल हमारी कई दिनसे गप्पें करीब-करीब बंद ही सी थीं। घरपर जब कभी होता पापां 'पाइप' पीते हुए कोई प्रवास वर्णन पढ़ने बैठता या आज कल दीवालपर लटकाये हुए दुनियाके बड़े भारी नक्शेपर लाल पीली पेंसिलसे निशान बनाते रहता। मैं भी फिर उसे नहीं छोड़ता।

और एक दिन—

दोपहरको पापां पेरिस हमेशाके लिये छोड़कर, समुद्र-लहरीयोंपर प्रवास करनेके लिये चला गया। उस । सब सामान मोल, लेनेके लिये उसने मुझे करीब करीब बाध्य ही किया। 'ला बेल सूजन' पापांकी स्मृति के रूपमें उसने मुझे उपहार में दी और चिट्ठी भेजता रहूंगा'-भर्राये हुए गलेसे कहकर वह मुझसे विदा हुआ!

समाप्त! पापांकी कहानी यों समाप्त होती है। वह गया तबसे एक भी चिट्ठी उसने मुझे अबतक तो भेजी नहीं। कौन जाने क्या हुआ होगा उसका?

'ला बेल सूजन' आपको अभी मेरे बंगलेमें नहीं दिखायी दी! और वह दिखाई देगी भी कैसे? बङ्गलेके सामने के छोटे बागीचेमें मैंने उसे गाड़ जो डाला है। क्यों? आप पूछेंगे? उसकी वजह यों है कि पापां जबसे गया। 'सूजन' ने मुझे भी पापांकी तरह पूरा बदल डाला और मैं भी जल्दी ही.. परंतु जाने दो तुम्हें पापांकी कहानी सुननी थी न? सारी कहानी पूरी सुना चुका। 'लाबेल सूजन तीसरे और किसीको समुद्र पर न भेज दे, इस बिचारसे मैंने उसे गाड़ दिया है। हां, पापांकी बात न्यारी थी— अकेला था। मगर हर कोई तो ऐसी तरङ्गोंपर तैरते नहीं न रह सकता? हर कोई ऐसा करने भी लगे तो कैसे चलेगा? है न?!

जानेवाले कंट्रोल

ले०—प्रो० महेशचन्द्र, प्रयाग विश्वविद्यालय

विश्वमित्रके पूजा-दीपावली अंकमें कमसे कम आगामी सन १९५२ तक विश्व-खाद्य-संकटमें किसी कमीकी आशा न करनेको कहा गया है। हमारे सामने विश्व खाद्य उत्पादनके जो आंकड़े हैं उनको देखते हुए यह सत्य मालूम पड़ता है। परंतु विश्वकी अपेक्षा हम भारतीय खाद्य संकट के सम्बन्धमेंअधिक दिलचस्पी रखतेहैं। इस संकटके कई चिन्ताजनक पहलू हैं। प्रथम, जनता और महात्मा गांधीने कन्ट्रोलके विरोधमें आवाज उठाई है। द्वितीय सर-कारी सूत्रोंके आधारपर प्रस्तुत हालतमें देशमें लगभग ४० लाख टन अन्न चाहिये। "अन्न संचय करो" आंदो-लनमें उतनी सफलता नहीं मिली है जितनी वांछनीय थी। तृतीय, यद्यपि हमको विदेशों-से प्रतिवर्ष लगभग २५ लाख टन अनाज की आवश्यकता है हम पूर्व-युद्धकालीन भावोंका छै सात गुना दाम देकर भी उसे नहीं प्राप्तकर पाते। फिर जिन भावों-पर हम विदेशोंसे अन्न खरीदते रहे हैं, वह भारतीय भावोंसे कहीं अधिक रहे हैं। ऐसी स्थितिमें विदेशोंपर निर्भर रहनेकी अपेक्षा हमको आत्म निर्भर बननेकी कोशिश करनी चाहिये। चतुर्थ, पिछले दो तीन वर्षोंसे वर्षा भी समयपर और उचित रूपसे नहीं हो रही है। इन पहलुओंके ठीक स्वरूप क्या हैं?

विरोध क्यों

जनता और गांधीजीने कंट्रोलके विरोधमें जो आवाज उठाई है उसके कई कारण हैं। जनता युद्ध-कालीन कठिनाइयोंसे ऊब उठी थी। वह सोचती थी कि युद्ध-का अन्त होते ही शीघ्र ही कंट्रोल और राशन उठ जायगा। अतः इनका चालू रहना उसको खटकता है। द्वितीय ब्लैक-मार्केट और राशनिंग-विमागके भ्रष्टाचार के कारण वह यह सोचती है कि देशमें सामानकी कमी नहीं। जो कमी महसूस होती है वह कंट्रोलके कारण ही है। गांधी जी सारी व्यवस्थाको जनवलके आधारपर ले चलना चाहते हैं यद्यपि उन्होंने खाद्य मंत्रियोंके विचारोंको पूर्ण महत्व दिया है। खाद्य-मंत्रियोंको व्यापारियोंकी अत्य-धिक लाभ उठानेकी प्रवृत्तिसे अधिक डर लग रहा था। इसके अतिरिक्त यातायातके साधनों की कमी भी एक रोड़ा बनकर अटकती है। गांधीजी इन दोनों बातोंको समझते हैं और इसी कारण उन्होंने व्यापारीगणसे यह अपील की है कि वे कंट्रोल टूटनेपर ऐसी प्रवृत्तिका परिचय न दें। सरकारने कंट्रोल विभागके अन्दर प्रचलित भ्रष्टाचारकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है। मुझे तो अपने विद्यार्थियों के द्वारा जो सूचनाएं मिलती हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि भ्रष्टाचारमें बड़े-बड़े छिपे रुस्तम भी फंसे हुए हैं। इलाहाबादमें लोकनाथ महादेव नामक मुहल्लेकी मिठाइयां प्रसिद्ध हैं। वहां खुलेआम डेढ रुपये सेर चीनीका भाव बताया जाता था। मैं एक दूकानदारसे रेवड़ी खरीद रहा था। उसने भी यही कहा कि रेवड़ी ढाई रुपए इसीलिए बिकती है कि चीनी डेढ़ रुपये सेरमें लेनी पड़ती है। अस्तु उस लोकनाथ महादेवके दूकानदारोंको खंडसारी चीनी मिलती है और वहां सफेद चीनी गलती है। वह सफेद चीनी या तो फुटकर राशन की दूकानोंसे आती है या थोक दूकानदारसे या गोदामसे या स्पेशल परमिट बांटनेवाले अधिकारियोंके कारण। इसमें कोई शक नहीं कि इधर उधर एक दो अधिकारी पकड़े गये हैं। परन्तु यह बीमारी अधिक जड़ तक पहुंची हुई है और आसानीसे दूर नहीं की जा सकती।

डिकंट्रोलके बाद

वस्तुओंका कंट्रोल हटानेकी अपेक्षा कंट्रोल विभागका भ्रष्टाचार दूर करनेका सतत प्रयत्न करना अति वांछनीय है। इधर कंट्रोलके सम्बन्धमें सरकारने वस्तु-भाव बोर्ड और श्री पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास-की अध्यक्षतामें होनेवाली खाद्य-नीति कमेटीकी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीका प्रस्ताव भी हमारे सामने है और केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारोंकी भावी नीतिके संकेत भी। सब किसी न किसी रुपसे कण्ट्रोल हटानेके पक्षमें हैं। वस्तु-भाव बोर्ड परिस्थितिकी विषमताको समझते हुए भी "प्रगतिशील डिकंट्रोल" का समर्थन करता है। खाद्य नीति कमेटीने चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा और मकई जैसे मुख्य खाद्य पदार्थों के कंट्रोलको छोड़कर अन्य कंट्रोलोंको हटानेका समर्थन किया है। सरकार ने कुछ डिकंट्रोलोंका परिचय दिया है। गुड़का डिकंट्रोल होनेपर उसके दाम इतने बढ़े कि एकबार सरकार पुनः कंट्रोल लगाने वाली थी। इधर पहली दिसम्बरसे सरकारने चीनीका डिकंट्रोल कर दिया है। फलतः कानपुर बाजारमें पचास रुपये मन के भाव चीनी बिक गयी। गुड़का भाव भी बारह रुपये मनसे साढ़े सत्तरह रुपये मन हो गया। महीने भर पहले सरकारी वक्तव्यमें बताया गया था कि चीनीकी उत्पत्ति आवश्यकतासे अत्यन्त कम है और डिकंट्रोल वांछनीय नहीं है। चन्द हफ्तोंमें चीनीको वस्तु स्थितिमें कोई परि-वर्तन नहीं हुआ है। इसी प्रकार अन्य खाद्य-पदार्थोंके सम्बन्धमें स्थिति है। युद्ध से पूर्व हम कुछ खाद्य पदार्थ विशेषतः चावल बाहर भेजते थे और पूर्वी देशोंसे सस्ता चावल मंगाते थे। कुल मिलाकर हम पन्द्रह बीस लाख टन चावलका आयात करते थे। हालके वर्षोंमें हमने प्रतिवर्ष बाईस तेईस लाख टन चावलका आयात किया है। इससे स्पष्ट है कि भारतमें खाद्य पदार्थकी कमी है।

वस्तुन-स्थित

युद्धसे पूर्व भी हमारे यहां खाद्य पदार्थ की कमी थी। उस सम्बन्धमें कई अनुमान प्राप्त हैं। एक अनुमानके अनुसार हमारी दो तिहाई जनताको केवल एक समयके लिये भोजन प्राप्त था। द्वितीय महायुद्धके कारण इस स्थितिमें परिवर्तन हो गया है। प्रथम, गांवोंमें भूखों मरनेवाली किसान जनताको अब दो समय भरपेट भोजन करनेका अवसर प्राप्त हुआ है। युद्ध कार्यों में लगे गरीब व्यक्तियोंने जो पैसे कमाये हैं उनके बलपर वे दोनों वक्त भरपेट भोजन करनेका सफल प्रयत्न करते हैं। भारतमें इन किसानों और गरीबोंका ही प्रतिशत अनुपात अधिक रहा है। अतः कोई आश्चर्य नहीं यदि इनकी सफल मांगोंके कारण पूर्व-युद्धकालकी अन्नकी कमी अब कहीं अधिक हो गयी है। ऐसी स्थितिमें डिकंट्रोल हो जानेपर भी डिकंट्रोल के विरोधमें आवाज उठाने वाली जनताको कहांसे अधिक सामग्री मिल जायगी !! मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि डिकंट्रोलों के कारण जो मूल्य-वृद्धि होगी वह भावों को चोर बाजारके भावोंपर नहीं, उनसे भी ऊपर पहुंचा देगी। तब जनता रो रोकर खाद्य-पदार्थोंकी उस मात्राके दाम भी चोर बाजार-भावसे देगी जो उसे राशनकी दूकानसे कंट्रोलके भावोंपर मिलती थी। व्यक्तिगत रुपमें मुझे व्यापारियोंकी लालच प्रवृत्तिमें कोई सुधारकी आशा नहीं नजर आती है।

उपाय

सरकार और सरकारी कमेटियोंने जन बलके सामने एक प्रकारसे सिर झुका दिया है। परन्तु क्या यह वांछनीय था। कदापि नहीं। सरकारका कर्त्तव्य तो यह है कि गुमराह जनताको वस्तु स्थितिका ज्ञान कराकर सच्ची राह दिखलाये। इस सम्बन्धमें उसे ग्रामोंसे अधिक दाम देकर अन्न खरीदनेका प्रयत्न करना चाहिये। परन्तु यह बढ़े दाम केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारें स्वयं मिलकर दें। जनतासे इसे न वसूल करें। द्वितीय, सरकारको विदेशों से अन्न प्राप्त करनेके प्रयत्नको शिथिल नहीं करना चाहिये। जब तक देशके अन्दर कृषि उत्पादनमें वृद्धि नहीं होती तब तक खाद्य और कृषि संघ और विश्व खाद्य कौंसिलमें लड़ लड़कर हमको विदेशोंसे खाद्य सामग्री इकट्ठा करनी चाहिये। हमको विदेशोंके अत्यधिक ऊंचे भावोंको कम करनेके लिये भी वाक्-युद्ध करना चाहिये।

इन सबसे बढ़कर उपाय हैं उत्पादन वृद्धिके सम्बन्धमें। कुछ वर्षोंसे सरकार "अधिक अन्न पैदा करो।" आंदोलन करती है। परन्तु यह आंदोलन सफल नहीं हुआ है। कारण, हमारी प्रस्तुत सरकारने भी अभी इस ओर भली प्रकार ध्यान नहीं दिया है। इस सम्बन्धमें किसी अन्य लेखमें प्रकाश डाला जायगा। द्वितीय वितरणके ढंगके सम्बन्धमें कमेटियोंने राय दी थी, सरकारी मंत्रियोंने कागजी प्रचार किया, सरकारने भी यदा कदा माना और मैंने भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित व्याख्यान मालामें कहा कि सहकारी स्टोरोंकी स्थापना की जाय। 'परन्तु सरकारी सहकारिता विभाग और सरकारी खाद्य-विभाग कानमें तेल डाले बैठे हुए हैं" ऐसा आक्षेप अनुचित नहीं होगा। अब भी समय है। अभी केवल चीनी, गुड़ और दालोंका डिकंट्रोल हुआ है। कंट्रोल टटने पर सहकारी स्टोरोंकी जड़ जमाना अधिक कठिन हो जायगा। आशा है कि सरकार उत्पादन और वितरणके इन दोनों पहलुओंपर शीघ्र अति शीघ्र ध्यान देगी। (लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)।

क्या हिन्दू फिर पाकिस्तानमें बस सकेंगे?

लेखक—श्री सन्तराम, बी०ए०

महात्मा गांधी चाहते हैं और रेडियो द्वारा उनका उपदेश प्रायः नित्य ही जनता को सुनाया जाता है कि जो हिन्दू-सिख शरणार्थी पश्चिमी पंजाबसे आये हैं वे सब अपने अपने स्थानोंको लौट जायं और भारतमें रहनेवाले मुसलमान भी अपना स्थान छोड़कर पाकिस्तान न जायें। महात्माजीकी आकांक्षा तो बहुत शुभ है, पर विचारणीय बात यह है कि जिन अवस्थाओंने हि दुओंको पश्चिमी पंजाब और सीमाप्रांत छोड़नेको बाध्य किया था क्या वे अब बदल गयी हैं ? यदि हिन्दू-मुस्लिम-कटुता अब तक भी पर्वतत जोरोंपर है तो हिन्दू-सिख-शरणार्थी वापस लौटनेका दुःसाहस कैसे कर सकते हैं? यदि महात्माजी समझते हैं कि अवस्था बदल चुकी है तो उन्हें और उनके अनन्य भक्तोंको अपने बाल-बच्चे मियांवाली, शेखपुरा और डेरा इस्माईल खांमें बसाने चाहिये। उनको देखकर शेष लोग अपने आप वहां जाकर रहने लगेंगे।

मैं महात्माजीका सम्मान करता हूं, देशके प्रति उनकी सेवाओंको भी स्वीकार करता हूं। पर उनके प्रति मेरा यह सम्मान-भाव, जब मैं समझूं कि वे भूलकर रहे हैं तब उनकी आलोचना करनेके अधिकारसे मुझे वंचित नहीं कर देता। अपनी बुद्धिपर ताला लगाकर किसी नेताकी हां में हां मिलाते जाना लोकतन्त्रके सिद्धांतकी जड़पर कुल्हाड़ा चलाना है। इससे कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। अंधी श्रद्धासे राष्ट्रोंका पतन ही हुआ है। हिटलरका उदाहरण हमारे सम्मुख है। शुद्ध भावसे की गयी आलोचना सदा हितकर ही सिद्ध होती है।

ऐसा जान पड़ता है, महात्माजी समझते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य इसलिये है कि हिन्दू कुरान नहीं पढ़ते, उर्दू या हिन्दुस्तानी नहीं बोलते, और गो-हत्यापर चिढ़ते हैं। इसीलिये महात्माजी अपनी प्रार्थनामें गीताके साथ कुरानकी आयतें पढ़नेपर हठ करते हैं और हिन्दीमें बलात अरबी-फारसी शब्द ठूंसकर हिन्दुस्तानी वाक्यकी एक नयी भाषा बनाना चाहते हैं। पर हम देखते हैं कि हिन्दुस्थानी तो दूर पंजाबमें सब हिन्दुओंके उर्दू-फारसी पढ़ने पर भी हिन्दू मुस्लिम एकता संभव नहीं हुई। बंगालमें हिन्दू-मुस्लिम दोनों बंगला बोलते हैं तो भी साम्प्रदायिक उपद्रव पहले वहींसे आरम्भ हुआ। बहुतेरे हिन्दू अरबीमें कुरान पढ़ते हैं, कब्रें और मुहर्रम पूजते हैं। आगाखानी हिन्दू और हुसैनी ब्राह्मण रीति-रिवाजमें मुसलमानोंके जितने निकट हैं उतने हिन्दुओंके नहीं। इसपर भी हिन्दू मुस्लिमका मिलाप नहीं होता। बहुतेरे कादियानी प्रचारक वेद और गीता पढ़ते हैं। पर वे वैसे के वैसे हिन्दू-द्वेषी हैं। इसके विपरीत हिन्दू और सिख अनेक धार्मिक विश्वासोंमें एक दूसरेसे बिल्कुल भिन्न हैं। सिख जनेऊ-चोटी नहीं रखते, वर्ण व्यवस्था नहीं मानते, वेद उनका धर्म-ग्रन्थ नहीं, मूर्ति पूजाको अच्छा नहीं समझते, फिर भी हिन्दू और सिख प्रायः इकट्ठे हो जाते हैं। पंजाबका ब्राह्मण और चमार दोनों पंजाबी बोलते और हिन्दू धर्मानुयायी हैं। पर दोनों एक दूसरेको भाई नहीं समझते। इसके विपरीत भाषा-भेद और रीति-रिवाजका भेद रहते भी पंजाबका ब्राह्मण बंगालके ब्राह्मणसे जितनी आत्मीयता अनुभव करता है उतनी पंजाबके खत्रीसे नहीं। इससे स्पष्ट है कि दो व्यक्तियोंको भाषा या धर्म-विश्वास उतना नहीं मिलाते जितना कि परस्पर रोटी-बेटी-व्यवहार। जब हिन्दुओंकी ही विभिन्न जातियां और उपजातियां आपसमें रोटी-बेटी व्यवहार नहीं करतीं, जब वे ही सामाजिक जीवनकी दृष्टिसे चिड़िया-घरके पशु-पक्षियोंकी तरह अलग अलग पड़ी हैं, तो कुरान-पाठ और हिन्दुस्तानी हिन्दू-मुस्लिमको एक राष्ट्र कैसे बना सकती है। मालूम नहीं महात्माजी राष्ट्रकी क्या परिभाषा करते हैं। मुझे तो संसारमें राष्ट्र कहलाने वाला एक भी देश या जन-समूह ऐसा नहीं देख पड़ता जिसके लोग जन्मके कारण ही एक दूसरेसे रोटी-बेटी-व्यवहार करनेसे इंकार करते हों। एक राष्ट्र कहलानेके लिये उन लोगोंका आपसमें रोटी-व्यवहार होना परमआवश्यक है। पर जब ब्राह्मण और नाई ही आपसमें बेटी-व्यवहार नहीं कर सकते तो ब्राह्मण और मुसलमान आपसमें बेटी-व्यवहार करेंगे, ऐसी आशा करना हास्यास्पद है। इसलिये हिन्दू-मुस्लिमकोएकराष्ट्र बनानेके लिये यह आवश्यक है कि पहले जातिभेदको मिटाकर सब हिन्दुओंको एक किया जाय। पंजाबके सैकड़ों नहीं सहस्रों मुसलमान स्वदेश छोड़कर पाकिस्तान नहीं जाना चाहते थे। वे रो रो कर प्रार्थना करते थे कि हमें हिन्दू बना लो,हमारे पूर्वज ऐसे ही विप्लवमें मुसलमान बने थे, अब हम फिर हिन्दू बनना चाहते हैं। हमारी बेटी लो और हमें बेटी दो। पर जातिभेदमें फंसे हिन्दू उनकी प्रार्थना स्वीकार न कर सके।

जब तक पाकिस्तान है हिन्दुस्थान कभी चैनसे न रह सकेगा। हिन्दु-मुस्लिम की कभी न मिटने वाली कटुता दोनोंको मित्र न बनने देगी। फ्रांस और इंग्लैंड बरसों लड़ने-भिड़नेके बाद फिर मित्र बन सकते हैं। इंग्लैंड और जर्मनी इतना नर-संहार होनेके बाद भी एक दिन पुनः मित्र बन जायंगे, क्योंकि उनमें परस्पर रोटी-बेटी-व्यवहार है। पर गत १३०० वर्षसे हिन्दू और मुस्लिम एक ही देशमें रहते

हुए भी मित्र नहीं बन सके; वरन उनकी कटुता बढ़ती ही गयी है। ९ वीं शताब्दी में अफगानिस्तानमें हिन्दू राजा राज्य करते थे। पर आज लाहौर तकका समूचा प्रदेश इस्लामका ग्रास बन गया है। इसका कारण यही है कि जातिभेदके कारण हिन्दू किसी दूसरेको पचा नहीं सकते, परायेको अपना नहीं बना सकते, हां अपनेको पराया अवश्य बनाते हैं। यदि कांग्रेसी सरकारने जाति भेदकी महाव्याधिको दूर करनेका पूरा पूरा यत्न न किया, तो आप देखेंगे, अगले दस वर्षमें पाकिस्तानकी पताका दिल्लीके लाल किले पर फहराने लगेगी, हिन्द सरकारके हवाई जहाज, टैङ्क और मशीनगनें हिन्द की रक्षा न कर सकेंगी।

पाकिस्तानको मिटानेके दो ही उपाय हैं। एक तो यह कि हरिसिंह नलवाकी भांति खड्गके बलसे इसे जीतकर खैबर पर हिन्दका झण्डा लहराया जाय। दूसरा यह कि हिन्दुओंकी जात-पांतका अन्त करके हिन्द-समाजको इस योग्य बना दिया जाय कि वह ईसाई और मुसलमान आदि विधर्मियोंको अपने पेटमें पचा सके। खड्गके बलसे विजय पानेके लिये भी शक्ति की आवश्यकता है और वह शक्ति तभी आ सकती है जब सब हिन्द सङ्गठित हों। पर इस सङ्गठनके मार्गमें सबसे बड़ा रोग जातिभेद है। जातिभेदको रखते हुए हिन्दुओं या भारतीयोंका सङ्गठित होना असम्भव है। अछूतपन जातिभेदका ही अनिवार्य फल है। जातिभेद एक क्रमबद्ध अस्पृश्यता है। इसमें सब लोग अछूत हैं, कोई कम अछूत है और कोई अधिक। भङ्गी चमार तो इस अस्पृश्यताका अन्तिम सिरा है। महात्मा गांधी यदि चरखा संघ, हिन्दुस्तानी प्रचार संघ, और हरिजन सेवक संघ पर शक्ति और धन लगानेके बजाय जातिभेदको मिटाने पर जोर लगाते तो जहां अछूतपनकी जड़ कट जाती, वहां पाकिस्तान बननेकी भी नौबत न आती। मि० जिन्ना आदि मुस्लिम नेता बराबर कह चुके हैं कि हिन्दुओंके जातिभेदके कारण ही हम हिन्दुओंके साथ रहकर सम्मानपूर्ण जीवन नहीं बिता सकते। भारतके ४ करोड़ मुसलमानोंको मार कर पाकिस्तान भेजने से हिन्दुस्तानकी ही हानि होगी। भारतके शत्रुओंकी ही संख्या बढ़ेगी। अवश्यकता इस बातकी है कि इनको हिन्दू-समाजमें पचाकर अपनी शक्तिको बढ़ाया जाय। माना ये इस समय पक्के हिन्दू नहीं बनेंगे। पर यदि इनके साथ रोटी-बेटी व्यवहार होता तो ये जायेंगे भी नहीं, और इनकी अगली पीढ़ी पक्की हिन्दू होगी। वह भूल जायगी कि उनके पूर्वज कभी मुसलमान भी थे। मैं तो समझता हूं कि कोई व्यक्ति घरमें नमाज-रोजा रखता हुआ भी उसी प्रकार हिन्दू (इंडियन) रह सकता है जैसे साकारवादी, निराकारवादी और अनीश्वरवादी नेता हिन्दू रह सकते हैं। धर्म-विश्वास एक व्यक्तिगत वस्तु है। उसका सामाजिक या राष्ट्रीय जीवनसे कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये।

जात-पांत लोकतंत्रका बिलकुल उलटा है। यह मानवी समताका प्रतिवाद है। इसमें शूद्रकी अपमानजनक और कृत्रिम निकृष्टता मान ली जाती है। शूद्र तो सबको अपनेसे श्रेष्ठ समझता है और दूसरे लोग उसे नीच समझते हैं। वह गर्दन सीधी खड़ी करके नहीं चल सकता। वह अपनेको दूसरे मनुष्योंके बराबर समझनेमें असमर्थ हो जाता है। जातिभेद कहता है पतितो अपि द्विजः श्रेष्ठो न च शूद्रो जितेन्द्रियः। अर्थात् पतित द्विज श्रेष्ठ है न कि जितेन्द्रिय शूद्र। इसलिये जो स्वराज्य जात-पांतको नहीं मिटाता जो वर्ण-व्यवस्थाको बनाये रखता है, वह सब मनुष्योंकी स्वतंत्रता नहीं, थोड़े से उच्च वर्णोंके लोगोंका शासन मात्र है। वह शूद्रका अपना राज्य नहीं। उसके लिये तो प्रभुओंका परिवर्तन-मात्र है। अङ्गरेजके स्थानमें अब वह उच्चवर्णके लोगोंका दास हो जाता है। वह स्वतंत्रता का उपभोग नहीं कर सकता। उदयस्थान राजपूतस्थान, कहारस्थान, झारखण्डस्थान आदि की मांग और पाकिस्तानकी सृष्टि सब जात पांतका ही दुष्परिणाम हैं। कांग्रेस हो या हिन्दू महासभा, कम्यूनिस्ट हों या सोशलिस्ट जो भी दल जातिभेदको मिटाना अपने कार्यक्रमका प्रधान अङ्ग नहीं बनाता वह भारतको कभी स्वतंत्र न रख सकेगा। यदि आप कुछ वर्ष और जीवित रहे तो आप देखेंगे कि या तो राष्ट्रीय सरकार जात पांतको मिटानेमें जात-पांत तोड़क मण्डलसे भी अधिक यत्नवान हो जायगी या जातिभेद इस कथित स्वराज्यका ही नाश कर डालेगा।

आधुनिक नारीकी मांग-परिवार नियंत्रण

लेखिका—श्रीमती माया गुप्ता बी० ए०

नारी स्वतन्त्रताकी बात सुनते-सुनते लोगोंके कान थक गये, पर इसका स्वरूप क्या है इसका स्पष्टीकरण बहुत कम देखनेमें आता है। कुछ लेखोंमें तो लेखिकायें पुरुषको गालियां देनेमें ही अपनी इति कर्तव्यता समझती हैं, कुछमें एक काल्पनिक जगतका चित्र खींचा जाता है, पर असली बात पर बहुत कम लेखिकायें आती हैं। बात यह है कि असली समस्याका उद्‌घाटन बिलकुल रोचक नहीं है। उस पर विवेचन या लिखना कुछ सुन्दर नहीं है।

मैं इस लेखमें एक बहुत ही छोटी-सी समस्याकी ओर ध्यान दिलानेका प्रयत्न करूंगी। यों तो वह छोटी है, पर स्त्रियों के सुखकी दृष्टिसे वह बहुत ही भारी है। लाखों स्त्रियां बराबर संतान धारण करने के कारण यह जान ही नहीं पातीं कि जीवनके आनन्द क्या हैं। उन विचारियोंने यह मान लिया है कि यही जगत का नियम है, और इसीको वे स्वाभाविक तथा प्राकृतिक समझती हैं।

भारतीयोंमें संतान-जन्मकी संख्या सबसे अधिक है, इसी प्रकार उनमें शिशु मृत्युकी संख्या भी सबसे अधिक है। वह युग गया जब इसे ईश्वरीय बात समझ कर स्त्रियां हाथ पर हाथ धर कर बैठी रहती थीं। ज्ञान-विज्ञानके प्रचारके साथ-साथ अब यह सबको मालूम हो चुका है कि यह बढ़ी हुई जन्म संख्या उतनी ईश्वरीय नहीं है जितना कि लोग उसे समझते थे।

गर्भवती स्त्रीको कितने असीम कष्ट झेलने पड़ते हैं, इसका कोई अंदाजा साधारण पुरुषोंको नहीं है। अवश्य जो स्त्रियां इस कष्टको स्वाभाविक समझती हैं, उन्हें शायद यह कष्ट उतना अधिक नहीं मालूम होता, पर वर्तमान युगमें इस सम्बन्धमें बेखबर रहना असम्भव है। सब कुछ जानबूझ कर आंखों पर पट्टी तो नहीं बांधी जाती। फिर यदि यह त्याग किसी अच्छे उद्देश्यसे या आनेवाली पीढ़ियोंके लिये होता तो कोई बात नहीं थी, पर यहां तो जैसा कि मैं बता चुकी आठ-दस महीने बच्चेको गर्भमें धारण करो, उसके लिये इस युगमें हर प्रकारका त्याग करो, फिर सब प्रकारके खर्च करो, फिर भी वह साल दो सालके अन्दर ही मर कर बीसियों रात जगवा कर अशेष दुःख देकर चल बसेगा।

यही ७५ फी सदी बच्चोंके मामलेमें होता है। इतनी योजना हीनता है कि बीसियों वर्षसे ऐसा होता चला आ रहा है, पर किसीके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। कुछ लोग तो यों ही लेक्चर झाड़ कर रह जाते हैं, कुछ लोग ऐसे उपदेश देते हैं, जिनसे इस समस्यासे कोई ताल्लुक नहीं। असली मुद्दापर कोई नहीं आता।

फिर भी समस्या बहुत कठिन नहीं है। यदि जरा भी ठण्डे दिमागसे सोचा जाय, तो समाधान बहुत आसान ज्ञात होगा। पर यहां तो कुछ मामलोंमें खुल कर बातें करना ही मना है। यह एक आसान सी बात है कि जन्म-संख्या अधिक होनेके ही कारण शिशुमृत्युकी संख्या अधिक है, पर इसे कोई नहीं कहेगा। और यदि कोई कहेगा भी तो इस पर यह असम्भव मुलम्मा चढ़ा कर कहेगा कि ब्रह्मचर्य रखो। कहना न होगा कि इस प्रकारके मुलम्मेसे चीजकी वास्तविकता मारी जाती है। वास्तविकता तो तब आये जब कोई वास्तविक बात कही जायें।

असली समाधान तो वही हो सकता है जो कार्यकरी होनेके साथ ही साथ व्यवहारिक हो। यदि समाधान बहुत ऊंचे आदर्शको ले कर चला, पर उसमें व्यवहारिकता नहीं हुई, तो वह बिल्कुल बेकार है। विवाहकेअन्दर भी ब्रह्मचर्य और संयमकी गुंजाइश है। सच तो यह है कि त्यागके बिना भोग जल्दी ही नीरस और स्वाधीन हो जाता है। भोजनकी आवश्यकता और उपयोगिता समझनेके लिये कभी कभी उपवास करना भी जरूरी है। पर इस प्रकारके ब्रह्मचर्यसे या संयमसे समस्याका समाधान नहीं होता।

इसी कारण जन्मनिरोधकी आवश्यकता है। स्त्रियोंके जीवनको सुखी करनेके लिये जन्मनिरोधको अपनानेकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। बहुतसे लोग इसका सही अर्थ न समझ पाकर इससे घबड़ाते हैं। इस लेखमें मैं इसके ब्यौरेमें जाना नहीं चाहती, पर इस प्रक्रियामें कहीं भी जीव हत्या या भ्रूण हत्या नहीं है, इतना ही मैं इस लेखके उद्देश्यके लिये काफी समझती हूं। इस प्रक्रियामें जीवनको नष्ट नहीं किया जाता, बल्कि जीवनको बनने ही नहीं दिया जाता है।

यह कहा जा सकता है कि जन्मनिरोधका सम्बन्ध सारे सामाजिक ताने बाने से है, इसे जबर्दस्ती स्त्रियोंकी समस्यासे नत्थी कर देना गलत है। पर मैं इस लेखमें यही दिखलाने वाली हूं कि जन्म-निरोध विशेष कर स्त्रियोंकी आवश्यकता है।

पहले ही मैं इस बातकी तरफ इशारा कर चुकी हूं कि गर्भवती अवस्थामें स्त्रियों को अशेष कष्टोंका सामना करना पड़ता है। इन कष्टोंको हम बराबर अपनी आंखके सामने देखती हैं, पर स्वाभाविक

समझनेके कारण हमारा ध्यान उन पर नहीं जाता। जरा ध्यानसे देखने पर ज्ञात होगा कि इन दिनों स्त्रीको जिस प्रकार मतली आती हैं, उतना ही उसके सारे जीवनको नष्ट कर देनेके लिये यथेष्ट हैं। न मालूम क्या बात है कि चिकित्सा विज्ञानने इस विषय पर कुछ आविष्कार ही नहीं किये। यह कहना तो हास्यास्पद होगा कि विद्वानोंने इस सम्बन्धमें पक्षपात किया है, पर वस्तुस्थिति यह है कि १०० वर्ष पहले एक गर्भवती स्त्रीके कष्ट जितने थें अब भी उतने ही हैं। मैं यहां पर प्रसव कालीन कष्टको नहीं गिन रही हूं। उसमें तो बहुत कुछ कमी हुई है।

बच्चा आठ या नौ महीने तक गर्भमें रहता है। उस बीचमें मांके लिये यह न करो, वह न करो सैकड़ों नियमोंका पालन करना पड़ता है। इसके बाद भी बहुत दिनों तक खानेपीनेमें संयम रखना पड़ता है। गर्भवती स्त्री तथा बहुत छोटे बच्चेकी माताके लिये सफर भी मना है। दूसरे शब्दोंमें उसका साधारण जीवन रह नहीं जाता।

अब कल्पना कीजिये कि बहुत-सी मातायें ऐसी हैं जो सोलह सोलह संतानों की जननी बन चुकी है, इसका अर्थ यह हुआ कि वह अपने यौवनके सोलह साल अशेष कष्टमें गंवा चुकी हैं। आठ बच्चों की मां तो बहुत स्त्रियां हैं। पहलेही मैं बता चुकी कि यदि ये सब बच्चे जीवित रह जाते तो इस बातकी तसल्ली होती कि जो कष्ट झेला गया, वह व्यर्थ नहीं गया, पर इनमेंसे बहुत थोड़ेसे बच्चे जीवित रहते हैं। इस प्रकार यह सारा कष्ट व्यर्थ जाता है।

इसमें विशेष कर नारीको ही कष्ट इस कारण मिलता हैं कि वही गर्भ धारण करती हैं। यदि इस सम्बन्धमें योजनात्मक तरीकेसे कुछ काम किया जाता तो इसमें सन्देह नहीं कि हजारों स्त्रियां बहुत से कष्टोंसे बच सकती थीं। और केवल कष्टका ही प्रश्न नहीं है, सैकड़ों स्त्रियां तो प्रसवके समय या उसके तुरन्त बाद मर जातीं हैं। जो इन संग्रामोंमें अर्थात

रोग, गरीबी, भूख आदिसे बच भी जाती हैं, वे अक्सर जीवनके सुखोंके लिये अयोग्य हो जाती हैं।

यह तो केवल मांकी दृष्टिसे हुआ। बच्चेकी दृष्टिसे देखा जाय तो उसकी हालत इससे कम खराब नहीं होती। आखिर शरीरके कुछ नियम हैं, तथा उसके सहनकी कुछ सीमायें हैं। जब एक शरीरसे बारबार भयंकर कष्ट झेलने के लिये कहा जायगा, तो एक तो वह शरीर टूट जायगा और दूसरा वह जो काम करेगा, उसकी अच्छाई क्रमशः कम होती जायगी। बारबार गर्भधारणसे केवल माताके ही स्वास्थ्य पर असर पड़ता हो ऐसी बात नहीं, इस प्रकार जो बच्चे पैदा होते हैं वे भी रोगी, अल्पजीवी तथा क्षीणवीर्य होते हैं। ऐसी संतानें किसी भी जातिके लिये गौरवकी बात नहीं हो सकतीं। ऐसी प्रजासे कोई देश बड़ा नहीं हो सकता। ऐसे लोग यदि जीवित भी रहे तो उनकी सारी कर्म शक्तिका एक बड़ा भारी हिस्सा रोगोंसे लड़नेमें ही खर्च हो जाता है।

इसीलिये यह केवल स्त्रीके स्वार्थ के लियेही नहीं, भविष्यकीपीढ़ियोंके हकमें भी यह अच्छा होगा कि जन्म पर नियन्त्रण किया जाय। कभी मनुष्य जाति वृष्टिपातको एक दैवी शक्ति समझती थी,

भविष्य पीढ़ियोंकी भलाई है, यदि सदाचारका अर्थ अधिकतर सुखी, समर्थ, स्वाभिमानी संतानोंकी एक जाति उत्पन्न करना है, तब तो सदाचारका तकाजा यह है कि जन्म नियन्त्रणका घर घरमें प्रचार हो। पर यदि सदाचारका अर्थ लकीरकी फकीरी, गुलामी, दुःख तथा गतानुगतिकताकी वृद्धि है तब तो सदाचार अवश्य इसका निरोध करेगा।

और उस समय चूंकि वह घर बनाना नहीं जानती थी, इसलिये वह वृष्टिको सहन करती थी। उसी प्रकार स्त्रियोंने अबतक संतान जन्मको अर्थात अवांछित संख्यामें संतान जन्मको एक दैवी घटना समझ रखा था, पर अब आधुनिक स्त्रीको यह ज्ञात हो चुका है कि संतान जन्म पर नियन्त्रण सम्भव है, तथा अनर्थक दुःख तथा कष्टसे बचना सम्भव है। तभी वह अब आगे व्यर्थका कष्ट उठानेके लिये तैयार नहीं है।

हमने जो कुछ लिखा उससे यह प्रमाणित हो गया कि इस क्षेत्रमें सदाचार किस तरफ है। यदि सदाचारसे मतलब सबके सुखसे है, यदि सदाचारका अर्थ

यूरोप तथा अन्य पाश्चात्य देशोंमें प्रजाकी संख्या बराबर घटती जा रही है और कुछ लोगोंने हिसाब लगाकर दिखलाया है कि यदि इसी अनुपातसे लोग

(शेष २८वें पृष्ठ पर)

भारतके आदिवासी

—:—

लेखक—वेरियर एलविन

(प्रस्तुत लेखके लेखक गत १५ वर्षों से आदिवासियोंके बीचमें रहते हैं और उन्होंने गोंड जातिकी एक महिलासे विवाह भी कर लिया है। इस लेखमें उन्होंने आदिवासियोंकी वर्तमान स्थितिपर प्रकाश डाला है। और राष्ट्रीय सरकारके सामने उनके सम्बंधमें रक्षात्मक कार्यवाही करनेका सुझाव रखा है।)

प्रत्येक राष्ट्रमें उसके पहाड़ों पर निवास करनेवाले लोग राष्ट्र-शरीरके प्रमुख अवयव या रीढ़के समान है। वे पहाड़ी इमानदार तथा समतल भूमिवाले प्रान्तोंके निवासियोंकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होते हैं। हम लोगोंने भारतमें इन पहाड़ियोंको जो कि अधिकांशतः आदिवासी कहलाते हैं, उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा है एवं अब भी देखते हैं। किन्तु जिस किसीने इन पहाड़ियोंके सादगी पूर्ण एवं आकर्षक जीवनका परिचय प्राप्त किया है वह उन्हें प्रेम तथा श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता है।

आदिवासी कौन है! इस सम्बन्धमें कुछ दिनों पूर्व एक जर्मन विद्वान वरनवान इक्सेटेडने भारतीयोंको तीन भागोंमें विभक्त किया। (१) वेद्दीद या अत्यन्त प्राचीन (२) मिलानिद या काले रंगके लोग और (३) इण्डिड या नये लोग।

वेद्दीद—यह नाम लंकाके प्राचीन बन्दके आधार पर लिया जाता है। अधिकांश आदिवासी इन्हीं वेद्दीद और मिलानिद श्रेणीके ही हैं। इण्डिड श्रेणीके मनुष्यसे इनका काफी पार्थक्य है। उक्त जर्मन विद्वानके अनुसार इस जातिके लोगोंका रूपरंग कथवोंसा होता है। वेद्दीद बिलकुल काले होते हैं किन्तु इन्हींके उपभेद गोंड, कोंड और उरांव आदि कुछ जातियोंके लोग डीलडौलमें बड़े और साफ रंगके होते है। मिलानिदोंकी श्रेणीमें संथाल और कोल जातिके मनुष्य हैं।

गुहाका सिद्धांत—

उपर्युक्त जर्मन विद्वान द्वारा किया गया यह विभाजन सर्वमान्य नहीं है। विशेषतया डाक्टर बी० एस० गुहा, जो विश्वविख्यात भारतीय पुरातत्व वेत्ता है, भारतीयोंको सात विभागोंमें बांटते हैं। साथही दक्षिणी भारत तथा लंका एवं आस्ट्रेलियाके आदिवासियोंको एकही श्रेणीमें बतलाते हैं।

हबशी जाति—

इस जातिका रूपरङ्ग जो अण्डमन और मलायाके निवासियोंमें पाया जाता है, बहुतसे भारतीयोंसे मिलता जुलता है। श्री गुहाके कथनानुसार इस श्रेणीके लोगसबसे प्राचीन हैऔर उनके अलावा एक मंगोलियन जातिके आदिवासी हैं। जो आसाम, पूर्वी बंगाल तथा कुछ मध्यभारतमें भी पाये जाते।

विभिन्न वैचित्र्य—

ये आदिवासी मिल कर आधुनिक भारतमें अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। यद्यपि उनके रस्मरिवाज भिन्न भिन्न है, ये विभिन्न अंचलोंमें फैले हुए हैं, फिर भी इनमें आपसमें बहुत कुछ समानता है। ये लोग अपनी जातिमें शादी विवाह करते हैं तथा बहुतसी प्राचीन प्रथाओंके अनुगामी हैं। इन आदिवासियोंसे जहां एक ओर आसामकी सुविख्यात नागा जातिसे हम परिचित हैं वहां तिब्बतकी सीमाओं पर बसनेवाले आदिवासियोंके नामतक हम लोग नहीं जानते हैं। ऐसा बतलाया जाता है कि आसामकी खासी जाति भारतकी सभी पहाड़ी जातियोंमें अग्रणी हैं।

बिहार और उड़ीसामें—

बिहार तथा बंगालके कुछ भागोंमें संथाली लोग रहते हैं। इन लोगोंमें बहुत शिक्षित हैं और भविष्यमें इन लोगोंसे बहुत कुछ उम्मीद की जाती है। छोटा नागपुरके मुण्डा उरांव, होस और खारिया लोगोंने सभ्यता सीखी है और सेना तथा जमशेदपुरके कारखानोंमें काम कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। उड़ीसाके राज्योंमें भी भुइया, भुंजी कोण्डा (जो पहलेके मनुष्यभक्षी बतलाये जाते हैंलेकिन अब सभ्य हो गये हैं) सावरा (इस जातिकी शवरी थी जिसका वर्णन रामायणमें रामचन्द्रजी को बेर खिलानेके प्रसंगमें आया है) जुआंग तथा गोड्बा जातिके आदिवासी है। मध्य प्रांतकी गोंड जातिके नाम परही गोंडवाना शहर का नाम रखा गया है। इसके अलावा भील पश्चिमी भारतकी एक सुविख्यात जाति है। साथही हालही में एक वार्ली जातिका पता चला है जिसने अत्याचारी जमीदारों तथा ठीकेदारोंके विरुद्ध बगावत कर रखी है तथा बम्बई सरकार जिनकी सहायताकी व्यवस्था कर रही है।

दक्षिणकी जातियां—

दक्षिणी भारतमें सबसे प्राचीन जातिके आदिवासी रहते हैं। कार्डेमम पहाड़ी से लेकर नीलगिरि, पूर्वी मैसूरके जंगलोंमें कुरुम्बट, कांजीकर इसलर याण्डी, नाम के विभिन्न जातियोंके आदिवासी रहते हैं। उन लोगोंमें अभी तक विचित्र विचित्र प्रथाएं प्रचलित है। इस छोटेसे लेखमें उनके जीवन पर प्रकाश डालना असम्भव है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि कुछ आदिवासी अब शिक्षित एवं समृद्धिशाली हो रहे हैं। साथ ही कितने अभी भी पत्तियोंकी झोपड़ियोंमें चिथड़े पहन कर रहतेहैं। हर जातिमें अपना एक

विशेष सांस्कृतिक केन्द्र है और इसीके आधार पर जीवन प्रचलित होता है। उदाहरणार्थ नागा जाति शिकारी है और उस जातिके लोग इस कलामें विशेष दक्षता प्राप्त करते हैं। मुड़िया लोग अपनी संतानोंको गृह रक्षा एवं मनोविनोदकी शिक्षा देते हैं।

भ्रान्तधारणाएं—

जो लोग आदिवासियोंसे परिचित नहीं है। उनको साधारण तौर पर यह विश्वास है कि सभी आदिवासी अन्य विश्वासी आलसी, वेवकूफ तथा मांस मदिरा सेवी होते हैं। और वास्तवमें कितने गंदे रहते हैं, मदिरापीते हैं, कदाचित नरबलिभी चढ़ाते हैं परन्तुअधिकांश भारतीय पहाड़ी मनुष्योंके बारेमें कहा जा सकता है कि वे सभ्यतासे रहते हैं और अन्य गुणोंके अलावा अन्ध विश्वासका सर्वथा अभाव रहता है।

मनोविनोदकी कला—

आदिवासियोंने मनोविनोदकी कला में भी काफी उन्नति की है। नागा तथा मुडियोंका ताण्डव नृत्य एवं परिधान और उनके मधुर गानोंको देखने तथा सुननेका सौभाग्य जिन्हें कभी प्राप्त हुआ है वे उसे कभी भूल नहीं सकते हैं उत्तम श्रेणीके आदिवासी साम्प्रदायिक जीवन बिताते हैं। उनमें गांव या जनताको व्यक्तिसे अधिक महत्व दिया जाता है। कितनी जातियेंमें तो इस तरहका प्राचीन वैधानिक अनुशासन चला आ रह है कि वह ग्राम पंचायतके लिये अनुसरणीय हो सकता है।

स्त्रियोंकी प्रतिष्ठा—

आदिवासियोंका गृहानुराग भी उल्लेखनीय है। व्यभिचारका वहां नाम नहीं, कदाचित हो भी जाय तो वह भयानक समझा जाता है। तलाक प्रथा यद्यपि प्रचलित है लेकिन तलाक देते कम देख जाते हैं। और सबसे विशेष बात यह है कि इनमें वेश्या वृत्ति या अप्राकृतिक व्यभिचारका नाम निशान तक नहीं है। स्त्रियोंका सम्मानपूर्ण स्थान समाजमें है। देहातोंमें खेतों, जंगलों आदि सर्वत्र वे स्वतन्त्र रुपसे जा सकती है। अपने स्वामीके काममें हाथ बटाती ह। साधारणताय बड़ी उम्रमें विवाह होते हैं। इन लोगोंमें भारतीय वैधव्यका प्रचलन नहीं है। पतिके मरनेपर ये पुनर्विवाह कर सकती हैं। कितने ही समाजोंमें तो स्त्रियोंको उत्तराधिकार भी प्राप्य है। इनमें काव्यरुचि, वाक् चातुरी तथा विनोद कलाके सभी स्त्रियोचित गुण रहते हैं। ये पति परायणा एवं सन्तानके लालन पालनमें दक्ष होती है।

विचार स्वातंत्र्य—

आदिवासी बड़े उन्मुक्त स्वभावके होते हैं। वे अपनेको ईश्वर निर्मित सर्वप्रथम मानव जाति मानते हैं और पृथ्वी परकी किसी भी जातिका मुकाबला करनेका दावा रखते हैं और इस तरह वे अपनेको सच्चा स्वतंत्र समझते हैं। परन्तु कानूनके व्यवधानने इन्हें स्वच्छंद रुपसे जंगलोंमें नाचने, शिकार खेलने एवं उत्सव मनानेसे रोका है। फिर भी इनको उन्मुक्त प्राकृतिक सौन्दर्य एकान्त शैलवास एवं विश्वस्तमैत्री जनित आनन्दसे कोइ भी वंचित नहीं कर सकता।

पार्थक्य नहीं—

अब प्रश्न यह हैं कि इन आदिवासियों के साथ हमारा क्या सम्पर्क होना चाहिये ? क्या उन्हें जिनको शिक्षित कर भविष्यमें बहुतसी आशा की जा सकती हैं इसी तरह अलग उपेक्षित अवस्थामें छोड़ दिया जाय। परन्तु ऐसा करना तो आजके युगमें असम्भव और अवांछनीय है। अतः इस वृहद् जनसमुदायको जो हिन्दू समाजका ही एक अंग है, यथा शीघ्र सुशिक्षितकर आधुनिक भारतीय जीवनके मुख्य स्रोतके साथ मिलाया जा सकता है।

इस सम्बन्धमें यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इनमेंसे कितनी ही ऐसी जातियां हैं जो अभी संकटमें पड़ी हुई हैं और अगर ये इसी तरह उपेक्षितावस्थामें छोड़ दी जाती हैं तो इनकी स्थिति अफ्रीका और मिलनेशियाके आदिवासियोंकी तरह हो जायगी।

अब हमें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय सरकार अन्य व्यक्तियोंके समान आदिवासियोंकी जमीनोंकी भी रक्षा करेगी। उन्हें जमीदार, महाजन तथा अन्य लोगोंके चंगुलसे जो इनकी संस्कृतिमें बाधक हैं, छुड़ानेका सर्वथा प्रयत्न करेगी। एक बात और यह है कि अब देशमें एकताकी महती आवश्यकता है। अल्पसंख्यक नामकी कोई चीज रहना देशके लिये कलंक है, अतः सबोंका एकता बद्ध होकर लक्ष्य की ओर अग्रसर होना ही कर्त्तव्य है। पृथक पृथक रहनेसे फूटकी नींव मजबूत हो जायगी और इसीपर पृथक निर्वाचन पृथक प्रतिनिधित्व आदिका आविर्भाव होगा। अतः पुरानी शासन पद्धतिके साथ साथ इस पृथक अंचलके रूपका भी अन्त होना चाहिये।

सावधानीकी आवश्यकता—

अन्तमें इस बातकी ओर ध्यान देना आवश्यक है कि हमें इन जंगली कमजोर जातियोंके साथ पूरी सावधानीसे बर्ताव करना चाहिये। हमलोग इन्हें सभ्यताका पाठ तभी पढ़ावें जब कि इन्हें वाह्य आडम्बर नहीं बल्कि सच्ची सभ्यता दे सकें इनको शिक्षित करनेके लिये सिद्धहस्त शिक्षककी आवश्यकता है। इन लोगोंकी रीति रिवाजमें तभी हस्तक्षेप होना चाहिये जब कि इनको उससे कोई विशेष बढ़िया चीज मिले।

कहनेका सारांश यह कि ये किसी महत्वपूर्ण चीजकी तरह सुरक्षित रखे जांय और इन्हें सर्वोत्कृष्ट सभ्यताका पाठ पढ़ाया जाय। इनसे भी भविष्यमें अच्छी उम्मीद की जा सकती हैं। इनके भी भविष्य उज्ज्वल दीख पड़ते हैं।

चिड़ियाघरमें जगह खाली है

लेखक—श्री विनायक नानेकर

"हेयरकटिंग सेलून खोलो"

"नौजवान कहां चले ?"

"कहीं नहीं, ऐसेही इधर-उधर।"

"क्या कर रहे हो ?"

"कुछ नहीं, ऐसेही कुछ।"

क्या जवाब है ? जैसे इनके लिये दुनियामें कोई काम ही नहीं है। जब काम नहीं है तो पैदा क्यों हुए ? पृथ्वी पर वही जन्म लेता है जिसे कोई कार्य करना है। मगर मत्स्यकी तरहसे पेटभरना और जबरदस्तकी तरह व्यवहार करना तो जानवरोंको भी आता है। जब तुम्हें बिना किसी उद्देश्यके कोई काम करना है यानी बिना मंजिलके यात्रीकी तरह भटकना है तो सीधा जंगलका रास्ता क्यों नहीं पकड़ते ? वहां कमसे कम कोई तुमसे ऐसे टेढ़े सवाल नहीं करेगा। सर पर जंगल बढ़ानेसे न कोई साधु होता है न कोई कवि, उसी तरह हजामको तरह दिनमें दो बार दाढ़ी मूंछ रगड़नेसे न उम्र घटती है न चमड़े।। रंग लता है। यदि इस तरह हजामपट्टी ही पसन्द है तो एक 'हेयरकटिंग सेलून' क्यों नहीं खोल देते ? धन्धेमें कभी घाटा नहीं होता।

*   *

"लँहगा और छाती सम्हालो"

"जवान तू कहां चला ?" सिनेमा देखने, सिगरेट पीने या होटलमें चाय पीने ? मिली उसकी सायकल, रास्तेमें पड़े वह 'लाज' नज़रमें पड़े वह लड़की और जोरसे चिल्लाये। उस लीडरके पीछे तू पड़ा रहता है। यह क्या सनक सवार हुई है तुझ ? भाई, एकाध दुग्धालय या अखाड़ेका रास्ता पकड़ अभी तेरी उम्र मजदूरों का खून, चाय पीनेकी नहीं दूध पीनेकी है। अपनी ओर जरा गौर कर। जरा आयनेमें अपना चेहरा देख। उस पर कितनी खाइयां और पहाड़ बने हुए हैं। हाथ कङ्गनको आरसी क्या। यदि रास्तेमें तुझे किसीने दम बताया तो तू गम खा लेता है और अपना ४१ इञ्ची लेहंगा छाप पाजामा और २१ इञ्ची कंकाल रूपी छाती छिपाकर तू बगले झांकने लगता है। चाय पीकर क्या चाय-पत्ती का मजदूर बनना है ?

*   *

राजनीतिका बोझ क्यों

'ऐं ! ये लम्बे-लम्बे डग भरते हुए कहां चले ? सभा में ? अभीसे राजनीति का बोझ क्यों ढोना चाहते हो ? व्यापारी जैसा मौका देखता है वैसी चीजोंका व्यापार करता है, उसी तरह तू राजनीतिका बाजार गर्म देखकर राजनीतिज्ञ बनने चला है ? पर तूने सफरके सामानका क्या बन्दोबस्त किया है ? यदि मगज और जेब खाली हैं तो औंधे मुंह गिरोगे और कोई कुत्ता भी तुझे नहीं पूछने का। राजनीति तुम नौवजवानों का क्षेत्र नहीं है। वह सफेद बाल वाले 'रिटायर्ड' लोगोंका अड्डा है। तेरी उम्र अभी दूध पीने और स्कूल जाकर तैयार होनेकी है। दूध पीकर मांके दूधकी लाज रखनेकी फिक्र करो।

*   *

'जवाहर का बाप मोती था तेरा बाप ?'

क्या कहा ? 'पिताजीने कहा है कि जवाहरलाल सरीखे प्रतिभावान बनो'—ये तो ठीक ही है मगर तेरी अकल कैसे मारी गयी है ? यह कैसे भूल गये कि जवाहरका बाप मोतीलाल था। तेरे बापके पास मोतीलालके कौनसे गुण हैं और कितना खजाना है ? जवान, बिना अक़ल के नकल करनेकी बेवकूफी छोड़ दो। ऐसे काम नहीं बनता। यदि काम करना है, प्रतिभावान बनना है तो कबीर तो भी बननेकाका प्रयत्न करो या कुबेर बनने की तरकीब सोचो। इस संसारमें साधु और सम्पत्तिको ही ऊंचा स्थान प्राप्त है।

*   *

'मोगैंजी माल'

कबीर बनना तुम्हारे लिये टेढी खीर है क्यों कि उसमें त्याग की आवश्यकता है और त्याग करनेको तुम्हारा अपना है क्या तुम्हारे पास ? 'सूट' उधारी सूरत भी सुफेदीसे रङ्गी हुई, जेबमें छः आने वैसे वह भी उधार लिये हुए, विचार भी उधारी 'हेट' देखो तो उसका तेलिया रङ्ग छिपाने के लिये जो 'हेट कवर' चढ़ाया है वह भी उधारी है, क्यों कि बरसात निकल चुकी है इससे उसे कोई उपयोगमें नहीं लाता। चाय पीनेकी लहर आती है तो दोस्तोंके चाय पीनेके वक्त पर तुम हाजिरी देते हो। याने तुम 'सेंट परसेंट' 'मोगैंजी माल' हो। चाय का सिङ्गल उड़ाना, कमरेमें एक कम्बल और एक टम्बलसे काम निकालना और रास्ते पर चलते वक्त अमङ्गल शब्दों का उच्चारण करना यही तुम्हारा फैशन है।

*   *

'कुबेरकी कर मात'

आजकी परिस्थिति पर गौर करो। यदि प्राप्त करनेको विद्या नहीं, पासमें पैसा नहीं, शरीरमें शक्ति नहीं और मस्तिष्कमें युक्ति नहीं तो क्या भूसा खाकर भक्ति करोगे ? जमाना ऐसा विकट है कि

इस समय यदि साक्षात लक्ष्मी भी इस पृथ्वी पर आये तो उसे भी नौकरी बजानी पड़ेगी याने रोटियां बेलनी पड़ेंगी। यदि सिद्ध विनायक गणेशजी भी आये तो म्युनिसिपैलिटीके थर्ड क्लास कारकुनसे अच्छी नौकरी नहीं मिलने की। गौरक्षक प्रतिपालक श्री कृष्ण भी आये तो बिना दाम खर्चे उन्हें पानीका दूध भी नहीं मिलनेका। रूद्र अवतार शङ्करजी भी आयें तो चार रुपये मन लकड़ी खरीदे बगैर धूनी नहीं मिलने की। यदि ब्रह्माजी भी आयें तो 'चाय-पानी' दिये बगैर टिकनेको जगह नहीं मिलनेकी। रति सरीखी सुन्दर स्त्री भी आये तो लड़केके बाप दहेजकी रकम बोले बगैर बाततक नहीं करनेको, यानी हर जगह पैसेकी कद्र है आज। पैसेके बगैर इस वक्त कोई गुजारा नहीं। इसलिये कुबेर बनो। पैसा कमाओ। फिर देखो चमत्कार। आपही आप प्रसिद्धि मिलने लगेगी। पैसा नहीं तो आखें लड़ाते लड़ाते आंखें फूट जायंगी फिर भी कोई कोयलेकी देवी भी तुम्हारी ओर आंख उठाकर नहीं देखेगी क्योंकि आज कोयलेका भी अच्छा खासा भाव है। परन्तु यदि तुम लक्ष्मीपुत्र हुए तो देखो मजा। दिन-भरमें कमसे कम एक दर्जन लड़कियोंके बाप तुम्हारे घरपर चक्कर काटते काटते जूते घिसेंगे। फिर तुम काने हुए तो भी चलेगा, कुरूप हुए तो भी चलेगा, तुम्हारे बाल सफेद हुए तो भी चल जायगा, तुम्हारा हंसना गधेकी तरह होगा तो भी चलेगा और यदि तुम्हारे लिये काला अक्षर भैंस बराबर होगा तो भी चल जायगा। इसलिये पैसा कमाओ फिर राजनीतिमें पड़ो, समाजमें उथल-पुथल करो, किसीको गाली दो मनमें जो आवे वह करो तुम्हारी ही तूती बोलती रहेगी। कोई तुम्हारे काममें दखल डालनेवाला नहीं। जिसे पहिले तुम्हारे नामसे उल्टी आती थी वही उल्टा तुम्हारे नामसे अपना पेट भरनेकी कोशिश करेगा। पहिले तुम्हें देखकर मुंह बनाते थे वे ही तुम्हारे दर्शनके लिये घण्टों टांग तोड़ेंगे और मुंहलगे बननेकी सार्टिफिकेट पेश करेंगे।

* *

'चिड़िया घरमें जगह खाली है—

भारतके भविष्यके आधार-स्तम्भ कहलानेवाले तुम युवक, परन्तु तुम्हारी हालत देखकर कौन तुम्हारे आधारकी प्रतीक्षा करेगा? तुम्हें अपना पेट भरना नहीं आता, अपनी एक बीबीकी इज्जत बचाना नहीं आता फिर तुम भारतमाताका उद्धार क्या करोगे, देशको सङ्कटसे कैसे उबारोगे? देशका सुधार करना कोई प्रेम करना या गोली खेलना तो है नहीं। वहां तो गोली खानी पड़ती है और यदि एक गोली खा गये तो धन्वंतरी वैद्यकी गोली भी फिर कोई फायदा नहीं पहुंचा सकती। इससे जो कुछ करो उसे तो भी ठीक तरहसे करो। धर्मवीर नहीं तो स्वातंत्रवीर बनो और यह भी नहीं तो प्रेमवीर बनो। जो भी बनो पूरा बनो मगर तुम्हारी हालत तो बारामाईसी खेतीकी तरह है। किसी एकके भी प्रति तुम वफादार नहीं हो। 'इसमें क्या क्या है? उसमें क्या है? मंदिरमें पत्थर है,छूआछूत ढकोसला है, धर्मवर्म कुछ नहीं धर्म बदलनेसे आत्मा नहीं बदलती, पैसेवाला होनेसे क्या होता है, दिल उदार होना चाहिये। पोथी-पूजापाठ सब दिखावटी है, स्नान संध्या सब नुमायश है। तीर्थयात्रा मेला है, भजन-कीर्तन सङ्गीतकी महफिल है। सिर मुंड़ानेसे कोई साधु नहीं बनता, सिन्दूर न लगानेसे कोई पति नहीं मर जाता—तुम्हारी अकल मारी गयी है—नकल करके तुम सफल होना चाहते हो—तुम्हारा जीवन निष्फल है। भिखारी बनो नहीं तो सरदारी तो भी कमाओ। इस तरहके जबानी हिसाबसे तो सिवाय बेकारी और नादारीके कुछ हाथ नहीं लगनेका। इस तरह त्रिशंकुकी भांति लटकते रहनेमें कोई मजा नहीं। बीच धारमें फंसी नांव डूब जाती है। जब इसमें कुछ नहीं है—उसमें कुछ नहीं है तो क्या सरपर जटा बढ़ाकर उसमें जुएं पालनेमें उपकार है? मुमताज शांति बुरका क्यों पहनती है, और वीणा कौनसे चित्रमें सुन्दर दिखायी देती है इसकी चर्चा करनेमें मुक्ति है? या 'अंखिया मिलाके जिया भरमाके' और 'मेरे जोबनाका देखो उभार' इन गाने-गानेमें भक्ति है—या नट-नटियोंके दर्शन करनेके लिये घण्टों भीड़में धक्के खानेमें उद्धार है? या 'चुंबन की आवश्यकता' 'स्त्रियोंकी सुन्दरता' वगैर विषयों पर मुंह बजानेमें। सुन्दर स्त्रीकी प्राप्ति होती है—या रास्ते पर आने जाने वाली स्त्री की मजाक उड़ानेसे प्रसिद्धि मिलती है?'—तुम्हें तो बम्बईके गटर या कलकत्तेके धापेमें रोज डुबकी लगानी चाहिये। देशकी ऐसी नाजुक हालतमें और ऐसी भयङ्कर मंहगाईमें ऐसे विचार कैसे घुसते हैं तुम्हारी गटर—खोपड़ी में। पढ़ेंगे तो गन्दे उपन्यास या काम शास्त्र, देखेंगे, तो स्त्रियोंके चित्र, खायेंगे तो स्त्रियोंके चप्पल, करेंगे तो जबानी दंगल, चलेंगे तो नटते—मुरकते, खेलेंगे तो 'पींग-पांग'—बस चिड़िया घरमें रखनेकी कसर है।

'मारग चलत जा गिर ताका नाहिं दोस'

'धन्धा कैसे करें पासमें पूंजी नहीं है?'

धन्धा करनेको पूंजी नहीं चाहिये पुरुषार्थके भण्डारकी कुंजी चाहिये। बापके भरोसे दो-दो बीबियां बनाने वालोंसे धन्धा नहीं होता। ऐसी रोनी सूरत वालोंसे धन्धा नहीं होता। चलें हैं मैंदाने जङ्गमें और हाथमें बन्दूककी जगह चूड़ियां ले ली हैं। जितने धनेश्वर हैं उनकी जीवनियों पर गौर करो अधिकतः तो ज़ीवनके पहलूमें आधे पेट रहते थे। 'गिरते हैं शह सवार मैदाने जङ्गमें, वह तिफ्ल क्या करेंगे जो घुटनोंके बल चले!' चलने वाले ही मंजिल तक पहुंच पाते हैं, घर बैठे लोग पड़े-पड़े ही सड़ा करते हैं। जिन्दगीमें कुछ करो और मरो तो अच्छे कार्यके लिये मरो, छोकरीके लिये और गुण्डेबाजी करके मरनेसे लोगोंके दिलोंकी तहके बजाय गटरकी तहमें ही सुरक्षित जगह मिलेगी।

नटनी

लेखक— श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

"महाराज कवि और कलाकार बनाये नहीं जाते। वे तो स्वयं पैदा होते हैं। और जो सच्चे कलाकार होते हैं, वे किसीकी इच्छापर नहीं नाचते। आत्म-गौरवके लिये वे प्राण दे देते हैं" राजकवि विजयने भरे दरबारमें रूपनगरके सम्राट जयसिंहसे ये शब्द कहे।

महाराजकी भवें तनी! लोचनोंमें मदिरा जैसी लालिमा दौड़ गयी! दरबारमें सन्नाटा छा गया! सभासद महाराजाके रुखको देखकर राजकविको घृणा और उपेक्षाके भावसे देखने लगे। प्रधानामात्य झल्ला पड़े—"राजकवि सीमासे बाहर जा रहे हो। आज कलाकार भूखे मरते हैं।

"तुम महाराजका अपमान कर रहे हो"—सेनापति पृथ्वीसिंह गरजे! परिषद के एक सदस्य गंधर्वसिंहने प्रस्ताव रखा—"राजकविको दंड मिलना चाहिये!"। महामंत्री रामसिंहने प्रस्तावका समर्थन किया—"जिस रूपनगरके सम्राटने अनेक प्रान्तोंको जीतकर अपनी विजय-पताका दूर दूर तक फहराई, जिसके प्रासादोंके सम्मुख हाथी झूमते हैं! जिसने अनेक भूखे कलाकारोंको प्रश्रय दिया! शोक, उसीकी इच्छासे आज राजकवि कविता नहीं सुना सकते"! महाराजकी ओर मुखातिब होकर प्रधान मन्त्री बोले—'महाराज कविको कठोर दण्ड मिलना चाहिये! मेरे विचारसे इन्हें पदच्युत किया जाय!"

एक क्षणको मुक्ताभरणोंमें लिपटे महाराजके मुखमण्डलसे लालिमा दूर हो गयी! उन्होंने गम्भीर होकर कहा—"मंत्रीजी, जरा शान्त-चित्तसे विचार कीजिये। कविका अपराध इतना भयंकर नहीं है कि जिसके लिये उन्हें पदच्युत किया जाय! मेरे विचारसे उन्हें क्षमा किया जाय, क्योंकि उनका कथन वास्तवमें सच है। "राज्य परिषदकी ओर मुखातिब होकर उन्होंने कहा—"कहिये आप लोगोंका क्या मत है?"

महामन्त्री और परिषदके सदस्योंके हृदयोंपर महाराजकी महानता, उदारता एवं न्याय ज्योतिकी अमिट छाप पड़ गयी! वे विस्फारित नेत्रोंसे महाराजको देखने लगे। अचानक दरबारमें एक अनिन्द्य सुन्दरी नर्तकी 'नटनी" ने प्रवेश किया। श्याम वर्ण! ऊंचा-पूरा इकहरा शरीर! नयन-प्यालियोंमें यौवनका आसव छलक रहा था! जूड़ेमें खोंसे हुए बेले और गुलाबके पुष्प कभी घनमण्डलमें दामिनीकी भांति दमक उठते! उनकी भीनी भीनी मधुर सुरभिसे लोगोंके हृदय प्रदेशमें स्वप्नोंके अनेकों संसार निर्मित हो उठे! उभरा हुआ वक्ष! अंग प्रत्यंगमें एक अपूर्व सौष्ठव एवं चाञ्चल्य! महाराज उस सौन्दर्य-प्रतिमाको देख एक क्षणके लिये स्तम्भित रह गये! नटिनीने महाराजको अभिवादन करते हुए कहा—"महाराज मैं एक कलाको पुजारिन हूं!"

"क्या चाहती हो?"—महाराजने नटनीकी आंखोंमें आंखें डालते हुए कहा!

"अपनी सेवासे आपको सन्तुष्ट करना चाहती हूं।" नटनीने नयन बाण चला दिया!

"क्या तुम इस पर्वतके शिखरसे उस सड़क-पार पर्वतके शिखर तक रस्सेपर नाच सकती हो? प्रधान मन्त्रीने नटिनीको तावपर रखा!

'हां नाच सकती हूं, मगर एक शर्त पर!" नटनीने दृढ़तापूर्वक कहा!

"क्या शर्त है?"—सेनापतिने कहा!

"महाराज त्रिवाचा हारे, तो बताऊंगी!" नटनी बोली!

"क्या शर्त है तुम्हारी?"—महाराजने औत्सुक्यके भावको दबाते हुए कहा!

"महाराज पहले त्रिवाचा हारिये! कहीं आप ...!" नटनीने सतर्कतासे कहा!

"हम वचन देते हैं। तुम अपनी शर्तें कहो! पूरी की जायगी!" महाराज बोले

"तो महाराज मेरी कलाका मूल्य आपका आधा राज्य होगा!" नटिनी बोली!

"स्वीकार है।" महाराजने एक क्षण सोचकर कहा!

* * * *

और, देखते ही देखते बातमें शीश-महलके सन्निकट एक विशाल वृक्षकी पींड़से एक लम्बा मोटा रस्सा कस दिया गया। पश्चात महाराजके सेवकोंने रस्सेको राजपथकी दूसरी ओर ले जाकर हरितिमामय शैलशिखरके एक विशाल तरुवरके मोटे तनेसे कसकर तान दिया। नटनीको आधा राज्य मिलनेका समाचार विद्युत गतिसे सारे नगरमें फैल गया। जनता बरसाती नदीकी भांति आनन्दकी लहरोंमें 'कलकल' ध्वनि करती नटनीका नृत्य-कौशल देखने के लिये उमड़ पड़ी। महारानी सुनन्दाने ज्योंही यह संवाद सुना, तो उसके होश उड़ गये। वह सोचने लगी—"हे भगवान, यह कौनसा विपत्तिका पहाड़ सिर पर टूट पड़ा! क्या सच ही पथकी भिखारिनको आधा राज्य मिलेगा और महारानीकी प्रतिष्ठा धूलमें मिलेगी? रक्षा करो प्रभु मुझ अनाथनीकी? और भगवानने जैसे महारानीकी प्रार्थना शीघ्र सुन

ली। उसक हृदयमें जलती हुई ईर्षा की आग, प्रतिहिन्साकी ज्वाला बनकर फड़क उठी ! महारानीने एक पैनी कटार ली और वह जिस पड़से रस्सा बंधा था, उसीके अंक छिपकर बैठ गयी ! सारा जन-समुह सन्निकट भारी झुरमुटोंके बीच युक्ति नटनीका नृत्य-कौतुक देखनेके लिये उल्लासकी नदीमें प्रवाहित हो रहा था. परन्तु. महारानी सुनन्दा किसीके प्राणोंकी ग्राहक बनी बैठी थी !

अचानक नटनीके सेवकका ढोल बज उठा। उसने उच्च स्वरमें एक बुन्देलखंडी गीत गाया,—"कहां गये राजा अमान जो पन्ना खाली हो गये !" हथिया रोवें, घुड़ला रोवें, गौओंके कौन हवाल—जो पन्ना खाली हो गये !" गीतके गगन-भेदी स्वरसे सारा वायुमंडल मुखरित एवं गुंजित हो उठा ! तभी नटनी उछलकर रस्से पर चढ़ गयी ! वह रस्सेपर थिरक उठी ! उसके परोंमें घुंघरुओंकी "छूम छूम"—ध्वनि हुई और नट एकबार फिर जोरसे चिल्ला उठा—"कहां गये राज अमान !" गीतकी यही स्वर लहरी बार बार नटके मुखसे निकल रही थी ! बीच बीचमें वह "भलेरे" "भलेरे" शब्द जोरसे उच्चारित करके नटनीको रस्से पर सधीं रहनेका संकेत सा कर रहा था !

ढोल पिट रहा था और गीतकी वही स्वर लहरी वायुकी लहरोंमें गुंजायमान होकर विलीन हो रही थी ! कभी नीरव वनसे उसकी प्रतिध्वनि आकर लोगोंके कर्णरन्ध्रोंसे टकरा जाती थी ! नटनी अभी रस्से पर लगभग बीस हाथ चली होगी ! वह सोच रही थी—"अभी तो दो सौ हाथ और चलना है।" अचानक महारानीने लपककर कटारके एक ही वारसे रस्सा काट दिया ! कलाकी पुजारिन नटनी करीब दो सौ हाथकी ऊंचाई से धरती पर आ गिरी। सारा जन-समूह तथा महाराज चिल्लाये—"अरे, अरे, यह क्याहुआरस्सा किसने काटा !"

परन्तु अब वहां उत्तर देने वाला कोई न था ! महारानी महलोंमें थीं और, नटनीका शरीर एक काली दीर्घ काय चट्टानपर गिरकर क्षत-विक्षत हो चुका

था ! नटनी मर गयी, परन्तु उसका स्मारक आज भी गढ़पैरामें अजरामर खड़ा है और सुनन्दाकी काली करतूत पर दो अश्रु गिरा रहा है !

—(एक बुन्देलखंडी लोक कथा)

आधुनिक नारी

(२२वें पृष्ठका शेषांश)

अधिक मरते रहे और पैदा कम होते तो वे जातियां दूर भविष्यमें समाप्त हो जायंगी। इसीका हवाला देकर कुछ लोग यह कहते हैं कि यदि भारतमें जन्म नियन्त्रणका परिवर्तन हुआ तो यहां भी ऐसी ही हालत हो जायगी। ये लोग भूल जाते हैं कि पूंजीवादके कारण लोगोंकी परिस्थिति ऐसी है कि वे खुद ही अपनेको मंझधार में पाते हैं तो संतान की इच्छा क्या करें। संतानकी इच्छा एक स्वाभाविक इच्छा है, पर जिस समय परिस्थिति खराब होती है, उस समय स्वाभाविक रूपसे लोग इससे बचते हैं। इसका सबसे अच्छा प्रमाण रूस है। वहां किसीको यह खतरा नहीं है कि मैं बेकार रहूंगा, या भूखों मरूंगा। वहां जन्मनिरोधके उपाय सबके लिये सुलभ तथा सबको ज्ञात है, फिर भी बराबर यथेष्ट परिमाणमें संतान उत्पन्न होती रहती है। बहुत दिनों तक तो वहां एक हद तक गर्भपात करा लेना भी कानूनी था, पर बादको फासिष्टवादके उत्थानके कारण राष्ट्रको अधिक संतानकी आवश्यकता हुई, तब गर्भपात गैरकानूनी करार दिया गया। हांके राष्ट्रका यह कहना है कि यदि कोई दम्पत्ति संतान उत्पन्न नहीं करना चाहता, फिर भी किसी प्रकार गर्भ रह जाता है तो वह राष्ट्रके लिये इतना त्याग करे कि उस संतानको पैदा होते ही राष्ट्रको सौंप दे, राष्ट्र उसका सब खर्च बरदाश्त करेगा। जो बच्चे राष्ट्र द्वारा इस प्रकारसे पूर्ण रूप से ले भी नहीं लिये जाते, उनका भी अधिकतर खर्च सरकार ही उठाती है।

कुछ भी हो सभी दृष्टियोंसे देखने पर यह जरूरी है कि वर्तमान समयमें जिस प्रकार मरघटके लिये गर्भ धारणा किया जाता है, उसे जल्दीसे जल्दी रोका जाय। स्त्रियोंकी संस्थाओंको चाहिये कि केवल प्रस्तावोंका पास करना छोड़ कर कर्मक्षेत्रमें उतर पड़े और घर घरमें लोगोंको सब बातें बता कर परिस्थितिको स्पष्ट कर दें, और लोगोंको वैज्ञानिक उपायोंसे परिचित कर दें। दुःख है कि हिन्दीमें इस संबन्धमें अच्छी पुस्तकें हैं ही नहीं। जल्दीसे जल्दी इस ओर भी प्रयत्न आवश्यक है। आधुनिक नारीकी यह मांग है कि विज्ञानके सारे उपाय उसे ज्ञात हो और उसके सुख तथा भविष्यकी पीढ़ियोंके सुखके लिये उसका उपयोग किया जाय। इसीमें स्त्रियोंका कल्याण है।

हैदराबादमें क्या हो रहा है

लेखक—एक हैदराबादी

हैदराबाद राज्यसे इस समय जो भयावह समाचार प्राप्त हो रहे हैं, उनके सुननेसे कठोरसे कठोर हृदयका मनुष्य भी कंपित हुए विना नहीं रह सकता यहांपर गुंडाशाहीका सचित्र नमूना दृष्टि-गोचर होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तवमें शासक निज़ाम नहीं है, किन्तु मौ० कासिम रजवी, जो मज़लिस इत्तिहादुल मुसलमीनके अध्यक्ष हैं, वहांके सच-मुच कर्त्ताधर्ता बने बैठे हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो अबतक निज़ाम जो वस्तुतः बड़े समझदार व्यक्ति हैं, हिन्द-संघमें शामिल हो जाते। निज़ाम साहब अंध-श्रद्धाके कारण बेबस बने रियासतकी बागडोर मज़लिसके हाथमें सौंप कर स्वयं आराम से दिन बिता रहे हैं। निज़ाम साहबको क्या मालूम था कि उन्हींके रुपये और मेहरबानीसे पली हुई जमात, जिसको इत्तिहादुल मुसलमीन कहा जाता है, आज अपने मालिक हीसे बेइमानी कर, उसकी ताकत और सत्ताको पैरों तले रौंदनेमें नहीं हिचकिचाती। चुनाचे जब नवाब छतारीके विरुद्ध मज़लिसकी ओरसे प्रचार किया जा रहा था, तो निज़ामने एक 'फर-मान' निकालकर ऐसे विरोधी प्रचारकोंके खिलाफ कड़ी काररवाई करने और कड़ी सज़ा देनेका आदेश दिया था। परन्तु इस फरमानका मज़लिसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह बराबर राज्यके प्रत्येक मामलेमें निज़ामकी कुछ चलने नहीं देती। इस अंजुमनको प्रोत्साहन देनेका निज़ामका हेतु केवल इतना ही था कि यहांपर जो हिन्दू बहुसंख्यामें उपस्थित हैं, उनको कुचलनेके लिये गुंडे पैदा करें। आज हैदराबादमें यह स्थिति है कि निज़ाम केवल नाममात्रके लिये बादशाह है और इस अंजुमनकी शक्ति इस कदर बढ़ गयी है कि वहांका प्रत्येक मुसलमान कर्मचारी बड़े से लेकर छोटेतक इसके प्रभावमें हैं जो मज़लिसके आदेशकी पूर्तिमें अपनी जान की बाजी लगा सकता है। गैरमुसलमानों के लिये वहांपर रहना दूभर हो गया है। वहांके प्रेस और प्लेटफार्मपर कड़ी पाबंदी लगा दी गयी है। बाहरके पत्र स्टेटमें दाखिल नहीं हो सकते और किसी मनुष्य को हिम्मत नहीं कि वह किसी प्लेटफार्म परसे आज़ादीके साथ राजनीतिक विषयके सम्बन्धमें एक शब्दका भी उच्चारण कर सके। अगर कोई निडर होकर ऐसा साहस कर बैठे तो पुलिस और गुण्डोंके हाथों उसका घर लुटवा दिया जाता है और किसी न किसी अपराधमें उसको फांस दिया जाता है। सर मिरज़ा इस्मा-इल और नवाब छतारीने जो यहांके प्रधान मन्त्रीके पदपर रह चुके हैं, निज़ामको राय दी कि वह युनियनमें शामिल हो जायं, परन्तु इस रायका नतीजा यह हुआ कि सर मिरज़ाको कत्ल करनेकी धमकी दी गयी और नवाब छतारीपर हमला हुआ और बेचारेको दूसरी दफा अपनी मान व मर्यादाको खोना पड़ा। न केवल इतना ही किया गया, कि तु इनकी धृष्टता इतनी बढ़ गयी कि इन्होंने बातचीत करनेवाले डेलिगेशनके विरुद्ध ऐसा सङ्गठित मोर्चा बनाया कि निज़ामको मजबूर होकर उसको भङ्ग करना पड़ा। हिन्दू अस्त-व्यस्त भागे जा रहे हैं। डायरेक्ट एकशनका पहला आयात हैदराबाद के १५० मकानोंको अग्निके हवाले किया गया और कहा जाता है कि कई लाखकी सम्पत्ति लूट ली गयी और कई आदमी मौतके घाट उतारे गये। जुलसमें खुले आम यह नारे लगाये जा रहे थे कि निज़ाम अफीमची बन गया है, उससे हैदराबादकी रक्षा कदापि नहीं हो सकती। सत्ता हमें छीन लेना चाहिये। शाह उस्मान ज़िन्दाबादके बजाय शाह उसमान मुरदाबादबाद के नारे सुननेमें आये। नतीजा यह हुआ कि डेलीगेशन रुक गया और बातचीत करनेवाली कमेटी भङ्ग कर दी और नये सदस्योंको मज़लिस ने अपने मन-चाहा लोगोंको चुन लिया। यह है यहांका राजनीतिक हाल। इन तमाम बातोंसे कल्पनाकी जा सकती है कि इस अंजुमनके सामने न निज़ामकी कोई हैसियत है और न उनके वर्तमान कौंनसिलका कुछ प्रभाव।

सरदार पटेलकी चेतावनी

जबसे सरदार पटेलने जूनागढ़में हैदराबादकी इस गुंडेशाही के संबंधमें प्रभावशाली वक्तव्य दिया है उस समयसे स्थिति और भी खराब होती जा रही है। हिन्दू घबराकर सरहदके युनियनके प्रांतोंमें भागे जा रहे हैं। एक कानूनके द्वारा इन भागनेवालोंपर रोक लगा दी गयी है कि बिना परमिट कोई व्यक्ति स्टेटके बाहर नहीं जा सकता। इस तरह कायदा बनानेसे उनका दुहरा लाभ है। वह तो खुले आम हिन्दुओंकी स्टेटके बाहर जानेके लिये धमका रहे हैं, परन्तु इस तरह आर्डर निकालनेमें उनका यह फायदा हो रहा है कि जो भी हिन्दू बाहर जाना चाहता है उसको पुलिसमें दरखास्त देकर इजाजत निकालनी पड़ती है और इजाजत मिलनेमें कोई कठिनाई भी नहीं होती। भागनेवाला व्यक्ति अपने साथ जरूर कीमती चीजें और कुछ सम्पत्ति ले जाना चाहेगा। स्टेशनपर गुंडे उसकी तलाशी लेते हैं और उसको सिवाय शरीर परके कपड़ों और १० रुपयेसे कोई चीज ले जाने नहीं देते। स्त्रियोंपरसे जेव-रात उतार लिये जाते हैं। यहांतक कि नयी साड़ियां भी खींच ली जाती हैं। रेडियो, सिलाईकी मशीन आदि सब चीजें हस्तगत की जाती हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि यह सब काण्ड गवर्नमेंटके आदेशसे हो रहे हैं। परन्तु इनकी तरफसे

पुलिस चुपचाप मौन धारण कर लेती है। शिकायत करनेपर उसीको चार गालियां दी जाती हैं। पटेलके भाषणके बाद मजलिसने एक आदेश दिया है कि मुसलमान ज्यादासे ज्यादा संख्यामें होमगार्डसमें भरती हो जायं जिनकी संख्या एक लाख बतायी जाती है। मौलवी कासिम रजवी साहबके बयानके एक एक शब्दसे पता लग सकता है कि मंजलिस आयंदा क्या क्या करने वाली हैं। उसका पहला वाक्य ही बताता है कि अब सर जमीन दकन मैदान करबला बननेकी है। अब हर मुसलमानको हुसेन बनकर हक सदाकत व आजादीपर जान देकर रसूलके नवासे अलीके जिगर पोते, फातमाके लख्ते जिगर की तरह हयात दवा भी हासिल करना है। औलाद वालों तुम्हें अपने बच्चोंको यतीम बनाना है अपनी बेगमोंको बेवा बनवाना, बेटोंको दुल्हा बनवाकर खूनसे सने कपड़े रङ्गवाना है, अपनी बेटी बहुओंका सुहाग अपने हाथोंसे लुटवाना है और सब कुछ करके यजीद हिन्दकी गुलामीसे बचना और आजादी की मौत मरना है। दकनके नौजवानों-अब मैदान करबला दकनमें आ जावो और इन्सानियतको दाग जवां मरदी देकर तारीख आलम पर अपने खूनसे दूसरा सानिहा करबला लिख जावो........दकनके मुसलमानोंको अब सिर्फ हिन्दकी कूवत तखरीब आजमाना है और देखना है कि हिन्दुस्तान मारने से थकता है या मुसलमान मरने से। आगे चलकर मुसलमानान आलम, कायदे आजम और मुसलमानान पाकिस्तानसे दर्द भरे शब्दोंमें प्रार्थना की गयी है कि वे इनकी रक्षा करें यदि मारे जायं तो इसका बदला लें आदि। अन्तमें आदेश दिया गया है कि मुसलमान सरसे कफन बांध लें और मरनेके लिये तैयार हो जायं।

२८ नवम्बरके स्वतन्त्र भारतका यह समाचार है कि मजलिसकी ओरसे सभी हिन्दुओंके मकानोंको फूंकने तथा हैदराबाद राज्य पर जबर्दस्ती कब्जा कर लेनेका गुप्त आदेश दिया गया है। यह जो भारत सरकारसे एक वर्षका समय लिया गया है वह तो समय काटनेके लिये ही है, अन्यथा जब इनकी पूरी तरहसे तैयारी हो जायगी तो ये लोग युद्धकी घोषणा करनेमें संकोच नहीं करेंगे। चुनांचे २६ नवम्बरके 'पयाम' अखबारमें सदर

दिल्लीमें पटियाला नरेशके स्वागतका एक दृश्य

साहब कासिम रजवी फरमाते हैं 'यह जो माहदा हुआ है वह बिल्कुल आरजी है। यानी सिर्फ आठ माहके लिये होगा। असल और मुस्तकिल माहदा बादमें होगा। अब मुसलमान बेदार हुए हैं तो बेदार ही रहें। आपकी यही बेदारी आपको और आपकी आने वाली नसलोंको बचा सकती है। छात्रोंसे अपील करते हैं कि वे विद्याभ्यास छोड़ मरनेके लिये तैयार रहें। वे फरमाते हैं कि 'तुम्हारी तरफ मुल्क और कौमकी नजरें लगी हुई हैं क्यों कि कुछ करने और करके दिखाने का जमाना तुम्हारा ही है। तुम्हारे जोश और बलबलोंमें मुल्क और मुल्कके कमजोर बच्चे और औरतें पनाह लेना चाहती हैं। तुम इनके लिये अपनी जवानी को कुर्बान कर दो। रजाकारोंसे मुखातिब होकर उन्होंने कहा कि रजाकारों पर आराम, चैन और नींद हराम होना चाहिये।' आप उस वक्त चैन लें जब अपने मुल्कके बच्चों बूढ़ों और औरतोंके चैन व आरामका इत्तमिनान करलें वर्ना उस वक्त तक तुम पर आराम और चैन हराम है। रजवी जो मजलिसके अफसर हैं अपने बयानमें कहते हैं कि 'मिस्टर पटेलने हैदराबादको गुलाम बनानेकी मुमकिन कोशिश की, इन्हें मालूम हो गया कि वे किसी कीमत पर भी इसको गुलाम नहीं बना सकते। पटेलने मुसलमानोंको आखिरी धमकी दी थी जिसके जवाबमें हैदराबाद का मुसलमान अपनी मञ्जिल मौतको करार दिया है। तुम इसको मौत और मशीनगनोंसे डरा रहे हो, इसी धमकीके जवाबमें मजलिसने जांबाजों और मुजाहिदोंकी शिरकतकी मोहीम शुरू कर दी है और अब तक एक लाखके करीब मुजाहदीन अपनी जान देनेको तैयार हो गये हैं। मिस्टर पटेलको मालूम होना चाहिये कि वह हैदराबादकी आजादी छीनने की कोशिश नहीं कर रहे हैं बल्कि खुद गुलामीका तौक पहन रहे हैं। मुसलमानोंकी तनजीम और इत्तिहाद वह कूवत है जिससे टकरानेके लिये बड़ी हिम्मत और जुरअतकी जरूरत है। हिन्द यूनियन मुसलमानोंकी तलवारों और वेतन भोगी फौज से डरा रही है। दकनमें ३५ लाख जांबाज सिपाही मौजूद हैं। मजलिसकी ओरसे जो गुप्त आदेश निकाला गया है उसके भी शब्द बड़े भयानक हैं मजलिसके स्वयं सेवक हर तरीकेसे कांग्रेसियों और

हिन्दुओंको नष्ट कर डाले जो भारतीय संघके साथ हैं।

ऊपरकी तमाम बातें ऐसी हैं जिसके कारण हैदराबादका प्रत्येक मुसलमान आज हिन्दुओंका शत्रु बन गया है। और मजलिसके आदेशपर भयंकरसे भयंकर रक्तपात, अग्निकांड, लूटपाट, बलात्कार, अपहरण आदि करनेमें जरा भी संकोच नहीं करता। यह तो इसको अपने धर्मका एक पवित्र कर्तव्य समझता है। एक मुसलमान कविने पाकिस्तानका जो चित्र खिचा है उसके कुछ शेर इस प्रकार हैं—

बर्मा के प्रधान मन्त्री थाकिन नू आपने हाल ही में दिल्लीमें भारतीय नेताओंसे भेंट कर भारत-बर्मा मैत्रीके सम्बन्धमें बातचीत की है।

हस्बे फरमान मौलाय इमाम मुरसलीन
कायदे आजम हैं आलमके अमीरुलमोमनीन
अब मसाजिद में खतबा है
आप ही के नाम का
बोल बाला हो रहा है
हर तरफ इस्लाम का
हुक्म है तहत खिलाफतसे
मुसलमानोंको आम
काफिरोंके कत्लमें गफलत
है केल हराम
दुश्मनान दीन पर वाजिब है
मोमिनोंको जहाद
इनकी हस्ती है जहांमें
वजह सद शररी फसाद
इनसे खतरा है हमेशा मिल्लते इस्लामको
मेट देना चाहिये दुनियासे इनके नामको
इनके बच्चों और बूढ़ों पर भी
रहम अच्छा नहीं,
रहम है इसलाम की
फितरत यह वहम अच्छा नहीं।
औरतें इन काफिरोंकी
हैं मुसलमानोंका माल,
ये बगैर अकद भी हैं
मरद मोमिन पर हलाल
हैं आमादा गर कलमा पढ़नेको तैयार,
वरना काफिर की जगे
अजलसे कुरान नारहै।
रही है वे धड़क तामील इन अहकामकी,
बात ऊंची हो रही है मिल्ते इस्लामको।

यह कविता 'शेरे पाकिस्तान' की हेडिङ्गसे रियासत अखबार १७ नवम्बरमें हजरत अहमदफफोंदीने छपवायी है।

यदि इस्लाम धर्म ऐसे कार्यों की आज्ञा देता है तो इन हैदराबादके मुसलमानोंसे जो इस राज्यको पाकिस्तानका एक अङ्ग समझते हैं क्या आशा की जा सकती है कि वह उसको पंजाब कांड न बनायेंगे

हरिजनों के सम्बन्ध में भी दो एक शब्द लिखकर प्रस्तुत लेख समाप्त करता हूं। इस राज्य के हरिजनों के उद्धार के लिये मजलिस की ओर से एक नये ही ढंगका संशोधन किया गया है। इस सुधारके लिये गवर्नमेंटने एक करोड़ रुपया मन्जूर किया है, जिनमें से प्रत्येक कुटुम्ब को १०० रु० तथा एक एक लुंगी दी जायगी। उनसे एक बांड लिखवा लिया जायगा कि वे तीन वर्ष के बाद इसलाम धर्म स्वीकार करेंगे। इस समय तो केवल उनको हिन्दुओंसे अलग कर दिया जा रहा है और उनके रहन सहन का तरीका बदल दिये जानेका उद्देश्य है। यहां हरिजनों की संख्या ४० लाख के लगभग है और अभी से मुसलमान अपने को जो केवल २५ लाख हैं, ६५ लाख की संख्या में बताते हैं। इस ओर डाक्टर अम्बेडकर ध्यानदें तो अच्छा है।

पश्चिम बङ्ग असेम्बलीके सामने प्रदर्शन करनेवालोंको रोकनेके लिये तैयार घुड़सवार पुलिस

लौटनेकी शर्त

एक भाईने मुझसे पूछा, आप कहते हैं कि हमें वापस अपने घर जाना है। तो हम पश्चिमी पंजाब कब जा सकते हैं? मुझे यह सवाल मीठा लगा। जानेको तो आज जा सकतेहैं, मगर शर्त यह है कि यहां हम भले बन जाय। आज तो हवा ऐसी बिगड़ी है कि जीना भी अच्छा नहीं लगता। अगर दिल्ली मेरी आवाज सुने, तो कल सब अपने घर चले जायं। हम यह सिद्ध कर दें कि हम करोड़ों मुसलमानोंको न मारना चाहते हैं, न भगाना चाहते। तब हमारे दुःखी हिन्दू, मुसलमान, सिख भाई सब अपने अपने घर लौट सकेंगे। हम पाकिस्तान-वालोंसे वहां लौटनेवाले हिन्दू और सिखोंकी रक्षा करवा सकेंगे, तभी मुझे शान्ति होगी।

बेबुनियाद इलजाम

एक भाईने मुझे खत लिखा है। उसमें बम्बईके एक अखबारकी कतरन भेजी है। उस कतरनमें लिखा है, गांधी तो कांग्रेसका ही बाजा बजाता है। लोग वह सुनना भी नहीं चाहते। इस तरहसे कांग्रेस रेडियो वगैरहका अपने ही प्रचारके लिये इस्तेमाल करेगी, तो आखिरमें यहां हिटलरशाही कायम हो जायेगी। मैं कांग्रेसका बाजा बजाता हूँ, यह बात सर्वथा गलत है। मैं तो किसीका बाजा बजाता ही नहीं, या फिर सारे जगत्का बजाता हूँ। उस कतरनमें यह भी कहा है कि अहिंसाकी बात तो यों ही ले आते हैं। हेतु तो यही है कि हुकूमतको अपना ही गान करना है। मैं यह कहता हूँ कि जो हुकूमत अपना गान गाती है, वह चल नहीं सकती। और मैं तो धर्मकी ही सेवा करना चाहता हूँ। धर्मसे संबंध रखनेवाली बातें ही आप लोगोंको सुनाता हूं। हो सकता है कि कुछ लोग मेरी बातें सुनना पसंद न करते हों। मगर दूसरे लोग मुझे लिखते हैं कि मेरी बातोंसे उनका कितना हौसला बढ़ता है। जिन्हें मेरी बातें नापसंद हों, उन्हें कोई सुननेके लिये मजबूर नहीं करता। और, अगर आपका मन कहीं और है तो यहां बैठकर भी आप मेरी बात बिना सुने जा सकते हैं। आप लोग मुझे छोड़ देंगे, तो मैं यहां प्रार्थना भी नहीं कराऊंगा और भाषण भी नहीं होगा। मैं खास तौरसे रेडियोपर बोलने जानेवाला नहीं। मुझे वह पसन्द नहीं है। यहांपर भी मुझे क्या कहना है, यह मैं सोचकर नहीं आता।

भगाई हुई औरतें

हमारी काफी औरतें पाकिस्तानमें पड़ी हैं। लोग उन्हें बिगाड़ते हैं। वे बेचारी ऐसी बनी हैं कि उसके लिये शरमिंदा होती हैं। मेरी समझमें उन्हें शरमिंदा होनेका कोई कारण नहीं। किसी औरतको मुसलमान जबरदस्ती पकड़ लें और समाज उसको निकम्मी मानने लगे और भाई, मां, बाप, पति, सब छोड़ दें, तो यह घोर निर्दयता है। मैं मानता हूं कि जिस औरतमें सीताका तेज रहे, उसे कोई छू नहीं सकता। मगर आज सीता कहांसे लावें? और सब औरतें तो सीता बन नहीं सकतीं। जिसे जबर्दस्ती पकड़ा गया, जिसपर अत्याचार हुआ, उससे हम घृणा करें क्या? वह थोड़े ही व्यभिचारिणी है? मेरी लड़की या बीबीको भी पकड़ा जा सकता है, उसपर बलात्कार हो सकता है, लेकिन मैं कभी उससे घृणा नहीं करूंगा। ऐसी कई औरतें मेरे पास नोआखालीमें आ गयी थीं। मुसलमान औरतें भी आई हैं। हम सब बदमाश बन गये हैं। मैंने उन्हें दिलासा दिया। शरमिन्दा तो बलात्कार करनेवालेको होना है। उन बिचारी बहनोंको नहीं।

फसल काटनेमें मदद देनेवाले

एक भाई कहते हैं कि मान लीजिये कि कंट्रोल मिट जाय, देहातोंमें लोग अपने लिये अनाज पैदा करने लगें, गांवके लोग फसल वगैरह काटनेके लिये एक दूसरोंकी अपने आप मदद करें, तो अनाज सस्ता होगा। लेकिन अगर किसानका दाम देकर मजदूर लगाने पड़ेंगे तो दाम बढ़ेगा। पहले तो यह रिवाज था ही। एक किसान दूसरे किसानोंको निमन्त्रण देता था। फसल काटनेका और साफ करके घरमें ले जानेका काम हाथोंहाथ खतम हो जाता था। आज हम वह रिवाज भूल गये हैं, मगर उसे वापस लाना चाहिये। एक हाथसे कुछ काम नहीं हो सकता।

किसान—राज

फिर वह भाई यह भी कहते हैं कि मंत्रियोंमेंसे कम-से-कम एक तो किसान होना ही चाहिये। हमारे दुर्भाग्यसे हमारा एक भी मंत्री किसान नहीं है। सरदार जन्मसे तो किसान हैं, खेतीके बारेमें कुछ समझ रखते हैं, मगर उनका पेशा बैरिस्टरीका था। जवाहरलालजी विद्वान हैं, बड़े लेखक हैं, मगर वह खेतीके बारेमें क्या समझें? हमारे देशमें ८० फीसदी से ज्यादा जनता किसान है। सच्चे प्रजातन्त्रमें हमारे यहां राज्य किसानोंका होना चाहिये। उन्हें बैरिस्टर बननेकी जरूरत नहीं। अच्छे किसान बनना उपज बढ़ाना, जमीनको कैसे ताजी रखना, यह सब जानना उनका काम है। ऐसे योग्य किसान होंगे, तो मैं जवाहरलालजीसे कहूँगा कि आप इनको मंत्री बनाइये। हमारा किसान-मंत्री महलमें नहीं रहेगा। वह तो मिट्टीके घरमें रहेगा। दिनभर खेतोंमें काम करेगा। तभी योग्य किसानों का राज्य हो सकता है।

चुनौती देता था तूफान भयंकर

—*※*※*—

अपनी किश्ती लिये चला मैं आज स्वयं चुपचाप भंवर में।

तूफानी लहरों को गिन - गिन रात बिताई सूने तट पर।
नयन उनींदे, किया जागरण-यौवनने जलते मर घट पर।
श्वांस-श्वांस पर एक चुनौती देता था तूफान भयंकर।
श्वांस श्वांस पर इठलाता था लहराता था हर बार समन्दर।
जर्जर नौका, बेबस मांझी क्या तब भी उत्साह छोड़ दूं ?
उठती लहरों से घबराकर क्या अपना पतवार मोड़ दूं ?
छोड़ चलूं क्या अपने पीछे कायरता से भरी कहानी।
दुनियां की उठ चलें निगाहें मैं हो जाऊं पानी-पानी।
हिम्मत है तो साथी ! डर क्या ? जूझू जीवन-मरण समर में-
अपनी किश्ती लिये चला मैं आज स्वयं चुपचाप भंवर में।

कफन बांध सर चली जवानी तब क्या सोचूं आगा-पीछा।
जब संघर्ष खड़ा ललकारे तब क्या देखूं ऊंचा नीचा।
मौत निमन्त्रण देने आई हंस-हंस अङ्गीकार कर चला।
और उबलते खारे जल से लड़ना भी स्वीकार कर चला।
प्रबल चपेटों से टकराकर जर्जर हुई जा रही नौका।
हाथ थके पतवार छिटकते, डूब नहीं जाये यह धोखा।
संशय हीन जवानी तो भी कसी कमर औ कूच कर चली।
मचल पड़ी अंगड़ाई प्यासी प्राणों में तूफान भर चली।
चीर बढ़ा सागर की छाती नयी दिशामें—नये डगर में-
अपनी किश्ती लिये चला मैं आज स्वयं चुपचाप भंवर में।

सीमा भङ्ग हुई मर्यादित दुनिया को उपहास खड़ा चला।
मेरा साहस देख संस्कारों का बन्धन स्वयं गल चला।
धूमिल लहरें चीर किनारे की प्रतिध्वनियां मुझे बुलाती,
लौट चलो हे तूफानोंमें भूले भटके हारे साथी।
मृत्युञ्जय-सा कालकूट पी जो सागर मन्थन को निकले।
वह कैसे मन्जूर करेगा कायरता के छींटे छिछले।
चली जा रही जर्जर नौका संघर्षों की लिये कहानी।
झंझा के झोकों से टकराती बढ़ती हरबार जवानी—
दिशा लाल हो चली गगन की किरण छा गयी शून्य डगर में-
अपनी किश्ती लिये चला मैं आज स्वयं चुपचाप भंवर में।

—श्री श्याम राय भटनागर

ब्रिटेनमें एक नया खतरा—

किसी जमानेमें इङ्गलैण्डके हिटलर समझे और कहे जानेवाले सर ओसवाल्ड मोसले फिर राजनीतिमें आ रहे हैं। ब्रिटेनमें फिर फासिस्ट पार्टीको जीवित करनेकी आवश्यकता महसूस की जाने लगी है ! समाजवादकी प्रगतिको रोकनेके लिये पूंजीपतियोंको फासिस्ट दानवकी मदद चाहिये और ये नररक्त पायी पूंजीपति अपनेको जिलाये रखनेके लिये दानव क्या महादानवका भी पोषण करनेमें जरा नहीं हिचकिचाते। फ्रांसमें जेनरल दिगाल का प्राधान्य और प्रभाव बढ़ सकता है तो इङ्गलैण्डमें सर ओसवाल्ड क्यों नहीं बढ़ सकते। आज-कल लोकप्रियता पैसेसे पायी, खरीदी और स्थापित की जा सकती पैसेमें यह ताकत है कि वह विचारोंके बलपर पायी गयी लोकप्रियताको हटाकर अपने प्रेमीको उस आसनपर बैठा दे सकता है। सर ओसवाल्ड मोसलेके राजनीतिमें पुनः प्रवेशके पीछे ब्रिटेनके पूंजीपतियोंका पैसा है। इसलिये राजनीतिक मञ्चमें सर ओसवाल्डके पुनः पदार्पणको राजनीतिक समस्या नहीं बल्कि उससे भी कुछ अधिक समझना चाहिये। नैतिकता और कानून, इस पदार्पणसे यदि सजग नहीं हो उठते और पुलिस तत्परता नहीं दिखाती तो इस पदार्पणका रूप आगे चलकर जो होगा उसपर देशको रक्तके बूंद रोना पड़ेगा। यह ब्रिटेनका दुर्भाग्य है कि यहां आज वे प्रधान फासिस्ट, जो कभी ईमानदारीके साथ हिटलर और मुसोलिनीके पीछे चलते थे, छुट्टा घूमते फिरते और फिर फासिज्मका प्रचार कर रहे हैं। संसारको इतने बड़े भयङ्कर युद्धकी आगमें झुलसानेवाले फासिज्मको अन्य किसी मित्रराष्ट्रमें प्रश्रय नहीं दिया जा रहा। युद्धारम्भ हो जाने और सर ओसवाल्डके नजरबन्द कर लिये जानेके कारण ब्रिटेनमें जिस फासिस्ट आन्दोलनका सिलसिला टूट गया था उसे अब फिर जोरसोरसे चलानेकी तैयारी की जा रही है और इसके लिये बड़े-बड़े पूंजीपतियोंने अपनी थैलियोंके मुंह खोल दिये हैं। ब्रिटेनकी मौजूदा सरकारके सामने इस खतरेका सामना करना एक नयी समस्या हैं।

जर्मनीमें ब्रिटेनके नये इरादे—

जेकोस्लावाकियाके लिये जर्मनीकी प्रत्येक प्रतिक्रिया हमेशा उसकी दिलचस्पीका कारण है। अभी उस दिन प्रेगस्थित ब्रिटिश राजदूत सर फिलिप निकोल्सने जर्मनीके सम्बन्धमें पूछे गये कितने ही सवालोंका जवाब देते हुए जेकोंको यह आश्वासन दिया है कि ब्रिटेन हर सूरतसे इस बातकी कोशिश करेगा कि जर्मनी फिर आततायी और उत्पाती न बने। इस बातकी काफी चर्चा थी कि सोवियट यूनियन पर आक्रमण करनेके उद्देश्यसे मार्शल योजनाकी छायाके नीचे जर्मनके शस्त्रास्त्र उद्योग-धन्धेको जिलाया जायेगा और इस प्रयासमें अमेरिकाको ब्रिटेनका सहयोग प्राप्त है। ब्रिटिश राजदूतके उक्त आश्वासन से अवश्य ही जेकोंको स्वस्ति मिली होगी। सर फिलिपने यह ठीक ही कहा कि चेकोस्लोवाकियाकी अर्थ व्यवस्थाका विस्तार और समुन्नति तबतक सम्भव नहीं है जबतक पश्चिमी यूरोपकी आर्थिक स्थिति न सुधरेगी। आपने यह भी बताया कि जर्मनी को छिन्नभिन्न करनेकी नीतिका ब्रिटेन पूर्ण विरोधी है।

रूसके साथ वाणिज्य—

भविष्यमें यूरोपका वाणिज्य क्या रूप लेगा, इस बातकी कल्पना जल्पना चल रही है। अमेरिका नहीं चाहता कि पश्चिमी यूरोप उसे छोड़ अन्य किसी राष्ट्रके साथ व्यवसाय सम्पर्क कायम करे। मार्शल योजनाके अन्तर्गत अमेरिकाकी आर्थिक सहायताका उद्देश्य ही है प्रत्येक देशकी आर्थिक व्यवस्थाको अपनी मुट्ठीमें रखना। पूर्वके साथ जेकोस्लोवाकियाको अपना व्यापार सम्पर्क कायम करते देख अमरीकन इलाकों में इसकी काफी चर्चा है। जेकोस्लोवाकिया ने पिछले सप्ताह मास्कोके साथ एक व्यापारिक समझौता किया है। इसके अनुसार जेकोस्लोवाकियाका १८ प्रतिशत व्यापार सोवियट यूनियनके साथ अब होगा। अभीतक ३ प्रतिशत ही होता था। यह समझौता पांच सालके लिये हुए हैं।

रूसकी योजना—

लन्दनमें जबसे चार पर राष्ट्र सचिव सम्मेलन आरम्भ हुआ है अभी तक पैतड़ेबाजीके सिवा कोई तत्वकी बात देखनेमें नहीं आयी। एक योजना इधरसे पेश की जाती है तो उधरसे तरपटक उसके मुकाबले दूसरी आती है। जर्मनीमें अभी तक आर्थिक क्षेत्रमें ब्रिटेन और अमेरिका मिलजुल कर काम कर रहे हैं और इन दोनों क्षेत्रोंका एक आर्थिक सङ्गठन है। इस बार लन्दन सम्मेलनमें रूसके पर राष्ट्र सचिव मो० मोलोटोवने इस आशय का प्रस्ताव रखा है कि जर्मनीके तमाम आर्थिक सङ्गठन जो एक या अधिक अंचलोंमें हैं तोड़ दिये जायं। इसके पास होनेका सीधा अर्थ है कि अंगलो अमेरिकन दो क्षेत्रीय आर्थिक सङ्गठन न रह सकेगा। मजेकी बात तो यह है कि ये चार महा प्रभु अभी तक इसी निर्णय पर नहीं पहुंच सके कि आर्थिक सिद्धान्तों पर बहस कैसे शुरू की जाये। पश्चिमी मिनिस्टर रूसके प्रस्तावको बहसका आधार बनानेको तैयार नहीं हैं, उधर

मो० मोलोटोव ब्रिटिश प्रस्तावको मौलिक आधार नहीं मानते । ब्रिटिश प्रस्ताव कहता है कि पोट्स डममें जो समझौता हुआ था उसमें समयको देखते कुछ अतिरिक्त सिद्धान्त जोड़े जाने चाहिये फ्रांस और अमेरिका इसके समर्थक हैं।

बर्लिन सम्मेलन—

जर्मनीके सभी अंचलोंमें रूसका प्रभव बढ़ रहा है, यह इस बातसे स्पष्ट है कि रूस द्वारा समर्थित सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी द्वारा जन महासभामें प्रायः ६ सौ प्रतिनिधि अधिकृत जर्मनीके पश्चिमी अंचलोंसे आये। यह सम्मेलन जर्मन एकता और न्यायानुमोदित सन्धिका प्रचारक है। सम्मेलन बर्लिनमें स्टेट आपेराहाउसमें हुआ। पूर्वी अंचलोंसे ११ सौ ३० और बर्लिनसे २३० डेलीग्रेट सम्मेलनमें शामिल हुए।

डिवेलराकी समस्या—

१५ वर्ष तक लगातार अधिकारमें रहकर आज आयरलैण्डके प्रधान मन्त्री डिवेलरा ६५ वर्षकी उम्रमें आगामी वर्षके साधारण निर्वाचनके रूपमें होने वाले जबर्दस्त संघर्षकी तैयारी कर रहे हैं। उनके अधिकार और राजनीतिक अस्तित्वको चुनौतीका रूप लेकर यह निर्वाचन आ रहा है जिसमें लेबर और रिपब्लिकन पार्टियां उनके खिलाफ कमर कस कर तैयार हो रही हैं। उनका सबसे बड़ा प्रतिद्वन्द्वी सीन और कब्राइड है जो शानदार वारिस्टर और उम्रमें डिवेलरासे २२ वर्ष पीछे हैं। ये नयी रिपब्लिकन पार्टीके नेता हैं। और हालके दो उपनिर्वाचनोंमें इस पार्टीने दो सीटें डिवेलरासे छीनी हैं। इन उपनिर्वाचनोंमें फिआना फेल पार्टी बुरी तरह पराजित हुई है। रिपब्लिकन पार्टीकी यह दलील है कि डिवेलरा और उनकी पार्टी काफी दिन अधिकारमें रह चुकी है, पर इतने दिन रहकर भी उसने देशके लिये कुछ नहीं किया। अब देशके लिये इस पार्टीकी कोई उपयोगिता नहीं रह गयी। ऐसा समझा जाता है कि मि० मैकब्राइडका जबर्दस्त झुकाव समाजवादकी ओर है। आनेवाला निर्वाचन लेबर और रिपब्लिकन मिलकर लड़ेंगे और ऐसी उम्मीद की जाती है कि यहां ये वहां वे इस तरह काफी सीटों पर ये अधिकार कर लेंगे।

फ्रेंच प्रीमियरको नये अधिकार—

फ्रांसके एक सौ वर्ष पुराने इतिहासमें कभी इतना तगड़ा और जबर्दस्त हड़ताल सम्बन्धी कानून नहीं पास हुआ था जैसा गत सप्ताह फ्रांसकी पार्लमेण्टने पास किया है। इस समय फ्रांसमें हड़तालोंने भयंकर रूप धारण कर रखा है। प्रायः २० लाख फ्रेंच श्रमिक हड़ताल पर थे। कम्यूनिस्टोंके रूबरू विरोध और इतने आदमियोंके हड़ताल करने पर भी पार्लमेण्टने बिल पास कर दिया। इसके अनुसार सरकार अपनी ताकत ८० हजार तक आदमी रख कर बढ़ा सकती है। तोड़फोड़ और काम बन्द कराने, हस्तक्षेप करनेके लिये ६ महीनेसे पांच साल तक कैदकी सजा और ५० हजार फ्रांक तक जुर्मानेकी सजा दी जा सकती है। फ्रांसके कम्यूनिस्टोंका यह अभियोग है कि अमेरिकाका पैसा धीरे-धीरे फ्रांसको प्रतिक्रियाके चंगुलमें दबोच रहा है। अमेरिकाका यह हस्तक्षेप अवांछनीय बताकर कम्यूनिस्ट पार्टीने अमेरिकाके प्रधान मंत्री मि० मार्शलके रिपब्लिकन सलाहकार मि० डलेसकी पेरिस यात्राका प्रतिवाद किया है और यह अभियोग लगाया है कि फ्रेंच मन्त्रिमण्डल और राजनीतिज्ञोंको अमेरिकन आदेशोंके अनुसार चलानेके लिये वे फ्रांस आये हैं। मि० डलेसने फ्रांसकी सरकारके प्रधान प्रधान प्रतिनिधियोंसे तीन दिन बातचीत की। कम्यूनिस्ट सदस्यने पार्लमेण्टमें इस आशयका वक्तव्य पढ़ा कि कम्यूनिस्ट पार्लमेण्टरी दल अमेरिकन सरकारके फ्रांसके मामलोंमें अवांछनीय हस्तक्षेपका प्रतिवाद करता है। अमेरिका फ्रांसको अपना उपनिवेश जैसा समझ कर आचरण कर रहा है। पेरिसमें यह बात खुल्लमखुल्ला कही जा रही है कि अमेरिकन मालिक अपने हुक्म मनवाने यहां आये हैं। अधिकार करनेके बाद हिटलर जिस तरह फ्रांसमें भेदनीति काममें लाया था अमेरिकन भी वही काम कर रहा है।

पिछले तीन सप्ताहोंसे चलती हड़तालोंके मिटनेकी आशा कम है। सरकारकी ओरसे जो प्रस्ताव रखे गये हैं उनको अपर्याप्त बता कर केन्द्रीय हड़ताल समितिने अस्वीकृत कर दिया। हड़तालियोंसे मजबतीके साथ डटे और अड़े रहनेको कहा जा रहा है।

बंटवारेका दुष्परिणाम

फिलस्तीनके बंटवारेका फैसला करके संयुक्त राष्ट्र संघने एक तरफ तो मुस्लिम देशोंमें यहूदियों पर अत्याचारका एक नया अध्याय आरम्भ कर दिया है दूसरी तरफ अरबों और यहूदियोंको एक दूसरे का हमेशाके लिये कट्टर दुश्मन बना दिया है? ईरान और पाकिस्तानमें यहूदी अरब समर्थक मुसलमानों द्वारा मौतके घाट उतारे जा रहे हैं, यह वक्तव्य विश्व यहूदी कांग्रेसके स्थानापन्न संचालक डा० मारक्सने दिया है। ईरान और पाकिस्तान स्थित अमेरिकन राजदूतोंसे इन देशोंमें यहूदियोंकी रक्षाकी व्यवस्था करनेका अनुरोध किया गया है। पेशावरमें सम्पूर्ण यहूदी समाज खतरेमें है और बहुत तो मौतके घाट उतार भी दिये गये। उधर अरब तेल अबीबमें घुस रहे हैं। कहते हैं कि अरब हातिका अंचलमें घुस गये हैं।

अरब संघकी संघर्ष समितिकी बैठकें लेबनानके प्रीमियरकी अध्यक्षतामें हो रही हैं। कहते हैं कि यह निश्चय किया गया है कि फिलस्तीनकी सरहदके निकटके अरब राज्य मिस्र, ट्रांसजोर्डन, सिरिया और लेबनन कमर कसे तैयार रहें और सरहदपर सैनिक सहायताके लिये सतर्क रहें तथा अन्य राज्य ईराक, दक्षिणी अरेबिया और येमनके साथ सहयोग करें। उधर जेरूसलेमके मुण्डीने कहा है कि बातें व्यर्थ हैं। हम तो मियानसे तलवार निकालने जा रहे हैं, वे बातें करें।

साहित्य चर्चा

भारतीय वास्तुकला—लेखक : श्री परमेश्वरीलाल गुप्त प्रकाशक : काशी नागरी प्रचारिणी सभा । मूल्य दो रुपये ।

प्रस्तुत पुस्तकमें भारतीय भवन निर्माण कला, वास्तु कलाके इतिहासके साथ साथ उसके मूल सिद्धान्तोंकी व्याख्या सुन्दर और रोचक भाषा एवं शैलीमें आठ अध्यायोंमें की गयी है। आर्यसभ्यताकी भांति भारतीय वास्तुकला भी अतिप्राचीन है। अतःइस विषयपर सैकड़ों पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। इस विषयमें अभी तक जो कुछ लिखा गया वह अंग्रेजी या अन्य भाषाओंमें है। हिन्दीमें इस विषय पर बहुत कम लि ा गया है। श्री परमेश्वर लालगुप्तने इसने पुस्तकको लिखकर बड़ेअभाव की पूर्ति की है। इस विषयपर हिन्दीको विस्तृत गवेषण पूर्ण पुस्तकोंकी आवश्यकता है। आशा है लेखक एवं पुरातत्ववेत्ता भविष्यमें काफी अच्छी पुस्तकों से हिन्दीका भण्डार भरेंगे।

श्री परमेश्वरीलाल गुप्त विद्वान लेखकके साथ साथ कुशल पत्रकार हैं। उनकी पत्रकारी प्रतिभाने इस पुस्तकमें उनकी विद्वत्ताको चमका दिया है, यह पुस्तक पढ़कर ही जाना जा सकता है। पुस्तक संग्रहणीय है। कागजके बढ़े हुए मूल्यको देखते हुए इस सचित्र पुस्तकका मूल्य भी अधिक नहीं है।

गन्दगी—लेखक: श्री छेदीलाल गुप्त, पुष्प साहित्य मन्दिर, १२३, चितरञ्जन एवन्यू, कलकत्ता, मूल्य दो रुपये ।

'गन्दगी' श्री छेदीलाल गुप्तको २२ कहानियोंका संग्रह है। संग्रहकी कहानियां क्रमशः हिन्दीके प्रसिद्ध साप्ताहिक और मासिक पत्रोंमें प्रकाशित हो चुकी हैं। सभी कहानियोंमें लेखकने समाजकी उस गन्दगीकी ओर भी संकेत किया है जिसकी ओर आम तौरसे लोग देखकर नाक भौं सिकोड़ लेते हैं। लेकिन समाजकी गन्दगी छिपानेसे लाभ नहीं उसको प्रकाशमें लाकर सुधारकी आवश्यकता है। लेखकने सुधारके संकेत किये हैं। हो सकता है अपनेको आदर्शवादी कहनेवाले कुछ पिछड़े विचारोंके लोगोंको इन कहानियोंमें अश्लीलता नजर आये और वे इन्हें पढ़कर तिलमिला उठें। लेकिन हम तो इसे लेखकको सफलता ही कहेंगे। कहानियोंकी भाषा सरल एवं प्रवाह युक्त एवं शैली रोचक है। कथानकका निर्वाह सुन्दरतासे किया गया है। सभी कहानियां छोटी छोटी हैं। इसलिये पाठकका कहीं भी जी नहीं ऊब सकता। आधुनिक युगमें ऐसी ही मनोरञ्जक एवं समाजकी समस्यायोंकी ओर संकेत करनेवाली कहानियों की आवश्यकता है। कहानी प्रेमियोंका 'गन्दगी' पढ़कर काफी मनोरञ्जन होगा और श्री छेदीलाल गुप्त भविष्यमें और भी सुन्दर कहानियां लिखेंगे—ऐसी आशा है।

नयन-नीर—रचयिता श्री गंगाप्रसाद 'कौशल' नेशनल बुक कम्पनी पटना, मूल्य दो रुपये।

नयन-नीर विहारके नवयुवक कवि श्री गंगा प्रसाद'कौशल' की ५० मर्मस्पर्शी रचनाओंका संग्रह है। कौशलजी आदर्शवादी हैं और इसका उन्होंने 'कौन कहता, दो दिनका प्यार ?' 'ऐसा युवक मुझे है'मांता आदि रचनाओंमें अच्छा आदर्शवादी—होते हुए कविने यथार्थकी से आंखें बन्द नहीं की हैं। वह कहता है! निर्वाह किया है।

मेरी हड्डी पर आज बने,
हैं खड़े भव्य प्रसाद बने,
बस रक्त हमारा चूस-चूस यह महल आज
है इतराता।
दो हड्डीका कंकाल लिये
मनमें अगणित भूचाल लिये
मैं सोच रहा, क्या यही रहा मानवका
मानवसे नाता
आयेगा शोणितमें उबाल
गरजेगा फिर तो महाकाल
आखिर मिटने वालोंको भी है कब तक
जोश नहीं आता।

कवि अपने तथा अपने युगके प्रति ईमानदार है। 'नयन-नीर' की अन्य कई कविताएं भी बहुत सुन्दर बन पड़ी हैं। इसके लिये कौशलजीको बधाई है। पुस्तकको छपाई सफाई सुन्दर है।

नया साल—रचयित -श्री तिलक, बी० ए०, प्रकाशक : सरला पुस्तकमाला, कदमकुआं, पटना। मूल्य सवा रुपया।

विहारके काव्य गगनमें नवोदित नक्षत्रोंमेंसे एक श्री तिलक, बी० ए० की प्रारम्भिक रचनाओंका यह संग्रह सुन्दर है। यद्यपि कवि नया नया काव्य-गगनमें चमका है और उसके काव्यमें यत्रतत्र भाषा, छन्द और भावोंमें कुछ शिथिलता भी है तथापि यह कहनेमें किसी संकोचकी गुंजाइश नहीं कि उसमें प्रतिभाके अंकुर हैं। हम कविका साहित्य क्षेत्रमें स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि वह भविष्यमें और भी सुन्दर रचनाएं प्रस्तुत करेगा।

देहाती इलाज—लेखक श्री रमेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार, प्रकाशक : हिमालय हर्बल इन्स्टिट्यूट, लाहौर मूल्य,एक रुपया।

प्रस्तुत पुस्तिकामें अनुभवी वैद्य एवं लेखक विद्वान श्री रमेश वेदी आयुर्वेदालंकार ने सर्वत्र सुगमतासे प्राप्त होनेवाली चीजों एवं औषधियोंसे सर्वजनयोपयोगी इलाजकी व्यवहारिक विधियां लिखीं हैं। सभी औषधियां परीक्षित हैं। पुस्तिका प्रत्येक व्यक्ति और खासकर ग्रामीण जनताके काम की चीज है। समाज विकास और पुनर्निर्माणकी दृष्टिसे इस तरहकी पुस्तकोंका घर घरसे प्रचार होना चाहिये। साधारण और फसली रोगोंका उपचार प्रत्येक माता को ज्ञात रहना चाहिये। देहातोंमें काम करनेवाले जनसेवकोंको भी चिकित्साका साधारण ज्ञान होना चाहिये। इस तरहके व्यक्तियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। सचमुच वेदीजीका यह प्रयास प्रशंसनीय है।

संसार का दिमाग

वैज्ञानिक संसार का सबसे अधिक तेज दिमाग तैयार करने में संलग्न है। वास्तव में, यह दिमाग एक मशीनके रूप में हमारे सामने आयेगा।

इसमें जितना तार लगेगा उसकी लम्बाई ५५० मील होगी, १८०० ट यून और ५००० स्विच का इस्तेमाल होगा इसका मूल्य ५ लाख डालर (लगभग २००,०००० रुपये)आंका गया है।

२५,००० उद्‌भट गणितज्ञ भी अगर कागज पेंसिल लेकर बैठें तो इसकी बराबरी न कर सकेंगे। जिन सवालों का हल निकालनेमें आइन्सटाइन जैसा गणितज्ञ भी असफल हो गया उन्हें यह मिनटों में हल कर देगा।

बिजली से चालित यह यन्त्र उन सवालों को पलक मारते हीं हल कर देगा जिन्हें सावित करने में एक मनुष्यको हजारों वर्ष लग जायेगे। एक घंटे में यह दस लाख गणितके प्रश्न हल कर देगा।

वैज्ञानिकों का कथन है कि इस से हमारे जीवनपर कितना गहरा असर पड़ेगा इसकी अभी कोई कल्पना नहीं की जा सकती।

हमारे गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्ट बैटन ने इस यन्त्रमें काफी दिलचस्पी ली और बताया कि जिन बातों को याद रखने के लिये करोड़ों पुस्तकों की आवश्यकता पड़ेगी उन्हें यह यन्त्र बटन दबाते ही बतला देगा।

रुपये पसें, की बैंकोके साथ आजकल रक्त बैंक', दुग्ध बैंक'इत्यादि नाम भी सुनने में आते हैं किन्तु पंसिलवेनिया की हड्डी बैंक नयी है। १० के ताप पर हड्डियां इकठ्ठी कर रखी जाती है। आपरेशनके बाद या अन्य आवश्यकता पड़ने पर इन्हे काम में लाया जाता है।

मनुष्य के हृदयका वजन केवल १० औंस है! इसका आकार हाथ की मुठ्ठी की तरह का है! एक बारके दबाव में जीवन काल के लिये ३,अरब बार बार हृदय धड़कता है, तथा उसके अन्य कार्यों के लिये दस खरब बार।

सारनाथ का मन्दिर नहीं! शादी विवाह का 'वेडिंग केक' है!

राजकुमारी एलिजाबेथ और फिलिप माउण्ट बैटनने यह केक अपने विवाह पर काट कर मेहमानों को बांटा।

यह करीब छ औंस खून फेंकता है। इस तरह लगभग ५ हजार गैलन या २० टन रोजाना होताहै। एक मनुष्य के औसतन

पाकिस्तान को भेजे जानेवाले तारों पर 'पाकिस्तान' लिखना आवश्यक है अन्यथा तार लौटा दिये जायंगे। इस शब्द

पर खर्च नहीं लगेगा।

० ० ०

सुप्रसिद्ध नर्तक रामगोपालने शाही विवाहके अवसरपर नृत्य किया जिसकी काफी प्रशंसा हुई ! बनारससे इस अवसर पर खास तौरसे एक शाल मंगवा कर रामगोपालने राजकुमारीको भेंट किया !

० ०

बम्बई के एक हजामको जिसने एक हरिजन की दाड़ी बनानेसे इनकार कर दिया था नये कानूनके अनुसार गिरफ्तार कर लिया गया।

० ०

लिंकनका पार्ट अदा करते करते आयरलैंडके एक अभिनेताको 'लिङ्कन' की आदतें पड़ गयीं है। जब भी वह बात करता है, चलता है या मिलता है तो अपनेको लिङ्कन ही समझता है।

० ०

घुड़दौड़के एक 'जोकी' को लगभग १ लाख १० हजार रुपये की वार्षिक आमदनी होती है। जब कि पूरे वर्ष में उसे केवल ३ घंटे काम करना होता है।

हमारे राजदूत

एक विहंगम दृष्टि

राजदूत	देश	वेतन प्रतिमास	अन्य भत्ते प्रतिमास
श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित	रूस	३५००)	४५००)
मि० आसफ अली	अमेरिका	३५००)	४५००)
मि० के० पी० मेनन	चीन	४५००)	× ×
मि० वी० के० कृष्णा मेनन	ब्रिटेन	३००० पाउण्ड सालाना	१हजार पाउंड सालाना
मि० अली जहीर	ईरान	३०००	२०००)
श्री श्रीप्रकाश	पाकिस्तान	३०००)	५००)

अमेरिकाके दूतावासमें निम्न श्रेणीके नौकरोंको छोड़कर ४६ व्यक्ति काम करते हैं, इसी प्रकार रूस और चीनमें १४ व्यक्ति कार्य करते हैं। अमेरिकामें भारतीय प्रचार विभाग पर तीन लाख सैंतीस हजार पांच सौ रुपये खर्च किये जाते हैं। सन् ४६-४७ में अमेरिकाके दूतावास पर ७,७६,५००) रु० खर्च किया गया। राजदूतोंको इनकम टैक्स नहीं देना पड़ता, उनके लिये सरकारकी ओरसे मकान या उसका भत्ता तथा मोटरकार की व्यवस्था रहती है। अनुमान किया जाता है कि रूसके दूतावासपर १५ अगस्त १९४७ से लेकर ३१ मार्च १९४८ तक ७०५७००) रु० कुल खर्च होंगे। चीनमें दूतावास बनाने और जमीन खरीदनेके लिये पांच लाख रुपये सरकारने दिये।

आधुनिक मशीन युग-चारपाईपर बैठे-बैठे मशीन द्वारा चाय तैयार, घंटी बजी चाय पीजिये।

संसार का सब सबसे छोटा हवाई जहाज-मोटर साईकिल से भी कम पेट्रोल खर्च होता है।

REGD. NO. C 5229.

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेक्ट्रिक इण्डिया प्रेस में

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

ब्रिटेन और भारतके बीच मैत्री स्थापित करनेके लिये शिष्टमण्डल भारत आया हुआ है। चित्रमें उक्त मिशनका कलकत्तेमें स्वागत किया जा रहा है।—"विश्वमित्र"

Regd. No. C 2229.

रियायती दामोंपर

उच्चतम क्वालिटीकी लीवर घड़ियां

अत्यधिक सस्ती कीमतों पर स्विट्जरलैण्डकी बनी हुई, नई डिजाइन की निहायत सुन्दर ठीक समय देनेवाली। हर घड़ी की गारंटी साढ़े तीन साल। क्रोमियम केस की गोल या चौकोर १८) सुपीरियर फैन्सी डायलकी २०) बेस्ट सेन्टर सेकन्ड गोल २४)। रेक्टेंगुलर और टोनियो आकार की चित्र जैसी घड़ियां उज्वल क्रोमियम केसकी, ५ ज्वेल ३७) रोल्ड गोल्ड ५ ज्वेल की ५०) बेस्ट क्रोमियम केस ४२ रोल्ड गोल्ड ५०) क्रोमियम केस १५ ज्वेल ६५)। फ्लैट शेप ४०) रोल्ड गोल्ड ६०) बेस्ट टोनियो शेपकी ७८) पैकिंग पोस्टेज माफ। हर घड़ीके साथ एक फीता फैन्सी डिजाइन का दिया जाता है।

इम्पीरियल ट्रेडिंग कम्पनी (V. C.)
ऐशबाग रोड लखनऊ

ORIENT'S QUALITY PEN

AT AMAZINGLY LOW PRICE — Rs. 11/-

You will be proud to own this magnificent pen specially made from materials to suit the Indian Climate, fitted with 9 ct. nib, ensures life long service. Self filling writes more words in one filling. Available in most pleasing & Charming assorted colours and shades, with pocket clip and one special Ink bottle. Price Rs. 11/- Postage free.

MADE IN U. S. A.

write at once to factory representatives.

ORIENT WATCH SYNDICATE (DEP 14) DUMDUM (BENGAL).

होमियोपैथिक दवाइयां

प्रति ड्राम =) =)॥ आनाहै। हरएक बीमारियोंकी दवाइयां मय सैगून लकड़ीका बक्स और चिकित्सा किताबके साथ १२, २४, ३०, ४८ ६०, ८४ और १०४ मूल्य ४), ६), ७॥), १०), १२), १५॥) और २०) रुपया डाक खर्च अलग। मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी

१८ मध्यर क्राइव स्ट्रीट, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

७४ धरमतल्ला स्ट्रीट इलेस्ट्रेटेड इंडिया प्रेसमें गोबिन्द चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लायक अलीकी नालायक आवाज

उस दिन हैदराबादके प्रधान मन्त्री मीर लायक अलीने रियासती लेजिस्लेटिव असेम्बलीमें भाषण देते हुए घोषित किया कि यदि संयुक्त राष्ट्र-संघ निजामकी दर्खास्तको ठुकरा देगा तो उस दशामें भी निजाम सरकार अपने [स्वाध]ीनताके दावेको कायम रखेगी।

[...] एक व्यक्ति" द्वारा भेजे गये एक खुले पत्रकी ओर संकेत करते हुए [...]लीने कहा—पिछले दिन एक व्यक्तिने मेरे पास एक खुला पत्र भेजा [...]ने प्रश्न किया है कि यदि संयुक्त राष्ट्रसंघने निजाम सरकारकी [...]ध्यान नहीं दिया तो उस दशामें निजाम सरकार क्या करेगी। इसके उत्तर [क]हना यही है कि हमने हर पहलू पर जम कर विचार किया है और उसे देखा है। अब हम इसी नतीजे पर पहुंचे हैं कि चाहे परिणाम जो कुछ [...] अपनी आजादीको नहीं जाने देंगे।

लायक अली अपनी तथाकथित [...]ौर कठिनाइयोंके पिछले ४ महीनों [...] सिंहावलोकन कर रहे थे। प्रकरणांतर में भारतका नाम आते ही वे एकदम गर्म हो गये और कहने लगे कि—भारत संघ हमें बर्बाद कर सकता है। हमें किसी भी परीक्षा और कठिनाईके हवाले किया जा सकता है। भारत सरकार अपनी सैनिक शक्तिसे हमें रौंद सकती है और जो चाहे सो कर सकती है। किन्तु हम अपने दावेको छोड़ नहीं सकते हैं। हमें आजाद रहनेका अधिकार है। निजाम अपनी आजादीको नहीं जाने देगा।

मीर लायक अलीके भाषणके प्रमुख प्रकरण निम्नलिखित हैं:—

(१) भारत-हैदराबाद वार्ता की [अस]फलता—हैदराबादने अपने प्रस्तावमें [...] प्रकारके आश्वासनोंकी गुंजाइश रख[ी] थी, जिससे भारतको सन्तोष हो [जा]ता और उसे हैदराबादकी स्वाधीनता से पैदा हुए काल्पनिक भयसे मुक्ति मिल जाती। किन्तु भारतीय नेतागण अपनी टेक पर अड़े रहे और उनका रुख सदा अत्याचार पर अवलम्बित रहा।

(२) आर्थिक अवरोध—भारत सरकारने हर टेढ़ी-मेढ़ी राह पर चलना प्रारम्भ किया है अपनी इज्जत और आर्थिक स्वार्थको खतरेमें डालकर हमें बर्बाद करना चाहती है।

(३) राष्ट्रसंघमें—भारत सरकारने ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी हैं जिनके परिणामोंसे विवश होकर निजाम सरकार को संयुक्त राष्ट्रसंघका दरवाजा खटखटाना पड़ा। भारत सरकारने यह प्रमाणित करनेके लिये कि हैदराबाद कभी भी एक स्वाधीन सत्ता नहीं था और इसलिये उसकी आजादीका दावा गलत है, इतिहास की छोटीसे छोटी घटनाका हवाला दिया है। लेकिन भारत भी तो गुलाम ही था और अभी-अभी गुलामीसे त्राण पाया है, फिर वह हैदराबादको आजादी देनेसे क्यों इनकार कर रहा है? हम पर इतनी कठिनाइयां क्यों लादी जा रही हैं? अपनी विशाल सैनिक शक्तिका हमें भय क्यों दिखाया जा रहा है? इन्हीं परिस्थितियोंमें विवश हो कर निजामने संयुक्त राष्ट्र संघ से फरियाद करनेका निर्णय किया। भारत सरकारने बाजाप्ता तौर पर हैदराबाद के मामलेमें न्याय करना अस्वीकृत कर दिया, हालांकि यथावत् समझौतेमें इस बातकी निश्चित गुंजाइश थी। निजामने संघसे यह आशा की है कि वहांसे भारत और हैदराबादके झगड़ेका न्यायपूर्वक निर्णय होगा। हम नहीं चाहते कि अकारण असंख्य मनुष्योंके रक्तकी नदी बहे। अतः आशंकित नर-संहारका मार्ग बन्द करनेके लिये ही हम राष्ट्रसंघमें गये हैं। मानवताको बर्बाद होनेसे रोकनेके लिये कोई भी काररवाई की जानी श्रेयस्कर है। आज हैदराबाद कई प्रकारकी कठिन परीक्षाओंमें सफल हुआ है और अधिक आशावान, आत्मबली दृढ़, सुसंगठित और साधनोंमें परिपूर्ण प्रमाणित हुआ है। किन्तु फिर भी आज ऐसा समय आ पहुंचा है जब हमारे निकटतम मित्र समझ रहे हैं कि हम शीघ्र पतित हो जायेंगे और हमारे शत्रु तो रोज ही हमारे पतनकी राह देख रहे हैं।

बादमें मीर लायक अलीने राष्ट्रसंघमें जानेवाले हैदराबादी प्रतिनिधिमण्डलके सदस्योंके नामोंकी घोषणा की। वे निम्नलिखित हैं:—नवाब मोईन नवाज जंग (वैदेशिक मन्त्री और प्रतिनिधि मण्डलके नेता) श्री श्रीपत राव (हैदराबाद लेजिस्लेचर के अध्यक्ष), श्री श्याम सुन्दर (अछूत एम० एल० ए०) और मि० जहीर अहमद (वैदेशिक विभागके सेक्रेटरी) जिनमें अन्तिम तीन सदस्य हैं।

अन्तमें मीरलायक अलीने अभी हालमें त्यागपत्र देनेवाले निजामके २ मन्त्रियों की ओर संकेत करते हुए कहा—त्यागपत्र देनेवाले दोनों मन्त्रियोंका बाहरी सूत्रों से सम्बन्ध है, अतः वे उन्हीं बाहरी सूत्रोंके प्रभावमें आकर चालाकीसे हट गये। मन्त्रिमण्डलमें तीन स्थान रिक्त थे, जिनमें २ पर नियुक्ति हो गयी। श्री शंकर राव पब्लिसिटी कृषि और आबकारी मन्त्री हुए और श्री गोविन्द राव व्यापार और उद्योग मन्त्री हुए। शीघ्र ही विधान परिषदका उद्घाटन होगा। सभी विभागोंमें हिन्दुओं और मुसलमानोंके अनुपातमें समानता रहेगी और बालिग मताधिकार लागू होगा।

विश्वमित्र

वर्ष—३० संख्या—४८ ता० २४ दिसम्बर १९४७ 24th December, 1947. मूल्य =) वार्षिक ६)

क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे

क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?
एकाकी पनका मार गया,
यह मधुर-मिलनका प्रात नया,
ये स्वप्न नये, अभिलाष नयी,
विकसा जीवन जलजात नया,
मधुमास लौटकर आया है, जीवनके चित्र मदिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?

अवसाद गया, आह्लाद नया,
कविका जीवन हो आज नया,
प्राणोंकी सरस दिवाली है,
देखो, कैसा सुख-साज नया ?
आभा फटी है अन्तरसे, बीते सुन्दर दिन फिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?

अब म्लान नहीं जीवन कलिका,
सप्राण हुई, अम्लान हुई,
अब बहती जो जीवन सरिता,
तीखी उसकी मधु तान हुई,
सुखका चंदा चमका, सुखकी रातें, सुखके पल थिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?

अब याद नयी, इतिहास नया,
जो बीत गया सो बीत गया,
ये ढुलक रहे सुखके मोती,
इनका कुछ है अब मोल नया,
संसार नया, अब प्यार नया, मधु गान लजीले फिर होंगे।
क्या ये सुखके क्षण चिर होंगे ?

—प्रो० मित्तल एम०ए०

नारी

नभका दीप अधमुंदी आंखोंसे तन्द्रिल धरतीको निहार रहा है। इस तीसरी बेलामें तुम मी आये हो नारी का रूप देखने, ओ जीवन-पथके थके, हारे, भ्रमित बटोही !

तुम कैसे देख पाओगे। तुम पर दया आती है। नारीका कौनसा रूप देखना चाहते हो राही ? अपनेको तोल तो लो।

लज्जा, संकोच, स्नेह, भ्रम विभ्रम,आग और पानी। यह है नारी। क्या लोगे ? वह तो अतुल है न ?

जान लो, नारीका श्रद्धा रूप सबसे सुन्दर है। वह पाती है, श्रद्धा देकर। पुरुषका भ्रम तुम न पालना कहीं।

नारीसे ही नर अमर है। नारी वह है कि तुम जिस रूपमें उसे देखो, वह वही है। आज तक कोई समझ सका कि वह क्या है ? पुस्तकके पन्नेकी भांति खुली होने पर मी वह मायासी अस्पष्ट है मनकी प्यासी वह है। वही प्यासे पुरुषकी तृप्ति हैं और नारीकी तृप्ति ही नरकी प्यास। चिरंतन। वह छलना हैकि जिसे छलने जाकर छल स्वयं ठगा सा रह जाता है। जो सुलझाना चाहे,स्वयं उलझ कर रह जाये और नारी फिर मी आकाश की टिमटिम नीहारिकासी दूर अज्ञेय किन्तु पंथरानी।

तुम्हारा अज्ञान उसे अज्ञानी समझता है, उसका चरम ज्ञान उसे मौन बना देता है। छुई मुई सी, रजनी गंधा सी नारी समाजका मारी शव ढो रही है। किन्तु कौन इसे समझेगा ?

बोलो, भूले पंथी। नारीको अब मी, इस तीसरी बेलामें मी, देखना चाहते हो ? यदि हां तो सुन लो, अपनी भूख, अपनी तृप्तिके आगे नारीकी प्यास, नारीका सुख हलका न करो। उसकी दुनियासे खेल मत करो। पाने जाकर मी तुम भिखारी ही बने रहोगे। सागरके तट पर खड़े होकर तुम एक बूंदके लिये छटपटाते रहोगे। आखिर तृप्ति तुम्हें कहां !!

समर्पण चाहते हो न ? तो समर्पित होना सीखो, ओ जीवन पथके थके, हारे, भ्रमित बटोही।

सुश्री चन्द्रमुखी 'सुधा'

परहितबस जिनके मन माही।
तिन कहँ जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

युगकी मांग

हमारा देश १५ अगस्तके वाद जिन परिस्थितियोंसे होकर गुजर रहा है, हमारे बीचमें कुछ ऐसे तत्व मौजूद हैं जो राष्ट्रके हितोंको चोट पहुंचा कर भी उनसे नाजायज फायदा उठाने की उधेड़ बुनमें हैं। समाजका वर्तमान स्वरूप कुछ इस प्रकारका है कि सब तरहका अनाचार और भ्रष्टाचार करके भी ये अपना समाजमें सम्मान और प्रभाव बनाये हुए हैं। समाज का वह भाग जिसके पास शक्ति और सत्ता, अधिकारऔर नियंत्रण है,इस वर्गका पोषक और सहायक है। यही कारण है कि हमारी आजकी सरकारको इन तत्वोंको ठीक रास्तेपर लानेमें कठिनाइयां महसूस हो रही ह। देशके सामने सर्वनाश उपस्थित है, फिर भी परिस्थितियां ऐसी हैं कि हमारी सरकार उनका सामना करनेके लिये कठोर उपायोंसे काम लेनेमें इतस्ततः कर रही है। हम सरकारकी इस इतस्ततताको उसकी दुर्बलता नहीं समझते किन्तु यह अवश्य महसूस करते हैं कि राजरोग का निदान भी उसके अनुकूल होना चाहिये। देशके संकटसे नाजायज फायदा उठानेकी आदत जिनकी पड़ी हुई है उनको लल्लो चप्पो द्वारा त्याग और बलिदान करनेके लिये प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। किसीकी चितामस्मपर राजमहल खड़ा करनेमें जो अलौकिक आनन्द और उल्लासका अनुभव करता है उसकी पैशाचिकताको वशीभूत करनेके लिये हमें राम और कृष्णकी भांति कठोरता धारण करने की आवश्यकता है। बुद्ध और महात्माका आदर्श मायावी पिशाचका हृदय-परिवर्तन करनेमें कभी सफल नहीं हुआ, आज भी नहीं हो सकता। इस सर्वनाशका सामना हमें करना है, क्योंकि यह समाज और राष्ट्रकी जड़ोंको क्रमशः खोखला बनाता जा रहा है। पर सामना करनेकी बात कहना जितना सहज है काम उतनाही कठिन है, इसीलिये सरकार इतना इतस्ततः कर रही है।

देशकी मौजूदा हालतमें नयी सरकार को अधिकाधिक शक्तिशाली बनानेकी आवश्यकता है। यहबात हमें भूल न जाना चाहिये कि सरकारमें दोनोंही तत्व मौजूद है। दक्षिण पंथी और वाम पंथी दोनों तत्वोंसे मिलकर बनी सरकारके सामने हमेशा असमंजस बना रहताहै, यदि सरकारके बाहर दोनों दलोंकी शक्तियां पूर्ण संगठित और किसीभी स्थितिका सामना कर सकनेकी शक्ति और सामर्थ्य रखती है। किन्तु बाहर दोनों दलोंका शक्ति संतुलन न होनेसे प्रवल दलका प्रतिनिधित्व करनेवाले वर्गका ही सरकारमें प्राधान्य चलता है। युद्ध कालमें भारत सम्बन्धी नीतिके मामलेमें हम देख चुके हैं कि ब्रिटिश सरकारमें श्रमिक दलको सदा ही टोरी दल की नीतिके सामने झुकनापड़ा हमारी सरकारके प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरूके सामने पद पद पर दक्षिण पंथियों की ओरसे कठिनाइयां उपस्थितकी जा रहीं हैं,यह राजनीतिके समझदारोंको शायद बतानेकी आवश्यकता नहीं है। आचार्य कृपलानीका कांग्रेस अध्यक्ष पदसे त्याग-पत्र इसी बातका स्पष्ट संकेत है। खेदकी बात यह है कि देशके दक्षिण पंथी जितना संगठित और एक अनुशासनमें शृंखलाबद्ध हैं वामपंथी उतनाही असंगठित और एक दूसरेसे दूर हैं। इस स्थितिसे लाभ उठानेके लिये दक्षिणपंथी पर्याप्त चतुर और शक्तिशाली हैं। वे चाल चल रहेहैं। सरकारके नेता पंडित जवाहरलाल नेहरूके बार बार स्पष्ट यह कहने परभी कि देशके मुख्य और मौलिक उद्योग धन्धों को धीरे-धीरे राज्यके नियंत्रण और प्रबंध में लाना हमारी नीति है, फिरभी पूंजीवादी उद्योगपतियोंको विश्वास नहीं होता कि अन्तमें सरकार यही नीति अवलम्बन करने जा रही है, क्योंकि मन्त्रिमण्डलके भीतरसे इसके विपरीत दूसरी क्षीणआवाज भी आ रही है। शायद इसींसे उस दिन दिल्लीमें उद्योग सम्मेलनमें सेठ घनश्याम दास बिड़लाने यह कहनेका साहस किया कि सरकारकी दो आवाजें हैं। वह निश्चित और स्पष्ट रूपसे एक आवाजमें बोले। इस तरह प्रकारान्तरसे बजट अधिवेशनमें पार्लमेण्टमें निकली श्री षम्मुखम चेटीकी क्षीण आवाजको अश्वासन और बलप्रदान किया गया है।

दक्षिण पंथी तैयार हो रहे हैं, संगठित होरहे हैं। देशकी अतुल धनराशि, सरकारके अधिकारके स्थानोंपर ब्रिटिश सरकारके पुराने नमकखोर कर्मचारी और प्रतिगामी साम्प्रदायिक ताकतें इस दक्षिण पंथके पीछे हैं। यही कारण है कि देशके घोर संकट कालमें इस वर्गकी काली करतूतें देखकर भी नेहरू सरकार उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही कर सकनेमें अपनेको असमर्थ पा रही है और कमेटियां तथा कमीशन बैठाकर समाज विरोधी हरकतें करने वालोंकी जांचपड़ताल करके दण्ड विधानकी व्यवस्था कर रही है। इन कमीशनोंका परिणाम क्या हो सकताहै, हम भलीभांति समझ सकते हैं। अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारी सरकार समाजीकरण की नीतिकी दिशामें अग्रसर हो तो देशके तमाम वाम पंथियोंका यह कर्त्तव्य है कि अपने आपसी मतभेदोंको दूरकर संगठित रूपसे नेहरू सरकारके हाथ मजबूत करें। सम्पूर्ण रूपेण सरकारको दक्षिण पंथके प्रभावसे मुक्तकर वाम पंथियोंके नियंत्रणमें ला चुकनेके बाद इस बातका फैसला किया जाये कि सोशलिस्ट प्रधान सरकार बने या कम्यूनिस्ट प्रधान। अभी तो दक्षिण पंथ प्रधान सरकारके होनेके पूरे लक्षण दिखायी दे रहे हैं और इस अभिशापसे देशकी रक्षा करनेके लिये वाम पंथियोंको एकता देश और युगकी मांग है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन—

हिन्दी संसारके प्रसिद्ध विद्वान् डा० अमरनाथ झाने प्रयाग विश्वविद्यालयमें भाषण देते हुए कहा है कि संयुक्तप्रांतकी राजभाषा हिन्दी हो गयी है इसलिये संयुक्तप्रांतके भाषाभाषियोंपर भारी उत्तर-

दायित्व आ गया है। यदि वे हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीकृत कराना चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि अहिन्दी भाषियोंकी कठिनाइयोंको समझें। अहिन्दी भाषियोंकी मुख्य कठिनाई हिन्दीके व्याकरणके कारण है, विशेषकर लिङ्ग भेदके विषयमें, जोकि संस्कृत व्याकरणके नियमके अनुसार नहीं है। मुझे विश्वास है कि हम इस समस्याको शीघ्र ही सुलझा सकेंगे। डा० अमरनाथ झाके विचार बहुत सुन्दर और सही हैं। हिन्दी संसारको और खासकर बम्बईमें होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलनको इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। हम चाहते हैं कि अपने विद्वान और प्रगति शील सभापतिके नेतृत्वमें सम्मेलन इस दिशामें रचनात्मक कदम उठाये। हिन्दी साहित्य सम्मेलनका आजतक जो रूप रहा है वह बहुत कुछ 'राष्ट्रभाषा प्रचार सभाका सा रहा है। लेकिन अब इसकी उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्यको समृद्ध करनेकी है। हमें आशा है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन परिवर्त्तित स्थितिको देखते हुए अपने इस उत्तरदायित्वको समझेगा और साहित्य सेवियों, हिन्दी भाषा भाषियोंके सहयोगसे उसे पूरा करनेके लिये कोई सुन्दर रचनात्मक कार्यक्रम देशके सामने उपस्थित करेगा तो उसे इस कार्यमें जनता और सरकार दोनोंका ही सहयोग प्राप्त होगा।

इनकमटैक्स चोर—

यह हर्षकी बात है कि भारत सरकार का ध्यान चोर बाजारियों, बेजा मुनाफा खोरों और अवैध संचय कारियोंकी तरफ इनकम टैक्स चारोंकी तरफ भी गया है। अभी हाल ही एक इनकम टैक्स जांच कमीशन नियुक्त किया गया है। इस कमीशनका काम होगा इस बात की जांच करना कि किस तरह और कहां तक बावजूद इनकम टैक्स एक्ट और अतिरिक्त मुनाफा कर कानूनके रहते ये 'चोर' इनकम टैक्स गोल कर जाते है। नेहरू-भारतके प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल यह देखकर हैरान हैं कि हिंदुस्तान जैसे देशमें इतना भारी इनकमटैक्स होते हुए भी लोगोंके तोंद इतना कैसे बढ़ते और फैलते जा रहे हैं। चोर या ठगसे ऐसे ही बचना सहज नहीं है फिर कानून और देशके आला दिमाग जब उनके सहायक हो जाते हैं तब उनसे भगवान ही बचाये। ठीक ठीक न्याय करनेमें न्यायालयको सहायता देने और निर्दोषीकी रक्षा करने के उद्देश्यसे वकीलोंकी परिपाटी आरम्भ की गयी थी। किन्तु आज इनकी सहायता ठीक विपरीत दिशामें हो रही है। देशमें बढ़ते हुए अनाचार को रोकनेमें सहायक होने के बजाय ये वकील उसे बढ़ानेमें किसी से पीछे नहीं रहे। हत्या, लूटपाट, चोरी,ठगी, जालसाजी, बलात्कार, व्यभिचार, अनाचारको बराबर वकीलों की जेबमें शरणमिलीहै। इनकम टैक्सके मामलेमें सरकारको ठगनेमें व्यापारीके प्रयत्न में इनकमटैक्स वकील सबसे अधिक सहायक हैं। किन्तु यह दोष उनका नहीं है बलिक वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का है। जबतक यह समाज व्यवस्था—रहेगी तबतक राष्ट्र और समाज देश और सरकारको कानूनसे बचकर ठगने का काम जारी रहेगा। इसे इन जांच कमीशनों की नियुक्ति द्वारा बन्द नहीं किया जा सकता।

छठवां महादेश !!

भारतमें पाकिस्तानकी स्थापना हुए अभी जुम्मे जुम्मे आठ दिन भी नहीं बीते कि मध्य एशियामें इस्लामके नामपर छठवें महादेशके गठनकी बातें उठने लगी है। इन बातोंको उठानेवाले हैं कायदे आजमके मुखपत्र 'डान' के सम्पादक साहब। अतः इन बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती। कराचीमें मिस्रके पत्रकारोंके सम्मानमें आयोजित सभामें उन्होंने कहा है कि 'पाकिस्तानकी स्थापनाके साथ साथ मध्यपूर्वकी सीमा और भी पूर्वकी ओर बढ़ आयी है। उत्तर अफ्रीका, तुर्की, अरब देश समूह, ईरान, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तानको मिलाकर पृथक महाराष्ट्रके रूपमें छठवें महादेशकी स्थापना का समय क्या अभी नहीं आया है ? उपर्युक्त सभी राज्य इस्लामके सिद्धान्तोंके बन्धनोंमें बद्ध हैं। यह बन्धन भौगोलिक बन्धनोंसे भी अधिक मजबूत है। जनताके समर्थनसे प्रस्तावित छठवें महादेशकी स्थापना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। मिस्रके पत्रकारोंने इसका क्या उत्तर दिया यह तो मालूम नहीं हो सका है। लेकिन उन्होंने प्रस्ताव सुन अवश्य लिया है। देखें वे अपने देश लौटकर इस सम्बन्धमें क्या करते हैं। इस ओर सतर्कता रखनेकी आवश्यता है। आजके संसारमें धर्मके नामपर राज्य और देशकी स्थापना और उसको अधिक दिनोंतक चलाते रहना असम्भव ही है। एक खास धर्मके नामपर चलनेवाले राज्यमें दूसरे धर्मवालोंके साथ कैसा व्यवहार हो सकता है, पाकिस्तान इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

हिन्दी विहारकी राजभाषा—

विहार हिन्दी भाषाभाषी प्रांत है। लेकिन उसने अभीतक हिन्दीको राजभाषा के रूपमें स्वीकार नहीं किया। जबकि उसके पड़ोसी युक्तप्रांतने पहले ही हिन्दी को राजभाषा और देवनागरीको राजलिपि स्वीकार कर लिया। विहार सरकारके ऐसे रुखके कारण जनतामें काफी हलचल पैदा हुई और हिन्दीको राजभाषा माननेके लिये प्रदर्शन हुए। अब पता चला है कि विहार मन्त्रिमण्डलने हिन्दीको राजभाषा और देवनागरीको राजलिपि स्वीकार करनेका निश्चय किया है। विहार सरकार का यह निश्चय प्रशंसनीय है। ऐसी साधारण बातके लिये विहारमें प्रदर्शनोंकी आवश्यकता पड़ी यही आश्चर्यकी बात है। विहार हिन्दी भाषाभाषी प्रांत है, लिहाजा वहां कोई हिचकिचाहट क्यों ?

बधाई वाजपेयीजीको—

हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक और समालोचक विद्वान पण्डित नन्द दुलारे वाजपेयी सागर विश्वविद्यालयके कला विभागके 'डीन' के पद पर डाक्टर शब्दे के विरुद्ध बहुमतसे निर्वाचित हुए हैं। वाजपेयीजीके निर्वाचित होनेसे हमें और हिन्दी संसारको प्रसन्नता हुई है और यह स्वाभाविक ही है। हिन्दी जगतको वाजपेयीजीका परिचय देनेकी आवश्यकता नहीं है। पिछले प्रायः पचीस वर्षों से सफल समालोचक, पत्रकार, अध्यापक और साहित्य नियंताके रूपमें वाजपेयीजीने राष्ट्रकी जो सेवाएं की हैं उन्हें देखते हुए उनकी योग्यता और साधनाका जितना सम्मान किया जाये कम है ?

अफगानिस्तानकी समस्या

लेखक—श्री कृष्णाचार्य साहित्याचार्य एम० ए०

अंग्रेजी शासनमें भारत अफगानिस्तान की समस्या को नहीं सुलझा सका। यद्यपि अफगानिस्तान भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे भी भारतसे भिन्न रहा है फिर भी भारत और अफगानिस्तानके बहुतसे स्वार्थ ऐसे हैं जो अब बुद्धिमत्तापूर्वक सुलझाए जा सकते हैं। अंग्रेजोंने तो अफगानोंको जीतनेकी चेष्टा भी की थी, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। हां, इतना अवश्य हुआ कि अमानुल्ला जैसे स्वतन्त्र विचारके शासक नहीं टिक सके। कहावत प्रसिद्ध है बिल्ली दूध पी नहीं सकती तो फैलानेसे पीछे क्यों हटे? यही नीयत इन विदेशी शासकोंकी रही। रूसके विरुद्ध सीमाबन्दी करनेके लिये तथा पूरे अरब जगतपर नियंत्रणकी इच्छासे अंग्रेजोंने सदैव यह प्रचार किया कि अफगानिस्तान भारतका ही अङ्ग रहा है। इस नीतिके प्रमाणमें एक उदाहरण यथेष्ट होगा। सन् १९२९ में लेफ्टिनेंट जनरल सर जार्ज मेकमन महोदयने 'अफगानिस्तान' शीर्षक से साढ़े तीन सौ पृष्ठकी एक पुस्तक लिखी। भूमिकामें आप लिखते हैं कि:—

"वास्तवमें प्रागैतिहासिक युगसे अफगानिस्तान भारतका स्वाभाविक अंग रहा है, हमें यह दृष्टिकोण व्यापक अर्थमें अपनाना चाहिये-वह यह कि यह हिन्दू देश रहा है, यहांके निवासी क्रमशः हिन्दू थे। जाति, भूगोल और राजनीतिक दृष्टिसे दोनों एक रहे हैं।" यहां तक लिखना कोई बड़ा भारी अनैतिहासिक कार्य न था। लेकिन आगेकी पंक्तिमें लेखक महोदयका मंतव्य स्पष्ट हो जाता है, आप लिखते हैं "सन् १८३१ और ३२ की अंग्रेजी नीति इसी आधारपर थी, और वह ठीक थी।" अतः अब स्पष्ट हो गया कि क्यों अंग्रेज भाई भारत और अफगानिस्तानको एक करना चाहते थे। और ठीक इसके विपरीत बर्माको भारतसे सदैव प्रथक् बतलाया गया।

जो कुछ भी हो। अंग्रेजोंकी नीतिने अफगानिस्तानके वीर और स्वातन्त्र्य प्रेमी निवासियोंको अपना शत्रु बना लिया। ऊपरसे जो भाव रहा हो, अफगान भीतरसे अंग्रेजों पर विश्वास नहीं कर सकता, यह एक कटु सत्य है। लेकिन अब भारत और अफगानिस्तानके बीचकी बनावटी राजनीतिक दीवार हटा दी गई है, अतः अब पुनः दोनों पड़ोसियोंको समयकी गतिके साथ आगे बढ़नेका अवसर मिला है। यह सत्य है कि हम दोनोंके बीचमें भी पाकिस्तान नामक एक अंग्रेजी परस्त नकली राष्ट्र खड़ा कर दिया गया है। पुनः यह भी सत्य है कि धोखेकी टट्टी कितने दिन खड़ी रहेगी। इसे स्वयं गिरना पड़ेगा।

(२) आजकी समस्याएं

आज भारत और अफगानिस्तानके बीच कई ऐसी समस्याएं हैं कि जिनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। उनकी अवहेलना करनेसे तो हम दोनोंका ही अहित होगा। दुर्भाग्यसे समस्याएं विकट हैं और एक दो से अधिक हैं। मूल रूपमें तीन रुकावटें हैं—आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक।

१—राजनैतिक समस्या-तो यह है कि भारत, रूस और अफगानिस्तानकी सीमाएं मिलती हैं। इस समय तो हम काश्मीर होकर ही अफगानिस्तानसे अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। तो सीमा सम्बन्धी समझौतोंके अतिरिक्त हम आपसमें किन आधारों पर एकताके सूत्रमें आबद्ध हो सकते हैं?

२—आजकी दुनियामें आर्थिक पहलू पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। पाकिस्तानका उदाहरण हमारे आपके सम्मुख है। अफगानिस्तानके सम्बन्धमें भी हमें ज्ञात है कि वह अति गरीब देश है। वहां रेल, तार आदिका अभाव है। अफगानी आज भी सोलह और सत्रहवीं शताब्दीके वातावरणमें है। हां पिस्तौल और बंदूकों जैसे आधुनिक शस्त्रादि मिल ही [illegible] पड़। भारतको भी पहाड़ी देशकी मेवा, ऊन की आवश्यकता बनी ही रहती है। कोयला और लोहा भी अफगानिस्तानमें है, लेकिन वैज्ञानिक हाथोंके अभावमें आज तक केवल जूता, सलाई और साबुन आदिके कारखाने ही खुल सके हैं। भारत और अफगानिस्तानके बीच कोई सुदृढ़ आर्थिक आधार निकल आये तो दोनों देशोंका कल्याण है।

(३) सामाजिक समस्या

भारत और पाकिस्तानके बीच सामाजिक समस्याएं भी हैं। उनमें प्रमुख समस्या है कबायली क्षेत्रोंका पुनर्निमाण! भारतके ४ करोड़ चांदीके टुकड़ोंने उनके दिमाग खराब कर दिये हैं। शिक्षाका उनमें नाम नहीं है, फिर भला वह सभ्यताको क्या समझें। भारत और अफगानिस्तानके सहयोगसे ही इनको सुशिक्षित और स्वशासित समुदाय के रूपमें बदला जा सकता है। हम दोनोंके सुदृढ़ सम्बन्धके लिये यह नितांत आवश्यक है कि बीचमें बसने वाले इन लोगोंको उच्छृंखल और शासन हीन वातावरणसे हटाकर सामाजिक ढङ्ग से रहना सिखलाया जाय।

सामाजिक समस्याओंमें हम ऐशियावासियों को एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिये, वह यह की समस्त ऐशिया ही हम लोगोंका समाज है। जब तक हम सब व्यापक तत्वको समझें बिना आगे न बढ़ेंगे तब तक हम लोगोंका कल्याण नहीं है। अगर हम सामाजिक समस्याओं में भी राजनीतिक चालोंका समावेश करने लगे और सहायताके नाम पर 'डालर नीति' और 'चार्टर नीति'का अनुसरण करने लगे तो हम पिछड़े ऐशिया वासियोंकी स्थिति क्या हो जायगी—यह कल्पना इस योरपके सङ्कटग्रस्त बादलोंको देखकर कर सकते हैं। पठानिस्तानकी स्थापना से सीमा सम्बन्धी विवादका अंत तो होगा ही साथ ही पठानोंको अपनी उन्नतिका रास्ता मिलेगा।

(४) पठानिस्तानकी कल्पना

पठानिस्तान संज्ञासे उन्हें राजनीतिक एकता प्राप्त होगी और उसके आधार पर वह समाजिक और आर्थिक सङ्गठन कर सकेंगे।

इस दृष्टिसे पठानिस्तानकी कल्पना बहुत ही सुन्दर है। कबायली क्षेत्रों का स्थान उसी स्थितिमें हो सकता है जबकि हम उनमें आत्म विश्वास पैदा करें। आत्म विश्वास की भावना उन्हें पठानिस्तान देनेसे मिल सकती हैं। यों क्षुद्र दृष्टिसे देखें तो हमको सीमा प्रांतका घाटा ही रहेगा। लेकिन व्यापक दृष्टि यह बतलाती है कि इस स्वातंत्र्य प्रेमी पठान जातिको जिम्मेदारीका बोझ देकर अधिक अनुशासन प्रिय बनाया जाय। योग्य, अनुशासित, शक्तिशाली और एकता के सूत्र में बंधा पठानिस्तान, वर्तमान लूट मार करने वाले जन समूहसे कहीं अधिक कल्याण प्रद होगा। और यह कल्याण भारत और अफगानिस्तान दोनोंकी दृष्टिसे शोभनीय है। इस कल्याण में वास्तविकता ने भी रूपरङ्ग भरना प्रारम्भ कर दिया है। समाचारोंसे तो ऐसा ही लगता है कि काबुलमें आजाद पठानिस्तान सरकार स्थापित हो गयी है। और यह भी सुना जा रहा है कि काबुल सरकार भारत सरकारसे उक्त सरकारको मान लेनेकी बात पर जोर द रही है। लेकिन नई सरकारको इस तरह नहीं माना जा सकता। यह समस्या तो मताधिकार (रेफरेन्डम) के आधार पर ही सुलझाई जा सकती है। पाकिस्तान राज्य कबतक बलपूर्ण शासन करेगा। उसके सम्मुख भी तो समस्याएं हैं। वह कबीलों की आर्थिक मांग पूरी नहीं कर सकती। वह सीमाप्रांतका अतिरिक्त व्यय नहीं दे सकती। तो फिर क्यों न उन्हें स्वतंत्र कर अपना और उनका भला करे। पाकिस्तान या कोई भी जनमतकी अवहेलना नहीं कर सकता। पठानोंमें स्वतंत्र होनेकी हार्दिक इच्छा है तो उन्हें कोई नहीं रोक सकता।

अंग्रेजों के समय से ही अफगानिस्तान भारतके लिये समस्याके रूपमें ही आता है। उससे पहले मुगलोंके समयमें वह भारतका सीमाप्रांत था काबुलमें इस प्रांतका प्रधान केन्द्र था। मुगलोंसे पहले सैयद और लोदी वंशोंने भारतपर राज्य किया था, वे सब अफगानिस्तानके निवासी थे। कहनेका सीधा सा तात्पर्य है कि उस समयसे पूर्व अफगानिस्तान और सीमा प्रांत पर विदेशियोंका शासन रहा या भारतीयों का! परस्पर भय या आशङ्का की गुंजायश कमी न रही।

आज भारत नये युगमें प्रवेशकर रहा है। अतः नवीन परिस्थितियोंमें नवीन जिम्मेदारियां भी बढ़ गयी हैं। सहस्रों वर्षों की परतन्त्रताका प्रथम कुफल तो यह था कि हम अपने पड़ोसियों को भूल गये या हमने उनसे बुरे सम्बन्ध स्थापित कर लिये। इस तथ्यका उद्घाटन पं० जवाहर लाल नेहरूने ऐशियाई सम्मेलनके अवसरपर प्रथम सन्देशमें बड़े ही काव्यमय ढंगसे किया था। आज सहस्रों वर्ष की बिछुड़ी हुई परम्पराको जीवनदान देनेके लिये यह आवश्यक है कि हम अफगानिस्तानके सम्बन्धमें अधिकसे अधिक जानें।

(५) अफगानिस्तानकी सीमाएं

अफगानिस्तानके उत्तरमें सोवियत संघकी प्रजातन्त्र रियासतें, पश्चिममें ईरान, पूर्वमें काश्मीर, काशगर और भारतका सीमाप्रांत और दक्षिणमें बलूचिस्तान है। स्पष्ट है कि भारत अफगानिस्तानसे दो ओरसे घिरा है और दोनों ओरसे आवागमनके रास्ते हैं। सीमाप्रांतसे खैबरके दर्रेसे लेकर डूरेंड लाइन (अफगानिस्तान की सीमा) तक अब आने जानेमें सुभीता है। प्लामू यहांकी प्रसिद्ध नदी है जो सोवियतकी सीमापर ४०० मीलकी सीमाबंदी करती है। और छोटी नदियां भी हैं जो यातायातके साधनमें नहीं आतीं क्यों कि पहाड़ी देशमें अति तीव्र बहती है, हां विद्युत उत्पादनके कामकी है।

जलवायु

हम सब जानते ही हैं कि अफगानिनिस्तान पहाड़ी देश है। दसवां हिस्सा ही कृषि योग्य है। रात अति शीतल और सुहावना रहता है। जाड़े कड़ाके के! हां दक्षिण और दक्षिण पश्चिम इतने ठिठुरने वाले नहीं। मेवों के देशके ये पठान लम्बे चौड़े सुन्दर और तन्दुरुस्त होते हैं। पहाड़ी देशमें उत्पन्न होनेके कारण सहनशीलता और आत्म विश्वासकी मात्रा पठानोंमें बहुत है। पूर्वी देशोंके बहुत से राष्ट्रोंकी तरह पठान भी अतिथि सेवा और सत्कारको परम धर्म समझते हैं। पठान असभ्यता कर सकता है, क्रोध आनेपर मार भी सकता है, लेकिन उसे झूठ, धोखा और छल फरेबसे घृणा है।

व्यापार-भेड़ोंका देश

देश भर में भेड़ चरानेके दृश्य दीख पड़तेहैं। भारतमें काश्मीरही उत्तम ऊन पैदा करताहै। यों भेड़ अफगान संस्कृति का प्रमुख अंगहै, यह वहां का मुख्य मांसाहारहै, और उसी की पूंछ का तेलही मक्खन का कार्य करताहै। दूध और दही भी भेड़के दूधका ही मिलेगा। क्या व्यापार की दृष्टिसे और क्या खाद्य पदार्थकी दृष्टि से अफगान भेड़ सून्य होकर नहीं रह सकता। हमारे जीवनमें जो महत्व गायका है वही उनके जीवनमें भेड़ का, हां भेड़में धार्मिक भावना का आरोप वे लोग नहीं करते। ऊन उत्पादनका केन्द्र होनेके कारण अफगानिस्तान कंबल गलीचा आदि ऊनी कारीगरी की चीजों के लिये दूर दूर तक प्रसिद्धहै। अतः सैकड़ों बर्षों से युवा और वृद्ध अफगान अपने पुराने तरीकों पर एक से एक सुन्दर कलाकृतियां प्रस्तुत करतेरहते हैं। ये मजबूत और सुन्दर कालीन पश्चिम में यूरोप के भवनोंसे लेकर पूरबमें बादशाहोंके महलों को बहुत दिनोंसे सुशोभित करते आतेहैं।

भारतमें काबुल के घोड़े भी प्रसिद्धहैं। पठान और मुगलदारीसे लेकर आज तक भारतीय सेनाओंमें काबुली घोड़ोंकी सराहना होती रहीहै। अफगानिस्तानके उत्तरी भागमें घोड़ों का अच्छा व्यवसाय होताहै। हैरात, काबुल, कंधार और लग्मान में रेशमके कीड़े पाले जातेहैं और रेशमी कपड़ोंका व्यवसाय भी न्यूनाधिक मात्रा में होता है।

(शेष २२ में पढ़िये)

श्रम और पूंजीका संघर्ष रोकना आवश्यक

—पंडित नेहरू

भारतकी आर्थिक नीतिके आधार पर विचार करते समय सबसे पहले भारतीयोंके हितको ध्यानमें रखा जायेगा और इससे सम्बन्धित अन्य तमाम विषयों और प्रसंगों पर इसी बातको प्रधान मानकर विचार किया जायेगा।

भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने उस दिन कलकत्तेकी अपनी चौबीस घण्टेकी यात्रामें अङ्गरेजोंके सम्मिलित व्यवसायिक सम्मेलन (एसोशियेटेड चैम्बर्स आफ कामर्स) में देशकी अर्थ व्यवस्थासे सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उक्त वक्तव्य‥ी घोषणा की थी। यूरोपियन व्यवसायियों और उद्योगपतियोंको उद्देश्य करके ही पण्डितजीने साफ-साफ कहा कि देश‥ी प्रगतिमें किसी रुकावटको बर्दाश्त नहीं किया जा सकता और उसे रास्तेसे हटना या हटाना ही पड़ेगा।

राज्य नियन्त्रण

देशके उद्योग धंधोंका आज जिस तरह निजी स्वार्थके लिये अंधा-धुंध संचालन हो रहा है उसे देखते हुए जनताकी सरकारका ध्यान इस निरंकुशताकी ओर जाना स्वाभाविक था। देश और विदेशके पूंजीपतियोंको स्वार्थलिप्साने जो स्थिति उत्पन्न कर दी है उसे अधिक काल तक अनियन्त्रित रखना देशके साथ विश्वासघात होता। नेहरू सरकार इसे समझती है वह धीरे धीरे मौलिक और मुख्य-मुख्य उद्योग धंधोंको अपने नियंत्रण और प्रबन्धमें लेनेकी योजना तैयार कर रही है, यह संकेत भी उक्त सम्मेलनमें नेहरूजीने स्पष्ट रूपसे दिया और बताया कि निजी व्यवसाय वाणिज्य सीमित दायरे तक ही फलने-फूलने पायेगा। इन चेतावनियोंके साथ-साथ पण्डितजीने यूरोपियन अर्थपतियोंको इस बातका आश्वासन भी दिया कि विदेशी पूंजी और कला-कौशलका पूर्ण बहिष्कार करने हम नहीं जा रहे किन्तु ऐसी [illegible] नहीं दिया जा सकता जिससे देशकी आर्थिक स्वतन्त्रता कुण्ठित हो।

व्यवसायियोंकी ओरसे इस बातका दबाव डालना शुरू हो गया है कि सरकार उद्योग धंधोंको अपने रास्ते चलने दे और सरकारी हस्तक्षेप न किया जाये। पण्डित नेहरू इस सुझावको माननेको तैयार नहीं हैं। वे कहते हैं कि यह असम्भव है कि कोई सरकार पूंजीपति और श्रमिक, किसान और जमींदारके सम्पर्कोंमें दिलचस्पी न ले। खासकर जब इन दोनों सत्तामदमत्त वर्गोंके कारनामे सबके सामने हैं। नेहरू सरकार इन सब अभिशापोंसे भलीभांति अवगत है और

(ऊपर) मजदूर संघर्ष से........
(नीचे) जादूगर माउंट बैटन, सुननेमें आया है, हिन्दुस्तान पाकिस्तान एक कर देंगे।

इसीलिये वह देशको इनके रक्तशोषक पंजेसे मुक्त करनेकी योजना लेकर आगे बढ़ना चाहती है। देशके विभाजन और उसके फलस्वरूप पञ्जाब, फ्राण्टियर और काश्मीरमें उत्पन्न भयंकर स्थितिने इस दिशाकी प्रगतिमें जबर्दस्त रुकावट खड़ी कर दी है, फिर भी सरकारको विश्वास है कि जन साधारण और श्रमिकोंका सहयोग मिलनेसे शीघ्रातिशीघ्र वह देशकी काया पलट देनेमें समर्थ होगी।

उद्योग सम्मेलन

इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता कि आज देशकी प्रथम और सबसे बड़ी आवश्यकता उत्पादन बढ़ानेकी है। किन्तु देशकी वर्तमान आर्थिक प्रणाली और उसका संचालन उत्पादन वृद्धिके मार्गमें सबसे बड़े रोड़े हैं। जिन कारणोंने हमारे उद्योग धंधोंकी गर्दन पर फांसीकी रस्सी कस रखी है उनको कैसे दूर किया जाये और उत्पादन बढ़ानेके लिये किन उपायोंसे काम लिया जाये आदि बातों पर विचार करनेके लिये भारत सरकारकी ओरसे गत सप्ताह दिल्लीमें एक उद्योग सम्मेलनका आयोजन किया गया था। इस सम्मेलनमें प्रांतों, राज्यों उद्योग और व्यवसाय एवं श्रमिकोंके प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। सरकारके उद्योग सचिव डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जीने इसका उद्‌घाटन करते हुए ठीक ही कहा कि यह कितने दुर्भाग्यकी बात है कि हमारी जैसी शस्यश्यामला, उर्वरा, रत्नगर्भा, प्राकृतिक और मानवी शक्ति और साधनोंसे सब भांति सम्पन्न देश दयनीय दरिद्रताका घर बना हुआ है। देश धनधान्यसे पूर्ण है, फिर भी लोग भूखों मर रहे हैं हमें इस गोरखधंधेको सुलझाना है।

खबर है कि मि० जिन्ना पाकिस्तान के प्रधान स्काउट बनाये गये हैं—

दो आवाजें

इस गोरखधंधेको सुलझानेके लिये सरकारको दो नाव पर पैर रखनेकी नीतिको तिलाञ्जलि देनी पड़ेगी। जो लोग देशमें एक तरफ अपार धनराशि और दूसरी ओर भयंकर गरीबीके लिये जिम्मेदार हैं उन पूंजीपतियों और उद्योगपतियोंको जब तक सरकार यह कहनेका अवसर देती रहेगी कि "सरकारकी वस्तुतः दो आवाजें हैं" अर्थात जब तक सरकारमें जनताके हितोंको रौंदकर पूंजीपतियोंकी समृद्धि चाहनेवाले श्री षम्मुखम चेट्टी जैसे व्यक्ति रहेंगे तब तक यह गोरखधंधा भी रहेगा। इसीसे १५ दिसम्बरको भारत सरकारके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूके व्यवसायियों और उद्योगपतियों को महत्वपूर्ण बैठक में स्फटिक तुल्य स्पष्ट और सरल शब्दों में यह घोषणा करने पर भी कि सरकार, धीरे धीरे देशके मौलिक और मुख्य-मुख्य उद्योगोंको राज्यके नियंत्रण और प्रबन्धमें लानेकी नीति" अपनाने जा रही है एवं निजी उद्योगके लिये सीमित क्षेत्र रह जायेगा।" सेठ घनश्याम दास बिड़ला को दूसरे दिन दिल्लीमें उद्योग सम्मेलनमें यह कहनेका साहस हुआ कि "सरकारकी दो आवाजें" हैं। नेहरूकी इस घोषणाकी अपेक्षा भारतके उद्योग पतियोंको सर षम्मुखम जैसे व्यक्तियोंकी बातोंमें अधिक बल मिलता है और स्वभावतः ये सर षम्मुखमके हाथ मजबूत और पण्डितकी ताकत कमजोर करनेके लिये घृणितसे घृणित षडयन्त्र कर सकते हैं। सरकारकी आवाजें दो नहीं है एक है और वह एक आवाज पण्डित नेहरूकी है जिस दिन बिड़ला, ताता और डालमियां समझ लेंगे उसी दिन यह गोरखधंधा या तिलिस्म टूटेगा कि धनसे लबालब पूर्ण देशमें लोग भूखों क्यों मर रहे हैं।

उत्पादन बढ़ाना चाहिये

पांसा किधर पड़ता है, सरकारकी एक आवाज जनताकी आवाज रहती है या जनता वेशधारी पूंजीपतिकी आवाज होती है, इसका फैसला दूरकी बात है। आजकी बात यह है कि इस समय देश जिस तङ्गीका शिकार हो रहा है उससे बचानेके लिये आवश्यक है कि तत्काल उत्पादन बढ़ाया जाये। गत बृहस्पतिवार को उद्योग सम्मेलनमें बोलते हुए भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलालने इसी समस्या पर प्रकाश डाला और कहा कि स्थितिका तकाजा है कि इस समय श्रम और पूंजीका संघर्ष युद्ध विराम संधि द्वारा रोका जाये। उत्पादनका ह्रास रोकना आवश्यक हो गया है। पण्डित नेहरू कहते हैं कि पिछले कई महीने भारत सभी तरहके जबर्दस्त सङ्कटोंसे होकर गुजरा है और हमें सामने उपस्थित पर्वताकार समस्याओंका सामना करना है। इसके विपरीत हम देख रहे हैं कि आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही है। हम वितरणकी चर्चा करते हैं और ठीक ही करते हैं। इसके महत्व को इनकार नहीं किया जा सकता किन्तु वितरणका क्रम आरम्भ करनेके पहले हमारे पास वितरणके लिये कुछ पर्याप्त होना भी तो चाहिये। उत्पादन बहुत-सी बातों पर निर्भर है और इनमेंसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि उत्पादानका मनोभाव हममें होना चाहिये। इस मनोभावके अभावमें उत्पादनका गिरना अनिवार्य है। उत्पादन गिरनेके बहुत कारण हैं। युद्धके बाद कठिन काम जन्य क्लान्ति आती ही है। विभाजनसे राजनीतिक उलट-फेर, साम्प्रदायिक झगड़े ऐसे ही और भी कारण हैं। किन्तु औद्योगिक सम्पर्कमें सबसे बड़ी बात, जिसका हमें सामना करना है वह मनोवैज्ञानिक पृष्ठ भूमि है जिससे श्रमिक समझता है कि उसके साथ इनसाफ नहीं किया जा रहा है।

मालिक समझते हैं कि उनके सामने खतरे ही खतरे हैं और श्रमिक अपनी शक्ति भर काम नहीं कर रहा, निरंतर हड़तालोंकी धमकियां दे रहा है, कामकी प्रगतिको मन्द कर रहा है और भी इसी तरहकी कितनी ही बातें हैं। परिणाम-स्वरूप पूंजीपति और श्रमिक एक दूसरे को पूर्ण अविश्वाससे ही नहीं बल्कि चरम शत्रुताकी दृष्टिसे देखते हैं। इस स्थिति से कैसे पार हुआ जाये ?

इस सम्बन्धमें पण्डितजीका कहना है कि श्रमिकको ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये किराष्ट्रको चोट लगे। मालिकोंका जहां तक अम्बन्ध है पिछले युद्धके दौरानमें एक वर्गने अच्छा सलूक नहीं किया। दरअसल यह कहना चाहिये कि इन लोगोंने बेहद ज्यादतियां कीं। न्याय की कौन कहे इन्होंने अपनी बात छोड़कर और किसीकी चिन्ता ही नहीं की। अभी तक मैं यह नहीं समझ सका कि हिन्दुस्तानमें इतना जबर्दस्त टैक्स होते हुए भी कतिपय व्यक्तियों अथवा गुटोंने कैसे अतुल धन कमाया। इस तरहके निर्लज्ज घृणित व्यापार को जो राष्ट्र और अन्योंको क्षति पहुंचा कर लाभ उठाया जा रहा है, रोकनेके लिये हमें उचित उपायों और प्रणालीका अवलम्बन करना होगा। यह बात सही है कि हम प्रत्येकको देवता नहीं बना सकते। लेकिन ऐसे हालात तो पैदा ही किये जा सकते हैं कि जो देवता नहीं हैं वे सहजही रोकड़ बाकी न बढ़ा सकें और अपने इस कर्ममें उनको कठिनाइयां महसूस हों। कहनेका तात्पर्य यह है कि यदि ये बड़े आदमी सीधेसे ईमानदारी और न्यायके मार्ग पर न आयें तो ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाये कि दूसरे मार्गमें पद पद पर असुविधाएं उनके सामने खड़ी हों। किन्तु यह स्थिति अभी आनेमें देर है। तबतक बीचका कोई रास्ता निकालना चाहिये। वह रास्ता यह है कि फिलहाल कुछ दिनोंके लिये युद्ध विराम सन्धि हो जानी चाहिये।

———०———

भारतके दंगे—उनका आर्थिक आधार

लेखक श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डे

'दंगा' शब्द के सुनते ही राजनीतिक कारणों के परिधान से लदा हुआ एक ढांचा सामने आ जाता है। और वस्तुतः बातभी ऐसी ही है क्योंकि दंगों का राजनीतिक पक्ष काफी सबल है। इनके धार्मिक या सामाजिक पक्षभी होते हैं। परन्तु यहां मेरा अभिप्राय भारतके वर्तमान दंगों से है जिनमें राजनीतिक पक्षकी प्रधानता स्पष्टही है अर्थात किसी निश्चित राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति की दिशामें ही इन दंगों का संचालन और प्रारम्भ हुआ है।

भारतके ये दंगे किसी एक ही स्थल तक सीमित नहीं रहे। पूरब में बंगालके कलकत्ता और नोआखाली तथा ढाका से लेकर पश्चिममें सिन्धके करांचीतक; उत्तरमें पश्चिमोत्तर प्रदेशसे लेकर दक्षिणमें बम्बई और हैदराबाद तक इनका देश- व्यापी प्रभाव रहा। बिहार, यू० पी०, पञ्जाब और काश्मीरमें भी जो नृशंसताएं हुईं उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। बंगाल और पञ्जाबमें जिन क्रूरताओंका प्रदर्शन किया गया उन्हें कोई भी पुरुष, कोई भी जाति और कोई भी देश इस मानव- जीवन के इतिहासमें फिर से दुहरा नहीं सकता—क्योंकि वे अपनी सीमाएं लांघ चुकी हैं और इतनी ही भीषण भी हैं।

परन्तु क्या देश के स्त्री और पुरुष इतनी असह्य कठिनाइयां झेलते हैं केवल राजनीतिक उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये ही! क्या उनके विचारोंमें आर्थिक उद्देश्योंका कोई स्थान नहीं होता? होता है क्यों नहीं? आर्थिक कारण ही तो हर जगह राजनीतिक उपद्रवों और युद्धोंकी जड़में वर्तमान हैं। यह तो सुनिश्चित ही है कि किसी भी युद्धके जितने भी कारण हो सकते हैं उनमें आर्थिक कारणोंका एक महत्वपूर्ण स्थान है। और युद्ध? दो देशों के परस्पर स्वार्थोंमें मुठभेड़ हो जानेहीका तो फल है। फिर स्वार्थ और 'अर्थ' का घनिष्ट संबंध। कोई देश धनी होना चाहता है। धनी बनने के लिये व्यापारमें वृद्धि होनी आवश्यक है। व्यापार- वृद्धिके लिये कच्चे माल और बाजार चाहिए। बस, तब क्या! चले बाजार खोजने और छिड़ गया युद्ध— क्योंकि धनी तो सभी होना चाहते हैं। कोई एक ही देश धनी होनेके लिये पट्टा थोड़े ही लिखा सकता है। अस्तु स्वार्थोंकी प्रतिकूलता और स्वार्थोंके मूलमें आर्थिक कारण ही युद्धके चक्रव्यूहकी रचना करते हैं।

युद्ध छोटे भी होते हैं और बड़े भी। देश और देशके बीचमें युद्ध होते हैं और समुदाय तथा समुदायके बीच भी— जब कि कुछ देश एक समुदायमें एकत्रीभूत होते हैं और कुछ अन्य देश दूसरे समुदाय का पक्ष लेते हैं और उसकी सहायता करते है। परन्तु एक ही देशके भीतर भी विभिन्न समुदायों में परस्पर युद्ध होते हैं जिन्हें गृह- युद्ध अर्थात 'अपने घर यानी देशमें लड़ाई' इस नाम से पुकारते हैं। गृह- युद्धों का दूसरा नाम दंगा भी हो सकता है। भारतमें अभी हाल में जो दंगे हुए और हो रहे हैं वे मुस्लिम सम्प्रदाय और हिन्दू सम्प्रदायके बीच हैं। हिन्दू सम्प्रदाय के भीतर अछूत और सिख सम्मिलित हैं। भारतके ये दंगे एक छोटे पैमाने पर युद्ध की प्रतिमूर्ति कहला सकते हैं। अस्तु हम युद्धकी ही भांति दंगोंके मूलमें भी आर्थिक कारणोंको यानी इन भारतीय उपद्रवोंके आर्थिक आधार को उपस्थित कर सकते हैं।

अर्थशास्त्र का उद्देश्य मानव- जीवन को अधिकसे अधिक सुखमय बनानेका है। अर्थशास्त्र पर लिखी गयीं पुस्तकोंके पृष्ठ के पृष्ठ उन नियमोंके भारसे बोझिल हैं जो उसके उद्देश्यकी प्राप्तिमें सहायक कहे जाते हैं। परन्तु अर्थशास्त्रका कोई भी नियम यह नहीं बताता कि दंगे भी किसी भी

(ऊपर) कलकत्ते के प्रगाढ़ प्रेमसे नेहरूजी को भय! (नीचे) पूर्वी पाकिस्तानमें राष्ट्र-भाषाके प्रश्नपर भयानक प्रतिद्वन्दिता

भांति सुख- समृद्धिमें सहायक हो सकते हैं। फिर भी यह जानना चाहिये कि किसी एक खास सम्प्रदायको सुखी और समृद्धिशाली बनानेकी भावना दंगोंके मूलमें निहित है। और उस सम्प्रदायका ऐसा विचार हो कि हम अधिक सुखी, समृद्धिशाली तथा दूसरे सम्प्रदाय की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ बनें, दंगा करा बैठता है। भारतमें मुस्लिम सम्प्रदाय, हिन्दू सम्प्रदायसे अलगहोकर अपनेको अधिक सुखी और श्रेष्ठ देखना चाहता है; और यही है इन भारतीय दंगों का आर्थिक आधार— क्योंकि सुखी और प्रसन्न होना ही अर्थशास्त्रका अन्तिम और एक मात्र उद्देश्य है।

पर प्रश्न यह हो सकता है कि मुस्लिम सम्प्रदायमें हिन्दू सम्प्रदायसे अलग होनेकी भावना और फिर अलग होकर अधिक श्रेष्ठ सुखी और समृद्धिशाली बनने की भावना क्यों पैदा हुई! इसके उत्तर में अनेक कारण

उपस्थित किये जा सकते हैं; परन्तु हमें तो तात्पर्य है केवल आर्थिक कारणों से। मुस्लिम सम्प्रदायका अपना यह विश्वास है कि हिन्दू- समाज में हमारा आर्थिक-शोषण हो रहा है। उन्होंने यह भी सोचा कि यहां हमारे हितों और स्वार्थों की रक्षा ठीक- ठीक नहीं हो सकती; अस्तु, और स्वार्थ और 'अर्थ' का जो अन्योन्याश्रय संबंध है उसे हम पीछे बता चुके हैं। प्रश्न का दूसरा भाग जो अधिकतर श्रेष्ठ और सुखी बननेकी भावनासे सम्बन्धधितहैं, वह प्रतिस्पर्द्धाका विषय है।

और फिर अधिक शक्ति इकट्ठा करके हिन्दू सम्प्रदाय पर आर्थिक गुलामी लाद देदाभी अप्रत्यक्ष रूपसे उनका एक उद्देश्यहो सकता है—चाहे भले ही वह स्वप्नमें भी कार्यरूप में परिणत न किया जा सके तो क्या? उन्होंने समझा होगा कि मुसलिम सम्प्रदाय का एक अपना अलग राज्य होगा। केवल उनके लिये नौकरियां होंगी। उनके अपने व्यापार और व्यवसाय होंगे। उनके निजी बैंक होंगे। उनके लिये यातायातके अच्छे साधन रहेंगे। उनका अपना उत्पादन होगा। उत्पादनके साधन रहेंगे। उनका वितरण होगा। वे हीउसका उपभोग करेंगे। और रहेंगे उनके अपने ही टैक्स उनकीही सविधाओंके अनुसार। उनकी अपनी शिक्षा—योजना चलेगी, उनकी अपनी खेती की स्कीम होगी और करेंगे वे अपने स्वास्थ्य का प्रबन्ध। ये विचार भले ही कार्यान्वित न किये जा सके, परन्तु उनके इने—गिने नेताओंके मस्तिष्क में इनका स्थान तो अवश्य ही होगा। और इनका अर्थशास्त्र के ज्ञान तथा प्रयोगसे कितना संबंध है।

अन्तमें दंगाके परिणाम पर बिना दृष्टिपात किये विषय अधूराही छूट जायगा। देश के प्रत्येक भागमें जहां कहीं भी ये उपद्रव हुएहैं वहांको जनताको काफी आर्थिक क्षति उठानी पड़ीहै। परन्तु जिस विरोधी सम्प्रायका वहां बोलबाला रहा उसे आर्थिक लाभ भी हुआहै। यह कैसे, इसे यहां बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं। पर इतना तो अवश्य कहा जासकताहै कि हिन्दू सम्प्रदाय को बहुत अधिक आर्थिक क्षति उठानी पड़ी है। उन्हें प्रत्येक स्थल पर अपने घर, अपनी जमीन, अपने जानवर, अपने रुपये पैसे तथा अपने कपड़े और आभूषणों से भी हाथ धोना पड़ा है और जो जानें गयीं हैं सो अलग। उनकी आर्थिक क्षतिके मुकाबले दूसरे विरोधी सम्प्रदाय की और नहीं तो कमसे कम आर्थिक क्षति नहीं के बराबरहै। क्योंकि प्रायः प्रत्येक स्थान पर हिन्दू सम्प्रदाय को ही आर्थिक—प्रभुत्व प्राप्तहै। अतएव, दंगों केपरिणामका भी 'अर्थ' से घनिष्ट सम्बन्ध है और उनके कारणोंके मूलमें तो आर्थिक आधार है ही।

हिन्दू चले जाएंगे तो ...?

एक गैर सरकारी खबर है कि पाकिस्तानके गवर्नर जेनरलने सीमाप्रांतके गवर्नरको निर्देश दिया है कि वहांके गैर मुसलमान दूसरी जगह नहीं चले जायं, इसकी पूरी खबरदारी रखी जाय। डेरा इस्माइल खांके मुस्लिम लीगियों एवं कुर्रम उपत्यकाके निवासियोंने मि० जिन्नाको सूचित किया है कि हिन्दू और सिखोंके घरवार छोड़कर चले जानेसे आर्थिक सङ्कट उपस्थित हो जायेगा तथा वाणिज्य-व्यवसायका मार्ग पूर्ण रूपसे बन्द हो जायेगा। अगर सरकार का जान हिन्दुओं नहीं रोकेगी तो विद्रोह हो जा सकता है। ऐसी सूचना पाकर मि० जिन्नाने सीमा प्रांतके गवर्नर कनिङ्घमको डेराइस्माइलखां और कुर्रम उपत्यकाका दौरा करनेका निर्देश दिया। उपर्युक्त निर्देशके अनुसार सर जार्ज कनिङ्घम उक्त स्थानोंपर गये और उन्होंने गैर मुसलमानोंसे अपने घरबार छोड़कर न जानेका अनुरोध किया। लेकिन इतना सब होनेपर भी हिन्दू और सिख अब पाकिस्तानमें रहना नहीं चाह रहे हैं। कई हिन्दू और सिख परिवार अफगानिस्तान चले गये हैं। कुछ परिवार शीघ्र ही सीमाप्रांत छोड़नेकी प्रतीक्षामें हैं।

अफगानिस्तानकी समस्या

(८ वें पृष्ठका शेषांश)

जातियां और भाषाएं

अफगानिस्तानमें केवल अफगान जाति केलोगही नहीं रहते। हां बहुमत उन्हींका है, वही शासक हैं। इनके अतिरिक्त वहां और भी जातियांहैं जिनका संक्षिप्त विवरण भी प्रथम लेख का विषय है। यहां इतना जान लेना आवश्यकहै कि अधिकतर संख्या पुश्तू बोलने वालों की है। स्कूलोंमें मातृ भाषाके रूपमें पुश्तू और फारसी ही पढ़ाई जातीहै, ये दोनों आर्य भाषाएं हैं। अरबी और तुर्की विदेशी भाषाओं के साथ वैकल्पिक विषयके रूपमें पढ़ाई जातीहै। अफगानिस्तानमें शिक्षा का प्रसार काबुल विश्वविद्यालय स्थापित (१९३२ में) होनेसे बहुत हुआ है। देशमें उर्दू और रूसी भाषाओं के पढ़नेके साधन नहींहै, फिरभी व्यापारियों के निरंतर आवागमन का परिणाम यह हुआहैकि अफगानी इन दोनों भाषाओं को समझ लेतेहैं, और टूटी फटी अवस्थामें बोल भी लेतेहैं। भारत और काबुलके आपसी अध्ययनके लिये यह आवश्यकहै कि भारतके कुछ विद्यार्थी वहां की संस्कृति का अध्ययन करने जांय और कुछ विद्यार्थी वहां से यहां आवें।

आजके विश्व की चंचल स्थितिमें भारत और अफगानिस्तानकी सुदृढ़ मैत्री लोककल्याणका प्रथम सोपानह।

राष्ट्र और नारी

—**—

लेखिका—श्रीमती उषारानी

पूर्व और पश्चिमकी दो सुन्दरी प्रतिनिधियोंका मिलना चित्रमें कुमारी दिलीप सिंह लेडी पामेला माउण्टबेटेनसे बातें करती दिखायी दे रही हैं। कुमारी दिलीप ओसलोमें अन्तर्राष्ट्रीय युवा सम्मेलनमें भारतका प्रतिनिधित्व करके वापस आयी हैं। इस उपलक्ष में दिल्लीमें आयोजित एक समारोहमें आपने ओसलो कानफरेन्सके अपने संस्मरण बताये

आधुनिक समाजका राष्ट्रीय आदर्श लोकतन्त्र है। वस्तुतः जिस सरकारके पीछे जनताकी आस्था नहीं है वह कभी भी स्थायी न हो सकती है। एकमात्र लोकतन्त्र सिद्धान्तोंके आधार पर गठित सरकार ही देशकी सब श्रेणियोंकी जनताके हितोंके अनुकूल शासन व्यवस्था कर सकती है। यूरोपमें इङ्गलैण्ड, फ्रांस, रूस, तुर्की और अमेरिकाकी शासन व्यवस्था लोकतन्त्रके सिद्धान्तोंके अनुसार चल रही है। वहांका प्रत्येक आदमी सोचता है कि सरकारकी व्यवस्थामें उसका भी आंशिक दायित्व है। वहां पुरुषके समान नारीको भी सब तरहकी स्वाधीनता स्वीकार कर ली गयी है वहां नारीका जीवन केवल घर-गृहस्थी के दायरे तक ही सीमित नहीं है। यूरोप और अमेरिकाकी नारीको सामाजिक राष्ट्रीय और आर्थिक क्षेत्रोंमें अधिकार प्राप्त हैं।

यूरोप और अमेरिकाकी जनता जानती है कि नारीके न्यायसङ्गत अधिकार स्वीकार न करने पर लोकतन्त्र सफल नहीं हो सकता। पुरुषके बगलमें नारी अगर जीवनके सभी क्षेत्रोंमें कर्मशक्तिके परिचय देनेका सुयोग प्राप्त करे तभी देश की सर्वांगीन उन्नति सम्भव है। नारीकी सर्वांगीन उन्नति न होने पर समाजका भविष्य गौरवमय नहीं बन सकता है।

एकमात्र शिक्षित माता ही देशकी आदर्श सन्तानोंका निर्माण कर सकती है। संसारके प्रसिद्ध राष्ट्र नेताओंके जीवन

होता है। दरअसल, जाति और राष्ट्रके गठनमें पुरुष और नारी उभयका उत्तरदायित्व समान है। नारीको छोड़कर आदर्श समाजका गठन असम्भव है।

संसारके प्रत्येक देशमें नारीने क्रमशः सामाजिक और राष्ट्रीय अधिकार प्राप्त किये हैं। यूरोपकी नारीने साबित किया है उपयुक्त सुयोग और सुविधा मिलने पर वे सभी क्षेत्रोंमें पुरुषके समान कार्य-दक्षता दिखा सकती है। साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान और राष्ट्रीय विषयोंमें उन्होंने जो दक्षता दिखायी है वह वास्तवमें प्रशंसा योग्य है। यूरोपके अन्यान्य देशों

(शेष ३६ वें पृष्ठपर)

संयुक्तप्रांतकी गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडू

(ऊपर) ये तीन महान् अब किधर, कहां बढ़े ? (नीचे) उड़ीसा और मध्य प्रदेश के देशी नरेशों द्वारा अपने गुरु सरदार पटेलको साष्टांग दण्डवत ।

लन्दन सम्मेलनकी असफलताकी अमेरिकामें जो प्रतिक्रिया हुई हैं उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे इसकी प्रतीक्षामेंही थे । किन्तु युद्ध देहिके वज्र घोष करनेवाले अमेरिकन युद्धवादी शक्ति सामर्थ्यकी दृष्टिसे यदि हिटलर और जर्मनीकाही प्रतिरूप स्तालिन और रूसमें दखते हैं तो वे भयंकर भूल कर रहे हैं । यदि वे यह समझ लें तो उनके साथ साथ संसार अब भी तीसरे युद्ध की भयंकर विभीषिकासे बचाया जा सकता है । उनको स्मरण रखना चाहिये कि संसारमें आज स्तालिनके समान शक्तिशाली व्यक्ति दूसरा नहीं है । उनकी शक्तिको केवल रूसकी शक्ति और स्वरूपसेही नहीं मापा जाना चाहिये । स्तालिन केवल एक विशाल राज्यके एकछत्र शासकही नहीं वे एक अत्यन्त बलशाली और प्रभावशाली विचारधारा एवं लोकमतके नेता भी हैं जिसने ससारके तमाम शोषितों और पीड़ितोंको अपनी ओर आकृष्ट कर रखा है । उनकी शक्तिको ठीक ठीक थहानेके लिये यह समझना आवश्यक है कि जर्मन सरहदसे लेकर प्रशान्त तक फैले हुए विशाल रूस साम्राज्यके बाहर भी प्रायः प्रत्येक देशमें एक ऐसा जबर्दस्त राजनीतिक दल है जिसका सूत्र संचालन स्तालिनके कट्टर समर्थकोंके हाथोंमें है ।

जिस बातकी आशंका थी वह होकर रही और चार महान परराष्ट्र मंत्रियोंका लन्दन सम्मेलन भंग हो गया । यद्यपि इधर उधरसे यह क्षीण आवाज आती है कि अभी दरवाजा बन्द नहीं हुआ । अमेरिका कह रहा है कि याल्टा, जहां रूजवेल्ट स्टालिन और चर्चिलने मिल कर इस संगठनको जन्म दिया था, मर चुका अब फिर इस सम्मेलनके बैठनेकी आशा नहीं है, कमसे कम अमेरिकाकी तरफसे रूसके साथ सम्मेलन करनेके लिये कोई आग्रह नहीं दिखाया जायेगा । सवाल यह है कि अब क्या होगा ? ये लोग क्या करेंगे ? इसका जबाव बड़े बड़े राष्ट्रोंकी शस्त्र निर्माणकी दौड़में पाया जा सकता है। पूंजीवादी देशोंकी असंख्य पूंजी शस्त्रास्त्रोंमें लग रही हैं, इसका लाभ तो युद्धारम्भ होनेसे ही मिल सकता है । अमेरिकन राजनीतिज्ञ और प्रचारक इस बातका ढोल बजा रहे हैं कि लन्दन सम्मेलनकी असफलताके लिये रूस दोषी और जवाब देह हैं ।

रूस ठीक इसके विपरीत कह रहा है । अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसने मिल कर समझौता नहीं होने दिया । क्षतिपूर्ति सम्बन्धमें पोट सडममें जो समझौता हुआ था वह रूसके अनुकूल समझ कर आज यदि ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस माननेको तैयार न हो आश्चर्य क्या है ? अपने अपने जिन स्वार्थों की रक्षाके लिये उस समय किसी तरह रूसको राजी करके समझौता करना आवश्यक समझा गया था आज उन्हीं स्वार्थों के लिये रूसको नाराज किया जा सकता है, क्योंकि तब और अबमें अन्तर हो गया है। उस समय नाराज करनेमें खतरा था आज राजी करनेमें उससे जबर्दस्त खतरा है।

इस झगड़ेका केन्द्र बिन्दु वही है जो मैत्रीका था अर्थात् जर्मनी। ब्रिटिश परराष्ट सचिव मि० बेविनने साफ साफ कहा है कि जर्मनीके चालू उत्पादनसे क्षतिपूरन करनेका ब्रिटेन कभी समर्थन नहीं कर सकता और जब तक रूस अपनी इस मांगको छोड़नेको तैयार न होगा एकता हरगिज नहीं हो सकती । रूस शायद ही अपनी मांग पर झुकनेको तैयार हो, इसीसे उसे अलग करके अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन मिल कर जर्मनी और यूरोप सम्बन्धी स्वतन्त्र नीति स्थिर करें, यह चर्चा शुरू हो गयी है । ब्रिटेनके भूतपूर्व परराष्ट्र सचिव और पार्लमेंटमें विरोधी दलके उपनेता मि० एण्टनी ईडेनने कहा है कि अब तो पश्चिमी यूरोपके उद्धारके लिये ब्रिटेन और अमेरिकाको एक दूसरेके साथ सम्पूर्ण मिल जुल कर काम करना चाहिये । मार्शल योजनाने यूरोपमें जिस स्थितिकी सृष्टि की थी वह अब चरम सीमामें पहुंच गयी है । ब्रिटिश सरकारके पूर्व सलाहकार लार्ड वन्सीटर्ट कहते हैं कि अब ये सम्मेलन बन्द होने चाहिये । अमेरिकाके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मि० बायर्नीस एक कदम आगे बढ़ कर कहते हैं कि जर्मनी के साथ ४० साला अनाक्रमणात्मक संधि और पूरे पैमानेमें एक सम्मेलन, रूस माग

(शेष २० वें पृष्ठपर)

ता वह अपनी रोजी कमानेके लिये कहीं नौकरी करते हुए भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमाने वाला शख्स, अगर वह ईमानदारीसे और किसी भी किस्मकी हिंसा किये बगैर ऐसा करता है, देश सेवा ही करता है। लेखकको यह मालूम करना चाहिये कि मेरे पास उनके लिए कुछ काम नहीं है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते हैं, तो उन्हें हमारी गो-शालामें अपनी सेवाएं देनी चाहियें।

फख्र और दोस्ती

गांधीजी कहते हैं कि एक दोस्तने मुझे फख्रकी एक ऐसी मिसाल सुनायी है, जिसका तेज दुःखदायी परिस्थितियोंमें भी कम नहीं होता और दोस्तीका ऐसा उदाहरण बताया है, जो कड़े-से-कड़े वक्तमें भी खरी उतरती है। यह नारायण सिंह नामके एक पुराने अफसरकी कहानी है। उन्होंने पश्चिमी पंजाबमें अपनी बहुत बड़ी मिल्कियत खो दी है। अब वह दिल्ली में हैं। उनके पास कुछ भी नहीं बचा है। इसलिये या तो उन्हें अब भीख मांगनेपर लाचार होना पड़े या मौतका शिकार होना पड़े। वह अपने एक पुराने दोस्तसे मिले, जिसे वह अपने साथ दुखी नहीं होने देना चाहतेथे क्योंकि अपनेपर आयेहुये दुर्भाग्य की उन्हें बिलकुल परवाह नहीं थी। वह सिक्ख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अलीशाहसे मिलकर बेहद खुश हुए। अलीशाह भी अपना सब कुछ खो बैठे हैं। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नहीं, बल्कि किसी और कारणसे बदकिस्मतीके शिकार हुए हैं। वह भी नारायण सिंहकी तरह ही बहादुर हैं, और दोनोंको एक दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनों अपनी पच्चीस सालकी जुदाईके बाद जब मिले, तो इतने खुश हुए कि अपने दुर्भाग्यको भूल गये।

अब असहयोगकी जरूरत नहीं

एकप्रार्थना-सभामें भाषण देते हुए गांधी जीने कहा कि मुझे एक ही शख्सकी तरफ से दो चिटें मिली हैं, जिनमेंसे एकमें लिखने वाले भाईने कहा है कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी है और वे मेरे मातहत काम करना चाहते हैं। दूसरी चिटमें उन्होंने प्रार्थनामें एक भजन गानेकी अपनी इच्छा जाहिर की है। उनकी पहली इच्छाके बारेमें मुझे कहना पड़ता है कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर गलती की ... यह मत है कि अंग्रेजी हुकूमतके दिनोंमें मैंने लोगोंको सरकारसे असहयोग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब ऐसी बात नहीं है। अगर कोई आदमी चाहे,

मानवसे

सुप्त मानव जाग।

* * *

मार्ग संकट पूर्ण तेरा,
मार्ग कंटक पूर्ण तेरा,
मार्ग में तेरे अंधेरा-
पर न साहस त्याग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

प्रलय की काली घटायें,
मचलती पथ पर व्यथायें,
पर न पग पीछे हटाये-
धधकती हो आग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

क्रांति की चिनगारियों में-
वीर वर नर नारियों में-
धनी रंक भिखारियों में-
राष्ट्र का हो राग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

हो रहा अब है सबेरा,
ले रहा तम है बसेरा,
सोच क्या कर्त्तव्य तेरा,
रक्त से रच फाग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

आर्त देश पुकारता है,
द्रवित नेत्र निहारता है,
कौन जीवन वारता है।
हृदय भर अनुराग।
सुप्त मानव जाग॥

* * *

—श्री सुशील कुमार दीक्षित काव्य-भूषण

निराश्रितोंके बीच सहयोग

इसके बाद निराश्रितोंकी समस्यापर बोलते हुए गांधीजीने कहा कि-उनमें डाक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्सें वगैरा हैं। अगर उन्होंने गरीब निराश्रितोंसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने ऊपर पड़े हुए एकसे दुर्भाग्य से कोई सबक नहीं ले पायेंगे। मेरी राय है कि सब व्यवसायी और गैर-व्यवसायी, धनवान और गरीब निराश्रित एक साथ रहें और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोंने लाहौरको आदर्श शहर बनाया-और जिसे हिन्दुओं और सिक्खोंको लाचार होकर खाली करना पड़ा-उस तरह वह भी आदर्श शहर बसायें। ये शहर, दिल्ली जैसी घनी आबादी वाले शहरोंका बोझ हलका करेंगे और इनमें रहने वाले लोगोंकी तन्दुरुस्ती बढ़ेगी और उनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी बड़ी छावनीमें रहने वाले दो लाखसे ऊपर निराश्रित बाहरी और भीतरी सफाईके मामलेमें आदर्श बन गये, अगर व्यवसायी और धनवान निराश्रित गरीब निराश्रितों के साथ बराबरीके आधारपर रहे, अगर उन्होंने तम्बुओंकी इस बस्तीमें अच्छी सड़कें बनाकर सन्तोषकी जिन्दगी बिताई, अगर वे सफाईसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिन भर किसी-न-किसी उपयोगी काममें लगे रहे, तो वे सरकारी बजटपर बोझ नहीं रह जायंगे। और उनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोंमें रहने वाले लोग सिर्फ उनकी तारीफ करके ही नहीं रह जायंगे, बल्कि उन्हें अपने जीवनपर शर्म मालूम होगी और वे निराश्रितोंकी सारी अच्छी बातों की नकल करेंगे। तब मौजूदा कड़ुवाहट और आपसी जलन एक मिनटमें गायब

हो जायंगी ; तब निराश्रित लोग, चाहे वे कितनी ही बड़ी तादादमें क्यों न हों, केन्द्रीय और मुकामी सरकारोंके लिए चिन्ताके विषय नहीं रह जायंगे। लाखों निराश्रितों द्वारा बिताई गई ऐसी आदर्श जिन्दगीकी दुःखी दुनिया तारीफ करेगी।

निराश्रितोंकी बदियानती

बाद मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग छोटी-मोटी चोरियां भी करते हैं। मैं उनसे पूरी ईमानदारी और खरे बरतावकी आशा रखता हूं। मुझे यह रिपोर्ट दी गई है कि निराश्रितोंको जाड़ेसे बचनेके लिए जो रजाइयां दी जाती हैं उनमेंसे कुछ चीर दी जाती हैं, उनकी रूई फेंक दी जाती है और छींटके कमीज वगैरा बना लिये जाते हैं। मुझे इसी तरहकी दूसरी बहुत सी बातें बताई गई है, लेकिन मैं निराश्रितोंके सारे बुरे कामोंका वर्णन करके आपका वक्त नहीं बरबाद करना चाहता। मैं आज शामके विषयपर जल्दी ही आना चाहता हूं।

अफसरोंके बारेमें

जब मैं निराश्रितोंके बारेमें बोल रहा हूं, तब कुछ ऐसे दोषोंके बारेमें उनका ध्यान खींचना चाहूंगा जो मुझे बताये गये हैं। मुझसे यह कहा गया है कि निराश्रितों में आपसमें ही काला बाजार चल रहा है। जिन अफसरोंके जिम्मे निराश्रितोंकी देखभालका काम है, वे भी दोषी बताये जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोंके हाथमें छावनियोंका इन्तजाम है, उन्हें घूंस दिये बिना वहां जगह पाना मुमकिन नहीं है। दूसरी तरफसे भी उनका बरताव दोषसे परे नहीं माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नहीं हो सकते, लेकिन एक पापी सारी नावको डुबो देता है।

फौज और पुलिस

मैं एक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। मुझे एक छावनी की कहानी सुनाई गई, जिसमें फौजपर असभ्य बरतावका इलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता व सफाईका नमूना होना चाहिये। इसकी रक्षाके लिये दोनों को एक-दूसरीसे बढ़कर कोशिश करनी चाहिये। इसलिए मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गई है, वह कानून और व्यवस्थाके इन रक्षकोंपर आमतौरपर लागू नहीं की जा सकती-वह एक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहले आजादीकी चसक और उत्साह महसूस करना चाहिये। उनके बारेमें लोगों को यह कहनेका मौका न मिले कि ऊपर से लादे हुए भयानक संयम और पाबन्दियोंमेंही उनसे अच्छा बरताव कराया सकता है है ! उन्हें अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना ह कि वे भी दूसरों की तरह हन्दुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक हो सकते हैं। अगर ये कानूनके रक्षक ही क़ानूनको ठुकरायेंगे, तब तो राज चलाना भी नामुमकिन हो सकता है और अखिल भारत कांग्रेस कमेटीके ठहरावोंको ठीक तरहसे अमलमें लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

भारतीय पार्लमेण्टका पहला अधिवेशन

भारतके प्रधान मन्त्री नेहरूजी

भारतीय पार्लमेण्ट का पहला अधिवेशन गत १२ दिसम्बरको समाप्त हो गया। इस अधिवेशनकी सबसे विशेषता यह है कि इस एक अधिवेशनमें जितना व्यवस्था कार्य हुआ, जितने कानून बने पहले की व्यवस्थापिका परिषदके किसी अधिवेशनमें उतना काम नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि लोकप्रिय सरकारको जन प्रतिनिधियोंका पूर्ण समर्थनप्राप्त रहनेसे उसे विशेष विरोधका सामना नहीं करनापड़ा। इस प्रथम अधिवेशनमें २१ बैठकें हुईं जिनमें २३ सरकारी बिल पास हुए, पांच सेलेक्ट कमेटी के सिपुर्द किये गये और एक लोकमत जाननेके लिये प्रचारित किया गया।

इस अधिवेशनकी दूसरी विशेषता यह थी कि पहले कभी-कभी किसी बहुत ही दिलचस्प और महत्वपूर्ण विषय पर विचारके समय दर्शकमञ्च ठसाठस भरा करता था। इसबार प्रत्येक बैठकमें दर्शक मंच पर तिल मात्र जगह खाली नहीं देखी गयी। दर्शकोंमें ५८७५ पुरुषों ६४३ महिलाओं और ३३४ विशिष्ट व्यक्तियोंकी उपस्थिति हुई। इनके सिवा सैकड़ों प्रेसिडेण्टकी गैलरीमें बैठे और परराष्ट्र विभाग प्रति दिन दस टिकट कूटनीतिज्ञोंके लिये जारी करता था।

पार्लमेण्टकी कुल सदस्य संख्या २६१ है किन्तु उपस्थितिका औसत प्रतिदिन आधेसे अधिक नहीं हुइ। सर्वाधिक उपस्थिति १७४२० नवम्बरको सबसे कम १२६ थी ६ दिसम्बरको इसका एक कारण तो यह है कि रियासतोंके प्रतिनिधियोंकी पार्लमेण्टके मुख्य कार्यसे सीधी दिलचस्पी न होनेके कारण वे बहुत कम भाग लेते थे। दूसरा कारण यह है कि कांग्रेस पार्टीका यह आदेश निकल गया

पार्लमेण्टके स्पीकर श्री मावलंकरजी

सरकारके चीफ ह्विप श्री सत्यनारायण सिनहा के साथ श्रीमियर पन्त।

था कि जो सदस्य प्रांतीय व्यवस्थापिकाओं के भी सदस्य हैं वे पार्लमेण्टमें भाग न लें।

कार्यकी सुन्दर प्रगतिका श्रेय कांग्रेस पार्टीको है जिसने बड़ी योग्यता और उत्तमताके साथ संचालन किया। जो संशोधन या प्रस्ताव विवादग्रस्त समझे जाते थे उन पर पहले पार्टीमें विचार होता था और पार्लमेण्टके सामने वही विषय लाये जाते थे जिनकी स्वीकृति मिल जाती थी। पार्लमेण्टके गैर कांग्रेसी सदस्य सङ्गठित नहीं हैं और मुस्लिम लीगके सदस्य साधारणतया कम प्रभावशाली थे। सङ्गठित विरोधके न होनेसे बहसके समय उस सरगर्मी और उत्तेजनाका साधारणतया अभाव ही रहा लेकिन वर्षोंसे विरोधके अभ्यस्त कांग्रेसी सदस्य यह

अभाव खटकने न देते थे और इसमें जान डाल ही देते थे। साम्प्रदायिक पार्टियोंका स्तित्व स्वीकार करनेके पक्षमें पार्लमेण्ट का भाव न होनेके कारण ऐसा समझा जाता है कि आगामी अधिवेशनमें बैठनेकी व्यवस्था प्रांतीय आधार पर की जायेगी। किन्तु यह व्यवस्था भी सुन्दर नहीं है क्योंकि प्रांतीय आधार पर यह विभाजन प्रांतीयताको भारतीय पार्लमेण्टमें भी जिलाये रखेगा। एक खतरेसे बचकर यह दूसरा खतरा मोल लेना ठीक नहीं है।

इस अधिवेशनमें खास-खास कामोंमें रेल्वे बजट, साधारण बजटकी स्वीकृति उल्लेखनीय है। साधारण बजटकी एक मदकी भी कटौती नहीं हुई। किन्तु अर्थ सचिव की बजट सम्बन्धी वक्तृताने जन साधारणमें सन्तोषकी जगह असन्तोष ही पैदा किया। रक्षाके लिये बजटमें की गयी व्ययकी व्यवस्थाकी जरा भी नुक्ताचीनी नहीं हुई। सदस्य स्वयं इस पक्षमें थे कि यदि आवश्यकता समझी जाय तो यह मद बढ़ा दी जाये। पिछली असेम्बलीने रेल्वे टिकट और माल भाड़ामें२५ प्रतिशत वृद्धि करनेसे इनकार कर दिया था किन्तु इस बार उसने भाड़ेमें ३२ करोड़ रुपयेकी वृद्धिकी अनुमति दे दी।

तीसरी खास विशेषता यह देखी गयी कि एक भी काम रोको प्रस्ताव पर बहस नहीं हुई, प्रस्ताव पर एक भी डिवीजन अर्थात् हाथ उठाकर नहीं, हां या नहीं कह कर स्वीकृति नहीं मांगी गयी। पहलेकी असेम्बलीमें इन बातों द्वारा ही सरकारकी दुर्गत बनायी जाती थी।

महत्वपूर्ण घोषणाएं

पहले देखा जाता था कि इस अधिवेशनमें सरकारको अविश्वासके प्रस्तावके भयसे नीति सम्बन्धी घोषणाएं करनेका वक्तव्य देनेका साहस न होता था और बादके अधिवेशनके लिये इनको रख छोड़ा जाता था किन्तु नेहरू सरकारने इस तरह की घोषणाएं तत्काल की, उदाहरणार्थ, भारतकी खाद्य नीतिमें परिवर्तन, हैदराबाद के साथ यथास्थिति समझौता और पाकि-

लार्ड माउण्ट बेटेनकी अनुपस्थितिमें भारत के गवर्नर जेनरल राजाजी और नेहरू

स्तानके साथ आर्थिक समझौतेकी महत्वपूर्ण घोषणाएं इसी अधिवेशनमें की गयीं।

लेकिन जैसा हम ऊपर कह आये हैं अर्थसचिवकी बजट सम्बन्धी वक्तृता जनहितकी दृष्टिसे घोर निराशाजनक हुई, वैसे ही अन्य कई विभागोंके बिलोंमें भी पुरानी नौकरशाहीकी बू बनी हुई थी। हमारी स्वतन्त्र पार्लमेण्टकी दृष्टि समाजवादी गणतन्त्रकी ओर है, यह बात पंडित नेहरूके वक्तव्योंको बाद दे देनेसे अन्यत्र नहीं दिखायी दी। वही पुरानी अर्थ-व्यवस्था और उसके आधारपर शासन व्यवस्था देशको अधिक दिनतक सन्तुष्ट नहीं रख सकती, यह बात केन्द्रीय सरकारके सभी मिनिस्टर जितना जल्दी समझ लें, अच्छा है।

प्रश्नकाल

जनवादी पार्लमेण्टोंमें प्रश्नकाल गैर-सरकारी सदस्योंकी दृष्टिसे और सरकार के कार्यों पर जनसाधारणका ध्यान आकर्षित करनेकी दृष्टिसे बड़ा महत्वपूर्ण होता है। हमारे मिनिस्टरोंकी तत्काल उत्तर देनेकी तत्परतासे बहुतसे महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी हुई। इसी कालमें यह देश-को मालूम हुआ कि पाकिस्तानसे शरणार्थियोंको कैसे निकाल लाया गया और उनको बसानेके लिये क्या किया जा रहा है। यह भी मालूम हुआ कि भारतमें शीघ्र हवाई जहाज बनेंगे, विदेश स्थित भारतीय सेना इस महीनेतक वापस बुला ली जायेगी, चीनीका कण्ट्रोल हट गया, दो तीन सालमें नमक पर्याप्त होने लगेगा और भारत स्वावलम्बी हो जायेगा। यह सनसनी खेज घोषणा भी प्रश्नकालमें ही सुनी गयी कि ब्रिटिश अफसर द्वारा निकम्मे, मात्र लोहा घोषित किये गये ८५ हवाई जहाजोंमें प्रायः सभी कामके निकले।

गैर-सरकारी प्रस्ताव

गैर-सरकारी प्रस्तावोंमें डा० पट्टाभिसीतारामैयाका राष्ट्रीय सैन्य दल सङ्गठनका प्रस्ताव बड़ा सामयिक रहा जिसे सरकारने तत्काल मान लिया। शरणार्थी समस्या और खाद्य-नीतिपर बहसके लिये सरकारने विशेष व्यवस्था की। पार्लमेण्टके अध्यक्ष श्री मावलङ्करको पूर्वापेक्षा अधिक अनुकूल वातावरणमें कार्य सञ्चालनमें विशेष कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा और नवीन तथा आकस्मिक विषयोंपर पक्ष या विरोधमें रूलिङ्ग (निर्णय) देनेके अप्रिय कार्यसे बिलकुल बचे रहे। देशके सर्वप्रिय नेताओंके हाथोंमें शासनसूत्र रहनेका यह परिणाम है कि स्वल्प समयमें एक अधिवेशनमें जितना अधिक शासन कार्य हुआ और इस तरह समय और धन दोनोंकी बचत हुई। पर देश अपने इन नेताओंसे इससे अधिक कुछभी आशा रखता है। अभी हमारी पार्लमेण्टको जनता की पार्लमेण्टका रूप देना है। हमें विश्वास है कि पण्डित नेहरूके नेतृत्वमें हमारी सरकार अवकाश पाते ही इस दिशामें द्रुतगतिसे अग्रसर होगी और जो अभीतक इस प्रगतिमें बाधक हैं वे या तो अपना रवैय्या बदलेंगे या सरकारके बाहर दिखायी देंगे।

कहानी

चम्पेका फूल

—:**:—

विजयकुमार मुन्शी साहित्यरत्न
बी० ए० एल-एल बी०

वह चम्पेका मन्दिर लता-कुञ्ज था जिसके पास नन्दा खड़ी थी। चम्पेके फूलों की भीनी महकसे वातावरणकी प्याली छलक रही थी। सुदूर नीमकी डालीपर कोयलियाकी मधुर कुहुक मन प्राणमें रस घोल रही थी। पास ही लहराती झीलकी चञ्चल लहरें बार-बार कगारोंको चूम-चूम अलग हो जाया करती थीं। हरे चम्पे के कुञ्जसे कोई बीस हाथ दूरीपर भैरोंजी की पक्की बनी एक डेरी है जिसके आस-पास कुछ मिट्टीके बर्तन, टेढ़े लकड़ीके चाट, सुडौल और बेडौल पत्थर पड़े हैं। पत्थरोंके पास ही दो बदशक्ल बच्चे खेल रहे हैं। ऐसे बच्चे जिन्हें इस दुनियामें प्यार नहीं, बेबसी ही मिली है। दिन ढल रहा है, ढलते सूरजकी ढलती किरणें आम बौरोंसे ढलती जा रही हैं। जङ्गल की राह, एक दो किसान बैलोंकी डोर थामे, चिर-परिचित स्वरमें बैलोंको उला-हने देते अथवा उनके पुष्ट शरीरोंको थप-थपाते घर जा रहे हैं। एक भीलकी लड़की लकड़ीका एक बोझ सिरपर धरे चुपचाप चली जा रही है, उसकी गतिमें एक यंत्रके टुकड़ेकी विवशता और एकरसता है। फटी चोलीमें कसा उसका श्यामा यौवन और चेहरेमें जड़ी मोती-सी साफ दो आंखें किसीको बरबस दो क्षण अपनी ओर मोह लेती हैं।

यह सब देख लेनेके बाद मैं लताकुञ्ज के पास जाकर खड़ा हो गया। नन्दा झुर-मुटमें घुसकर चम्पेकी महकको मानों पकड़ कर फूलको झुरमुटसे निकालनेको आतुर हो रही थी। दो फूल वह तोड़ चुकी है जिनकी सुरभिसे वातावरण मुस्करा रहा था।

मैंने यों ही प्रश्न किया, 'यह बाग किसका है?'

'बाग तो सेठका है और रखवाली मैं करती हूं। दिनभर यहां मजदूर काम करते हैं। शामके बाद ही रखवाली करनी पड़ती है।'

'इन चम्पेके फूलोंका क्या करोगी?'

वह मुस्करा पड़ी, फिर बोली, 'एक छोकरा इधर घूमने आता है और इन्हें महंगे दाममें मोल लेता है।'

मैंने मनमें विचार किया कि उस लड़केसे इसको प्यार होगा। कुछ उसके हृदयकी थाह पानेकी इच्छासे पूछा 'वह छोकरा मुह मांगे दाम देता है या भावताव करता है?'

वह प्रत्युत्तरमें केवल मुस्करा पड़ी। उसके नयनोंमें अथाह आवेगका मानों एक सागर लहरा उठा। जैसे मैंने उसके हृदय के कोमल अन्तस्तलको फूलकी कोमलतासे छू दिया है और जिसकी कोमल अनुभूति से यह नंदा पुलकित हो उठी है।

'तुम्हारा ब्याह हो चुका है?'

हां, ब्याह तो होता ही है। एक वय-स्क आदमीके घरमें बैठ गयी हूं। उसे मेरी परवाह नहीं, मेरे कामकी, रोटीकी परवाह है। मैं उसे समय पर रोटी देती हूं, काम करती हूं। वह खुश रहता है। दिलका गुलशन उसका जैसे उसका पतझर बन गया है…देखो वह आया…और मैंने देखा कि एक खांसता-खखारता, तीस चालीस वर्षका आदमी भैरोंजीकी डेरीके पास आकर बैठ गया। उसकी सांस धमनी सी चल रही थी।

'जरा लकड़ी लाओ न।' नंदाने कहा।

वह आदमी टोकरा उठा, धुमिल सांझ के अंधियारेमें डूब गया। मुझे लगा कि नंदा मेरे बातमें रस ले रही है। इसी बीच बनियेका छोकरा आ गया। वह डील डौलमें मस्त प्राणी था। इस तरफ चहल कदमीको आता तो कुछ पैसे फेंक चम्पे के फूल खरीद लिया करता। मुझे देख कुछ सकपका गया।

'फूल लो।'

वह कुछ न बोला। वह जा रहा था। मैंने देखा नंदाकी आंखोंमें आंसू आ गये हैं। उसने फिर पुकारा किन्तु उस युवकने जैसे सुना ही न हो।

क्या तलवारसे खेल सकता है। प्रेममें तलवारकी धारकी तीक्ष्णता है!'

'यही वह युवक है।'

वह चुप रही और अपना सिर उसने हिला दिया।

कितना डरपोक है। तुम्हें देखकर डर गया। जब मैं अपने आदमीकी परवाह न कर इसके साथ भागना चाहती हूं तो इसमें इतनी भी शक्ति नहीं है कि मुझे सहारा दे। यह तो कुत्ता है। कोई असली भील होता जान पर खेल कर पहाड़ों पर मुझे भगा ले जाता। शहरका आदमी बातकी ताकत रखता है.... ।'

'ये बच्चे तुम्हारे हैं?'

उसने एक बार अपने शरीर पर दृष्टि दौड़ायी और फिर बोली 'नहीं तो। मेरे आदमीके हैं। एक औरत इसकी मर गयी है। यह रोटीका भूखा है—बेचारा! और वह एक बेबस हंसी हंस पड़ी। ऐसी जिसमें जीवनकी प्रतारणा बज उठती है! उसकी अवसादमयी वाणीमें अब आवेग नहीं, शिथिलता थी!

अब तक उसने पांच फूल तोड़ लिये थे। वह उन फूलोंको अञ्जलीमें भर, उनसे खेल रही थी। गाढ़ेकी ओढ़नी में भी उसका स्वस्थ यौवन दमक रहा था। मैंने जेबसे एक रुपया निकाल उसकी ओर फेंक ही रहा थाकि एक कुत्ता दो बजरेकी बड़ी बड़ी रोटियां अपने दांतोंमें दाब भैरोंजीकी डेरी परसे भागा —उसने कुत्तेको देख हाथके फूल फेंक दिये और कुत्तेकी ओर बेहताशा भागी। कुत्ता दूर भाग गया। वह लौट आयी। चम्पेके फूल धूलमें पड़े मानों सिसक रहे थे। उसका स्वर कांप रहा था। मैंने फूलोंको जमीन परसे उठा लिया और हाथमें थमा एक रुपया उसकी ओर फेंकते कहा 'लो।'

'नहीं ले जाओ!'

और वह दुःखित भैरोंजीकी डेरीकी ओर जा रही थी। सामनेसे उसका आदमी आ रहा था। मैं रुपया ले चला आया किन्तु चम्पेके फूलोंके साथ बंधी कहानी को चौबीस घंटे बाद भी नहीं भूल पा रहा हूं जब वे ही फूल यहां मेरे सामने

अन्तराष्ट्रीय

(१४वें पृष्ठका शेषांश)

ले या न ले, होना चाहिये।। इस सम्मे-सम्मेलनमें जर्मनी और आस्ट्रियाके साथ संधिपत्र तैयार किया जाये।

समझ-बूझकर

धन और अणुबमके बलपर गर्वोन्मत्त अमेरिका आज युद्धकी भाषा बोल रहा है। वह यह समझ सकनेमें असमर्थ है कि रूसकी उपेक्षाका क्या भयङ्कर परिणाम हो सकता है। मद बड़े-बड़े ज्ञानीकी आंखों की दृष्टि धुंधली कर देता है। अमेरिका आज आभिजात्य मदका शिकार हो रहा है। उसकी दृष्टिमें एशियाई बर्बर और खूंखार लगते हैं। एशियायियोंको वह सांस्कृतिक दृष्टिसे हेय और घृणित समझता है। रूसका एक हिस्सा यूरोपमें होते हुए भी अमेरिका उसे एशियाई ही मानता है क्योंकि वह समझता है कि ऐसा करके जातीय विद्वेषके सहारे रूस विरोधको प्रचण्ड बनानेमें काफी सफलता मिल सकती है। यह स्पष्ट और प्रत्यक्ष है कि अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांसकी गुटबन्दी पूर्वीय और पश्चिमी संसारोंके सम्पर्कोंमें खिंचावकी स्थिति उत्पन्न करेगी। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि जिस जर्मनीको इस मतभेदका केन्द्रविन्दु बनाया गया है उसके सामने इस स्थितिने घोर निराशा पदा कर दी है। इस मतभेदसे और जर्मनीके हित से कोई सम्पर्क नहीं है। दिखाया यह जा रहा है कि जर्मनीके हितकी भावनासे प्रेरित होकर उसके चालू उत्पादनसे रूसके क्षतिपूर्त्ति करनेका विरोध किया जा रहा है, पर बात ऐसी नहीं है। जर्मनीका हित यदि इनको अभीष्ट होता तो ये उसके एकीकरणकी योजनाका विरोध न करते और अनिश्चितकालतक उसे खण्डखण्ड अलग रखनेका प्रतिपादन न करते। क्षतिपूर्त्तिका सवाल ऐसा नहीं है जो हल नहीं किया जा सकता। बहरहाल वास्तविकता यह है कि चार परराष्ट्र सम्मेलन असफल हो गया और यदि जिनकेहितकी दुहाई दी जाती रही है उस जर्मनी और उस यूरोपके हितका ध्यान अपने निजी हितसे ऊपर देखा जाता तो अन्तमें मोलोटोव, मार्शल, बेविन और विदों किसी न किसी समझौतेपर अवश्य पहुंचे होते।

मुनियाका पति एक महीनेकी बीमारीके बाद आखिर डेढ़ सालका बेटा, साढ़े तीन सालकी बेटी और उन्नीस सालकी मुनियां को इस दुनियामें निस्सहाय छोड़कर चल बसा!

और आज मुनियाकी साढ़े तीन वर्षीया बिटिया रानी भी मोटरसे कुचल कर अपने पितासे भेंट करने चली गयी और उसकी मां सिर्फ दो बून्द आंसू गिरा कर देखती रह गयी।

जो कुछ मुनियांके मालिककी कमाई थी वह उठ चुकी थी उसीके दवादारू, कफन और क्रिया-कर्म में।

o o o

आज मुनियाके घरमें एक दाना अन्नका नहीं था, भीख कभी उसने मांगी न थी, लज्जा उसके नस-नसमें समायी थी, परन्तु लाचारी जो न कराये वह थोड़ा। मुनिया, बेटेको लेकर भीख मांगने निकल पड़ी और एक पथ-तरुकी छांहमें बैठ गयी। किन्तु लाजके कारण न तो दयनीय दर्द भरे शब्द ही निकले और न भीख ही मिली। मिली उसे अपने यौवनकी बदौलत इक्के-तांगेवालोंकी आवाजकशी, कटाक्ष और कामातुर दृष्टि। वह रातको खाली हाथ घर लौट आयी और निराहारही सो गयी।

एक ही दिनमें मुनिया दुनिया देख चुकी। उसके लिये अब दुनियामें शेष रह गया था पीनेको आंसू और खानेको ठोकर। वह निराहार बेटेका मुंह देखती और उसका मातृ-हृदय फटने लग जाता। घृणात्मक विचार उसके मस्तिष्कमें घूमने लग जाते। कभी वह आत्महत्या करनेकी सोचती तो दूसरे ही क्षण बेटेका मुंह निहार कर हिम्मत हार जाती। कभी वह निश्चय करती कि वह भी क्यों नहीं अपना यौवन बेचकर अपना और बेटेका पेट पाले, किन्तु उसी क्षण दूसरा विचार उठता कि वह कैसे अपनी नग्न देह हर एकको सौंपेगी और आत्मग्लानिसे वह जल कर राख हो जाती। फिर दूसरा भाव उठता कि क्यों न वह अपना दूसरा घर-बार कर ले। कल्लू तांगे वाला रोज कहता भी है और उस दिन उसने कितनी खुशामद भी की थी। किन्तु इसके लिये भी उसका दिल गवाही न देता। यही सब सोचते-सोचते मुनियांको अपनी विवशता पर रुलाई आने लग जाती।

o o o

दूसरे दिन मुनिया उठी और उठते ही भूखसे बिलखते बेटेको डांटने लगी। परन्तु बच्चे भी कहीं माने आज तक। वह और चिल्ला-चिल्लाकर मिट्टीमें लोटने लगा। मुनिया खीझ उठी—"मरता भी नहीं छोकरा। बदनसीब........खून पीता है मेरा खून। खून भी तो चूस लिया। अब क्या हड्डी चूसेगा?........" तड़ातड़-तड़ातड़ वह बेटेको थप्पड़ और धौल जमाने लगी और जितना ही वह बिलखता उतना ही वह उसे और पीटती। पाषाणहृदया बन चुकी थी वह आज।

पीट-पाटकर जब मुनिया थक गयी तो सिर थामकर बैठ गयी। अब उसका क्रोध उसे ही जला-जला कर सताने लगा। हृदयमें बेटेके प्रति ममता उमड़ आयी और नेत्रोंसे अश्रु बहने लगे। उसने बेटेको पुचकार कर गोदीमें उठाया और अपने दुग्धहीन स्तन उसके मुंहमें देकर उसे सुखका अनुभव कराने लगी और थपकियां दे दे कर सुलाने लगी।

मुनिया सब दुख झेल सकती है, सब विपत्तियां ठेल सकती है किन्तु अपनी आंखोंके सम्मुख अपने लालको भूखसे तड़प-तड़प कर मरते नहीं देख सकती। मुनियांने देखा बेटा सो गया है। वह तत्काल तड़प कर उठी और उसके कदम बढ़ने लगे ट्रेनकी पटरी की ओर। वह पटरी पर लेट गयी। दूरसे धड़धड़ाती हुई ट्रेन दौड़ी आ रही थी। जब ट्रेन करीब पहुंची तो 'मां...मां, . . मां, . . .' मुनियांको आभास हुआ उसका बेटा मांके बगैर बिलख रहा है। केवल एक मिनटका अन्तर रहा वह पटरी परसे हटी और ट्रेन धड़-धड़ाती हुई निकल गयी। मुनियांका रोयां-रोयां भयसे कांप उठा। वह पसीने से तरबतर हो गयी और उल्टे पांव लौट पड़ी।

मुनिया हांफते-हांफते घर पहुंची और बेटेको कसकर हृदयसे चिपटा लिया। "मांऽ बूक लदी है।", बेटेकी तोतली वाणीमें मुनियां अपनेको भूल गयी और मातृहृदयमें वात्सल्य प्रेम छा गया, और उसकी आंखें भर आयीं।

त्याग दिया मुनियांने आत्महत्या करनेका इरादा। कूद पड़ी वह जीवन-संग्राममें। ठान ली उसने निर्लज्जा बनकर भीख मांगनेकी, सायङ्कालको चल पड़ी वह अपने बेटेको लेकर भीख मांगने, अपनी झोली फैलाने, दर-दरकी ठोकरें खाने और मनुष्यताका प्रसाद मांगने। पहुंची वह अपनी गलीसे बाजार, जहां किसी भी वस्तुकी कमी न थी, चांदीके सिक्कोंसे होली खेली जा रही थी। अपार जन-

समूह समुद्रकी लहरोंकी भांति उमड़ा चला आ रहा था । रङ्ग विरङ्गी साड़ियोंमें लिपटी स्त्रियां जनसमूहको अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। इक्के-तांगे और साइकिलोंका तांता बंधा था। बड़े लोगों की मोटरें धूल उड़ाती हुई छोटे लोगोंके नाकमें दम किये थीं।

मुनियां भी पिल पड़ी इस रेलेमें, इक्के-तांगेवाले उसे कोसते जा रहे थे —'बचना माई, ए भिखमंगी एक तरफ हट कहां चल रही बीच रास्तेमें अंधीकी बच्ची मरती है..... ।

'मरती' है की डांटने मुनियांकी सुप्त स्मृतिको पुनः जाग्रत कर दिया। उसकी आंखोंमें अपनी बेटीका मोटरसे कुचलनेका दृश्य घूम गया। वह इसी सोचमें थी कि एक साइकिलसे उसकी टक्कर हो गयी और वह गिर पड़ी। उसके हाथ—पांव छिल गये और उसमेंसे खून बहने लगा। चारों तरफसे भीड़ जमा हो गयी और उसीके ऊपर गालियां पड़ने लगी—'बीच सड़कमें चलती है मानो इसीके बाप ने बनाया है, चलनेका कायदा नहीं जानती, ठीक हुआ यही होना था, मरेगी नहीं तो और क्या होगा ?...'

मुनियां उठी और धूल झाड़ती हुई आगे बढ़ गयी दायें-बायें जिस तरफ उसकी दृष्टि जाती वह चकाचौंध हो जाती और विस्मित हो कह उठती, "कैसे भाग्य-वान हैं ये रुपये वाले"

बाजारमें करीनेसे सजी रङ्ग-विरङ्गी आकर्षित वस्तुओंको देखकर मुनियांका बेटा पग-पगपर मचलने लगा। यह दे, वह दे, वह हठ करता। जब कोई व्यक्ति कुछ खरीदता तो मुनियां उसे टुकुर-टुकुर देखने लगती और अपना आंचल फैला देती। आंचलमें पैसा-वैसा तो कुछ पड़ता नहीं, पर झिड़कियां जरूर पड़ती और वह आगे बढ़ जाती।

चलते-चलते मुनियां एक हलवाई की दुकानसे गुजरी, वह वहांसे भाग निकलना चाहती थी किन्तु मिठाइयोंकी सुगन्धने उसका मन हर लिया। मिठाइयोंके थालके थाल सजे थे। मिठाइयोंको देखकर उसकी लार टपकने लगी और बच्चा भी मचलने लगा, "मां मिताई, मां मिताई।"

बढ़ न सकी मुनिया दुकानसे आगे। बेड़ियां पड़ गयी उसके पांवमें। क्षुधाग्नि भड़क उठी। नीयतकी चाबी खुल गयी। भरोसा न रहा स्वयं अपनेपर। उथल-पुथल मच गयी हृदयमें। दबे पांव पहुंची दुकानके निकट।

"मां मिताई, मां मिताई" बेटा मुनियांकी गोदमें मचलने लगा। वह सोच में पड़ गयी—'मिठाई। मिठाई॥ कहांसे दूं मिठाई। पल्लेमें कौड़ी नहीं। फिर? चोरी करूं? नहीं-नहीं, चोरी करना पाप है, महापाप। चोर नरकमें जाता है। वहां उसे यमदूत आरीसे चीरते हैं। मैं ऐसा काम नहीं करूंगी। तो फिर मिठाई। .... मैं हलवाईसे बिनती करूंगी। अपने लालके लिये मिन्नत करूंगी। गिड़गिड़ाऊंगी। वह जरूर एक टुकड़ा फेंक ही देगा। इतने थाल भरे पड़े हैं? वह जरूर देगा। जरूर देगा।....'

मुनियां मचलते बेटेको लेकर हलवाई के सामने खड़ी हो गयी और देखने लगी आशा भरी मुद्रासे उन भाग्यवान व्यक्तियों को जो ठनसे रुपया निकाल कर फेंकते और एक थैली दबाकर चलते बनते।

ग्राहकोंकी भीड़ छंटी। हलवाईकी दृष्टि मुनियां पर पड़ी और चट बांकी नजर मार कर पूछा, "क्यों री, क्या खड़ी है? क्या चाहती है?"

हलवाईके हाव-भाव को देखकर मुनियांकी लज्जासे पलकें झुक गयी और वह लौटने लगी। पर जब बेटा लौटने दे। वह उसकी धोती पकड़ कर धरती में लोटने लगा। यह देख हलवाई हंसने लगा—"जब बच्चेको खिला नहीं सकती है तो बच्चा पैदा करनेमें क्या मजा मिलता है? फिर अपनी भरी जवानी लेकर गलियोंमें भीख मांगती फिरती है--ले, बच्चेको मत रुला।" इतना कहकर हलवाईने एक जलेबी मुनियांको दे दी।

मुनियांने शरमाते हुए जलेबी थाम ली, आधी खुद खायी और आधी बेटेको दी, बेटा तो शान्त हो गया परन्तु उसकी क्षुधाग्नि और भड़क उठी। वह जलेबीका टुकड़ा निगल कर पासके बम्बेमें गयी और पेट भर पानी पीकर दूसरे हलवाई की दुकानमें जाकर खड़ी हो गयी। भूखने उसकी लज्जा-हया सब मिटा दी थी। उसने हलवाईसे मिन्नत की "ज्यादा नहीं, जरा सी मिठाई, सिर्फ एक बरफीका टुकड़ा इस बच्चेके लिये, भूखा है, भगवान भला करेगा' इतना वह सब एक सांसमें कह गयी, और उसका चेहरा आसक्त हो गया।

"टके हैं पल्ले में?" हलवाईने व्यङ्ग बाण छोड़ा।

"टके! कहां से आये मेरे पास। मैं.."

"पासमें टके नहीं! खायेगी बरफी! चल दूर हट, भाग यहां से।"

मुनियां झिड़की खाकर, बेटेको गोदमें उठाकर तीसरे हलवाई की दुकानमें पहुंच गयी। उसकी आंखोंमें हलवाईकी दुकान की एक एक थाल नाच रही थी। नाकमें मिठाइयोंकी सुगन्ध बस रही थी। साथ ही साथ सोचती भी जा रही थी,"--मैं इस चालाकीसे मिठाई पार करूंगी कि हलवाईको पता भी न चलेगा। यूं सबोंकी आंखें बचा कर—अगर किसीने मुझे देख लिया, मैं पकड़ गयी—वह सिहर उठी। नहीं नहीं, मैं क्यों पकड़ी जाऊंगी। मैं सब इतनी सफाईसे करूंगी कि किसी को मालूम भी न होगा।—यदि—खैर जो कुछ होगा देखा जायगा। यह चोरी थोड़ी हुई। मैं भूखसे व्याकुल हो रही हूं, मेरा लाल भूखसे तड़प रहा है,—"

मुनियां हलवाईकी आंख बचाते हुए दुकानके एक कोनेमें दुबक कर खड़ी हो गयी, उसके हाथ ही के सामने लड्डूका थाल भरा रखा था।

अवसर अच्छा था। हलवाई ग्राहकों से मोल तोल करनेमें व्यस्त था। हाथ आगे बढ़ने लगे। आखें चारों तरफ देखने लगी। कान चौकन्ने हो गये, हृदय धड़कने लगा, तात्पर्य यह कि मुनियाकी एक एक इन्द्रियां अपना अपना कार्य पूर्ण योग्यता और तत्परताके साथ करने लगी।

मुनियांके हाथमे एक लड्डू आया ही था कि एक ग्राहककी नजर उसपर पड़ गयी और उसने हलवाईको बतला दिया,

(शेष २४ वें पृष्ठपर)

हमारी खाद्य समस्या

लेखक—श्री महेश दत्त दीक्षित बी० ए०

हमारे देशका अन्न सङ्कट एक दीर्घ-जीवी (chronic) महाव्याधि बन गया है। पिछले कई वर्षों में हम भूख-मरीसे बहुत परिचित हो गये हैं। बङ्गाल का अकाल एक ऐतिहासिक दुर्घटना थी। पूर्वीय संयुक्त प्रदेशका अन्नसङ्कट कमी-व मी इतना बढ़ गया है, कि मनुष्य भी पत्तियों पर गुजर करता रहा है। आज भी हमारे देशका अन्नसङ्कट इतना बड़ा है कि हम स्वस्थ खुराक नहीं पाते। आखिर यह सब क्यों? माना, इस दुर्भिक्ष के जनयिता पूंजीपति भी रहे हैं जिन्होंने चांदीके सिक्कोंके आगे मानवके प्राणोंके मोल भी खत्तियोंमें भरा अन्न नहीं बेचा, पर केवल वे ही तो कारण नहीं हैं। हमारे देशमें प्रतिवर्ष बढ़ते हुए पचास लाख देवता और हमारी बढ़नेवाली उत्पत्ति ही इसका मूल कारण रही है। पूंजीपतियोंकी अन्न-एकत्रण प्रथा (Hoarding) तो अवैधानिक करार दी जा सकती है, पर अन्न उत्पादनमें वृद्धि करना एक समस्या रह जाती है जो वस्तुतः उतना आसान नहीं जितना हम सोचनेके आदी हो गये हैं।

आज हम अपना माथा ऊंचा करके आसमानके सितारों की ओर देखना चाहते हैं, क्यों कि हम स्वतन्त्र हो गये हैं, पर सचमुच केवल राजनीतिक स्व-तन्त्रताका कोई भी मूल्य नहीं, अगर हम दूसरे देशोंके आर्थिक गुलाम बने रहे। हम परोपजीवी होकर बहुत दिन नहीं जी सकते। दूसरे देशोंसे मंगाये अन्नसे बहुत दिनों तक अपनी उदरपूर्त्ति नहीं कर सकते। अन्तःराष्ट्रीय व्यापार आपसके आदान-प्रदान पर ही टिक सकता है। आज हम स्पष्टतः ऐसी अव-स्थामें नहीं कि हमारा आयात हमारे निर्यातके बराबर हो। हम अपने देशका औद्योगीकरण (industrialisation). करना चाहते हैं, पर उसकी मशीनोंके लिये हम परमुखापेक्षी हैं। हम अपने अंगोंको बचानेके लिये कपड़ा चाहते हैं, पर उसके लिये हम दूसरोंका मुंह ताकते हैं और जीवनकी सबसे अनिवार्य आव-श्यकता अन्नके लिये भी हम आस्ट्रेलिया और अमेरिकासे आनेवाले जहाजोंका रास्ता देखते हैं। सचमुच ऐसी परिस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हमारा साथ बहुत दूर तक नहीं देगा। और फिर विदेशी सामानका भरोसा ही कितना? रोज बदलने वाली राष्ट्रीय परिस्थितियां ऐसी दशामें कोई भी सङ्कट उपस्थित कर सकती हैं। इससे अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति हमें स्वयं ही करनी चाहिये। स्वयं - साहाय्य श्रेष्ठ साहाय्य (self help is the best help). है। और जहां तक खाद्य सामग्रीका प्रश्न है, भारत जैसे खेतिहर देशके लिये यह सर्वथा सम्भव भी है कि हम अपनी आवश्यकताएं स्वयं पूरी कर लें।

पर यह सब हम करें तो कैसे करें? हम देखें कि अच्छी फसल किन-किन चीजों पर निर्भर रहती है, और वैसे ही सुधार करनेसे लाभ होगा।

मामूली तौरपर हम देखते हैं कि अच्छी उपजके लिए ये प्रमुख साधन हैं—

१. अच्छी जमीन
२. सिंचाईकी सुविधा
३. अच्छी खादकी सुविधा
४. अच्छे बीजकी प्राप्ति
५. खेती करनेके सही तरीकोंकी जानकारी।

अच्छी जमीन खेतीकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। अच्छी भूमिसे हमारा तात्पर्य चिकनी या रङ्गीन जमीनसे नहीं है। खेतीके लिए वही भूमि अच्छी है जिसमें अधिकसे अधिक अन्न उग सके। पिछले हजारों वर्षोंसे हम अपनी इसी जमीनपर खती करते आये हैं—फसलें उगती हैं, धीरे-धीरे भूमिकी उत्पादक शक्ति कम होती जाती है। पर कुछ खेतिहरोंके उपाय और कुछ प्रकृतिका प्रसाद भूमिकी जनन शक्ति अक्षुण्ण रहती है। आज कल तो वैज्ञानिक ढङ्गसे हम ऊसर भूमिको भी उपजाऊ बना सकते हैं। हमारे गांवोंमें ऐसे ढङ्ग प्रचार पायें, इससे हमारी भूमिकी उपज बढ़ेगी साथ ही सरकार नीचे लिखी बातोंमें उनकी सहायता करे—

१. सिंचाईके साधनोंमें बढ़ती।
२. नई भूमिकी जुताई।
३. भूमिकी चकबन्दी।

सिंचाईके साधनोंमें कुआं सबसे सस्ता और (मैदानी भागोंमें) आसान तरीका है। भारतके खेतोंका बहुत बड़ा भाग कुओंसे सींचा जाता है। पर कुछ किसान कैसा भी कुआं नहीं बनवा सकते और कुछ जो बनवा सकते हैं वे अधिक से अधिक कच्चे कुएं जिनकी जिन्दगी तीन-चार बरसातसे ज्यादा नहीं होती। साथ ही, किसानोंके खेत गवई प्रथा (manorial system) जैसे तितर-बितर हैं। हरएक फैले हुए खेतमें कुआं बनवाना तो सर्वथा असम्भव है। सरकार बड़ा उप-कार करे अगर पक्के कुएं बनवा दे, (ग्राम-सुधार संस्थाने इस ओर कुछ काम किया है, पर आवश्यकताको देखते हुए नगण्य) जिससे आसपासके किसान अपने खेत सींचे और छोटी-छोटी किश्तों में कुएं बनवानेका व्यय अपने-अपने हिस्से के अनुसार चुकता करदें।

सरकार नहरों की संख्या बढ़ानेका (जहां जहां बन सकती हैं और बन सकती है, विशेषतः मैदानी भागमें) प्रयत्न करे। इनका लाभ हम भूल तो नहीं सकते। पञ्जाबकी कैनाल कालोनी (canal colony) इसका उदाहरण है। पर किसानोंका सह-योग सर्वथा अनिवार्य है। चीनके किसानों का सहयोग प्रशंसनीय है। वहां राजाज्ञा है कि प्रत्येक १० या १५ एकड़ भूमिमें एक तालाब होना चाहिये—इससे वे किसान पानी भी पाते हैं और मछली भी। भारत-में भी ऐसा ही नियम कुओं (मुख्यतः मैदानोंमें) और तालाबों (मुख्यतः पथरीली भूमिमें) के लिये बना दिया जाये तो लाभ बहुत अधिक होगा—पर पहिले व्ययके लिये सरकारको मदद करनी पड़ेगी। सिंचाईसे केवल उपज ही नहीं बढ़ती है, एक फसलवाले खेतोंमें दो फसलें भी आसानीसे उगायी जाती हैं।

सिंचाईके ऐसी ही आवश्यक खाद भी है। खादकी आवश्यकता धरतीका उपजाऊपन बढ़ानेके लिये होती है। आजकल वैज्ञानिक ढङ्गकी खादें इजाद की गयी हैं, जैसे चिलीका शोरा और अन्य (फर्टिलाइज़र) उत्पादक पर हमारा अभाग्य है कि हमारे किसान अपढ़ हैं और वे इन खादोंका प्रयोग समुचित रूपसे नहीं कर सकते हैं। कभी कभी वे अधिक खाद डाल देते हैं जिससे पौदे पनपते ही जल जाते हैं। ऐसे प्रयोग से हानि ही अधिक होती है। अच्छा यह हो कि सरकारकी ओरसे कुछ ऐसे निरीक्षक रहें जो ऐसी खादोंके प्रयोगकी विधियां बताते रहें।

मेरे विचारसे अपढ़ किसान मण्डली के लिये पुरानी खादें ही अभी अच्छी हैं। भारतीय किसान अपने जानवरोंके गोबर का प्रयोग करते हैं--गोबर की खाद वस्तुतः बहुत ताकतवर होती है पर उसको तैयार करने का भी ढङ्ग होता है। देहातों में हम देखते हैं कि गोबरके ढेर लगे रहते हैं-- यह सही तरीका नहीं है। गोबर की खाद गांवसे हटकर गड्ढोंमें बनानी चाहिये जिससे उसमें सूरजकी रोशनी प्रविष्ट हो सके और उसके लाभदायक तत्व (प्रोपरटीज) नष्ट न हो सकें। हरी पत्तियों, सरपत और पनीली घासकी खाद भी बड़ी अच्छी होती है। पिछले कुछ दिनोंसे सरकारने कम्पोस्ट फैक्टरी खोली हैं जिनमें खाद्य बनानेका प्रयत्न किया गया है, पर इनकी संख्या बहुत कम है। सच पूछिये, इनकी आवश्यकता हर कस्बे, हर गांवमें है।

बीजका भी अपना महत्व है। कमजोर बीजकी फसल बड़ी कमजोर होती है। अच्छे बीजके खेत हरे-भरे हंसते रहते हैं। हमारे किसान इससे अनभिज्ञ तो नहीं, पर उनकी दशाही ऐसी है कि वे या तो अच्छा बीज खरीद ही नहीं सकते या अगर खरीद सकते हैं तो उसे रद्दी किस्मके बीजमें मिलनेसे बचा नहीं सकते।

किसान बड़े कर्जग्रस्त हैं। ज्योंही उनका अन्न तैयार होता है वे उसे बेच देते जिससे वह अपने कर्जका कुछ भाग अदा कर सकें। अतएव अकसर उनके पास इतना बचताही नहीं कि अपने व्यय के अतिरिक्त अगली फसलके बीजके लिये भी बचा सकें। बीज बोनेके समय फिर कर्ज लेते हैं और जैसा भी बीज मिलता है, लेकर वह अपने खेतोंमें बो देता है।

इसके अलावा, बीजकी उत्तमता नष्ट होनेका दूसरा कारण भूमिका बहु-विभाजन है। छोटे-छोटे खेत आपसमें मिले रहते और बीज बोने या फसल काटनेमें बीज अकसर दूसरे खेतोंमें आ मिलते हैं। अगर आसपासकी चकमें एक ही प्रकारका बीज बोया जाये तो यह दूर हो सकता है। पर इसके लिये गांवकी पंचायतकी आवश्यकता होगी, क्योंकि वही ऐसी जगह है जहां एक चकमें एक विशेष प्रकारके बीजका निर्णय हो सकता है।

लाइनदार जोत और अन्य साधनभी उपज बढ़ानेमें सहायक होते हैं। दूर-दूर कतारोंमें बोये खेतोंमें मूंगफली, गन्ना और मकई अच्छी होती है।

पर चकबन्दी आसान प्रश्न तो नहीं है। कुछ किसान अपने खेतोंको छोड़ना ही नहीं चाहेंगे। उनके खेतोंको घरसे अपनी-अपनी दूरियां हैं, अच्छी बुरी किस्मे हैं और पुश्तोंसे जुड़े हुए अपने-अपने मोह हैं। अतः बिना सरकारके हस्तक्षेपके चकबन्दी असम्भव है यद्यपि अनिवार्य हैं।

दकियानूसी हलका प्रयोग भी हानिकर है। पर हर एक किसानके अधमरे कमजोर बैल मेस्टन हल खींच भी तो नहीं सकते। ऐसी दशामें यह अच्छा हो अगर गहराई तक जोतनेवाले हलोंका प्रयोग जहां तक सम्भव हो बरसातमें अवश्य किया जाये। उन दिनों जमीन गीली रहती है और कम खिचावमें ही जोती जा सकती है।

इनके अतिरिक्त चकबन्दी, अपनी रुचि और शांति भी अपना महत्व रखती हैं।

चकबन्दीकी कमी भारतका दुर्भाग्य रहा है। चकबन्द खेतोंमें एक ही किसान सब खेतोंकी दिन और रातमें देखरेख कर सकता है। उसे इधर उधर इस खेतसे उस खेत और उस खेतसे इस खेतमें दौड़ना नहीं पड़ता है। और चकबन्द खेतोंसे एक मनोवैज्ञानिक तृप्ति और आह्लाद भी मिलता है जिससे खेतोंमें रुचि बढ़ती है।

कुटुम्बी और आर्थिक झगड़े भी शांति भंगके कारण होते हैं। आर्थिक झगड़ेकी जड़ ही नष्ट हो सकती है अगर कोओपरेटिव-सोसायटी खोली जायें जो धन, औजार और बीज कम-से-कम व्याज पर दे सकें और शीघ्रही दे सका करें। ग्राम पञ्चायतें आपसी झगड़े तय करनेके बड़े अच्छे और सस्ते स्थान हैं।

हम जब इतनी समस्यायें सुलझा सकेंगे—जिनमें समय और शक्ति लगेगी— इतनी कठिनाइयां दूर कर सकेंगे—तब हमारा देश अन्नके लिये स्वयं-सम्पूर्ण (self sufficient) होगा और तभी हमारा लक्ष्य पूरा होगा।

सुखिनः सर्वे सन्तु
सव सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा—कश्चित् दुःखमाप्नुयात्।

(२२ वें पृष्ठका शेषांश)

देखो, देखो, इसने तुम्हारा लड्डू चुरा लिया, मुनिया यह सुन स्तम्भित रह गयी उसके हाथका लड्डू हाथ ही में रह गया हलवाईने चोर चोर का शोर मचाया और थोड़ी देरमें एक अच्छी खासी भीड़ जमा हो गयी और हो-हल्ला मचने लगा। यह गुल-गपाड़ा देखकर एक पुलिस कांसटेबिल भी आ पहुंचा और मुनियांको हवालातमें ले जाकर बन्द कर दिया।

आज दो दिनकी भूखी मुनियांको सरकार की तरफसे हवालातमें खानेको मिला। तत्पश्चात अर्धरात्रिमें दो पुलिस कांसटेबिलस उसकी कोठड़ीमें घूसे और—

वह मनियांके जीवनकी प्रथम रात्रि थी जो उसने पर पुरुषके साथ बितायी केवल एक लड्डु के कारण, और सवेरे वह हवालातसे रिहा कर दी गयी।

अंधेरेके बीच

लेखक—श्री राजेन्द्र सक्सेना

पश्चिममें सूर्यकी किरणें अन्तिम बार, सोना लुटाकर विदा होने लगीं। सारी धरतीका रक्त आलोक लुप्त हो गया और श्यामल छाया संध्याके आगमनकी सूचना लिये वृक्षोंसे उलझकर पृथ्वीपर उतरने लगी। रीताने खिड़कीके बाहर देखा, उस गलीकी सब दूकानें बन्द होने लगी थीं। केवल एक पानवालेकी दुकान पर धुंधली-सी लालटेन प्रकाशके स्थान पर धुंआं अधिक उगल रही थी। लालटेनका क्षीण आलोक बढ़ते हुए अंधेरेके धुंधलकेमें अन्धकारको चीरनेका निष्फल प्रयास कर रहा था, ठीक उसी प्रकार जैसे कि इन दिनों शहरोंमें शांति-कमेटियां होनेके बावजूद हिन्दू-मुस्लिम दंगे नहीं रुकते।

रीताने खिड़की बन्द कर दी और आगेके कमरेमें, जिसे आप ड्राइङ्ग-रूम या बैठक कह सकते हैं—आ खड़ी हुई। तीन बरसकी लड़की अनीता या अन्नो ज्वरमें अब भी जल रही थी। पतिका अबतक पता न था यद्यपि आफिससे लौटनेका समय कभीका हो चुका था। रीताने एक बार अन्नोंका माथा छुआ और फिर उसे चादरसे भली प्रकार ढक दिया। रीताके स्पर्शसे अन्नोकी डूबती-सी चेतना फिर लौट आयी। धीरेसे आंखें खोलकर वह बोली 'मां ऽ ऽ' और आगेकी बात उसके गले हीमें रह गयी। रीताने अन्दाज कर लिया कि अन्नो जरूर प्यासी है ओर पानी ही मांग रही होगी। रीताने चम्मचसे पानीके कुछ बूंद उसके हलकके नीचे उतार दिये। फिर एक टक उसका चेहरा देखने लगी। तीन दिनके ज्वरने अनीताको अत्यन्त दुर्बल कर दिया था। उसके पीले मुखपर एक अजीब-सी उदासी आ गयी थी।

सतीशने द्वार खट-खटाया। रीताने उठकर किवाड़ खोल दिये। पतिने फाइलें कोनेमें रखी हुई मेजपर पटक दीं और पूछा—"कैसी है अन्नो?" "अभी ज्वर नहीं उतरा, बेहोश-सी पड़ी है"—बोली रीता।

आज दवा बदली है, कदाचित रातमें उतर जाये—कहता हुआ सतीश कपड़े बदलकर हाथ-मुंह धोने चल दिया। रीता अन्नोके सिरहाने बैठी रही। यह अन्नो कभी ठीक नहीं रहती। जब देखो ज्वर, खांसी कुछ न कुछ बना ही रहता है। मन ही मन झुंझलाने लगी रीता। क्या परेशानी है, क्या इसीका नाम जीवन है। चिन्तायें हैं और रीता है, जैसे सतीश और अन्नोके साथ-साथ वे भी उस परिवारकी संगिनी बन गयी है। कब मिटेंगी यह चिन्तायें? कहीं अन्त है इनका . . . ?

एक सांस लेकर रीताने दीवारपर दृष्टि डाली। सुभाष बोसका एक चित्र शीशेमें जड़ा हुआ झूल रहा था। उसके इर्द-गिर्द रीताकी बनाई हुई कपड़ेकी कतरनोंकी रङ्गीन माला लिपटी हुई थी। सुभाष बोसके चित्रसे कुछ हटकर रीता और सतीशका ग्रूप फोटो था, जिसे सतीश ने विवाहके अवसरपर खिंचवाया था। फोटोमें रीता और सतीश सटकर बैठे थे। रीता धीमे-धीमे मुस्करा रही थी और सतीशके दांत होठोंसे बाहर झांकते हुए यह दिखा रहे थे कि वह फूला नहीं समा रहा है। किन्तु रीता अनुभव करती है कि वह फोटोवाली मुसकान और हंसी उनके वैवाहिक जीवनमें स्थायी नहीं रह सकी है। जीवनमें सर्वत्र विषाद ही विषाद बिखरा हुआ है।

और यह सुभाष वाली तसवीर—सतीशने डेढ़ साल पूर्व अत्यन्त चावसे खरीदा था जबकि आजाद हिन्द फौजके केप्टन सहगल शाहनवाज और ढिल्लन लालकिलेसे रिहा हुए थे, और उस खुशी में राजधानीमें दिवाली मनायी गयी थी और जुलूस निकला था। उस दिन रीता का हृदय जोशसे भर गया था। और तीन-चार दिनमें ही उसने अन्नोको 'जयहिन्द' करना सिखा दिया था। अन्नो अब भी अभिवादनके लिये उच्च स्वरसे 'जयहिन्द' कहती है और रीताको सन्तोष होता है।

सुभाष बोसकी तसवीरसे हटकर रीता की दृष्टि फिर अन्नोकी ओर लौट आयी अन्नो अब भी बेसुध पड़ी थी। रीताने उसका शरीर टटोला तो देखा, वह पसीने में भीग रही थी। रीताने 'टावेल' से पसीना पोंछना शुरू किया कि अंगुलीमें कुछ लग गया। रीताने हाथ खींच लिया। फिर देखा अन्नोकी फ्राकमें लगे हुए पिनने उसकी अंगुली छेद दी थी, जिसके द्वारा छोटासा तिरंगा झंडा टंका हुआ था। रीताने झंडा निकाल कर अलग रख दिया। और रीता जानती है, यदि अन्नो सचेत होती तो कभी इस प्रकार अपनी फ्राकसे उसे पृथक न होने देती। और सचमुच अन्नो पंद्रह अगस्तसे आजतक उसे प्रतिदिन फ्राकमें लगाये रहती है।

और इस पंद्रह अगस्तको जब देश स्वतंत्र हुआ था, रीताने ईश्वरसे यही प्रार्थना की थी कि वह देशसे गरीबी और कंगाली दूर कर दे। चिन्ताओंका सिलसिला समाप्त होकर जीवनमें फिर ताजगी और उत्साह समा जाये, किन्तु यह न हो सका। पञ्जाबमें भयंकर अत्याचार हुए। मानवता फिर एक बार क्रन्दन कर उठी। बङ्गालके पश्चात पञ्जाब ने भी रक्त-स्नान किया। और पञ्जाबसे उठी हुई लपटें राजधानीकी ओर बढ़ी। दिल्लीने भी लहू-लुहान दिन देखे। शून्य सड़कें, रातका भयानक सन्नाटा, घण्टों गोलियोंके चलनेकी आवाज, आहें और धुंआं। करफ्यू आर्डर और परेशानियां।

रीताको नहीं मालूम कि कमरेमें आकर सतीश खड़ा हो गया।

दूसरे दिन अनीताका ज्वर उतरा। रीताकी जैसे एक बहुत बड़ी बाधा दूर

हुई। डाक्टर गुप्ताकी दवा का बिल सतीश ने अभी अभी चुकाया था। चार दिनकी दवाके छै-सात रुपयेके करीब हुए थे। यह खर्च रीताको बहुत अखरा। और फिर उसका सारा रोष अन्नो पर उमड़ आया। अनीता एक महीने भी तो स्वस्थ नहीं रहती। पर अन्नोका इसमें क्या दोष है ?... रीता सोचती है। स्वयं रीताका स्वास्थ्य गिर रहा है, और सतीश—सारे दिन आफिसमें परिश्रम करनेके पश्चात् घर भी काम करना पड़ता है। फिर खाने की भी उचित व्यवस्था नहीं है। घी के स्थान पर 'डालडा'। दूध तो शुद्ध मिल ही नहीं सकता। दूधवाला अंगेसे अधिक तो पानी मिलाकर लाता है। वह भी भाव चढ़ाकर। यदि कुछ कहा जाये तो दूसरे ही दिनसे आना बन्द कर देगा। दूध, तरकारी, सब ही कुछ तो मंहगा है। आखिर यह मंहगाई कब दूर होगी ? रीता जैसे-तैसे महीना काट पाती है। वह गृहस्थी चला रही है, बस।

धूप काफी चढ़ चुकी थी। सतीश कमरेमें सिर झुकाये आफिसका काम पूरा कर रहा था। बरामदेमें अन्नो पड़ोसके कपूर बाबके चार वर्षके लड़के यतीनके साथ खेल रही थी। रीताने चायका प्याला लाकर सतीशके सामने रख दिया। फिर अन्नोको पुकारा। अनीता ढोमनसे आयी। कई दिनोंके पश्चात् उसे यतीनके साथ खेलनेका अवसर मिला था। यतीन ने कुछ समय अन्नोके लौटनेकी प्रतीक्षा की और फिर अपने घर चला गया। यतीनको देखकर रीताको जैसे कुछ स्मरण हो आया और वह बोली—"कपूर बाबूसे बात हुई ?" यह कपूर बाबू कण्ट्रे कर हैं, और यह मकान जिसमें सतीश रहता है, उन्हींका है। कपूर बावने अब एक के चार मकान कर लिये हैं। चारों किराये पर उठाकर स्वयं एक छोटेसे फ्लेटमें रहते हैं। सतीश वाले मकानका किराया वे बढ़ाना चाहते हैं, क्योंकि कुछ 'रिफ्यूजी' उन्हें दुगुना किराया तक देनेको तय्यार हैं। रीताने सतीशसे उसीके विषयमें पूछा था। सतीशने बताया, कपूर मानने वाले आदमी नहीं है और बढ़ा हुआ किराया अगली पहली तारीख से ही देना पड़ेगा।

अन्नो कुछ देर रसोई घरकी खिड़की के पास खड़ी रही और फिर थकेसे कदम रखती हुई बरामदेमें चली गयी। यतीन वहां न था। रीताने रसोई बनाना शुरु किया। रीताने लकड़ियोंकी राख झाड़कर फूंक मारी। लकड़ियोंसे लौ निकली और फिर धुंआ बनकर उड़ गयी। फूंक मारते मारते रीता की आंखोंमें आंसू भर आये। धुंएंकी तीव्र कड़वाहट सांसके साथ पेटमें उतरने लगी। कुछ देर यही क्रम रहा और फिर लकड़ियां भक् से जल गयीं। रीताने रोटियां सेक डालीं। फिर सतीशकी थाली परोस दी। अनीता को पुकारा, उत्तर न मिला। रीताने बरामदेमें जाकर देखा, फर्श पर अन्नो न जाने कब सो गयी थी। रीताने अन्नोको जगाना चाहा कि वह चौंक पड़ी। अन्नोको ज्वर हो गया था। एक धक्का लगा रीता को। अन्नोको उसने कमरेमें लिटा दिया।

अन्नोका ज्वर दो दिन नहीं उतरा। तीसरे दिन भी वह ज्वरमें जल रही थी। रीता उसे गोदमें लिये बैठी थी। अन्नोकी बिखरी और रुखी लटोंको वह सम्भाल रही थी। सतीश दवा लेकर लौट आया। अन्नो दवा पीनेसे इनकार कर रही थी। रीताने पुचकार कर कहा-'दवा पी ले बेटी, बड़ी रानी है फिर खिलौने मंगाऊगी अपनी बेटीके लिये।" "और मिठाई मां" अन्नोने अपनी रुचि बताई। "हां मिठाई भी" बोली रीता "कल दिवाली है, बहुतसे दिये जलायेंगे, पूजा होगी।" मिठाई, खिलौने और पूजाकी मधुर कल्पना में डूबती हुई अन्नोने दवा पी ली। अन्नो चारपाईपर लेट गयी। सामने कपूर साहब की फ्लेटमें ऊपर रेलिंगपर मजदूर वार्निश कर रहे थे। कमरेमें रेडियोपर कोई फिल्मी रेकार्ड बज रहा था और उसकी मधुर आवृत्तियां रीता साफ-साफ सुन रही थीं। रातके जागरणसे रीता अनमनी सी झपकियां ले रही थी।

दिवालीके दिन रीता न मिठाई ही मंगा सकी न खिलौने ही। अन्नोको टायफाइड हो गया था और न्यूमोनियां भी।

सामने कपूर साहबके यहां सुबह से ही चहल-पहल थी। बच्चे शोर मचा रहे थे और सारे नौकर व्यस्त थे। आज शाम को ही कपूर साहब दिवालीकी खुशी में मित्रों और कुछ ऊंचे अफसरोंको पार्टी दे रहे थे। रीताकी बगल वाले फ्लेटमें कंट्रोल विभागका कोई इन्स्पेक्टर रहता था। सुबहसे उसके यहां दिवाली आ गयी सजनीका रेकार्ड ग्रामोफोनपर कई बार बज चुका था। शाम होते होते अन्नो की तबीयत अधिक खराब हो गयी। अनीता पसीनेमें तर हो रही थी। ज्वर और तेज हो गया था। अन्नो रह रहकर धीमे स्वर में कराह रही थी। रीताने उसके शरीरको टटोला और फिर शंकित दृष्टिसे व्यग्र पतिकी ओर देखकर बोली—"डाक्टर को दिखा दीजिये। अन्नोकी हालत ठीक नहीं मालूम होती।" सतीश चला गया।

कपूर साहबके फ्लेटके सामने कई मोटरें शोर मचाती हुई रुक गयीं। रंग-बिरंगे लट्टू जल उठे। कुछ समय बाद सतीश लौट आया। अकेला ही। धक् से हो गयी रीता की छाती।

"डाक्टर गुप्ताने तो आनेसे इन्कार कर दिया और कुरेशी कहीं चले गये हैं।" निराश सा बोला सतीश। "तो अब क्या होगा ?" रीताने एक दीर्घ निश्वास छोड़ा। 'आज दिवालीका दिन है, एक दिया तो जला दीजिये, और देखिये यह अन्नो को क्या हो रहा है ?....यह घरर घरर की आवाज ?" रीता सिसकने लगी। पतिने देखा और दो चम्मच पानी अन्नोके गले में डाल दिया।...अन्नोके गलेकी घर-घराहट चौगुनी बढ़ गयी। फिर एक अस्फुट सी आवाज निकलकर शून्य में समा गयी।

सामने कपूर साहबके यहां लक्ष्मी-पूजन हो रहा था। रुपयेके ढेर पर घीके दिये जल रहे थे। सतीश देखता रहा— उसी समय डाक्टर गुप्ता की चमचमाती कार कपूर साहबके फ्लेटके सामने रुकी और वे उतर कर तेजीसे ऊपर चढ़ गये। इसी समय रीता क्रन्दन कर उठी। सामने प्रकाशपुंजोंका समूह उमड़ रहा था और रीता अंधकारके

(शेष २८ वें पृष्ठपर)

एक हल्की बातचीत—

नया बंगाल

— —**— —

लेखक—श्री पन्नालाल महता

भारतका यदि कोई सबसे अच्छा सांस्कृतिक प्रांत होनेका दावा कर सकता है तो वह बङ्गाल ही है। संस्कृति ही क्यों साहित्य और राजनीतिमें भी अपने भाव को उसी ऊंचाईमें रखनेका साहस एक मात्र बङ्गालने ही किया है। बङ्गालको स्वर्ण भूमि करार देनेमें और बनानेमें बङ्गाल का बच्चा बच्चा अपनी आहुति देनेमें कभी पीछे नहीं रहा। सशस्त्र क्रांतिकी तैयारी और उसकी रूपरेखा तैयार करनेमें बङ्गालने अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी है। फांसीके तख्ते पर चढ़नेमें बङ्गालका कदम बराबर आगे रहा है। रवि,शरत बंकिम जैसे युगान्तकारी साहित्यिक बङ्गालमें ही पैदा हुए हैं। आशुतोष मुखर्जी जैसे जीवट वाले महापुरुषोंको बङ्गालनेही जन्म दिया है और सुभाष बोसकी तरह जान पर खेलनेवाले सेनानी बङ्गालकी मिट्टीमें ही पैदा हुए हैं। रत्न गर्भा भारतके दामनसे मिला हुआ बंगाल अपनी मिट्टीको सोना कहनेका हक रखता है और उसका यह

दमदम एयरोड्रोममें भारतके प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू सलामी ले रहे हैं।

हक अपनी जगह सही भी है। अपनी मातृभूमिको अगर कोई स्वर्णभूमि कहता है तो क्या बुरा करता है।

भारतवर्ष पर पड़नेवाली सूर्यकी किरणें प्रथम प्रथम बङ्गालकी जमीन चूम कर ही आगे बढ़नेका साहस करती हैं। पर बङ्गालको अपने आपसे लिपटा देख कर हम कभी कभी उसके आचरणसे चौंक उठते हैं, विक्षुब्धसे हो जाते हैं और अगर हमारी बुद्धि जवाब न दे दे तो हम पागल भी हो जा सकते हैं। हरिपुरा कांग्रेसके बादसे बङ्गालका इतिहास हमारे लिये बड़ा मर्मान्तक संस्मरण रखता है। बङ्गालमें हमारे देशके चोटीके नेता बुरी तरह परेशान किये गये। उन पर जूते फेंके गये—गालियां दी गयी और न जाने क्या किया गया। विक्षुब्ध सुभाषने सारे बङ्गालको पागल बना दिया। बङ्गालने इस राजनीतिक हलचलमें अपने गौरवको अस्त होता हुआ समझा। बोसके इस्तीफे को उसने अपनी "मूंछ" का सवाल मान लिया। क्या राजनीतिमें इसके लिये कोई स्थान है?

बङ्गालका अकाल संसारके अकालके इतिहासमें बेजोड़ है। मां ने अपने बच्चेको इसलिये बेच दिया कि उसके पेटको दो रोटी मिली। मानवताका इतना बड़ा पतन इसी प्रांतमें हुआ और इसी प्रांतके महा-मानवोंका इसमें हाथ रहा। पैंतालिस लाख निरपराध व्यक्तियोंकी हत्याका टीका लगा कर इस प्रांतके महापुरुषोंने अकाल के कारण पर जो कुछ भी प्रकाश डाला वह युक्ति संगत नहीं था। इस स्वर्ण भूमिको कीचड़में गिरते देख विज्ञ लोगोंने सोचा था अब कमलके रूपमें यह भारत के आंगनमें फिर खिलेगा। पतनके बाद उत्थानकी ही बारी आती है न। लेकिन यह नहीं हो सका। बङ्गाल सम्भल नहीं सका या यों कहें कि उसे सम्भालने के लिये किसीने अपनी बलिष्ट भुजाओं को इसके सामने नहीं फैलाया। सन् तैंतालीसका नाजुक जमाना उसे कीचड़में पटक कर आगे बढ़ गया। इस धींगा-धींगीमें पड़कर अस्तव्यस्त हो जानेवाले

नये बङ्गालके गवर्नर राजगोपालाचारी

प्राणी शांतिकी,जी भर कर दो चार, सांस खींच भी नहीं पाये थे कि इसके भाग्याकांशमें पुच्छल तारा प्रकट हुआ। लीगी मिनिस्ट्री जातिगत आबादीके नाम पर लोगोंको परेशान करने लगी। व्यवसायी समाजके प्राण पत्ते की तरह कांप उठे। लीगी अत्याचारके नाटकका यह पहला दृश्य था। धैर्य आखिर कब तक साथ दे। लीगी मिनिस्ट्री अपने इन कारनामोंके कारण बदनाम हुई और दफा ९३ की तलवार इस प्रांतकी गरदन पर झूल उठी। देशके नेता जेलसे बाहर आये तब तिरानबे का फन्दा बङ्गालकी गरदनसे छूटा। सुहरावर्दी साहब प्रांतके प्रधान मन्त्री बने और फिर वही लीगी नाटक खेला जाने लगा।

पाकिस्तानी लड़ाईकी दुन्दुभी १६ अगस्त १९४६ को बङ्गालमें बज उठी और कलकत्ता युद्ध क्षेत्र बन गया। उसके बाद इस स्वर्ण भूमि पर जो कुछ भी हुआ वह कहा नहीं जा सकता। लेखनीको इतनी पतिता बनाया भी तो नहीं जा सकता है। सारा भारत एक बार पागल हो उठा—दो हिस्सोंमें बंटा और फलस्वरूप इस स्वर्ण भूमिके भी दो टुकड़े कर दिये गये। बङ्गालका श्रेष्ठ व्यवसायिक और व्यापारिक हिस्सा पाकिस्तानके पाकेटमें पहुंच गया। अब पश्चिमी बंगालके रूपमें बच रहा है। वह बङ्गाल ही है किन्तु—।

यह नया बङ्गाल इतनी परेशानियोंके बाद अपने लुप्त होने वाले गौरवकी रक्षा कर सकेगा या नहीं,नहीं कहा जा सकता। इस विक्षुब्ध बङ्गालकी आत्माकी शांतिके लिये जिस नुस्खेकी जरूरत है वह जान बूझ कर इसे नहीं दिया जा रहा है। जातीयता और प्रांतीयताके नाम पर अपना उल्लू सीधा करनेके लिये कुछ लोग इसे गलत नेतृत्व दे रहे हैं और उनके नेतृत्वका फल भविष्यके गर्भमें है। डा० विधान चन्द्र रायको युक्त प्रांतका गवर्नर बननेसे रोका गया है। भाषाके आधार पर प्रांतोंका पुनर्गठन करनेका आश्वासन पा जाने पर भी बङ्गालके नये लोग मारपीट करनेसे बाज नहीं

पूर्व बङ्गालके प्रधानमन्त्री
ख्वाजा नजीमुद्दीन

"लड़के लेंगे पाकिस्तान" का एक नारा अभी समाप्त भी नहीं हुआ कि दूसरा नारा लगना शुरू हो गया है। इस समय जबकि सारे भारतकी एकता इस महाभारतके बाद इस्पातकी तरह मजबूत होनी चाहिये, बालू की भीतकी तरह कमजोर की जा रही है। हम यह भूले जा रहे हैं कि कुछ ही दिनों पहले हम भाई भाईकी तरह एक दूसरेके मानापानको अपना मान कर अपनी कर्मवीरताका परिचय दे चुके हैं। इस प्रमाणके बाद भी यदि अविश्वासका प्रश्न पैदा किया जा रहा है तो यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। जान बूझ करके यदि हम दुर्भाग्यको आमन्त्रित करते हैं तो फिर उसके लिये किसे दोष दिया जाय।

इतिहास हमारे सामने है। जातीयताके आधार पर गठित हिटलरका सर्वश्रेष्ठ जर्मन राष्ट्र अपने पापके बोझसे खुद डूबा जा रहा है। आज तो उसकी अछूती जातीयता भी खतरेमें पड़ गयी है। चार हिस्सोंमें बंटा जर्मनी चार तरहकी शिक्षा पा रहा है और यह शिक्षा उसे तब तक आपसमें लड़ाती रहेगी जब तक उस

पुरुष जन्म नहीं लेता। जातीयताके नाम पर गठित पाकिस्तान आज कहां जा पहुंचा यह सर्वविदित है। घरमें पाकिस्तान और सीमा पर काश्मीर उसके लिये बड़े मंहगे पड़ रहे हैं। अगर इसी आधार र इस नये बङ्गालका गठन किया जा रहा है तो यह गलत काम किया जा रहा है। यह नया बङ्गाल सब कुछ होते हुए भी हिन्दुस्तान ही है। हाथ शरीरका ही एक अविभाज्य अङ्ग कहलायेगा उसकी कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं हो सकती। यदि कोई इस कथनको गैर प्रमाणित करना चाहेगा तो वह अपने शरीरके साथ अन्याय करेगा।

हम नहीं जानते भविष्य हमें कहां खींचे लिये जा रहा है। फिर भी हमें अपने प्रति सजग और सचेष्ट रहना चाहिये।

(२६ वें पृष्ठका शेषश)

बीच अन्नोको छातीसे चिपकाये रो रही थी। मृत्युका शोक छाया और अन्नोका जीवनदीप बुझ गया।....

और यह जो कपूर साहबके यहां मोटरोंमें लोग आये हैं, उनकी परम्पराने ही सतीश, रीता और अन्नो जैसे कितनेही व्यक्तियोंके सुख और चैनका अपहरण किया है.... और दीपावली पर्व पर फैला हुआ यह उज्ज्वल प्रकाश रीता, सतीश और अन्नोके अंधकारमय जीवनको आलोकित करनेमें असमर्थ है, क्यों? यह आप उन्हींसे पूछिये....

यह हमारी पृथ्वी

लेखक—प्रोफेसर एस० पा० करल
बा० ए० औनर्स (लन्दन)

मुझे आप जड़वादी क्यों न कहें, मैं तो पृथ्वीका प्रेमी हूं, मैं जिस पृथ्वी पर रात दिन चलता हूं उसीको दण्डवत नमस्कार करता हूं। यह साधारण शिष्टाचार है, यह आचार शास्त्रकी मांग है, यह आत्मिक-शास्त्रका उत्तम साधन है। मैं पृथ्वीको उतना ही शुद्ध और पवित्र तथा महान समझता हूं, जितना कि लोग ईश्वरको, या ब्रह्मको शुद्ध और पवित्र तथा महान समझते हैं। कारण यह है कि पृथ्वीका कोई ऐसा कोना नहीं जिसे कि मनुष्य जातिकी पद धूलने पवित्र न किया हो। पृथ्वीका प्रत्येक परमाणु मनुष्य जातिके पूर्वजोंके जीवन-इतिहाससे पूर्ण है। यह मनुष्य आत्माके पारससे आत्मवान हो गया है, आज सारी पृथ्वी ही मनुष्य जातिकी सामूहिक आत्मा बन गयी है, इसलिये पृथ्वीका सम्मान मनुष्य जातिका सम्मान है, मनुष्यके अजेय आदर्श उत्साहका सत्कार है। इसलिये आप पृथ्वी पर सम्भल कर पग धरिये क्योंकि पृथ्वी पूर्वजोंकी धूल है।

यदि मनुष्यमें खड़े होनेका दुर्गुण उत्पन्न न होता तो वह अपने पूजनीय देशको भावहीन आकाशमें न ढूंढ़ता, न निराकार ब्रह्ममें ही ढूंढ़ता, परन्तु भाव पूर्ण और आकार-युक्त पृथ्वीपर ढूंढ़ता। खड़े होनेकी दुर्घटनासे मनुष्य घमंडी हो गया। उसकी दृष्टि पृथ्वी-वृत्तिके स्थान पर आकाश-वृत्तिकी हो गयी। वह जिस पृथ्वी पर खड़ा था उसीको भूल गया। उसकी उन्नतिशील बुद्धिके लिये यह दुर्घटना श्राप बन गयी। आकाश-वृत्ति रख कर उसने अपने पूज्य देवके सम्बन्धमें आकाशमें विचारोंकी दौड़ लगायी, परन्तु आकाश भावहीन है इसलिये उसकी बुद्धिकी दौड़-धूपका परिणाम व्यर्थ प्रमाणित हुआ। उसके सिद्धांतका अध्ययन कीजिये। क्या विचार विरोधोंका समूह है? उसने ईश्वरको हर स्थान पर उपस्थित बताया है परन्तु उसके पानेके लिये सारा जीवन भी यथेष्ट नहीं। प्रत्येक व्यक्तिकी आत्माको ब्रह्मका अंश बताया है। परन्तु इसकी अनुभूति असाधारण मनुष्योंके लिये भी असाधारण आदर्श बताया है। पुनः ईश्वरको एक ही घड़ीमें सगुणी और निर्गुणी बताया है और निराकार शक्तिको स्वरूपोंका सृष्टि कर्ता बताया है। जब सब कुछ ही ईश्वर और ब्रह्म है तो जीवमें यह मायाका पर्दा कैसे पड़ गया? इस व्यर्थ खोजमें मनुष्यने अपनी समस्त बुद्धि लगा दी है। विचार विभिन्नताको, अपने विचारोंका हास्यास्पद खोखलापन देखनेके बजाय वास्तविकताका नियम बताया है। यदि पशु मनुष्यकी भाषा समझ सकते तो मनुष्य सिद्धान्त पर हंसते न थकते।

मनुष्य, यदि पृथ्वी पर दृष्टि रखता तो उसे पृथ्वी पर ही सब विरोधहीन, ईश्वरीय गुण मिलते। ईश्वरका अर्थ सृष्टि रचना है। आकाश कोई रचना नहीं करता। पृथ्वीकी रचना देखिये, सब जीवों, फलों तथा फूलोंको देखिये। भला इससे अधिक सृजनका दृश्य कहीं हो सकता है? यह रचना नाटक हर घड़ी हो रहा है, प्रत्येक स्थान पर हो रहा है, और

अमेरिकन स्वतन्त्रताका स्मरण दिलानेवाली संसारकी वृहद मूर्ति

सौन्दर्यका चिन्तन करता है। प्रकृतिके वाह्य तथा आंतरिक रूपों में जो सौन्दर्य सन्निहित अथवा प्रस्फुटित है, उसीके सहारे काव्य अपना वितान तानता है। काव्यका यह अनुसन्धान सहज, सरल, विभिन्न तथा उपदेशात्मक होता है।

यदि हम सूक्ष्म रूपसे देखें तो हमें ज्ञात होगा कि वह वस्तु जिसे हम ज्योति अथवा आलोक नामसे सम्बोधित करते हैं केवल सूर्य-रश्मि द्वारा वायु कणों से विकीर्ण संज्ञाका नाम है; उसी प्रकार सौन्दर्य भी कुछ पार्थिव-पदार्थों के समन्वय-स्वरूप एक अनुभूतिका नाम है जो केवल आत्मिक-रूपसे अनुभव-गम्य होती है। हमारी कल्पना जो हमारी आत्माकी सहेली है उसे हमारे मानस-पटल पर व्यक्त करती है जिसके द्वारा हमें सौन्दर्य अनुभूति सहज-रूपमें होती रहती है। सौन्दर्य की अनुभूति केवल मानसिक विडम्बना नहीं वरन उसमें वही अमर तत्व हैं जो किसी भी प्राकृतिक अथवा भौगोलिक नियमों में होते हैं। जब कभी किसी विशेष पार्थिव-अवयवोंका सामञ्जस्य प्रस्तुत होगा, सौन्दर्य की प्राण-प्रतिष्ठा अवश्य होगी। सौन्दर्य और काव्यका चोली-दामनका सम्बन्ध है।

काव्यका बीजारोपण तभी होता है जब वाह्य प्रकृतिका कोई दृश्य, अथवा इतिहासकी कोई घटना, अथवा कोई मानवी अनुभव अथवा आध्यात्मिक सत्य, हमारे मनको गहरे रूपमें प्रभावित कर हमारी कल्पना तथा परि-कल्पना (फैन्सी) को उत्तेजित करता है। इसी उत्तेजना के कारण हमारे मनोभावोंमें उमंगकी लहरियां उठने लगती हैं और काव्य-चित्र बनने लगते हैं। मनोभाव, उमंगकी कूंची द्वारा काव्यका इन्द्र-धनुष अनुरञ्जित करता है। अंग्रेजी भाषाके महान कवि वर्ड्सवर्थका कथन है कि प्रभावपूर्ण-मनोभावों के स्वच्छन्द बहुल प्रवाहमें काव्य निहित है और उनकी एकान्त पुनरावृतिमें ही इसका मूल-स्रोत है। उनका यह भी विश्वास है कि काव्य केवल पुरुष तथा प्रकृतिके सम्बन्धसे ही आविर्भूत है। कदाचित् मानवसे सम्बन्धित ऐसा कोई अनुभव, मनोभाव अथवा सत्य नहीं जो काव्य-रूपमें परिणत न हो जाय। इसी विस्तारमें काव्यका देवत्व।

स्वतंत्र भारत में घरेलू उद्योग-धन्धे

भारत अपना हो गया। हम स्वतन्त्र हो गये। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमारा उद्देश्य सर्वथा पूर्ण हुआ। जिस उद्देशकी पूर्तिके लिये हमें स्वतंत्र भारतकी आवश्यकता थी वह उद्देश्य तो अभी शेष है। देशकी आर्थिक-अवस्थाको उन्नत करके देशवासियोंके जीवन-स्तरकी वृद्धि करना हमारा प्रधान उद्देश्य था और अब स्वतंत्र भारत बननेसे हमें वह सुविधा मिल गयी है जिसकी सहायतासे हम उक्त उद्देश्यकी पूर्ति कर सकेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय सरकारके स्थापित होनेसे देशका आर्थिक-नकशा अवश्य बदलेगा।

श्री गिरिराज प्रसाद गुप्त. एम.काम. मेरठ.

यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं है कि आर्थिक-उन्नतिके लिये जिन प्रमुख वस्तुओंकी आवश्यकता है वे सब भारतमें विद्यमान हैं। देश विशाल है। देशमें आर्थिक-उन्नतिके साधन महान हैं और उन साधनोंका प्रयोग करनेके लिये भी मनुष्य बल भी संसारके अन्य देशों से कहीं अधिक है। देशको बड़े पैमानेपर उद्योगी बनानेके लिये प्रत्येक सुविधा अधिक मात्रामें पायी जाती है। परन्तु आवश्यकता केवल इस बात की है कि घरेलू उद्योग-धन्धोंका पुनर्निर्माण हो।

भारत एक कृषि-प्रधान देश है। लगभग ७० प्रतिशत लोग खेती करके जीविकोपार्जन करते हैं-अतः यह आवश्यक है कि इतनी बड़ी आबादीके जीवन-स्तर को उन्नत बनानेके लिये घरेलू उद्योग-धंधों को फिरसे जीवित किया जाय। भारतके प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरूने भी अपनी 'नेहरू-योजना'में घरेलू-उद्योग-धंधों को देशकी एक आवश्यकता समझकर अधिक स्थान दिया है। भारत जैसे देशके लिये, जहां ७ लाखसे अधिक गांव ही हैं और जहांके अधिकांश लोग या तो भूखे मजदूर हैं या नंगे कृषक हैं, ऐसे उद्योगों की आवश्यकता है जो कमसे कम पूंजी तथा कमसे कम मशीनके प्रयोगसे चलाये जा सकें यह बात निर्विवाद सत्य है कि जब तक तीन-चौथाई भारत-निवासी जो केवल कृषि पर ही निर्भर हैं, कृषिसे हटा कर अथवा कृषि-धंधेके साथ साथ अन्य धंधों पर न लगाये जांय तब तक भारत का भाग्य नहीं सुधर सकता। हमारी समस्या केवल उपज-वृद्धिकी ही नहीं है वरन् उस उपजके वितरण की भी है। जब तक हम देशके प्रत्येक व्यक्तिको काम बांटकर उसकी रोटीका प्रबन्ध नहीं करते तब तक हमारी आर्थिक समस्या हल नहीं हो सकती। कुछ थोड़ेसे पूंजीपति या गिने हुए बड़े पैमानेके कारखाने भारत संघकी ३० करोड़की आबादीको पूरा पूरा काम नहीं दे सकते। अतः घरेलू उद्योग धन्धों को शीघ्रसे शीघ्र संगठित करना होगा। इसलिये हमारे राष्ट्र-निर्माणमें उद्योग-धन्धोंका अधिक महत्व है। देशकी भलाईके लिये राष्ट्रकी किसी भी योजनामें चर्खा तथा अन्य धन्धोंको हमें अवश्य ध्यान देना होगा।

कार्य कलामें सहायक

आर्थिक दृष्टिकोणके अतिरिक्त घरेलू उद्योग धन्धोंमें एक महानताका स्वरुप निहित है। ऐसे धन्धे मनुष्यको केवल मशीन तथा औजारोंकी गुलामी से मुक्त ही नहीं करते वरन् उसकी कार्य कला की वृद्धिमें भी सहायक होते हैं। इन धंधों के पुनर्निर्माणके साथ साथ हमारी मानवता, सभ्यता तथा कलाका पुनर्जन्म होगा। देशकी स्थिति बदल जायेगी और लोगोंको अपने नये नये कार्यों में दिलचस्पी होगी। गांवोंमें एक नया जीवन होगा और कंगाली तथा दुर्भिक्ष इस समृद्धशाली कहलाने वाले भारतको छोड़ देंगे।

इन कारखानोंको अनेक विपत्तियोंका सामना करना पड़ा है परन्तु फिर भी जीवित रह सके हैं। सरकार ऐसे कारखानोंको खतम नहीं कर सकती और न करना चाहिये। बड़े पैमानेके कारखानों तथा घरेलू उद्योग धंधोंमें सहयोगकी आवश्यकता है। बड़े कारखानों, जिनसे उपज तथा कलामें वृद्धि हो रही है और जिनके कारण किसी जाति, समाज या लोगोंको कोई अड़चन नहीं है, अवश्य स्थिर रह सकते हैं—भारत सरकारको इस प्रकारके कारखानोंको सहायता देनी चाहिये। सम्भव है घरेलू उद्योग धंधोंको सङ्गठित करनेके लिये भारत सरकारको आरम्भमें कुछ अड़चनोंका सामना करना पड़े। परन्तु ये अड़चनें सरकारके प्रबंधों द्वारा आसानीसे दूर हो सकेंगी। उचित मात्रामें कच्चा माल बिना पैदा किये किसी भी प्रकारका धंधा सुचारु रूपसे नहीं

चलाया जा सकता । इस समय मुख्य अड़चन अच्छे किस्मका कच्चा माल पैदा करना है जिससे धंधोंका काम आसानी से चल सके। अच्छे प्रकारका कच्चा माल घरेलू धंधोंको तभी मिल सकता है जब बड़े बड़े कारखाने और मिलें छोटे छोटे धंधोंसे कम्पटीशनकी नीतिको छोड़ दें और घरेलू धंधोंके काम करने वालोंको भी अच्छा कच्चा माल दिया जाये।

खोजका काम

दूसरी अड़चन यह है कि घरेलू धंधों पर काम करने वालोंके औजार या तो पुराने हैं या टूटे फूटे हैं जिनसे अच्छा पक्का माल तैयार नहीं हो सकता। सरकारको इस कमीको दूर करनेके लिये मशीनों तथा औजारोंकी खोज करनी चाहिये। विदेशी सरकारने अपने स्वार्थके कारण अब तक इस क्षेत्रमें कोई सहयोग नहीं दिया। परन्तु अब राष्ट्रीय सरकार को चाहिये कि प्रान्तीय सरकारोंके साथ साथ एक 'खोज विभाग' खोले जिसके मशीनों और औजारोंकी खोज की जाये। 'अखिल भारतवर्षीय ग्रामोद्योग समिति द्वारा निश्चित किये गये औजारों का प्रयोग होना चाहिये। अगर उचित वैज्ञानिक-अनुसन्धान होते रहे तथा तत्विषयक शिक्षाको प्रबन्ध भी हो तो उद्योगोंके मशीन व औजारोंकी समस्या शीघ्र ही हल हो सकती है ।

उद्योग धंधोंको चलानेके लिये अर्थ सामग्रीको प्राप्त करना भी एक समस्या हो सकती है। यद्यपि घरेलू धंधोंमें आर्थिक पूंजीकी आवश्यकता नहीं होती फिर भी भारतके गरीब कृषकोंकी ओर देखनेसे थोड़ी आवश्यकता भी अधिक जान पड़ती है। गरीब ग्रामीण जनता सस्ते और अच्छे पक्के मालको खरीदननेमें सर्वथा असमर्थ होती है । इसके अतिरिक्त पक्के मालको ठीक और उचित मूल्य पर बेचना भी एक समस्या है । इन समस्याओंको सुलझानेके लिये भारत सरकारको इस आशयका एक विभाग खोलना होगा जो धन्धोंको अर्थ सामग्री देगा और पक्के मालको उनसे खरीद कर उचित मूल्यपर बेच कर अपना रुपया वसूल करके पूरा बचा हुआ लाभ धन्धे करनेवालेंको लौटाती रहेगी। आशा है स्वतन्त्र भारत सरकार इस विषयमें पूरा ध्यान देगी।

ट्रांसपोर्टमें सुधार

भारत सरकारको धन्धोंको उन्नत करनेके लिये रेल्वे नीतिमें परिवर्तन करना होगा। रेलका किराया घटाना होगा और रियायत देनी होगी जिससे घरेलू धन्धों का माल दूसरे बाजारोंमें पहुंच कर सस्ता बेचा जा सके। कर नीतिमें भी परिवर्तन करना होगा। इस प्रकारकी असुविधाएं तभी दूर हो सकती हैं जबकि स्वतन्त्र भारत सरकार इस कार्यमें जनताको पूरा पूरा सहयोग दे । सरकारको संरक्षण नीतिका पालन करना होगा, समय आने पर रियायत भी देनी पड़ेगी जिससे विदेशी कम्पीटशन द्वारा धन्ध नष्ट न हो जायं। सरकारको चाहिये कि इन धन्धों तथा उनकी पैदाकी हुई वस्तुओंका प्रदर्शन कराये और विज्ञापन करे जिससे देशमें इन धन्धोंके प्रति लोगोंका विश्वास बढ़े। प्रदर्शनियों तथा धन्धोंकी पैदा की गयी वस्तुओंके संग्रहालय स्थान स्थान पर बना कर सरकार इन धन्धोंको बहुत ऊंचा उठा सकेगी। प्रत्येक जिलेकी इस विषयमें पूरी खोज करनी चाहिये कि किस प्रकारका धन्धा अमुक जिलेमें चलाया जा सकता है और उसके लिये आवश्यक सुविधाएं वहां मिल सकती हैं या नहीं। इन सब प्रकारकी सरकारकी सहायता तथा जनताके सहयोगसे भारत देश एक बार फिर नया राष्ट्र निर्माण करके अपने चिरवांछित देशकी पूर्तिमें सफल हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

"काव्य का मूलस्रोत"

लेखक—डा० ए० पी० खत्री, विश्वविद्यालय, प्रयाग

-::***::*::**::-

मनुष्य और प्रकृतिमें दैवी सम्बन्ध है। मानव-आत्मा प्रकृतिके वातावरणमें अठखेलियां करती फिरती हैं और अपने रुचिअनुकूल दृश्योंको चुन चुनकर उनका हिंडोला बनाती हैं। इस हिंडोलेमें झूल कर कभी वह हास्य तथा हर्ष, रोदन तथा करुणा तथा शांत रसके वातावरणमें डुबती तिराती रहती है। यह आत्मा कभी पक्षियोंके गुञ्जनको शांत-चित्त हो सुनती है; कभी जल-प्रपातों और निर्झरों-के किनारे बैठ उनका सन्देश समझनेकी चेष्टा करती है और कभी झंझांके आवेगसे क्षुब्ध हो उठती है। मानव-आत्मा तथा प्रकृतिके प्रेमालिंगनमें काव्यका मूल-स्रोत है।

काव्य, मानव-आत्मा तथा प्रकृतिकी रंगरलियोंका प्रदर्शन मात्र है। वह प्रकृतिके सत-रंगे इन्द्रधनुषकी प्रत्यंचाके समान है जिसको मानव-आत्मा पूरी शक्तिसे खींच खींच कर अनुभव-रूपी वाण मारती है और एक अज्ञात लक्ष्यकी ओर एकटक देखती रहती है। अपने अक्षय तूणीरसे मानव-आत्मा आदिकालसे अबतक इसी अज्ञात लक्ष्यका भेदन करनेमें प्रयत्न-शील है। कदाचित् उसका प्रयत्न अब तक सफल नहीं हुआ है और शायद न भी हो। यदि लक्ष्य-भेद सफल हो गया तो वह दिवस काव्यको निष्प्राण कर देगा; इसकी असफलतामेंही काव्यका अमरत्व है।

संसारके श्रेष्ठ काव्यके अध्ययनसे यह ज्ञात होता है कि उसमें सदैव किसी ऐसे अज्ञात लक्ष्यकी ओर संकेत रहता है जिसकी परिभाषा अथवा नाम-करण कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। श्रेष्ठ काव्य सतत इसी संकेतको यथा सम्भव स्पष्ट करनेकी चेष्टा करता है; इसी चेष्टामें वह आदिकालसे अब तक संलग्न है। इसी अनवरत संलग्नतामें काव्यकी मनमोहकता, हृदय-ग्राहिता तथा उसका गौरव है। यह काव्य लक्ष्य इस जगतके परे है; वहां मनुष्यकी पार्थिव दृष्टि नहीं पहुंच पाती है परन्तु काव्य अनेकों रूपों तथा अनेक उपकरणों द्वारा उसको समझने तथा उसको अनुभव-गम्य बनानेकी चेष्टा किया करता है। कभी वह उपमेयोंका सहारा लेता है; कभी वह भाषाका सहारा लेता है और कभी वह कल्पनाकी शरण ले प्रकृति-प्रांगनमें उसका प्रतीक ढूंढ़ता फिरता है। उसकी दशा उस छोटे खोये हुए बालकके समान है जिसकी माताका साथ छूट गया हो और वह पूछने पर केवल एक ही शब्द मांका उच्चारण करता है। कभी वह किसी एक ओर जाता है और कभी दूसरी ओर प्राण-पणसे अपने माताका रूपरङ्ग वर्णन करने की चेष्टामें थक कर केवल 'मां' शब्दका ही उच्चारण कर पाता है। इसी संकेत तथा लक्ष्य-भेदमें काव्यकी सार्थकता है।

वास्तवमें काव्यका मुख्य ध्येय मनुष्य और प्रकृतिके सम्बन्धको समझना तथा उसको सरलसे सरल रूपसे व्यक्त करना है। मानव-आत्मा तथा प्रकृतिकी आत्माकी भित्ति-स्वरूप जो शक्ति अज्ञात रूपसे कार्य करती रहती है और जो दोनोंका अनुशासन करती रहती है, काव्य उसीके दिग्दर्शन करानेमें संलग्न रहता है। श्रेष्ठ काव्यके इस गुणको संसारके सर्वश्रेष्ठ कलाकारोंने सराहा है। जिस शक्तिके स्पष्टी करणमें काव्यकी महानता है उसे हम ईश्वरके नामसे सम्बोधित कर सकते हैं।

उपरोक्त विश्लेषणके फलस्वरूप हम काव्यके तीन प्रमुख तत्वोंका समावेश देखते हैं। ये प्रमुख तत्व हैं; मनुष्य,प्रकृति तथा ईश्वर। श्रेष्ठ अथवा महान काव्यों में, ईश्वर-रूपी तीसरा तत्व, किसी न किसी रूपमें सन्निविष्ठित रहता है। कभी तो काव्य स्पष्टतया उस शक्तिके सन्मुख विनत हो उसकी पूजा तथा अर्चना करता और कभी वह मनुष्य तथा प्रकृतिके अन्तस्तलोंमें उसकी छाया ढूंढ़ता फिरता है। काव्य, अपने इस ईश्वरीय अनुसन्धान में दर्शन तथा वेदांतका सहारा ग्रहण करता है। वह कल्पनाकी सहायतासे, इन तीनों तत्वोंमें सहजरूपसे संचरण करता है और स्वान्तः सुखाय कभी एक, कभी दूसरे और कभी तीसरेको केवल एक ही शब्द एक ही वाक्यांश अथवा एक ही पंक्तिमें व्यक्त कर देता है। इसी कारणसे कोई भी काव्य, प्रकृति, मनुष्य और ईश्वरसे पृथक नहीं रह सकता है। यदि काव्य मनुष्यका गुणानुवाद करता है तो उसमें कहीं न कहीं प्रकृति तथा ईश्वरकी भावना भी अव्यक्त रूपमें रहती है।

प्रकृति, वास्तवमें हमारी रसेन्द्रियों द्वारा वाह्य संसारकी अनुभूति मात्र है। मनुष्यके सामने जो प्रकृतिका साम्राज्य फैला हुआ है, वह उसे ग्रहण करना चाहता है। अपनी सम्पूर्ण-शक्ति लगाकर वह इस वाह्य साम्राज्यको अपनेमें समा लेना चाहता है और मनुष्यकी रसेन्द्रियां तथा ज्ञानेन्द्रियां उसकी सहायता करती रहती हैं। अपनी घ्राण-शक्तिसे वह प्रकृति के सौरभ-पूर्ण पुष्पोंका पराग तथा उनके सौरभका अनुभव करता है; अपनी त्वचा से वह प्रकृतिके कोमल तथा चिकने, खुरदुरे तथा विषम स्थलोंको ढूंढ़ता रहता है; अपनी जिह्वासे वह मधुर तथा अम्ल तथा कटु पदार्थोंका रस लेता है; अपनी श्रवण शक्ति द्वारा वह प्रकृतिका कोमल कलरव तथा कर्कश नाद सुनता है और अपने मस्तिष्क तथा हृदयसे सम्पूर्ण-प्रकृतिके जीवोन्माद तथा उसके रहस्यको समझनेका प्रयास किया करता है। दर्शनशास्त्र, प्रकृतिकी चेतनता, वेदांत, प्रकृतिके प्राण तथा काव्य प्रकृतिके

असीमित रूपोंमें हो रहा है। इनकी चकाचौंध करने वाली रचना भिन्नताको देखिये—प्रत्येक पौधा एक दूसरेसे भिन्न है और प्रत्येक पौधेकी अनगिनत किस्में हैं। रचना रहित पृथ्वी भला यह आश्चर्य जनक रचनात्मक नाटक कैसे रच सकती है? इसके अतिरिक्त मनुष्यकी जननी भी तो पृथ्वी है। इस जननीने शताब्दियोंके अथक संग्राम, दुःख और त्यागके पश्चात मनुष्यको जन्म दिया है। जब मनुष्यने विज्ञान-दृष्टि धारण करके पृथ्वीको ढूंढा तो उसको अनुभव हुआ कि किस प्रकार पृथ्वीने अपने असफल बच्चोंको अपने जिगरके साथ चिपका कर उनके अस्तित्वकी रक्षा की है। और अपनी सन्ततिके पालनके हेतु उनकी आवश्यकताओंके अनुसार अपने आपको आहार बनाती रही है व बना रही है। इससे अधिक रचनाकार और पालनहार ईश्वरका और क्या साक्षात प्रमाण हो सकता है? हां ईश्वर हर जगह और हर स्थान पर वर्तमान है परन्तु उसके ढूंढनेके लिये सारी आयुकी आवश्यकता नहीं, क्षण भरकी दृष्टि ही यथेष्ट है। मनुष्य यदि पृथ्वीको देखे तो उसे अपने ईश्वरका अनुभव हो जाये। ब्रह्म जिसका कि मनुष्य अंश है, वह पृथ्वी ही है। मनुष्य पृथ्वीके गर्भसे ही उत्पन्न हुआ है। वह पृथ्वी ही है कि जिसके साथ मनुष्य अपना सम्बन्ध स्थापित करता है, क्यों कि उसीके साथ उसे लय होना है।

जड़वाद, जड़ पदार्थोंके साथ मोहका नाम है, पूजाका नाम नहीं। धनका लोभी, धनका मोही है, धनका पुजारी नहीं। पूजा और मोहमें बुनयादी अन्तर है। मोहमें स्वार्थ भावना है, मोह विषय का दुरुपयोग है। पूजा में अहं और लोम-त्याग है। पूजा विषयका पवित्र प्रेम है। मोही सदा ही मोहक वस्तुकी मांगे करता रहता है, पुजारी सदा ही अपने आपको और अपने लाभोंको अर्पण करता रहता है। मोहमें मोहकी वस्तुके लिये कोई आदर व सम्मान नहीं, पूजामें पूजनीयके लिये आदर और सम्मान होता है। मोहमें मोहकी वस्तु अपना अङ्ग लगती है, पूजामें पूजनीय अपने से अलग तथा ऊंचा स्थान रखता है। आज विज्ञानने खड़े होने के आपसे हमें कुछ न कुछ मुक्ति दी है। हमारी दृष्टि आकाशकी ओरसे पृथ्वीपर भी फेरी है। इसी को ही यथार्थ वाद की वृति कहते हैं। परन्तु विज्ञानने पृथ्वी की पूजा नहीं सिखायी उसे मोहका साधन बनाया है। विज्ञान मनुष्यमें पृथ्वीके प्रति उस बर्बर सिपाहीकी दृष्टि उत्पन्न करनेमें सहायक हुआ है, जो सिपाही बनने पर अपनी मां को कहता था कि 'मां अब मैं तुझे चाबुक से मारा करूंगा।' पृथ्वीने विज्ञानवादियोंपर तरस खाकर उन्हें अपनी गुप्त सचाइयोंका ज्ञान दे दिया परन्तु

हैदराबाद आंदोलनके नेता स्वामी रामानन्द तीर्थ दिल्लीमें डा० केसकके साथ।

मनुष्यने विज्ञान शक्ति पाकर, पृथ्वी माता, मातृभूमिके प्रति कठोर दुर्व्यवहार किया। उसके खजानोंका अपने लाभके लिये लोभके कारण बेतहाशा दुर्व्यवहार किया। कइयों का तो विचार यह है कि पृथ्वी की उपजाऊ शक्तिके दुरुपयोग के कारण उसकी असीमित उत्पत्तिकी शक्ति कम होती जा रही है। यह मोह का चिन्ह है। यह दुरुपयोग ही जड़वाद है। यह पूजा नहीं। पृथ्वी-पूजा, पृथ्वीकी रचना शक्तिका सम्मान है, उसके मातृ-रूपके प्रति श्रद्धा है। यही पूजा आत्मिक पूजा है, आदर्श पूजा है।

यह आदर्शवादी लोग अपने ईश्वर और ब्रह्मके पूज्य स्थान भी, ऐ पृथ्वी, तेरी धूलसे बनाते हैं। तेरी निन्दा करके यह कृतघ्न लोग अपने महा उत्साह और आदर्शोंकी पूर्तिके लिये तुझे सेवामें लगाते हैं। तेरे बिना मन्दिर शिवालय और तीर्थ स्थान व ताज महलकी वास्तविकता ही कहां है? तेरे उत्पन्न किए रंगोंके बिना, कला और साहित्य क्या वास्तविकता रखते हैं? मनुष्यकी सब इच्छाओंके प्रकाश का साधन तू है। प्रकाशके बिना इच्छा शक्तिका कोई अस्तित्व नहीं, इसलिये तू ही मनुष्यके अस्तित्वकी दाता है तेरी ही पूजा न हो तो और किसकी हो?

मनुष्यने चांद तथा सितारोंको आदर्श की वस्तु समझा है। कवियोंने अपने ईश्वरीय सगीतोंके लिये इन्हींमें अपनी प्रेरणाका स्रोत पाया है और इन्हें आकाश की प्रेम-क्रीड़ा-बताया है महाराजाओं तथा मजदूरोंने, शाहजादों तथा किसानोंने, इनमें अपने भाग्य व दुर्भाग्यको देखा है। परन्तु इन्हें क्या पता कि वे अज्ञात रूपसे, हे पृथ्वी, तुझको ही यह श्रद्धांजलि चढ़ा रहे हैं। शताब्दियों पश्चात मनुष्यको विज्ञान द्वारा यह अनुभव हुआ कि चांद और सितारे भी तेरे ही समरूपी हैं केवल इनकी असीमित सुन्दरता तेरी सुन्दरताका सुदूर निर्शदन है। मनुष्यका दुर्भाग्य यह है कि उसकी सराहना-दृष्टि सूक्ष्मदर्शी नहीं, स्थूलदर्शी है। इसलिये उसने तुझको भूल कर चांद और सितारोंकी असीमित सुन्दरतामें तल्लीनता और भावुकता दिखायी है। परन्तु मन की इस मग्नता तथा भावुक नृत्यकी, हे पृथ्वी, तू ही अधिकारिणी है।

यदि किसीको तेरी महानताको मूर्त रूपमें देखना है तो हिमालयकी उत्तुङ्ग चोटियोंको देखे, इन महाबली अजेय पर्वतों को देखकर कौन सा मनुष्य हृदय है जो चुपचाप ही तेरे सम्मुख पूजाकी अवस्था में समाधिस्थ न हो जा सके? और आंखे खुलनेपर जो घुटनोंके बल्झुक कर तेरा चुम्बन न लेता हो?

———

कुछ मनोरंजक बातें

(एक फिल्मी पत्रकार)

शूटिंगके समय 'शाट लेनेमें जब किसी कलाकारका मूड' अनुकूल नहीं होता है, तो निर्देशकको बड़ी परेशानी होती है। परिस्थिति ठीक करनेमें उन्हें तरह तरहके तरीकोंका व्यवहार करना पड़ता है। एकबार जब स्वर्गीय कलाकर सहगलका एक चित्रमें घबराया हुआ 'शाट' लेना था तो इसी तरहकी दिक्कत हुई। सहगल साहब अपनी मस्तीमें थे और निर्देशक साहबकी हुलिया 'ठीक नहीं' से तंग थी। घण्टों समय निकल गया, पर नतीजा कुछ नहीं निकला। लाचारीमें एक युक्ति निकली। सेट पर ही सहगल साहबका फोन आया कि उनकी पत्नी सीढ़ी परसे गिर कर सख्त घायल हो गयी है। फोन सुना और उन्होंने निर्देशकसे कहा—'जल्दी कीजिये, मेरे घर पर दुर्घटना हो गयी है'। निर्देशकने कहा—संवाद बोलिये। 'शाट' बिलकुल ठीक ठीक आया। सहगल साहबको बधाई और चाय मिली पर वे विचारे घर भागने को तैयार थे। मुश्किलसे कुछ देर ठहरे तो उन्हें कहा गया कि यह फोन जो अभी आपने सुना है यह भी एक अभिनय था, तब वे प्रकृतिस्थ हुए।

* * *

फिल्मोंमें सफल और स्वच्छन्द अभिनयके लिये भारतीय अभिनेता मोतीलालका बड़ा नाम है—जिसका दावा है कि उसके अभिनयके लिये कोई अनुकूल संवाद नहीं लिख सकता। प्रत्येक दृश्यमें निर्देशनकी प्रतीक्षा किये बिना वह अपनेको खपा देता है। एक बार एक चित्रमें निर्देशकने कहा कि आपके कपड़े कुछ फटे और धूल-धुसरित होने चाहिये। मोतीके कपड़े दूसरे क्षण फट गये और वह वहीं सड़क पर लोट पोट कर तैयार हो गया। लेकिन एक चित्रमें बड़ा मजा आया। तालाबमें कूदनेका दृश्य था। निर्देशकने निर्देश किया और आपने बाजाप्ता

डा० कोटनीसमें जयश्री

तालाबमें कूदनेकी तैयारी की। कपड़े संभाले और अन्तिम आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। कैमरे वालोंको आर्डर मिला 'स्टार्ट' और मोती साहब पूरी तैयारीसे कूद पड़े। लेकिन तालाबमें मुश्किलसे एक हाथ पानी था। पूरी चोट लगी और आप झुझंला उठे। निर्देशकने स्थिति पर प्रकाश डाला तो आप बोले-मुझे क्या पता कि यह नकली तालाब है?

* * *

फिल्म देखते समय जब दर्शकोंमें रसानुभूति होती है तो लोगों पर पूरा प्रभाव पड़ता है और दृश्य गत स्थितिके साथ वे हंसने या रोने तक लग जाते हैं। किन्तु कभी कभी इसका विचित्र प्रभाव भी पड़ता है। एक बार किसी सिनेमा हाउसमें 'गंगावतरण' चित्र चल रहा था। धार्मिक चित्र होनेकी वजह देहातके भी बहुत दर्शक उसे देखने आये और देख कर खुशी अनुभव करने लगे। जब गंगाकी धाराके प्रदर्शनका स्थल आया तो कुछ धोती संभाले कुर्सी पर खड़े होने लगे। पीछेके लोगोंको आश्चर्य हुआ कि यह क्या बात है और उन्होंने पूछा—ऐसा क्यों कर रहे हो? तो इन लोगोंने जवाब दिया—देखते नहीं—गंगाजी बढ़ी चली आरही हैं? खड़े नहीं होनेसे कपड़े नहीं भींग जायेंगे? बहुत समझाने बुझाने पर बात देहातियोंकी समझमें आयी।

जिन लोगोंने स्टूडियो नहीं देखा है उन्हें उसे और शूटिङ्ग देखनेकी उत्कट अभिलाषा रहती है। एक तरहका कौतूहल उनके दिमागमें चकर काटता है। एक सिने पत्रकारने एक बार अपने पांच-सात मित्रोंको आमंत्रित किया, एक स्टूडियोमें और उन्हें 'सेट' पर बैठा दिया। कार्य शुरू हुआ—प्रकाश फैला—साउण्ड वालेने स्वीकृति दी और लगातार तीन चार 'शाट' लेलिये गये। कामसे फर्सत पाकर जब पत्रकार महोदयने मित्रोंसे पूछा कि सबकुछ देख लिया न? तो मित्रगण बोले—देखा तो, लेकिन 'शूटिङ्ग' कब होगी? पत्रकारने समझाया यही 'शूटिङ्ग' है और यही काम यहां पर होता है।

* * *

अमर कलाकार सहगल अपनी लोकप्रियता और हाजिर जवाबीके लिये अपना अलग स्थान रखते थे। अपने अभिनयकालमें तमाम प्रमुख निर्माताओंके यहां कार्य किया और उनके सम्पर्कमें आये। अपनेको श्रेष्ठ बताना फिल्म क्षेत्रमें उसी तरह आवश्यक है, जिस तरह पानमें जर्दा और श्री सहगलको भी इनलोगोंसे निपटना ही पड़ता। एक बार एक निर्माताने कहा—क्यों सहगल साहब, मैं तो श्रेष्ठ निर्माता हूं? आपने छूटते ही कहा - श्रेष्ठ क्यों? सर्वश्रेष्ठ कहिये सर्वश्रेष्ठ।

* * *

छमयना छरया

अभिनेत्रियोंका आकर्षण एवं उसकी कल्पना फिल्म संसारके लिये एक विचित्र चीज है, जिसका अक्सर लोग अतिरंजित चित्र अपने मस्तिष्कमें बना लेते हैं। रंगे पुते मेक-अप किये हुए चेहरे और कैमरेकी सफाईमें गलत धारणा स्वाभाविक भी है। अभिनेत्री काननदेवीके लिये इसी तरहकी कल्पना करने वाले एक मित्रने स्टूडियोके एक कर्मचारीसे प्रार्थना की कि जैसे हो एक बार काननदेवीको दिखाईये। जब कर्मचारीने बताया कि वह उनके सामने ही बैठी है तो आप जैसे आसमान परसे जमीन पर आगये। बोले—क्या यही काननदेवी हैं? मैंने तो कुछ और समझा था। कर्मचारी चाय पीनेके लिये बाहर निकल गया।

*　　*　　*

बम्बईके फिल्म क्षेत्रमें विभिन्न धोखा धड़ियोंमें जो एक विचित्र और विशेष

निर्देशक या गीतकार बन कर किसी प्रसिद्ध व्यक्तिके बदले-अपरिचित आदमी को ठगना और किसी तरह रुपया बनाना। इसी तरह एक बार निर्देशक सन्तोषी सज्जन बन कर एक किसी सेठ की गद्दीमें पधारे। अपने चित्रोंकी तारीफ की कुछ लोगोंकी शिकायत और घण्टों फिल्म क्षेत्रकी आलोचनाके बाद सिर्फ ५) रुपयेकी मांगकी। लोगोंने समझा—संभव है, सन्तोषजी बाजार निकले हैं-कुछ जरूरत पड़ गयी। रुपये देनेको तैयार थे कि एक सन्तोषीजीके मित्र पहुंचे। परिचयमें उन्हें इनका परिचय दिया गया तो वे चौंके और उन्होंने कहा कि मैं अभी अभी सन्तोषीजीको नीचे छोड़ कर आ रहा हूं। फिर तो नकली सन्तोषीजीकी हुलिया न पूछो।

(१३ वें पृष्ठका शेष)

की तुलनामें रूसके नारी समाजने अधिक उन्नति की है। रूसमें नारी और पुरुष के अधिकार सभी क्षेत्रोंमें समान रूपमें स्वीकार किये गये है। सम्भवतः यही उनकी उन्नतिका अन्यतम कारण है। रूसमें पुरुषकी तरह नारी भी सोचती है कि देशकी शासन व्यवस्थाके सञ्चालनमें उसका भी आंशिक दायित्व है।

क्रान्तिके पूर्व रूसमें स्वेच्छाचारी जारशाहीमें नारीको किसी तरहकी स्वाधीनता नहीं थी। वे केवल विलास-वासना की सामग्री समझीं जाती थीं। देशमें अन्याय और नौकरशाहीका बोलबाला था। लेकिन रूसमें क्रान्तिके बाद जो पंचायती शासन व्यवस्था प्रचलित हुई उसमें नारीको पूर्णरूपेण उसके अधिकार प्राप्त हुए। रूसी नारीने प्रमाणित किया है कि वह किसी भी क्षेत्रमें पुरुषसे कम नहीं है। गत रूस-जर्मन महायुद्धमें रूसी नारीने जिस गौरवमय इतिहासकी रचना की है वह सभी देशोंकी नारियोंके लिये अनुकरणीय है।

हमारे देशमें भी आज सभी नारीकी शिक्षा और उन्नति की बातें सोच रहे हैं। समाज और राष्ट्रके गठनमें नारीके सहयोग सहायताकी एकान्त आवश्यकता है, आज यह सभी अनुभव कर रहे हैं। इधर भारतीय नारीने भी विश्व समाजमें अपनी प्रतिभाका चमत्कार दिखाया है। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित और श्रीमती सरोजिनी नायडू प्रमुख नेत्रियोंने, भारतीय नारी समाजका उज्ज्वल आदर्श स्थापित किया है।

उपयुक्त सुयोग और शिक्षा प्राप्त करने पर भारतीय नारी भी एक दिन संसारके अन्यान्य देशोंकी नारियोंकी भांति अपनी योग्यता दिखा सकेगी इसमें सन्देह नहीं है। दो सौ वर्षों की लम्बी अवधिके बाद भारत स्वाधीन हुआ है। आशा है कि सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रोंकी प्रगतिके साथ साथ भारतीय नारी सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रोंमें अपना अधिकार प्राप्त करेगी। हमारे विचारसे दूसरे रचनात्मक कार्यों की भांति यह भी राष्ट्रकी भलाईका

एटम बम

—※※—

अब तक संसारका "रहस्य" कैसे रह सका !

द्वितीय महायुद्धकी सबसे महान् निधि क्या है ? निश्चित है कि आप कहेंगे-'एटम बम' किन्तु 'एटम बम' का आविष्कार उतना कठिन कार्य न था जितना कि इस आविष्कारके सम्बन्धकी बातोंको गुप्त रखना !

'एटम बम' को गोपनीय रखने के लिये एक दल तैयार किया गया। 'दिक्रीप्स' इसका नाम पड़ा। गुप्त रूपसे इस दलमें सैकड़ों युवक और युवतियां भर्ती किये गये। अधिकतर इसमें वही लोग लिये गये जो कानून विभागमें या गुप्तचर विभागमें कार्य करते थे।

'क्रीप्स' और अन्य कार्यकर्ता एक विशेष सांकेतिक भाषाका प्रयोग किया करते थे जिसमें भी समय २ पर परिवर्तन कर दिया जाता था। दलके गुप्तचर उन तमाम ठेकेदारों और कम्पनियोंके नौकरों को जांचते रहते थे जो इस 'अनुसन्धान' से किसी प्रकार भी संबन्धित थे बम वर्षक विमानों और धुरी राष्ट्रके गुप्तचरों से बचनेके लिये 'अनुसन्धान' कई भागों में विभक्त कर कई शहरोंमें बांट दिया गया था।

'अनुसन्धान' से सम्बन्धित किसी कागज पत्रके गुम होते ही तहलका मच जाता था चाहे सप्ताह लगे या महीना कागज मिलना ही चाहिये। प्रत्येक रात्रि को बिखरे हुए कागजात इकट्ठे कर दिये जाते थे। कहीं कोई रद्दी कागज भी नहीं फेंका जाता था। मेजोंकी हर दराज को अच्छी तरह जांचकर ताला लगा दिया जाता था। कभी २ प्रेसीडेंट रूजवेल्ट को लिखित रिपोर्ट भेज दी जाती थी किन्तु उन्हें यह रद्दी खुद ले जाया करते थे और अपने सामने ही पढ़वा कर वापस ले आते थे।

एक बार कुछ कार्यकर्ताओंपर अणु का प्रभाव पड़ा जिन्होंने अपने डाक्टरों से राय लेली। 'क्रीप्स'के सदस्योंने प्रत्येक डाक्टरके यहां जाकर उनसे गोपनीयता की शपथ खिलवायी।

पूरे 'अनुसन्धान' में छः लाख व्यक्तियोंने कार्य किया और प्रत्येकने गोपनीयताके शपथ पत्र पर हस्ताक्षर किये। ४ वर्षमें २००० कानूनी व्यक्ति पकड़े गये।

वैज्ञानिकों की समस्या सबसे अधिक गम्भीर थी। अगर जर्मन जान पाते कि अमेरिकाके उच्च वैज्ञानिक कहां हैं तो उन्हें परिणाम निकालनेमें देर न लगती इसलिये प्रत्येक वैज्ञानिकके नाम बदल दिये गये और उनके साथ अङ्ग रक्षक रहने लगे। यह लोग सावधान रहा करते थे किन्तु एक वैज्ञानिकने एक भाषणके सिलसिलेमें कुछ रहस्य खोल दिया, तथा दूसरे ने तो आवश्यक कागजातोंसे भरा हुआ एक सूटकेस ट्रेनके डब्बेमें छोड़ दिया, छः गुप्तचरोंने सारी रात अथक परिश्रम कर उसे ज्यों का त्यों खोज निकाला। वैज्ञानिकों का भी विश्वास न किया जाता था। इनके पीछे भी गुप्तचर लगा दिये जाते थे।

'एटम बम' के रहस्योंका पता लगाने की चेष्टामें तमाम 'गुप्तचर' पकड़ लिये गये। नाजियोंने इस रहस्यके उद्घाटनके लिये आकाश पताल एक कर दिया किन्तु वे असफल रहे।

अमेरिकामें अब भी 'स्टोनिक इनर्जी कमीशन' के कार्यालयके रद्दी कागज जला दिये जाते हैं। 'क्रीप्स' अब भी मुस्तैद है। संसारका हर राष्ट्र 'एटम बम' को बनानेकी विधि मालूम करनेके लिये सचेष्ट है किन्तु अमेरिका भी इस रहस्य को बिल्लीकी तरह दबोचे हुये हैं।

*　　*　　*

दिल्लीमें शरणार्थी महिलायें तांगा चला कर जीविका निर्वाह कर रही हैं। उनकी रायमें भिक्षाटनसे यह पेशा अधिक मान्य है।

*　　*　　*

ब्रिटिश राजकुमारी एलिजाबेथको विवाहोपलक्षमें शाही परिवारके सदस्योंसे प्राप्त उपहार

कलकत्तेमें पंडित नेहरूका स्वागत करनेके लिये दस लाख जनताकी विशाल भीड़ इकट्ठी हुई। पं० नेहरूने भी स्वीकार किया कि इतनी बड़ी भीड़ उन्होंने जीवन में प्रथम बार देखी। ४०० पुरुष, महिलायें और बच्चे भीड़में कुचले गये।

*　*　*

करांचीमें मुस्लिम लीग कौंसिलकी बैठकमें मि० जिन्नाने इंगलिशमें भाषण किया जिसका सरदार अब्दुर रबनिश्तरने अनुवाद किया।

मि० जिन्ना पाकिस्तानके प्रधान स्वयंसेवक बनाये गये हैं।

*　*　*

ढाका यूनिवर्सिटीकी कौंसिलने विश्वविद्यालय को रमजान और ईदके उपलक्षमें ३५ दिन तक बन्द रखनेका निश्चय किया है।

*　*　*

दिल्लीमें भयङ्कर ठंड पड़ रही है लोग ठिठुरे जा रहे हैं। विश्ववंद्य महात्मा गांधी पर इसका कोई असर नहीं पड़ता उनकी लंगोटी और चादर उनके लिये काफी है। जब दिल्ली वाले ऊनी कम्बलों और रजाइयोंमें घुसे रहते हैं, बापू प्रातः ४ बजेसे कार्यमें व्यस्त हो जाते हैं-धन्य हो बापू!

*　*　*

पाकिस्तान आगामी १ अप्रैल १९४८ से अपने नोट और सिक्के चलायगा। भारतीय सिक्के और नोट क्रमशः पाकिस्तानसे लौटा लिये जायंगे।

*　*　*

कोडाइकनालकी आबजर्वेटरीसे पुच्छलदार तारा दिखायी पड़ा।

पदार्थ विज्ञानपर इस वर्ष नोबुल पुरस्कार प्राप्त करनेवाले ब्रिटिश वैज्ञानिक सर एडवर्ड एप्लीटन

शिकागो विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर राबर्ट हचिंसके अनुसार दो एटम बम अगर एक साथ गिरा दिये जायं तो सारा अमेरिका बसने योग्य न रह जाय। तथा इन बमों पर पहले गिराये गये बमोंसे हजारगुना कम खर्च बैठेगा।

*　*　*

बनारसके जिन छात्रोंको पोस्ट ग्रेजुयेटकी परीक्षामें सफल होने पर डिग्रियां मिली हैं उनमें एक छात्र रिक्शा चलाता था। गरीब होनेके कारण मेट्रिकुलेशनके बादकी पढ़ाई जारी रखनेमें अपनेको असमर्थ पाकर उसने रातको रिक्शा चलाना प्रारम्भ किया और ६ साल तक नित्य तीन रुपये कमाकर उससे पढ़ायी जारी रखी।

*　*　*

मास्कोमें १२५ पाउंडका एक तरबूज पैदा किया गया है— (सुननेमें आया है कि भारतमें इससे भी बड़े तरबूज उपजाये जाते हैं सं०)

रेडियो द्वारा बच्चोंकी शिक्षा

प्रभावशाली व्यक्ति

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

जब एक व्यक्ति का व्यवसाय उसे अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में लाता है तो स्वच्छ और अच्छी तरह हजामत बनाया हुआ चेहरा आवश्यकता हो जाता है। यही कारण है कि लाखों प्रभावशाली व्यक्ति संसार के सर्वोत्तम हज़ामत बनाने के साधन जिलेट का प्रयोग करते है।

पांच के १५ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

लाइसेन्स की आवश्यकता नहीं

अमेरिकन माडेल पिस्तौल

[illegible] और [illegible] है। [illegible] कोई खतरा नहीं। [illegible] लगी है। [illegible] और चिनगारियों से [illegible] जानवर भाग खड़े होंगे।

मूल्य नं० [illegible] नं० ६६६६ [illegible] नं० [illegible] [illegible] का मूल्य ४), [illegible] की पेटी ४), [illegible]

इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी, दर्शनपुरवा, कानपुर।

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

[illegible]

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलस्ट्रेटेड [illegible] गदिन्द्रचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

सचित्र

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

विश्वमित्र

वर्ष—३० संख्या—४५ ता० ३ दिसम्बर१९४७ DECEMBER 3, 1947. मूल्य =)

दो चतुर्दशपदियां

(१)

आये गये न जाने कितने मुसकाते मधुमाते पल
दूर खड़ा मैं रहा देखता निश्चल, निःछल, अमल, अपल
मैंने देखा विष-व्याली को सुधा-पान करते विधु से
मत्त-मधुप को कुञ्ज कली में मुंदते। मिलते मुद मधु से
मैंने जाना है कानों तक की विकसित लाली है क्या
मृदुल चांदनी की कोमल उज्ज्वल निर्मल जाली है क्या
सुधा श्रोत्र की सिहरन से हैं रिक्त न मेरे श्रवण-युगल
आंखों का आकाश अरुण हो गया, रहा जो कमी धवल
हे मधु, हे माधव, वसंत के दूत, अरे भोली राधा
सच कहना ?—क्या मैंने तुमको दिया कमी कोई बाधा ?
बैठा हूं पथ रोक इसीसे, हंसो न, चुप है लाचारी
कौन जानता इस पथ से कब जायगा अम्बर-चारी
कमी चन्द्रिका आ जायेगी मेरी आंखें धोने को
तुहिन कणों की मुक्ताओं से मेरी सेज सजोने को।

(२)

युग बीते पर मिले, न फिर भी अ तुम्हारी दृष्टि उठी
सरल तुम्हारे चरणों पर यह गठरी खुलकर आज लुटी
मुझे देखकर मधुर प्रवालों पर न स्वर्ण-लेखा छाई।
और न व्रीड़ा [illegible]मार अवनता वे मौहें ही झुक पायीं
कुशल करों ने उस कपोल-वाली पर लटके कुंतल को—
छोड़ दिया, पर मौन यहां, किसने समझा है इस छल को
अलकों में है वही कुटिलता, मौंहों में वह ही बल है
अब भी द्राक्षासा निखरा बिखरा यह किसका संबल है
मैंने अबतक जान न पाया था यह उर इतना भूखा
अरे भूल से समझ लिया था इसको तो रुखा सूखा
आज तुम्हें यह देख मोह-सा विकल व्यथित हो उमड़ रहा
तुमपर कुछ अधिकार जताने को जाने क्यों मचल रहा
पागल ! वैभव के मतवाले, सुखसे शिथिल, सुमन दलते
सुनते हैं वे कब अभाव की ? तुम नाहक ही कर मलते

—किशोरीलाल गुप्त

कैसे भूलोंकी ओर चलूं !

[गंगा प्रसाद श्रीवास्तव 'नलिन']

मैं लहरोंका आधार लिये, कैसे कूलोंकी ओर चलूं

(१)

धूप छांह सी खेल रही हैं,
बिरह मिलनकी यह घड़ियां।
तोड़ न पाता थक थक हारा,
कैसी प्रीति, निठुर कड़ियां।
मैंने कितने जलके सागर
नयनों से ले ले डाले!
धो न सका नन्हें से डरके
कसक रहे हैं जो छाले
कितनीबार हंसा रोया मैं, दुहराया इतिहास पुराना!
कितनो बार बुना पलकों,ने मधु-स्वप्नोंका ताना बाना!
मधु ऋतु के मंद झकोरों में
मैं झूम चुका, डरता हूं अब,
अपने उरमें अंगार लिये कैसे कूलोंकी ओर चलूं!
मैं लहरोंका आधार लिये कैसे कूलोंकी ओर चलूं!

(२)

मैंने सोने के दिन देखे
देखी हैं चांदी की रातें!
मैंने उस चंचल दामिनि से
भी की है हंस हंस कर बातें!
बस उस अतीत के चित्रों पर
विस्मृति के परदे भी डाले!
पर भूल न पाया वह छवि मैं
औ, भूल न पाया मधु प्याले!
तू याद न कर बीती बातें, वहल मन होने लगता है!
बुझती-सी आशामें फिर वह, बिश्वास संजोने लगता है!
जो सपने टूट चुके अपने
उनकी धूलें उड़ती होंगी!
मैं इस अन्तरमें प्यार लिये कैसे धूलोंकी ओर चलूं!
मैं लहरोंका आधार लिये कैसे कूलोंकी ओर चलूं!

(३)

अब इस जीवन में द्वन्द्व कठिन
आगे पीछे तुमें चलता है।
करवट ले ले कर जीवन में
संघर्षण का युग पलता है!
गिरिकी ऊंची चोटी पर भी
क्षमता पावों में चढ़ने की!
सांसोंसे चीर तिमिर घन को
क्षमता मुझमें पथ गढ़ने की!
मैं अपने इस बीहड़ मगमें, गिरि गह्वर क्या पहिचानूं!
यह मधुमय गलियां रंग भी, सीधे साधे पथ क्या जानूं!
मै सुख वैभव से दूर दूर
बाधाएं ही अपनाता हूँ
मैं कांटों का श्रृंगार लिये कैसे फूलों की ओर चलूं!
मैं लहरोंका आधार लिये कैसे कूलोंकी ओर चलूं!

४

जग टोक न मुझको चलने दे
मेरे पथ पर विश्राम कहां
वह वृक्ष घने छाया वाले
वह नन्दन बन सुखधाम कहां!
इस बहने वाली सरिता का
रुक रुक बहने का काम नहीं!
चल पड़ा न सकती गति मेरी
है सुबह नहीं है शाम नहीं!
यह सावन घन यह मधु उपवन, सब मुझको बहकाने आते!
यह रूप-सुरा मादक यौवन, सब मुझको ललचाने आते!
क्षण भरका वह सुखमय जीवन
क्षण भरका मादक सपना है!
मैं सत्य लिये, संसार लिये, कैसे भूलोंकी ओर चलूं!
मैं लहरों का आधार लिये, कैसे कूलों की ओर चलूं!

परहित बस जिनके मन माही।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

हमारे राष्ट्रपति

विश्वविख्यात स्वामी विवेकानन्दकी अमेरिकन शिष्या भगिनी निवेदिताने कालेजके छात्र राजेन्द्र प्रसादको देखकर कहा था कि 'राजेन्द्र प्रसाद भारतके भावी नेता हैं।' जिस सीधेसादे, भोलेभाले दुर्बल शरीर, केवल कुर्ता धोती पहननेवाले कालेजके छात्रके प्रति ऐसे उद्गार प्रकट किये गये थे, वही व्यक्ति आज हमारा राष्ट्र पति और भारतीय विधान परिषदका अध्यक्ष है।

डाक्टर राजेन्द्र प्रसादकी आजकी भी वेश-भूषा, रहन सहनमें कोई अन्तर नहीं आया है, उनकी लम्बी लम्बी बेतरतीब मूछें आज भी शरीरके प्रति लापरवाही सूचित करती हैं। दमेसे जर्जर अपने शरीरकी उनको चिन्ता नहीं रहती, यदि चिन्ता रहती है तो केवल देशकी, समाजकी और राष्ट्रकी। जब जब कांग्रेसकी नाव मंझधारमें पड़ी है और उसे पार लगानेके लिये सुदक्ष कर्णधारकी आवश्यकता पड़ी है, समस्त राष्ट्रकी दृष्टि और राष्ट्र-पिताकी दृष्टि राजेन्द्र बाबूकी ओर गयी है,और उन्होंने अविलम्ब इस महान् भारको बिना किसी आपत्तिके बिना अपने कन्धोंपर रखा हैं। ऐसे हैं हमारे राजेन्द्र बाबू और ऐसा प्रगाढ़ है उनका देश-प्रेम।

आज हमारे राष्ट्रपति अपनी आयुके ६४ वर्ष पूरे कर चुके हैं। वे दीर्घायु हों, यही हमारी कामना है।

यह बजट

भारत सरकारके अर्थ सचिव श्री षण्मुखम चेट्टीने गत सप्ताह २६ नवम्बर-को भारतीय पार्लमेण्टमें १५ अगस्त ४७ से लेकर ३१ मार्च ४८ तकका जो बजट पेश किया है उसे देख कर घोर निराशा हुई, इस लिये नहीं कि उसमें २६ करोड़से अधिक घाटा है। इस लिये भी नहीं कि उसमें रक्षाके लिये ९२ करोड़ ७४ लाख रुपयेकी व्यवस्था की गयी है। समय और स्थिति देखते हुए यह अनिवार्य था। हमें निराशा इस बातसे हुई है कि अर्थ सचिवने बजट तैयार करते समय देशके जनसाधारणके सुखदुखोंका उतना ख्याल नहीं रखा जितना जनताकी सरकारके अर्थसचिवसे आशा की जाती है। हम इसे जनताका बजट तो कहही नहीं सकते हमारा यह स्पष्ट मत है कि इस बारका बजट देशके शोषक वर्गको सन्तुष्ट रखनेकाध्यानरखकर तैयार किया गया है। देशके पूंजीपतियों और उद्योगपतियोंको सरकारके साथ रखने और उनको यह भासित करनेके लिये कि यह तुम्हारी सरकारका बजट है जितना ध्यान श्री षण्मुखम चेट्टीने रखा है अच्छा होता कि उससे अधिक नहीं तो कमसे कम उतना ही वे इस बातका भी ध्यान रखते कि जनताकी सरकारका प्रथम कर्तव्य है जनताकी आवश्यकताओं,अभावों और कष्टोंको दृष्टिगत रखकर बजट तैयार करना। ध्यान तो रखाही नहीं गया सर्वथा उपेक्षा की गयी है,क्योंकि जनताका ध्यान रखनेका अर्थ होता, पूंजीपतियों और पैसेवालोंकी लम्बी जेबोंका कतरब्योंत करना, जो हमारे अर्थ सचिवको मंजूर नहीं था। यद्यपि देशमें शान्ति और व्यवस्था बनाये रखनेके लिये उन्होंने समाजके सभी वर्गोंसे सहयोगकी अपील की है, जो उचित भी है, किन्तु शान्ति और व्यवस्था बनाये रखने, घरेलू झगड़ोंसे, चाहे साम्प्रदायिक हों या पूंजी बनाम श्रम हों, दूर रहने और देशका उत्पादन बढ़ानेमें सहयोगकी अपील तो उन्होंने दोनोंसे की है किन्तु आशाका सब्ज बाग दिखाया है उन लोगोंको ही वस्तुतः और व्यवहारतः राष्ट्रकी सम्पूर्ण सम्पत्ति आज जिनकी बन्द मुट्ठीके भीतर है। श्रमिकों और कष्टका जीवन बितानेवाले कोटि कोटि भारतीयोंके लिये आश्वासनके दो शब्द भी नहीं दे सके हमारे अर्थ सचिव 'सर' नहीं नहीं श्री षण्मुखम चेट्टी। पिछले बजटमें मुनाफा करके रूपमें पूंजी पर चोट करनेका जो प्रयास किया गया था उस चोटसे सालाना बजटके समय बचानेका आश्वासन देते हुए मालदारोंसे श्री षमुखमने कहा है कि "भारतके आर्थिक ढांचेका अन्तिम रूप जो भी हो अभी वर्षों तक प्राइवेट इण्डस्ट्रीकी आवश्यकता और गुंजाइश है।" तब प्राइवेट उद्योग धन्धोंके समर्थक इस अर्थ सचिवसे यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह अपने बजटमें इसी प्राइवेट इण्डस्ट्रीके चलते कोटि-कोटि अर्द्ध बिभुक्षित और अर्द्ध नग्न बने हुए नरनारियोंके कष्ट मय जीवनका ध्यान रखेगा?

दोस्ताना बातचीत

गत सप्ताह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्वके वार्तालापोंकी दृष्टिसे पूर्वमें दिल्ली और पश्चिममें लन्दनकी ओर संसारकी आखें लगी रहीं। इन दो राजधानियोंमें विभिन्न देशोंके राजनेताओंके बीचमें जो सम्मेलन हुए या हो रहे हैं उन पर संसारकी शांतिका भविष्य निर्भर है, देख कर इन वार्तालापोंके परिणामोंकी ओर संसारका टकटकी लगाये रहना स्वाभाविक ही है। लन्दनमें चार राष्ट्र ब्रिटेन, अमेरिका, रूस और फ्रांसके पर-राष्ट्र सचिवोंके बीचमें यूरोपके भविष्यके सम्बन्धमें विचार विनिमय हो रहा है। किन्तु इस वार्तालापकी स्थिति युद्ध समाप्तिके बाद जैसी थी आजतक मौलिक सिद्धान्तोंका जहां तक प्रश्न है, उसमें कोई प्रगति तो हुई ही नहीं,निश्चित रूपसे वह पूर्वापेक्षा कहीं अधिक बिगड़ गयी है। जिस वातावरणमें आज ये चार परराष्ट्र सचिव फिर लन्दनमें मिल रहे हैं यदि मौलिक प्रश्नों पर किसी अन्तिम समझौते पर पहुंच जाये तो यह एक चमत्कार ही समझा जायेगा। रायटरका सम्वाददाता कहता है कि बातचीत बहुत ही दोस्ताना ढङ्गसे हो रही ह

और हमें यह मी बताया गया है कि जिस बात पर इन परराष्ट्र सचिवोंके सहायक तीन महीने तक बातचीत करके किसी फैसले पर नहीं पहुंच सके उस पर ये महान चार तीन घण्टेमें एकमत हो गये, अर्थात अब यह झगड़ा नहीं रहा कि सम्मेलनमें किस विषय पर किस क्रमसे बिचार आरम्म हो। दोस्ताना बातचीत अमीतक इतनाही कर सकी है।

सुदूर लन्दनके इस दोस्ताना बातचीतके दृश्यको वहीं असमाप्त छोड़ दिल्ली आने पर काश्मीरके प्रश्न पर, मारत और पाकिस्तानकी वर्तमान समस्याओं पर एवं एशियाई देशोंकी समस्याओं पर, हैदराबाद राज्यके साथ समझौतेके प्रश्न पर मारत, पाकिस्तान और इण्डोनेशियाके राजनेता दोस्ताना बातचीतमें संलग्न दिखायी देते हैं। महात्मा गांधी इस दोस्ताना बातचीतके सम्बन्धमें एक प्रार्थना समामें कहते हैं कि "मैं गवर्नर जेनरलसे मिलने गया था, वहीं पर लियाकतअली साहब मी मिले जो गवर्नमेण्ट हाउसमें ठहरे हुए हैं। वहीं मुझे यह मालूम हुआ कि गवर्नर जेनरल दोनों डोमिनियनोंके प्राइम-मिनिस्टर, सरदार पटेल और पाकिस्तानके अर्थ सचिव मि० गुलामअहमदकी आपसमें बातें हुई हैं और ये लोग जिन नतीजों पर पहुंचे हैं उनसे आशा कीजातीहैकिसंघर्षसे छिन्न-भिन्न हमारे देशमें शान्ति कायम होगी। सब आदमियोंके लिये फूटकी जगह मेल कायम करना कदापि असंमव नहीं है। गांधीजी तो ऐसा हमेशा ही समझते रहेहैं;पर सवाल यह है कि दिल्लीके शांत बातावरणमें हुई बातचीतके तापमानमें लाहौर या कराची पहुंचते पहुंचते फिर कोई नया चढ़ाव उतार हो गया तो?

काश्मीरके सम्बन्धमें यह कहा जाता है और कहनेवाला सूत्र विश्वसनीय बतलाया जाता है कि दिल्लीमें काश्मीरके सवालके समझौतेकी बातचीत बहुत ऊंचे पैमानेपर हो रही है। इस वार्तालापमें प्रत्यक्ष माग गवर्नर जेनरल लार्डमाउण्ट बेटेन, पण्डित ज्वाहर लाल नेहरू, मि० लियाकत अली खां और सर्दार पटेल ले रहे हैं। काश्मीर के प्रधान मंत्री महाजन और काश्मीर सरकारके प्रधान शेख अब्दुल्ला भी इसी सिलसिलेमें दिल्ली पहुंचे। कहा जाता है कि यह त्रिकोणीय वार्तालाप—जो दोनो डोमिनियनों और काश्मीर राज्यके मविष्य की दृष्टिसे बहुत महत्व रखता है। बड़े दोस्ताना ढंगसे आगे बढ़ रहा है।" पाकिस्तान द्वारा संचालित काश्मीर नाटक का परिणाम देखकर इस समय और वह मी दिल्लीमें काश्मीर—वार्तालाप गैर दोस्ताना हो मी कैसे सकता है? उसके लिये न तो यह अनुकूल समय है न उपयुक्त स्थान।

इसी सिलसिलेमें गुरुनानकके जन्म दिवसके उपलक्षमें सिक्ख सेवक दल द्वारा आयोजित समारोहमें पंडित जवाहरलाल नेहरूने जो कहा है उसकी उपेक्षा नहीं कही जा सकती। आप कहते हैं कि "भारत और पाकिस्तानके मतभेद बल प्रयोगसे नहीं मिटाये जा सकते।" इस बातसे कोइ इनकार नहीं करता कि हिंसा झगड़ेका अन्त नहीं कर सकती, किन्तु हम बाअदब पंडितजीसे यह कहना चाहते हैं कि "यह तो नहीं है कि इस तथ्यको हमें समझानेकी आवश्यकता नहीं है किन्तु हमसे ज्यादा और कहीं ज्यादा पाकिस्तानको यह तथ्य समझानेकी आवश्यकता है। पर मौजूदा हालतमें पाकिस्तानको यह तथ्य एक ही व्यक्ति समझा सकता है और वह है कायदे आजम जिन्ना। हम न चाहते हुए मी यह कहे बिना नहीं रह सकते कि शायद जिन्ना पाकिस्तानको कमसे कम इस समय तो यह तथ्य नहीं समझाना चाहते और मारतके प्रधान मन्त्रीको इस तथ्यकी मी अवहेलना नहीं करनी चाहिये।

गैर कांग्रेसी मिनिस्टर—

मारत सरकारके गैर कांग्रेसी मिनिस्टर कांग्रेस असेम्बली पार्टीके सदस्य हो गये हैं। इस तरह ये मिनिस्टर अब असेम्बली पार्टीकी बैठकोंमें शामिल हो सकेंगे और पार्लमेण्ट सम्बन्धी कार्यक्रम पर पार्टीके घनिष्ट सम्पर्कमें रहेंगे। [इस प्रसंग में यह वैधानिक प्रश्न उठता है कि क्या ये गैर कांग्रेसी मिनिस्टर अपनी अपनी पार्टियोंसे सम्बन्ध बिच्छेद करके कांग्रेस पार्टीमें शामिल हुए हैं। यह बहुत ही महत्व पूर्ण प्रश्न है। इस सम्बन्धमें हम आशा करते हैं कि कांग्रेस पार्लमेण्टर पार्टीके लीडर स्थितिपर प्रकाश डालनेकी कृपा करेंगे। यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि अधिकांश गैरकांग्रेसी मिनिस्टर प्रतिगामी, साम्प्रदायिक और निहित स्वार्थोंका प्रतिनिधित्व करने वाले दलोंके सदस्य हैं। कांग्रेसका द्वारा सबके लिये सदासे उन्मुक्त रहने पर मी अमी उस दिन तक उससे दूर मागने वाले, उसका विरोध करने वाले सुविधा वादियों और शोषक वर्गके प्रतिनिधियोंका आज, १५ अगस्तके बाद, कांग्रेस प्रेम फसफसा उठा है। इनका यह कांग्रेस प्रेम कितना घातक है, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है। इतने दिनोंसे प्रान्तोंका और अब केन्द्रका शासन मार ग्रहण कर चुकनेके बादमी कांग्रेसी सरकारें आज तक देशमें फैले हुए अनाचार और समाज विरोधी अपराधोंको रोक सकनेमें असमर्थ हो रही हैं इसका सबसे प्रधान कारण यही है कि कांग्रेस संगठनके मातर एवं उसके द्वारा संचालित सरकारी और गैर सरकारी प्रतिष्ठानोंके अधिकारके स्थानोंपर अधिकांश वे लोग ही बैठे हुए हैं जिनके आपने और दल गत स्वार्थ जनताके स्वार्थोंसे सर्वथा मिन्न हैं। प्रतिगामी तत्वोंका कांग्रेसपर अधिपत्य जमानेका प्रयास इस समय प्रचण्ड बेगसे चलरहा है। हमारा ख्याल है कि कांग्रेस पार्लमेण्टरी पार्टीमें गैर कांग्रेसी मिनिस्टरोंको समिलित होने देना कांग्रेसके मीतर बढ़ते हुए प्रतिक्रिया वादको प्रश्रय देना है। यह ऐसा प्रश्न है जिस पर साधारण कांग्रेसजनको गम्मीरता पूर्वक विचार करनेकी आवश्यकता है।

मौतकी सजा—

शेख अब्दुल्लाने काश्मीरके शासनकी बागडोर अपने हाथमें लेकर राज्यपर आक्रमण करने वाले आततायी कबीलोंका

जिस दृढ़ता और सफलता के साथ सामना किया है उससे यह पता चलता है कि वे कितने पक्के इरादे और मजबूत संकल्प के आदमी हैं । बाहरी आततायियोंसे सांस लेनेका अवकाश मिलते ही भीतरी आततायियोंपर उनकी दृष्टि पड़ना स्वाभाविक ही है । उन्होंने कड़ेसे कड़े शब्दोंमें इन आततायियोंको चेतावनी दे दी है कि "चोर बाजारी शाहोंके खिलाफ सख्तसे सख्त कार्यवाही की जायेगी, यहां तक कि इस तरहके अपराधियोंको मौतकी सजा देनेमें भी पशोपेश नहीं किया जायेगा । "काश्मीरके इन चोर बाजारियोंको याद रखना चाहिये कि यदि वे अपनी इन समाजघाती हरकतोंसे बाज न आयेंगे तो एक दिन शेख अब्दुल्लाके मुंहसे निकले हुए शब्द गलेकी फांस बने दिखाये देंगे ।

अफगान सेना—

अफगानिस्तान और पाकिस्तानके आपसी ताल्लुकात अच्छे नहीं है यह तो इसीसे स्पष्ट है कि संयुक्त राष्ट्र संघमें पाकिस्तानके प्रवेशका प्रश्न उठने पर अफगानिस्तानने विरोध किया था । यद्यपि बादमें यह विरोध वापस ले लिया गया किन्तु पाकिस्तानको काबुल किस दृष्टिसे देखता है यह इस कार्यसे स्पष्ट हो गया है । अपनी सरहद पर एक ऐसे नये राज्यको,जो सहधर्मी होनेके कारण सहज ही उसके घरेलू मामलोंमें दस्तन्दाजी करनेकी नियतसे धर्मके नाम पर अफगानियोंके बीचमें असन्तोष पैदा कर अपना प्रभाव बढ़ा सकता है और यह प्रभाव विस्तार कभी राज्य विस्तारका रूप ग्रहण कर सकता है, यदि अफगानिस्तान सहज भावसे न देख रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं है। राज्यकी महत्वाकांक्षासे मुस्लिम इतिहास बताता है, मुसलमानी शासकोंमें आपसी संघर्षकी सदा सृष्टि की है। सम्भवतः इसी परम्परा और जातीय स्वभावको दृष्टिमें रख कर पाकिस्तानकी सरहद पर अफगान सेनाके जमाव को अन्यत्र प्रकाशित सम्वाद को साधारणसे अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघमें अभी उस दिन पाकिस्तानका अफगानिस्तानको विरोध करते देख यदि इस सैनिक जमावकी ऊपरी सतहके पीछे तो कुछ नहीं है, देखनेकी उत्कण्ठा पैदा हो रही हो तो अस्वाभाविक नहीं है ।

अन्य देशोंमें भारतीय—

भारतका वैदेशिक विभाग जबसे पंडित जवाहरलाल नेहरूके तत्वावधानमें आया है, ब्रिटिश डोमिनियनों उपनिवेशों और अधिकृत देशोंमें रहने वाले भारतीयों की स्थिति तबसे सुधरी है,अवश्यही दक्षिण अफ्रीका इसका अपवाद है । पाकिस्तानमें रहने वाले भारतीयोंकी स्थिति क्या होगी, अभी तक यह भी अनिश्चित ही है । भारत के विभाजनके बाद अभीतक ऐसी स्थिति ही नहीं आयी कि इस तरहके प्रश्नोंका स्पष्टीकरण हो । आस्ट्रेलियामें ४५०० भारतीय है । जो स्थायीरूपसे वहां बस गये हैं उनको कामनवेल्थका पूर्ण माताधिकार प्राप्त है । ब्रिटेन, कनाडा और न्यूजीलैण्डमें भी ऐसी ही स्थिति है । यहांके भारतीय नागरिकके पूर्ण अधिकार भोग करते हैं । अवश्य ही आस्ट्रेलियाके कुछ राज्योंमें विधवा पेन्शन एक्ट, परिवार सहायता एक्ट देहाती श्रमिक निवास एक्ट जैसे कुछ कानूनों की सुविधाओंसे भारतीय अभी तक वंचित है और इस मामलेमें हमारे हाई कमिश्नरने पश्चिम आस्ट्रेलियाके प्रधान मन्त्रीसे वार्तालाप किया है। फलस्वरूप पश्चिम आस्ट्रेलियाने भारतीयोंको इन असुविधाओंसे मुक्त कर देनेका निश्चय किया है। कनाडामें भी जो कुछ असुविधाएं रह गयी हैं, उनके शीघ्रही मिट जानेकी आशा है। संसारके किसी भागमें किसी राज्यमें स्थायी रूपसे बस गये नागरिकको, वह किसी वर्ग जाति या देशका क्यों न हो, राज्यके संरक्षण और अधिकारोंसे वंचित रखा जाना आजके जमानेमें, जब एक तरह विश्व सरकारके संगठनकी चर्चा हो रही है, इस बातका प्रमाण है कि वह राज्य अभी तक पूर्ण सभ्य सुशिक्षित और सुसंस्कृत नहीं हुआ। यह बड़ेही परितापका विषय है कि कामनवेल्थके कतिपय एशियाई देशोंमें, उदाहरणार्थ सीलोन, भारतीयोंको समान नागरिक अधिकार नहीं प्राप्त हैं। आशा है कि सीलोनकी सरकार इस अन्यायको दूर करके वहांके भारतीयोंको दक्षिण अफ्रीका के अपने भाइयोंका पदानुसरण करनेको बाध्य न करेगी ।

फ्रांसकी राजनीति—

फ्रेंच म्यूनिसिपल निर्वाचनमें डिगाल दलकी जबर्दस्त जीतका फ्रांसकी राजनीतिपर प्रभाव पड़ रहा है, और प्रतिक्रिया के हाथ मजबूत हो रहे हैं । उक्त म्यूनिसिपल चुनावके बाद सोशलिस्ट सरकार एक महीना भी नहीं टिक सकी । रेमेडियर सरकार चुनावके बाद पार्लमेण्टका विश्वास जिस अल्पमतसे प्राप्त करनेमें समर्थ हुई उसीसे स्पष्ट हो गया था कि फ्रांसके दक्षिण पंथीदलोंको सन्तुष्ट रखने के लिये सरकारसे कम्यूनिस्टोंको अलग रखना ही प्रर्याप्त नहीं है । यही कारण है कि मोशिये ब्लम जिनको प्रजातन्त्रके अध्यक्ष मोशिये आरियलने रमेडियरके स्थानपर नयी सरकार बनानेको आमंत्रित किया था, पार्लमेण्टका विश्वास नहीं प्राप्त कर सके। मो० ब्लम पुराने सोशलिस्ट लीडर हैं और उनका व्यक्तित्व इस प्रकार का प्रभावशाली है कि वे मजबत सरकार का संचालन कर सकते हैं, किन्तु दक्षिण पंथी दल नहीं चाहते कि सरकार सोशलिस्टोंके प्रभावमें रहे । एम० आर० पी० रेडिकल और सोशलिस्ट तीनों पार्टियोंके नेता मो० ब्लमको सरकारका नेता बनाना चाहते थे किन्तु रेडिकल पार्टीके सदस्य इसके विरुद्ध थे और यह स्पष्ट कर दिया कि यदि सोशलिस्ट प्रधान सरकार बनी तो रेडिकल उसका समर्थन नहीं करेंगे। अन्ततोगत्वा पोपुलर रिपब्लिकन शुमैनने नयी सरकारका संगठन किया जिसमें सोशलिस्ट, रेडिकल और पोपुलर रिपब्लिकन दलका प्रतिनिधित्व है। ब्लमके चुनावपर की गयी आपत्तिसे यह स्पष्ट है कि इस सरकारका जीवन तभी तक सुनिश्चित है जबतक यह दक्षिण अर्थात प्रति-

क्रियाकी ओर झुकती रहेगी। फ्रांसको आज गम्भीरता पूर्वक इस प्रश्नका उत्तर देना है कि वह प्रगतिके पथसे फिर घूम पड़ेगा या तमाम प्रगतिशील दल मिलकर उसे प्रतिक्रियाके विकट चंगुलमें फिर जाने से बचायेंगे।

बुन्देलखण्डको चेतावनी—

इधर बुन्देलखण्डकी कई रियासतोंसे जो समाचार आये हैं वे यह बताते हैं कि इन रियासतोंके शासक अभीतक पुरानी दुनियांके जीव बने हुए हैं जहां राजाओंकी मर्जी ही कानूनका काम करती थी और इस ढीलका नाजायज फायदा उठाकर रियासतके कर्मचारी गरीब प्रजापर मनमानी घरजानी करते थे। उस दिन ललितपुर (झांसी) में युक्त प्रांतके स्वास्थ्य सचिव श्री आत्माराम खेरने बुन्देलखण्ड के इन निरंकुश नरेशोंको सामयिक चेतावनी दी है और बताया है कि नीलगिरि जूनागढ़से इनको सबक लेना चाहिये। जनताकी इच्छाओंको रौंदनेके दिन चले गये, काश! आज ये निरंकुश नरेश इस तथ्यको समझ पाते। वे यह नहीं समझ पाते इसीसे माननीय श्री खेरने उनको समझाया है कि तुम्हारी क्या गति होगी। रियासतोंमें होते हुए दमनको युक्तप्रांतकी सरकार चुपचाप देखती नहीं रह सकती। उसे इन नरेशोंके कान उमेठनेको वाध्य होना पड़ेगा। श्री खेरने उनको यह भी बता दिया है कि राजसत्ता को बचाये रखनेका अब एक ही अन्तिम अवसर है। वैधानिक शासककी स्थिति स्वीकार करके तथा रियासतमें उत्तरदायी शासन कायम करके अब भी ये राजे चाहें तो अपना अस्तित्व बनाये रख सकते हैं अन्यथा जनताके विद्रोहकी आंधीमें पड़कर न जाने कहां ये विलीन हो जायंगे। हम आशा करते हैं कि बुन्देलखण्डके ही नहीं सभी नरेश और बड़े बड़े ताल्लुकदार इस नसीहतको गांठ बांध लें, इसीमें उनका हित है।

कांग्रेस और समाज वादी—

समाजवादी दलके प्रधान मंत्री श्री जय प्रकाश नारायनने पूनाकी एक सार्वजनिक सभामें भाषण करते हुए संकेत किया है कि निकट भविष्यमें कांग्रेससे समाजवादियोंके पृथक हो जानेकी सम्भावना है। अतीतमें देश स्वातंत्र्य-संग्राममें लिप्त था इसलिये कांग्रेसके झण्डेके नीचे सभी दलोंके 'संयुक्त मोर्चा' की आवश्यकता थी अब स्वतंत्रता-प्राप्तिके साथ साथ वह आवश्यकता पूरी हो गयी। आज देशको यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि समाजवाद और गान्धीवाद अलग अलग सिद्धांत हैं। यह गलतफहमी फैलानेका एक मात्र कारण भावी चुनावमें जनताका समर्थन प्राप्त करना है। वर्तमान प्रान्तीय मंत्रिमण्डलोंको जनताके सामने खड़े होनेका विश्वास नहीं है क्योंकि उन्होंने न देशमें पूंजी पतियोंके प्रभाव हटानेके लिये कदम उठाया है और न जनताकी मांगे ही पूरी की है। समाज वादी देशमें समाज वादी शासन व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं इसलिये प्रत्येक व्यक्तिका कर्त्तव्य है कि वह समाजवादी दलका समर्थन करे और उसे शक्ति शाली बनाये। अन्तमें जयप्रकाश बाबूने अपने भाषणमें कहा है कि 'एक दलीय, सरकारको ताना शाहीकी ओर जानेसे रोकनेके लिये 'समाज वादी विरोधी मोर्चाकी आवश्यकता है। "जयप्रकाश बाबू देशका माने हुए समझदार नेता है। उन्हें यह देखना चाहिये कि देशमें भांति भांतिकी समस्यएं उपस्थित हैं जिनका अविलम्ब समाधान होनेकी आवश्यकता है। देश स्वतंत्र हुए अभी जुम्मे जुम्मे आठ दिन भी नहीं हुए हैं कि प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारोंके सामने समस्याओंके पहाड़ खड़े हो गये हैं। ऐसे वक्तमें तो कांग्रेस और कांग्रेसी सरकारोंको सभी दलोंको संयुक्त रूपसे सहयोग देना चाहिये, जिससे देशमें शान्ति-सुरक्षा कायम हो। अगर इस वक्त समाजवादी कांग्रेससे अलग होंगे तो कांग्रेस तो कमजोरी होगी ही समाजवादी दलभीकमजोरहोगाक्योंकिवेसमाजवादीजो कांग्रेसके साथ काम करना चाहते हैं ऐसी स्थिति आनेपर अपने दलसे पृथक हो जायेंगे। हम तो यह समझते हैं कि कांग्रेससे अलग होनेका निश्चय करके वे स्वयं उस तानाशाहीको बल शाली होनेका मौका देंगे जिसका अन्त वे चाहते हैं। हम समझते हैं कि इस दिशामें कदम उठानेके पहले समाजवादी इन सब बतोंपर गम्भीरता पूर्वक विचार करके ही किसी अन्तिम फैसले पर पहुंचेंगे।

शेरे काश्मीरकी ललकार—

काश्मीरके प्रधान मन्त्री शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाने मि० जिन्नाको चुनौती देते हुए कहा है कि काश्मीर भारतीय संघ में अपनी आर्थिक आवश्यकताओंके कारण शामिल हुआ है। जहां तक आर्थिक सम्बन्धोंका प्रश्न है काश्मीरका भाग्य भारतके जुटा हुआ है। हम भारतीय संघमें पण्डित नेहरू, महात्मा गांधी और भारत सरकारको प्रसन्न करनेके लिये शामिल नहीं हुआ है। वलिक गरीबी और विनाश से अपना रक्षा करनेके लिये शामिल हुआ है। पाकिस्तान काश्मीरमें जनमत ग्रहण करनेके लिये होहल्ला मचा रहा है। मैं मि० जिन्नाको चुनौती देता हूं कि वे मत ग्रहण करें लेकिन मत ग्रहण जनताका ही होना चाहिये, अभिजात वर्गके लोगोंका नहीं। साथ ही निष्पक्ष जनमत ग्रहण करने के लिये अनुकूल वातावरण होना चाहिये। हम झगड़े और उपद्रवोंके बीचमें जो पाकिस्तानी सरकारके कारण हो रहे हैं, जनमत ग्रहणके पक्षमें नहीं है। हमारी पहली शर्त शांति स्थापित करना और राज्यसे आक्रमणकारियोंको हटानेकी है। मैं काश्मीरियोंकी इच्छाओंको जानता हूं। काश्मीर प्रगतिशील राज्य है और प्रगतिशील देशके साथ रहेगा। काश्मीरमें साम्प्रदायिकके लिये स्थान नहीं। धर्म खतरे में है—चिल्लाकर काश्मीरके हिन्दू या मुसलमान किसीको भी धोखा नहीं दिया जा सकता है। काश्मीर पर होनेवाले आक्रमणका संगठन पाकिस्तान सरकारने ही किया है। काश्मीरकी जनता अपनी अन्तिम सांस तक आजादीके लिये लड़नेको दृढ़ संकल्प है।" हम शेरे काश्मीरकी इस चुनौतीका स्वागत करते हैं।

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

लें० : श्री अ॰ ...

Not as the conqueror comes,
They the true hearted come;
Not with the roll of the stirring drums,
And the trumpet that signs of fame.
Felicia Hemans.

"जिनका हृदय सत्यसे ओत प्रोत है, वे बिजेताकी भांति विजय दुन्दुभि बजाते एवं ख्याति की बिजय बैजयन्ती फहराते हुए नहीं आते हैं।" तीसरी बार निर्वाचित हमारे राष्ट्रपति और और विधान परिषद के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद इसी कोटि के महामानवोंमें हैं। राजेन्द्र बाबू ख्याति की चरम सीमापर हैं, वे आज बिजयी राष्ट्रके प्रथम जन नायक हैं। उनके सिर पर पराधीन भारतके कांटोंका ताज नहीं, बल्कि स्वाधीन भारतका सर्वोतम मुकुट जगमगा रहा है। फिर भी वे फेलेसिया हेमन्स के शब्दोंको भावशः और शब्दशः चरितार्थ करते हैं। वे सागरसे गम्भीर, जलदसे सुखद और दिन-मणिकी भांति प्रकाशमान हैं, उनका पाण्डित्य अगाध है, हैं, उनकी सचाई शंकासे परे है, उनकी सादगी और सरलता अनुकरणीय है उनकी बैधानिक सूझ-बूझ अद्वितीय है। उनकी देशभक्ति प्रांजल है, उनका नेतृत्व विकास की ओर समाजको अग्रसर करता है, और वे गांधीके परखे हुए विश्वासपात्र सहायक सेनानी हैं। उनकी त्याग तपस्या और जन-साधारणके हितके लिये सर्वस्व समर्पण की उनकी उत्कट अभिलाषाने बामपक्ष वालोंका भी उन्हें विश्वासपात्र बना दिया है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह बाम-पन्थी हो अथवा दक्षिण पन्थी हो, देशरत्न के सिद्धान्तोंसे मतैक्य न होते हुए भी उनकी सचाई निस्पृहता, और स्वार्थहीनता पर शंका नहीं कर सकता। डा० कृष्ण लाल श्रीधरानीने लिखा है उनका हृदय गरीबोंके लिये रक्तके आंसु रोता है, पर वे समाजवादी नहीं हैं। जिस तरह राजनीतिक क्षेत्रमें वे ख्यातिसे दूर भागते रहे, वैसे ही पण्डित मण्डलीमें भी इतिहास और साहित्यके प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी वे ख्याति और प्रचारसे दूर रहे हैं। उनकी देखरेखमें इतिहास परिषद एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलनने देशकी जो सर्वाङ्गीण सेवाएं की है, उसकी महत्ता अस्वीकार नहीं की जा सकती। कांग्रेस-सर्वोच्च समितिके दस सर्वोच्च नेताओंमें उनका सबके समकक्ष महान स्थान है। तभी तो संकटकालमें राष्ट्रकी नौकाकी पतवार और विश्वसनीय नाविकके हाथोंमें सौंपी गयी है क्योंकि उन्हें सभी वर्गोंका बड़ासे बड़ा समाजवादी यह जानता है कि जनहितको को पीछे रखकर राजेन्द्र बाबू डालमिया-बिड़ला तथा कोई हो झुककर समझौता नहीं कर सकते।

अपनी आत्मकथामें उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि "जब मैं कांग्रेसमें आया तो ६५ हजार रुपये जमींदारीपर कर्ज हो गये थे, उसे सेठ घनश्यामदास बिड़ला और बाजाजने चुकाया। वह कर्जा अभी तक हमलोग पूर्णतया तो नहीं लौटा सके हैं, पर प्रयत्न होता रहा है और बहुत कुछ दे भी दिया गया है। दूसरी जगह उन्होंने लिखा है कि डालमियांजी समय-समयपर कांग्रेस को आर्थिक सहायता देते थे। जब चुनाव के समय कांग्रेसने अनुग्रह नारायणसिंह को असेम्बलीके लिये खड़ा किया और विरोधमें डालमियां स्वयं खड़े हुए, तब डालमियांने मुझसे बहुत प्रयत्न किया कि मैं अनुग्रह बाबूको बैठा दूं। पर ऐसा कैसे हो सकता था? मैंने साफ कह दिया, 'यह हमारे सिद्धांतके खिलाफ है।" इससे राजेन्द्रबाबू की सचाई, ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता स्पष्ट हो जाती है। पूंजी-पति उनका मित्र तो हो सकता है, पर वह उन्हें कर्तव्य मार्गसे नहीं हटा सकता। मुसलमानोंके प्रति भी सद्भावना रही है। मौलवी शमसुलहुदा साहब जैसे कई लीगी नेताओंसे उनका सम्पर्क रहा है और उनका ख्याल है कि राजनीतिक या धार्मिक विश्वास मित्रताके मार्गके बाधक नहीं हो सकता। वर्तमान परिस्थितिमें बढ़कर निष्पक्ष सिद्धान्त प्रिय, कर्तव्यपरायण, सभी वर्गों एवं सम्प्रदायोंका विश्वासपात्र कांग्रेसकी सर्वोच्च समितिको दूसरा व्यक्ति शायद ही मिलता।

राजेन्द्रप्रसाद सच्चे देशरत्न हैं
वे चिरंजीवी हों।

[illegible signature]

जीवनी

देशरत्न राजेन्द्रप्रसादका जन्म सारन जिलेके जीरादेई नामक ग्राममें ३ दिसम्बर सन १८८४ ई० को कायस्थ परिवारमें हुआ था। ये आरम्भसे ही प्रतिभाशाली एक तीव्र बुद्धिके छात्र रहे हैं और राजपूत स्कूल छपरामें अभी भी उनकी हस्तलिपियां सुरक्षित रखी हैं। इतनी सुन्दर हस्तलिपि ऐसी अद्भुत मेधा बिरले छात्रोंमें पायी जाती है। कहां तो यहां तक जाता है कि उनकी विशेष
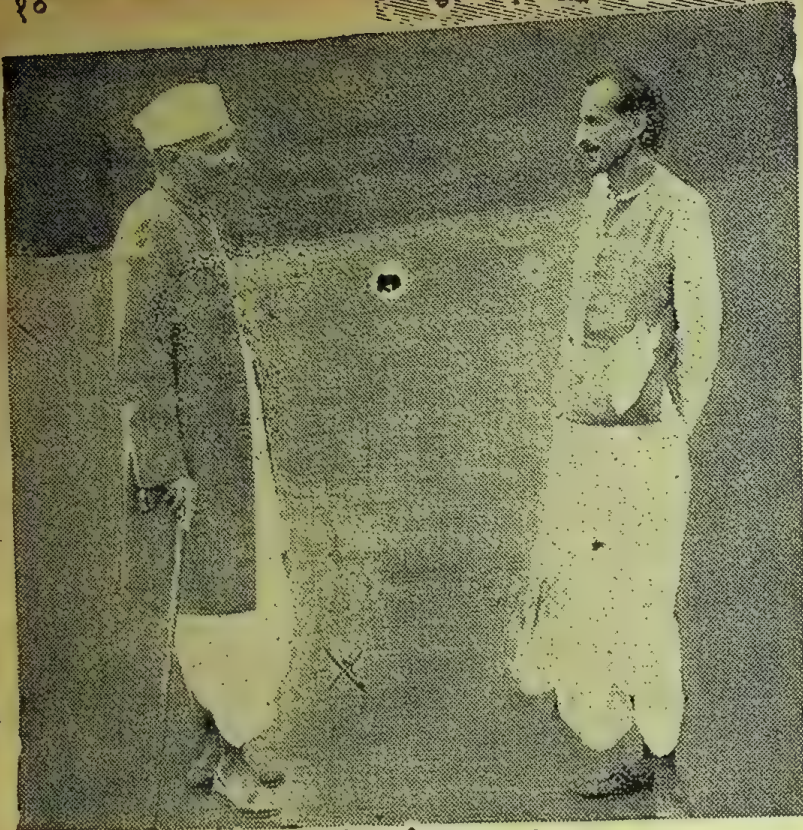
भूतपूर्व और वर्तमान राष्ट्रपति

विद्यालयकी परीक्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी जांचनेके लिये इंगलैण्ड गयी थी और उस पर परीक्षकने लिखा था Examinee is better than Examiner (यानी परीक्षार्थी परीक्षकसे श्रेष्ठ है) हो सकता है कि स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरूके पेरिसमें कपड़े धुलाने जैसी हा यह बात भी हो किन्तु आज भी सैकड़ों यह किम्वदन्ती कहते सुने जाते हैं। जो भी हो ये अव्वल दर्जे के मेधावी छात्र थे। उन्होंने वकालतको अपना पेशा चुना और उससे इनकी आय भी बहुत अच्छी होने लगी थी।

सम्भव था कि यदि ये वकालत ही करते रहते और कांग्रेसके जीवन-मरण-संघर्षमें शामिल न हुए होते तो आज इनकी गणना देशके सर्वोच्च राजनीतिक नेताओंके बजाय सर्वोच्च वकीलोंमें होती। कांग्रेस क्षेत्रके अधिकांश राजनेता विलायतसे वैरिस्टरीकी सनद लेकर आये थे और स्वयं गांधीजी भी इसके अपवाद नहीं है। पर राजेन्द्रबाबू अध्ययनके लिये विलायत गये तक नहीं, हां भ्रमणके लिये बादमें एक बार अवश्य गये। ऐसा होते हुए भी राजेन्द्रबाबूका कानूनी पांडित्य अगाध माना जाता है। सन १९१७ में गांधीजी चम्पारण आये। यहां निलहे साहबोंका अत्याचार चरम पराकाष्ठाको पहुंच चुका था। चम्पारणके किसानोंने गांधीजीसे अपनी दुख कहानी लखनऊमें जाकर सुनायी थी। राजेन्द्रबाबू यहींसे गांधीजीके सम्पर्कमें आये और कुछ दिन बाद वकालत छोड़ कर गांधीजीके सत्याग्रह और असहयोग आंदोलनमें शामिल हो गये। फिर तो आश्रममें हाईकोर्टके इस महान वकीलसे गांधीने जूठे बर्तन भी धुलवाये। राजेन्द्रबाबूने हंसते हुए उत्तर दिया कि यह मेरा सौभाग्य है। यह उनकी विनयशीलता थी। देशरत्न जितने अच्छे विद्वान हैं, उतने श्रेष्ठ वक्ता नहीं इसके दो कारण हैं, एक तो वे दमेसे लाचार रहते हैं, दूसरे थोड़े संकोची भी हैं। पर उनमें संगठनकी अपूर्व क्षमता है। बिहार प्रान्त उनके सङ्गठनका नमूना है। हजारों विरोध और बदनामी होते हुए भी बिहारका कांग्रेस सङ्गठन काफी तगड़ा है, एवं उसमें रत्ती भर भी विशृंखलता और शिथिलता नहीं आयी है। सन १९३४ में बिहार भूकम्पसे तबाह हो गया। राजेन्द्रबाबूने रात दिन एक कर भूकम्प पीड़ितोंकी सेवा की। यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि कर्मठतामें नेताओंमें उनका स्थान सबसे आगे ही रहेगा। वे जैसे वस्त्र और वेश भूषासे लापरवाह रहते हैं, वैसे भोजनसे भी। वैसे तो उनका भोजन बहुत सादा पर आम उन्हें बहुत प्रिय है। केले भी उन्हें अधिक चाहिये।

आज तीसरी बार वे कांग्रेसके सभापति हुए हैं। एक बार तो जब नेताजीसुभाष बोसने त्याग पत्र दिया था। वह भी एक सङ्कटका समय था। उस समय नेताजी जैसे उग्र विचारों वाले राष्ट्र नवयुवकोंके बड़े अग्रगणी व्यक्तिके बाद यह समझा गया कि राजेन्द्रबाबूही देशको इस सङ्कट से पार ले जा सकते हैं। आज तो एक गांधीवादी और दक्षिण पन्थी राष्ट्रपति कृपलानीके बाद उन्हें यह भार दिया गया है। कृपलानी असमर्थ रहे, असंतुष्ट रहे, पर राजेन्द्र बाबू कठिनाइयों पर विजय पानेमें समर्थ होंगे।

जिस देह कृपलानी और राजेन्द्रबाबू एक ही अखाड़ेके खेलाड़ी और एकही उस्ताद के शागिर्द हैं। दोनोंही गांधीवादी पाठशालाके छात्र हैं किन्तु राजेन्द्रबाबू दूसरे धातुके बने हैं। इनकी विनयशीलता सहिष्णुता और सत्यप्रियता इनकी सफलता की कुंजी है। समाजवादी न होते हुए भी राजेन्द्रबाबूने कृपलानी, पटेल-शंकरराव देवकी तरह कभी समाजवादकी भर्त्सना नहीं की और न; उनके लिये कभी कोई ऐसी रस्सी ही दी कि वे स्वयं गलेमें फांसी लगा लें।

पहली बार भारतीय विधान परिषद ने स्वाधीन भारतकी विधान परिषद का प्रथम अध्यक्ष राजेन्द्रबाबूको निर्वाचित कर उनकी योग्यताका सम्मान किया। आज वे विधान परिषद और राष्ट्रीय महासभा दोनोंके अध्यक्ष हैं। मंत्रि-मण्डलमें खाद्य-मंत्रीकी हैसियतसे उन्होंने अपनी कुशलता चतुराई और दूरदर्शिताकी बदौलत देशको एक भीषण सम्भावित दुर्भिक्षसे बचा लिया।

ऐसे कर्मठ पुरुषकी ६४ वीं वर्षगांठ मनाते हुए हम कामना करते हैं कि वे शतायु हों।

शरणार्थियोंकी समस्या

प्रोफेसर श्री अथालिया

हिंदुस्तान और पाकिस्तान इन दो खण्डोंमें भारत बंट गया। इसके पश्चात् हमें आशा थी कि कोई विशेष दुर्घटनाएं न घटित होंगी अर्थात जिस विषवृक्षको मुस्लिम लीगने बोया और सींचा और जिसे पनपनेका अवसर कांग्रेसने दिया तथा जिसे अंग्रेज सरकारने भरपूर फलने और फलने दिया, वह स्वतः शनैः शनैः मुरझा जायगा। लेकिन हुआ इसके बिलकुल विपरीत। पाकिस्तान प्राप्तिके पश्चात दानवी कुकृत्यरूपी शूलोंने मुस्लिम लीगी विष-वृक्षसे छूट छूटकर सम्पूर्ण वातावरणको विषाक्त कर लिया। एक शब्दमें, मानवता प्रचण्ड अग्निकाण्ड, बाल हत्याएं, स्त्री अपहरण, लूटपाट, अकारण आक्रमणसे पश्चिमी पंजाबने सम्पूर्ण देशको हिला दिया। परिणामतः उसकी प्रतिक्रियाएं हुईं। वे अत्यंत भीषण और उग्र हो सकती थीं। किंतु धन्य हैं महात्मा गांधी और भारत सरकार, जिन्होंने मानव-संस्कृतिके महान आदर्शके द्वारा उत्तेजित जनताको रोक रक्खा। एक बार पुनः दैवी शक्ति दानवी शक्ति द्वारा पराजित प्रतीत हुई। प्रत्यक्ष ही कलकत्ता, नोआखाली और पंजाबके हत्याकाण्डोंके बल पर खड़ी हुई पाकिस्तान सरकारने लाखों निर्दोष हिन्दू और सिखोंको मार, काट और डांटकर जिन्नाकी उस मांगको मूर्तिमान कर दिया, जिन्होंने धर्मानुसार आबादीके परिवर्तन की बात उठायी थी। भले ही परिवर्तनकी बातको उस समय असम्भव समझा गया हो, परन्तु आज तो वह सम्भव हो ही गयी।

ऊपर और-भीतर और

स्थानांतरके प्रलयकारी दृश्यको कहो आज कौन नहीं देखता? त्यक्त व्यस्त, ध्वस्त और खण्डित जन समूह अपने घरोंको छोड़कर व्यग्र, व्याकुल और बेचैन हैं। किसके लिये? रक्षा-स्थानोंके लिये, अपने भावी जीवनके लिये। फलतः यह हमारी विकटतम समस्या है। भारतीय स्वतन्त्रताके शैशव कालमें यह विपत्ति? अर्थ स्पष्ट है—'नेहरू सावधान? भारत सावधान।' मदोन्मत्त पाकिस्तानका सर्वेसर्वा राज्य विस्तार मांगता है। उसे अपने दिये हुए घरमें संतोष नहीं। 'हंसकर लिया पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिंदुस्तान' यह सदा उसके कानोंमें मोहक मंत्र डाल चुकी है। फलतः योजनाबद्ध राज्य विस्तारके उसके षड्यंत्र विछ चुके हैं। हिंदुस्तानके मुस्लिम लीगी मुसलमान चाहे कितना भी कहें, उनके षडयंत्रमें पूर्ण रूपसे डूब चुके हैं। "ऊपर और, भीतर और" यह मूलमंत्र उन्हें दे दिया गया है। चौधरी खलीकुज्जमान और जबलपुरी मालाना बरहानुल हकके ऊपरी वर्तन और छिपे इरादोंमें सम्यक् चेतावनी मौजूद है। क्यों न हो, ये भी तो ठहरे छोटे मोटे जिन्ना। अपने आकासे ये कम क्यों निकले? इन्हें भी तो अपने अपने स्थानोंमें 'सुल्तनी चाहिये।' इस प्रकार हिन्दुस्तानको और विखण्डित करनेके लिये इनकी साजिशें पूरी थीं और वे आज भी हैं। इनसे इन्हें परावृत्त करना मानों बबूल और ढाकके फूलोंमें सुगन्ध ढूंढ़ना है।

पुनः संस्थापनका प्रश्न

निस्सन्देह जहां संसारका सर्वोत्कृष्ट पुरुष भी श्री जिन्नाके मस्तिष्कको न फेर सका, वहां हमारे कांग्रेस मंत्रियों एवं अन्य कर्मियोंकी सामर्थ्य ही क्या? फिर व्यर्थमें वे धारा सभाओं तथा नवीन सभाओंके आयोजनोंमें नाटक क्यों करें? मालूम होता है कि उनका उलझन भरा मस्तिष्क वास्तविक सत्य और न्यायकी परवाह न कर केवल न्याय कैसे दिखे, इसीमें विश्वास कर बैठा है। परंतु आजकी परिवर्तित स्थितिमें ऐसे विश्वास पर कार्य करते रहना सम्पूर्ण राष्ट्रके जीवनको भट्ठीमें झोंकना है। पूछना होगा, 'क्या यह राजनीतिक बुद्धिमत्ता है?' उत्तर इतना स्पष्ट है कि इस पर लिखना व्यर्थ है। काश्मीरका अकारण आक्रमण, मुसलमानोंका हैदराबादी प्रवाह, जफरुल्लाका वैदेशिक मिथ्या-प्रचार, लियाकत अलीकी 'सन्निपातिक बकवास,' पाकिस्तानी रेडियोका अनर्गल प्रलाप, 'डान'के मिथ्यारोप, अब्दुल कयूमका मुसलमानी राज्योंको इस्लामी उत्तेजन और अपने देशके अंदर युक्त प्रांतीय धारा सभामें मुस्लिम लीगी सदस्यके द्वारा देशके और टुकड़े करनेवाली धमकी, ये सारी ऐसी घटनाएं हैं, जो संदेहके लिये स्थान नहीं छोड़ती। इनसे अंधोंकी आंखोंमें भी रोशनी आना सम्भव है। निस्संदेह पाकिस्तानका पड़ोसी राज्य हमारे देशके वक्षस्थल पर अड्डे जमाये हुए हैं। ऐसी दशामें हमारी संरक्षणकी योजनाओंका भविष्य क्या होगा? यह मूर्तिमंत प्रश्न हैं। पंजाबसे आये हुए शरणार्थी पूछ सकते हैं कि जिस देशमें देशद्रोही पंचमांगियोंके अड्डोंमें अस्त्रों और शस्त्रोंका संयोजन, संग्रह तथा संचालन यथाविधि चलता हो, वहांकी सरकार हमें दीर्घकालिक संरक्षण कैसे देगी? कहीं ऐसा न हो कि हमारे पुनः संस्थापनका सारा कार्य एक अल्पकालमें ही चौपट हो जाय। फलतः हमें शरण देनेवाले कहीं स्वयं ही शरणार्थी न बन जायं। ये प्रश्न अवास्तविक नहीं, और न हैं ये निराशावादके प्रतीक। वे सम्यक, समीचीन, सीधे और सच्चे हैं। अतः इसी सत्य पृष्ठभूमिमें हम शरणार्थियोंके पुनः—संस्थापनकी समस्याका हल ढूंढेंगे।

कुछ सुझाव

मैं यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि राजनैतिक जीवन और आर्थिक जीवन एक बहुत बड़े अंशमें एक दूसरेके पर्यायवाची हैं। इस प्रकार हमारी सम्पूर्ण आर्थिक समस्याओंका हल राजनैतिक परिष्कारमें निहित है। वही उनकी वास्तविक नींव है। आजका विषाक्त वातावरण, जिसका किंचित दर्शन ऊपर दिया गया है, पाकिस्तानी वक्रवृत्तिका पूर्ण रूपेण निशाना है। इसे विफल बनानेके लिए सावेंध राजनीति चाहिए। नहीं तो राष्ट्रोन्नतिकी सम्पूर्ण औद्योगिक तथा सामाजिक योजनाएं एवं समाजवादी राजगठन की आकांक्षाएं-ये सभी एक भयंकर गड्ढे में पड़ जायेंगी। इसलिए इस सबके किन्तु कटु-विश्लेषणके लिए क्षमा मांगते हुए हम चाहेंगे कि भारतका वक्षस्थल पंचमांगी देशद्रोहियोंसे पूरा साफ हो। इसके लिए हम निम्न-लिखित सुझाव देनेका भी साहस करेंगे—

(१) देशकी छोटी और बड़ी सभी प्रकारकी मुस्लिम-लीगी संस्थाओंके पदाधिकारियोंको तुरंत पाकिस्तान चले जाने को कहा जाय। यह कार्य पूर्ण तेज, वेग और बलके साथ होना चाहिए। इनको रखकर नयी मुसलमानी संस्थाओंकी नींव डालना भयंकर भूल है। एक शब्दमें अनिवार्य रूपेण इन्हें यहांसे हटा देना चाहिए। आदर्शकी आड़में इन्हें रखना अत्यन्त खतरनाक होगा। कारण कि बहुजन-जीवन 'वस्तुस्थिति' है, वह आदर्श नहीं।

(२) पदाधिकारियोंसे परे जो मुस्लिम लीगी मुसलमान हैं, वे रह सकते हैं। लेकिन किसी भी हालतमें उनपर कमसे कम ५ वर्ष तक विश्वास न किया जाय, इसके लिये सरकार पूर्ण सतर्क रहे। पुलगांवके मुसलमान सैनिकोंकी कुघाती करतूत तथा अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के प्रोफेसरों और लड़कोंके लेख प्रलाप और कृत्य हमारे लिये पूरी चेतावनी हैं।

(३) कांग्रेस-निष्ठ मुसलमानोंको छोड़कर कोई भी उत्तरदायी स्थान किसी मुसलमानको शासनमें न दिया जाय। 'फूलहिं फरहिं न बेत, जदपि सुधा बरसहिं जलद'—इस युक्तिमें यदि कोई भाव पूर्ण अर्थ है तो हमें मुस्लिमलीगी मुसलमानोंके वर्तनमें आज भरपूर मिल चुका है।

इस प्रकार रास्ता स्पष्ट है। कदाचित ये सुझाव कुछ लोगोंको रुष्ट कर बैठें। लेकिन हमें ऐसे विचार-शिथिल लोगोंसे बहस करना नहीं है। और न उन लोगोंसे कुछ कहना ही है, जो आदर्शकी आड़ लेकर राष्ट्रीयताके झूठे मञ्चपर बैठकर कोसनेका साहस करते हैं। राजनीति उन्हें स्वयं क्षमा न देगी और न क्षमा करेगी आनेवाली सन्तान। अतः उनकी आंखोंका आवरण निकले या न निकले, हमें विशेष प्रयोजन नहीं। हमारा तो स्पष्ट कहना है कि खुले देशद्रोहियोंमें सम्प्रदाय विशेषकी पुच्छल लगा-लगा कर उन्हें थामे रखना मानो कायरता, कातरता और अराष्ट्रीयताका पोषण करना है। इसलिये हम चाहते हैं कि ऐसे देशद्रोहियोंका पूर्ण उन्मूलन तीखा होते हुए भी हमें प्रिय होना चाहिये। कर्तव्यके साथ 'कड़वा' और 'मीठा' ऐसे कोई विशेषता नहीं होती। इसलिये यदि सरकार चाहती है कि शरणार्थियोंकी मनोव्यथा हल्की हो, उनकी मानस अवस्थाओंकी भावी आशंकाएं दूर हों और एक मनोवैज्ञानिक वातावरण हममें और उनमें सम्बद्ध हो, जिससे कि उनके संस्थापन की नींव सुदृढ़ बने, तो उसे हमारे सुझावोंको अविलंब कार्यान्वित करना चाहिये।

आजादी का दीपक मेरा लहरों में जलता जाये

—विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त—

आजादीका दीपक मेरा, लहरोंमें जलता जाये
नव उमंग से जीवन तरु पर, नवल राग पंछी गाये
सदियों का अभिशाप आज वरदान रूपमें आया है
सदियों का अपमान आज अभिमान रूपमें आया है
तिमिर अङ्कसे विश्व मंच पर, पहला कदम बढ़ाया है
हमने अपने बलिदानोंसे ऐसा अवसर लाया है
पथ शूलों पर कभी हमारा कदम नहीं रुकने पाये
आजादी का दीपक मेरा, उर में बल भरता जाये
देख रहा हूं झोपड़ों पर, दुख की है चादर काली
देख रहा हूं पीड़ित जन की, खाली है जीवन प्याली
देख रहा हूं मृत्यु दूतिका, नाच रही देकर ताली
देख रहा हूं नयन गगन में, शोणित की छायी लाली
जग उपवन का, मानव मनका, अंधकार हटता जाये
आजादी का दीपक मेरा, जगमग जग करता जाये
हम न किसी के जीवन पथ पर, कांटे हैं धरने वाले
हम न किसीके सुख की रोटी, बल से हैं हरने वाले
बलिवेदी पर, हम मानवता के रक्षक, मरने वाले
आंधी या तूफान प्रलय से, कभी नहीं डरने वाले
सावधान हम हैं यह दीपक, कभी नहीं बुझने पाये
आजादीका दीपक मेरा, लहरोंमें जलता जाये

जनताकी शक्ति बढ़ाओ

माननीय पुरुषोत्तमदास टण्डन, स्पीकर यू० पी० असेम्बली

आज हमलोगअपने मुल्कके लिये बनायी गयी एक नयी दुनियामें हैं। पिछली बार जब हम लोग नैनीतालमें मिले थे, उस समयसे अब तक बहुत बदलाव, बहुत गहरे बदलाव, हो चुके हैं जिससे अब हमरा मुल्क बहुत वर्षों के लिये, शायद सदियोंके लिये, वह नहीं रहा, जो वह कुछ महीने पहले था। ब्रिटिश गवर्नमेंटने तो, हमारी जो स्वराज्यकी लड़ाई थी कुछ उसके कारण और कुछ दुनियांमें जो शक्तियां इस समय काम कर रही हैं उनके कारण, हिन्दुस्तान से अपनेको हटा लिया है। सम्राट, एमपरर, अब हमारे देशका कोई नहीं रहा। लेकिन जाते जाते भी ब्रिटिश गवर्नमेंटने, अपने दो सौ वर्षों के हिन्दुस्तानमें अपने शोषण की इतिश्री ऐसे कामसे की जो इतिहासमें अद्वितीय है। उन्होंने अपने शोषणका अन्त एक गहरी राजनीतिक चाल कहूं या मूर्खता कहूं, दो में से एकसे किया है। और हिन्दुस्तानको काट कर उसको एक ऐसी आगमें डाल दिया है, जो अभी सुलग रही है, और जिसके कारण मजहबी जोश का प्रभाव इतना अधिक व्यापक हो गया है कि हमारे देशवासी आपसमें एक दूसरे के नाशमें लगे हैं। जो हालत हिन्दुस्तानमें चार पांच महीनोंमें मजहबी नफरतने पैदा की है उसका बयान मेरे शब्दोंकी शक्तिके बाहर है।

स्वतंत्रता एक सूरतमें हमारे पास आयी, लेकिन जिस भयानक रूपमें वह आयी वह तो हमारे लिये दुखदायी है। जो हालत आज है उसपर आपको अच्छी तरह सोचना है। हिन्दुस्तानमें बृटिश गवर्नमेंट की पुरानी नीति थी कि मजहबके आधार पर हिन्दू मुसलमानोंको लड़ाया जाय, उस नीतिका नतीजा आज हमें देखना पड़ रहा है। हिन्दुस्तानके टुकड़े मजहबी आधार पर किये गये हैं। यह निश्चय किया गया है कि मुसलमान एक तरफ जायें और हिन्दू दूसरी तरफ जायें। इसलामका तरीका और तहजीब एक तरफ हो और हिन्दू संस्कृति दूसरी तरफ हो। हिन्दुस्तानके दो टुकड़े करनेका यही आधार है और कोई दूसरा राजनीतिक सिद्धान्त इस बटवारे का नहीं है।

हमारा स्वप्न टूट गया

आज मुल्ककी गवर्नमेंट हमारे हाथमें है। साथ ही हमारे सामने नयी सूरत है उसमें हमें क्या करना है इस सवाल पर नये ढंग से हमें सोचना है। आपका यह मुल्क इस समय मुसीबतों और खतरोंसे घिरा है। रोज हम देख रहे हैं। कल रातमें ही हमारे नेता पंडित जवाहरलाल नेहरूने कुछ खतरोंका जिक्र किया है। मैं ब्यौरोंमें नहीं जाऊंगा। इतना ही निवेदन करता हूं कि इस खतरे पर आप गहरी दृष्टिसे विचार करें। हम कांग्रेसी जिस स्वप्नको देखा करते थे, वह तो टूट गया। फिर कब आयेगा कोई नहीं कह सकता। हमारा सुपना था हिन्दू मुसलमानोंको एक करनेका। हम, एक होकर रहेंगे, हम दोनों घुल मिल जायेंगे, अपने अपने मजहब रखते हुए भी हमारी संस्कृति एक होगी, हम मिल कर इस देशको स्वतंत्र करेंगे और उसकी रक्षा करेंगे, यह हमारा स्वप्न था। वह तो बहुत दूर चला गया। कभी वह स्वप्न पूरा होगा हम नहीं जानते। मैं तो उन लोगोंमें से हूं जो दुनियांमें एक गवर्नमेंट देखना चाहते हैं। इस देश और पाकिस्तानको मिलानेकी बात मेरे हृदयमें है। साथ ही मैं तो चाहता हूं कि दुनियां भरकी एक गवर्नमेंट हो। लेकिन आज जो परिस्थिति है उसे सामने रखकर हमें अभी काम करना है। हमारी जो बनी हुइ बात थी, जो हमारा हिन्दुस्तान एक था जहां हिन्दू मुसलमान बहुत करीब आ रहे थे, जहां हम समझ रहे थे कि हम मिलकर एक गवर्नमेंट बनायेंगे आज मजहबी नफरतने और ब्रिटिश गवर्नमेंटकी नीतिने वह सब खतम कर दिया। अब हमें नई सूरतों में रहना है और असलियतसे भागना नहीं है। मैं स्वप्न देखने वाला हूं, लेकिन साथ ही साथ वास्तविकतासे मैं भागा नहीं करता। चन्द महीनों की बात है इसी परिषदमें एक बिल पर बोलते हुए मेरा स्वप्न एक फारसीके शेरमें जाहिर हुआ था। मैंने यह कहा था कि:

काफिरे इश्कम मुसलमानी मरा दरकार नेस्तः
हर रगे मन तार गश्ता हाजते जुन्नार नेस्तः

"मैं इश्कका काफिर हूं मुसलमानी मुझे नहीं चाहिये।" मैंने अपने मुसलमान भाइयोंसे अर्ज किया था कि मैं आपसे इसीकी उम्मीद करता हूं और हिन्दुओंसे भी मैंने कहा था जैसा कि शेरमें कहा गया है "मेरी तो एक एक रग तनी हुई है, प्रेमके कारण तनी है और मुझे जुन्नारकी, जनेऊकी आवश्यकता भी नहीं है।" यह तबियतें मैं देखना चाहता था लेकिन जिन्दगीका वह स्वप्न अब हट गया। वास्तविकता सामने है। वास्तविकतासे हम मुंह नहीं मोड़ सकते। मैं आपको सलाह देता हूं कि आजके जो नये खतरे हैं उनको आप गहरे दिलसे देखें, आंखमें पट्टी न बांधें। उनका मर्दानगीके साथ सामना करें। मर्दानगीसे, लेकिन अक्लके साथ। जानवरपनको देशमें रोकना है। बहादुरी और वीरताके साथ सभी खतरोंका मुकबला करना है। मैं आशा करता हूं कि हमारी केन्द्रीय गवर्नमेंट और हमारी सूबेकी गवर्नमेंट मजबूतीसे काम करेंगी। जहां शक्ति नहीं है वहां कष्ट और नाश है, लेकिन गवर्नमेंटकी शक्तिका आधार तो जनताकी शक्ति है। हमारी केन्द्रीय गवर्नमेंट और हमारे सूबेकी गवर्नमेंट जनताकी शक्तिको बढ़ानेकी इस समय कोशिश करें, यह मेरी प्रार्थना है।

टण्डनजीने ३ नवम्बरको यू० पी० असेम्बलीके नये अधिवेशनमें सदस्योंका स्वागत करते हुए यह वक्तृता दी थी। सं० वि०

हमने अहिंसाको नहीं समझा

—महात्मा गांधी

रिचर्ड ग्रेग साहिबसे तो 'हरिजन' के पढ़नेवाले वाकिफ होंगे ही। वह शान्ति-निकेतनमें रहे थे और कई बरस हुए, मेरे साथ साबरमतीमें भी थे। वह मुझे लिखते हैं :

"मैं बहुत जानता नहीं हूं, इस लिये हिचकिचाता हूं। फिर भी आपको एक विचार भेजनेका साहस करता हूं। अगर हम हिन्दुस्तानके आजके जातीय लड़ाई-झगड़ोंको उस विचारसे देखें, तो शायद हमें लोगोंका नैतिक दोष कुछ कम नजर आयगा और आगेके लिये हमें आशा और बल भी मिलेगा।

"मेरी रायमें बहुत मुमकिन है कि यह हिंसा जातीय नफरत और अविश्वासको उतना नहीं बताती जितना कि जनताके गुस्सेको, जो उसकी पीड़ा और उसपर सदियोंसे गुजरनेवाले जुल्मके कारण उसके दिलमें दबा पड़ा था। यह जुल्म केवल विदेशी राज्यके ही कारण न था। इसमें विदेशी आधुनिक समाजी, आर्थिक और माली तरीके भी शामिल थे, जो उन पुराने धार्मिक तरीकोंसे बिलकुल उलटे थे जो कि जनताके स्वभावका एक अंग बन गये थे। विदेशी तरीकोंसे मेरा मतलब है अंग्रेजी जमीन्दारी-प्रथा, अधिक ब्याजखोरी, भारी कर या महसूल जो वस्तुके रूपमें नहीं बल्कि नकदीमें लिये जाते हैं, और दूसरी दस्तं-दाजियां, जो उन्होंने गांव वालोंके उस जीवनमें की जिसे सब जातियां सदियोंसे बिताती चली आ रही थीं।

"मनोविज्ञान हमें बताता है कि बचपन की सख्त नाकामियां व्यक्तिके जीवनमें देर तक दबी पड़ी रहती हैं, चाहे उनका कारण न भी रहा हो। बादमें वह सुलगती हुई आग कभी भी कोई उत्तेजन मिलनेपर भड़क उठती है। और, वह गुस्सा हिंसाके रूपमें बेगुनाहोंपर आ पड़ता है। यहूदि-योंपर यूरोपमें जो जुल्म हुए हैं उनकी और दूसरे कई हिंसक कामोंकी जड़ इस तरह हम समझ सकते हैं। मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तानमें जुदागाना चुनावने इस लड़ाई-झगड़ेका रास्ता जरूर पैदा किया, लेकिन मैं यकीन करता हूं कि जो पुराना कारण मैंने आपको बताया है, वही उस गुस्सेका सबसे बड़ा कारण है जो इस भयानक शक्तिसे आज फाट पड़ा है। ऐसा माननेसे हम समझ सकेंगे कि सब मुल्कोंके इतिहा-समें जब कभी राजकी बागडोर एक हाथसे दूसरे हाथमें गयी है, तब क्यों हमेशा थोड़ी बहुत खून-खराबी हुई है ? जनता किसी-न-किसी जुल्मका शिकार तो होती ही है, जिसके कारण उसके दिलमें गुस्सा भरा होता है। जब ताकत हाथ बदलती है, या कोई स्वार्थी नेता इसका नाजायज फायदा उठाता हैं, तो वह गुस्सा भड़क उठता है।

"अगर मेरा विचार ठीक है, तो यह मालूम होता है कि हिन्दुस्तानकी जातीय नफरत और अविश्वासकी बुनियाद उतनी गहरी नहीं है, जितनी आज दिखायी देती है। इसके मानी यह भी हैं कि जब आप अपने लोगोंको उनके पुराने जीवनके तरी-कोंपर फिर ला सकेंगे और सबसे ज्यादा, जोर धर्म और छोटी संस्थाओं—यानी ग्राम-पंचायत और इकट्ठे कुटुम्ब—पर देंगे तो लोगोंकी शक्ति हिंसासे फिरकर इन कामोंमें लग जायगी। अगर खादीका काम शरणार्थियोंमें किया जाय तो उनकी शक्ति ऐसे ही अच्छे रास्ते लग जायगी। इसरास्ते बढ़नेमें मुझे आशा नजर आती है।

"अगर ऐसा लगे कि मैं बहुत बनता हूं, तो आशा है, गुस्ताखी मुआफ फर-मायेंगे। मैंने इस उम्मीदसे यह खत लिखा है कि बाहरका एक मामूली आदमी, सिर्फ इसलिये कि वह बाहर है, शायद आशाकी झलक देख पाये, जिसे लड़ाईकी धूल और बदहवासीमें देखना इतना आसान नहीं। हर हालतमें मुझे आपसे और हिन्दुस्तान से प्यार है।"

बहुतसे मनोवैज्ञानिकोंने मुझे यह विद्या सीखनेको कहा है। लेकिन समय न होनेकी वजहसे मुझे दुःख है कि मैं ऐसा कर नहीं पाया। ग्रेग साहबका खत मेरी समस्या हल नहीं करता और नहीं मेरे दिलमें मनोविज्ञान जाननेका जबरदस्त उत्साह पैदा करता है। उनकी दलीलसे मेरा मन साफ नहीं, उलटा धुंधला होता है। "भविष्यके लिये आशा" तो मैंने कभी खोई नहीं और न खोनेवाला हूं। क्योंकि वह तो मेरे अहिंसाके अमर विश्वासमें है ही। हां, मेरे साथ यह बात जरूर हुई है कि मैं पहचान गयाहूं कि गालिबन अहिंसा चलानेकी मेरी कलामें कोई नुक्स है। हकीकतमें अंग्रेजी राजके खिलाफ तीस सालकी अहिंसक लड़ाईमें हमने अहिंसा को समझा नहीं। इसलिये जो शांति जनताने बहुत सब्रसे उस लड़ाईके दौरानमें रखी, वह भीतरकी नहीं, ऊपरकी ही थी। जिस समय अंग्रेजी राज गया, उसके दिलका गुस्सा बाहर निकला। यह कुद-रती था कि वह गुस्सा जातीय लड़ाईमें फट पड़े, क्योंकि उस गुस्सेको सिर्फ अंग्रेजी बन्दूकोंने दबा कर रखा था। यह टीका मेरी रायमें बिलकुल दुरुस्त और मानने योग्य है। इसमें किसी उम्मीदके टूटनेकी कोई गुंजाइश नहीं। मेरी अहिंसा चलानेकी कला नाकाम रही, तो क्या ? उससे अहिंसामें विश्वास थोड़े उठ सकता है ? उलटे, यह जानकर कि मेरे तरीकेमें कोई नुक्स हो सकता है, मेरा विश्वास संभवतः और भी मजबूत हो जाता है।

हमारी अन्न समस्या

प्रो. कन्हैयालाल गोविल
एम. ए. बी. काम, प्रयाग विश्वविद्यालय

भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है जहां लगभग ७० प्रतिशत मनुष्य केवल खेती पर ही अपना जीवन निर्वाह करते हैं। ऐसे देशके लिये साधारणतः अन्नकी कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये। परंतु हम इसके विपरीत लक्षण देख रहे हैं। सन् १९३९ में भी यह देश २० लाख टन के करीब चावल बर्मा और मलाया से मंगाता था। लड़ाईके कालमें अन्नकी समस्या कठिन ही होती गयी और सन १९४२ के उपरांत उसने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। सन् १९४३ में बङ्गाल और दक्षिणी भारतमें घोर अकाल पड़ा जिसमें ३० ४० लाख आदमी मर गये। इस दुर्भिक्षकी जांच करनेके लिये केन्द्रीय सरकारने एक कमीशन (फैमिन कमीशन) नियुक्त किया जिसकी रिपोर्ट बहुत महत्व पूर्ण है। उसी वर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हाटस्प्रिङ्ग अमरीकामें हुआ जिसकी रिपोर्ट से ज्ञात हुआ कि एशिया वासियोंमेंसे तीन चौथाईको पेट भर भोजन भी नहीं मिलता है और इसमें हिन्दुस्तानकी दशा सबसे अधिक दयनीय है।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि हमारी अवस्था ऐसी क्यों? इसके कई कारण हैं। एक तो पिछले पचास वर्षोंमें हमारी जनसंख्या बहुत बढ़ गयी है किंतु खेतीमें उसी अनुपातसे वृद्धि नहीं हुई है। १९३०और१९४०के बीचमें हमारी संख्या १५ प्रतिशत बढ़ी है परंतु अन्नकी उपज ४ प्रतिशत कम हो गयी है। दूसरे हमारी खेती पुराने ढङ्ग पर होती है। उसमें विज्ञानकी सहायता अभी तक नहीं ली गयी है जिससे उपजमें कोई वृद्धि नहीं हुई। उदाहरणार्थ हमारे यहां प्रति एकड़ १५ टन गन्ना पैदा होता है परंतु जावामें, जहां वैज्ञानिक कलोंका प्रयोग होता है, एक एकड़में ५० टन गन्ना मिलता है। इसी प्रकार चावल, गेहूं और कपास की उपज भी और देशोंकी बनिस्पत हमारे यहां बहुत कम है। हमको अपनी कृषिमें सुधार करना है। यदि किसानको पानी, खाद और अच्छा बीज मिले तो हमारी पैदावार डाक्टर बर्न्सके कथनानुसार सुगमतासे सवागुनी हो जायगी। कांग्रेस सरकार जमींदारीको नष्ट कर रही है। अच्छा तो है, परन्तु जमींदारीका अन्त होनेसे ही हमारी कठिनाई दूर नहीं हो सकती है। हमको अपनी जमीनकी चकबन्दी करनी चाहिये और प्रत्येक कृषकको इतनी जमीन मिलनी चाहिये जिससे उसका और उसके परिवारका पालन पोषण सुखसे हो सके। इसका परिणाम यह होगा कि हमें किसान और मजदूरोंमेंसे लाखों मनुष्योंके लिये और धंधे ढूंढ़ने पड़ेंगे। बिना उद्योग-धंधोंके हमारी कृषि भी उन्नित नहीं हो सकती। दोनों ही एक दूसरेपर निर्भर हैं।

देशके विभाजनके पश्चात हिन्दुस्थान की अन्न समस्या और भी जटिल हो गयी है। इस साल ऐसा अनुमान किया जाता था कि भारतवर्षको ४०-५० लाख टन अन्न बाहरसे मंगाना पड़ेगा। परन्तु इस विभाजनसे पश्चिमीय पंजाब और सिंध, जहां अन्न आवश्यकतासे अधिक पैदा होता था, पाकिस्तानमें चले गये हैं और यह सुना जाता है कि पाकिस्तान इस वर्ष हमें अन्न देनेमें असमर्थ है क्योंकि एक तो वहां वर्षा कम हुई है, दूसरे आपस की लड़ाईके कारण काफी अनाज नष्ट हो गया है और तीसरे उन्हें पूर्वीय बङ्गालको अन्न भेजना है।

हमारे यहां नहरें बहुत कम हैं और केवल २०-२२ प्रतिशत भूमिकी सिंचाई नहरों द्वारा होती है। जब तक हम नहरें नहीं बनवायेंगे या बिजलीके द्वारा कूओंसे किसानको पानी नहीं दे सकेंगे हमारी उपज नहीं बढ़ सकती। यदि हम पानीकी समस्या हल कर लेते हैं तो बहुत सी ऊसर और बंजर जमीनमें भी खेती हो सकती

यन्त्रों द्वारा खेती का एक दृश्य

है जिससे हमको लाखों मन अनाज मिल जायगा। पश्चिमीय पंजाबसे हिन्दू और सिख जो अच्छी खेती करते थे भाग कर यहां आ रहे हैं। यदि हमारी सरकार पानी, खाद और मशीनका प्रबन्ध कर सके तो इन भागे हुए भाइयोंसे सहकारी खेती (को-ओपरेटिव फारमिङ्ग) भलीभांति करा सकती है। इससे उनको भी वृत्ति मिल जायगी और देशकी अन्न समस्या भी कुछ अंश तक हल हो जायगी

किन्तु इस आयोजनामें समय लगेगा। हमें तो भूखका भेड़िया अभी सता रहा है। खाद्य-मन्त्री डाक्टर राजेन्द्रप्रसादके भाषणसे जो उन्होंने २३ सितम्बरको दिल्लीमें दिया था, ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी परिस्थिति दिन प्रति दिन बिगड़ती ही जा रही है। यह स्थिति बहुत भयावनी है। डा० राजेन्द्रप्रसाद स्वयं आस्ट्रेलिया जानेकी सोच रहे हैं और उससे भी इस सम्बन्धमें बातचीत हो रही है।

हमारी कठिनता एक कारणसे और बढ़ गयी है। वह है हमारे अफसरों और व्यापारियोंकी बेईमानी और बदनीयती। जिधर देखिये उधर ही 'ब्लैक मार्केट' का बाजार गरम है। यह बिना सरकारी कर्मचारियोंकी सहायताके कदापि नहीं हो सकता। सरकारको चाहिये कि ऐसे कर्मचारियों और व्यापारियोंको कड़ा दण्ड दे।

लगभग दस वर्ष (१९२९-३९) तक खाद्य पदार्थोंका मूल्य बहुत कम रहा। परन्तु गत ५-६ वर्षोंमें किसानको बहुत अच्छे दाम मिले हैं। सरकारको शहरोंके लिये अनाज इकट्ठा करनेमें बड़ी कठिनाई पड़ रही है। अन्न दो प्रकार इकट्ठा हो सकता है। या तो सरकार कुल अन्न पर अपना अधिकार कर ले और आवश्यकतानुसार सारी जन संख्याका प्रबन्ध करे। परन्तु यह कोई साधारण काम नहीं है। दूसरा उपाय यह है कि सरकार ऐसे आर्थिक प्रलोभन दे जिससे किसान अपना अन्न निकालनेमें सकुचायें नहीं। जैसे सरकार कूएं और मकान बनानेके लिये ईंटा, चूना, सीमेण्ट, लोहा सस्ते दामों पर दे। कपड़ा, नमक, मिट्टीका तेल और कृषिके यन्त्र भी 'कण्ट्रोल रेट' पर देनेका प्रबन्ध करे। संयुक्त प्रान्तमें ऐसा किया गया है और सरकारको बहुत सफलता भी मिली है।

इस समय देशके अन्दर विभिन्न प्रकारकी उथलपुथल मची हुई है। प्रत्येक मनुष्यका यह कर्त्तव्य है कि वह सरकारको इस समय सहायता दे। यदि ऐसे समयमें प्रजाको खाना न मिला तो हमारी सामाजिक व्यवस्था बड़ा भयङ्कर रूप धारण कर लेगी। इसका भार हम सबके ऊपर है। हर एक प्रांत और देशी राज्यको प्रयत्न करना चाहिये कि वह कमसे कम अपने उपभोगके लिये अन्न अपने यहां पैदा कर सके। नहीं तो कई वर्षों तक अन्नकी स्थिति सुधरती दिखायी नहीं देती।

रूसने परमाणु बमका रहस्य जान लिया ?

विश्व-व्यापी द्वितीय महायुद्धका सबसे बड़ा आविष्कार परमाणु (आटम) बम है। यद्यपि जापान पराजयके मार्गपर निरन्तर अग्रसर हो रहा था, किन्तु उसके इतने शीघ्र घुटने टेक देनेका कारण इसी मारात्मक बमका व्यवहार है। इन बमोंका निर्माण अमेरिकामें हुआ था, किन्तु इसमें अंग्रेज वैज्ञानिकोंने भी सहयोग दिया था, अतः इसका पूर्ण रहस्य अमेरिकाको तथा आंशिक रूपसे ब्रिटेनको भी ज्ञात है। अमेरिकाके एक मात्र इस रहस्यके ज्ञाता होनेके कारण अन्य राष्ट्रोंका उद्विग्न होना स्वाभाविक ही है, अतः यह प्रश्न संयुक्त राष्ट्र संघके सम्मुख उपस्थित हुआ कि या तो अन्तर्राष्ट्रीय नीति बनाकर परमाणु बमका व्यवहार वर्जित कर दिया जाय अथवा इसका रहस्य सभी राष्ट्रोंको बता दिया जाय, जिससे किसीकी जापान जैसी दुर्दशा न हो। उक्त संघकी एक विशेष समिति इस सम्बन्धमें विचार कर रही है।

संसारके अन्य राष्ट्र भी परमाणु बम तैयार करनेके सम्बन्धमें अनेक परीक्षण कर रहे हैं और कुछको इस कार्यमें सफलता भी मिली है। अभी उस दिन रूसके पर-राष्ट्र-सचिव मोशिये मोलोटोव ने अपने एक भाषणसे समस्त यूरोपीय देशोंकी राजधानियोंमें सनसनी फैला दी। उन्होंने कहा—'अमेरिकाके प्रसारवादी क्षेत्रोंमें एक विचित्र भ्रम उत्पन्न हो गया है। उन्हें अपनी आंतरिक शक्तिपर तो विश्वास नहीं है, वे केवल परमाणु-बमके रहस्यका ही भरोसा करते हैं, यद्यपि काफी दिन हुए जब यह रहस्य रहस्य नहीं रह गया।

अमेरिकासे पांच वर्ष पीछे

इसके पश्चात ही पेरिसके एक पत्रमें यह प्रकाशित हुआ कि रूसने १५ जूनको साइबेरियाके एक दूरस्थ भागमें अपने सर्व प्रथम परमाणु बमका परीक्षण किया। उस समय २८० विशेषज्ञ तथा सरकारी कर्मचारी वहां उपस्थित थे, जो अपनी अत्यन्त गुप्त रिपोर्ट मार्शल स्टालिनके सम्मुख उपस्थित करेंगे। यह भी ज्ञात हुआ है कि रूसी इसके निर्माणकी चेष्टा कर रहे हैं, यद्यपि वे अपने इस प्रयत्नमें अमेरिकासे अभी पांच वर्ष पीछे हैं।

कहा जाता है कि परमाणु बम संबंधी परीक्षण 'आटम ग्राड'में किये गये किन्तु लोगोंका विश्वास है कि रूसियोंने इसका कारखाना कहीं यूरालके पूर्वमें निर्मित किया है, जिसमें अभी कुछ यंत्रोंकी कमी है। रूसियोंने परमाणु-सम्बन्धी सिद्धांतका पता पा लिया है, किन्तु विशाल परिमाणमें बमोंके निर्माणका सिद्धांत अभी तक अज्ञात है।

इस रहस्योद्घाटनकी बात सुनकर तो ब्रिटेनमें शंका प्रकट की गयी पर अमेरिकामें इसे हंसकर उड़ा दिया गया। लन्दनके यूनिवर्सिटी कालेजके प्रोफेसर एच० एम० डब्ल्यू० मासेने—जो परमाणु सम्बन्धी वैज्ञानिकोंकी परिषदके अध्यक्ष तथा दिसम्बर सन् १९४३ से लेकर अक्तूबर सन् १९४५ तक ब्रिटिश वैज्ञानिकोंका जो दल परमाणु सम्बन्धी अन्वेषणके निमित्त अमेरिका गया था उसके एक प्रमुख सदस्य थे—कहा कि मुझे इस विषयमें पूर्ण सन्देह है। यह तो भली भांति सिद्ध है कि हिरोशिमाकाण्डके बाद तक वहां किसी प्रकारके अणुतत्व सम्बन्धी अन्वेषण कार्य आरम्भ नहीं हुए थे, और मैं यह विश्वास करनेको प्रस्तुत नहीं हूं कि रूसियोंने इतने शीघ्र इतनी उन्नति कर ली होगी। क्योंकि अणु अन्वेषण एक निश्चित समयसे कममें नहीं किया जा सकता।" अमेरिकाके वैज्ञानिकों ने—जिन्होंने प्रथम परमाणु-बमके निर्माण में सहायता की थी—इस समाचारका उपहास किया। उन्होंने कहा कि इस समाचारमें मौलिक वैज्ञानिक असङ्गतियां हैं।

प्रामाणिकता पर अविश्वास

यह भी कहा जाता है कि इस समाचारका सूत्र ही प्रामाणिक नहीं है। यह पेरिसके एक समाचार पत्रमें प्रकाशित हुआ था और उसके मास्को स्थित संवाद दाताने इसे प्रेगसे प्रेषित किया और बताया कि "मास्कोसे प्राप्त समाचारके आधार पर" निर्भर है। लन्दनके एक पर्यवेक्षकने यहां तक कहा कि "जब रूसी अधिकारियोंने इस रहस्यको प्रकट होने दिया, तो अवश्य ही इसके भी कुछ विशेष कारण हैं। और कारण दो ही हो सकते हैं। एक तो यह कि यह समाचार सत्य है और इस तरह इस समाचार द्वारा रूसियोंको अणु बमके भयसे निश्चिन्त कर दिया गया। दूसरा यह हो सकता है कि इसके असत्य होते हुए भी २५ नवम्बरको होने वाली पर-राष्ट्र मन्त्रियोंकी कानफरेन्सके पूर्व प्रचार-मूल्यकी दृष्टिसे इसे फैलाया गया है। स्वभावतः इस समाचारके प्रकाशनके साथ साथ मोशिये मोलोटोवके भाषणसे सनसनी फैल गयी।

मनोरंजक कहानी

रूसने परमाणु बमका रहस्य ज्ञात कर लिया है अथवा नहीं इस सम्बन्धमें लन्दनका पत्र "न्यूज रिव्यू" एक मनोरंजक कहानीका उल्लेख करता है।

सोवियटके वैज्ञानिक परमाणु-विषयक अनुसन्धानमें निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं। जर्मनीसे एक संवाद प्राप्त हुआ है कि जर्मनी और जेकोस्लाविया की सीमा पर स्थित अककी यूरेनियमकी खानमें ८०

संयुक्त राष्ट्र संघमें ब्रिटिश प्रतिनिधि हेक्टर मकनील विश्व समस्यापर बोल रहे हैं।

जर्मन खनिक छत गिर जानेके कारण निहत हो गये।

रूस इस बातको स्वीकार करनेसे इनकार करता है कि जेकोस्लोवाकिया अथवा अपर सैलेशियाकी यूरोनियमकी खानोंमें काम करनेके लिये मजदूर भर्ती किये जा रहे हैं। परमाणु तत्व सम्बन्धी अनुसन्धानोंमें रूसियोंने जर्मनीके खनिज सम्बंधी रसायन शास्त्रियोंसे कुछ आवश्यक बातें ज्ञात की हैं। अमेरिका अधिकृत जर्मनीमें यह पता चला है कि युद्धकी समाप्तिकालमें परमाणु बम उत्पादन करनेके निकट तो जर्मनी नहीं पहुंचा था, किन्तु जर्मनीके प्रसिद्ध रसायनिक ओटोहानने सर्व प्रथम सन् १६३६ में यूरोनियमके परमाणुओंका विश्लेषण किया था। स्ट्रेस वर्ग की रसायनकी एक प्रयोगशालामें कुछ ऐसे कागज पत्र प्राप्त हुए हैं जिनसे ज्ञात होता है कि जर्मन वैज्ञानिकोंने परमाणु बममें काम आने वाले यूरेनियमको साधारण यूरेनियमसे पृथक करनेकी चेष्टा की थी, वे उसकी प्रतिक्रियाकी श्रृंखला स्थापित करनेमें तो सफल नहीं हुए, किन्तु उन्हें परमाणु सम्बंधी अनुसन्धानमें कई उपयोगी बातें ज्ञात हुईं। यद्यपि अमेरिका तथा रूस द्वारा जर्मन अधिकृत क्षेत्रों के वैज्ञानिकों में परस्पर अधिक सम्पर्क नहीं है किंतु यह सत्य है कि जर्मन जितना जानते थे, रूसी उतना जान चुके हैं।

सन १६३२ के रसायन सम्बन्धी नोबल पुरस्कारके विजेता डा० वर्नर हेसनबर्गने विगत फरवरीमें यह कहा था कि रूस किसी भी परमाणु विशेषज्ञ जर्मन वैज्ञानिकको जो रूसमें जाकर काम करनेके लिये तैयार हो ६ हजार रूबल प्रति मास देनेके लिये प्रस्तुत हैं।

सन१६४५ई०के दिसम्बर मासमें ही बड़े बड़े कारखानोंके प्रधान एम० कागानोविच से स्टालिनने कहा था कि दो वर्षोंके भीतर ही परमाणु बमका विकास पूर्ण रूपसे होना चाहिये। रूसमें केवल दोही व्यक्ति इस कार्यको पूर्ण कर सकते हैं। प्रसिद्ध रसायनिक अब्राहम फेडोरोविच अथवा विख्यात वैज्ञानिक डा० पीटर कैपिटजा।

नवम्बर सन १६४५ ई० में 'इजवेशिया' ने प्रकाश्य घोषणा की थी, कि कैपिटजा, माउण्ट अलागोजाकी प्रयोगशालामें 'कास्मिक-रेज' विषयक परीक्षण हो रहे हैं। यदि यह मान लिया जाय कि उनका प्रयोग वहीं तक सीमित रहा, तो भी इससे यह सिद्ध हो ही जाता है कि वे परमाणु विश्लेषण सम्बन्धी परीक्षणोंमें दत्त-चित्त थे। लण्डनडरीके मानव-विज्ञान तथा शरीर शास्त्र विज्ञानके प्रधान डा० राफेल अरटेटो उत्तरी यूरोपके एक मित्रका पत्र उद्धृत करते हुए कहते हैं कि "मुझे यह ज्ञात हुआ है कि रूसने सन १६४५ ई० में परमाणु बम तैयार किया था।" इस पत्रमें बतलाया गया है, कि कैपिटजा तथा उनके सहयोगियोंने इस वर्षके १८ दिसम्बरको स्टालिनके यह सूचना दी कि उन्होंने टेनिसकी एक बड़े गेंदके आकारका परमाणु-बम तैयार कर लिया है।

युद्ध छिड़ेगा

अमेरिकाके प्रेसिडेण्ट हेरी ट्रूमैनको इस बात पर विश्वास नहीं हुआ किन्तु १५ मार्च सन १६४६ को सोवियट विज्ञान परिषदके अध्यक्ष सर्गी वासिलोवने कहा कि वैज्ञानिक पंचवर्षीय नवीन योजनामें परमाणु सम्बन्धी विकास परही अधिक ध्यान दिया जायेगा। बिकनीके परमाणु बम सम्बन्धी परीक्षणके रूसी परिदर्शक सोमायों अलेक्जेण्ड्रोवने उसी वर्ष १४ अगस्तको सानफ्रांसिस्कोमें घोषित किया, "रूस परमाणु बम सम्बन्धी परीक्षणकी आशा निकट भविष्यमें करता है।

कितनेही उत्तरदायी अमेरिकन जैसे शिकागो विश्व-विद्यालयके परमाणु-विशेषज्ञ प्रोफेसर हेराल्ड युरे यह साफ साफ देखरहे हैं कि रूसके पर्याप्त मात्रामें परमाणु बम तैयार कर लेते ही उसके और अमेरिकाके मध्य युद्ध छिड़ जायेगा।

समाजमें बहुविवाह

—*):०:(—*

श्रीमती राधा देवी गोयनका एम० एल० ए०

समाजमें बहु विवाह प्रचलित हो जानेके अनेक कारण हैं। खासकर पुरुषोंके लिये ही यह प्रथा प्रचलित है और यह इस लिये अभी तक चलती रह सकी है कि स्त्रियोंकी सामाजिक अवस्था बहुत हीन रही है। उनके व्यक्तित्वका महत्व अधिक नहीं।

कुछ लोग कहा करते हैं कि बहु विवाह करना स्वाभाविक है। इसे रोकना अस्वाभाविक है। इसका उदाहरण वे पशु पक्षियोंसे दे दिया करते हैं। मनुष्य आखिर मानवसे पशु क्यों होना चाहता है। वास्तवमें एक पत्नी रहते हुए एक पत्नी और ले आना और पहली पत्नी पर मनमाने अत्याचार करना यह मानवसे पशु ही नहीं बनना है उससे भी नीच कोटिमें जाना है। पशुओंमें मानवके समान न कोई संस्कृति है न सभ्यता है और न उतनी स्मरण शक्ति ही है। वे केवल अपने साथ चरने वाले और रहने वाले पशुओंको ही पहिचान सकते हैं, परवश रहते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनमें विवाह प्रथा ही नहीं है। मनुष्य तो विवाह करता है एक दूसरेके प्रति ईमानदार रहनेकी प्रतिज्ञा करता है। इसकी संततिका उसके साथ नैतिक उत्तरदायित्व है। पत्नीके दिलमें पतिके प्रति ममत्वकी गहरी भावना रहती है। वह उसे अपने जीवन मरणका साथी तथा पूज्य समझती है। उसके सम्पूर्ण हृदय पर पतिका एक छत्र राज्य रहता है। ऐसी हालतमें पत्नीका यह आशा करना स्वाभाविक है कि उसके पतिके हृदयमें भी उसके प्रति उतना ही स्थान हो जितना उसके मनमें अपने पतिके लिये है। वह पतिके दिल पर किसी दूसरेका प्रभुत्व नहीं सहन करना चाहती। यह स्त्रीका दोष नहीं यह प्रेमीका स्वभाव है। ईश्वर प्रदत्त कोमलतम वृत्तियां जिनके विकाससे मनुष्य देवता बन उठता है इस द्विपत्नी विवाहके खिलाफ विद्रोह कर उठती हैं। हिन्दीके एक कविने कहा है—

"नैना भीतर आव तू, नैन झांपि तोहि लेऊं। ना मैं देखं और को ना तोहि देखन देऊं।" जो स्त्री अपने पतिको अन्तिम सीमा तक प्रेम करती है वह कैसे उस पतिको अपनेसे छीन लिया जाना सहन कर सकती है. उसके हृदयमें पतिके उज्वल प्रेमका जो प्रकाश रहता है उस हृदयको अन्धकारमय बना लेना कैसे सहन कर सकती है। किंतु भारतमें ऐसी भग्नहृदया लाखों स्त्रियां हैं। शरीर उनका साबित दिखायी देता है किन्तु हृदय शत शत छिद्रोंसे क्षत रहता है।

इस लेखकी लेखिका

इतिहासमें ऐसा एक भी उदाहरण दिखाई नहीं देता जहां एक पत्नीको दूसरा पति हो और ऐसी हालतमें उसका पति उसे चाहता हो। द्रोपदी एक अपवाद है। जो पांच पतियोंके होने पर भी नारी शिरोमणि गिनी गयी है। किन्तु आज भारतवर्षमें ऐसा कोई महापुरुष दिखाई नहीं देता जिसने दो स्त्रियां की हों। सत्य हरिश्चन्द्र महापुरुष बने लेकिन उन्हींके वंशमें राजा दशरथ रामके पिता होकर भी महापुरुष न बन सके किंतु राम अवश्य महापुरुष हुए। कई रानियों वाले कृष्णको हम महापरुष मानते हैं। वह किसी एक कृष्णका सच्चा स्वरूप नहीं है रूपक लिये हुए हैं। महा भारतमें राधा तक का नाम नहीं है और न कृष्ण अनेक पत्नियोंके साथ हैं।

आर्थिक स्थिति

भीष्म पितामहके पिता शान्तनु महापुरुष नहीं बन सके किंतु भीष्म पितामह महापुरुष बन गये। जिस प्रकार सती साध्वी स्त्री बननेके लिये एक पतिव्रत होनेके साथ ही अनेक उच्च गुणोंकी भी आवश्यकता रहती है उसी प्रकार महापुरुष बननेके लिये एक पत्नीव्रत और सेवा त्याग संयम आदि अनेक उदात्तगुणोंका होना पुरुषमें भी आवश्यक है। मनुष्यका स्वभाव है कि वह उन्नतिकी ओर बढ़ना चाहता है और उसके लिये अनेक कष्ट सहन करता है। इस उन्नतिकी सीमा उस अनंत परमेश्वर तक पहुंचने में है। इस ऊंचाई तक पहुंचनेके लिये मनुष्यको कितने समयकी आवश्यकता है यह आप जानते हैं और इसी ऊंचाई पर पहुंचनेके लिये धर्म ग्रंथोंमें स्त्रियोंसे बचनेके लिये प्राचीन समयके अनेक सिद्धांतोंने स्त्रीको अनेक दोषोंकी खान बतलाया है। ये स्त्रियोंको दोषी ठहराने वाले विद्वान स्वार्थोंसे जंचते हैं। अपनी वृत्तियों पर विजय न पानेके कारण दूसरोंको बरा बतलाना न्यायसंगत नहीं लगता। आज भी कुछ पुरुष ऐसा कहा करते हैं कि स्त्री अपने निजी स्वार्थके लिये ही तो सपत्नी बन जाती है। पत्नी वाले पुरुषसे वह शादी क्यों करती है। जब एक स्त्री ही स्त्रीके दुखको नहीं समझती तब पुरुष क्यों समझे? उसमें उसका क्या दोष। कहनेके लिये यह तर्क बिलकुल ठीक दिखता है किन्तु इसका कारण मुझे स्त्रियोंकी आर्थिक स्थिति तथा स्वयं कमा सकनेकी अयोग्यता ही दिखती है। अपवाद ऐसे सब जगह हैं। ऐसे उदाहरण शायद

ही कहीं मिले जहां स्त्री पढ़ी लिखी हों और आर्थिक स्थिति अच्छी होकर भी किसीकी सपत्नी बनी हों। जैसे जैसे स्त्रियां शिक्षित होती जा रही हैं स्वावलंबी होती जा रही है। उच्चवर्गमें बहुविवाह प्रथा कम होती जा रही है। अतः बहुविवाह प्रथाका दोष स्त्रियों पर स्वभाव जन्य नहीं है, परिस्थिति वश है। और पुरुषोंमें यह दोष प्रमादवश है। यह दोष समाजकी सर्वांगीण उन्नतिमें बाधक है। न इससे शारीरिक उन्नति हो सकती है और न आर्थिक तथा आध्यात्मिक ही। ऐसी कुप्रथाको कानून द्वारा शीघ्रातिशीघ्र बन्द कर देनेमें ही समाजका कल्याण है। अमेरिकामें स्त्रियां पुरुषोंसे अधिक हैं इस लिये वहां विवाह परिवर्तन जल्दी होते रहते हैं। इसी लिये तलाक प्रथा तेजीसे चलती रहती है। फिर भी वहां पर एक पुरुषके पास कानूनन दो स्त्रियां एक साथ नहीं रहसकती।

भारतमें स्त्रियां पुरुषोंसे कम

हिन्दुस्तानमें स्त्रियां पुरुषोंसे कम है। १९४१ की जनगणनाके अनुसार भारतमें ३८॥ करोड़ आबादीमें १८॥ करोड़ स्त्रियां हैं और २० करोड़ पुरुष है। मद्रास बङ्गालमें स्त्रियां ज्यादा हैं तो पञ्जाब और युक्त प्रान्तमें पुरुषोंसे कम हैं और मध्य प्रांत तथा बरारमें स्त्रियां पुरुषोंके बराबर हैं। जब एक पुरुष दो दो तीन तीन स्त्रियां कर लेता है तो बहुतसे पुरुषोंको कुंवारा ही रह जाना पड़ता है। बहुविवाह करनेवालों पर इन कुंवारोंके दिलसे निकला हुआ एक अभिशाप और भी बढ़ जाता है। इस लिये कल्याण इसीमें है कि एक पुरुषके एकही स्त्री रहे।

बहुविवाहके सम्बन्धमें हिन्दू और मुस्लिम स्त्रियां एक साथ होंगी। मुस्लिम बहनोंने बतलाया है कि उनके धर्मग्रन्थोंमें ऐसा नहीं लिखा है कि दो दो चार चार पत्नियां करना धर्म है। ये तो रूढ़ियां है। हमेशा समयके अनुसार बनती बिगड़ती रहती है। धर्म तो उसीको कहा जा सकताहै जो कभी भी खण्डित न हो। सच बोलना धर्म, दुखियों और बीमारोंकी सेवा करना धर्म है और यह सभी कालोंमें अचल है। इंगलैण्ड, अमेरिका, रूस आदि देशोंमें भी द्विभार्यात्व पर प्रतिबन्ध है। वह सभी जातियोंके लिये है। इंगलैण्डमें अंग्रेजोंके लिये एक कायदा हो और हिन्दू—मुसलमानोंके लिये दूसरा कायदा बना हो ऐसी बात नहीं है। वहांके सारे नागरिकोंके लिये एकही कानून है।

अपहरण पर रोक

भिन्न भिन्न प्रांतोंमें हम भी यदि ऐसे बिल सभी जातियोंके लिये बना दें तो दूसरी भी कई बुराइयों जैसे स्त्रियोंका अपहरण आदि दूर हो जाये। अपहरणके विरोधमें तो आज भी बिल बना हुआ है किन्तु उसमें खुशीसे इच्छा पूर्वक किया हुआ अपहरण कानूनके भीतर नहीं आता और अपहरण की हुई स्त्रियां जानती हैं कि उसके पतिके या माता पिताके घरमेंपुनः उन्हें आश्रय मिलना कठिन है। अतः वे बेचारी बिना इच्छा भी अपहर्ताके साथ अपनी खुशी जाहिर कर देती हैं। हमें ऐसा कायदा बना देना चाहिये कि किसी पुरुषकी या स्त्री की अथवा अभिभावक की कितनी ही खुशी क्यों न हो जबतक किसी पुरुषके पास पत्नी है और किसी स्त्रीके पास पति हैं वे किसी दूसरे स्त्री पुरुषको पत्नयापतिके रूपमें लाकर नहीं रख सकते। इस प्रकार पहिलेसे अधिक सुविधा हो सकती है। मेरी रायमें इस बात पर भी जनमत लिया जाना चाहिये। ईसाई, पारसी, मुस्लिम कोई भी स्त्री क्यों न हो कभी भी वह अपने पर दूसरी स्त्री लाया जाना पसन्द नहीं करती। यह मानव स्वभाव है। लेकिन बेचारियोंको जबर्दस्ती यह सब अत्याचार सहन करना पड़ता है और यह एक प्रकारसे उनकी आत्महत्या ही है। इसे हम क्रूरतम हिंसा कह सकते हैं। एक बार गोली मार देना कहीं अच्छा है दिन रात किसीके हृदयको कुचलते रहनेसे। कांग्रेस की नीति तथा गांधीजीके सिद्धान्तोंके अनुसार तो स्त्रियोंका बराबरीका हक मान्य ही किया गया है। अतः कमसे कम इस वैवाहिक कार्यमें तो स्त्री और पुरुष दोनोंको ही समानता तत्काल दी जानी चाहिये। पुरुषका अधिकतर समय तो घरके बाहरके क्षेत्रमें बीतता है। उसके लिये मनोरंजनके अनेक साधन रहते हैं।

स्त्रियोंका अपमान है

हिन्दू धर्ममें तो विवाहके समय पति पत्नी शपथ लेते हैं एक दूसरेके प्रति इमानदार रहने, दूसरे पुरुष या दूसरी स्त्रीको मां बहन समझने और पिता भाई समझने की। किन्तु पुरुष अग्निके समक्ष की हुई इस प्रतिज्ञा, इस थपथको भूल जाते हैं। कुछ भाई कहते हैं कि इसके लिये कानूनकी जरूरत ही क्या है।

जैसे-जैसे देश धनी होगा शिक्षित होगा वैसे-वैसे लोगोंकी नैतिक उन्नति होगी और रूस आदि देशोंकी तरह धीरे धीरे यह प्रथा भी बन्द हो जायगी। अनेक प्रकारके सुधारके बिल लाये जाने की भी जरुरत नहीं है जैसे हरिजन मंदिर प्रवेश और गुंडा एक्ट आदि। लोग शिक्षित होकर अपने आप समझ जायंगे तथा बुरी बातों बुरे कर्मोंको त्याग देंगे। ऐसे बिलोंकी अभी जरूरत नहीं है यह कहना तो अच्छे कामको रोकना है। अभी तक हमारे सामने देशकी आजादी लेनेका महान कार्य था अब देश आजाद हो गया है। देशकी शांति बनाये रखनेके साथ ही साथ उसका सामाजिक सुधार करना नैतिक उन्नति करना हमारे सामने प्रथम कार्य है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि शिक्षित वर्गमें और उच्चवर्णोंमें तो आज भी बहुत कम लोग ऐसे हैं जो एक पत्नी के जीवित रहते दूसरा विवाह करते हों। स्त्रियां अब पुरुषोंकी चल संपत्ति के रूपमें नहीं रहना चाहती। जैसे एक पुरुष लखपति कहलानेका शौक रखता है उसी तरह चार स्त्रियोंका पति कहलानेमें भी वह अपनेको भाग्यमान समझता है। यह तो स्त्रियोंका सरासर अपमान है।

नींव का प्रस्तर

श्री विजय कुमार मुन्शी साहित्यरत्न बी.ए., एल.एल.बी.

शहरसे पचीस मील दूर, सघन बन प्रांतमें एक छोटी-सी पहाड़ी नदी बहती है। नदीकी धारा बनके जिस स्थान पर अर्ध गोलाकार स्वरूप धारण करके ढाल पर उतरती है वहीं एक कच्चे पत्थरों का मन्दिर बना है। आस पासके गांव वाले लोगोंका कथन है कि इस मन्दिरको किसी चतरा साईंने बनवाया था। वह कृष्णका परम भक्त था और इस स्थान पर वह निरन्तर चालीस वर्ष रहनेके पश्चात यह मदिंर यहां बनाकर सदाके लिये इस स्थानसे चला गया तो उसका कोइ पता नही चला। आस पास जङ्गलके अन्तर में बसने वाले लोगोंका कथन है कि अर्ध रात्रिमें मदिंरके पूरब की ओरसे चतरा साईं की आवाज सुनाई पड़ती है 'जय काली जय जय महा काली' और यह वाणी इस जङ्गलके वातावरण को एक रहस्य और एक भक्ति सेप्ररित कर देती है। लकड़ीके गट्ठर ले जाकर शहर बेचने वाले भील जब आंधी पानीमें यहां ठहर जाते हैं तो कुछ क्षण यहां केवल विश्राम तो कर लेते है, किंतु रातके समय यहां कदापि नही ठहरते। अर्द्ध रात्रिके काठ अञ्चलको चीरती हुई 'जय काली' जय जय महा काली' की वाणीको सुनते सुनते दूर दूर अपनी झोपड़ियोंमें बसने वाली जङ्गली जातिके भील इस वाणीसे अभ्यस्त हो गये हैं।

जङ्गलके बीचों बीच हो कर मैं चला जा रहा था। अंधियारी छाने लगी थी। वातावरण में एक शून्यता थी और पक्षियों का कलरव एक अनन्त उदासीकी शून्यतामें डूबने लगा था। सघन वृक्षों के अंतरालमें निर्मित झोंपड़ियोंमें जलने वाले दीप दूर से बड़े भले प्रतीत होते थे और ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे किसीकी मग्न आशाओं के दीप टिमटिमा रहे हैं। अन्धेरा बढ़ता जा रहा था। मैं मंदिरको देखकर कुछ देर सहमकर बोला, 'यहीं क्यों न ठहरा जाय दीनानाथ, अपने पास सामान है, खेमे तान दो!'

और दीनानाथने सब सामान चबूतरे पर रखवा दिया। एक भील जो सामान उठाये हमारे पीछे आ रहा था, हमें मंदिर के पास ठहरते देखकर बोला,'यहां न उतरिये। यह चतरासांईका मन्दिर है। आधी रातको यहां 'जयकृष्ण' सुनाई पड़ता है!'

'पागल हो!' हम यहीं ठहरेंगे। मैं आरामकुर्सी पर चबूतरे पर लेट गया। मंदिरके पास दीप जला दिये गये। नौकर खेमे गाड़ने लगे। जगह साफ होने लगी थका होनेके कारण मेरी आंखे झप गईं।

* * * *

'साहब!'

हां!

उठिये! खाना तैयार हैं!' दीनानाथ बोला। मैं आंखें मलता उठ बैठा। खेमे गड़ चुके थे। मेरे लिये दो कमरे बना दिये गये थे मैंने हाथ मुंह धोकर चारों ओर जंगलमें दृष्टि डाली। निरन्तर जंगलों में घूमते रहनेके कारण मेरी दृष्टि ने पहिचान लिया कि आस पास कोई भयंकर जानवर नहीं हैं। दीनानाथ मेरे साथ दस वर्षों से काम करता है। जंगलों में जब दौरे पर जाता हूं तो मैं दीनानाथ को प्रायः अपने साथ रखता हूं। खाना खा लेनेके पश्चात मैंने दीनानाथको कहा कि बंदूक भरकर वह मेरे शयनकक्षमें रखदे और मैं खटिया पर जाकर पड़ गया। इस समय मेरी घड़ी ग्यारह बजा रही थी। अंधियारी रात सांय सांय कर रही थी। मैं सोनेका प्रयत्न करने लगा। मुझे रह रह कर उस भीलकी बात याद आ रही थी। मैं देर तक एक पत्रिका पढ़ता रहा। रातके साढ़े बारह बज चुके थे। खेमेमें सब लोग सो चुके थे मैंने बन्दूक, कंदील उठाया और मंदिरके पूरबकी ओर जानेलगा सामनेसे एक बूढ़ा आ रहा था। उसके हाथमें पूजाकी थाली थी। उसकी लम्बी दाढ़ी सन-सी श्वेत थी और उसका मुख रोबीला था शरीर पर एक पीत शाल डाले हुआथा। उसकी आंखोंमें अपार तेज दिखायी दे रहा था। ऐसा लगता था कि मेरे सम्मुख वन-देव आ रहा है। मैं सहम गया और वह भी मुझे देख कुछ रुक गया फिर मुस्करा कर मेरे पास आकर वह बोला, 'ब्राह्मण हो?'

'हां महाराज।'

'इतनी रात यहां कैसे आये?'

मैं जंगलोंका अफसर हूं। रात हो जानेके कारण यहीं डेरा डाल दिया है।'

'आओ!' और मुझे अपने साथ मंदिर में ले गया उसने पूजाकी 'जय काली, जय जय महाकालीका गीत गाया और मेरा हाथ पकड़कर वह मुझे पूरबकी ओर ले जाने लगा।

'बाबा! मैं आपपर कैसे विश्वासकरूं'

'तुम शिखा सूत्रधारी हो। मैं भी सूत्रधारी हूं। आज शिखासूत्रधारी को शिखा सूत्रधारी पर विश्वास करना चाहिये।

बेटा ! अपने पर विश्वास करना सीखो। अपनेको अपनाना सिखो। आज तुम्हारा देश कलहकी आगमें जल रहा है। भारतीय संस्कृति और धर्मकी हमें आज रक्षा करना है। एक सूत्रमें बंधो। अपने देश अपनी संस्कृति और अपने धर्मकी रक्षा करना सीखो। यही आवश्यक है। अब हम एक गुहाके मुख द्वार पर आ गये थे। मैंने सहमकर बाबाके साथ गुहामें प्रवेश किया। अन्दर जाकर देखा दीपों के प्रकाश में जङ्गली जातिके बच्चे पढ़ रहे थे। मेरा हृदय गदगद हो गया।

'आप धन्य हैं बाबा।' मैंने कहा।

हमें 'नींवका' पत्थर बनना है। अपने समाज और देशके निर्माण के लिये अनवरत कार्य करना है। यही हमारा धर्म है !

× × ×

मैं खेमे पर आकर सो गया। सुबह दीनानाथ कह रहा था 'साहब ! जय महाकाली सुनाई पड़ रहा था ?

मैंने हंसकर कहा, 'नहीं ?'

—:—

पाकिस्तान किधर ?

लेखक—गोपालचंद्र सुगंधी एम० ए० (इति)एम०ए०(राज)

राष्ट्रीयताकी बढ़ती हुई लहर तथा आन्दोलनको रोकनेके लिये ब्रिटिश साम्राज्यवादियो ने पृथक-निर्वाचन प्रणाली द्वारा सन १६०८-६ में हमारे देशवासियो के बीचमें फूट डालनेकी कूटनीति के बिष-वृक्ष का बीजारोपण किया' उस समय ब्रिटिश टोरियो ने कहा कि "आज भारतीय राजनीतिमें बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। अब आशा है ४ करोड़ मुसलमान (उस समयकी जन संख्या) 'राजद्रोही' कांग्रेसमें न सम्मिलित हो सकेंगे।" भारत में ब्रिटिश राज्यकी हिलती हुई नींवको टेक लगानेके लिये मुसलमानोंको विशेष रूपसे मिलाया गया। उन्हें विशेषाधिकार दिये गये और बड़े सुन्दर ढंगसे इस विष वृक्षको सींचा पाला-पोसा गया। परिणामस्वरूप मि० जिन्नाने "हिन्दू-मुसलमान दो राष्ट्र" का नारा बुलन्द किया और इनके नेतृत्व तथा प्रोत्साहनमें मुस्लिम लीगने राष्ट्रीयताके युगमें भी धार्मिक आधार पर पाकिस्तान या अलग बसनेकी मांग की। मि० जिन्नाकी लम्बी लम्बी विचार विरूद्ध बातें तथा दलीलें बढ़ती ही गयीं। यहां तक कि अप्रैल १६४६ ई० के अंतिम सप्ताहमें उन्होंने अपने आपको भारतीय भी नहीं पाया। वे ही आज पाकिस्तानके गवर्नर जेनरल हैं, विधान सभाके सभापति और वहांके सर्वे सर्वा भी।

ता० १५ अगस्तको देश स्वतंत्र हुआ, विभाजित होकर' हमारी भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक एकताका खंडन हुआ और मुसलमानोंको एक अलग राज्य बनानेका अवसर मिला, चाहे यह सब कुछ डा० सिन्हाके शब्दोंमें मि० जिन्नाकी 'कुशल' राजनीतिज्ञताके कारण हुआ हो या अंग्रेज-मुसलिम षडयंत्रके कारण हमारे नेताओंको विभाजन स्वीकार करना पड़ा हो, यह आज प्रश्न नहीं। भावी इतिहास लेखकोंको निष्पक्ष रूपसे विचार करके इस सम्बन्धमें निर्णय देना होगा। आजतो साधारण नागरिककी रायमें मि०जिन्नाको अपनी अद्वितीय ब्रिटिश सेवाओंके उपहार स्वरूप यह भेंट प्राप्त हुई है।

अराजकता का राज्य—

पाकिस्तान बननेके पूर्व ही पूर्वी बंगाल, सीमा प्रांत और पंजाबमें मुसलिम नेशनल गार्डों द्वारा लूट, खसोट, बलात धर्म परिवर्तन अपहरण, व्यभिचार और भीषण रक्त-पात प्रारम्भ हो चुका था। पाकिस्तान बननेसे इस नीतिको और भी प्रोत्साहन मिला, खुले आम कत्ले आम प्रारम्भ हुआ, हजारोंकी तादादमें हिन्दू और सिख मौतके घाट उतारे गये, 'देवियोंका सतीत्व लूटा गया, युवतियां उड़ायी गयीं और सैकड़ोंके धर्म-परिवर्तन किये गये, पाकिस्तानके शासक सहानुभूति पूर्ण चुप साधे रहे; उनके लिये जो कुछ हुआ वह तो पूर्वी पंजाब और पश्चिमी युक्त प्रांतमें हुआ। विभाजनके समय किये हुए वादे और स्वीकृत नियम कागज पर ही रहे। उनके भंग या अवहेलना करनेमें पाकिस्तानने अपना गौरव समझा, ऐसी स्थिति पैदा हो गयी कि पाकिस्तानमें एक भी हिन्दू या सिख न रह सके। उनका नामोनिशान न रहे। अरबोंकी सम्पत्ति नष्ट होते हुए वहांके शासकोंने देखा और इस गुण्डागिरीके विरुद्ध अपनी असमर्थता प्रकट की। शरणार्थियों की पूर्ण तौरसे तलाशी ली गयी और उन्हें भारतमें किसी प्रकारकी सम्पत्ति नहीं लाने दी गयी। फिर आज यह तीन माहका राष्ट्र सभ्य राज्य कहलानेका दावा किस विरते पर कर सकता है? अल्पसंख्यकोंकी रक्षाके किये हुए वादे केवल दुनियांको सुनानेको थे। जो हरिजन वहां रहेंगे उन्हें चांद-तारेके बिल्ले लगाने होंगे। यह सब मि० मण्डलके मंत्री होते हुए हो रहा है। धन्य है अलपसंख्यकोंके अधिकारोंकी रक्षाका सिद्धांत।

पाकिस्तान और देशी राज्य

कायदे आजमने अपनी अवसरवादिताके सिद्धांतके अनुसार औद्योगिक निकटताके आधार पर भारत या पाकिस्तानमें देशी राज्योंके सम्मिलित होनेके सिद्धांतको स्वीकार किया था, लेकिन साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि "प्रत्येक देशी राजा या नवाब १५ अगस्त के बाद स्वतंत्र रह सकता है।" यह सब जिन्नाने अपनी भावी विस्तार-नीति को दृष्टिमें रखते हुए किया। पाकिस्तानी पांचवे दस्तेके लिये भोपाल, जूनागढ़ और हैदराबाद—जैसे राज्य चुने गये। भौगोलिक निकटता न होते हुए भी "राजा द्वारा निर्णय" के सिद्धांतके अनुसार जूनागढ़को पाकिस्तानमें सम्मिलित

किया गया और काश्मीरके भारतीय संघमें सम्मिलित होनेके विचार पर पाकिस्तान द्वारा कहा गया कि काश्मीरको जन-मतके आधार पर किसी भी "डोमीनियन" में सम्मिलित होना चाहिये। इससे काम न सरता हुआ देखकर पाकिस्तान सरकारने अन्य फैसिस्ट राज्योंकी नीतिके अनुसार आंतरिक शांति तथा राज्य निवासियोंके खतरेमें होनेकी आवाज उठायी और सशस्त्र सिपाहियोंको आक्रमणकारियोंके रूपमें भेजकर काश्मीरपर धावा बोल दिया। 'यथा-स्थिति समझौता" और अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता सब ही के टोकरेमें डाल दिये गये। यदि काश्मीर भारतीय संघमें सम्मिलित न होता तो इसकी स्वतन्त्रता दो चार घण्टों में ही पाकिस्तान द्वारा प्रोत्साहित आक्रमणकारियोंके हाथों गुलामीमें परिवर्तित हो जाती, यह बात काश्मीरमें गिरफ्तार किये हुए आक्रमणकारियोंके बयानोंसे स्पष्टतया सिद्ध होती है। उनके इरादे तो काश्मीरके बाद दिल्लीपर कब्जा करनेके थे। 'शेरे-काश्मीर' शेख अब्दुल्ला का कथन है कि "पाकिस्तानकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब है और इस ओर जनताका ध्यान न जाये इस गरजसे काश्मीरपर आक्रमण करवाकर मि० जिन्नाने जनताका ध्यान बंटवा दिया है।"

त्रिपुरामें भी काश्मीरका अनुकरण करनेके प्रयत्न जारी हैं। इसकी पूर्वी सीमा पर सशस्त्र पुलिस जत्थोंके एकत्रित होने की सूचना प्राप्त हुई है। आसाम और भारत सरकार इस ओर पूर्णरूपसे सजग हैं।

जो देशी राज्य पाकिस्तानमें सम्मिलित हुए हैं उनके लिये यह आवश्यक नहीं है कि वे उत्तरदायी शासन कायम करें। पाकिस्तानी शासनकीतरह वे भी मध्यकालीन एकतन्त्रीय फासिस्ट राज्य रह सकते हैं। लेकिन यह सब कबतक चलनेको है? जनतन्त्र युगमें जूनागढ़की जनताने अपना जौहर दिखला दिया। आज जूनागढ़ भारतीय संघमें सम्मिलित है, स्वतंत्रताके स्वप्न देखनेवाले निजाम का ध्यान सरदार पटेलने जूनागढ़की ओर आकर्षित किया है।

बाह्य नीति—

पाकिस्तानका विदेशों से कूटनीतिज्ञोंकी नियुक्ति द्वारा जैसा सम्पर्क होना चाहिये हुआ नहीं। लेकिन जहां कहीं भी सम्बन्ध स्थापित हुआ है वहांके राजदूतोंने भारतके विरुद्धही विष-वमन किया है। मुहम्मद जफरुल्ला और इस्पहानीके भाषण उदाहरण के लिये प्रस्तुत किये जा सकते हैं। कहनेके लिये तो कहा जाता है कि हम भारतके साथ शांतिसे रहना चाहते हैं, लेकिन सिद्धान्त और व्यवहारमें जमीन आसमान का फर्क नजर आता है। मि० जिन्ना वृहत इस्लामिक राज्यके समर्थक हैं अतः फिलस्तीनका विभाजन नहीं चाहते इस्लामके नाम पर मुस्लिम राज्योंसे सहायताकी अपील कर रहे हैं। भारतके साथ उनकी नीति दिखाऊ मैत्रीकी है। इधर राज्य तथा जनता मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्थाको भङ्ग करनेकी मांग कर रही है तो ये महाशय कराची से मुसलमानोंको भारत सरकारके विरुद्ध प्रोत्साहन दे रहे हैं। पाकिस्तान जानेवाले हवाई जहाज तथा रेलगाड़ीके डिब्बोंकी तलाशीमें पाकिस्तानकी भारतीय संघकी ओर दूषित मनोवृत्तिका पता चलता है। देशके नेता इस षडयन्त्रको देख कर सोच रहे हैं कि पाकिस्तानके साथ मैत्री कबतक और किस प्रकार निभाई जा सकती है।

पाकिस्तान और मुसलमान

वृहत इस्लामी राज्यके पोषकोंने भारतके मुसलमानोंकी एकताका खंडन किया। दो राष्ट्रके सिद्धान्तके कारण आज ४॥ करोड़ मुसलमान अपनेही घरबारमें विदेशी समझे जाने लगे हैं। इतना ही नहीं, अंग्रेज-मुस्लिम षडयंत्रके कारण जो शस्त्रादि निकले हैं उनसे तो इनको गिनती पांचवें दस्तेमें हो चुकी है। भारत से पाकिस्तान जानेवाले गरीब मुसलमानोंको वहां हिकारतकी दृष्टिसे देखा जाता है। कहा जाता है कि कुछ मेवोंसे तो वहां भंगियोंका काम लिया गया है। बड़े बड़े जागीरदार और नवाबोंको उच्च पद मिले हैं। जो न पा सके उन्होंने लीगसे—पद-त्याग करके संतोष किया, महमूदाबाद के महाराज कुमारने असंतुष्ट होकर ही तो इस्तीफा दिया। भारतके मुसलमानोंको अब विदित हुआ है कि दो राष्ट्र सिद्धांतने उनको कितनी हानि पहुंचायी है। सिंधी और पंजाबी मुसलमानोंमें पद और अधिकारके लिये झगड़े हो रहे हैं। प्रांतीय भावना बड़ी तेजीसे प्रगति कर रही है।

मध्यकालीन फासिस्ट राज्य

विभाजनके पूर्व सिंध और पंजाबके बड़े बड़े कारखाने हिन्दू और सिखोंके पास थे। आज उनके वहांसे चले आनेके कारण पाकिस्तानमें आर्थिक सङ्कट पैदा हो गया है। मुसलमानोंने नाजायज तरीकोंसे हिन्दू और सिखोंकी करोड़ोंकी सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया है। फ्रांसके लुई चौदहवें की तरह मि० जिन्नाही पाकिस्तान हैं। जो वे कहते हैं वही कानून है, वही सिद्धांत है। मि० जिन्ना राष्ट्रीयताके युगमें धर्मके आधार पर राज्य निर्माण कर रहे हैं। देखें यह फासिस्टवादी नया राज्य कैसे टिक सकता है। अभी तो वह मध्यकालीन बर्बरतासे परिपूर्ण दिखायी दे रहा है। आचार्य कृपलानीका कथन है कि पाकिस्तानकी संस्कृति इस्लामी है उसका ध्येय एक वृहत इस्लामी राज्य और उसके तरीके अत्याचार और आतंकवादी हैं।

मध्य पूर्वका राजनीतिक रंगमंच

—रतनलाल जोशी एम० ए०

द्वितीय महायुद्धमें जर्मनी और इटली की पराजयके बाद मध्यपूर्वमें ब्रिटेनके केवल दो ही प्रतिद्वंद्वी रह गये हैं—रूस और अमेरिका। युद्धकालमें रूस और अमेरिका ब्रिटेनके मित्र थे और तीनोंका समवेत प्रयत्न धुरी-राष्ट्रोंको मध्यपूर्वसे पराभूत करनेमें संलग्न था, किन्तु तीनोंको परस्पर अपने साथियों पर विश्वास नहीं था। यही कारण है कि मध्यपूर्वके रणक्षेत्रोंमें जर्मनी और इटलीकी पराजयके पश्चात भी ब्रिटेनने अरब राष्ट्रोंको अपने पक्षमें रखनेके प्रयत्नोंको शिथिल नहीं किया। इस दिशामें ब्रिटेनका मूल उद्देश्य सभी अरब राष्ट्रोंका एक संयुक्त संघ बनानेका था। युद्धकालमें अरबोंकी मनस्थितिमें बड़ा परिवर्तन आ गया था। कुछ अरब धुरी राष्ट्रोंकी राजनीतिक विचारधाराको अपनाने लगे थे, कुछ सोवियट प्रचारित कम्यूनिज्मकी ओर आकृष्ट हो रहे थे और कुछ अमरीकी पूंजीकी रिश्वतें खाकर व्यावसायिक निर्माण द्वारा सम्पत्तिशाली बननेका स्वप्न देख रहे थे। धुरी राष्ट्र और विशेष कर जर्मनी यहूदियोंका शत्रु था। फिलस्तीनमें बाहरके यहूदियोंने आकर अरबोंसे शत्रुता मोल ले ली थी और सारा अरबी जगत यहूदियोंका विरोधी बन गया था। अतः अरबोंका जर्मनीके प्रति सहिष्णु और पक्षपाती होना स्वाभाविक था। दूसरे जर्मनीने अपने देशकी सारी प्रसुप्त शक्तिको केंद्रित, जाग्रत और एकाग्र करके अपने रोओजमें अभिव्यक्त कर दिखाया था। अरबोंकी विचारधारा अभी तक सामंतवादके शौर्य और रोमांसमें रंगी हुई है, अतः जर्मनीकी शक्तिके सामने अपनी श्रद्धा अर्पित करना एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। जर्मनीकी हारसे अरबोंकी विचारधारा जहां एक ओर ब्रिटेनकी ओरसे उदासीन हो गयी, वहां रूस और अमेरिकाके प्रति उसमें अनुरक्ति और गहरी हो गयी। यही कारण है कि रूसी प्रचारकोंको वहां सहानुभूतिमय क्षेत्र मिल गया है, और अमरीकी पूंजीवादकी रिश्वतें वहांके शासकों और जमींदारोंको सम्मोहित कर रही हैं।

अरबी राष्ट्रोंकी ओर अंतर्राष्ट्रीय शक्तियोंके लक्ष्य पिछली दो सदियोंसे हैं और इस लिये नहीं है कि यहां तेल सम्पत्तिकी प्रचुरता है, इसके अलावा और भी सैनिक और व्यावसायिक कारणों है। अरब राष्ट्रोंकी भौगोलिक परिस्थिति स्पृहणीय है। यूरोप और एशियाके छोर इन राष्ट्रोंकी अवस्थिति परही मिलते है, अतः ये एशियामें प्रवेश करनेके लिये यूरोपके प्रवेश द्वार हैं। तीन महाद्वीपोंके यातायात पूर्वी अरब की भूमि परही अपना केंद्र बिंदु बनाते हैं। कच्चे मालके प्राचुर्य की दृष्टिसे इस भूमि पर अभीतक यूरोपकी व्यावसायिक जातियोंको पूरे व्यापारिक शोषणका अवसर नहीं मिला है। अतः यह एक निर्विवाद सत्य है कि भविष्यमें ये राष्ट्र कच्चे मालके उत्पादनकी दृष्टिसे और भी अधिक महत्व प्राप्त कर लेंगे। औद्योगिक रूपसे उत्पादित मालकी खपतके लिये भी आज इन देशोंसे अच्छा बाज़ार अन्यत्रदुर्लभ हैं। इनके अलावा इनका और विशेष कर पूर्वी अरब का एक ऐसा राजनीतिक महत्त्व है जिसको हस्तगत करनेसे उपर्युक्त सारे लाभोंके अतिरिक्त अनेक राजनीतिक लाभोंकी प्राप्ति भी सम्भव हो जाती है। पूर्वी अरब मुस्लिम जगतका धार्मिक और सांस्कृतिक स्रोत है। संसारके तमाम मुसलमान अपनी श्रद्धा यहां चढ़ाते हैं और यहांसे ही अपने सांस्कृतिक विकास के लिये आवश्यक उपकरण ले जाते हैं। अतः जिस राष्ट्रके हाथोंमें पूर्वी अरबका प्रभुत्व रहेगा,उसको तमाम मुस्लिम जगत को स्वेच्छानुसार संचालित करनेका अवसर मिल जायेगा और व्यावसायिक दृष्टिसे ही नहीं वरन सैनिक और राजनीतिक व्यूह रचनाके क्षेत्रमें भी उसे मनोवांछित सफलता मिलेगी ब्रिटेन। अमेरिका और रूसकी मध्यपूर्व सम्बंधी वैदेशिक नीतिका सवसे पहला लक्ष्य इस क्षेत्रको ही अपने प्रभुत्वमें रखना है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिकी शतरंज पर आज जो चालें चली जा रही हैं उनकी प्रगति पर मध्य पूर्वके नियंत्रणका सवाल स्पष्ट ह।

अल्पमतकी रक्षा

अङ्गरेजोंने अरबोंके साथ मैत्री-भाव बनाये रखनेके लिये बाहरी तौर पर काफी बड़ा मूल्य चुकाया है और जिसके लिये उन्हें श्वेत जातियोंके एक बड़े अंशकी निंदा भी अपने ऊपर ओढ़नी पड़ रही है। फिलस्तीनकी सारी समस्या जो आज इतना नग्नरूप ग्रहण कर चुकी है अङ्ग-

(शेष २८ वें पृष्ट पर)

सीधे सादे चित्र—सुभद्रा कुमारी चौहान, भारत प्रकाशन जवाहरगंज, जबलपुर पृ० १५३ मूल्य २॥=)

'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' की गल्प लेखिका, मध्य प्रान्तकी सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री और कवियित्रीके १४ स्केचेज इस संग्रहमें हैं। हिन्दीमें अब विस्तृत जीवनियोंके बदलेमें, छोटे-छोटे 'क्लोज-अप' और 'स्नैप्स' लिखनेकी प्रथा सी चल पड़ी है। महादेवी वर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त और रामवृक्ष बेनीपुरीने ऐसे सुन्दर रेखाचित्र लिखे हैं। हालहीमें विशाल भारतमें पं० बनारसीदास चतुर्वेदीका लेख 'हिन्दी साहित्य' में 'रेखाचित्र' छपा है, जिसमें वे अपनी पीढ़ीके लेखकोंके ही नाम गिना गये हैं। आगे बढ़ कर अन्य कई नवीन और उत्कृष्ट कोटिके रेखाचित्रकार भी तो हिन्दीमें आ रहे हैं।

रेखाचित्रकारके लिये दो गुणोंकी बहुत आवश्यकता होती है। एक तो व्यापक मानवीय सहानुभूति। उसके बिना रेखाचित्रोंमें वैविध्य नहीं आयेगा। पंत और महादेवीने जो रेखाचित्र लेखनकी प्रथा हिन्दीमें चलायी, उसमें घरके नौकर चाकर, राह चलते भिखारी, तांगेवाले पानवाले, इत्यादि उत्पीड़ित या दलित कोटिके व्यक्तियोंके प्रति लेखककी (जो कि दया धर्म करने इतना अमीर या उच्च मध्यवर्गीय होताही है) करुणा, सहवेदना आदिका चित्रण होता है। मेरे मतसे यह एक प्रकारका सूक्ष्म अहं-पोषण मात्र है। जहां दयाधर्म होता है, वहां एक प्रकार का अभिमान उसमें मिश्रित है, यानी कि हम कुछ-ऊपरवाले वर्गके हैं, और ये बेचारे, हरिजन, दरिद्र निचले-कुचले हुए हैं। अतः न दिया पैसा या भीख, एक स्केचही उनपर लिख दिया। गांधीवादी मानवतावादसे उत्पन्न ऐसे अनुग्रह पूर्ण समवेदनावाले स्केच बहुत लिखे जा चुके। अब आवश्यकता इस बातकी भी है कि केवल समवेदना या उससे उत्पन्न आत्मलांछनाही नहीं, निम्न यानी शोषित वर्गके मनुजोचित अधिकारोंका भी प्रबल समर्थन हो। पानवाला पीताम्बर गरीब न होता तो क्या कुछ बन जाता, इसका स्वप्न देखना बुरा नहीं, या अतीतके चल चित्रोंका विस्तृत रंगपट उत्तर रामचरितकी भांति निहारना कम सुखद नहीं—परन्तु यह सब बौद्धिक सहानुभूति आजके ठोस, यथार्थ, कलदार बजाकर वह खरा है या नहीं यह पग-पग पर देखनेवाले युगमें काफी नहीं। कुछ और चाहिये। सुभद्राकुमारी चौहानके स्केचोंमें वैसी मानवतावादी सहानुभूतिका स्वर तो है ही—जबलपुरसे आजमगढ़ डयोढ़े दर्जेके जनाने डिब्बेमें जाते हुए उन्हें 'बिआहा' वाल रामप्यारी मिल जाती है और वे सोचने लगती हैं—"क्या इसे सर्दी न लग रही होगी? मेरी बच्ची साथ होती तो उसका कोई कपड़ा इसे पहननेको दे देती। अब इसे दूं भी तो क्या दूं? मेरे शरीर परका ब्लाउज और शाल मुझे काटनेसी लगी। (पृ० १११) और फिर वे अपने बिछानेकी चादर उसे दे देती हैं। खुशीकी बात इतनी ही है कि सुभद्राजीके सहानुभूतिके केन्द्र सभी प्रकार और सभी वर्गोंके हैं, राष्ट्रीय वृत्तिका तांगेवाला, दंगेमें हिन्दू बच्चोंको बचानेवाला हींगवाला खान (जो कि पं० हजारीप्रसादजी द्विवेदीके अनुसार यास्क और पाणिनीका वंशज है) जेलकी सुभागी जैसी साथिनें, फौजकी गोलियोंका शिकार शहीद गुलाबसिंह, मांगरोरी जातिके मंगते वगैरह वगैरह।

दूसरा गुण जो रेखाचित्र लेखनमें आवश्यक है, वह है यथार्थवादी वर्णन-शैलीके साथ साथ संयम। थोड़ेमें बहुत कुछ कहना, दो चार रेखाओंमें ही पूरी लाइकनेस लाने जैसी कला है। सुभद्राजीके स्केचेज महादेवीजीके स्केचकी अपेक्षा छोटे हैं, उनमें पन्त महादेवी वाली दार्शनिक काव्यात्म बिखरन नहीं है। वे स्केच लिखते समय एक स्केच लेखककी भांति प्रामाणिकतासे सत्य दर्शन कराती चलती है, अपने कविको उभरने नहीं देती। इसी कारण रामवृक्ष बेनीपुरीजी जैसी नाट्यात्मक और काफी डैश और उद्गार चिन्होंसे भरे भावुकतापूर्ण गद्य काव्य जैसे लिखते चलते हैं, सुभद्राजी उस पुरानी पद्मसिंह शर्मा या उन्हींकेसे श्रीराम शर्माके शैली दोषकी शिकार नहीं होती। यह लेखन संयमका गुण विदेशी लेखकोंमें कमालका पाया जाता है। एमिल लुडविगके 'प्रतिमा और चरित्र' संग्रहमें या एशिस मैनिनके 'इंप्रेशन्स' में या आंद्रे मोर्वाके व्यक्ति-चित्रोंमें—चेखव आदि रूसियोंकी बात छोड़ दें—यह गुण पाया जाता है। शायद भारतीय लेखक कुछ अधिक वृथा-भावुक (सेंटिमेंटल) होते ही हैं। सुभद्राजीके स्केच जहां इस गुणको नहीं निवाहते वहां वे स्केच न रह कर छोटी कहानीकी कोटिमें जा पड़ते हैं, यथा गौरी, मङ्गला, कल्याण प्रोफेसर मित्रा आदि।

भाषामें ऋजुता और प्रवाह है। वैसे मेरा मत है कि स्त्रियां—परिहासमें कहें तो अधिक बातूनी होनेके कारण—अधिक अच्छी कहानी-लेखिकाएं या वार्ता-निवेदिकाएं हो सकती हैं। प्रमाण दूर नहीं है, मराठीमें कुसुमावती बाई देश पांडे, मुक्ताबाई लेले, बलताई खरे, मालतीबाई दांडेकर, तथा विभावरी शिरूरकर और श्यामा उपनामोंसे लिखनेवाली दो अज्ञात नाम लेखिकाओंने इस दिशामें बहुत सफल कार्य किया है। गुजरातीमें लीलावती मुन्शीके रेखाचित्र प्रसिद्ध हैं और बनमाला पारीखने 'बर' की सुन्दर कहानी-जैसी जीवनी लिखी है, और हिन्दीमें

शिवरानी देवी, महादेवी वर्मा, ऊषामित्रा, निर्मला मित्रा, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा, होमवती देवी, सुमित्राकुमारी सिनहा आदि कहानी-लेखिकाओंकी एक गौरव-शाली परम्परा बनती जा रही है। सुभद्राजीके ये 'सीधे सादे चित्र' यथानाम सादगी और सरलतासे ओतप्रोत हैं, यद्यपि कहीं कहीं सादगी इतनी ज्यादा हो गयी है कि चित्रके लिये आवश्यक रंग फीके पड़ गये हैं।

रूपा, हींगवाला, तांगेवाला, गुलाब-सिंह, बिआहा, सुभागी, दुराचारीमें राष्ट्रीय तथा जनतन्त्रात्मक वृत्तिके दर्शन होते हैं। इसी प्रामाणिक राष्ट्रीयताके कारण लेखिकाने जबलपुरके मेहतरोंकी हड़तालके समय वह सात्विक क्रोधसे भरा न्याय मांगनेका पत्र लिखा था। उत्तरो-त्तर सुभद्राजी जनजीवनसे अधिकाधिक घुल मिलकर और मध्यवर्गका केंचुल छोड़ कर लिखेंगी ऐसी अपेक्षा है।

मध्यपूर्वका रङ्गमंच

(२५ वें पृष्टका शेषांश)

रेजोंकी ही संशयात्मक मनोवृत्तिकी देन है। एक ओर अङ्गरेज अरबोंका पक्ष लेते हैं एवं दूसरी ओर यहूदियोंके संरक्षक अमेरिकाके संकेतों पर नाचते हैं। अमे-रिकाने अपने इस संकल्पकी घोषणा कर दी है कि वह दस लाख यहूदियोंको बाहर से लाकर फिलस्तीनमें बसायेगा। ब्रिटेन ने अभी तक अपनी नीति स्पष्ट नहीं की है। स्पष्टीकरणमें वह अपना कल्याण भी नहीं समझता है, क्योंकि जो उद्देश्य उसकी निगाहमें है उसके अनुसार वह आगे कदम बढ़ा रहा है। ब्रिटेन अरबों के प्रति जो पक्षपात दिखला रहा है उसका अभिप्राय यही है कि अरबी राष्ट्र उसके हितोंको सुरक्षित रखें और ब्रिटेन के अलावा किसी दूसरी सत्ताको वहां अपनी जड़ें नहीं जमाने दें। यहूदियोंकी भर्त्सनाका पात्र बनना उसे इसीलिये मान्य हो रहा है। किंतु हृदयसे ब्रिटेन यह नहीं चाहता कि अरबोंकी भूमि पर यहूदियोंका स्वतंत्र राज्य स्थापित नहीं हो। राजनीतिमें वर्तमान सम्बंधों पर अधिक आशायें नहीं बांधी जाती हैं— भविष्यके ऊपर ज्यादा निर्भर रहना पड़ता है। अङ्गरेजोंको मध्यपूर्वमें अपने भविष्य की विशेष चिन्ता है। यदि भविष्यमें अरब लोग अङ्गरेजोंके विरोधी बन जायें तो मध्यपूर्वमें ब्रिटिश हितोंको बड़ा आघात पहुंचे और उनकी सुरक्षाकी आशा ही न रहे। यहूदियोंकी सहायताकी यहां ब्रिटेनको अपेक्षा हैं। अल्पमतके हितों और अधिकारोंकी रक्षा करनेके बहाने को सम्भव बनानेके लिये ब्रिटेन आखिरमें यहूदियोंको वहां बसायेगा। अमेरिकाने यहूदियोंको समर्थन दिया है और अरबों के विरोधके बावजूद भी उन्हें फिलस्तीन में बसानेका संकल्प किया है उसके भीतर यही नीति काम कर रही है। अमेरिका को रूसके अरब-प्रवेशका अत्यन्त भय है और किसी भी कीमत पर वह आज अरबोंके राष्ट्र पर पड़ी रूसी छायाको पराभूत करना चाहता है। अमेरिका का डर अकारण नहीं है। रूसके प्रचारकों में ऐसे ही मुसलमानोंका प्राधान्य रहता है। अतः यह निश्चित है कि गोरोंकी अपेक्षा इन प्रचारकोंकी बातोंका अरबों के हृदय पर अधिक असर पड़ेगा। अमे-रिकाने अरबोंकी इसी मानसिक प्रवृत्ति को नियंत्रित करनेकी योजना बनायी है। फिलस्तीनकी समस्याकी सारी रूपरेखा इस योजनाका ही भूत रूप है।

शक्ति-संतुलन

ब्रिटेनका साम्राज्य लड़खड़ा रहा है। आर्थिक ढांचा ऐसा जीर्ण-शीर्ण हो चुका है कि इस समय अमरीकी कर्ज पर ही राष्ट्रकी आंखें लगी रहती हैं। मध्यपूर्व ब्रिटेनकी राजनीतिका हृदय है। अतः इस क्षेत्रमें अपने वर्चस्वको कायम रखने के लिये वह हर तरहकी कोशिश कर रहा है। सैदी अरेबियाका शासक इब्न सऊद यद्यपि ब्रिटेनका विरोधी नहीं है, तो भी शक्ति संतुलनको अपने अनुकूल बनाये रखनेके लिये उसने ईराकमें फैजल के उत्तराधिकारीको समर्थन दिया है और ट्रांस जार्डनमें फैजलके बड़े भाई अमीर अब्दुल्लाको एकतंत्र शासक बनाकर बैठा दिया है। फैजल और अमीर अब्दुल्ला दोनों हाशिमी वंशसे हैं।

रूस और अमेरिका

सोवियट रूस और अमेरिकाकी कार्य प्रणालियां ब्रिटेनसे भिन्न हैं। युद्ध से पूर्व अमेरिकाके हृदयमें साम्राज्य स्थापनकी प्रेरणा जाग्रत नहीं हुई थी अतः उसका स्वार्थ तेलमें ही केंद्रित था। किंतु युद्धके बाद उसने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी परम्परागत तटस्थताको तिलांजलि दे दी और पूरे ओजके साथ राजनीतिक और आर्थिक शोषणार्थ प्रतियोगिता करने पर कटिबद्ध हो गया। मध्य पूर्वकी राजनीतिमें जो आज त्रिकोणात्मक संघर्ष स्पष्ट नजर आ रहा है उसमें अमेरिकाके साम्राज्य स्थापनकी ही महत्वाकांक्षा सबसे बड़ी उलझनें डाल रही हैं। राजाओं और जमींदारोंको रिश्वतें देकर अरबके कच्चे मालको अपने उपयोगमें लाना अमरीकी नीतिका प्रधान अवलम्बन रहा है। भविष्यमें चाहे वह ब्रिटेनकी भांति कूटनीतिको कार्यान्वित करे किंतु पैर जमानेके लिये आज उसने उसी मार्गको अपनाया है।

सोवियट रूसका मार्ग दूसरा है। जनताकी मनोवैज्ञानिक कमजोरियोंको आश्वासन देकर वर्तमान परिस्थितिके प्रति उसे असहिष्णु और असंतुष्ट बनाना उसकी अपनी कार्य-पद्धति है। अरबों में हद दर्जेकी गरीबी है। उनका भविष्य अंधकारग्रस्त है। आर्थिक साधनोंको विकसित करनेके लिये उसके पास ज्ञान और वैज्ञानिक पराक्रमका अभाव है। ऐसी परिस्थितिमें असंतोषके अंकुरोंको पनपनेके लिये उर्वरा भूमि मिल जाती है। सोवियट रूसका लक्ष्य इस निर्बल अंग पर ही है। उसके प्रयत्न निष्फल नहीं हुए हैं, किंतु आज घटनाओंकी गति नाजुक बिंदु पर पहुंच गयी है। तीनोंके स्वार्थ प्रत्यक्षमें टकरानेके लिये आगे बढ़ रहे हैं।

गगन, लाला और छन्नू !—नन्हा-सा भतीजा और उसके नन्ने-मुन्ने-से दो चाचा।

कभी हंसी, कभी खेल और कभी खेल-खेल में, निखेल!—बालगोपालकी बाल्य-सुलभ लीलाओंसे परिवार यशोदा का आंगन बना रहता। परिवार में और-और बालक भी। परन्तु, उनकी अवस्था अभी चाचा-भतीजावाली गुटमें आने योग्य नहीं। हां, बेबी अब तनिक-मनिक ताक-झांक करने लग गयी है।

ढेर रात-रात तक उधम मचानेपर गगनकी माता जब गगनको हौवाके नाम डरवाने लगती, तो गगन तुरत तनकर खड़ा हो जाता—"चल, दिखातो सही, कहां है हौवा ...?... खोपड़ी तोड़ दूंगा, खोपड़ी !"

मतलब यह कि, गगनको हौवाकाडर डरा नहीं सकता। मगर, मास्टर जी जैसे हौवाके लकड़दादे हों, कि मास्टरजीके नाम से ही, गगन सारी चिलबिली भूल जाता! हां, लाला और छन्नू जब पाठशालेसे वापस आते और रसोईके चौकठ पर बैठकर पाठशालेकी कहानियां कहने लगते, गगन ज्यों-ज्यों व्यायाम, आंख मिचौनी, गेंद चोर—इत्यादि खेल-तमाशों की चर्चा सुनता, हिम्मत बांधने लग जाता कि अब तो वह कलसे पाठशाले जरूर जाने लग जायेगा। आधी आधी रात तक वह चारपाईपर, अपने पिताजीके बाजूमें पड़ा-पड़ा, पिताको, समझाया करता कि उसके चाचाके स्कूलमें कैसे-कैसे खेल तमाशे हुआ करते हैं। कहता—„बाबूजी ! छन्नू चाचाका तो लड़कोंमें बड़ा नाम हो गया है कि, छनुआ, छनुआ तो आंख मिचौनीमें चोर बनने और चोर पकड़ने दोनोंमें ही उस्ताद है, उस्ताद!—और बाबूजी, चालाक भी बहुत है, छन्नू चाचा! परीक्षामें मौलवी-'सर' का चुना हुआ सवाल आया—"पीपलके पत्ते की तसवीर बनाओ!"—अबतो, बाबूजी! तमाम लड़के सोचमें पड़ गये कि सवाल तो भारी है, अब किया जाये तो क्या, कुछ किया जाये...? और छन्नू चाचा पानी पीनेके बहाने, बाहर गये और फाटकके नजदीक जो पीपलका दरख्त है, वहांसे एक पत्ता अपनी जेबमें छुपाये वापस आ गये!—चुपकेसे चाचाने पत्तेको कागज पर रखा, किनारे-किनारे पेंसिल फिराई और बस! छन्नू चाचा 'ड्राइङ्ग' में 'फस्ट' निकल गये।"

कहानी सुनते-सुनते जब गगनके पिता यह कहते कि हां, गगन! तुम्हें राजा बाबू बनकर पढ़ने जरूर जाना चाहिये... चलना, कल मैं तुम्हें अपने साथ घूमने ले चलूंगा। घूमते-घामते हम एक ऐसी दूकानपर चलेंगे जहां आम, अमरूद अनानासकी तसवीरों और पूसीकी कहानियोंवाली अच्छी-अच्छी पुस्तकें होंगी, नहीं फटनेवाला स्लेट...और लाल-पीली पेंसिल ...

कि बस, इतने में ही गगनको जम्हाई आने लग जाती। किताब, स्लेटका नाम हुआ और गगनको नींद आई!

भोर होते ही उसकी पाठशाले जाने की रटी-सटी हिम्मत भी सुग्गा बनकर उड़ जाती! फिर तो, गगन चुपचाप लम्बी तानकर पड़ा रहता। चाचा लोग उसे उठाते तो कभी तो वह हिलता तक भी नहीं और कभी रोबमें आकर कहता—'छेड़ता नहीं चाचा, ढेर रात तक जागता रहा हूं!"

कभी जब वह सवेरे उठ बैठा होता तब तो जबतक दोनों चाचा पाठशालेकी आधी राह तय न कर चुके होते, गगनको कोई देखता भी नहीं, और गगन तबतक तख्तपोशके नीचे! हां जिस दिन रविवार होता, बड़े सवेरे उठके, अपने चाचाको चिढ़ाने पहुंच जाता—'अरे, चाचा साहब, उठिये भी !—पाठशालेकी देर हो रही है।"

* *

गगन कौपीका बहुत शौकीन है। उसके दोनों चाचा जब स्कूल का पाठ बनाने लगते तो वह भी अपनी कौपीको बगलमें दाब कर अभिमान से खड़ा हो जाता कि भला वह भी पढ़नेमें कोई कम है? कहो तो तुरत मामा, बाबा और अपना नाम लिख-लिख कर समूचा कौपी रङ्ग दे! यह काम कोई मामूली बात है! और अब? अब तो वह, कई दिनोंसे, जयहिन्द लिखना सीख रहा है!—चक्र, टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है, तो क्या हुआ, झंडेका चित्र तो वह बनाही लिया करता है!

अरे, इस छः पैसेवाली कौपीकी बिसात ही कितनी, पांच दफे मामा, लिखा कि एक पन्ना खतम!

मगर, भारी आश्चर्यकी बात तो यह कि गगनकी कौपी गायब हो जाय करती? उसके पिता उसे कौपी खरीद देते। दो-तीन पन्ने उसमें वह लिखता और रात होते ही बांकी बचे पन्ने, कभी आधे, कभी आधेसे अधिक और कभी सबके सब गायब हो जाते? भोरको गगन उनकी खोज करता तो उसके पिता दूसरी यी कौपी मंगा दिया करते।

"नहीं, नहीं ? गगन इसका उपाय करेगा ?-इस तरह अगर वही रोज-रोज कापियां मंगाता रहा करेगा तब और लड़के काहेमें लिखेंगे... ?"—गगनने ऐसा अपने मनमें सोचा। उस दिन उसके दोनों चाचा जब स्कूलसे वापस आए तब गगन उनका सुपात्र भतीजा बन गया। और, प्यार पाते, पाते मौका पाकर, चाचासे उसने रोजकौपी चोरी चलीं जानेकी बात बताई। चाचा चौकन्ने हुए और चम्पा फूलके गाछके नीचे चाचा-भतीजाकी गुप्त-मंत्रणा-सभा बैठ गई ?

पहले तो गगनको यह शक हुआ था कि हो-न-हो, कौपीके चोर, छनुआ चाचा ही हैं ?...

तब, चाचा चोर तो भतीजेने, पाजी बन कर, चुप-चुप छनुआ चाचाकी मेजकी तलाशी ली। मगर वहां जब कुछ नहीं मिला तब तो गगनके आश्चर्यके क्या कहने ?

गगन कहता—"मेरे खयालमें तो चाचा मेरी कौपीको पूसी लेजाया करती है ?"

"पूसी ?"—छन्नू कहता—"पूसी कौपी क्यों ले जायगी, भला ?"

"जानकर नहीं चाचा,धोकेमें ?"—गगन कहता—"कौपी भी तो दूधकी तरह सुफेद होती है, न ?"

"सचमुच चोर है, भारी !—लाला बहुत सोच विचार कर कहता।

"चोर नहीं, भैया!"—छन्नू बात काटता—"यह तो कोई काला देव मालूम पड़ता है !"

"चलो, हम भैयासे कहेंगे कि, भैया इतने गाफिल बने रहते हो···!"—लाला उठ खड़ा होना चाहता। मगर छन्नू, लाला को रोकता और वीरतापूर्वक कहता—"इतनी छोटी बातके लिये बड़े भैयाको तकलीफ देनेकी क्या जरूरत ?—हमारी बहादुरी क्या कम है ?—काला देव अकेला ठहरा और हम तीन-तीन !!"

"और"—गगन अपनी बड़ी बड़ी आंखें अचरजमें डालकर पूछता—"भूत होगा तब ?"

"भूत हो या यमदूत !"—छन्नू उसी दृढ़तासे कहता—"हम उसपर टूट पड़ेंगे, जरा पता तो लगे !"

तीनोंने एका करके चोरको जरूर पकड़ लेनेका निश्चय किया मगर गगन की कौपी फिर-फिर चोरी चली जाती! रोज एक-पर-एक मंत्रणा सभाएं बैठतीं, और चालाक चोर अपना काम करके चल देता !

अन्ततोगत्वा कैप्टेन छन्नूकी राय हुई कि यों काम न चलेगा। हम तीनों अब एक साथ ही सोया करें और पड़ा-पड़ा एक-एक आदमी बारी-बारीसे पहरा दें।

छन्नूका प्रस्ताव सधन्यवाद पास हुआ। उस दिन शामको तीनों अभिभावकोंके सामने चचा-भतीजाके मेल-मिलाप की मीठी मीठी बातें सारा दिन करते रहे। इतवारकी छुट्टी थी, मंत्रण सभाएं निरन्तर होती रहीं। और उन तीनोंने एक साथ सोनेका प्रस्ताव अभिभावकसे स्वीकार कराकर चारपाई, गगनके पिता जिस कमरेमें सोते थे, उसके ओसारे पर डलवायी।

जागनेका पहला काम गगनको मिला। लाला और छन्नूको अब अपनी बारी तक, सो जाना चाहिये था। मगर, गगन 'ड्यूटीका पक्का है या नहीं—यह देखनेके लिये दोनों सो जानेका नाटक किये पड़े रहे। परिणाम यह हुआ कि, गुम-सुम पड़े रहनेके कारण, तीनोंको नींद आ गयी। बस, वही हुआ जो होना चाहिये था,—गगनकी कौपी गायब !

दूसरे दिन, भर दिन, तीनों एक दूसरेको कोसते रहे। गगनने रोजकी नाईं बाबूजीसे कहा कि बाबूजी कापी··· और गगनके पिताजीने नई कापी मंगवा दी।

दूसरी रातको जागनेका काम पहले छन्नूने लिया। गगन और लाला सो गये। छन्नू दो घण्टे तक बड़े भैयाके कमरेकी ओर ताकता रहा, मगर काला देवके दर्शन नहीं हुए। हां, कभी कभी करवटें ले रहे थे और जैसी कि उनकी आदत है, कुछ-कुछ गुनगुना या भुनभुना उठा करते थे।

पहरेदारीमें लालाकी बारी आई। छन्नूने बार-बार जम्हाई लेते हुए, लाला को उठाया। मगर लाला अभी सावधान भी न हो पाया था कि छन्नू सो गया। लाला झपकी खाने लगा। झपकी खाते-खाते अचानक उसकी दृष्टि बड़े भैयाके कमरेकी ओर गयी तो वह चौंका और धीरे धीरे छन्नूको उठाने लगा। छन्नू उठा। लालाने धीरेसे छन्नूके कानमें कहा—"तुम्हारी बात सच निकली छन्नू ! बिलकुल काला देव है, काला देव !—एकदम खलासा, असली !!"

"मगर"—उत्तरमें छन्नू और धीरेसे बोला—"पीठ इधर होनेके कारण हम उसके चेहरेको जो नहीं देख सकते !"

"अरे जरा इसकी हिम्मत तो देखो !"—लाला प्रत्युत्तरमें बोला—"मोमबत्ती जला ली है और लिखने बैठ गया है, एक कोने में !!"

"इसी तरह जब कौपी भर जायेगी तब उसे लेकर चल देगा !"—लाला बोला।

"बड़े लिखक्कड़ बने हैं !" छन्नूने उसे घूरते हुए लालासे कहा—"हेंकड़ी भूल जायेंगे बच्चू, आज !—तीन बहादुरोंके फंदेमें पड़े हैं !!"

तब तक बहादुर गगन भी उठ बैठा। और तीनोंमें फुस फुस कर राय होने लगी कि काला देवको गिरफ्तार किया जाये ?

छन्नू बोला—"मेरा तो विचार होता है कि पीछेसे दनादन, दे ईंट···!"

गगन चुप था।

"नहीं !"—लालाने छन्नूकी बात काटी—"ज्यादा बहादुरी तो शिकार और चोरको जिन्दा पकड़नेमें है !"

"तब !—तब हम तुम कम्बल लेकर धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ें और नजदीक जाकर इस तरह फेंकें कि बच्चू कबूतरकी नाईं लटपटा जायें !"—छन्नू ने तुरंत सोचकर कहा।

(शेष ३५वें पृष्ठपर)

स्वतंत्र भारतका पहला बजट

गत सप्ताह २६ नवम्बरको भारतीय पार्लमेण्टमें स्वतंत्र भारतका पहला बजट उपस्थित करते हुए अर्थ सदस्य श्री षण्मुखम चेटीने कहा कि ३१ मार्च १९४८ को समाप्त होनेवाले वर्षमें (अर्थात १५ अगस्त १९४७ से ३१ मार्च १९४८ तक साढ़े सात महीनोंमें) १७१ करोड़ १५ लाख की आय और १९७ करोड़ ३९ लाख व्ययका अनुमान किया जाता है जिसका मतलब २६ करोड़ २४ लाखका घाटा होता है।

अर्थ सदस्यने बताया कि घाटे की रकम और भी लम्बी हो सकती है, क्योंकि शरणार्थियोंको बसाने और उनकी सहायतामें कितना खर्च होगा, अभी बहुत अनिश्चित है। इसके सिवा पश्चिम बङ्गाल और पूर्वी पंजाब दो नये प्रांतोंको भी कुछ सहायता देनेकी आवश्यकता हो सकती हैं किन्तु ठीक ठीक आंक प्राप्त न होनेसे बजटसे अभी इस मदको अलग ही रखा गया है।

रुई और सूतपर ड्यूटी बढ़ी

अभीतक सूता कपड़े और सूतपर एक मुस्त ३ प्रतिशत निर्यात कर लगता है। सरकारने अब इसकी जगह सूती कपड़े पर चार आना फी वर्ग गज और छै आना फी पौण्ड सूतेपर निर्यात कर (एक्सपोर्ट ड्यूटी) लगानेका निश्चय किया है। इस करसे पूरे वर्षमें आठ करोड़ रुपये मिलेंगे लेकिन चालू सालमें अतिरिक्त लाभ १६५ लाख रुपये ही होगा। इस तरह २४ करोड़ ५९ लाखका घाटा रह जायेगा।

रक्षा पर व्यय

हमारी रक्षाकी मद पर, अर्थ सचिवने बताया, बजटकालीन समयमें, इस समय जहां तक अच्छी तरह अंका जा सका है उसके अनुसार, ९२ करोड़ ७४ लाख खर्च होगा। देशकी आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए श्री षण्मुखम चेटीने कहा कि सन्तोष करनेकी गुंजाइश तो नहीं है लेकिन उसी तरह कोई निराश होनेकी भी बात नहीं है। हमें यह कहनेमें जरा भी संकोच या पशोपेश नहीं है कि हमारी आर्थिक स्थिति ठोस और मजबूत है। हम अपने साधनोंके भीतर हमारा खर्च वही और हम दीवालिया होने जा रहे हों, ऐसी बात नहीं है।

रक्षा, शरणार्थी खाद्य

इस समय रक्षा, शरणार्थी और खाद्यान्नके लिये दी जाने वाली सहायता पर क्रमशः ९२ करोड़ ७४ लाख, २२ करोड़ और २२ करोड़ ५२ लाख खर्च है। एक बार साधारण पूर्व स्थिति लौटते ही रक्षा विभागका हमारा खर्च शान्तिकालके अनुपातमें घट कर पहुंच जायेगा, खाद्य पदार्थोंके लिये विदेश पर अवलम्बन बट जायेगा और उस समय हमारे बजटका सन्तुलन ठीक हो जायेगा। आगामी वर्षहीं हम पूर्व स्थिति ला सकेंगे, यह तो आवश्यकतासे अधिक आशावादिता होगी, लेकिन मुझे विश्वास है कि दृढ़ संकल्पके साथ यदि सबका पूरा पूरा सहयोग मिलेगा तो १९४९-५० में ऐसा जरूर होगा।

> भारतके राजनीतिक विभाजनसे उन बुनियादी चीजोंमें कोई रद्दोबदल नहीं हुई है जो दोनो डोमिनियनोंमें एक सी है। भारत और पाकिस्तानका इतिहास एवं परम्परा एक ही है। दोनोंके आर्थिक सम्बन्ध एक है, जो अगर थोड़े दिनोंके लिये टूट भी जाय लेकिन फिर एक होंगे
>
> —पण्डित जवाहरलाल नेहरू

टैक्स चोरोंसे

श्री षण्मुखमने कहा कि जनता अपनी बचत सरकारको कर्ज देकर देशवासियोंके जीवनका स्तर ऊपर उठानेमें मदद करे। दूसरी बात यह है कि मेरा विश्वास है कि भारत सरकारको टैक्सकी रकम जितनी वैध रूपसे मिलनी चाहिये नहीं मिल रही। लोगोंको इस मामलेमें अपना उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य समझना चाहिये। प्रत्येक नागरिकको यह महसूस करना चाहिये कि उसे अपनी सरकारको उससे प्राप्य तमाम टैक्स दिये जाने चाहिये। टैक्स चोरोंको पकड़वानेमें भी जनता सरकार को सहयोग दे। सरकारको प्राप्य तमाम टैक्स यदि उसे मिलने लग जांय तो हमारी आर्थिक स्थिति निश्चित रूपसे बहुत अच्छी हो जायेगी और तब नये टैक्स लगानेकी आवश्यकता आपसे आप कम हो जायेगी।

परिवर्तन

ले० श्रीकेदारनाथ झा 'चन्द्र'

युग परिवर्तनसे निर्धन क्या ?
तेरे जकड़े जीवनके—
पड़ जायेंगे ढीले बन्धन क्या ?
जग बदलेगा, सब बदलेंगे
मानव देव बने, छनलेंगे।
निर्माता छलझा फिर देंगे—
तेरी स्थितिकी उलझन क्या ?
जीवन-यापनकी चिन्ताको
आश्रय-हीन विविध विपदाको,
कौन छनेगा ? छन पायेंगे—
तेरे अन्तरका क्रन्दन क्या ?
आशाओंका घुट-घुट मरना,
भग्न-हृदय, आंसूका झरना,
दे सकते हैं इस जीवनसे—
प्राणोंमें गति, स्पन्दन क्या ?
कितने ही जग-युग परिवर्तन
देख चुके, छनते हैं निशि-दिन
अरे ! कभी भी निर्धन-जनका-
कर पाया जग अभिनन्दन क्या ?
युग परिवर्तनसे निर्धन क्या ?
तेरे जकड़े जीवनके—
पड़ जायेंगे ढीले बन्धन क्या ?

लुटेरोंके साथ कैसा समझौता—नेहरू

काश्मीर विद्रोह और पाकिस्तान

भारतीय पार्लमेण्टमें गत सप्ताह एक प्रश्नके उत्तरमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा कि काश्मीरके मामले में भारत सरकारका प्रत्येक कार्य उचित और न्यायानुमोदित आलोचनासे ऊपर है और मैं उसके औचित्यको प्रमाणित कर सकता हूं। हमारे पास इस बातके पर्याप्त प्रमाण हैं कि पाकिस्तानके उच्चाधिकारियों द्वारा ही समूचा काश्मीर आक्रमण, जम्मू प्रान्त और काश्मीर खास दोनों पर, संगठित और संचालित किया गया था। कबीलों और फौजसे निकले हुए लोगोंको एकत्र करनेमें उनकी मदद थी, उनके लिये युद्धास्त्रों, लारियों, पेट्रोल और अफसरोंकी व्यवस्था भी उन्हींने की। अब भी वे कर रहे हैं। और यह तो उनके उच्च पदस्थ अधिकारियोंने स्वयं खुल्लमखुल्ला कहा है। हर सूरतसे नतीजा यही निकलता है कि काश्मीर पर चढ़ाईकी योजना पाकिस्तानके अधिकारियोंने काफी सोच समझ कर बड़े ढङ्गके साथ तैयार की थी और ऐसा करनेका स्पष्ट उद्देश्य था बल प्रदर्शन द्वारा राज्य पर अधिकार कर लेनेके बाद उसे पाकिस्तानमें मिला लेनेका। यह शत्रुताका कार्य केवल काश्मीरके खिलाफ ही नहीं भारतीय संघके विरुद्ध भी किया गया।

पाकिस्तान सरकारने यह प्रस्ताव हमारे सामने रखा है कि हमारी सेना और लुटेरे साथ साथ काश्मीरसे हट जायें। यह अजीब प्रस्ताव है और इसका तो यही मतलब होता है कि लुटेरे वहां पाकिस्तान सरकारके इशारे पर ही गये हैं। हम लुटेरोंसे जिन्होंने बहुसंख्यक नरनारियोंकी हत्या की और काश्मीरको बरबाद करनेकी कोशिश की, कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहते। उनकी हैसियत एक राज्यकी नहीं है, भलेही किसी राज्यका हाथ उनकी पीठ पर हो।

हैदराबादके साथ समझौता

हैदराबादके प्रतिनिधि मण्डलने प्रायः २॥ घण्टेतक भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड माउण्टबेटेनके साथ वार्तालाप करनेके बाद पूर्वस्थिति समझौता स्वीकार करनेकी घोषणा की। कहा जाता है कि छतारीके नवाबके साथ जो समझौता तय हुआ था मौलिक प्रश्नोंपर उससे इसमें विशेष कोई अन्तर नहीं है। इस समझौतेकी अवधि एक वर्ष की है।

पण्डित नेहरू

हैदराबादमें अन्तरिम सरकार

कहा जाता है कि निजामकी सरकारने हैदराबाद राज्य कांग्रेसको निम्नलिखित शर्तें भेजी हैं :—(१) उत्तरदायी सरकारका सिद्धांत स्वीकार है, बशर्ते कि 'हैदराबाद हैदराबादियोंके लिये' सिद्धांतको स्वीकार किया जाये। (२) सरकार और व्यवस्थापिका सभामें हिंदुओं और मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व समान अनुपातमें होगा और यही सिद्धांत भावी विधानमें भी लागू होगा। (३) राज्यका विधान एक कमेटी द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा जिसमें अन्तरिम सरकारके संगठन और स्वरूपपर प्रकाश डाला जायेगा। (४) अन्तरिम सरकारका निर्माण इस भांति होगा चार मुसलमान जो सबके सब इत्तेहादुल मुसलमीनके प्रतिनिधि होंगे। चार हिन्दू होंगे जिनमें तीनको हैदराबाद राज्य कांग्रेस नामजद करेगी और एक वर्तमान व्यवस्थापिकासे नामजद अछूत सदस्य होगा। चार सदस्य निजाम द्वारा मनोनीत किये जायेंगे जिनमें एक हिन्दू होगा। यदि प्रथम प्रधानमन्त्री मुसलमान है तो उप-प्रधानमंत्री हिंदू होगा और यदि हिंदू प्रधानमंत्री है तो उप-प्रधान मुसलमान होगा। निजाम भारतीय डोमिनियन सरकारके साथ पूर्व स्थिति समझौता कुछ संशोधनोंके साथ करेंगे जिसकी अवधि एक वर्षकी होगी। हैदराबाद राज्य कांग्रेसको शासन और व्यवस्थामें समान अनुपातके सिद्धांतको बिना किसी प्रतिनिधित्वके स्वीकार करना होगा और यह वचन देना होगा कि एक वर्षतक हैदराबाद को भारतीय डोमिनियनमें शामिल करनेका प्रश्न न उठाया जायेगा।

प्रश्नोत्तर

भारतीय पार्लमेण्टमें कई दिलचस्प प्रश्न पूछे गये जिनके भिन्न भिन्न विभागोंके मंत्रियोंने उत्तर दिये। उन प्रश्नोंमेंसे कुछ यहां उत्तरके सहित दिये जारहे हैं। श्री नागाप्पाने भारतीय सेनाओंको आधुनिक रूपमें सङ्गठित करनेके सम्बंधमें रक्षा मंत्रीसे प्रश्न किया। उसका उत्तर देते हुए रक्षा मंत्री सरदार बलदेवसिंहने कहाकि सेनाओंको आधुनिक रूपमें सङ्गठित करनेका काम तेजीमें चल रहा है। और भारतीय सेनाएं गत महायुद्धमें बहुत कुछ आधुनिक रूपसे सङ्गठित होचुकी है। मोटे तौर पर कहा जाय तो विभाजनके फलस्वरूप एक तिहाई सेनाएं पाकिस्तान गयी है। आजाद हिन्द फौजके सैनिकोंको बहाल करनेके विषयमें रक्षा मंत्रीने बतायाकि सरकारने इस विषयमें कोई निश्चय नहीं किया है। लेकिन शीघ्र ही निर्णय किया जायगा।

देश रक्षाकी जिम्मेदारीको सरकार अच्छी तरह समझती है। इसके लिये उपयुक्त व्यवस्था करनेका प्रश्न सरकारके विचाराधीन है। रक्षा योजनाको बताना जनताके हितकी चीज नहीं है। भारतीय सेनामें इस वक्त १७ मेजर जेनरल और ५८ ब्रिगेडीयर है जिनमें ६ मेजर जेनरल और १७ब्रिगेडीयर भारतीय ह। भारतीय सेनामें कुल ब्रिटिश अफसर १२०४ है। ६० नवम्बरको सुप्रीम कमाण्डरका पद उठा दिया जायगा। उसके बाद भारतीय सेनाओ का नियंत्रण भारत डोमिनियन सरकारके हाथमें हो जायगा।

पाकिस्तानके विरुद्ध शिकायत

भारतीय संघके कुछ निवासी लाहौर स्थित पंजाब नेशनल बैंकसे अपनी अमानते उठाने गये थे लेकिन पाकिस्तानके अधिकारियोंने अमानते न उठानेदी और जबर्दस्ती वहीं जमा करादीं। पाकिस्तानके अधिकारियोंके इस अमानवीय व्यवहारपर विचार करनेके लिये भारतीय पार्लमेण्टमें श्री हरगोविन्द पंत और श्री शिब्बन लाल सक्सेनाने अलग—अलग दो 'कामरोकों' प्रस्ताव उपस्थित किये। प्रस्तावोंकी उपयोगिताके सम्बन्धमें वहस होते वक्त उप प्रधान मंत्री सरदार पटेलने कहा कि जनताके हितोंकी रक्षाके लिये सरकार यथा संभव उपायोंसे काम लेगी। ऐसी दुर्घटनाओंकी अखवारोंमें रिपोर्ट पढ़ कर सरकार सहसा कोई कार्रवाई नहीं कर सकती है। पूरी जानकारी प्राप्त करनेके उपरान्त सरकार कोई कदम उठायेगी। इस सम्बन्धमें पाकिस्तान सरकारको तार दिया गया है। अन्तमें अध्यक्षने उक्त प्रस्तावोंको उपस्थित करनेकी अनुमति नहीं दी। उन्होंने कहा कि—ऐसा सूचना नहीं प्राप्य है जिसपर घटनाकी सत्यता निर्भर हो।

पार्लमेण्टमें पेश होनेवाले बिल

भारतीय पार्लमेण्टके वर्तमान अधिवेशनमें कई महत्व पूर्ण बिल और समस्याएं उपस्थित होंगी। अभी तक तीन बिल बहुत ही महत्व पूर्ण उपस्थित हो चुके हैं।

खाद्य सचिव डाक्टर राजेन्द्र प्रसादने एक बिल उपस्थित किया जिसमें जमीनकी उपजाऊ शक्ति बढ़ाने और परती जमीनको खेती और चारेकी फसल उपजाने लायक बनाना, अमेरिका आदि देशोंकी भांति व्यवस्था करनेका उद्देश्य बताया गया है। स्वास्थ्य मंत्रिणी राजकुमारी अमृत कौर ने दो बिल उपस्थित किये। जिनमें एक इण्डियन नर्सिंग कौंसिलकी स्थापनाके सम्बन्धमें है। श्रमिक सचिव श्री जगजीवन रामने एक बिल पेश किया जिसमें मजदूरोंके स्वास्थ्य रक्षाके सम्बन्धमें समुचित व्यवस्था करने । विधान है।

चीनी नियंत्रण उठेगा

डाक्टर मुखर्जीने एक पूरक प्रश्नका उत्तर देते हुए कहाकि सरकारने चीनीसे नियंत्रण उठालेनेका निश्चय किया है। लेकिन अभी तारीखका निश्चय नहींहुआ है। नियन्त्रण उठानेके प्रश्न पर विचार करनेके लिये दिसम्बरमें किसी समय प्रांतों और रियासतोंके उद्योग धन्धों एवं रसद मंत्रियों का एक सम्मेलन होगा।

शेर काश्मीर शेख अब्दुल्ला

आपने जिन्नाको मुंहतोड़ जवाब देते हुए कहा है कि नेहरू, या गांधीजी या भारत सरकारको खुश करनेको नहीं काश्मीरको दरिद्रता और विनाशसे बचाने के लिये हम भारतीय संघमें शामिल हुए हैं।

नमक नियंत्रण

प्रोफेसर रङ्गाके प्रश्नके उत्तरमें उद्योग धन्धे और रसद विभागके मन्त्री डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जीने लिखित उत्तर दिया है कि सरकारका इरादा शीघ्रही नमक नियंत्रण आदेश जारी करनेका है। साथही सरकार नमकके उत्पादन पर लगी रोक हटा लेगी जिससे उत्पादनमें वृद्धि और सुधार हो। उसके बाद कोई भी व्यक्ति नमक बना सकेगा। डा० मुखर्जी ने कहा कि वतमान वातावरणमें यह आवश्यक ह कि नमक पर कुछ नियन्त्रण रहे। भारतमें जितने नमककी खपत है उससे १० प्रतिशत कमकी पैदावार है।

दिल्लीमें भारत पाकिस्तान वार्ता

गत सप्ताह दिल्लीमें संयुक्त रक्षा समिति की बैठक हुई जिसमें भारत और पाकिस्तानके प्रतिनिधियोंने भाग लिया। पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री मि० लियाकतअली खां अपने सहयोगियोंके साथ दिल्ली आये और विचार विनिमयके बाद यह तय हुआ कि सुप्रीम कमाण्डरके हट जानेके बाद भी समिति रहे और अपना काम जारी रखे। भारतीय और पाकिस्तानके प्रधान मन्त्रीकी आपसमें अलग एक घंटेसे अधिक देर तक बातचीत हुई। सम्मेलन में गवर्नर जेनरल पण्डित नेहरू मि० लियाकत अली सर्दार पटेल सर्दार बलदेवसिंहने भाग लिया। दोनों डोमिनियनोंके मतभेद मिटानेकी भावना दोनों पक्षमें दिखायी दे रही है।

———

पाकिस्तानी सरहदपर अफगानी सेना

पूर्वी प्रान्तों अफगानोंका जमाव

अफगानिस्तानके पूर्वीय प्रांतोंमें पिछले कई दिनोंसे अफगान सैनिकोंका जमाव हो रहा है। यह गैरमामूली घटना है, लेकिन अभीतक इस पर प्रकाश डालते हुए कोई सरकारी वक्तव्य काबुलसे नहीं आया। इस सम्बन्धमें सरकारी तौरसे अब यह बताया गया है कि सफी और नूरिस्तानी कबीलोंके बीचमें निरन्तर होते रहनेवाले संघर्षोंको देखते हुए शाह शाह जहीरशाहने अफगान युद्ध सचिव जेनरल दाऊदखांको वहां शान्ति स्थापनके लिये भेजा है। बातचीतसे या बल प्रयोग द्वारा दोनों कबीलोंके बीच शान्ति कायम करनेके लिये जेनरल दाऊदको अधिकार देकर भेजा गया है। काबुलसे यह सरकारी कैफियत आनेके पहले पाकिस्तानी सरहद पर अफगान सैनिकोंके जमावका सम्बन्ध काश्मीरकी घटनाओंसे लगाया जा रहा था, जिनकी वजहसे पाकिस्तान और अफगानिस्तानको अलग करनेवाले सरहदी अंचलोंमें इधर बहुत विशृंखला फैली हुई है। कहा जाता था कि इन घटनाओंकी प्रतिक्रिया कहीं इन अंचलोंमें अफगान सरकारके खिलाफ न हो, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघमें पाकिस्तानका विरोध करनेके कारण, बादमें उसे वापस ले लेने पर भी, अफगानिस्तानके खिलाफ इधर काफी गलतफहमी फैला रखी गयी है। इसी प्रतिक्रियाको रोकनेके लियेही अफगानी सैनिकोंका जमाव सरहद पर हो रहा है, ऐसा कहा जाता था। यह भी कहा जाता है कि करांचीमें पाकिस्तान सरकारके साथ अफगानी प्रतिनिधि मण्डलके साथ दोनों देशोंके बीचमें कूटनीतिक, राजनीतिक और आर्थिक सम्पर्क स्थिर करनेके लिये जो बार्तालाप चल रहा है, उसमें अनुकूल शर्तें और सौदा पटे, इस ख्यालसे पाकिस्तानकी सरहद पर यह अफगानी सेना का जमाव बतौर भय प्रदर्शन हो रहा है।

पाकिस्तानको खतरा

पूर्व बंगालके प्रधानमंत्री ख्वाजा नाजिमुद्दीनकी नजरें पाकिस्तानको विनष्ट करनेवाले प्रयत्न देख रही हैं, लिहाजा उन्होंने पाकिस्तानके नये राज्यको आनेवाले किसी खतरेसे बचानेके लिये कौमको तैयार रहनेको कहा है। आप कहते हैं कि खून, पसीना और आंसू बहाकर जो पाकिस्तान प्राप्त किया गया है उसे मिटा डालने और उसे फिर भारतमें मिला देनेका कुत्सित प्रयत्न किया जा रहा है। समय आ गया है जब प्रत्येक नरनारी अपने देशकी रक्षाके लिये सर्वस्व कुर्बान कर लेनेको तैयार हो जाये।

भूतपूर्व राष्ट्रपति अपने पत्नी सुचेताके साथ

मुस्लिम लीग टूटेगा

मालूम हुआ है कि १४ और १५ दिसम्बरको करांचीमें आल इण्डिया मुस्लिम लीग कौंसिलके अधिवेशनमें आल इण्डिया मुस्लिम लीगका संगठन तोड़ दिया जायेगा। कहा जाता है कि देशका विभाजन हो जानेके बाद यह आवश्यक हो गया है कि भारतीय मुसलमानोंको मुस्लिम लीगके संगठनके प्रति भक्त रहनेके बंधनसे मुक्त कर दिया जाये और भारतीय डोमिनियनमें नये राजनीतिक वातावरणमें उनको अपनी नीति स्थिर करनेकी स्वतन्त्रता दी जाये। मुस्लिम लीगको तोड़ देनेसे भारतीय मुसलमानोंके लिये नया कार्यक्रम लेकर चलनेका रास्ता साफ हो जायेगा। साथ ही कांग्रेसके एक दलके भीतर भारतके प्रति मुसलमानोंकी भक्तिके सम्बन्धमें जो सन्देह है वह भी दूर हो जायेगा।
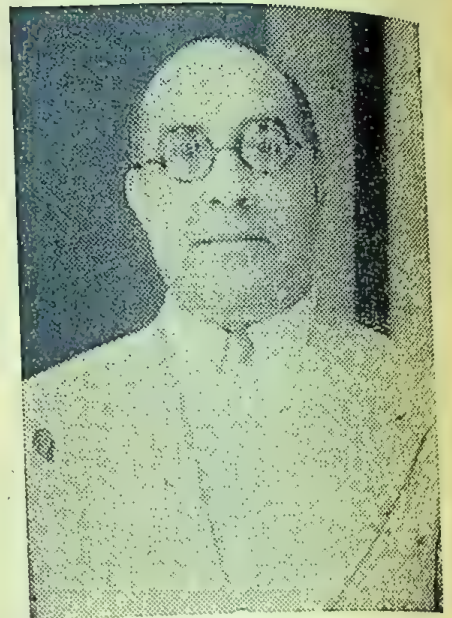
पाकिस्तानके प्रधानमन्त्री मि० लियाकत अली

पाकिस्तान नेशनल लीग

कहा जाता है कि इस आशयके प्रस्ताव पर भी विचार किया जा रहा है कि पाकिस्तान डोमिनियनमें मुस्लिम लीगकी जगह पाकिस्तान नेशनल लीग संगठित की जाये जिसमें पाकिस्ततानके सभी नागरिक, बिना किसी जाति या धर्मके भेदभावके, सम्मिलित हो सकेंगे। आल इण्डिया मुस्लिम लीगके सेक्रेटरी मि० लियाकत अली खांने यह घोषणा की है कि पाकिस्तान और भारतके रूपमें दो स्वतन्त्र राज्योंकी स्थापनाको दृष्टिगत रखकर आल इण्डिया मुस्लिम लीगके संगठनके भविष्यपर विचार करनेके लिये १४ दिसम्बरको करांचीमें लीगकी कौंसलकी बैठक होगी।

संयुक्त प्रान्तमें सेल टैक्स लगेगा

युक्तप्रांतमें विक्रय-करका प्रस्ताव

अपने बढ़ते हुए व्ययको पूरा करनेके लिये अधिक आय प्राप्त करनेके उद्देश्यसे युक्तप्रांतकी सरकार विक्रय-कर लगानेका विचार कर रही है। यह कर आगामी वर्ष से लगाया जायगा, इससे लगभग ४ करोड़ की आय होनेका अनुमान किया जाता है।

निश्चय हुआ है कि व्यापारियोंकी वार्षिक बिक्रीके आधारपर यह कर लगाया जायगा। १० हजारसे कम बिक्रीपर यह कर नहीं देना पड़ेगा। १० हजारसे १५ हजारतककी वार्षिक बिक्रीवाले व्यापारीको ८ रु० प्रति मास देना पड़ेगा, और १५ हजारसे २० हजार बिक्रीवालेको १२) रु० प्रति मास। इससे अधिक बिक्रीवाले व्यापारियोंसे उनकी कुल बिक्रीका १ प्रतिशत कर रूपमें लिया जायगा। एक वस्तुकी बिक्रीपर केवल एक ही पक्षसे कर लिया जायगा, क्रेता और बिक्रेता दोनोंसे नहीं। इस सम्बन्धमें विस्तृत नियम बादमें तय किये जायेंगे। कुछ प्रकारकी वस्तुओं जैसे मोटर स्प्रिट, तम्बाकू और चीनीपर कर नहीं लगेगा और जिन वस्तुओंपर नशीली वस्तुओं विषयक कानूनके अन्तगत कर लगाया जा चुका है, वे भी नये करसे वंचित रहेंगी।

रूई, सूत तथा कर्घेसे बना हुआ कपड़ा भी इस करसे बरी रहेगा। निर्यातके लिये तैयार वस्तुओंपर १॥ प्रतिशतके हिसाबसे विशेष रियायत की जायगी।

ऐसा ज्ञात हुआ है कि भारतके पांच प्रांतोंमें पहलेसे बिक्रय-कर लागू है। युक्त प्रदेशका यह कर मद्रासके विक्रयकर कानून के आधारपर बनाया गया है।

मकानोंके सम्बन्धमें कानून

पश्चिमी बंगाल असेम्बलीने गत २६ नवम्बरको निवासस्थानकी समस्याका समाधान करनेके लिये एक बिल पास किया है जिसमें मकान मालिकोंके गैर कानून भाड़ा और सलामी लेनेको रोकनेके लिये खाली मकानोंपर नियंत्रण और कब्जा करनेकी क्षमता सरकारको दी गयी है। मालमंत्री श्री कालीपद मुखर्जीने बिल पेश करते हुए कहा कि बंगालके विभाजन हो जानेके उपरान्त सरकारके सामने कलकत्ता आदि जैसे सहरोंमें सार्वजनिक संस्थाओं और व्यक्तियोंके लिये वासस्थानकी व्यवस्था करनेकी समस्या उपस्थित हो गयी है। असेम्बलीका अधिवेशन नहीं हो रहा थाइसलियेसरकारनेएकआर्डिनेंसजारीकिया जो आज भी अस्तित्वमें है। बिलमें कई संशोधन आये लेकिन सरकारने केवल एक मुस्लिम लीगीका संशोधन स्वीकार किया। संशोधनके साथ बिल पास हो गया।
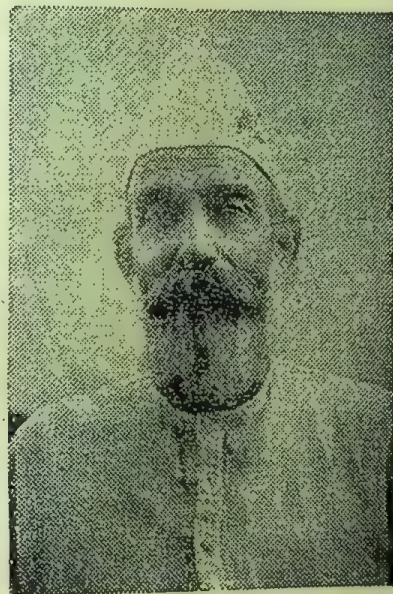
संयुक्तप्रांतके स्पीकर

पाकिस्तान ब्राडकास्ट पर रोक

रेबलीके जिला मजिस्ट्रेटने दफा १४४ के अनुसार हुक्म जारी कर पाकिस्तान रेडियोको ब्राडकास्ट सुनने पर रोक लगादी है। मजिस्ट्रेटने बरेली जिलेमें देहाती अञ्चलोंमें लगने वाले बाजारोंमें गो मांस का विक्रय बन्द कर दिया है।

कागज चोर

(३०वें पृष्ठका शेषांष)

दोनों कम्बल ढूंढ़ने लगे। गगन अब भी चुपचाप बैठा काला देवको देख रहा था। अरे, आज चारपाई पर उसके बाबूजीसे न करवटें बदलनेकी ही आवाज होती है और न गुनगुन !!—

घरमें सब कोई गाढ़ी नींदमें सो रहे थे। दोनों बहादुर चाचा कम्बल ढूंढ़ लाये। कैप्टेन छन्नूकी आज्ञाके अनुसार गगन डंडा लेकर द्वार पर डट गया और दोनों चाचा कम्बल फैलाते हुए, धीरे धीरे अंदर जाने लगे। दोनों ज्यों-ज्यों अंदरकी ओर होते, गगन धीरे धीरे स्वगत बोलता—"ठहरो बच्चू!—हमें धोखा देनेके लिये ठीक बाबूजीकी नकल बनाकर बैठे हुए हो""?"अच्छा अच्छा अभी चखोगे, मजा""!!"

बहादुर चाचाने काला देवको बहादुरी से कम्बलमें लपेट लिया। मगर अभी कम्बल फैल ही रहा था कि गगन बहादुर ने धड़ामसे काला देवकी पीठ पर एकडंडा! काला देव जब चीखकर छलांग मारता हुआ खड़ा हुआ और कम्बल नीचे गिरा तो तीनों ठक् रह गये! काले देवकी जगह लाला, छन्नूके बड़े भैया यानी गगन के पिताजी निकले !!

गगनके हाथकी चोट ही कितनी ? लाला और छन्नू खिलखिला कर हंस पड़े। भूतपूर्व कालादेव भी हंस उठा। लाला और छन्नू बहादुरी पर प्यार पाकर सोने चले गये। गगन अब भी डंडा लिये, खड़ा, गुस्साया गुस्साया अपने पिताको देख रहा था—"खैर, कि एक ही डंडा लगा""कहते क्यों नहीं थे कि, गगन मेरे पास कागज नहीं है?""डंडा अगर छन्नूके हाथमें होता तब तो अब तक आप की खोपड़ी फूट चुकी होती""!"

बात यह थी कि गगनके पिता पत्र-पुष्पके भरोसे जीने वाले 'हिन्दुस्तानी' लेखक थे!

लन्दनमें परराष्ट्र सचिव सम्मेलन

परराष्ट्र सचिव सम्मेलन

लन्दनमें गत सप्ताहसे चार परराष्ट्र-सचिव सम्मेलन हो रहा है। ब्रिटेन, अमेरिका, रूस और फ्रांसके क्रमशः बेविन, मार्शल, मोलोटोव और बिदां सम्मेलनमें भाग ले रहे हैं। जर्मनी और आस्ट्रेलिया की समस्याएं ही सम्मेलनके सामने हैं। जर्मनीके मामलेमें चार-राष्ट्र-संधि करनेके प्रश्न पर मोलोटोव राजी हो गये हैं। सम्मेलनमें विचारार्थ कौन विषय उपस्थित किये जाये इस पर तो समझौता हो गया है किन्तु अभी तक यह तय नहीं हो सका कि पहले किस विषय पर विचार आरम्भ हो। सम्मेलनके सामने उपस्थित किये जानेवाले विषयोंको लेकर चारोपरराष्ट्र सचिवोंके सहायक तीन महीनोसे विचार कर रहे थे। पर अब तक किसी फैसले पर न पहुंच पाये थे। वही काम इन लोगोंने तीन घंटेमें कर लिया। जिन विषयोंपर विचार किया जायगा वे हैं—

(१) जर्मन निःशस्त्री करण और असैनिक करणके लिये चार राष्ट्रोंके बीचमें समझौता और संधिपर अमेरिकन प्रस्ताव।
(२) आस्ट्रियन संधि कमीशन पर रिपोर्ट।
(३) जर्मनीके लिये एक अस्थायी राजनीतिक संगठनका स्वरूप और सीमाधिकार
(४) जर्मन संधिदल तैयार करनेका क्रम।
(५) जर्मनीके लिये आर्थिक सिद्धान्त।(६) कण्ट्रोल कमीशन भी रिपोर्ट कि इसने जर्मन निःसैनिक करणके सम्बन्धमें मास्को सम्मेलनके फैसलेको कैसे कार्यमें परिणत किया है।

अभी तक इस बात पर मतभेद है कि इनमेंसे पहले पहले किस विषयपर विचार आरम्भ हो। रूस कहता है किपहले जर्मनीका मामला लिया जाये किन्तु अन्य तीन चाहते हैं कि पहले आस्ट्रियाके साथ संधिका मामला खतम कर डाला जाये।

चीनका प्रतिवाद

नानकिंगसे इस आशयका संवाद आया है कि चीनने फिर इस बातका प्रतिनिधित्व किया है कि जर्मनीके मामलेमें महाशक्ति सम्मेलनमें उसे भी शामिल किया जाना चाहिये। कहते हैं कि ब्रिटेन,फ्रांस, और अमेरिकाको चीनकी एक सदस्य राज्यकी हैसियतसे शामिल करनेमें कोई आपत्ति नहीं है, पर रूसका फैसला अभी तक नानकिंग नहीं पहुंचा।

पूर्ण जर्मन सरकारकी मांग

रूस चाहता है कि जर्मनीमें शीघ्र पूर्ण जर्मन सरकार बन जाये। मो० मोलोटोव नहीं चाहते कि जर्मनीमें मित्र राष्ट्रोंकी शासन, जैसा अभी है चलता रहे। आस्ट्रियाके सम्बन्धमें जो गतिरोध था वह मिट गया और परराष्ट्र सचिव इस बातपर राजी हो गये कि विचारार्थ पहले आस्ट्रिया संधिका विषय लिया जाये।

अभी दो बातोंपर मतभेद है। संधि सम्मेलनमें जैसा रूस चाहता है आल्बानिया भाग ले या नहीं और ब्रिटेन तथा अमेरिकाके इच्छा नुसार ब्रिटिश डोमिनियन और लघु राष्ट्र सम्मिलित हो या नहीं। मो० मोलोटोवने एक तीसरा बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न उठा दिया है। रूस चाहता है कि एक केन्द्रीय जर्मन सरकार प्रतिष्ठित की जाये जिसके लिये यह आवश्यक होगा कि चार महान राष्ट्रों द्वारा प्रस्तुत संधि कार्यान्वित होनेके पहले ही वह स्वीकार करे। अतः ब्रिटेन फ्रांस और अमेरिकाके सामने इस सम्मेलनमें एक यह नयी समस्या आ गयी है कि जर्मनीको विभक्त किया जाये या एक रखा जाय। मो० मोलोटोव एकता और एक जर्मनीके समर्थक हैं अतः आशाकी जाती है कि अधिवेशनमें शीघ्रही इस बातपर विचार आरम्भ होगा कि जर्मनीको एक रखनेकी स्थिति अभी है या नहीं।

सन १९३२ में ब्रिटिश साम्राज्यके व्यापारियोंने नमूनेके लिये जो चीजें सम्राटको भेजीं उसका मूल्य ३०हजार पौंड (लगभग ३९०००० रुपये) आंका गया। केवल एक सप्ताहमें सैकड़ों विक्रेताओंने ५००० डब्बे सिगार भेजे जो उन्हें लौटा दिये गये।

शाही खानदानका नियम है कि वे अनजाने लोगोंकी भेंट स्वीकार नहीं करते। सम्राट स्वयं भेंटोंका निरीक्षण किया करते हैं। वे अपने लिये बहुत कम भेंटें स्वीकार किया करते हैं। खाद्य सामग्रियां अस्पतालोंको भेज दी जाती हैं। किंतु भेजने वालेको हमेशा स्वीकार पत्र भेज दिया जाता ह।

किसी समयमें फ्रांसकी हर खानेके टेबिल पर एक भिक्षा-पात्र रखना आवश्यक था। प्रत्येक अतिथि उस पात्रमें अपने भोजनका एक हिस्सा गरीबोंके लिये डाल दिया करता था।

*　*　*

चीनके धनिक परिवारोंके अतिथि मकानोंकी फर्श पर पक्षियोंकी हड्डियां बिखेर कर इस बातका प्रमाण देते ह कि उनके मेजवानके यहां सफाई करनेके लिये काफी नौकर हैं।

*　*　*

नेपोलियन बोना पार्टको काफी पीनेका शौक था। प्रति दिन वह २०-२५ कप काफी पी डालता था।

*　*　*

सन १७८९ तक फ्रांसके प्रत्येक नागरिकको कानूनन कमसे कम ७ पौंड नमक खरीदना पा थड़ता।

*　*　*

प्रसिद्ध रोमन सम्राट हीलियोगेबाल्स २२ प्रकारके व्यंजनोंका भोज दिया करता था। व्यंजन विभिन्न स्थानों पर पकते थे और प्रत्येक व्यंजनके लिये अतिथियोंको शहरके विभिन्न भागोंमें जाना पड़ता था।

जर्मन उपन्यास एक ऐसीपुस्तक है जिसके प्रथम अध्याय में तो दो व्यक्ति एक दूसरेको चाहते हैं,-किन्तु अन्तिम अध्याय तक एक दूसरेके हो नहीं पाते। फ्रेंच उपन्यास एक ऐसी पुस्तक है जिसके प्रथम अध्यायमें दो व्यक्तियोंका मिलन तो होता है, किन्तु तबसे लेकर अन्तिम अध्याय तक एक दूसरेको नहीं चाहते। हिन्दी उपन्यास एक ऐसी पुस्तक है, जिसके प्रथम अध्यायसे दो व्यक्ति मिलनेकी चेष्टा करते २ अन्तिम अध्याय तक सफल हो जाते हैं। रशन उपन्यास एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें दो व्यक्ति न एक दूसरेको चाहते हैं और न मिलही पाते हैं और इस मनहूस किस्से से डेढ़ हजार पेज रंग दिये जाते हैं।

*　*

अमेरिकाके तारोंमें 'प्लीज' (कृपया) शब्दोंके व्यवहार करनेका वार्षिक खर्च १ करोड़ डालर होता है

*　*

अधिक सर्दीमें शरीरपर कपड़ोंका बोझ अत्यधिक हो जाता है। ब्रिटेन की मिलें इस बातकी चेष्टामें हैं कि कपड़े काफी हलके होनेपर भी खूब गरम रहें।

*　*

वैज्ञानिक कूड़ेके ढेरोंसे बहुमूल्य वस्तुओंका निर्माण करनेमें व्यस्त हैं। समुद्री घास पात भी उनकी दृष्टिमें मूल्यवान है। उनका अनुमान है कि सिर्फ स्काटलैण्डके समुद्री किनारोंसे प्रतिवर्ष लगभग १५,०००,००० पौण्डके मूल्यके रासायनिक पदार्थ तैयार किये जा सकेंगे। (लगभग उन्नीस करोड़ पचास लाख रुपये)

*　*　*

इंग्लैंडकी रेलोंमें कोयलेकी जगह तेलका उपयोग किया जा रहा है। इस प्रयोगसे १९४८के अन्त तक अस्सी लाख टन कोयलेकी बचत होगी।

*　*

माता पिताकी शर्मिन्दगीके कारण मान्टरीलमें ५०० शिशुओंको कमरोंमें बिस्तरोंपर बांध कर रखा गया। इस प्रकारका सबसे बड़ा बच्चा २५ वर्षका है।

*　*　*

पेनसिलिनका यह नया आविष्कार प्राणवायु भरनेका काम कर रहा है।

ब्रिटेन और आस्ट्रेलियाके खिलाड़ियोंमें शतरंज की प्रतियोगिता हुई, हजारों मीलकी दूरी किसीको तय न करनी पड़ी, दोनों दल १०,५०० मीलके फासलेपर रेडियो द्वारा खेलते रहे।

* *

अमेरिकाके प्रत्येक दो नागरिकोंमें एक केवल बुद्धि परीक्षामें असफल हो जाने के कारण सेनामें भरती नहीं हो सकता।

* *

शिकागोमें एक महिलाने १५ पौण्ड के बच्चेको जन्म देकर अबतकके सारे रेकार्ड तोड़ दिये हैं।

* *

भारतीय रबड़ उद्योगमें ५०,००० व्यक्ति काम करते हैं। सन १९४५में ३६० लाख रुपयेके रबड़का उत्पादन हुआ।

* *

जापान विजय-दिवससे लेकर जुलाई १९४७ तक भारतीय सेनासे ३७,९१० स्त्री और पुरुष मुक्त किये गये।

× *

लन्दनमें शेफर्ड्स डश नामक स्थानसे लेकर ईस्ट एण्ड तक मकानोंकी छतों पर मोटरें चला करेंगी। सन १९०३ में सर्व प्रथम इस प्रकारका प्रस्ताव किया गया था। यह सड़क जमीनसे १०० फीट ऊंची रहेगी और इसे बनानेके लिये एक सौ फीट ऊंचे तमाम मकान कतारमें बनाने होंगे। नीचेकी सड़कोंको पार करनेके लिये ऊपर पुल बनाये जायंगे। इस हवाई सड़क पर जानेके लिये १-१ मीलके फासले पर रास्ते रहेंगे।

* *

अमेरिकाके स्कूलोंमें जो नंद ब्लेक-बोर्ड लग रहे हैं वे काठके न होकर शीशेके हैं। इनका रंग हरा है और इस पर लिखा गया किसी भी दिशासे साफ साफ पढ़ा जा सकता है।

* *

लां बाटोके गिरजा घरमें जो वधू विवाहके निश्चित समयसे ५ मिनट देरसे पहुंचेगी उस पर ५ शिलिंगका जुर्माना किया जायगा।

* *

बड़ौदाके गायकवाड़ने एक बार १० इंच चौड़ा, १२ इंच लंबा हाथी दांतका एक क्रिसमस कार्ड प्रस्तुत करनेकी आज्ञा दी। चालीससे भी अधिक हाथियोंको मार कर ठीक ठीक नापका एक कार्ड बनाया जा सका। इस कार्डको बनानेमें चार कुशल कारीगर लगातार छः महीने तक लगे रहे। नक्काशी करनेके बाद कार्ड पर सुपारियोंके साइजके बड़े बड़े ४४ हीरे मढ़े गये। अनुमान किया जाता है कि कार्ड पर लगभग सत्तर लाख रुपये खर्च किये गये।

* *

विलायतके फर्नीचर विक्रेताओंने ऐसे कपड़ेका व्यवहार प्रारम्भ किया है जिस पर अधजली सिगरेट डालने पर प्लास्टिक का वह कपड़ा गल जाता है जलता नहीं।

* *

मिश्रमें हैजेसे बचनेके लिये वहांके स्वास्थ्य विभागने लोगोंको हिदायत दी है कि वे आपसमें चूमा न करें।

* *

ओकलाहामाकी दो जुड़वां बहनोंने आठ घण्टेके भीतर जुड़वां बच्चोंको जन्म दिया है।

लन्दनके पोस्ट आफिसोंमें इस महीने में एक सप्ताह तक सब चिट्ठियां और कार्ड इत्यादि गिने जायंगे। यही जोड़ साल भरका माना जायगा। पिछले सालका जोड़ ६,२३०,०००,००० चिट्ठियां और कार्ड था।

मुसोलिनीकी पुत्री एड्डासियानों-नेपल्स के एक आभूषण विक्रेताके साथ विवाह कर तीन कमरोंके एक फ्लैटमें रहेगी।

* *

विदेशोंकी और अपनी मांगकी पूर्तिके लिये इंगलैण्डमें मोटरोंका उत्पादन तीन लाख मोटर प्रति वर्षसे बढ़ा कर पौने पांच लाख करना पड़ेगा।
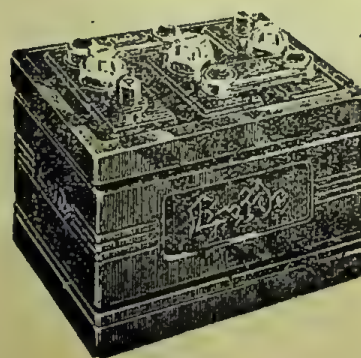
पेप्सकी कीटाणु नाशक सांसदायक टिकियों का सेवन कर अपने कण्ठ और सास की नली को रक्षा करें।

मुखमें पेप्सके घुलने पर औषधियुक्त द्रव्य निकलता है और आपकी सांस में मिश्रित होकर वह फेफड़े में पहुंचता है। कण्ठ और छाती के कीटाणुओं को नष्ट कर भविष्य में भी किसी प्रकार की छूत से रक्षा करता है।

पेप्स कण्ठके सूजन को आराम पहुंचाता, कफ ढीला करता और गले की खसखसाहट दूर करता है। कफ, जुकाम, खांसी, इन्फ्लुएन्जा, ब्राङ्काइटीज और ती तथा फेफड़े के अन्य रोगों की चिकित्सा के लिये पेप्स जगद्विख्यात है।

पेप्स

लीजिये

PEPS

कीटाणुनाशक सांसदायक टिकिया
हमेशा अपने पास रखें
सभी दवाखानोंमें मिलता है।

एजेण्ट-स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि० इण्टाली कलकत्ता

युद्ध-पूर्व से भी कम मूल्य

स्वीटजरलैंडकी बनी। बिलकुल ठीक समय देने वाली। प्रत्येक को गारंटी १ साल। क्रुपहले वाली क्रोमियम केस—२०॥), सुपीरियर २५), फ्लाट क्रोमियम केस-३०), सुपीरियर [illegible] —४५) [illegible] गोल्ड ६०), १५ जुएल्स रोल्डगोल्ड—६०), अलार्म टाइम पीस १८), २२), सुपीरियर २५) बीग बेन-४५) पैकिंग पोस्टेज अलावे, एक साथ ३ लेने से माफ। एच. डेविड एण्ड कं० पो० ब० नं० ११४२४, कलकत्ता

फैंसी सिल्क साड़ी

आकर्षक डिजाइन

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी
बाकी वी० पी० से
थोक व्यापारियों को खास सुभीता
भारत इन्डस्ट्रीज, जुही-कानपुर

'साप्ताहिक विश्वमित्र'

चन्दे का तालिका

सालाना	६)
छमाही	३॥)

आज ही मनिआर्डर द्वारा रुपये भेज कर ग्राहक बन जांय।

मैनेजर विश्वमित्र
७४, धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

सम्पादक—देवदत्त मिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेटेड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

Lever movements jeolled wrist watches in fancy shapes, 36 hours winding with second hand, thick crystal glass, most reliable and accurate time keepers, guaranteed for 3 years, nickle silver cases with a nice strap and box.

Prices Rs. 26, Postage As. 12 (free for 2)
for White Chromium case Rs. 2 and Radium Dial Rs. 3 extra.
LIMITED STOCK NO ORDER FOR MORE THAN 3 ACCEPTED.

ORIENT WATCH SYNDICATE Dept. (14B) Colony Rd. DUM DUM.

प्रभावशाली व्यक्ति
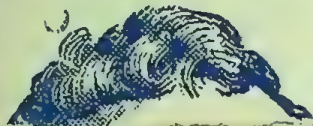
सारे रेकार्ड तोड़ दिये हैं। दी। चालीससे मार कर ठीक ठी...

जीलेट से हजामत बनाते हैं।

जब एक व्यक्ति का व्यवसाय उसे अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में लाता है तो स्वच्छ और अच्छी तरह हजामत बनाया हुआ चेहरा आवश्यकता हो जाता है। यही कारण है ... कि संसार के सर्वोत्तम हज़ामत बनाने के साधन जिलेट का प्रयोग करते है।
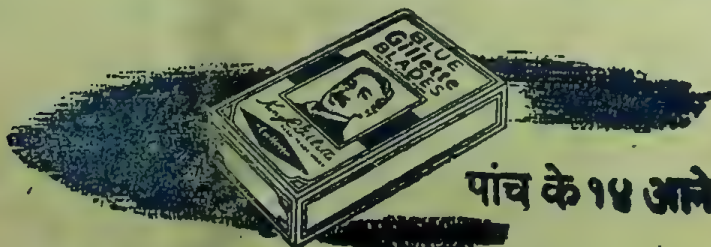
पांच के १४ आने

Blue Gillette Blades

ब्ल्यू जीलेट ब्लेड्स

आज ही एक पैकेट ले लीजिये!

हमेशा मनसुखकारी सेन्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घण्टे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

कई साइजकी शीशीयां हैं

सोल एजेण्ट्स :

एंग्लो इण्डियन ड्रग केमिकल कम्पनी बम्बई २

लाइसेन्स की आवश्यकता नहीं

अमेरीकन माडेल पिस्तौल

इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी, दर्शनपुरवा, कानपुर।

सचित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

परिचमी बंगालके गवर्नर श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आपकी वर्षगांठ १० दिसम्बरसे १६ दिसम्बर तक मद्रासमें ससमारोह मनानेका आयोजन किया जा रहा है।

यह पाकिस्तान है !

लाहौरमें शुद्ध दूधकी तो बातही क्या मिलावट वाला दूध भी दुर्लभ हो गया है। लोग स्वास्थ्य तथा कार्पोरेशन विभागके कर्मचारियोंकी अकर्मण्यतासे तंग आकर उनभूतपूर्व हिन्दू अधिकारियोंकी याद कर रहे हैं जिन्होंने मिलावट वाले दूध तथा अन्य वस्तुओंके विक्रयको बंद करने में सफलता प्राप्त की थी। साथही पाकिस्तानके टाइम्स नामक पत्रिकासे ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तानकी शाही टकसाल के उच्च अधिकारी मजदूरोंसे अपने घरेलू काम ले रहे हैं और सरकारी सामानको निजी व्यवहारमें ला रहे हैं। पक्षपातका बाजार गर्म है। इसके अलावा डाक विभागकी अव्यवस्थाके एक उदाहरणमें बतलाया गया है कि लाहौरसे गुजरानवाला पहुंचनेमें हवाई डाक द्वारा एक पत्रको १ महीना और दो दिन लगे थे।

विश्वमित्र

वर्ष—३० संख्या—४६ ता० १० दिसम्बर १९४७ DECEMBER 10, 1947. मूल्य=)

गीत,

मुक्त मां ने नयन खोले !

१

खुल गया प्राची क्षितिज का
अमल- ज्योतित- द्वार छूकर !
झांकता निकला तिमिर से
सुख- विभा का बाल दिनकर !
धुल गई कालिख गगन की
हो उठीं रंजित दिशाएं !
मान भरने को चलीं,
सज स्वर्ण बिखराती उषाएं !
वाद्य-स्वर बन पक्षियों का सौम्य कलरव गान गूंजा
मंदिरों के देवता जड़, मुसकुरा कर आज डोले !
मुक्त मां ने नयन खोले !

२

स्वर्ण कर से धो प्रभा-हत
हिम मुकुट अपना संवारा !
कनक— रत्नों से अलंकृत
हरित नव अंचल निहारा !
कंठ हीरक हार झिलमिल
हस्त जगमग स्वर्ण कंकण !
हो उठा निर्बन्ध लखकर,
पुलक स्पन्दित हृदय क्षण क्षण ;
हंस पड़े मृदु अधर अरुणिम, हंस पड़ मुख श्री नवीना,
बंदिनी के रुदन के स्वर, वेदना बन आज बोले ॥
मुक्त मां ने नयन खोले ॥

गंगाप्रसाद श्रीवास्तव 'नलिन'

—o—

अपरिचित देश

—:*:—

संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी !

(१)

जाल फैला, देखता कोई कहीं है गुप्त होकर !
चूक जो जाता, उलझ वह छट पटाता जिन्दगी भर !
मार्ग का प्यासा बटोही भी यहां पानी न मांगे,
एक छोटी भूल भी आफत लिये आती यहां पर !
'क्षणिक यह जीवन'-अगर यह सत्य कोई भूल जाये !
भटक कर इस घोर बन में वह सदा ही छट पटाये !
बस उसे रह जायगा निज 'आह' का धन शेष साथी!
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी !

(२)

देखलो, कितने यहां पर आंसुओंके गीत गाते!
निज हृदयकी आगको वह डालकर इंधन बढ़ाते !
जी रहे कितने लहूका घूंट पीकर लोग साथी !
पी रहे दिलकी कसकको, फूल जीवनका चढ़ाते !
वेदना को जानते, मिलते मगर उसके गले से !
बोलती रह-रह व्यथाएं किसी खोये दिल-जले से !
है नहीं कोई यहां, जो दे सके उपदेश साथी !
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी !

(३)

हृदयकी ज्वाला धधक, आकाश छूती हर घड़ी है !
चिताएं जलतीं, कईका नाश होता हर घड़ी है !
उस गलीसे उठ रही है मर्सिया की तान साथी !
कौन बैठा है वहां पर आज हो म्रियमाण साथी !
सुलगता तन-मन प्रतिक्षण, उठ रहा धुंआं वहां पर !
किन्तु ज्वालाको छिपानेको सभी आकुल वहां पर !
फूंक कर घर देखते सब, मूक सब का वेश साथी !
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी !

(४)

चल रहा जादू, बढ़ाना पैर आगे को संभलकर !
लोग पल-पल फस रहे हैं, छूटना दुस्तर यहां पर !
'यह अजब जादूगरी है'-बात लो यह जान साथी !
एक पगका डगमगाना कैद कर देगा यहां पर !
जिन्दगीकी राह लम्बी तय करोगे किस तरह फिर !
हाय, बन्दी बन बजाना जिन्दगी भर हथकड़ी फिर !
मुक्ति कौन दिलायेगा, यह तो निरा पर देश साथी !
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी !

(५)

पगों में छाले पड़ेंगे, कंटकों से पूर्ण मग है !
पंख पाकर भी न जाने छट पटाता क्यों विहग है !
सेज शूली पर बिछा, देखे पिया की राह कोई,
तुम न जाना उस गली में, बंचना से पूर्ण जग है !
देखना तो, बुझ न जाये प्रेम का दीपक तुम्हारा !
मुक्त होकर तुम चले, रोके यहां फिर कौन कारा !
तुम न पाओगे यहां सुखका तनिक लव लेश साथी !
संभलकर चलना यहां पर, यह अपरिचित देश साथी !

— 'शक्र'

परहित बस जिनके मन माही।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

भारतकी वैदेशिक नीति

आजकी दुनियामें यह समझना बड़ा कठिन है कि किस देशकी वैदेशिक नीति क्या है और कल क्या होगी। साधारण राष्ट्रोंकी तो बात ही नहीं है महा शक्तियोंके सम्बन्धमें, जो प्रत्यक्ष और प्रकारान्तर दोनों प्रकार, संसारकी वैदेशिक नीतिको प्रभावित कर रही हैं—निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि अमुक महान राष्ट्र वैदेशिक मामलेमें किस दिशामें जा रहा है। अपनी सीमाओंके अन्दर घिरे हुए भारतने, गत एक वर्षके भीतर अपनी वैदेशिक नीतिका संपादन जिस योग्यता और दूरदर्शिताके साथ किया है, उससे अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंचमें हमारा मान और गौरव बढ़ा है। उस दिन जवाहर लाल नेहरूने भारतीय पार्लमेण्टमें वैदेशिक नीति पर हुई बहसके उत्तरमें आजके महान राष्ट्रोंकी वैदेशिक नीतिका चित्रण सुन्दर शब्दोंमें करते हुए भारतकी वैदेशिक नीतिकी सुन्दर विवेचना की है। पण्डितजीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि "जहां तक शक्ति और सम्भव होगा भारत किसी युद्धमें भाग न लेगा, पर यदि वह अपनेको युद्धसे अलग न रख सकेगा तो समय आनेपर वह इस बातपर विचार करेगा कि किस पक्षका साथ देना उसके लिये हितकर है।"

भारत सदा सर्वदासे शान्तिप्रिय रहा है। उसकी सभ्यता और संस्कृतिका विकास भौतिकवादपर नहीं अध्यात्मवादकी नींवपर हुआ है। युद्धवाद और सैनिकवाद उसका कभी आदर्श नहीं रहा। आज भी उसके इस आदर्शमें जरा भी मौलिक अन्तर नहीं आया। वह सबके साथ सहयोग करके रहना और चलना चाहता है। इसीसे नेहरूजी कहते हैं कि हम अमेरिकाके साथ सहयोग रखना चाहते हैं। वैसे ही हम सोवियट रूसके साथ भी सम्पूर्ण सहयोग रखना चाहते हैं। यही कारण है कि भारत संयुक्तराष्ट्र संघके किसी गुटका अन्ध समर्थक नहीं है। इस समय जितने अन्तर्राष्ट्रीय गुट हैं भारत सबसे अलग है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह सबसे तटस्थ है। भारत स्वयं एक महान राष्ट्र है, संसारके भावी स्वरूप सुख, शान्तिके सम्बन्धमें उसके अपने आदर्श और सिद्धान्त हैं। उन आदर्शों और सिद्धान्तोंमें सहायक राष्ट्रोंके साथ प्रसन्नता पूर्वक भारत सहयोग करेगा। इस सहयोगको सुन्दर और सुदृढ़ बनानेमें सहायक वैदेशिक नीतिका निर्माण और विकास करना हमारी सरकारका लक्ष्य होना चाहिये और है। पर पंडितजीका यह कहना यथार्थ है कि किसी देशकी वैदेशिक नीति उसकी अर्थ नीति पर अवलम्बित होती है। जबतक यह निश्चित नहीं कि भारतकी अर्थ नीतिके ढांचेका अन्तिम स्वरूप क्या होगा तबतक उसकी वैदेशिक नीति कोई निर्दिष्ट पथ ग्रहण नहीं कर सकती। अतः यह नितान्त आवश्यक है कि पहले हमारी अर्थ नीतिका आधार स्थिर हो जाये। आज संसारमें जितने झगड़े हो रहे हैं सब इसी अर्थ-नीतिके चलते प्रत्येक महान राष्ट्र, अमेरिका, रूस और ब्रिटेन, अपनी अर्थनीति संसार पर लादना चाहता है। यही कारण है कि शान्ति और व्यवस्थाका राग अलापते हुए भी वैदेशिक मामलेमें ये तीनों महान बराबर एक दूसरेके खिलाफ पैंतड़ेबाजी करते दिखायी पड़ते हैं। अतः केवल शान्ति और स्वतन्त्रताकी बात निरर्थक है जब तक संसारका प्रत्येक देश अपनी अर्थनीति पहले अपने ऐश्वर्य और प्राधान्यको दृष्टिगत रख कर स्थिर करता रहेगा।

इसमें सन्देह नहीं है कि किसी सरकार की वैदेशिक नीतिका अन्तिम लक्ष्य अपने देशका हित साधन करना होता है। हम कितना ही अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, शांति और स्वतन्त्रताकी चर्चा करें, यह मानना ही पड़ेगा कि सरकार अपने देशके हितको दृष्टिमें रखकर काम करती है। किसी देशका चाहे वह, साम्राज्यवादी अथवा सोशलिस्ट अथवा कम्यूनिष्ट हो पर-राष्ट्र सचिव मुख्यतया अपने देशके हितकी बात ही करता है। लेकिन अन्य परिणामों और परिस्थितियोंकी उपेक्षा करके केवल अपने देशके स्वार्थोंकी चिन्ता करना भिन्न बात है। भारत इस आदर्शको मानता है कि केवल अपना हित देखने ही से शांति नहीं हो सकती। अपना हित देखते समय दूसरेके हित और असुविधा का भी ध्यान रखना चाहिये। इसीलिये पण्डित जवाहरलाल कहते हैं कि हमारी वैदेशिक नीति होगी 'विश्व सहयोग और विश्व शांतिकी रक्षाके प्रसंगको सामने रखकर भारतके हितको देखना।" पण्डित नेहरूके नेतृत्वमें जबसे भारतका वैदेशिक विभाग आया है अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें इसी सिद्धान्तका पालन किया जा रहा है और यही कारण है कि अपेक्षाकृत स्वल्प समय में ही उसने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसने कभी इस बातकी परवाह नहीं की कि उसके इस कार्यसे अमुक गुट प्रसन्न होगा या अप्रसन्न। भविष्यमें भी भारतकी यही नीति रहेगी, यह आश्वासन पण्डित जवाहरलाल नेहरूने दिया है।

आजाद या जल्लाद

काश्मीरके राष्ट्रवादी नेता शेख अब्दुल्ला और बख्शी गुलाम महम्मदने भारत सरकारके साथ मिलकर जिस बहादुरी और दूरदर्शिताके साथ पाकिस्तानकी चालोंको व्यर्थ कर अपनी प्यारी मातृभूमिको खूंखार जालिमोंके पंजेके भीतर पड़ने से बचाया है, काश्मीरके नरनारी, उसे सदा कृतज्ञताके साथ स्मरण करेंगे। अभी उस दिन बख्शी गुलाम महम्मदकी इस वीर गर्जनाका भारतीय मात्रने हृदयसे

स्वागत किया है कि "काश्मीरके भाग्यका फैसला हम तलवारके जोरसे करनेके लिये कृत संकल्प हैं।" पाकिस्तानी अंचल और उसके संरक्षणमें संगठित आजाद नामसे जल्लाद काश्मीर सरकार, काश्मीरके इन जन-नेताओंके नेतृत्वमें काश्मीरके जन-प्रतिरोधको देखकर दंग रह गयी और तलवारका जवाब तलवारसे पाकर इनके होश फाख्ते हो गये। अब यह धूर्त मण्डली फिर धूर्तता और मक्कारीकी शरण लेकर अपनी स्थिति संभालनेके लिये फरेबी चालें चल रही हैं। बेहयाईकी भी एक हद होती है। जिस पाकिस्तान सरकारने काश्मीर-पर आक्रमणकी योजना प्रस्तुत की, आक्रमणके लिये तमाम आवश्यक और उपयोगी युद्ध साधनोंकी व्यवस्था की वही आज पंच बनकर समझौता करानेकी बात कहती है। यह पंचायत कैसी और किसके बीच ? लुटेरों और जल्लादोंके गरोहोंको यदि सरकारकी संज्ञा दी जाने लगे तो संसारमें फिर जनता द्वारा प्रतिष्ठित सरकारें कहां जायें। लाहोरमें पाकिस्तानी नेता इस समय फिर वही पुराना नाटक नये रूपमें रच रहे हैं। कांग्रेसके साथ समझौतेकी बातचीत करके तिलसे ताल बननेवाली लीग जानती है कि ये समझौते और पंचायतें क्या से क्या कर सकती हैं। वह जानती है कि अगर इन चालोंसे एक कौमको दो कौम बनाया जा सकता है, एक देशके दो टुकड़े कर दिये जा सकते हैं और उन टुकड़ोंमें भी निजाम हैदराबादकी तरह स्वतन्त्र राज्य स्थापनाके लिये तिकड़म रचानेकी स्थिति पैदा की जा सकती है तो आजकी लुटेरों और खूनियोंकी सरकार-को कल बाकायदा काश्मीरकी सरकार भी बनाया जा सकता है बशर्ते कि उसका पांसा सीधा पड़ जाये। जुआड़ीको जो दांव एकबार रवां हो जाता है भले ही उसका उसी दांवसे सर्वनाश क्यों न हो वह अपने रवां दांवको शायद ही मुश्किलसे कभी छोड़ता हो। काश्मीरकी हारका बदला निकालनेके लिये पाकिस्तान सरकार आज फिर पुराना दांव चलाने जा रही है। लाहोरमें इस समय पश्चिमी पाकिस्तानी प्रांतोंके प्रधान मंत्री पाकिस्तानके प्रीमियर मियां लियाकत अली खांके साथ बातचीत कर रहे हैं। आजाद काश्मीर सरकार नामधारी लुटेरी सरकार के प्रतिनिधि भी इस बातचीतमें भाग ले रहे हैं। यह सब उस नाटककी तैयारीकी भूमिका है जो लाहौरमें पाकिस्तान और भारत सरकारके बीचमें आपसी समझौते की बातचीतके प्रसंगमें खेला जाने वाला है। पाकिस्तान सरकारको पंच मानकर यदि भारत सरकारके प्रतिनिधि काश्मीर के मामलेमें तथाकथित आजाद सरकारके साथ किसी तरह की बातचीतमें प्रविष्ट हुए तो फिर वही गलती दुहराई जायेगी जो एक बार मुस्लिम लीगके सम्बन्धमें की जा चुकी है। यह नाटक काश्मीरके जन नेता शेख अब्दुल्ला और बख्शी गुलाम महम्मदके प्रभावको घटाने और काश्मीर के लीगी गुण्डोंको प्रमुखता देनेके इरादेसे अभिनीत करनेका उपक्रम किया जा रहा है। हम आशा करते हैं कि हमारी सरकारके प्रतिनिधि जानबूझ कर इस बिछाये गये जाल पर पैर रखनेसे इनकार करेंगे और काश्मीरके मामलेमें पाकिस्तान सरकार और उनके गुर्गोंसे बातचीत करना कदापि स्वीकार न करेंगे।

बर्मामें अराजकता—

यह दुर्भाग्यकी बात है कि बर्मा धीरे धीरे पूर्ण स्वतन्त्रताके जितना अधिक निकट होता जा रहा है देशमें उतनी अराजकता बढ़ती जा रही है। ब्रिटिश सरकार घोषणा कर चुकी है कि ४ जनवरीको बर्माको पूर्ण अधिकार हस्तान्तरित कर दिये जायेंगे। बर्माको स्वतन्त्रता प्रदान करनेवाला बिल ब्रिटिश पार्लमेंटकी कामन और लार्ड, दोनों सभाओंसे पास हो चुका है। सम्राटके दस्तखत हो जाते ही बिल कानूनका रूप ले लेगा। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलसे बाहर बर्माका भावी विधान बनकर तैयार हो गया है। इसके अनुसार बर्मा जनवादी प्रजातन्त्र संघ राज्य होगा जिसमें बिना किसी धर्म, जातिया सम्प्रदायके भेदभावके बर्माके नागरिक समान अधिकार उपभोग करेंगे। इतने स्वल्प समयमें बर्मा इस स्थितिमें पहुंच सका इसका श्रेय बमा के कत्ल कर दिये गये जननेता जेनरल आंगसानको है ? खेदकी बात है कि इतना बड़ा बलिदान हो जानेके बाद भी अभी तक बर्मा अराजकतासे मुक्त नहीं हुआ। बर्माके कम्यूनिस्ट बर्माके पूर्ण स्वतन्त्र होनेके समय देशमें जो अराजकताकी सृष्टि कर रहे हैं, यह निन्दनीय है। समाचार आया है कि तीन जिलोंमें कम्यूनिस्टोंने प्रतिद्वन्द्वी सरकारकी स्थापना की है। बर्मा हमारा पड़ोसी है। इस संकटमें उसके साथ हमारी पूरी सहानुभूति है। बर्माके साथ हम अपनी मैत्री मजबूत करना चाहते हैं। इसी समय बर्मासे एकशिष्टमण्डलप्रधानमंत्री थाकिननूके साथ यहां आया है जो हमारे प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूका इस समय दिल्लीमें अतिथि बना हुआ है। एशियाई देशोंके साथ हमारी सहानुभूति और दिल-चस्पी स्वाभाविक है। हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि हमारी तरह बर्मा भी केवल हमारे ही साथ नहीं अन्य एशियाई देशोंके साथ भी घनिष्ट सम्पर्क रखना चाहता है। दिल्लीमें भारत और बर्माके प्रधान मन्त्रियोंके बीचमें जो वार्तालाप हो रहा है, हमें आशा है कि उसके फलस्वरूप हम दोनों मिलकर आम एशियाई देशोंके सहयोगसे एक ऐसी नीति निर्धारित कर सकनेमें सफल होंगे जो जिसके परिणाम स्वरूप केवल बर्मा और भारतको ही नहीं सम्पूर्ण एशियाको स्वार्थी विदेशियों द्वारा फलायी गयी अराजकतासे पूर्णतया मुक्तकर सकेंगे।

नियन्त्रण हटेगा ?—

खाद्यपदार्थ नीति निर्धारण कमेटीकी बहुमत समर्थित सिफारिशें और भारत सरकारके खाद्य सचिव डा० राजेन्द्र प्रसाद ने गत सप्ताह बम्बईमें एक प्रेस सम्मेलन में नियन्त्रण हटानेके सम्बन्धमें जो वक्तव्य दिया है उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि ८ या १० दिसम्बरको भारत सर-

कार नियंत्रण हटानेके पक्षमें अपना अन्तिम फैसला दे देगी। चीनीपरसे नियंत्रण हटानेकी सरकारी घोषणा होते ही चीनीके दाम जितना बढ़ गये हैं उसीसे यह सहज अनुमान किया जा सकता है कि खाद्य पदार्थों और वस्त्र परसे नियन्त्रण हटते ही लोगोंका रहन सहन १०० से दो सौ प्रतिशत अधिक महंगा हो जायेगा। सम्भवतः इसी बातको लक्ष्यमें रखकर डा० राजेन्द्र प्रसादने यह कहा है कि सरकारी कर्मचारियों और औद्योगिक तथा व्यवसायिक श्रमजीवियोंको अतिरिक्त महंगाई भत्ता देनेकी सिफारिशके प्रश्न पर सरकार विचार कर रही है। अतीत का अनुभव हमारे सामने है। जीवनके लिये आवश्यक एवं उपयोगी वस्तुओंके मूल्यमें जितनी वृद्धि हुई है साधारण, सरकारी और व्यावसायिक श्रमजीवियोंके पारिश्रमिकमें उस अनुपातसे बहुत कम वृद्धि हुई। फलतः सम्पूर्ण युद्धकाल और युद्ध समाप्तिके बाद अबतक श्रमजीवी मात्रको साधारणतया अधभूखा और अधनंगा ही समय काटना पड़ा है। स्वतंत्र भारतकी हमारी राष्ट्रीय सरकारको आज इस प्रश्नपर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये। नेहरू राज्यमें भी यदि साधारण श्रमजीवी जीवनके लिये आवश्यक वस्तुएं न प्राप्त कर सके तो इसकी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया कहां तक हो सकती है, यह सहज ही समझा जा सकता है।

श्रमिकोंको आश्वासन—

गरीब जनताके रहन सहनके स्तरको ऊपर उठानेके प्रश्नको ही सर्वोपरि रख कर कांग्रेसने सर्वाधिक लोक प्रियता प्राप्त की। आज स्वतंत्रता प्राप्त कर लेनेके बाद कांग्रेस सरकारका सर्व प्रथम यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने अबतकके किये वादोंको पूरा करनेकी दिशामें कदम बढ़ाये और दरिद्रता एवं कष्टोंके मारसे पिसे जाते श्रमजीवियों और किसानोंको शोषण एवं उत्पीड़नके चंगुलसे मुक्त करके वास्तविक अर्थोंमें जनताका राज्य स्थापित करे। हर्षकी बात है कि कांग्रेस अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसादने उस दिन बम्बईमें हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघकी एक सभामें हिन्दुस्तानके तमाम श्रमजीवियोंको इस बातका आश्वासन दिया है कि भारत सरकार असंख्य श्रमिकोंके प्रति अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वको पूर्णतया पहचानती है। उनकी भलाई राज्यकी प्रथम चिन्ता है और भारत सरकार इस दिशामें सुविस्तृत योजना तैयार कर रही है। डा० राजेन्द्रप्रसादने श्रमिकोंसे भी यह आशा प्रकट की है कि देशके भविष्यके निर्माणमें खास कर आजके जैसे नाजुक समयमें, उनको देशके औद्योगिक उत्पादनको चोटी पर पहुंचा कर परम महत्वपूर्ण हिस्सा बटाना है। हमें विश्वास है कि सरकार श्रमिकोंको अपने कर्त्तव्य पालनमें रंच मात्र पीछे नहीं देखेगी बशर्ते कि वह उद्योगपतियोंको भी आजके नाजुक समयमें उनका कर्त्तव्य महसूस करा सके।

बंग विशेषाधिकार बिल—

पश्चिम बङ्गाल असेम्बलीमें प्रस्तावित विशेषाधिकार बिलमें सरकारी कर्मचारियों एवं पुलिस अफसरोंको विशेष अधिकार देनेका प्रस्ताव किया गया है। इस बिलके पक्ष और विपक्षमें काफी चर्चा हो रही है। कोई इसे नागरिक स्वाधीनताके लिये घातक और कोई समयोपयोगी बता रहे हैं। कुछ वाम पंथी राजनीतिक दलोंने इस बिलके विरोधमें काफी आंदोलन मचा रखा है। पश्चिम बङ्गालके प्रधान मन्त्री डाक्टर प्रफुल्ल घोषने बिलके विरोधियोंको उत्तर एवं जनताको आश्वासन देते हुए साफ कहा है कि निम्नलिखित चार गंभीर विषयोंके सिवा इस बिलका प्रयोग नहीं किया जायगा। वे चार विषय ये हैं—साम्प्रदायिकताका दमन, गैर कानूनी हथियार, तोड़-फोड़, चोरीसे सीमा पर जाने वाले सामान और गुण्डईको रोकना। प्रधान मन्त्री डाक्टर घोष कांग्रेसके तपे-तपाये नेता और जनताके अपने हैं इसलिये वे कोई काम ऐसा करेंगे जो उसके ही विरुद्ध हो, यह असम्भव है। हम उनके आश्वासन पर विश्वास करते हैं। लेकिन साथ ही पश्चिमी बङ्गाल सरकार और डा० घोषसे यह कह देना चाहते हैं कि प्रस्तावित बिल का आशय कितना भी पवित्र क्यों न हो उसकी भाषा इतनी उलझन भरी है कि उससे भ्रम होना स्वाभाविक है। बिलके पढ़नेसे पता चलता है कि कोई भी सरकारी अफसर किसी भी व्यक्तिको 'खतरनाक' कहकर गिरफ्तार कर सकता है। वह खतरनाक है भी या नहीं इसके प्रमाणकी भी आवश्यकता नहीं। उसका इरादा खतरनाक काम करनेका है--बिलके अनुसार इतना कहना ही काफी होगा। इस सिलसिलेमें हम इतना ही कहना चाहते हैं कि जनमतको परखकर ही हमारी सरकारोंको कानून बनाने चाहिये। यह तो अंग्रेजी राज्यकी परम्परा थी कि जनता चिल्लाती ही रह जाती थी कानून बन जाते थे। कांग्रेस सरकारोंको कानूनके जरिये 'विशेषाधिकार' प्राप्त करनेकी आवश्यकता ही नहीं है जब उनके पास जनता द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकार मौजूद है।

फिलस्तीनका बटवारा

संयुक्त राष्ट्र संघने पर्याप्त बहुमतसे अरब और यहूदी दो राज्योंमें फिलस्तीन के विभाजनका फैसला कर दिया है। किन्तु इस फैसलाके हो जानेसे ही संकट टल जायेगा, यह नहीं कहा जा सकता। खेदकी बात है कि संघने इस मामलेमें फिलस्तीनको संघ राज्य में परिणत करने एवं प्रत्येक यूनिटको स्वायत्त अधिकार प्रदान करनेके भारतके सुझावको नहीं स्वीकार किया। निस्सन्देह संघ राज्यका नियन्त्रण तो अरब बहुमतके हाथमें रहता किन्तु यहूदी प्रदेशोंको स्वायत्त शासनाधिकार रहता। पर बड़ी बड़ी शक्तियां फिलस्तीनके बंटवारे पर तुली हुई थीं और वही होकर रहा। भारत जानता था कि अरब बटवारेको सहज ही नहीं हो जाने देंगे, इसीसे उसने इसका जबर्दस्त विरोध किया। वही हो

रहा हैं। अरब इस बटवारेके विरोधमें जबर्दस्त सैन्य संगठन कर रहे हैं। फिलस्तीनमें इस समय अराजकता फैली हुई हैं। अरब तुले हुए हैं कि यहूदी राज्यकी स्थापना हरगिज नहीं होने देंगे। अतः इसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण मध्यपूर्वमें अशान्ति, अराजकताकी सृष्टि होनी अनिवार्य है और इसका उत्तरदायित्व ब्रिटेन, अमेरिका और रूस तीनों पर हैं।

चार बड़ोंका सम्मेलन—

लन्दनमें होनेवाला चार बड़े वैदेशिक मन्त्रियोंका सम्मेलन किसी महत्वपूर्ण निर्णय पर पहुंचे बिना समाप्त होगा, यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है। सोवियट रूसके परराष्ट्र सचिव मोलोटोवने यह प्रस्ताव उपस्थित किया था कि सम्मेलन दो मास तकके लिये स्थगित कर दिया जाय। उनके प्रस्तावमें कहा गया था कि चार बड़े परराष्ट्र सचिव याल्टा और पोटसडमके निर्णयोंके आधारपर जर्मनी के साथ शांति सन्धिका निश्चय करें। और वे दो मासके अन्दर अपने प्रस्ताव पेश कर दें। मि० मार्शल कहते हैं कि याल्टा और पोटसडमकी भाषाका जो अर्थ रूस लगाता है वह हम नहीं लगाते। उन्होंने कहाकि ज्यादा बिलम्ब करना उचित नहीं। इन समस्याओंका समाधान होना चाहिये। मो० मोलोटोवने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। इसके सिवा जर्मन सन्धिके विषय में अभीतक कोई निर्णय नहीं हुआ हैं और न फिल हाल होनेके लक्षण ही मालूम हो रहे हैं क्योंकि सबके अलग अलग स्वार्थ हैं और उन्हींके अनुसार आचरण।

फ्रांसमें गतिरोध—

फ्रांसमें देश व्यापी हड़तालें और तोड़-फोड़का बाजार गर्म है। मर्साई, पेरिस आदि शहरोंमें पुलिस और हड़तालियोंमें संघर्ष भी हुए हैं और यत्रतत्र होनेके संवाद प्राप्त हो रहे हैं। फ्रांसकी वर्तमान सरकारके सामने महान सङ्कट उपस्थित हो गया है। हड़तालों और तोड़-फोड़को रोकनेके लिये उसने तोड़-फोड़ विरोधी कानून बनाया है। इस कानूनके अनुसार किसी भी व्यक्तिको हड़तालके लिये प्रोत्साहन देने या काम करनेमें बाधा पहुंचाने पर ५०,००० फ्रांक जुर्माना देना पड़ेगा। किसीके पास अस्त्र-शस्त्र बरामद होने एवं कोई तोड़-फोड़का काम करने पर उसको इससे दूनी सजा भोगनी पड़ेगी। अब प्रश्न है कि आखिर फ्रांसमें यह सब क्यों हो रहा है। इसके कारणोंमें सबसे पहली बात वहांके श्रमिकोंकी दयनीय स्थिति, द्वितीय, सत्ता प्राप्त करनेकी चालें और तीसरे विदेशी शक्तियोंका प्रोत्साहन और कूटनीति है। फ्रांसकी राजनीतिसे दिलचस्पी रखने वाले जानते हैं कि वहां सत्ता प्राप्तिके लिये ऐसी घटनाएं इधर कई वर्षोंसे होती चली आ रहीं हैं। महायुद्ध की समाप्तिके बाद फ्रांसमें ब्रिटेन औररूसके सिवा अमेरिका भी पहुंच गया है। यूरोप के अन्य छोटे-मोटे देशोंकी भांति वह फ्रांस पर भी अपना पूरा आधिपत्य चाहता है। अमेरिकाके प्रधान मन्त्री मि० मार्शलने फ्रांसमें गतिरोधका अध्ययन करनेके लिये और अपने अनुकूल लोगोंको सलाह देनेके लिये एक 'मिशन' भेजा है। यदि फ्रांसके सभी दलोंने मिलकर इस गतिरोधका शीघ्र अंत न किया तो स्थिति बिगड़ती नजर आती है।

कांग्रेस प्रेसिडेण्ट भी—

विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि भविष्यमें संघ मन्त्रिमण्डलकी आपसी बैठकोंमें कांग्रेस प्रेसिडेण्ट भी आमन्त्रित रूपमें भाग लेगा। कहा गया है कि कांग्रेस और सरकार के बीचमें घनिष्ट सम्पर्क रखनेके ख्यालसे इस प्रकारका निश्चय किया गया है। यद्यपि बाकायदा प्रस्ताव पास कर यह फैसला नहीं हुआ किन्तु इस सुझावको सभीने स्वीकार किया है। हम नहीं कह सकते कि इस समाचारमें कहां तक सत्यता है, किन्तु यदि यह सत्य हो तो इसका अर्थ यह है कि कांग्रेसके भीतर आचार्य कृपलानी गुटको सन्तुष्ट करनेके लिये ही यह मार्ग अवलम्बन किया गया है। स्वतन्त्र जनवादी सरकारकी स्वस्थ प्रगतिके लिये हम इस प्रकारके मार्ग अवलम्बनको अवांछनीय और अनावश्यक हस्तक्षेप समझते हैं।

राजेन्द्र जयंती--एक मजेदार घटना-

गत सप्ताह ३ दिसम्बरको देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसादकी वर्षगांठ थी। उस दिन उन्होंने ६४ वें वर्षमें पदार्पण किया देश भरमें राजेन्द्र जयन्ती मनायी गयी और देशवासियोंने अपने प्यारे देशरत्नके प्रति श्रद्धा प्रकट की एवं उनके दीर्घजीवनकी प्रार्थना की। इस सिलसिलेमें बम्बईमें एक दिलचस्प घटना घटी। उसका उल्लेख करना आवश्यक है। श्री एस० के० पाटिलके नेतृत्वमें उस दिन कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंका एक दल चुपचाप राजेन्द्रबाबूके बम्बई स्थित निवास स्थानपर आ उपस्थित हुआ। राजेन्द्र बाबू उस समय प्रातःकालीन जलपानमें व्यस्त थे। कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उनको मालाएं पहनायी। इस प्रकार अचानक मालाएं पहनानेसे वे चौंके और अभिनन्दन करनेवालोंकी ओर चाह भरी नजरसे देखा मानो वे पूछ रहे हों कि आखिर यह मामला क्या है? कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंने उनके मौन प्रश्नका आशय समझकर बता दिया कि अभिनन्दनका कारण क्या है। राजेन्द्र बाबू चुपचाप सुननेके बाद बोले कि इसके पहले मैंने कभी भी अपनी वर्षगांठ नहीं मनायी। और सच बात यह है कि आज ही मेरा जन्मदिवस है और आज ही मैंने ६४ वें वर्षमें पदार्पण किया है—यह मुझे अभी मालूम हुआ है। डाक्टरराजेन्द्रप्रसादके समानकार्य व्यस्त नेताके लियेइस प्रकारकी बात स्वाभाविक ही है। विधान परिषद और कांग्रेस जैसी दो संस्थाओंके वे सभापति हैं लिहाजा उनको अपनी वर्षगांठ की याद रखनेका अवकाश कहां? साथ ही यह भी बात सत्य है जो नेता देश और जनताके बारेमें इतना तन्मय होगा उसे देश कभी नहीं भूलेगा।

दो नावों पर पैर रखनेमें खतरा है

लेखक—श्री देवदत्त मिश्र

भारतीय पार्लमेण्टके सामने स्वतंत्र भारतके प्रथम अर्थ सचिव द्वारा २६ नवम्बरको पहला बजट उपस्थित किया गया। निस्संदेह हमारे अर्थ सचिव श्री षण्मुखम चेट्टीकी पहली बजट वक्तृता सुनकर देशके धनपति, उद्योगपति और पूंजीवादके समर्थक एवं पोषक अर्थ शास्त्री आश्वस्त और प्रसन्न हुए होंगे, उन्होंने राहतकी सांस ली होगी और मन ही मन अपने भगवानको धन्यवाद दिया होगा कि उठते बैठते, सुबह शाम, दिन रात समाजवादी अर्थ प्रणालीके प्रचलनकी चर्चा करने वाली कांग्रेसकी सरकारने, गनीमत है, कम से कम इस बार तो फिर देशका शोषण करनेका पट्टा जारी ही कर दिया। एक गांठ तो कटी। पूर्व स्थिति बनाये रखते और पूंजीवादी समाजको निर्भय करते हुए ओटाव पैक्टके समय देशके स्वार्थों की उपेक्षा करनेवाले चतुर षण्मुखम चेट्टीने अपनी असमर्थता पर बनावटी अश्रुपात द्वारा युग युगसे शोषित वर्गों की सहानुभूति खीचनेका प्रयास करते हुए कहा है "साधारण स्थितिमें यह भाव प्रकट करते लज्जा होती। एक मुद्दतसे हम ऐसी स्वतन्त्रताके लिये सतत संघर्ष नहीं कर रहे थे, कि स्वतन्त्रता मिलने पर भी वही पुराना ढर्रा जारी रहे और हमें उसी पर सन्तोष करना पड़े। स्वतंत्रताका सच्चा अर्थ यह है कि हम अभाव व्यवस्थाकी पुरानी अर्थ को प्रगतिशील विस्तारकरनेवाली अर्थ व्यवस्थामें परिणत करें" आंसू बहाकर दूसरोंके आंसू सुखानेका प्रयत्न करते समय भी श्री षण्मुखमने इस बातका ध्यान रखा है कि कहीं भावुकता और सहृदयता उनको पराभूत न कर ले। इसलिये बड़ी सावधानीके साथ खूब सोच समझकर आपने प्राचीन कालीन अभावकी अर्थ व्यवस्थाको प्रगतिशील फैली हुई अर्थ व्यवस्थामें' परिणत करनेकी बात कही है। किंतु यह कहते समय उन्होंने शायद इस बातका ध्यान नहीं रखा कि जिन कोटि कोटि अर्द्ध बुभुक्षित और अर्द्ध नग्न नरनारियोंके आंसू पोछनेका प्रयत्न उन्होंने किया है वे यह टेढ़ी मेढ़ी, घुमाव फिरावकी भाषा कम समझते हैं। वे तो स्वतंत्र भारतके प्रथम अर्थ सचिवसे यह सुनना चाहते थे कि उनको भरपेट अन्न, आवश्यकतानुसार वस्त्र मिलने वाली अर्थ व्यवस्था, जो देशके मुठ्ठी भर लोगों के लौहागारमें जंजीरोंसे जकड़ी बिलख रही है, कब मुक्त वातावरणमें विचरण करेगी। यही कारण है कि उनकी लच्छेदार भाषा, जिसने अवश्य ही देशके कुबेरपतियोंके हृदय कमलोंको प्रफुल्लित कर दिया है, जनसाधारणके हृदय द्वार तक भी नहीं पहुंच सकी और वे उसकी रस माधुरीका उपभोग करनेसे वंचित ही रहे।

बजट—संक्षेपमें

श्री षण्मुखमने १५ अगस्त १९४७ से ३१ मार्च १९४८ तक अर्थात साढ़े सात महीनेके लिये बजट पेश किया है जिसमें आमदनी १७२ करोड़ ८० लाख और खर्च १९७ करोड़ ३९ लाख बताया गया है। खर्चमें ९२ करोड़ ७४ लाख रक्षा, २६ करोड़ शरणार्थियों और २४ करोड़ अन्नाभावकी पूर्तिमें सहायता पर खर्च किया जायेगा। वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए जहां तक खर्चकी मदें हैं ठीक ही हैं। इस खर्चके अनुसार २६ करोड़ २४ लाखका घाटा है, पर इस घाटेको पूरा करनेके लिये सरकारकी आमदनी बढ़ाने को कोई नये उपाय नहीं सुझाये गये। स्पष्ट है कि अर्थ सचिव देशके पूंजीपतियोंकी लम्बी जेबमें हाथ डालना नहीं चाहते। हमारे आर्थिक जीवनकी कठिनाइयोंको बढ़ाने वाली दो बातें हैं—रुपयेकी नकली कीमत जिसे स्फीत मुद्रा या इनफ्लेशन कहते हैं और अन्नाभाव। अर्थ सचिवने इन दोनों कठिनाइयोंका सामना करनेके लिये एक ही उपाय बताया है। और वह है उत्पादन। आप कहते हैं जीवनोपयोगी तमाम वस्तुओंका उत्पादन बढ़ानेमें देश अपनी तमाम शक्ति लगा दे। दूसरे शब्दोंमें उन्होंने यह कहा है कि देशके श्रमिकऔर किसानोंका कर्तव्य है कि वे उत्पादकाकी आमदनी पर अतिरिक्त भार न लाद कर वर्तमान स्थितिको स्वीकार कर पूरी तरह उत्पादन बढ़ायें इस प्रयत्नमें वे भले ही मरमिटें पर देशके अर्थ पतियोंकी वर्तमान आम दनी पर आंच न आने पाये। आपने श्रमिकोंको अर्थ यतियोंकी सुविधाओंके सामने भाड़ में झोंक दिया है। उत्पादनके लिये वर्तमान अवस्थामें जितनी पूंजी देशको चाहिये वह धन कुबेरोंके तहखानोंसे निकालनेका प्रयत्न न करके उसे वहीं दबी ही रहने दिया है और यह भय प्रकट किया है कि यदि अतिरिक्त मुनाफे या उसी तरहके अन्य टैक्स लगाकर थोड़ेसे हाथोंमें संचित राष्ट्रकी सम्पत्ति निकालनेकी कोशिश की जायेगी तो देशके सामने भयङ्कर स्थिति उत्पन्न होगी क्योंकि उस हालतमें उत्पादनके लिये प्रर्याप्त पूंजी न मिलेगी अर्थात पूंजीवादी समाज अपने पास पहुंची पूंजीको भूगर्भस्थ कर देगा और इस तरह समाजका अस्तित्व ही खतरेमें पड़ जायेगा। हमें आश्चर्य है कि स्वतंत्र

भारतका अर्थ सचिव इसप्रकार बोल रहा है। किन्तु आश्चर्य शायद इसलिये होता है कि हम यह भूल जाते हैं कि आजका स्वतन्त्र भारतका अर्थ सचिव देशके उन गण्यमान्य व्यक्तियोंमें एक हैं जिन्होंने ब्रिटिश शासन-कालमें देशके स्वतन्त्रता आन्दोलनका सदा विरोध किया और हर आड़े समयमें देशके विरुद्ध ब्रिटिश सरकारका साथ दिया। हमें खेदके साथ लिखना पड़ता है कि आज भी हमें यह भूलने नहीं देते।

यदि उद्योग कुछ व्यक्तियोंके लाभके लिये संचालित करनेका रास्ता नहीं अख्तियार किया जाता है तो हमारे अर्थ सचिव यह कहते हैं कि वैसी हालतमें उद्योगको चलाने के लिये पर्याप्त पूंजीका अभाव होगा और ऐसी स्थिति दरिद्रता और निराशा पैदा करेगी। हम यह जानना चाहते हैं अर्थ सचिवसे नहीं अपनी पहली स्वतंत्र सरकारसे—जिसके नेताओंने अधिकारमें आनेके पहले देशके कोटि-कोटि निवासियोंका विश्वास डंकेकी चोट यह ऐलान करके प्राप्त किया कि सबसे पहले गरीबी और दुरवस्थाका अन्त किया जायेगा—यह पूछना चाहते हैं कि देशके रहन सहनके स्तरको ऊंचा उठाने और अन्न वस्त्राभावसे मुक्त करनेके इरादेसे देशकी औद्योगिक उन्नतिके लिये आवश्यक पूंजी प्राप्त करनेके लिये कौनसे उपाय काममें लाये जा रहे हैं? अर्थ सचिवकी बजट वक्तृता इस पर प्रकाश तो डालती ही नहीं उलटे व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित होकर पूंजी रोकनेवालोंकी हिमायत करती है। आपको इस बातका क्षोभ है कि पिछले बजटमें अतिरिक्त मुनाफा करके रूपमें राजस्व बढ़ानेकी चेष्टा की गयी और कहते हैं कि इसीका प्रभाव है कि "उत्पादन कार्यके लिये पूंजी के संगठनमें रुकावटें आ रही हैं।" यही कारण है कि उन्होंने अपने बजटमें इस तरहके किसी टैक्सकी परिकल्पना तक नहीं की। वे हमारे राष्ट्रीय उद्योग धन्धेको पूंजीके अभावमें 'अविकसित स्थितिमें पड़े रहना देख सकते हैं किन्तु पूंजी पतियोंको असन्तुष्ट करनेका साहस नहीं कर सकते। साहस कहें या दुस्साहस उन्होंने किया है प्राइवेट उद्योगको प्रोत्साहन देकर। आज जब कांग्रेस और कांग्रेसकी सरकारके प्रधान नायक राष्ट्रके मुख्य मुख्य उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणकी बातें कर रहे हों, समाज वादी आर्थिक व्यवस्था कायम करके देशको सदियोंके शोषण और निष्पेषणसे मुक्त करनेका आश्वासन दे रहे हों उस समय प्राइवेट उद्योगको प्रोत्साहन देनेका अर्थ समाजी करणकी प्रगतिको अवरुद्ध करनेके सिवा और क्या हो सकता है? क्या हम यह समझें कि हमारी राष्ट्रीय सरकार इतना कमजोर है कि वह मुट्ठी भर शोषकोंकी चढ़ी हुई भृकुटियोंसे डरकर उन कोटि कोटि नर नारियोंके मौलिक स्वार्थोंकी उपेक्षा करने जा रही है जिनके बल पर उसने परम शक्तिशाली ब्रिटिश सरकारका तख्ता उलट दिया। क्या हम यह समझें कि जिस सरकारको पंडित गोबिन्द बल्लभ पन्त, जो संयुक्त प्रान्तके प्रधान मंत्री और कांग्रेस हाई कमाण्डके एक सदस्य हैं, इतना शक्तिशाली बताते हैं कि "संसारकी कोई ताकत उसे हिला नहीं सकती और विश्वासके साथ मैं यह कह सकता हूं कि तीन अथवा चार महीनेकी अग्नि परिक्षाओंमें हम सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हुए हैं और अब किसीमें ताकत नहीं है कि हमारी स्वतंत्रता ले सके अथवा हमें आगे बढ़नेसे रोक सके" वह सरकार इतना कमजोर और साहसहीन है कि आज उसके अर्थ सदस्यको मुट्ठी भर पूंजीपतियोंको सन्तुष्ट करनेके लिये यह कहनेकी आवश्यकता पड़ती है कि "हमारे आर्थिक ढांचेका अन्तिम स्वरूप कुछ भी क्यों न हो, मेरा यह विश्वास है कि अभी बहुत वर्षों तक उद्योगके क्षेत्रमें निजी अध्यवसायकी आवश्यकता और गुंजाइश है। हमारी औद्योगिक अर्थ व्यवस्थाके निर्माणमें निजी उद्योग व्यवसायने जो दीर्घकालीन अनुभव प्राप्त किये हैं उसे खो देनेकी स्थितिमें हम नहीं हैं। मेरा विश्वास है कि हमारी अर्थ व्यवस्थाका जो साधारण स्वरूप होगा उसमें प्राइवेट और स्टेट दोनों अध्यवसायोंके लिये गुंजाइश रहेगी।"

अभी उस दिन तकके 'सर' षण्मुखम चेट्टीसे इसके सिवा और आशा ही क्या की जा सकती है! किंतु हमारा यह विश्वास है कि मात्र साढ़े सात महीनेके लिये बजट तैयार करनेके समय हमारी कांग्रेस सरकार घरेलू और बाहरी समस्याओंके समाधानमें इतना अधिक व्यस्त थी कि इस दिशामें वह सम्यक रूपेण पर्याप्त ध्यान नहीं दे सकी, अन्यथा इसमें जनताकी आवश्यकताओंकी जैसी उपेक्षा की गयी है और धनपतियोंको जिस तरह चिकनी चुपड़ी बातोंसे प्रसन्न करनेकी कोशिश की गयी है, वह न हुआ होता। दो नावों पर पैर रख कर संकटकी नदी पार करनेका प्रयत्न कितना खतरनाक है यह कांग्रेसके बतानेकी आवश्यकता नहीं है। देशकी आवश्यकताओंके सम्बन्धमें कांग्रेसकी नीति बिलकुल स्पष्ट है। गैर कांग्रेसी मिनिस्टर, अब कांग्रेसमें शामिल हो चुके हैं, उनको अपनी नीति और रुख वैसा ही बनाना पड़ेगा। यदि वे अपने स्वभावकी लाचारीके कारण देशको अपनी सेवाओंसे वंचित रखनेकी धमकी देंगे जैसा श्री षण्मुखमने उद्योगपतियोंके लिये कहा है कि हम उनके अनुभवसे वंचित रहनेकी स्थितिमें नहीं हैं तो उनको हम स्मरण करा देना चाहते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी भी यही कहा करते थे कि हिंदुस्तान अभी इस स्थितिमें नहीं है कि ब्रिटेनके बिना उसका काम चल सके। यदि हम अंगरेजोंके बिना अपना काम चला सकते हैं और ब्रिटिश सरकारको भारतके सम्बन्धमें अपनी पूर्व नीति और विचार बदलनेको बाध्य कर सकते हैं तो इन गैर कांग्रेसी मिनिस्टरोंकी क्या बिसात है। या तो ये अपने सदी पुराने सड़े विचार और धारणाएं बदलेंगे या उस आसनको रिक्त करेंगे जिसपर जनताका सच्चा प्रतिनिधि ही बैठा रह सकता है। आशा है कि हमारे अर्थ सचिव इस तथ्यको मार्च १९४८ के पहले ही समझ लेनेकी कोशिश करेंगे, यही उनके लिये श्रेयस्कर है।

भाषावार विभाग

आचार्य श्री मन्नारायण अग्रवाल लिखते हैं:—

"नयी नयी विद्यापीठें खोलनेके बारेमें आपका लेख 'हरिजन' में पढ़ा। मैं यह मानता हूं कि भाषावार प्रान्तोंकी रचनाके पहले नयी विद्यापीठें स्थापित करनेमें कठिनाई होगी। लेकिन प्रांतोंको भाषाके आधार पर बनानेमें कांग्रेसकी ओरसे इतनी ढिलाई क्यों हो रही है, यह मैं समझ नहीं सका हूं। कांग्रेस सन १९२० से ही यह मानती आई है कि प्रांतोंकी पुनर्रचना विविध भाषाओंके अनुसार हो। लेकिन मौका आने पर अब इस कामको लम्बानेकी या टालनेकी कोशिश की जा रही है, ऐसा मेरा खयाल है। विधान-परिषदमें भी इस विषयको स्थगित सा कर दिया गया है। यह बात मुझे उचित नहीं जान पड़ती। बिना भाषावार प्रान्त-रचना हुए न तो शिक्षाका माध्यम मातृभाषाको बनाना आसान होगा और न अंग्रेजीको राजभाषाके स्थानसे हटाना सरल होगा। बम्बई, मद्रास और मध्य प्रांत बरार जैसे बेढंगे और बहुभाषी प्रांतोंका हमारे नये विधानमें स्थानही नहीं होना चाहिये। और अगर हमने इस प्रश्नको टालनेकी कोशिश की, तो एक ही प्रान्तके विभिन्न भाषा बोलनेवालोंका पारस्परिक विद्वेष अधिक बढ़ता जायगा। बहुभाषी प्रान्त रखनेसे भाषा द्वेष कम नहीं होगा, बल्कि दिन दिन बढ़ेगा, यह स्पष्ट है। आज देशके सामने हिन्दू-मुस्लिम समस्याने भयंकर रूप धारण किया है और हमारे नेताओंकी शक्तियां उसी ओर अधिक लगी है, यह ठीक है। लेकिन अगर देशका बंटवारा करना ही था, तो कई साल पहलेही कर लेना था। उस हालतमें इतनी खूनखराबी न होती। इसी तरह अगर हमें प्रान्तोंका बंटवारा भाषावार करना है, तो देरी करनेसे कोई फायदा नहीं होगा। नुकसान ही होगा, क्योंकि कटुता बढ़ती जायगी।"

मुझे कबूल है कि जो उचित है, उसे अब करना चाहिये। बगैर कारणके रुकना ठीक नहीं। इससे नुकसान भी हो सकता है। पापके साथ हमारा कोई सरोकार नहीं हो सकता।

फिर भी भाषावार सूबोंके विभागमें देर होती है, उसका सबब है। उसका कारण आजका बिगड़ा हुआ वायुमण्डल है। आज हर एक आदमी अपना ही देखता है, मुल्कका कोई नहीं। मुल्ककी ओर जानेवाले, उसका भला सोचनेवाले लोग है जरूर, लेकिन उनकी सुने कौन? अपनी ओर खींचनेवाले लोग शोर मचाते हैं, इसी लिये उनकी बात सब सुनते हैं। दुनिया ऐसी हैं न?

आज भाषावार सूबोंका विभाग करनेमें झगड़ेका डर रहता है। उड़िया भाषाको ही लीजिये। उड़ीसा अलग सूबा बन गया है, फिर भी कुछ-न-कुछ खींच रही ही है। एक ओर आंध्र, दूसरी ओर बिहार और तीसरी ओर बंगाल है। कांग्रेसने तो भाषावार विभाग सन १९२० में किया। बाकानून तो उड़िया बोलनेवाले सूबेका ही हुआ। मद्रासके चार विभाग कैसे हो? बम्बईके कैसे? आपसमें मिल कर सब सूबे आवें और अपनी हद बना लें, तो बाकानून विभाग आज बन सकते हैं। आज हुकूमत यह बोझ उठा सकती है? कांग्रेसकी जो ताकत १९२० में थी, वह आज है? आज उसकी चलती है?

आज तो दूसरे हकदार भी पैदा हो गये हैं। ऐसे मौके पर हिन्दुस्तान बेहाल सा लगता है। आज तो संप (मेल) के बदले कुसंप (फूट) है, उन्नतिके बदले अवनति है, जीवनके बदले मौत है! जब कौमी झगड़े बन्द होंगे, तब हम समझ सकेंगे कि सब ठीक हुआ है। ऐसी हालतमें भाषावार विभाग लोग आपसमें मिल कर कर लें, तो कानून आसान होगा, अन्यथा शायद नहीं।

बहादुरी या बुजदिलीकी मौत

एक बङ्गाली दोस्तने पूरवी पाकिस्तानसे हिन्दुओंके हिजरत करने पर बङ्गालीमें एक लम्बा खत लिखा है। उसका सार यह है कि अगरचे उन जैसे कार्यकर्त्ता मेरी दलीलको समझते और उसकी तारीफ करते हैं, और साथही बहादुरी और बुजदिलीकी मौतके फर्कको भी समसमझते है, मगर मामूली आदमीको मेरे बयानमें हिजरत करनेकी ही सलाह नजर आती है। वह कहता है कि "अगर हर हालतमें मौतसे ही पाला पड़ना है, तो धीरज रखनेकी कोई कीमत नहीं रह जाती है। क्योंकि इंसान मौतसे बचनेके लिये ही जीता है।"

इस दलीलमें उस बातको पहलेसे ही मान लिया गया है जिसे साबित करना है। इन्सान सिर्फ मौतसे बचनेके लिये ही नहीं जीता। अगर यह ऐसा करता है, तो मेरी सलाह है कि वह ऐसा न करे। उसे मेरी सलाह है कि अगर वह ज्यादा न कर सके, तो कमसे-कम मौत और जिन्दगी दोनोंको प्यार करना सीखे। कोई कह सकता है कि यह एक मुश्किल बात है और इसपर अमल करना और भी मुश्किल है। मगर हर अनुचित और महान काम मुश्किल तो होता है। ऊपर उठना हमेशा मुश्किल होता है। नीचे गिरना आसान है और उसमें अक्सर फिसलन होती है। जिन्दगी वहीं तक जीने लायक होती है, जहां तक मौतको दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त माना जाता है।

हवाई-यात्राका एक पहलू

-:*:-

लेखक—प्रो० जे० सी० कुमारप्पा

जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे हैं वैसे वैसे कमसे कम अमीरोंके लिये हवाई यात्रा एक मामूली बात होती जा रही है। इस किस्मकी यात्राको बढ़ावा देनेके लिये हर तरीकेसे कोशिश की जा रही है। इसलिये समाजमें हवाई यात्रा स्थानको समझ लेना हमारा फर्ज हो जाता है।

जब हम किसीको 'काफी घूमा हुआ आदमी' कहते हैं तो उसपरसे हमलोग यात्राको कितना महत्व देते हैं इसकी कल्पना आ जाती है। ऐसे आदमीसे हम उम्मीद करते हैं कि उसने हर तरहके लोगों और विभिन्न अवस्थाओं तथा परिस्थितियोंसे अनुभव प्राप्त किया होगा। इसलिये दूसरे लोगोंके जीवनका निकट परिचय प्राप्त होनेके कारण हम ऐसा आदमी विकसित दृष्टिकोण वाला, जानकार और सुसंस्कृत होनेकी आशा रखते हैं। इस तरह यात्राके साथ बहुत से लाभ सम्बन्धित हैं। पुराने जमानेमें भारतमें तीर्थयात्राएं यात्राके इन्हीं सांस्कृतिक पहलुओं पर आधारित थीं, यद्यपि उनको धार्मिक रंग दे दिया गया था।

मुसाफिरको सफरमें अलग-अलग समयोंमें अलग-अलग प्रकारके लोगोंसे पाला पड़ता है। वह उन लोगोंसे बातचीत करता है, उनकी विचारधारासे परिचय प्राप्त करता है, उनके रस्म रिवाजों पर ध्यान देता है और इन सबकी अपने घर की परिस्थितिसे तुलना करता है। यही आदत अन्ततोगत्वा सांस्कृतिक उन्नति का साधन बनती है। इसीलिये हम अपने बालकोंको यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने को प्रोत्साहित करते हैं जिससे उन्हें शिक्षा मिल सके और मानवके बारेमें उनकी जानकारी बढ़ सके। यदि यात्राको इस निगाहसे देखें तो 'हवाई यात्रा' की उक्ति गलत साबित होती है। आज जो हवाई-यात्रा है वह साफ-साफ वस्तुएं ढोना भर है। अभी आदमी यहां है, दूसरे क्षण हवाई जहाजके द्वारा वह दूर पहुंच जाता है। एक मुसाफिर आज सुबह कराचीमें है और आज ही आजमें रातको लन्दन में पहुंच सकता है। लेकिन उसके ज्ञान, संस्कृति अथवा जानकारीमें कोई भी वृद्धि नहीं होगी। यह सामानका ही ढोना हुआ जैसा कि दूसरे मालोंका, उदाहरणार्थ कपासकी एक गांठका होता।

यह दलील पेश की जा सकती है कि इसमें समयका बचाव होता है। पर क्या इस समय की बचतसे आदमीकी जिन्दगी की लम्बाईमें कुछ इजाफा हुआ नहीं! इसका तो केवल यही मतलब हुआ कि आदमीने अपनी जिंदगीके समयका कुछ अंश सांस्कृतिक विकासमें न लगाकर अपने व्यवसायमें लगा लिया। क्या जब छोटे बच्चेको स्कूल न भेजकर उसे मवेशी चरानेके लिये भेजते हैं तो उसके समयकी बचत होती है? हम उस बालकको उसके संस्कृतिके हिस्सेसे वंचित कर देते हैं। जिन्दगीका मतलब अपना समय, सारा। सारा समय अपने ही व्यवसायमें लगा देना नहीं होगा। यदि आदमीको सामाजिक जीव बना रहना है तो उसे अपना विकास करके अपने भाई बहनोंसे नजदीकी रिश्ता कायम करना होगा। हवाई यात्रा आदमीको सामाजिक जीव बनने देने के बजाय एकाकी और खुदगर्ज बना देती है। कह सकते हैं कि वह स्वार्थको प्रोत्साहन देती है। इसलिये समयकी बचत असलमें समयको सांस्कृतिक बातोंसे निकालकर स्वार्थ कामोंमें लगानेका ही दूसरा नाम है। जब हम जिन्दगीकी खूबसूरतीको उसके मौलिक रूपमें न देखकर उसे सांस्कृतिक विकासके पैमानेसे नापते हैं तो समयकी बचतमें कोई गुण नहीं दिखाई देता। दूसरे शब्दोंमें कहें तो यह जीवनके मानवी पहलूका संकोचकर पाशविक पहलूका विस्तार करना है। तनहा या एकान्त कैदकी भी यही नींव है। हवाई सफरमें पंखेकी बहरा बनानेवाली आवाज और जगहकी तंगीमें साथी मुसाफिरोंसे कोई बातचीत कर सकना नामुमकिन सा हो जाता है।

यह बिलकुल इसी तरह है जैसे कि किसी आदमीको कमरेकी सब खिड़कियां बन्द करके उसमें एक कुर्सीपर यात्रा-काल तक लगातार बैठा रहनेको कहा जाय। कुर्सी चाहे कितनी ही आरामदेह क्यों न हो वह असहनीय हो जाती है। चारों तरफ देख नहीं सकते - एक तो खिड़कियां छोटी छोटी होती हैं और दूसरे खाली आंखसे कुछ दिखाई भी नहीं देता। लम्बी दूरियां तय करनेवाले जहाज जमीन से १५ से १८ हजार फुटकी ऊंचाईपर उड़ते हैं। इसका मतलब हुआ कि आप तीन मील दूरकी चीज ही देख सकते हैं। इससे ज्यादातर नीचे धुंधला नीला और ऊपर गहरा नीला दिखाई देता है और उतरनेकी जगहोंके आसपासको छोड़कर बहुत कम पेड़ या इमारतें तक पहचानमें आती हैं। दिमाग बन्द, नजर धुंधली और कान बहरे, ऐसी हालतमें मुसाफिर घण्टों—दिन हो या रात—एक जगह बैठा रहता है और जब उतरता है तो पीठ दर्द करती है और वह "लक्ष्य स्थान तक पहुंच गये," कहता हुआ ठण्ढी सांस लेता है। यह है आधुनिक यात्रा'!

(शेष ३६ पृष्ठपर)

हिन्दी या उर्दू

डाक्टर-ब्रजमोहन.
पी. एच. डी. काशी विश्वविद्यालय

(१)

किसी देशमें किस ढंगका नाज पैदा होता है, कौन कौनसे फल होते हैं, किस प्रकारकी तरकारियां होती हैं—यह सब बातें देशके जलवायु पर निर्भर हैं। जलवायुका प्रभाव देशके निवासियों पर भी पड़ता है—उनके रहन सहनका ढंग उनकी भाषा, उनके कपड़े, उनके रीति रिवाज—यह सब जलवायुके प्रतिविम्ब हैं। भारतवर्ष में कपड़ेकी अधिकांश मिलें बम्बई प्रांतमें ही क्यों है, इसका कारण लोग यह बताते हैं कि वहां एक प्रकारकी काली मिट्टी होती है जो कपासकी खेतीके लिये बहुत उपयुक्त है। गेहूं पंजाबमें क्यों अधिक होता है इसके भी कई कारण हैं। कलईके वर्तन मुरादाबादमें ही क्यों अधिक होते हैं, इसका भी कारण है और विश्वविद्यालयोंमें ही प्रौक्सी क्यों अधिक होती है, इसका भी कोई न कोई कारण अवश्य होगा।

जलवायुका प्रभाव हमारे जीवनपर इतना अधिक पड़ता है कि यदि हमारा वातावरण बदल दिया जाय तो हमें कष्ट होता है।

जलवायुका प्रभाव हमारे खान पान पर भी बहुत गहरा पड़ता है। लाहौरसे आप पंजाब मेलमें बैठकर कलकत्तेके लिये चलिये, रास्ते भर खिड़कीसे बाहर मुंह मत निकालिये। स्टेशनों पर जो आवाजें खोमचे वालोंकी आपके कानोंमें आयेंगी, उन्हींसे आप पहचानते चले जायेंगे कि कौनसे प्रांतमें चल रहे हैं।

इसी प्रकार हमारी भाषाका गठन भी जलवायु पर निर्भर है। मद्रास प्रान्तकी भाषाओंमें ड और और ड़ बहुत अधिक आता है, इस बातका सम्बन्ध वहांके जलवायुसे अवश्य कुछ न कुछ होगा। बंगाल की बोली बहुत कोमल है, पंजाबका उच्चारण सख्त है युक्त प्रांतकी बोली न इतनी कोमल है जितनी बंगला, न इतनी सख्त है जितनी पंजाबी। बंगलामें कुछ क्रियायें हैं चलिबे, खाबे, पीबे, जाबे, युक्तप्रान्तमें कहते हैं चलोगे, खाओगे, जाओगे या नहीं जाओगे; पंजाबमें कहेंगे जावेंगा कि नहीं जावेंगा, खावेंगा कि नहीं खावेंगा। बंगालमें अक्षरोंका उच्चारण है कौ, खौ, गौ, घौ, ङौ, युक्तप्रांतका उच्चारण है क, ख, ग, घ, ङ, पंजाबका उच्चारण है का, खा, गा, घा, ङा। यदि बंगालकी बोली को 'पड़ी बोली' कहें तो युक्तप्रांतकी है 'बैठी बोली' और पंजाबकी है 'खड़ी बोली'। यह शब्दावली मेरी अपनी ही है।

यह अन्तर तो बहुत स्थूल है। इनके अतिरिक्त भिन्न २ स्थानोंकी बोलियोंमें सूक्ष्म अन्तर भी होते हैं। किसी बड़े देश में भाषा एक हो सकती है परन्तु बोलियां अनेक होती हैं। भाषा और बोलीमें अन्तर है। आप लोग पूछेंगे कि क्या अन्तर है। भाषा भाषा ही है बोली बोली ही है। बोली उसे कहते हैं जो जबान से बोली जाये। भाषासे मतलब साहित्यिक भाषासे है। भाषा और बोलीमें सदैव अन्तर रहा है और रहेगा। यद्यपि इंगलैंड एक छोटासा देश है तथापि उसमें भी कई बोलियां हैं। उदाहरणार्थ एक शब्द लीजिये 'फर'वेल्समें इसको कहते हैं फर। इसमें 'आर' का अक्षर आवर्त्त दशमलवकी तरह घूमता है। दक्षिणी इंगलैंड वाले कहते हैं 'फर,' उत्तरी इंगलैंड वाले कहते हैं 'फः'—उसमेंसे र उड़ जाता है—स्कोटलैंड वाले कहते हैं 'फै'।

फ्रांसमें भी दो तरहकी बोलियां हैं, दक्षिणी फ्रेंच और पेरिसकी फ्रैंच। जिस शहरको हमलोग पेरिस कहते हैं उसे दक्षिणी फ्रांसमें कहते हैं पेर—एस तो बोला नहीं जाता। पेरिसकी फ्रैंचमें र का उच्चारण लगभग ऐसा होता है जैसा हमारे ग का। इसलिये उत्तरी फ्रांसमें पेरिसका उच्चारण हैं 'पेग'।

युक्त प्रान्तकी भाषा मुख्यतः हिन्दी है परन्तु बोलियां कई एक हैं। एक कहावत है कि हर बारह कोस पर बोली बदल जाती है। इस प्रकार तो युक्त प्रान्तकी बोलियां ही असंख्य हो जायंगी, परन्तु मान लीजिये कि इस प्रान्तको हम भाषाके आधार पर तीन भागोंमें बांटते हैं: पश्चिमी भाग, मध्य भाग, और पूर्वी भाग। पश्चिमी भागमें कहते हैं "हम नहीं जायेंगे," मध्य भागमें कहते हैं "हम नाहीं जइहें" और पूर्वी भागमें कहते हैं "हम नाहीं जाइब"। यह तीनों बोलियां अलग अलग हैं, परन्तु भाषा तीनोंकी हिन्दी ही है। दस वर्ष पहले जब मैं बनारसमें पहले पहल आया था, तो यहांकी बोलीसे बिल्कुल अनभिज्ञ था।

यहां पहली बार मैंने 'पान' को 'पनुआ' और 'दवाई' को 'दवइया' कहते सुना था। उन्हीं दिनों का जिक्र है कि मैंने नौकरसे कहा कि एक धोबी ढूंढ़ ला। सन्ध्या समय नौकरने कहा 'बाबजा धोबी पइलन'। उसका मतलब था कि एक धोबी उसे मिल गया। मैंने उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया। मैंने समझा कि 'पइलन' किसी धोबीका नाम है। 'पइलन' नाम पर आश्चर्य तो अवश्य हुआ, परन्तु मैंने सोचा कि दुनियांमें अजीब अजीब ढंगके नाम होते हैं। एक दिन मैंने किसी अखबारमें एक व्यक्तिका नाम पढ़ा था 'स्टेशन सिंह'। मैंने सोचा यदि 'स्टेशनसिंह' नाम हो सकता है तो पइलन नाम भी हो सकता है। अगले दिन सुबह जब धोबी आया तो नौकर बोला 'बाबूजी धोबी अइलन'। मैंने सोचा कि अभी 'पइलन' नामके धोबीसे तो मैं निपट ही न पाया था कि अइलन नामका दूसरा धोबी आन पहुंचा। खैर, उस समय मैं किसी काममें व्यस्त था इसलिये मैंने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी। आधे घण्टे बाद जब मैं अपने कामसे निपटा तो मैंने नौकरसे पूछा कि धोबी कहां है? नौकर बोला, "बाबूजी धोबी गइलन"।

अब प्रश्न यह उठता है कि हमारी राष्ट्र भाषाकी क्या रूप रेखा होनी चाहिये। इस बात पर तो अब बहुमत हो गया है कि राष्ट्र भाषा 'हिन्दी उर्दू या हिन्दुस्तानी- इन्हीं तीनोंमेंसे कोई हो सकती है। ऊपर जो कुछ मैं कह चुका हूं उससे मेरा तात्पर्य है कि राष्ट्र भाषा एक ऐसी भाषा होनी चाहिये जो हिन्दुस्तानमें ही पैदा हुई हो। इसी देशमें पनपी हो और इसी देशमें पुष्पित, पल्लवित और फलित हुई हो। अब इस कसौटी पर हिंदी और उर्दूको कस कर देख लीजिये।

उर्दू का जन्म

उर्दूकी उत्पत्तिके बारेमें कई मतमतांतर हैं। कुछ लोग कहते हैं कि उर्दूके माने है 'बाजार' अतः उर्दू बाजारमें भिन्न भिन्न प्रान्तोंके निवासियोंके सम्पर्कसे पैदा हुई। दूसरा मत यह है कि उर्दूका अर्थ है लश्कर। यह भाषा मुगल राजाओंकी छावनीमें पैदा हुई। एक तीसरा सिद्धांत यह है कि उर्दू मुगल राजाओंकी दरबारी भाषा थी। इन तीनों सिद्धांतोंमें से कौन सा ठीक है इस पचड़ेमें तो मैं पड़ना नहीं चाहता। मैं यह मानता हूं कि उर्दू किसी प्रकार भी पैदा हुई हो, परन्तु इसी देशमें उत्पन्न हुई है और इस लिये एक स्वदेशी वस्तु है। परन्तु अब जरा उर्दूके विकास पर विचार कीजिये। जिस समय उर्दूकी उत्पत्ति हुई थी उस समय यह एक शुद्ध स्वदेशी भाषा थी। परन्तु अब उर्दूके पक्षपातियों की संकीर्णताके कारण यह भाषा दिन पर दिन विदेशी जामा पहनती जा रही है। यह बात मैं उर्दू कविताके तीन नमूने लेकर दर्शाता हूं।

वली दक्षिणके एक बहुत पुराने कवि हुए हैं। इनका रचना काल लगभग १७०० ईसवी था। इनको कुछ लोग 'उर्दूका' बाबा आदम कहते हैं। जिस भाषामें इन्होंने कविता की उसे दक्षिणी उर्दू या केवल दक्षिणी कहते हैं। इनकी कविताका नमूना देखिये।

मत गुस्सेके शोले सों
जलते को जलाती जा।
टुक महर के पानी सों
यह आग बुझाती जा॥
इस रैन अंधेरी में,
मत भूल पड़ूं तिससों।
टुक पांवके विछुओं की,
आवाज सुनाती जा॥
तुझ मुखकी परिस्तिश मे,
गयी उम्र गुजर मेरी।
ऐ बुतकी पुजनहारी,
इस बुतको पुजाती जा।
तुझ इश्कमें जलजल कर,
सब तनको किया काजल।
यह रोशनी अफजा है,
अंखियनको जलाती जा॥
(कुल्लियाते वली नं० ४४)

यह थी प्राचीन उर्दूकी रूपरेखा। इस कविताके भाव बिलकुल हिन्दी हैं, 'विछुओं की आवाज, 'मूर्त्ति पूजा' 'आंखों का काजल—सब हिन्दुस्तानी भाव हैं। इसकी भाषामें अधिकतर शब्द हिन्दीके हैं, अरबी फारसीके शब्द भी काफी हैं। परन्तु उनमेंसे अधिकतर ऐसे हैं जो मामूली बोलचालकी हिन्दीमें आ चुके हैं जैसे गुस्सा, आवाज, गुजर, बुत। केवल तीन शब्द ऐसे हैं जिन्हे हिन्दी भाषी नहीं समझ सकते, महर, परिस्तिश, रोशनी अफजा।

यदि आजतक उर्दू इसी रंगमें रङ्गी रहती, तो हिन्दी-उर्दूका झगड़ा उठही न पाता। इस ढङ्गकी उर्दू यदि आज भी कोई कवि लिखे, तो हिन्दी प्रेमी उसका खुले दिलसे स्वागत करेंगे। परन्तु हुआ क्याः—

जब वली दिल्ली पहुंचे, उस समय दिल्लीके तख्त पर शाहुल्ला गुलशन राज्य करते थे। उन्हें वलीका हिन्दीपन पसन्द न आया। उन्होंने वलीको एक पत्र लिखा कि "यह इतने सारे फारसीके मजमून जो बेकार पड़े हुए हैं, उनको अपने रेख्तेमें इस्तेमाल कर। कौन तुझसे हिसाब लेगा?"

(उर्दू रिसाला १७६ अप्रैल १९३२ ई०)

यदि यह पत्र न लिखा गया होता तो कदाचित आज उर्दूकी यह रूपरेखा न होती जो दिखाई दे रही है। पत्रके मिलते-ही वली अपनी कविताको फारसीके सांचे में ढालने लगे। उसके बादकी उनकी कविताका नमूना देखिये।

जब सनम को खयाले बाग हुआ।
तालिबे नशः ए फुराग हुआ॥
रश्क सो तुझ लबां की सुरखी के।
जिगरे लाला दाग - दाग हुआ॥
(कुल्लियात न० ५८)

इस रचना और पिछली रचनामें कितना अन्तर है। इस रचनामें आधेसे अधिक शब्द अरबी फारसीके हैं। परन्तु अभी तक वली हिन्दी पनको बिलकुल खो नहीं पाये थे। इसमें 'तुझ लबां' का वाक्यांश आया है। इसमें लबांका शब्द फारसी 'लब'

(शेष २०वेंपृष्ठ पर)

फिलिस्तीनकी उलझन पूर्ण समस्या

श्री जीवन

फिलस्तीनकी समस्या कोई नई नहीं, वरन् यह उसके जन्मके साथही उलझन पूर्ण रही है, जिसका आज तक समाधान नहीं हो सका है। उसकी भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक एवं धार्मिक परिस्थित तथा उसके निवासी—सभी निरंतर उसके लिए नई-नई समस्याएं पैदा करते रहे हैं। उसकी समस्याको सुलझानेकी बराबर कोशिशें होती आई हैं। पर 'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्योंज्यों दवा की, की नाई समस्या, सुलझनेके बदले उलझती ही गई। अब इस सम्बन्धमें संसारकी सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था—संयुक्त राष्ट्रसंघ—ने अपना कदम उठाया, किन्तु वह भी असफल रही, क्योंकि फिलस्तीनको अरब और यहूदी दो राज्योंमें बांट देनेके उसके फैसलेसे अरब उसके विरुद्ध युद्धकी तैयारियां कर रहे हैं।

फिलस्तीन भूमध्यसागरके पूर्वी किनारे पर बसा हुआ है। देशका क्षेत्रफल १२,४२६ वर्गमील और आबादी प्रायः १८ लाख है। उसके उत्तरमें सीरियाकी सरहद, दक्षिणमें स्वेजनहर तथा मिस्र और पूरबमें गर्डन नदी है। वह पुरानी दुनियांके मध्य में एशिया, यूरोप और अफ्रीका इन तीन महादेशोंसे मिला हुआ है, जिससे उसकी भौगोलिक स्थिति बड़ी ही महत्वपूर्ण है। मध्य पूर्व अपने तेलको लेकर प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए हैं। ईराकका तेल किरकुक की पाईप लाइन द्वारा फिलस्तीन ही आता और वहींसे जहाजों द्वारा बाहर भेजा जाता है। फिलस्तीनमें हवाई अड्डे तथा बन्दरगाह भी हैं। भौगोलिक स्थिति को लेकर ही साम्राज्यवादी फिलस्तीन पर अपना अधिकार स्थापित करनेको लालायित रहे हैं।

धार्मिक दृष्टिसे फिलस्तीन विभिन्न धर्मोंका केन्द्र एवं पवित्र स्थान रहा है। वहां प्राचीन सेमाइट, आर्य, स्लांव, हूण, अर्मीनियन, अरब, तुर्की, यहूदी, ईसाई आदि अनेक जातियोंके लोग बसे हुए हैं, एक दूसरेसे धर्म और मजहबके नामपर लड़ते रहते हैं। वह विभिन्न धर्मोंके अनेक महापुरुषों तथा प्रवर्तकोंकी जन्मभूमि रहा है। वहां न सिर्फ बेबिलोनियन और सीरियन आध्यात्मिक महापुरुष ही पैदा हुए थे, वरन जेसस क्राइस्ट और कौंस्टेंटाइनके समान ईसाई, मुहम्मद और उमर के समान मुसलमान, मोसेस, जरामिया, डेविड और सोलोमनके समान इजरेली, पौंपी और हिरोदेके समान रोमन, मामलुका खलीफा और सेलजुक तुर्कोंके समान मिस्री पैगंबरों और आध्यात्मिक गुरुओंकी अनेक शाखाएं-प्रशाखाएं वहां विद्यमान हैं। प्राचीन धार्मिक सिद्धांतोंके माननेवालोंका खयाल है कि महाप्रलयके समय सभी आत्माएं ईश्वरके समक्ष उपस्थित होती हैं और उनके पाप-पुण्यका लेखा-जोखा कयामतके दिन हुआ करता है। उस समय ईसा मसीह ईसाइयोंकी वकालत करेंगे, मुहम्मद साहब मुसलमानोंका पक्षपात करेंगे। मोसेस यहूदियोंकोस्वर्ग पहुंचानेकी चेष्टा करेंगे और ऐसे ही अन्य महापुरुष अपने-अपने मतावलंबियोंका पक्ष लड़ेंगे। जेरूसलेममें धर्मोंका पवित्र तीर्थ स्थान है। कहा जाता है कि यहीं यहूदियों के खुदा जेहोवा मोसेसके सम्मुख उपस्थित हुए थे और उन्हें 'ओल्ड टेस्टामेंट' दिया था। यहीं यहूदियोंकी 'रोनेवाली दीवाल' है, जिसके दर्शनके लिए शताब्दियोंसे सारे संसारके यहूदी आया-जाया करते हैं और जिसके बारेमें कहा जाता है कि प्रतिदिन रातमें एक श्वेत बत्तख इस दीवाल पर बैठकर दर्द भरे स्वरमें कूका करती है। यही ईसाइयोंका 'चर्च आव नेटिविटी' है, जहां ईसा मसीहकी पैदाइश हुई थी और यहीं उनकी कब्र भी है, जहां उन्हें दफनाया गया था। मुसलमानोंकी 'पाक मस्जिद' भी यहीं है, जहां मुहम्मद साहब स्वर्गमें खुदासे बातें करने गए थे। यहां आबे दस शैतान (शैतानके पुजारी) भी रहा करते हैं। देशकी आबादीमें अधिक संख्या अरबी मुसलमानोंकी है। यहूदियोंकी संख्या लगभग एक तिहाई है। ऐसे ही-ऐसे अनेक मतों-सम्प्रदायोंके लोग फिलस्तीनमें बसे हुए हैं। इस प्रकार फिलस्तीन विभिन्न धर्मोंका प्रबल गढ़ है और यही वजह है कि ३०० सालोंके धर्म-युद्धके जमानेमें फिलस्तीन विभिन्न कार्रवाइयोंका केंद्र-स्थल रहा।

फिलस्तीनका इतिहास कोई चार हजार वर्षोंका लिखित रूपमें विद्यमान है। 'तेल-एल-आमरा' के कुर्सी नामासे ज्ञात होता है कि प्राचीन कालमें फिलस्तीन मिश्रका ही अंग था। इसके बाद एक-एक कर बेबिलोन वालों, असीरियनों, फीनिशियनों और यूनानियोंने फिलस्तीन पर चढ़ाईकर अपनी-अपनी हुकूमतें कायम कीं। तत्पश्चात विजयी रोमनोंने फिलस्तीन पर कोई पांच सौ सालों तक राज्य किया। उन्होंने यहूदियोंको खदेड़ दिया और तभीसे यहूदियोंका जीवन अनिश्चित-सा हो गया। ७ वीं सदीमें अरबी मुसलमानोंने फिलस्तीनको जीत लिया और अपने शासन-कालमें उसे उन्नतिशील बनाया। उन्होंने नया जेरूसलेम बसाकर वहां एक विश्वविद्यालय भी स्थापित किया था। ११ वीं और १० वीं सदियोंमें फिलस्तीनमें ही यूरोपीय इतिहास प्रसिद्ध धर्म युद्ध (क्रूसेड्स) हुए। इसके बाद फिलस्तीन पर मिस्रके मामलूक वंशका शासन आरंभ हुआ। परंतु १६ वीं शताब्दीमें तुर्कोंने फिलस्तीन पर कब्जा किया और पूरे चार सौ सालों—१५१७से १९१७—तकके फिलस्तीनपर शासन करते रहे।

इस बीच प्रथम विश्व-महायुद्ध आरंभ हो गया था, जिसमें तुर्कोंके सुल्तान इस्लामी विश्व-बंधुत्वके खलीफा यानी प्रधान अधिकारी माने जाते थे। अंग्रेजोंको इस

बातका भय था कि कहीं सारी दुनियाके मुसलमान तुर्कीको लेकर अंग्रेजी साम्राज्यके खिलाफ न हो जायें। भारतीय मुसलमानोंको भी शांत रखनेकी जरुरत थी। इसलिये अंगरेजोंने कूटनीतिक चाल से काम लिया। उन्होंने अल हुसैन नामक एक अरबी नेताको जो मक्काके शरीफ कहलाते थे, अपनी ओर मिला लिया और उनके साथ २५ अक्तूबर, सन १९१५में सर हेनरीमैकमेहोनने एक स्वतन्त्र अरब राज्यकी स्थापना करनेका वादा किया। जिसे जेरूसलेमके दरवाजेसे प्रवेश करते वक्त लार्ड एलेनबीने भी सन १९१७ में स्वीकार किया था। सन १९१८ में लार्ड वैलफोरने फिर इसे दुहराया और लार्ड कर्जनने भी सन १९१९में इसे स्वीकृत करते हुए राजा फैजेलके साथ वादा किया। परन्तु, तबतक जर्मनोंने समुद्री सुरंगों, बम बरसाने वाले जेप्लिन वायुयान आदि नये नये वैज्ञानिक आविष्कार कर डाले थे, जिनके चलते अंग्रेजी साम्राज्य का अस्तित्व ही खतरेमेंमें पड़ गया था। जर्मनीके इन नूतन भयङ्कर अस्त्र शस्त्रों का भेद केवल जर्मनीके रहनेवाले यहूदियोंको ही मालूम था और अंग्रेजों को अपने साम्राज्यकी रक्षा करनी थी। फलस्वरुप यहूदियोंको अपने पक्षमें किसी भी कीमतपर मिलानेके लिये अंग्रेज तैयार हो गये और यहूदियोंने भी इस शर्तपर भेद बताना तथा अंग्रेजों की सहायता करना स्वीकार कर लिया कि फिलस्तीन यहूदियोंका बास-स्थान बनेगा। यद्यपि यह सत्य है कि यहूदियोंके लिये वासस्थान और जियोनिस्ट आन्दोलनकी भावना सन १८८० के बादसे हीशुरू हो गयी थी, फिर भी यहूदियोंको अबतक इस दिशामें सफलता नहीं मिली थी। २ नवम्बर १९१७ को यानी राजा फैजलके साथ वादा किये जानेके तीन सप्ताहोंके अन्दरही बैलफोरने यहूदी फैडरेशनके अध्यक्ष लार्ड राथचाइल्डके साथ फिलस्तीनमें यहूदियोंके राष्ट्रीय गृहकी स्थापना का वादा कर दिया।

प्रथम विश्व-युद्ध समाप्त हुआ। मित्र राष्ट्रोंकी विजय हुई। युद्ध घोषणाके समय ही मित्र राष्ट्रोंने सन १९१४ में कहा था कि हम युद्धोंके नाश और छोटे राष्ट्रोंकी रक्षाके लिये युद्ध करने जा रहे हैं और इससे संसारके छोटे तथा पराधीन राष्ट्रोंको बड़ी बड़ी आशाएं बंधी थीं, पर युद्ध समाप्त होते ही मित्र राष्ट्रों का रुख बदला और पीड़ित एवं पराधीन राष्ट्रोंकी आशा पर पानी फिर गया। युद्धकी समाप्तिके पश्चात लीग आवनेशन्सकी स्थापना हुई और उसने सन १९१० में फिलस्तीनकी संरक्षताका भार ब्रिटिश सरकारको सौंप दिया। उसके कानूनोंकी एक धारामें बताया गया कि फिलस्तीनको स्वतन्त्र समझा जाय, किन्तु इस शर्त पर कि जबतक वह अपने पैरों पर आप खड़ा होने लायक न हो जाय, एक शासनादेश (ब्रिटिश शासना देश) के अन्तर्गत रहे। अरबोंके साथ तो अंगरेजोंने ही पहले वादा किया था कि अरब एक स्वतंत्र राज्य होगा लेकिन वेही अंगरेज अब फिलस्तीन पर शासनादेशके बहाने राज्य करनेको आए। इसके अलावे अरब वालें फिलस्तीनमें यहूदियों को बसाने के भी विरुद्ध थे। फलतः सन १९२०, २१, २९ और ३३ में फिलस्तीनमें घोर अशांति मची रही, हत्याओं और विद्रोहोंका प्राबल्य रहा।

यद्यपि सम्राट पंचमजार्जने ७ जुलाई १९२० को अपना संदेश देते हुए कहा था कि अंगरेजी सरकार फिलस्तीनमें निष्पक्षतासे काम लेगी और देशमें जितनी जाति एवं धर्मवाले हैं, उनके अधिकारों का समादर किया जायगा। फिर भी फिलस्तीनमें पहले अंगरेजोंकी नीति यहूदी समर्थक एवं पक्षपात पूर्ण रही। सम्राट पंचमजार्जकी घोषणा अस्पष्ट थी और इससे यहूदियोंने काफी लाभ उठाया। यह तो प्रायः सभी जानते हैं कि यहूदी संसारमें सबसे धनी जाति है! अरबी मुसलमान मुख्यतया किसान और गड़ेरिये है। यहूदियोंने काफी पैसे खर्च कर गरीब अरबोंकी जमीनें खरीदना शुरू किया। अरबी लोगोंकी जगह बाहर से यहूदी मजदूर ही बुलाबुला कर फिलस्तीनमें भरे जाने लगे। इस बीच हिटलर ने सन १९२८ से ही यहूदी विरोधी नीति अख्तियार की, क्योंकि उसका विश्वास था कि प्रथम महायुद्धमें यहूदियोंके विश्वास घातके कारण ही जर्मनोंकी हार हुई थी। हिटलरने यहूदियोंको अपने देशसे बाहर निकालना शुरू किया। यहूदियों पर नाजी जर्मनों द्वारा तरह-तरहके जुल्म किये गये। ये निष्कासित यहूदी लाखों की संख्यामें फिलस्तीनमें आ-आकर बस गये। फिलस्तीनकी खेती और उद्योग में करोड़ों रुपये लगा कर उन्होंने अरबों को बहुत पीछे छोड़ दिया। नये नये वैज्ञानिक साधनोंको अपनाकर देशकी कृषि एवं उद्योगकी अत्यधिक उन्नति कर डाली। उनके कारण नये नये शहर बस गये, बस रहे हैं और पुराने शहरोंका जीर्णोद्धार हुआ है, हो रहा है। यहूदियोंने अपनी अनेक शिक्षण संस्थाएं खोलकर शिक्षाका प्रचार किया और अपनी भाषा तथा संस्कृतिकी रक्षा और जीर्णोद्धार किया, उसे विकसित बनानेके लिये कुछ उठा न रखा। दूसरी ओर, अरबोंमें अशिक्षा और गरीबी फैली रही। यहूदी अपने कल कारखानोंमें अरबोंको नौकरी नहीं देते और उनकी जमीनें हड़पते जा रहे हैं। साम्राज्यवादी अंगरेजों और अमेरिकनोंके साथ धनीमानी यहूदियोंकी सांठ गांठ रही है और उसीका परिणाम है कि दूसरे विश्वयुद्धके बाद अब फिलस्तीन में यहूदी राज्य स्थापित होने जा रहा है।

भारतीयताके प्रतीक—डा० राजेन्द्रप्रसाद

लेखक—श्री विनोदकुमार मिश्र

दिल्लीके चांदनी चौकमें लाखों नर-नारियों और युवकोंके जन-समूहके बीचमें, एक दुबला-पतला आदमी धोती और कुरतेके ऊपर देहातियों जैसी काली ऊनी बण्डी पहने हुए और कन्धे पर एक ऊनकी लोई डाले हुए मौन होकर चुप-चाप शान्तिके साथ पैदल चल रहा है। जनता बड़ी उत्सुक है कि राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादजी कहां हैं ? सर्दी पड़ रही है। जनता सर्दीके मारे कांप रही है, किन्तु फिर भी वह अपने राष्ट्रपतिका दर्शन करना चाहती है। कुछ मिनटोंके बाद जन-समूहके कानोंमें आवाज आयी कि वही बीचमें चलने वाले हमारे प्यारे देहाती राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू हैं। जनता यह सुन-कर सन्न रह गयी। फिर लाखों नर-नारियों और युवकोंने जय घोषसे आकाश गुंजायमान कर दिया। यह घटना १९३४-३५ की है। राजेन्द्र बाबूके जीवनमें ऐसी अनेक घटनाएं हैं। बम्बई कांग्रेस जब होने जा रही थी तब कुछ राजेन्द्र बाबूको ठीक न जानने वाले लोगों ने उन्हें देखा और कहा—यह 'गंवार-सा' यह 'सिम्पुलटन' ऐसे कठिन समयमें कांग्रेस का पथ प्रदर्शन क्या करेगा ? चुपचाप सेवा भले कर ले।' पर, जानने वाले जानते हैं कि राजेन्द्र बाबू ही पहले राष्ट्र-पति थे जिन्होंने अपनी असाधारण कार्य क्षमता दिखायी और देशमें तूफानी दौरा कर घर-घर कांग्रेसका सन्देश पहुंचाया।

उपर्युक्त घटनाओंसे राजेन्द्र बाबूकी सादगीका पता चलता है। राजेन्द्र बाबू देशके लाख लाख किसानोंके सच्चे प्रति-निधि—भारतीयताके यथार्थ प्रतीक हैं। राजेन्द्र बाबूकी शक्ल-सूरतमें कोई विशेष आकर्षण नहीं है। आकर्षण तो दूर रहा उलटे उनकी शक्ल-सूरत करुणोत्पादक जान पड़ेगी। कमजोर शरीर, गांधी टोपीके नीचे सिरसे सटाकर कटे हुए छोटे-छोटे बाल, लम्बी नाक, बड़ी-बड़ी किन्तु बिखरी हुई बे तरतीब मूंछे, खद्दरका कुर्ता-धोती, दमेकी पुरानी बीमारीसे कुछ मर्राई-सी आवाज—ये सब चीजें उनकेवाह्य रूपको एक प्रकारसे दयनीय बना देती है।

परन्तु उस खद्दर की टोपीसे ढके हुए मस्तिष्कमें अनोखी बुद्धिमत्ता है उन कोटरोंमें, धंसी हुई आंखोंमें वह ज्योति है, जो देशके उज्ज्वल भविष्य को देख सकती हैं। उन बिखरी मूंछोंके नीचेके ओठोंसे निकलने वाली मर्राई-सी आवाजमें सच्चाई की मिठास और जबर्दस्त दृढ़ता है। उनकी दमेसे पीड़ित प्रत्येक सांस राष्ट्रके हितके लिये और जनताके परोपकारके लिये उत्सर्ग है। उनकी दुर्बल भुजाओंमें वह शक्ति है, जो वर्षोंसे संसारकी सबसे शक्तिशाली शक्तिसे लोहा लेती रही है उनके सूखे चेहरे पर उच्च चरित्रकी छाप है और उस दुर्बल शरीरमें निवास करने वाली आत्मा ऐसी महान है, जिस पर कोई भी देश गर्व कर सकता है। इन सब के साथ साथ उनमें बच्चों-सा भोलापन, स्फटिक-सी पारदर्शी निष्कपटता, कुन्दन-सी खरी ईमानदारी तथा विरोधियोंके प्रति भी उदारता है और अतुलनीय विनम्रता।

आरम्भसे अन्त तक राजेन्द्र बाबू एक सेवक हैं। इस सेवाके साथ वह किञ्चित साधक भी हो गये हैं। और उन्होंने एक सीधा भक्ति एवं श्रद्धाका मार्ग पकड़ा है। इस मार्गमें सन्देह नहीं है, शंका नहीं है। संशय नहीं है। यह विश्वासका पथ है, यह आत्मदानका पथ है। गंगाके समान मानवताके विशाल क्षेत्रमें यह नदी बह रही है। इसमें सोनकी उग्रता नहीं और नर्मदाकी वक्रता भी नहीं। इसकी अपनी एक ही धुन है और एक ही आकांक्षा है—दरिद्रनारायणकी सेवा। इस सेवामें सत्य उसका लक्ष्य है, अहिंसा उसका साधन है और निष्कपट हृदय इसका प्रबलअस्त्र है। सन १९१० में राजेन्द्रबाबू श्री गोखलेके सम्पर्कमें आये थे। आप श्री गोखलेकी 'भारत सेवक समिति' में शामिल होना चाहते थे लेकिन स्वर्गीय बड़े भाई महेन्द्रबाबू की अनुमति प्राप्य न होनेके कारण शामिल नहीं हुए। उस समय आपने अपने बड़े भाइको जो पत्र लिखा था। उसकी एक एक पंक्ति आज चिल्ला कर कह रही है कि राजे-न्द्रबाबूमें सेवाकी जन्मजात भावना है। राजेन्द्रबाब ने उस पत्रमें लिखा था—"यदि मेरे जीवनमें कोई महत्वाकांक्षा रही है तो यही कि मैं अपने देशकी किंचित सेवा कर सकूं। मुझे में माताकी सेवाके अतिरिक्त कोई और महत्वाकांक्षा नहीं हैं।" आजसे ३७ वर्ष पहले लिखे गये इस पत्रमें राजेन्द्रबाबूका सम्पूर्ण जीवन बोलता है। राजेन्द्रबाबू आरम्भसे अन्त तक सेवक हैं। राजेन्द्रबाबू गांधीजीके सच्चे अनुयायी है। वे अन्ध भक्त नहीं—समझदार भक्त हैं।

राजेन्द्र बाबूके विकासमें उनके बड़े भाई महेन्द्रजी, जिन्हें राजेन्द्रबाबू पिताके समान मानते थे, कितने सहायक हुए इसका जिक्र करनेकी आवश्यकता नहीं। स्वदेशका प्रेम राजेन्द्रबाबूमें उनके भाईने स्कूलसे पैदा कर दिया था। जब १९०५ में बंग-भङ्ग आन्दोलन शुरू हुआ तो राजेन्द्रबाब का वह स्वदेश प्रेम पूर्ण रूपेण विकसित हुआ। राजेन्द्रबाबू ने अपनी आत्मकथामें लिखा है कि ७ अगस्त १९०५ की बड़ी सभामें जिसमें विदेशी वस्तुओंका बायकाट और स्वदेशीके प्रचारका निश्चय हुआ, मैं शरीक था। उसमें बहुत उत्साह था। लोगोंने व्रत लिया कि स्वदेशीका ही वे व्यवहार करेंगे। मेरे लिये इसमें कोई कठिनाई नहीं थी। क्योंकि मैं बहुत

पहले ही से केवल स्वदेशी बस्तुओंका व्यवहार किया करता था।

राजेन्द्रबाबू बड़े मेधावी छात्र थे। कलकत्ता विश्वविद्यालयसे सन १९०२ में आपने एन्ट्रेन्सको परोक्षामें सर्व प्रथम स्थान पाया था। उस समय बंगाल, बिहार आसाम और बर्मा आदिके छात्र कलकत्ता विश्वविद्यालयके अन्तर्गत ही परीक्षाओंमें बैठते थे। राजेन्द्रबाबू प्रथम बिहारी थे, जिन्होंने यह सम्मान प्राप्त किया। उसके बाद राजेन्द्रबाबूने कलकत्ता विश्वविद्यालयकी कई परीक्षाएं पास की और प्रायः सबमें प्रथम रहे। शिक्षा समाप्त कर आप वकील हुए और ऐसे वैसे नहीं काफी नामी। राजेन्द्रबाबूने कलकत्ता हाईकोर्ट वकालत शुरू की थी। शमशुलहुदा साहबने उनको कई मुकदमे दिलवाये थे। प्रत्येक पेशीके पहले राजेन्द्रबाबू कानून पढ़ कर कोर्टमें जाते। एक बार जस्टिस आशुतोष मुखर्जीके इजलासमें एक मुकदमेकी पेशी हुई। राजेन्द्रबाबूके सीनियर वकील बहस कर रहे थे। राजेंद्रबाब मदद दे रहे थे। और नजीर पर नजीर पेश करनेके लिये उनके हाथमें देते जा रहे थे। सर आशुतोष सब देख रहे थे। कुछ देर बाद उन्होंने राजेन्द्रबाबूसे पूछा कि और कौन नजीर वहां है। बता दो किताबें मंगालूं। उस मुकदमेका फैसला लिखा गया, जो अपने ढंगका नामी माना जाता है। राजेन्द्रबाबू उसी दिनसे सर आशुतोषकी आंखोंमें आ गये। सर आशुतोषने राजेन्द्रबाबूको ला कालेजका प्रोफेसर बनाया। कलकत्ता और पटना दोनों हाईकोर्टमें राजेंद्रबाब की वकालत अच्छी चल रही थी। रुपयोंकी आमदनी भी बढ़ी, लेकिन राजेंद्रबाबू की 'कामरियापर चढे न दूजा रंग'। वे बराबर पहले जैसे ही रहे। सन १९१७ में गान्धीजीने चम्पारन-सत्याग्रह छेड़ा और राजेन्द्र बाब उनके दाहिने हाथ बने। सत्याग्रह सफल हुआ। देशने गान्धीजीको महात्मा और राजेन्द्र बाबको 'बिहारका गान्धी की उपाधि प्रदान कर सम्मान किया। अब राजेन्द्र बाब सेवाके राज मार्गपर थे। सेन

राजेन्द्र बाबू राजनीतिक नहीं एक साहित्याचार्य भी हैं। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे आपका संबंध बहुत पुराना है। कलकत्ता अधिवेशनके स्वागत मंत्री और पटना अधिवेशनके आप स्वागताध्यक्ष थे। नागपुर अधिवेशन में आपको अध्यक्ष बनाया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष पदसे दिया गया आपका भाषण हिन्दी साहित्यकी कीमती चीजोंमें एक है। राजेन्द्र बाबको सरल सुबोध और मुहावरेदार भाषा लिखनेमें कमाल हासिल है। आपकी स्मरण शक्ति गजबकी है आपको बड़ी-से बड़ी और छोटी-से छोटी बातोंकी याद भी हमेशा बनी रहती है। आप कभी किसी से पहचान हो जानेपर उसे नहीं भूलते हैं।

राजेन्द्रबाबने बिहारसे 'देश' नामक का हिन्दी साप्ताहिक पत्र भी निकाला था और उसका वर्षों तक सम्पादन किया। हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनानेके आप बड़े पक्ष पाती हैं। पटना विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालयमें हिन्दीको माध्यम बनानेके लिये आपने बराबर आवाज उठायी है। इसके अलावा आपने बिहार विद्यापीठकी स्थापनाकर राष्ट्रीय शिक्षाको प्रोत्साहन दिया। राजेन्द्रबाबूकी 'चम्पारनमें गान्धी,' 'खण्डित भारत', आत्मकथा आदि पुस्तकें हिन्दी साहित्यके अमूल्य रत्न हैं। राजेन्द्र बाबूके भाषणोंमें उत्तेजना नहीं रहती है, लेकिन वे एक शिक्षककी भांति अपनी विवेक पूर्ण बातें लोगोंके गले उतार देते हैं। वे राजनीतिज्ञों जैसी घुमा फिरा कर बातें करना नहीं जानते। अंग्रेजी भाषाका अगाध ज्ञान होनेपर भी उनकी हिन्दी 'खिचड़ी' नहीं होती है।

महाराजा जनक भगवान बुद्ध और सम्राट अशोकके बिहारका प्रतिनिधि—राजेन्द्र बाब आज देशके स्वतन्त्र हो जाने पर—हमारा राष्ट्रपति, देशका विधान प्रस्तुत करने वाली संस्था 'विधान परिषद' का अध्यक्ष और नवगठित भारतीय सरकारका खाद्य एवं कृषि मन्त्री हैं। वह देश का सच्चा सेवक है इसलिये राष्ट्रपति है, वह विधान और कानूनका अगाध पण्डित हैं, इसलिये विधान परिषदका अध्यक्ष हैं और वह लाख-लाख किसानोंका प्रतिनिधि, उन्हींकी तरह रहन-सहन और वेष भूषा वाला है इसलिये खाद्य और कृषि मन्त्री है। कृषि और खाद्य मन्त्रीकी हैसियतसे उसने इतना खाद्यान्न जमाकर दिया है कि देशके सिरसे अकालका भूत हट गया है। उसके विधान-परिषदके अध्यक्ष होनेसे जनवादी विधान बन रहा है और उसके राष्ट्रपति होनेसे राष्ट्रके सामने उपस्थित तमाम उलझनोंका समाधान अनिवार्य है। उसके जीवन पर प्रकाश डालना इतने छोटे लेखमें सम्भव नहीं। अन्तमें हम सुमनजीके शब्दोंमें कहते हैं:—

—और राजेन्द्र बाबूका विश्लेषण क्या किया जाय? उनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। यहां तो सब दूध ही दूध है इसमें मिलावट नहीं पानी नहीं। उनके रंग-रूप और उनकी आन्तरिक महत्ता दोनोंको देखकर तो ऐसा मालूम होता है मानों एक अटपटी और बेडौल हांडीमें भगवानने आकण्ठ अमृत भर दिया हो। जो स्वभावसे ही किसीका अकल्याण चाहनेमें असमर्थ है जो दूसरोंके प्रति पूर्ण ईमानदार है—वह हैं राजेन्द्र प्रसाद।

यह शरीर सेवा। यह जीवित श्रद्धा। यह मूर्त्त त्याग। इसे हम क्या कहें। इसे तो हम ले ही ले सकते हैं और वह देनेमें कब कुण्ठित हुआ है, उसने आत्मदानमें कब प्रवञ्चना की है?

नरेश ही देशको स्वाधीन करायें

लेखक—राजा महेन्द्र प्रताप

मेरा सदैवसे ऐसा मानना रहा है कि हमारे भारतीय नरेश ही इस देशको आजाद करा सकते हैं और उन्हें ऐसा चाहिये भी। यह सत्य है कि मैं एक कांग्रेसी हूं, किन्तु मैं उन कांग्रेसी कार्यकर्ताओंसे जो ऐसा सोचते हैं कि वर्तमान युग में राजाओंका होना निष्प्रयोजन है, सहमत नहीं। यदि इंगलैंडका बादशाह आज भी सिंहासन पर बैठ एक महान गणतान्त्रिक देशका शासन सूत्र संभाल सकता है तो हमारे देशके राजे, महराजे और नवाब भी हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृतिको आगे रख कहीं उससे भी अधिक कर सकते हैं।

मेरा विश्वास है कि हम एक ऐसे युगमें रह रहे है जब कि हमारी प्राचीन आध्यात्मिक महत्ताएं समाजको शांतिप्रिय बना कर रखनेके लिये की गयी कितनी ही खोजोंके लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।

राजे या तो उस विचारधारा द्वारा, कि जिसका प्रपोषक वर्तमान रूस है, उठाये गये तूफानमें विलीन हो जायंगे और नहीं तो एक ऐसी आर्य सरकारकी स्थापना करेंगे जो कि पूंजीवादी अमेरिका और साम्यवादी रूसमें शान्ति स्थापित करानेकी दिशामें अग्रसर हो सकेगी। मेरा विश्वास है कि महात्मा गांधीके सिद्धान्त विश्वसंघ की स्थापना, धर्मोंका समन्वय और सहकारात्मक प्रणालीके मेरे दृष्टिकोणसे मिल मानवताको युद्धोंको ओर उन्मुख होनेसे रोक सकेंगे और समूची—मानवशक्तिको मानवमात्रके सुखी परिवारकी स्थापनाकी दिशामें प्रवाहित कर सकेंगे।

हमारे स्वतन्त्र विकास मार्गकी सबसे बड़ी कठिनाई पराधीनता है। १५ अगस्त को प्राप्त नकली आजादीके बावजूद भी हम ब्रिटेनके ही पीछे जुटे हुए हैं। इंगलैंड में एक महान संघर्ष छिड़ा हुआ है। धन सम्पन्न और शक्तिशाली वर्ग ब्रिटिश श्रमिकों से टक्कर ले रहा है। हम भारतीयोंको एक अथवा दूसरे ब्रिटिश पक्षका साथ देनेके लिये बाध्य किया गया हैं। केवल भारतीय शासक ही ऐसी संकटापन्न स्थितिमें देशकी वास्तविक रक्षा कर सकते हैं। हम हर प्रकारकी ब्रिटिश दासतासे मुक्त होना चाहते हैं और इस महान उद्देश्यकी पूर्तिमें हमारे राजे ही अपने सैन्य बल द्वारा जनता की सहायता कर सकते हैं। हर प्रकारकी बहकानेवाली बातें हमारे मध्य फूटके बीज बो पारस्परिक कलह मचानेके उद्देश्यसे कही गयी हैं।

काले अथवा भूरे शोषणकीप्रवञ्चना पूर्ण बातें हमें विदेशी शासनसे मुक्ति पानेके लिये प्रयत्नशील न होनेके लिये ही रची गयी हैं। मेरा कहना है कि सबसे पहले हम विदेशी बन्धनसे मुक्ति पालें, इसके बाद एक उच्च कोटिकी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था स्थापित करनेके लिये हमारे पास यथेष्ट अवकाश होगा। वे लोग जो कि वर्तमान में समाजवाद अथवा साम्यवादकी डींग मारते हैं, निस्संदेह हो वे हमारे विचारोंको असली दिशामें बढ़ने देनेसे रोकते हैं और विदेशी शासनका ही मार्ग निष्कंटक बनाते हैं।

हिन्दू, मुसलमान अथवा सिखके रूपमें फैली हुई विषमता, जो कि वैज्ञानिक ढंगसे रची और विकसित की गयी है, विदेशियों का ही स्वार्थ साधती है।

यह उन नरेशोंका कर्तव्य है कि ईरान से आसाम तक फैले हुए आर्योंको पूर्ण स्वाधीनता दिलानेकी दिशामें कदम बढ़ायें। किन्तु इन नरेशोंको हर सम्भव प्रकारसे बदनाम किया गया है और एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी गयी है, जिससे कि उनका बच सकना भी असम्भव हो गया है। मेरा सुझाव तो यह है कि वर्तमान नेता केवल ब्रिटिश सत्ताका विरोध मान करके ही 'नेता' बने हैं, किन्तु नरेश ब्रिटिश सत्ताको समूल अन्तकर नेता बनें।

मैं शासकोंको यह विश्वास दिला देना चाहता हूँ—कि यदि वे पूर्ण स्वाधीनताको ही अपना चरमलक्ष्य मानकर उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होंगे तो वे अवश्य ही जनताके दिलोंपर काबू पालेंगे और जन्म जात नेताके रूपमें माने जायंगे। जनताने दीर्घकाल तक बलशाली और विजयी नरेशों के गीत गाये हैं।

हमारे इस समाजमें जैसे कि ब्राह्मणों, सैय्यदों, बनियों, बोहरों कायस्थों और खत्रियोंने बौद्धिक क्षेत्र में नेतृत्व किया है, उसी प्रकार राजपूतों, पठानों, जाटों और मरहठोंने सदियों तक धरापर शासन किया है। यदि हमारे नरेश जो कि अतीत के वीरोंकी संतान हैं, अपने वीरत्वका परिचय देनेके लिये एकबार फिरसे मैदान में आ डटते हैं तो हमारे दुखोंका शीघ्र अन्त हो जाना निश्चित प्राय है।

श्रमिक, कृषक, किरानी अथवा घरका एक मामूली नौकर शांति और समृद्धिके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता। विधिवत स्थापित और रक्षित सरकारकी स्थापना कर केवल तुम्हीं [नरेश] उनको भरपेट रोटी दे सकते हो। धोखेबाज नेता उनको बहकाकर यत्र तत्र अशांतिकी आग भड़का रहे हैं। निम्न श्रेणीके लोगोंको इन नेताओं की हर मांगको पूरी करनेके लिये घोर परिश्रम करना पड़ता है। मैं कहता हूं कि हम हर झोपड़ीके द्वार तक पूर्ण स्वतन्त्रता का जय घोष पहुंचा सकते हैं और श्रमिकों को देशकी सम्पत्तिका भागीदार बना सकते हैं। प्रजामण्डलों तकने भी नगण्य लाभोंके लिये अपनेको संघर्ष रत बना लिया है। किन्तु नरेश अपना हर प्रजा, हर कृषक और श्रमिकके साथ हो, मातृभूमिकी रक्षा कर ईरानसे आसाम तकके आर्योंको पूर्ण स्वाधीन बना सकते हैं।

हिन्दी या उर्दू

(१४वें पृष्ठका शेषांश)

से निकला है। परन्तु इसका बहुवचन 'लवां' फारसी व्याकरणके अनुसार नहीं बनाया, ग्रामीण हिन्दीके अनुसार बनाया है। इसलिये कह सकते हैं कि वलीकी उर्दू का कलेवर बदल चुका था परन्तु उसकी आत्मा अभी तक हिन्दी थी।

उर्दू कविताके रचनाकालको मैं तीन भागोंमें बांटता हूं—प्राचीन काल, मध्य काल और आधुनिक काल। प्राचीन काल की रचनाका एक नमूना मैं आपको वली की कवितामें से दे चुका हूं। अब मैं आपको दो उदाहरण मध्य कालकी कविता में से देता हूं। प्राचीन कालमें तो उर्दू हिन्दीका ही रूपान्तर मात्र थी। मध्य कालमें उर्दू ने अपना पृथक अस्तित्व स्थापित कर लिया था; परन्तु उर्दू कवितामें अधिकतर शब्द मामूली बोल-चालके आते थे। अकबर कवि मध्य कालके अन्तिम प्रतिनिधियोंमें से थे। उनका एक शेर तो प्रसिद्ध हो गया है।

जब गम हुआ चढ़ा लीं दो बोतलें इकट्ठी।
मुल्लाकी दौड़ मस्जिद, अकबरकी दौड़ भट्टी॥

अकबरने लैला और मजनूं के विषय में एक कल्पित कहानी पद्यमें लिखी है।

कहा मजनूं से यह लैला की मांने।
कि बेटा, तू अगर करले एम०ए० पास॥
तो फौरन ब्याह दूं लैलाको तुझसे।
बिला दिक्कत मैं बन जाऊं तेरी सास॥
कहा मजनूं ने यह अच्छी सुनायी।
कहां आशिक, कहां कालिजकी बकवास॥
बड़ी बी आपको क्या हो गया है।
हिरन पर लादी जाती है कहीं घास॥
यह अच्छी आपने की कद्रदानी।
मुझे समझा है कोई हरचरनदास॥

इन रचनाओंमें फारसीके शब्द काफी हैं, परन्तु उनमेंसे अधिकतर ऐसे हैं जिनका मतलब सब कोई समझ लेते हैं। इनकी भाषाको 'सलीस उर्दू' अर्थात सरल उर्दू कह सकते हैं।

अब एक नमूना आधुनिक उर्दू की कविताका देखिये। यह मैं उर्दू के मौजूदा कवि 'जोश' मलीहाबादी की कवितामेंसे लेता हूं।

ऐ तू कि तेरी नाजुक हस्तीमें काम आई।
फितरत की इन्तहाई, तखईले दिल रुबाई॥

यह शेर सोलह आने आधुनिक उर्दू कविताका शेर है। यद्यपि मैंने हाईस्कूलकी परीक्षा उर्दू लेकर पास की थी तथापि मेरे लिये भी इस शेरका समझना आसान न था। यह आजकलकी उर्दू 'हिन्दुस्तानियत' अर्थात 'स्वदेशीपन' से कोसों दूर है। यह प्रसंग मेरे इस निबंधका केन्द्र विन्दु है इसलिये इसकी आलोचना विस्तार पूर्वक फिर करूंगा।

द्विवेदी युगकी महान—विभूति

व्याकरणाचार्य पं० कामताप्रसाद गुरु

लेखक—श्री उमाशंकर शुक्ल

हिन्दीको राष्ट्र भाषाका गौरवशाली पद प्राप्त हुआ-वह राजभाषा बनने जा रही है। हिन्दीके लिये जिन महान साहित्यिकों ने जीवन भर परिश्रम व त्याग किया—उनमेंसे स्व० कामता प्रसाद गुरुका भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है और उनकी साधना व तपस्याका ही फल है जो आज हिन्दीको हम इस रूपमें फलता फूलता देख रहे हैं। आज हिन्दीपर महान संकट आया हुआ है और ऐसे समयमें पं० कामता प्रसाद गुरुका हमारे बीचसे उठ जाना—एक बहुत ही दुःखद घटना है। मृत्युपर आज तक किसीने विजय नहीं प्राप्त की। मृत्युने सबपर विजय प्राप्त की—यह मृत्यु की विशेषता है।

संस्कृतमें महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी मुख्यतः व्याकरणका सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ है। उसका सम्बन्ध प्रधानतया संस्कृत भाषा तथा उसकी सूक्ष्म भाषा सम्बन्धी बारीकियोंसे है। संस्कृत साहित्य का इतिहास इसका विषय न होते हुए भी भाषा की खूबियोंको अच्छी तरह से दिखलानेमें विद्याके अन्य विभागोंका स्थान स्थानपर उल्लेख करना पड़ा है। वह इतने महत्वका है कि संस्कृत साहित्यके अनेक अज्ञात ग्रन्थ रत्नोंका इससे परिचय मिल जाता है। हिन्दीमें गुरुजीने व्याकरणका निर्माण कर इतना बड़ा कार्य किया है कि उन्हें हिन्दीका पाणिन कहा जाने लगा है। हिन्दी जगत उन्हें द्विवेदी युगके महान साधक के रूपमें देखता रहा है। हिन्दी भाषाके रूपरेखा और उसके सुडौलपनका श्रेय गुरुजीको ही है। उन दिनों जब भाषा की व्याकरणका कोई साहित्य न था और विदेशी कलमसे लिखी गयी भाषा भास्कर का प्रचार था—उस समय इन्होंने हिन्दी व्याकरणको जन्म दिया। भाषामें सौन्दर्य लाये। उसे प्रवाहमय बनाया। इसकार्यके लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया और वह काम इतना बड़ा है कि युगों तक पं० कामता प्रसाद गुरुका नाम नहीं भुलाया जा सकेगा। हजारों वर्ष बाद भी लोग गुरुजी के कार्य को आदर व श्रद्धाकी दृष्टिसे देखेंगे।

बाल जीवनकी एक घटना

पर वे सिर्फ व्याकरणाचार्य ही नहीं थे, किंतु हिंदीके सुकवि, मंजे हुए लेखक तथा सफल सम्पादक भी थे। 'सरस्वती' और 'बालसखा' का सम्पादन भी कुछ समय तक आपने किया था। बच्चोंके लिये लिखना बड़ा कठिन होता है और बहुत कम लोगोंको उसमें सफलता मिलती है पर गुरुजी बच्चोंके लिये बराबर लिखते रहे। यहां तक कि 'बालसखा' के वार्षिक विशेषांकमें भी उन्होंने लिखा। १९४६ के वार्षिक बालसखामें 'बचपनकी एक घटना' शीर्षक लेखमें उन्होंने लिखा था कि "मैं अपने नटखट स्वभावसे घरमें सभीको तंग किये हुए था। गरमीके दिनोंमें दोपहरको जब सब लोग कमरेमें आराम करते, तब मैं अपने उपद्रवोंकी सूचीमें से निश्चय करता कि मुझे आज दोपहरको कौन सा उपद्रव करना है, तालाबमें कूदकर दूर तक तैरते निकल जाना,वृक्ष पर चढ़ जाना, घोड़ेपर चढ़कर दूर निकल जाना बहुत मामूली बातें थीं।'

आगे चलकर उन्होंने लिखा है कि--इसी उपद्रवी स्वभावके कारण मैं अपने उस पहाड़ी घोड़ेकी मृत्युका कारण बना जिसके कारण कुछ दिन पूर्व पिताजीने मुझे पीटा था। जहां घोड़ा बांधा जाता था, उसी स्थानके पास बर्रोंका छत्ता था। मैं एक दिन दो पहरको अस्तबल गया और बिना समझे बूझे उन बर्रोंको भड़काकर मैं भाग खड़ा हुआ। मैं तो बच निकला—एकाध ने ही शायद, हाथमें कांटा, पर बेचारा घोड़ा उनके आक्रमणसे न बच सका। उन बर्रोंने समूह रूपसे घोड़ेपर हमला किया। घोड़ेको बड़ा कष्ट हुआ। हर प्रकारकी कोशिश और चिकित्सा की गयी पर वह तीन दिन बाद तड़प तड़प कर मर गया। इस घटनाकी याद कर मैं आज भी, अपनी नादानीके कारण, प्यारे घोड़े की मृत्युपर खेद प्रकट किया करता हूं।

पाठक देखेंगे कि गुरुजीने बच्चोंके लिये कितनी सीधी साधी और सरल भाषाका प्रयोग किया है। पर आजके हमारे लेखक जब बच्चोंके लिये लिखने बैठते हैं तो वे यह भूल ही जाते हैं कि वे बच्चोंके लिये लिख रहे हैं और अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित करनेके लिये कठिनसे कठिन शब्दोंका प्रयोग कर देते हैं और यही कारण है कि हमारा बाल साहित्य अन्य देशी भाषाओंके बाल साहित्यसे पिछड़ा हुआ है। आज हिन्दीमें गिजू भाई नहीं हैं।

बेटी की विदा-अमर रचना

कविताएं भी इन्होंने खूब लिखीं—पर जितना माधुर्य और करुणा इनकी 'बेटीकी बिदा' कविता में है—उतना शायद अन्य कवितामें नहीं। 'बेटीकी बिदा' कविता—पढ़कर तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। जब मैं बीस वर्ष पूर्व हिन्दीकी चौथी कक्षामें पढ़ता था-.उस समय हमें जो हिन्दीकी चौथी पुस्तक पढ़ाई जाती थी उसमें गुरुजीकी यही कविता थी। वह कविता जब मैं अपनी मांको पढ़कर सुनाता था तो वे रो देती थीं और उस दिन जब मैंने अपनी मां से कहा कि 'अम्मा तुम जानती हो--मैं छुटपनमें तुम्हें 'बेटीकी बिदा' कविता सुनाता

था और तुम रोती थीं। मांने कहा--हां जानती हूं--कहो क्या बात है। मैंने उत्तर दिया कि बात यह है कि उसी कविताको बनानेवाले पं० कामताप्रसाद गुरुका देहांत ७४ वर्षकी आयुमें गत १६ नवम्बरको जबलपुरके विक्टोरिया अस्पतालमें हो गया है। मां बहुत दुखित हुई। मां की आंखोंसे दो आंसू ढुलक पड़े। न जाने उन कितनी ही माताओंकी आंखोंसे उनके निधनका समाचार सुनकर आंसू ढुलके होंगे जिन्होंने 'बेटीकी बिदा' सुनी होगी। वह कविता मुझे इतनी अच्छी लगी कि जब मैं पांच वर्ष पूर्व चौथी कक्षाकी पाठ्य पुस्तक बनानेके लिये बैठा तो मैंने उसे स्थान दिया। यद्यपि मेरे कुछ सहयोगी कहते थे कि कविता पुरानी है--पर मैंने उन्हें कहा था कि पुरानी है तो क्या हुआ अच्छी तो है। मैं यहां पर उस कविताकी कुछ पंक्तियां उद्धृत करनेका लोभ नहीं संवरण कर सका हूं—

बेटीकी बिदाके अवसर पर मां अपनी समधनसे कहती हैं—

"पूजे कई देवता हमने
तब इसको है पाया।
प्राण समान पालकर इसको
इतना बड़ा बनाया।
आत्माही यह आज हमारी
हमसे बिछुड़ रही है।
समझाती हूं जी को तो
भी धरता धीर नहीं है।
बहिन ढिठाई माताकी तुम
मनमें नेक न धरियो।
इस कोमल बिरवाकी रक्षा
बड़े चावसे करियो।
है यह नम्र मेमने से भी
भीरु भृंगीसे बढ़ कर।
कड़ी बात या चितवन से
यह कंप जाती है थरथर॥
है गंवार यह भोली भाली
नहीं शिष्टता जाने।
तिस पर भी गुरुजन की
आज्ञा बड़े प्रेमसे माने।
सांचेमें तुम इसे ढालियो
कभी न यह तड़केगी।
बहिन सिखानेसे चतुराई
बेटी सीख सकेगी॥

* *

द्विवेदी युगके स्तंभ

गुरुजी बहुतही नम्र तथा सरल स्वभावके व्यक्ति थे। विनोदी भी खूब थे। हिन्दीकी उन्होंने जन्मभर तक सेवा की है और अन्तिम दिनों तक वे हिन्दी के भण्डारको भरते रहे। दुःख है कि उनका जितना सम्मान हिन्दीवालोंको करना चाहिये था—उतना नहीं किया गया। हिन्दीवालोंका दोष नहीं—यह उनकी आदत है। न जाने कितने साहित्यिक हमारे बीचसे उठ गये—सबका यही हाल रहा। मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, पं० रामचन्द्र शुक्ल आदिका हिन्दीवालोंने उनके जीवन कालमें सम्मान नहीं किया। हिन्दी वालोंके लिये यह लज्जाकी बात है। मध्यप्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन उन्हें अपना अध्यक्ष तक न बना सका और तो और। एक बार अध्यक्ष बनानेका निर्णय किया भी गया तो वे बीमार हो गये। गुरुजीने हिन्दीको बहुत दिया है। उनका प्रकाशित साहित्य इस प्रकार है—अंत्याक्षरी पद्यपुष्पावली, पार्वती और यशोदा, सुदर्शन, हिन्दुस्तानी, शिष्टाचार, देशोद्धार सत्य प्रेम, भौमासुर बध, विनय पचासा, हिन्दी व्याकरण। साहित्यकारके नाते गुरुजी की ख्याति द्विवेदी युगके सेवियों की कोटिमें है।

आजीवन शिक्षक

आपका जन्म पौष कृष्ण ६ सम्वत १९३२ को परकोटा सागरमें हुआ था। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आपका आस्पद पाण्डेय है। तथापि पूर्वजोंकी दीक्षावृत्तिके कारण वंशानुक्रमसे आप 'गुरु' कहलाते थे। आपके पूर्वज तीन सौ वर्ष पूर्व कानपुर जिलेसे आकर सागर जिलेके गढ़पहरामें बसे थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सागरमें हुई थी। सन १८९२ में आपने सागर हाई स्कूलसे मैट्रिक परीक्षापास की। बादमें वहीं शिक्षक हो गये थे। आपका झुकाव साहित्यकी ओर था और आपने उर्दू व फारसीका भी अध्ययन किया। सागरमें तीन वर्ष शिक्षक पद पर काम करने के बाद रायपुर हाई-स्कूलमें बदली हो गयी। पांच वर्षके बाद वहींके नार्मल स्कूलमें आपने अपनी बदली करा ली। साहित्यका अध्ययन बराबर जारी था। छुईखदानके राजकुमारके शिक्षकका भी काम मिला! फिर वे कालाहंडी रियासतके मिडिल स्कूलके हेडमास्टर तथा डिप्टी इंस्पेक्टर नियत हो गये। उड़िया भाषाका भी अध्ययन किया। आप फिर जबलपुर नार्मल स्कूलमें बदल कर आ गये। तीस वर्ष तक शिक्षक पद पर काम करनेके बाद सन् १९२८ में अवकाश ग्रहण किया। जबलपुरमें रहने लगे। सरस्वती शुभचिंतक आदिमें लेख लिखने लगे! सन १९१८ में एक वर्षकी छुट्टी लेकर आप इंडियन प्रेस प्रयागमें 'बालसखा' व 'सरस्वती' का संपादन करने गये थे। आप अच्छे समालोचक भी थे। बंगला, मराठी, गुजराती भाषाओंका आपको अच्छा ज्ञान था। इस छोटेसे लेखमें गुरुजीके जीवनकी विस्तृत बातोंपर प्रकाश डालना असंभव है—इसके लिये तो एक पुस्तक ही चाहिये। संक्षिप्तमें गुरुजी एक प्रतिभा—सम्पन्न साहित्यिक, व्याकरणाचार्य, अखड़ संपादक, सुकवि तथा हिन्दीके वरदपुत्र थे।

* * *

विनम्र श्रद्धांजलि

उनके निधनसे हिन्दी संसारकी अपूरणीय क्षति हुई है। मध्यप्रांतमें बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानुके बाद ये दूसरे साहित्य महारथी हैं जिनका निधन हुआ है। इस हिन्दीजगतकी वाणीको संस्कार प्रदान करने वाले महान तपस्वी साहित्यिकको विनम्र श्रद्धांजलिअर्पित करते हुए ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्माको शांति दे।

सुधनवाकी मा

लेखक—श्रीरामशर्मा 'रा.'

सुधनवाकी मांने जाने कितने यत्नसे जोड़-तोड़ करके पांच सौ रुपये एकत्र किये थे। उसने पीसने पीसकर, अपने सुधनवाको पाल लिया और पढ़ा भी लिया। अब उसका विचार था कि उसके जीते-जी सुधनवाका विवाह हो जाये। घर बस जाये, तो वह सुख-शांतिकी सांसलेती हुई, उस जीवनके किनारेसे चली जाये,—दूर हो जाये वह सुधनवाकी मां! किन्तु कैसी विवशताकी बात थी कि उसका सुधनवा पढ़ लिख कर, कामसे लग कर भी और अपनी जाति-बिरादरीके बहुत-से लड़कोंमें सुन्दर होकर भी, कोई लड़की वाला उसकी ओर नहीं देखता। "सो कोई नहीं चाहता कि सुधनवा पिसनहारीका पुत्र भलेही हो, पर है सात्विक, भला और मिलनसार, इसलिये उसको अपनी लड़की देना कोई भी खोटेकी या बेइज्जती की बात नहीं। किन्तु बैश्य कुलमें जन्म लेकर भी पिसनहारीका पुत्र बनना, पैसे-पैसे से मोहताज होना ही, जैसे सुधनवाके जीवनमें एक ऐसी रेखा खिंच गयी थी कि जिसे उसका समाज अच्छी दृष्टिसे नहीं देख पाता। वह—यह अनुभव नहीं करता कि अगर पैसा नहीं, तो क्या! शिक्षित तो है और सभ्य! कमाऊ और सच्चरित्र! लेकिन, उस समाजके लिये पैसेका न होना मानो जीवनका एक ऐसा कलंक था कि जो न धोया जा सकता था, न मिटाया जा सकता था। निदान, जहां-तहां सुधनवाके विवाहकी बात चली, वह इसी कारण दब गयी कि वह पैसेसे खाली था। कुछ रुपयों की नौकरी करता था। पिसनहारीका बेटा था।

एक दिन जब मुहल्लेके समाजमें सुधारवादियोंकी एक बैठक हुई, तो एक विचारक और सुधारकके नाते सुधनवाभी वहां गया। वहु विवाह प्रथाके ऊपर चल रही थी। वहां युवक भी थे और प्रौढ़ भी। निर्धन और धनिक भी। सुधनवा कह रहा था कि विवाहमें दहेज न देना चाहिये, न लेना चाहिये। उसके पक्षमें स्वभावतः मध्यम वर्ग अधिक था। किन्तु जो पैसे-वाले थे और जिनका मत यह था कि विवाह एक खुशीका अवसर होता है, इसलिये ऐसा प्रतिबन्ध न लगना चाहिये,—वे इस विषयमें विरुद्ध मत रखते थे।

बात दोनों ओरसे उठ रही थी। बीच-बीचमें गरमागरम बहस भी हो रही थी।

एकबार फिर सुधनवा खड़ा हुआ। वह इस बार कुछ अधिक तेज और अप्रतिम होकर बोला—महाशय, यह ठीक है कि विवाह एक खुशीका अवसर है। परन्तु इस खुशीका जो सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप है, उसे पैसेने दबा दिया है। हुआ यह है कि इस पैसेके कारण अनेक घरोंकी ललनाएं अविवाहित बैठी हुई हैं। दुराचार बढ़ा है। पैसेके कारण अधिकांश कुमारियां अयोग्य पात्रोंको सौंप दी गयी हैं। घरोंमें आहें फूट रही हैं...ललनाएं सिसक रही हैं! मैं कहता हूं, धनिक-समाजका यही पाप है...यही अन्धापन!'

इतना सुनकर एक प्रौढ़ सज्जनने कहा—'मुझे दीखता है कि आपने पैसेका मूल्य नहीं समझा। वहां कुछ अनधिकार रूपसे भी बोला गया है। .... पिसनहारीके पुत्र एक बड़े समाज पर उंगली उठा सकते हैं, यह देखकर मुझे अचम्भा है। ....शायद इनका यह भी कहना है, कि सब झोपड़ियों में रहें और जंगलके चारे पतेपर गुजर करते रहें। पैसा भी क्या है ....मनुष्य...।

उसी समय कई तरफसे आवाजें आईं—'आप बैठ जाइये .... आप....'

लालाजीने क्रोधित होकर कहा—'हम नहीं बैठेंगे! हम नहीं सुनेंगे इन छोकरों की बातें!'

उस समय सुधनवाने देखा कि वह बैठा रहेगा, तो झगड़ा बढ़ेगा। आपसमें संघर्ष हो जायगा। अतएव, वह उठा और पहिलेसे अधिक विनम्र होकर कहने लगा-'सज्जनो', लालाजीके मुंहसे अपनेको पिसनहारीका पुत्र सुनकर, विश्वास कीजिये, मुझे दुःख नहीं हुआ। मुझे गर्व हुआ, भले ही मैं मखमली गद्दों और फूलोंके पालनोंमें नहीं पला, परन्तु मैं जिस पिसनहारी माताकी गोदका प्यार पा सका, मैं पूछता हूं, ऐसा निर्मल और पवित्र प्यार, बताइये, ग्राममें कितने हैं, जिन्होंने पाया। लालाजी जिस वस्तुको उपेक्षा की दृष्टिसे देखते हैं, मेरे लिये वही गर्व है। वही सुख। इसलिये आप इस विषय पर विवाद मत कीजिये। आप जिस विषयको लेकर चले हैं, उसी पर रहिये।'

किन्तु लाला नवजादिक लालने जिस तैशमें आकर सुधनवाको पिसनहारीका पुत्र कहा, उससे तो वह हिलनेवाले थे नहीं। उसके लिये उनके पास सद्भावना का भी अभाव था। अतएव, वे सभासे उठे और अन्य व्यक्तियोंके साथ वहांसे चले गये।

यह देख कर संयोजकोंने सभाको विसर्जित कर दिया।

किन्तु वहांसे चल कर जब सुधनवा अपने घर पहुंचा, तो उसे यह जान कर अचरज हुआ कि किसीने उसकी माको यह पता दिया कि आज लाला नवजादिकलालने सुधनवासे क्या कह दिया।

फलस्वरूप, उसको देखते ही मा बोली—लोग अपने दिनोंको बहुत जल्दी भूल जाते हैं, सुधनवा !'—उसनें कहा—यह लाला नवजादिकलाल रात दिन रोटियोंसे मोह-ताज था। दिन बदले, तो पैसेवाला बन गया। मनुष्य पापकी कमाई करते भी नहीं थकता। इसने पैसा क्या पाया, पापका एक बड़ा बोझ अपने सिर पर रख लिया।

लेकिन, उस समय, सुधनवाके मनकी अवस्था सर्वथा ही प्रतिकूल थी। उसके मनमें तो स्वतः ही यह बात उठ रही थी कि आदमी पैसा पाता है, तो जरूर अपने दिनोंको भूल जाता है···हां, उसे भूल ही जाना चाहिये, अपने वे पिछले दिन ! किन्तु इस बातके साथ, जो उसके मनमें अशांति और अस्थिरताका उद्रेक पैदा हो गया था और बरबसही, उसके हृदयका मंथन कर रहा था, वह सचमुच ही क्रूर और कठोर था। उसे दीखा कि पैसा ही जैसे बड़ा है—इस भाग्यका निर्माता और पोषक ! किन्तु कैसी कठिनाई थी। सुधनवा इतनी सी बात को जो सरल और सीधी थी, स्वीकार करनेके लिये तैयार नहीं था। उसका मन इसे नहीं मान रहा था कि पैसा ही बड़ा हैं—आदमी हीन ! वह कह रहा था, पैसा उत्पादन है, उत्पादक नहीं। पैसा जड़ है, चेतन नहीं। और आदमी चेतन हैं। सृष्टा है। संज्ञा है। लिंग है। जीवन का जितना ऐश्वर्य है, शान है, विभूति और परम्परा है, उसका यह व्यक्ति ही तो कर्ता है, करण है और कारण है। इसीने सबका निर्माण किया है। इस लिये—तब—।

सुधनवाके मनमें उठ रहा था कि इस व्यक्तिने—व्यक्तिके पैसेने,—अहंभावने—मानो निश्चय ही, इस'व्यक्तिको व्यक्तिसे तोड़ दिया है,—दूर-दूर कर दिया है, इस मानवको। वह बोला-'मानव तभी दीन है ! उपेक्षित है। जरा और जड़ है यह मानव ! मानो धीरे-धीरे उस युवक सुधनताके मनमें खारा-खारा-सा कोई तरल पदार्थ उतर आया था। वही उसको "प्राणों के द्वार पर भी आ खड़ा हुआ था। वह कब, कितनी देरमें उस सरलताको,—उस अश्रु जलको—गालों पर बहा देगा, मानों इसका भी उसे पता नहीं रह गया था,—सुधनवा ! सरल और भावुक। वह पल-पल पर ही इतना कठोर, दुःसह और विषम बनता चला कि जैसे उसके हृदयका मधुर,सुघड़ और सलोना कोई पदार्थ था। वह उससे दूर होता जा रहा था। वह मानो सुधनवाका नहीं था। यही करण था कि माके पाससे जाकर जब वह अपनी चारपाई पर पड़ गया और ऊपर तारों भरे आसमानको देखने लगा, तो लगा कि चन्द्रमाकी वह शीतल चांदनी, निश्चय ही, तरल और निर्मल नहीं थी। वह आग बरसा रही थी। आसमानके वे तारे, मानो शुभ्र और मनोरम नहीं, आगके पतंगे थे, वे सभी एक-एक कर उस व्याकुल, दुःसह सुधनवाके अन्तरमें घुसे जा रहे थे और उसे जला रहे थे।

सुधनवा बड़ी बेचैनी और व्यथापूर्ण अवस्थामें बार-बार करवटें ले रहा था। उसका मस्तक दुःख रहा था। लाला नवजादिक लालाने भरी सभामें उसका अपमान तो किया ही, साथ ही, उसकी मा का भी अपमान किया था। उस लाला ने जिस स्वरमें, जिस लहजेमें और जिस धारणाकी अवस्थामें उसे पिसनहारीका बेटा कहा, वह निश्चय ही, उसकी मा का अपमान था,—नारी का—मा का ! और सुधनवा फिरभी चुप ! फिर भी शांत और स्थिर !

यह चारपाईसे उठकर बैठ गया। उसको लगा कि शांति मिट गयी। आग लग रही है, उसके वदनमें ! मानो कोई बोटी-बोटी काट रहा है, उसके हृदयकी।

सुधनवा चारपाई छोड़ कर घूमने लगा। हाथोंकी मुट्ठियां बांध लीं और जाने कितनी गहरी, कातर दृष्टिके साथ, उसने दूर तक निगाह दौड़ाई,—जैसे निरुद्देश्य और निर्भयताके साथ !

उसी समय मा वहां आई, वह देरसे जाग रही थी, जिस अवस्थामें उसका पुत्र था-उसीमें वह भी डब रही थी। किन्तु जब पुत्रको उसने व्याकुल पाया, तो वह अपनी दशाको भूल गयी, उसने चारपाई छोड़ दी, पास जाकर बोली,

बेटा—

सुनते ही, तपाकसे, व्याकुल स्वर लिये हुए सुधनव ने कहा 'मां' यह समाज गन्दा है, क्रूर !

मैं जानती हूं, बेटा ! मैं सबको पहचानती हूं।

मैं इसमें नहीं रहूंगा। मैं दूर हो जाऊंगा।'

यह सुनकर मा ने एकाएक कुछ नहीं कहा। जब वह कुछ देर मौन रही, तो फिर गहरी सांस छोड़कर दूर तारों भरे अन्तरिक्ष की ओर देखने लगी। मानो वह हंस रहा था,—खिलखिल !

उसी समय, सुधनवाने कहा--लाला नवजादिकलालने जो कुछ कहा, मेरे दिल में वही चुभा है। मुझे बार बार वही याद आता है, अब सोचता हूं कि क्यों न उसका गला पकड़ लिया और घोट दिया। उसे मार देता। एक नीच को समाजसे दूर कर देता।

मांने कहा--'जो समस्या है, उसका हल तो इस प्रकार नहीं हो पाता। एक नवजादिक को मार कर हजार नवजादिकों का जन्म हो जाता। वह बोली—यहां तो सभी ऐसे हैं।

'उसने तेरा अपमान किया भरी सभा में। यह अपमान नहीं सत्यका बखान किया, उसने—मा बोली—तू सोच तो बेटा, तेरी मा कितनी भाग्यवान है कि पीसने पीसकर तुझे पाला, बड़ा किया, तो सभीने स्वीकार किया कि एक सुधनवा की मा है,—पिसनहारी—जिसने अपने पौरुषपर पुत्रको आदमी बना दिया।

झटका-सा खाकर सुधनवाने कहा—क्या जाने मा... क्या।

माने कहा—न बेटा यही ठीक है। यही सत्य !

(शेष २८ वें पृष्ठपर)

कुछ प्रसिद्ध नगरोंके प्राचीन नाम

श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम'

हमारे आधुनिक नगरोंका इतिहास मनुष्यों, वंशों तथा जातियोंकी भांति ही रोचक है, जिस तरह बचपनका वीरु बड़ा होने पर वीरेन्द्र कुमार, पढ़ लिखकर योग्य बनने पर मि० वीरेन्द्र कुमार और नौकर होने पर मिस्टर सिन्हा और सरकारकी सेवा करने पर रायबहादुर वीरेन्द्र कुमार सिन्हा इत्यादि होजाता है। ठीक इसीतरहसे नगरोंके नाम भी, युग और परिस्थितिके अनुसार परिवर्त्तित होते रहते हैं। इन-कालमोंमें कुछ प्रसिद्ध नगरोंके नामोंका प्राचीन इतिहास देनेका प्रयत्न किया जाता है।

आगरा

इसका प्राचीन नाम 'अग्रवन' था, जिसका अर्थ है 'आगे वाला वन या जंगल' बात ऐसी है भी। ब्रज मण्डल, जहां पर कृष्ण भगवानका जन्म हुआ था और जहां वे अपनी गायोंके साथ विहार करते और रास रचते थे, प्राचीन कालमें घोर जंगलों से आच्छादित था और इसमें वृन्दावन आदि अनेक बन थे। प्राचीन कालमें इस ब्रजमण्डलकी बड़ी महिमा थी। ब्रजमण्डल के बनोंमें सबसे पहला या अगला बन वहां पड़ता था, जहां आजकल आगरा है। अतः यात्रियोंने इसका नाम अग्रवन रख दिया। सम्भवतः बादमें बन कटजाने और वहां पर लोगोंके बस जानेके बाद इसके नाम से वन शब्द निकाल दिया गया और यह केवल 'अग्र' कहलाता रहा और बादमें बिगड़ कर 'अग्र' या 'आग्रा' अथवा 'आगरा' हो गया। इस नगरको नये सिरेसे बहलोल लोदीने १५वीं शताब्दीमें बसाया था और तभी से यह 'आगरा' कह-लाने लगा। इसके लड़के सिकन्दर लोदीने जब राजधानी दिल्लीसे बदल कर आगरा कर दी तब से ही इस नगरका महत्व अधिक बढ़ गया। इब्राहिम और बाबरने भी इसी नगरमें अपनी राजधानी बनायी थी और आगे चलकर अकबरने प्रसिद्ध किला और शाहजहांने विश्व विख्यात ताज-महल बनवाया तब से यह एक प्रसिद्ध नगर हो गया।

लखनऊ

इसको श्रीराम चन्द्रजीके भाई लक्ष्मण-जीने बसाया था, अतः यह आरम्भमें लक्ष्मणपुरी कहलाता था। स्मारक रूपमें लक्ष्मण टीला अभी भी मौजूद है। बादमें लक्ष्मणजीके लाड़ प्यारके नाम लखनके ऊपर इसका नाम लखनपुर हो गया। धीरे-धीरे यह लखनौती कहलाने लगा और आजकल लखनऊ कहलाता है।

आमेर

प्राचीन कालमें इसका नाम 'अम्बर' था, जो कि अम्बरीष नामका अपभ्रंश है।यह प्राचीन कालमें जयपुर प्रदेशकी राजधानी था। पुराणोंमें लिखा है कि राजा अम्बरीष यहांपर राज्य करते थे। इन्होंने ही इस नगरको अम्बरीष नगरके नामसे बसाया जो आगे चलकर संक्षिप्त होकर अम्बर रह गया। संस्कृतसे हिन्दीमें आने पर 'म्ब' आम में परिवर्तन हो जाता है और उसके पूर्वका अक्षर दीर्घ हो जाता है। अतः अम्बरका आमर हो जाना स्वाभाविक ही है। आमर शब्द बोलनेकी सुविधाके लिये आगे चलकर आमेर हो गया। अकबरके समयमें आमेरका राजा मानसिंह था जिसने यहां दिलाराम बाग लगवाया।

बनारस

प्राचीन कालमें यह नगर वाराणसीके नामसे प्रसिद्ध था। इसका कारण यह था कि बनारस 'वर्ना' और 'असि' दो नदियों के संगमपर बसा है। प्राचीन कालमें जब नदियों द्वारा व्यापार बड़े जोरोंसे होता था और नदियां ही एक बड़ा यातायात मार्ग थीं और उनका बड़ा महत्व था, तभी इन दोनो नदियों वर्णा और असिके नामपर इस नगरका नाम वर्णासि हो गया। बादमें लोग इस संधिको भूल गये और उन्होंने वर्णाके 'ण' को असिके साथ मिला दिया अतः असि का तो 'णसि' हो गया और 'वर' का बारा हो गया। इस प्रकार बारा-णसी बन गया। संस्कृत 'ण' का हिन्दी में 'न' हो जाना साधारण सी बात है। अतः वाराणसीका नाम वारानसि और बादमें 'वारानस' हो गया। तत्पश्चात 'र' और 'न' में उलटफेर हो गया और 'बरा-नस' का 'बानारस' हो गया जोकि बादमें बिगड़कर बनारस बन गया।

एक प्रश्न यह भी है कि बनारसको काशी क्यों कहते हैं। किसी समय पुरुरवा वंशमें एक राजा 'काश' हुए जिन्हें काशिराज भी कहते थे। उन्होने गंगा और गोमतीके संगमपर एक नगर बसाया जिसका नाम अपने नामपर काशी रखा। धीरे-धीरे काशिराजका प्रताप बढ़ता गया और साथ ही काशीका महत्व भी। अतः काशीके आसपासका भाग भी काशी ही कहलाने लगा और काशी तथा बनारसमें कोई भेद नहीं रह गया, यद्यपि दोनोंमें अन्तर कई मीलका है। बात यह थी कि काशिराज बडा पुण्यात्मा राजा था उसने अनेक मंदिर और घाट बनवाये, अतः काशीकी महिमा बढ गयी और बाहरके यात्री बनारसको भी काशी कहने लगे। बादमें जब बनारसमें रेशमी साड़ीके तथा पीतलके वर्तनोंका व्यापार बढ़ गया तो बनारसकी ख्याति बढ़ने लगी और बनारस एक प्रसिद्ध नगर हो गया और काशी उसका एक बड़ा मोहल्ला मात्र रह गया।

मथुरा

इसका प्राचीन नाम मधुवन था। मथुरासे पांच मीलकी दूरी पर महोली नामक स्थानमें अब भी मधुवन नामका एक जंगल है जो कि प्राचीन 'मधुबन का स्मारक है। पुराने समयमें जब रामराज्य था तो वहां पर एक बड़ा भारी जंगल था जिसमें मधु नामका एक बड़ा राक्षस था। यह जंगल उसीके नाम पर मधुबन कहलाता था। वह स्थान जहां मधु तथा उसके वंशवाले तथा अन्य राक्षस रहते थे, मधुपुरी अथात मधुका नगर कहलाता था। यह स्थान ठीक वहां पर था जहां आजकल महोली है। रामचन्द्रके समयमें इसका लड़का लवन इस जङ्गलमें राज करता था। रामके भाई शत्रुघनने इसे मार कर जंगल साफ करा कर वहां नगर बसाया। यह नगर बादमें बढ़ कर वह सब नगर बस गया जिसे आजकल मथुरा नगरी कहते हैं।

'मधुबन' मथुरा कैसे कहा जाने लगा, यह भी एक प्रश्न है। रामायणके उत्तर काण्डमें मथुराका नाम मधुरा दिया है। सम्भव है बादमें मधुबन अथवा मधुपुरी संक्षिप्त होकर मथुरा हो गया हो।

सारनाथ

इसका प्राचीन नाम 'सारंगनाथ' था। 'सारनाथ' सारंगनाथकाही संक्षिप्त रूप है। सारंगनाथ दो शब्दोंसे संयुक्त है—सारंग और नाथ। 'सारंग' के अर्थ है हिरन और 'नाथ' माने 'स्वामी' अथवा मालिक। इस प्रकार सारंगनाथके माने हुए हिरनोंका स्वामी। प्राचीन कालमें वहां पर जहां आजकल सारनाथ है, एक बड़ा भारी जंगल था, जिसमें बहुतसे हिरन रहते थे। यदि इस जंगलको हिरनोंका घर कहें तो अनुचित न होगा। यही कारण है कि इसे मृगदाव कहते भी थे। इन हिरनोंका एक राजा भी था, जिसका बड़ा भारी घर था। कहते हैं कि यह हिरन बोधि सत्वका अवतार था और इसकी बड़ी ख्याति थीं। उसे सारंगनाथ कहते थे। बादमें उसके रहनेके स्थान अथवा जंगलको ही सारंगनाथ कहने लगे। धीरे धीरे सारंगनाथ बिगड़ कर सारनाथ हो गया। बुद्धकालमें इसकी ख्याति बहुत अधिक थी।

जौनपुर

सका प्राचीन नाम यवनपुर था। १३६० ई० में दिल्लीके बादशाह फिरोजने यहां पर किला बनवाया और इसे बसाया और इसका नाम अपने चचेरे भाई फकीरुद्दीन जोवनाके ऊपर जौवनपुर रखा। १४१८ ईस्वीमें सुल्तान इब्राहीमने एक बौद्धमठके नसानेसे अठला मसजिद बनवायी। फिर १४८० ई० में सुल्तान महमूदकी बीबी रजी' ने लाल दरवाजा विद्यालय बनवाया। १५ वीं शताब्दीमें खां जहांने जौनपुरमें ही अपना महल बनाया। इब्राहीम शर्कीके समयमें यह शिक्षाका बहुत बड़ा केन्द्र था। शेरशाह सूरीने यहीं पर एक कालेजमें शिक्षा प्राप्त की थी। इस कारण यह यवनोंका एक विशाल नगर हो गया। आज भी यवनोंकी आवादी यहां अधिक है। यही कारण है कि लोग इसे जोवनपुरकी जगह यवनपुर कहने लगे। धीरे धीरे यवनपुर बिगड़ कर जवनपुर हुआ और आज वही जवनपुर जौनपुरके नामसे विख्यात है।

अलीगढ़

इसका प्राचीन नाम कोइल था। यहां पर कृष्णके भाई बलरामने कोल नामके राक्षसको मारा था। अतः इसका नाम कोल पड़ गया। बादमें कोल बिगड़ कर कोइल हो गया था। मुसलमान कालमें अलीनामके किसी अमीर अथवा बादशाह ने यहां अपना किला बनवाया तबसे इसका नाम अलीगढ़ हो गया।

भारतका सिल्क व्यवसाय

लेखक—श्री परिपूर्णानन्द शर्मा

स्वतन्त्र भारतके औद्योगिक पुनर्निर्माणमें सिल्कका भी विशेष स्थान है। गत महायुद्धके समय हमारे सिल्क व्यवसायकी विचित्र दशा हो गयी थी। लड़ाई छिड़नेके पहले हम ५० लाख पौण्ड कच्चा सिल्क हर साल खर्च करते थे जिसमेंसे २५ लाख पौण्ड बाहरसे आता था। २२० लाख पौण्ड सिल्कका सूत हम बाहरसे मंगाते थे। इस प्रकार देखनेमें तो हमारा सिल्क व्यवसाय काफी उन्नत मालूम होता था पर देशको उससे घाटा ही होता था। असलमें हमको बाहरसे सिल्क मंगानेकी कोई जरूरत भी नहीं थी। सिल्कके कीड़ोंसे ही तो सिल्क पैदा होता है। फ्रांस तथा इटलीमें सालमें एक बार यह फसल पैदाकी जाती है। आबोहवा प्रतिकूल होनेपर भी वे एक फसल पैदा कर लेते हैं। चीनकी इतनी गिरी दशा होनेपर भी वह सालमें तीन फसल पैदा कर लेता है। जापान आबोहवाकी प्रतिकूलता पर भी तीन फसल कर लेता है। पर भारतकी आबोहवा तो ऐसी आदर्श है कि विशेषज्ञोंके अनुसार साल में सात फसल पैदा की जा सकती है, पर कठिनाईसे दो हो पाती है। इसीलिये बाहरसे काफी माल मंगाना पड़ता है। मैसूर, बंगाल, मद्रास तथा काशीके उद्योग इसी कारण पनप नहीं पाते। जापानने अपनी सरकारकी सहायतासे यह उद्योग इतना बढ़ा लिया था कि जहां सन् १९१४-१५ में वह विश्वकी समूची खपतका २० प्रतिशत देता था, वही सन् १९३९ में ७६ प्रतिशत देने लगा। इसका कारण उसका वैज्ञानिक प्रयत्न भी है। इस कामको सिखानेके लिये वहां ३ विश्वविद्यालय हैं जिनके २७६ स्कूल हैं। ४४ प्रयोगशालायें हैं तथा इसके अतिरिक्त सरकारी प्रयोगशालायें तथा खोजके कार्य भी हैं। भारतमें ऐसी कोई चीज है ही नहीं। जापानमें सन् १९३९ में सिल्क व्यवसायपर ३६० विशेषज्ञ अनुसंधान कर रहे थे-भारतमें ऐसे दो व्यक्ति भी नहीं मिलेंगे।

लड़ाईके दिनमें सरकारने ऐसी धांधली मचा रखी थी कि कुछ न पूछिये। वह बाजारमें स्वयं ३०) रुपया पौण्डकी दरसे कच्चा सिल्क खरीदती थी और उधर उससे हल्का चर्खा सिल्क ६०-१२० पौण्डके दर पर वह स्वयं बाजारमें बेचा करती थी। मि० राघवन नायर (सेक्रेटरी दक्षिण भारत चैम्बर आव कामर्स) का तो यह कहना है कि कण्ट्रोल दरपर १९) रुपये पौण्ड माल खरीद कर सरकार खुले बाजार में ६०-७० पौण्ड रुपयेबेचा करती थी। इससे सिल्कके व्यवसायी तबाह होते गये। एक अमेरिकन कांग्रेसमैन (वहांकी व्यवस्थापक महासभाके सदस्य) ने लिखा था कि सन् १९४५ में भारत सरकारने ७५० पौण्ड सिल्क भारतमें खरीदकर ब्रिटिश फर्मोंको दे दिया और उन्होंने ७,५०,००० रुपये कीमत पर उसे चीनके हाथ बेच दिया। इसीप्रकार संयुक्त राज्य अमेरिकाके हाथभी माल लुटाया जारहा था युद्ध समाप्त होनेके बाद इस व्यवसायके लिये अगर कोई काम सरकारने किया है तो यही कि मैसूरके मि० एन० रामारावकी अध्यक्षतामें एक कमेटी बनादी गयी है। दो वर्ष हो गये अभी तक उस कमेटीकी किसी रिपोर्टका पता तक नहीं है,।

व्यवसायका भविष्य

यदि सरकार जरा भी सहायता दे तो यह व्यवसाय बहुत उन्नति कर सकता है और हम इस दिशामें सबसे आगे बढ़ सकते हैं। सन १९३९ में सभी सूबोंके डाइरेक्टर आव इंडस्ट्रीजका जो सम्मेलन हुआ था उसने यह स्वीकार किया था कि उचित प्रोत्साहन मिलने पर हिन्दुस्तानमें कमसे कम ४०,००,००० गांठ सिल्क हर साल तैयार हो सकता है, जिसमें से १६,००,००० तो अकेले मैसूरमें, १२ लाख बंगालमें तैयार हो सकता है। इस समय हम अनुमानतः १८ लाख पौंड ही तैयार करते हैं यानी २२ लाख पौंडकी वृद्धिकी गुंजायश है। सन १९३९की टैरिफ बोर्डकी रिपोर्टके अनुसार हमने २० लाख पौंड तैयारी सिल्क भारतके बाहर भेजा था पर, वह जमाना हाथसे निकल गया अब तो हम हर साल लगभग २२,५०,००० पौंड कच्चा सिल्क, २,७०,००,००० गज तैयारी सिल्क तथा ८०,००,००० गज सूती तथा सिल्क मिला कपड़ा बाहरसे मंगाते हैं। सब लोग अपने व्यवसायमें उन्नति करते हैं, हम अवनति कर रहे हैं,

इस अवनतिका अनुमान तो इसीसे लग सकता है कि सन १८९३-९४में हमने लगभग १६,००,०००) रुपयेका माल बाहर भेजा था और सन १९०३-४ में ७,५०,००० रुपयेका और सन १९३४-३५ में १,५४,०००) रुपयेका। हमारे प्राचीन सिल्क व्यवसायकी—उस व्यवसायकी जिसका जिक्र ऋग्वेदमें भी आया है, यह दुर्दशा है। जो वस्तु देशके भीतर तथा बाहर, हर जगह जरुरी है, उसीकी ओर हम इतने उदासीन क्यों हैं,

प्रान्तोंमें प्रगति

लड़ाईके दिनोंमें केवल पाराशूट (हवाई जहाजसे उतरनेके लिये छतरी) बनानेमें ही काफी सिल्कका उपयोग हुआ और इस उपयोगके कारण जनताको सिल्क बनाने बुननेकी भी रुचि हुई उन दिनों सरकारने इस व्यवसायकी सहायताके लिये १८,५०,०००) रुपये भी दिये थे। ब्रिटिश तथा भारतीय सरकारकी ओरसे मद्रासके कोलीगल स्थानमें एक कारखाना खोला गया। १,५०,००० पौंड सिल्क हर साल तैयार हो सकता है। सैकड़ों एकड़ भूमिमें वहां शहतूतके झाड़ लगा दिये गये हैं, जिससे सिल्कके कीड़े पैदा हों,

मद्रास, मैसूर तथा काश्मीरमें ३ लाख पौंड सिल्क सन १९४६ में तैयार हुआ था। सन १९४७ में ६ लाख पौंड हो गया है। मैसूरसे सन १९४०-४१ में ३६,००० एकड़ भूमिमें शहतूतके झाड़ लगे थे, सन १९४४-४५ में ७५ हजार एकड़में यही खेती हुई। वहांके डेढ़ लाख परिवार इसी व्यवसाय पर निर्भर करते हैं।

मैसूर सरकारने अपने यहां इस व्यवसाय-को काफी उन्नत किया है और सरकार-की ओरसे इस कार्यके लिये एक बोर्ड ही बना दिया गया है। पांच वर्षमें यह बोर्ड पांच लाख रुपया खर्च करेगा।

ब्रिटिश भारतमें सबसे अधिक सिल्क मद्रासमें पैदा होती है। औसतन दो लाख पौण्ड सिल्क हर साल तैयार होता है। अकेले कोलेगनके पासही ८००० एकड़ भूमिमें शहतूतकी खेती होती है।

काश्मीरके पसमीनासे कौन नहीं परिचित हैं। वहां पर आदर्श गृह-उद्योगके रूपमें यह व्यवसाय होता है, देहातोंके कमसे कम ५० हजार तथा शहरके ४००० परिवार इस काममें लगे हैं; अनुमान है कि लगभग १५०० पौण्ड सिल्क रोज तयार हो सकता है। कहते हैं कि श्रीनगर सिल्क फैक्टरी संसारमें अपने ढङ्गका सबसे बड़ा कारखाना है। काश्मीरकी सर-कारने भी अपने यहां मैसूरके ढंग पर काम करनेकी योजना बनाना शुरू कर दिया है।

विहारके भागलपुर जिलेमें सिल्क-का बहुत बड़ा मशहूर कारोवार होता हैं। किन्तु लगभग २३ लाख रुपये सालसे अधिक माल अभी तैयार नहीं हो रहा है। विहारसे अधिक काम बंगालमें होता है, यहां लगभग ५ लाख पौण्ड सिल्क (सवा करोड़ रुपये कीमतका) हर साल तैयार होता है। ८००० हजारजुलाहे यही काम करते हैं।

मध्य प्रांतका कोशा सिल्क भी बहुत मशहूर है। विलासपुर जिला इसका केन्द्र है, छत्तीसगढ़ डिवीजन ही इस चीजके लिये प्रख्यात है। संयुक्त प्रांतमें बनारस इसके तैयारी मालके लिये मशहूर है तथा प्राचीन व्यापारिक केंद्र है। नैनीताल, बरेली तथा देहरादूनके जिलेमें सिल्कके कीड़े बहुतायतसे पैदा होते हैं और पैदा किये जा सकते हैं। लगभग १,५५,००० जुलाहे तथा मददगार यह काम करते हैं। लगभग सवा करोड़ रुपयेका माल तैयार होता है।

किन्तु, यदि समुचित प्रोत्साहन मिले तो सालमें ८ महीने यह काम हो सकता है। सन १९३९ की डायरेक्टर आव इण्डस्ट्रीजकी कानकरेंसके अनुसार नीचे लिखे सूबोंसे जो माल तैयार हो सकता है, वह इस प्रकार है:—

प्रांत	पौण्ड (वजन)
मैसूर	१६,००,०००
बङ्गाल	१२,००,०००
मद्रास	५,००,०००
काश्मीर	५,००,०००
अन्य प्रान्त	२,००,०००
	कुल ४०,००,०००

विकासकी सम्भावना

ऊपर लिखी बातोंसे यह साफ है कि इस दिशामें विकासकी काफी गुंजाइश है और यदि हमारी सरकारने थोड़ा भी ध्यान दिया तो करोड़ों रुपयेका माल मिलने लगेगा और भारतीय व्यवसायमें एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जायेगा। इस समय दत्त-चित्त होकर हमारे उद्योग-विभागको इस दिशामें काफी छानबीन करके प्रयत्न करना चाहिये।

सुधनवाकी मा

(२४ वेंपृष्ठका शेषांश)

सुधनवा फिर अपनी चारपाईपर पड़ गया। स्पष्ट था कि वह सन्तुष्ट नहीं हुआ। न मा की बातसे, न अपनी स्थिति से।

दिल चल रहा था, आप भी चल रहा था। मानो वह हवाके साथ-साथ वह रहा था— कभी धीरे कभी द्रुत!

सुधनवा अपनी मा को तीर्थ कराने गया था। घरसे दूर जब वह द्वारिकाजी पहुंचा, तो भगवानके दर्शन कर मा के साथ उस ओर निकल गया, जहां कंगलों अपाहिजोंका जमघट था। सुधनवाकी मा जब एक भिखारीको चना चबेना देनेके लिये झुकी तो बलात उसका हाथ रुक गया। उसने पूछा तुम कौन ?

भिखारीने कहा— सुधनवाकी मा,— लक्ष्मीदेवी !

मां ने कहा--लाला नवजादिक लाल

नवजादिकलालके मुंहसे बात नहीं निकली, आंखोंसे झर झर आंसुओंका वेग वह आया।

सुधनताकी मा को पता था कि लाला नवजादिकलालका व्यापार बिगड़ गया। दिवाला भी निकल गया। लेकिन यह उसने अब देखा कि जिनका रुपया देना था, उनकी दृष्टिसे दूर होनेके लिये ही उन्होंने उस दूर प्रांतमें भिखारीका रूप धारण कर लिया था।

मां ने कहा--'रोओ मत' लाला जी।

लालाजी ने कहा सुधनवाकी मा—

तुम फिर फलो-फूलो, मैं भगवानसे इसकी प्रार्थना करती हूं।

लालाजीने इस बातका जवाब नहीं दिया। जाने उनके मनमें क्या आया कि उसी क्षण, उस विशाल भीड़में उन दोनोंको छोड़ वहांसे पलायन कर दिया कि जैसे वे चोर थे और उन्होंने जीवनमें एक बड़ा अपराध उन दोनो मा बेटेके साथ भी किया था।

इतना देख वेदनापूर्ण स्वरमें सुधनवा ने कहा—हायरे, मनुष्य !

मा ने कहा—चल बेटा !—वह बोली आज ही चल देंगे घर। घर ही तीर्थ है। घर ही स्वर्ग।

यह सुनकर सुधनवा हंस दिया। तुरन्त ही उसके मनमें आया क्या ऐसे ही रहेगा यह मानव—यह लाला नवजादिक लाल !.. पैसेका दास... पैसेका अपराधी।

लीगने मुसलमानोंको धोखा दिया

—शेख अब्दुल्ला

अखिल भारतीय देशीराज्य लोकपरिषदके अध्यक्ष शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाने दिल्लीकी एक सार्वजनिक सभामें भाषण करते हुए कहा कि मुस्लिम लीगने अपने पाकिस्तानके नारेके जरिये भारतके मुसलमानोंको धोखा दिया है। करोड़ों मुसलमान आज अपना सब कुछ गवांकर भूखों मर रहे हैं क्या ऐसे ही प्रचारके लिये मि० जिन्ना धुआंधार प्रचार कर रहे थे।

काश्मीरकी स्थिति—

काश्मीरकी स्थितिमें पहलेसे काफी सुधार हुआ है लेकिन फिर भी अभी वहां आक्रमणकारियोंका उपद्रव अभी जारी है। आक्रमणकारी पूंचपर अधिकार जमानेके लिये उरी और नौशेरा और जंघर इलाकेके उत्तर-पश्चिमसे दोतरफा आक्रमण कर रहे हैं। वहां आक्रमणकारियोंकी संख्या एक हजार बतायी जाती है। उनके पास आधुनिक अस्त्र शस्त्र काफी तादादमें है। भारतीय फौजी दस्ते आक्रमणकारियोंको करारी मार दे रहे हैं। उन्होंने पूंचके उत्तर-पूर्वसे आक्रमणकारियोंका नाम निशान मिटा दिया है। पूंचके उत्तर-पश्चिममें चार मील दूर आक्रमणकारियोंका बीस लारियोंपर एक काफिला देखा गया था। डुंगी इलाकेमें तीन सौसे अधिक आक्रमणकारियोंको घेर लिया गया है। भीमम्बर-अखनूर इलाकेमें कहते हैं कि आक्रमणकारी अखनूरकी ओर बढ़ रहे हैं। अखनूर जम्मूसे २३ मील दूर है।

जम्मू नगरमें शरणार्थी बराबर आ रहे हैं। पश्चिमी पंजाबके शरणार्थी जम्मूसे पठान कोट होकर पूर्वी पंजाब भेजे जा रहे हैं। जम्मूकी स्थिति अब ठीक है।

नेहरूजी जम्मू को

पण्डित जवाहरलाल नेहरू जम्मू जा रहे हैं और वहांकी स्थितिका अवलोकन करके उसी दिन वापस आ जायेंगे। सोमवारको पण्डितजी संयुक्त रक्षासमितिकी बैठकमें भाग लेने के लिये लाहौर जायेंगे।

नरेशोंका प्रतिवाद

दिल्लीमें नौ देशी राज्योंके शासक और एक रियासतोंके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन हुआ जिसमें काश्मीरपर कबीलेवालों और पश्चिमी पंजाबसे होनेवाले आक्रमण की एक प्रस्ताव पास कर निन्दा की गयी। देशी नरेश अपना एक संगठन बना कर ऐसे कार्योंका प्रतिवाद करनेपर विचार कर रहे हैं।

आक्रमणकारियोंकी दुसरी चालें

काश्मीरपर आक्रमण करनेवाले भारतीय फौजी दस्तोंका मुकाबला करनेमें असमर्थ है। इसलिये वे अब हिटलरी सैनिकोंसे भी गन्दी गन्दी चालोंसे काम ले रहे हैं। बलात्कार, अपहरण और निरीह जनताको तरह तरहके उत्पीड़न देना आक्रमणकारियोंके लिये साधारण सी बात है। गत सप्ताह शलारङ्ग पुरके आक्रमणकारियोंके एक जासूस जिसका नाम रहमतुल्लाह बताया है गिरफ्तार किया गया था। उसने जो पुलिसको बयान दिया है उससे पता चला है कि रावलपिण्डीमें काफी सशस्त्र सैनिक प्रस्तुत किये गये हैं और शीघ्र ही काश्मीरके सीमापर भेजे जायेंगे। अपने काश्मीर आनेके कारण उसने यह बताया है, कि मुझे पठानोंको रास्ता दिखानेके लिये तैनात किया गया था। उसने यह भी बताया है कि आक्रमणकारी लूटका माल और गैर मुस्लिम लड़कियों-युवतियोंको पाकिस्तान ले जानेके लिये शिक्षित किये जा रहे हैं।

श्री अन्नदा प्रसाद चौधरी प्रसाद चौधरी आप पश्चिम बंगालके अर्थसदस्य हैं।

करांचीसे सवालाख शरणार्थी आये

श्री टी०टी० कृष्णमचारीके एक प्रश्नके उत्तरमें श्री गोपाल स्वामी ऐयंगरने कहा कि १५ अगस्तके बादसे लगभग १,२०,००० हिन्दू और सिख शरणार्थी कराचीसे बम्बई या काठियावाड़के विभिन्न भागोंमें आये हैं। उनमेंसे लगभग ७५००० शरणार्थी बम्बई पहुंचे हैं! पाकिस्तान जानेवालोंमें पाकिस्तानी सेनाके ६०२७ व्यक्ति और ४१८१० मुस्लिम नागरिक बम्बईसे कराची गये। उसी प्रकार काठियावाड़के विभिन्न स्थानोंसे भी ५५६३ नागरिक पाकिस्तान गये।

कोरिया-अमेरिकनसाम्राज्यवादका शिकार

संयुक्त राष्ट्र संघकी राजनीतिक कमेटीने एक कमीशनके नायकत्वमें कोरियाकी स्वतंत्रताके विकास सम्बन्धी अमेरिकन प्रस्तावको स्वीकार कर लिया था। परन्तु रूसने इसका प्रतिवाद किया। इसने कहा कि कोरियाको अपने भाग्य पर छोड़ कर रूस तथा अमेरिकाको यहांसे चला जाना चाहिये। इस बीच अमेरिकाने बतलाया कि कोरिया स्वशासनके लिये पूर्ण अयोग्य है, इस लिये इसको दूसरेकी संरक्षकता अनिवार्य है। कोरियाका दक्षिणी भाग जहां पर की अमेरिकन शासन है; की दशा यहांके उत्तरी भाग जहां पर रूसी अधिकार है अत्यन्तही शोचनीय हैं। लोग अमेरिकनों से घृणा कर रूसियोंका सम्मान करने लगे हैं। और ऐसा बहुतही सम्भव है कि रूस अमेरिकाके चले जाने पर यहांके उत्तरी भागके कम्यूनिस्ट दक्षिणी भागमें अपना शासन जारी कर दें। और जो अमेरिकाके हकमें बहुतही हानिप्रद होगा।

कोरियनोंमें स्वतन्त्रताकी भावना अत्यन्तही तीव्र होती जा रही है और इस हालतमें संयुक्त राष्ट्रका यह प्रस्ताव कि कोरियाका स्वातंत्र्य विकास एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन द्वारा कराया जाय, सिर्फ इसकी स्वतंत्रतामें बिलम्ब लानेकी अमेरिकन चाल है। और इसके फलस्वरूप कोरियाको संयुक्त राष्ट्रसे भी घृणा हो जायगी। यदि संयुक्त राष्ट्र इस सम्बन्धमें रूसी प्रस्तावका समर्थन करती तो रास्ता साफ था। परन्तु यहां तो ऐसा जान पड़ता है कि अमेरिका कोरिया की स्वतंत्रताके लिये नहीं चिन्तित हैं बल्कि वह यहां पर रूसी प्रसारकी आशंका से भयभीत है।

फ्रांसमें तोड़फोड़

दो सप्ताह पूर्व फ्रांसमें कम्यूनिस्टोंने हड़तालें शुरू की थी वे अभी तक चल रही हैं। हड़तालके कारण पेरिस आदि कई नगरोंकी हालत खराब हो गयी है। जर्मन युद्धकी समाप्तिके बाद यह पहला मौका है जब पेरिसकी सड़कों पर बख्तरबंद पुलिस गश्त लगा रही है। लाखों मजदूर हड़ताली हो गये हैं। दक्षिण फ्रांसमें दो हजार हड़तालियोंने ब्रेवके रेलवे स्टेशन पर कब्जा कर लिया है। आधे पेरिसमें अंधकार है क्योंकि हड़तालियोंने बिजलीके तार काट दिये हैं। कई जिलोंमें गैस खराब कर देनेसे नागरिकोंको पानी नहीं मिल रहा है। ट्रेड यूनियन कांग्रेसके गैर कम्यूनिस्ट सदस्य एवं फ्रांसके समाजवादी हड़तालियोंको काम पर वापस जानेको कह रहे हैं।

हड़तालोंको खत्म करनेके लिये फ्रांसकी सरकारने राष्ट्रीय असेम्बलीमें 'तोड़फोड़ विरोधी बिल' १८३ के मुकाबले ४१३ वोटसे पास करा लिया है। नीसमें हड़तालियोंने पोस्ट आफिसके काम में बाधा पहुंचाई। उसके बाद पुलिस और हड़तालियोंके बीच मुठभेंड़ हो गयी जिससे बीस आदमी बुरी तरह घायल हुए हैं। फ्रांसकी कम्यूनिस्ट पार्टीने सर्वत्र अपने सदस्योंसे 'परिचय पत्र' फाड डालने के लिये कहा है ताकि वे पहचाने नहीं जा सकेंगे। कुछ लोगोंने पेरिस स्थित कम्यूनिस्ट पार्टीके दफ्तरपर भी आक्रमण किया है।

इण्डोनेशिया और भारतमें घनिष्ट मित्रताके लिये प्रयत्न शील डाक्टर शहर यार

रूस और ईरानके बीच तनातनी

रूस अपने बाकूके तेल खानके बावजूद दक्षिणमें ईरानके तेलको काममें लानेकी इच्छा करता है। गत साल रूस और ईरानके बीच तेल सम्बन्धी एक समझौता हुआ था जिसके द्वारा उत्तरी ईरानके तेल पर रूसी अधिकार स्वीकार किया गया, परन्तु ईरान इस समझौतेके अनुसार आचरण नहीं कर सका। उसकी पार्लमेंट में यह समझौता बिल्कुल ही मान्य नहीं हुआ, क्यों कि दक्षिणी ईरानके तेल पर अंग्रेजोंका अधिकार जायज रखते वह भेद पूर्ण समझौता किया गया था। रूसने इस समझौतेके प्रति बादमें एक धमकी सहित पत्र पार्लमेन्टके पास भेजा। ईरान परन्तु ईरानको अमरिकी सहायताका पूरा आश्वासन प्राप्त है। यदि रूस इसकी सुरक्षाको भंग करनेमें आगे कदम बढ़ाया तो अमेरिका जो ईरानको अभी प्रोत्साहन दे रहा है, इस संकटके समय मदद करनेमें कुछ भी कसर उठा नहीं रखेगा।

पुरस्कार का प्रश्न

—श्री विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त—

बिजलीके बल्ब, शामियानेकी छतके अतिरिक्त उस पंडालमें जिधर दृष्टि घुमाइये, मनुष्यकी उत्सुक आकृति ही दिखलाई पड़ती थी। सभीकी उत्सुक दृष्टि मंचकी ओर उठ रही थी—जहां कुछ मनुष्य नामधारी विशिष्ट जीव विशेष गर्वमें डूबे हुए विराजमान थे।

मैंने भी एक ओर, कोनेमें स्थान ढूढ़ ही लिया। यदि स्थान ढूढनेकी चर्चामें हिन्दू विश्वविद्यालय और कलकत्ता यूनिवर्सिटीके उन तीन-चार विद्यार्थियोंका उपकार स्वीकार नहीं करूं, जिन्होंने जगह ढूढ़नेमें साहससे काम लिया और जो आदि से अन्त तक वहां मेरे साथ उपस्थित थे तो निश्चय ही अन्याय होगा।

एक विद्यार्थीने मंचकी ओर ध्यानसे देखकर कहा, "यहां तो सभी स्थानीय कवि बैठे हैं।"

पास ही बैठे एक महाशय बोल उठे, 'अभी दीवान साहब आये नहीं। उनके आते ही बाहरवाले भी आ जायेंगे।"

राजके कर्णधार दीवान साहब 'बरदान' की तरह कामधेनु रूप उस राज्यका आधिकार प्राप्त करनेमें समर्थ हुए हैं, जैसे जनाब जिन्ना साहब पाकिस्तान प्राप्त करनेमें समर्थ हुए हैं। सफलताकी विजय का उत्सव उत्साह पूर्वक नहीं मनाना ही आश्चर्यकी बात होती। धूमधामसे मेला लगाया गया। 'कवि सम्मेलन' उसी धूम धामका एक साधारण या असाधारण अंग था।

मंचके सामने कुछ परिवर्तन दिखलाई दिया। हमारी दृष्टि उस ओर उठी। हमने देखा, एक स्थानीय कवि महाशय अपने स्थानसे उठे और मंचके बीचमें आकर, चीखने लगे।

'यह क्या ? कोई पागल है ?'—किसी एकने आश्चर्य प्रकट किया।

'कवि है। सुनिये, कविता-पाठ कर रहा है ?'—किसी दूसरे ने कहा।

'कवि ? अभी दीवान साहब आये नहीं सभापतिका पता नहीं और कविता-पाठ ?'

दीवान साहब भोजन-वोजन से निश्चित होकर चलेंगे ! और देर होते देख स्थानीय कवियोंने शायद सोचा है हमलोगों को कविता उगलनेका अवसर नहीं मिलेगा—इसलिये इस स्वर्ण सुयोगको हाथसे जाने देनेकी मूर्खता न करें !'—कौतुकप्रिय एक विद्यार्थीने कहा।

'आठ बजे समय निश्चित था और ९ बज रहे हैं।'—

आजाद होकर समयकी कैदमें रहना उचित नहीं।

विद्यार्थीके इस व्यंग्यने सुननेवालोंको हंसनेके लिये मजबूर कर दिया।

स्थानीय 'कवि नामधारी जन्तुओंमेंसे एकके बाद दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवा आ-आ कर मनका गुबार निकालने लगा। असाधारण परिवर्त्तन हुआ। दीवान साहब आ गये। शेष उपस्थित कवियोंकी मनकी मनमें ही रह गयी।

दीवान साहबके मुसाहब भी उनके साथ ही मंचपर आये। स्थानके लिये 'जरा' 'कृपा' तनिक हमें भी 'क्षमा कीजियेगा' की बौछार होने लगी।

दीवान साहब उठकर चारो ओर सरसरी दृष्टिसे देख गये। एक ओर उनकी दृष्टि अटक गयी।

'इस मंचपर जितने विद्यार्थी बैठे हों—स्थान खाली कर दें।'—दीवान साहबका शासन भरा स्वर।

सन्नाटा छा गया। सभीकी उत्सुक दृष्टि उधर जम गयी। किन्तु, कहींसे कोई उठता दिखाई नहीं दिया।

'मैं कहता हूँ, विद्यार्थी यदि मंचसे नहीं हटेंगे—तो मैं अपने साथी प्रसिद्ध कांग्रेसी नेताओंके साथ नीचे बैठ जाऊंगा।'—जवाहरलालके स्वरकी नकल।

पत्थर पर तीर मारनेके समान प्रयत्न व्यर्थ। सभी अपने-अपने स्थानपर अडोल रहे।

दीवान साहबने अपने मुसाहबोंके साथ मंचसे नीचे बैठ कर अपना वचन पालन किया। उनके साथ आये हुए बाहर वाले दो कवि जहां बैठ गये थे—बैठे रहे।

आधा घंटा और बीत गया। उपस्थित जनताका धैर्य छूटने लगा।

पंडालसे बाहर दीवान साहबके संकेतसे एक आदमी जाता था और दस-मिनटके बाद लौट कर उनसे कुछ कहता था। एक बार एक दूसरा आदमी उठा और लौट कर फिर वही दृश्य दुहराया।

इस अप्रिय नाटक का कारण जाननेके लिये जनता कानाफूसी करने लगी। जनता की आवाज हमारे कर्ण कुहरोंमें पहुंच कर कौतूहल बढ़ाने लगी :

"सभापतिके साथ बाहरसे आये हुए कुछ कवि हैं—जो अधिक रुपयेके लिये रूठ कर बैठे हैं।"—

"इनको रूठने के लिये यही अवसर उपयुक्त जंचा, पहले तय कर लिये होते।"—

"अपनेको पागल सिद्ध करने वाले कवि यदि ऐसा अवसर उपस्थित न करें-तो आश्चर्य करना चाहिये।"—

"अधिकतर ऐसे कवि भी मिलते हैं जो 'कवि सम्मेलन' की सूचना निकलते ही यश लूटनेके लिये, अपने पैसे खर्च कर, निश्चित तिथि और निश्चित स्थानपर सूंघते-सूंघते पहुंच जाते हैं।"—

"किन्तु, जिनकी अधिक पूछ होने लगती है-वह पैसे मांगनेमें साहससे काम लेते हैं।"—

"मुंडन, कनछेदन, पाणिग्रहणमें भी पैसेके लिये ये कवि नामधारी विशेष जीव मनोरंजनार्थ पहुंचने लगे हैं।"—

"तो क्या इस मेलामें ये साहित्य-सेवा के लिये बुलाये गये हैं।' —

"यह बात है तो प्रतिवर्षकी तरह इस साल भिखारी ठाकुरका विदेशिया-नाच क्यों नहीं बुलाया गया।"—

"विदेशियाके नाचमें खर्च अधिक लगता और प्रभाव कम पड़ता। सभ्य कहे जाने वाले नाचमें नहीं पहुंचते और नहीं दीवान साहबकी शोहरत होती।"—

एक पण्डितजी महाराज क्षुब्ध होकर, बोले, "रुपयेके टुकड़ों पर सरस्वतीको अपमानित करने वाले 'कवि' और 'वेश्या' में कोई अन्तर नहीं।"

हृदयमें धक्का लगा। काश हमारे कवि बन्धुओंके कानोंमें ये आवाजें पहुँच पातीं और वे कवि-सम्मेलनोंकी बाढ़में अपनी प्रतिष्ठाके पानी पर नियंत्रण रखनेमें समर्थ हो पाते?

अपने निकटसे, राज्यके एक परिचित कर्मचारीको, जाते हुए देख मैंने उसे रोक कर पूछा, "यह कौनसा तमाशा हो रहा है?"

उसने धीमे स्वरसे कहा, "स्वराज्य मिल गया तो क्या हुआ? अभी धनी गरीबका सवाल जल्दी टलनेको नहीं है। बाहरसे आये हुए दो धनी कवियोंको दीवान साहबने अपने बंगले पर ठहराया और गरीब सभापतिके साथ अन्य गरीब कवियों को...."

बात पूरी न हो सकी। तालियोंकी गड़गड़ाहटसे पंडाल गूंज उठा। मैंने मंच की ओर देखा। सभापतिके साथ अन्य शेष कवि आ गये थे। कर्मचारी, लोगोंको शांत करानेके प्रयत्नमें लग गया किंतु उसकी अधूरी बातोंका अर्थ मेरी समझमें आ गया। वास्तविक कलाकार अपमानके तीर खाकर विद्रोही हो जाता है।

कवि सम्मेलन जब समाप्त हुआ,— जनता दीवान साहबके प्रभावका बोझ अपने हृदय पर लेकर विदा हुई। और आधुनिक युगके विशेष दयनीय व्यक्ति-गरीब कवि?

मैंने दूसरे दिन सुबहमें ही वह नगर छोड़ दिया किंतु मेरे मस्तिष्कसे कवियोंके "पुरस्कारका प्रश्न" हट न सका।

लग भग पन्द्रह बार सूर्य्य उदय और अस्त हुआ। मैं उस महान कलाकारके कमरेके द्वारके सामने खड़ा था जिसने दीवान साहब द्वारा आयोजित उस कवि सम्मेलन के सभापतित्वका भार अपनी योग्यताकी शक्तिसे निबाहा था।

"आइये!"—उसके अधरपर प्रसन्नताकी रेखा खिंच गयी। मैंने चारपाई पर बैठ कर, साधनाका सजीव चित्र सरस्वतीके विशिष्ट पुजारीको कौतूहल-भरी दृष्टिसे देखा जो चूल्हे पर चढ़ी हुई कड़ाहीमें लौकी के टुकड़े डाल रहा था।

परिचय प्राचीन था। किंतु उनके निवास-स्थान पर जानेका प्रथम अवसर मिला था। मेरा अनुमान था, इस अन्तर्प्रान्तीय ख्याति-प्राप्त कलाकारका कमरा किसी विलासी ऐश्वर्यशालीके कमरे से अधिक सुसज्जित नहीं तो उसकी समानताका दावा करनेवाला अवश्य होगा किन्तु वहां कृत्रिमताका नाम मात्र नहीं था। मेरे नेत्रोंके सम्मुख कविकी सरलता और कमरेकी स्वच्छता नृत्य कर रही थी।

विधुर कवि द्वारा भोजनके लिये किया गया आग्रह व्यर्थ न गया। भोजन करनेके पश्चात् मेरे मानस-पटल पर अमिट छाप लग गयी—यह कवि कलमका धनी ही नहीं किन्तु पाक विज्ञानका पूर्ण पण्डित भी है।

मैं उस कवि द्वारा सुसम्पादित एक 'महाकवि' का अधूरा अभिनन्दन ग्रंथ उलट पुलटकर देखने लगा जो हिन्दी साहित्यके भण्डारमें अद्वितीय प्रमाणित होगा।

'इसकी छपाई शीघ्र समाप्त क्यों करा लेते?'—मैंने प्रश्न किया।

'पैसेका अभाव है।'—उत्तर मिला। आपको...?'—

आश्चर्यकी बात नहीं। कालेजसे जो कुछ मिलता है--वह भोजन आदि आवश्यक व्ययके लिये भी पूर्ण नहीं होता।'—इसी समय पोस्टमैन एक मनीआर्डर द्वारा भेजे गये पचास रुपये दे गया। यू० पी० के एक प्रमुख नगरसे एक कवि सम्मेलनके संयोजकने मार्ग-व्ययके लिये वे रुपये भेजे थे और एक सौ वहां बिदाके समय देनेके लिये लिखा था।

'कवि सम्मेलनों और मासिक-पत्रिकाओंसे आपको विशेष रुपये मिल जाते हैं?'—मैंने पूछा।

'...व्ययके अतिरिक्त जो शेष रहते हैं--अभिनन्दन ग्रंथको पूर्ण करनेके प्रयत्नमें लगाते हैं।'--वह बोले।

किसी प्रकाशकको क्यों नहीं सौंपा दिया? मुझे अकस्मात×××राज कवि सम्मेलन स्मरण हो आया। मैं पुरस्कारके सम्बन्ध में जाननेकी अपनी इच्छाको नहीं दबा सका।

"×××राज कवि-सम्मेलनमें दीवान साहबकी ओरसे आपको कितने रुपये पुरस्कार मिले?"—मैंने प्रश्नकर ही दिया।

"कुछ भी नहीं। मार्ग व्ययके लिये जेब खाली करनी पड़ी, यद्यपि--मुझको काफी प्रलोभन दिया गया था और मेरा अनुमान था, अभिनन्दन-ग्रंथके दो चारफरमे इस यात्राके पश्चात् अवश्य छप जायेंगे।"

दीवान साहब अपने जिलाके सुप्रसिद्ध कांग्रेसी-नेता हैं। नमकके आन्दोलनमें जेल के 'ए' क्लासमें रहनेका कष्ट भुगत चुके हैं। अपनी मोटरसे, गरीबोंके दुःखसे दुखी होकर, देहातों सड़कोंकी धूल उड़ाते हुए, ग्राम णोंके बीच सात-आठ-बार भाषण भी कर चुके हैं। इनके मुसाहबोंका कहना है, प्रांतका प्रधान मंत्री नहीं बना कर इनके साथ भारी अन्याय किया गया। ऐसे गरीब-पालकका इस गरीब साहित्य-सेवीके प्रति ऐसा व्यवहार? मैं आश्चर्यमें पड़ गया। "अन्य कवियोंको क्या मिला?"— मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी।

उन्होंने सहज सरल स्वरमें कहा, "जब ट्रेन खुल रही थी-मैंने देखा, कवियोंके सामने एक लम्बी सूची रखी गयी जिसमें उनके नामके सामने कुछ रुपये अंकित थे जो उनके मार्ग-व्ययके लिये भी पूर्ण नहीं होते—किसीने स्वीकार नहीं किया।"

अपमानका कड़वा घूंट कलाकार सहन नहीं कर सकता। और जब मैं विदा लेकर, वहांसे लौट रहा था, मानसमें विचार-तरंगें उठ रही थीं:

काश दीवान साहब यह समझ पाते कि 'बेगारमें पकड़कर लाये गये आसामी की तरह इन कलाकारोंको भी आवश्यक खर्चके रुपयोंकी आवश्यकता होती है।"

सरकार की नियंत्रण उठाने की घोषणा

डा० राजेन्द्र प्रसादका वक्तव्य

भारतके खाद्य सचिव एवं कांग्रेस प्रेसिडेण्ट डा० राजेन्द्र प्रसादने गत सप्ताह बम्बईमें ३ दिसम्बरको एक प्रेस सम्मेलनमें यह बताया कि नियंत्रण हटानेके सम्बन्धमें सरकारी निर्णय की घोषणा ८ दिसम्बरको की जायेगी। विश्वसनीय सूत्रोंसे मालूम हुआ है कि सरकारने नियंत्रण हटा देनेका फैसला कर लिया है।

खाद्य सचिवने अपने उक्त वक्तव्यमें यह आश्वासन दिया है कि सरकार इस बातका ध्यान रखेगी कि असाधारण स्थिति न उत्पन्न होने पाये जिससे जन-साधारणको कष्ट हो। एक प्रश्नके उत्तरमें डा० राजेन्द्र प्रसादने कहा कि खाद्य पदार्थों और रेशनके अन्तर्गत आनेवाली वस्तुओंके दाम चढ़ जानेकी हालतमें सरकारी कर्मचारियों तथा औद्योगिक और व्यावसायिक श्रमजीवियोंको अतिरिक्त महंगाई भत्ता देनेकी सिफारिशके प्रश्न पर सरकार विचार करेगी।

खाद्यान्नकी धीरे-धीरे रेशनिङ्ग और मूल्य नियन्त्रण घटानेकी नीति पर विचार करनेको प्रान्तीय सरकारोंसे कहा गया है। केन्द्रीय सरकारने यह निर्देश प्रांतीय सरकारों और देशी रियासतोंको खाद्यान्न नीति समिति द्वारा की गयी सिफारिशोंके आधार पर भेजा है। भारत सरकार इन सिफारिशोंको कार्यान्वित करनेके प्रश्न पर विचार कर रही है और आठ दिसम्बरको सरकारका निर्णय घोषित किया जायेगा।

मूल्य वृद्धि

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित खाद्यान्न नीति कमेटीकी मुख्य सिफारिशें ये हैं कि जो खाद्यान्न नियंत्रित हैं उनका मूल्य भाव बढ़ा दिया जाय रेशनिङ्ग और मूल्य नियंत्रण धीरे-धीरे उठा लिया जाये और विदेशसे आये खाद्य पदार्थों पर अवलम्बनकी नीति छोड़ी जाये।

रेशनिङ्ग और मूल्य नियंत्रण उठानेके सम्बन्धमें यह सुझाया गया है कि श्रीगणेश पहले उन पदार्थोंसे किया जाये जो हाल सालमें रेशनिङ्ग और नियंत्रणमें लाये गये हैं। इस बातका ध्यान रख कर कि जितना शीघ्र सम्भव हो सरकारी नियंत्रण हटे स्थानीय हालतोंको देख सुनकर उनके आधार पर ही नियंत्रण हटाया जाना चाहिये। इस समितिके तीन सदस्यों ने उक्त सिफारिशोंका सम्पूर्ण विरोध किया है और यह सुझाव दिया है कि १९४८ में खाद्यान्न पर मौजूदा नियंत्रणमें जरा भी शिथिलता न आनी चाहिये। नियंत्रण ढ़ीला करनेका सवाल उस समय उठता है जब १२ औंसके आधार पर देश भरमें खाद्यान्न पहुंचा सकने एवं किसी आकस्मिक स्थितिके उत्पन्न होने पर उसका सामना कर सकनेके लिये पर्याप्त अन्नकी सप्लाई मिलनेका भरोसा हो जाये।

श्री ईश्वरदास जालान आप सर्व सम्मितसे पश्चिम बङ्गाल व्यवस्थापिका परिषदके स्पीकर निर्वाचित हुए हैं।

डा० राजेन्द्र प्रसादने यह भी कहा कि पहले विदेशसे चीनी मंगानेकी बात थी लेकिन ऐसा करना उचित नहीं समझा गया। इसका प्रथम कारण तो यह है कि भारतके विनिमयके साधन अत्यन्त सीमित हैं अतएव बहुत सावधानीके साथ उनका उपयोग किया जाना चाहिये। दूसरा कारण यह है कि गेहूं, चावल जैसे खाद्यान्न बहुत बड़े परिमाणमें भारतको इम्पोर्ट करना है जिसके लिये काफी विनिमय मुद्रा उसे खर्च करना आवश्यक है।

चीनी ३५) मन

भारतीय पार्लमेण्टमें पण्डित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने नियंत्रण उठ जाते ही चीनीका दाम ५०) मन हो जानेका हवाला दिया था। इस सम्बन्धमें इण्डियन शूगर सिण्डीकेटके मंत्रीने इस आशयकी एक विज्ञप्ति प्रेषित की है कि चीनीका दाम ४१) से ऊपर नहीं चढ़ा। बादेके सौदे फाटकियोंके बीचमें ३८) के आसपास ही हुए हैं। सिण्डीकेटने दाम बहुत कम रखनेका निश्चय किया है। सिण्डीकेट खुल्लम-खुल्ला ३५) मनमें चीनी बेचता है। यह दाम गत वर्ष स्थिर किये गये नियंत्रित मूल्यसे अधिक है किन्तु गन्ना, श्रम और ऐसी ही अन्य पदों पर बढ़ी हुई लागतको देखते हुए यह अधिक नहीं है। यद्यपि गन्नेका दाम युक्त प्रांत और बिहारकी सरकारोंसे सलाह करके निश्चित किया जायेगा सिण्डीकेट किसानको ६० प्रतिशत अधिक देनेको तैयार है। सिण्डीकेटने चीनीका जो दाम बांधा है उसकी ८० प्रतिशतसे अधिक गन्ना और श्रम पर लागत बैठेगी। अवस्था अनुकूल होनेसे सिण्डीकेट दाम घटानेकी कोशिश करेगी।

छुआछूत मिटानेके लिये बिल स्वीकृत

श्री मुन्नी स्वामी पिल्लेका परिगणित जातियोंकी हालत सुधारनेके लिये सरकार से पर्याप्त कार्रवाई करनेके अनुरोधका प्रस्ताव सेठ गोविन्द दासके संशोधनके साथ स्वीकार हो गया। संशोधित प्रस्ताव-को स्वीकार करते हुए स्वास्थ्य मंत्रिणी राजकुमारी अमृतकौरने कहा कि "हम इसे पूर्ण करनेका पूरा प्रयत्न करेंगे और तब तक चैन न लेंगे जब तक कि परि-गणित जाति शब्द हमारे शब्दकोषसे निकल न जायगा।

ज्ञानी गुरुमुख सिंह मुसाफिरने बिल-पर बोलते हुए कहा कि बीसवीं शताब्दीमें भी छूआछूतका होना भारतके लिये एक कलंककी बात है। उन्होंने यह भी कहा कि चूंकि पाकिस्तानमें हरिजनोंको आतं-कित किया जा रहा है और वे जबर्दस्ती मुसलमान बनाये जा रहे हैं इसलिये भारत सरकारको उन्हें वहांसे हटानेकी उचित व्यवस्था करनी चाहिये।

भारतीय पार्लमेण्टने गैर सरकारी बिलोंपर विचार किया और भारतीय अपराध विधानमें संशोधनके लिये श्री ठाकुर प्रसाद भार्गवने जो बिल पेश किया था उसको जनमतके लिये प्रचारित करने-की स्वीकृति दी।

पार्लमेण्टने दो और सरकारी बिल पास किये हैं। एक भारतीय आयकर एक्ट १९२२ में संशोधन तथा दूसरा व्यापार आयकर एक्ट १९४७।

अनिवार्य सैनिक शिक्षा

पण्डित हृदयनाथ कुंजरुने पूछा कि यह क्या सत्य है कि रक्षा मंत्रीने कुछ सप्ताह पूर्व सार्वजनिक रूपसे घोषित किया था कि देशके नवयुवकके लिये अनिवार्य सैनिक शिक्षणकी योजना प्रस्तुतकी जा रही है। सरदार बलदेव सिंहने कहा कि मैं २८ जून १९४७ में जोधपुरमें सैनिक स्कूलके शिक्षार्थियोंके सामने भाषण करते हुए मैंने कहा था कि हम एक ऐसी योजना प्रस्तुत करनेका विचार कर रहे हैं कि देशके प्रत्येक युवकको नौसेना, विमान सेना और स्थल सेनाकी शिक्षा दी जा सके।

अन्न और बिजलीके साधनोंमें वृद्धि

प्रश्नोत्तरके समय नेहरूजीने घोषणा की है कि देशके अन्न और बिजली संबंधी साधनोंमें वृद्धि करनेकी विभिन्न योज-नाओंको शीघ्रसे शीघ्र कार्यान्वित करनेके प्रश्नको भारत सरकार सबसे अधिक महत्व देती है। उन्होंने यह भी बताया कि इन योजनाओंको शीघ्रसे शीघ्र कार्या-न्वित करानेके उद्देश्यसे सरकार विदेशोंकी सहायतासे पूरा-पूरा लाभ उठानेका विचार कर रही है और अमेरिकाके विशेषज्ञोंसे ठेकेके आधारपर बड़ी-बड़ी योजनाएं उपस्थित करनेके लिये लिखा पढ़ी कर रही है।

नेहरूजीको एटलीका निमंत्रण

प्रोफेसर रङ्गाने पूछा कि क्या पण्डित नेहरूको ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीने लन्दनमें बुलाया है? पण्डित नेहरूने उत्तर दिया: "मुझे प्रधान मंत्रीने किसी खास विषयपर विशेष परामर्शके लिये आमंत्रित नहीं किया। वास्तवमें यह बात इससे उठा कि मुझे राजकुमारी एलिजाबेथ के विवाहमें सम्मिलित होनेका निमंत्रण मिला था। उस समय मैं नहीं जा सका इसलिये बादको विभिन्न विषयोंपर चर्चा करनेके लिये जा सकूं तो उन्हें प्रसन्नता होगी। यदि मौका मिला तो मैं वहां जा सकता हूं

पश्चिमी बंगालमें खाद्य नियन्त्रण

पश्चिमी बंगालके प्रधान मंत्री डाक्टर प्रफुल्लचंद्रघोषने घोषणा की है कि पश्चिमी बङ्गालकी सरकारने एक वर्ष तक और खाद्य नियंत्रण चालू रखनेका निश्चय किया है। नियंत्रण चालू रखनेकी आव-श्यकताके सम्बन्धमें कहा गया है कि नियंत्रण उठानेसे गरीब लोग भूखों मर जायेंगे। धनी वर्गकी बात अलग हैं उस पर कोई असर न होगा।

ध्येयपूर्ति न होनेपर आंदोलन चलेगा

स्वामी रामानंद तीर्थ

हैदराबाद राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ अपने सहयोगी श्री जी० एस० मालकोट और श्री कृष्णचारी जोशीके साथ विमान द्वारा हैदराबादसे मद्रास पहुंचे हैं। राज्य कांग्रेसकी कार्य कारी समितिका यहां बैठक होने जा रही है जिसमें भावी कार्य उप निश्चित् किया जायगा। स्वामी रामानन्द तीर्थने एक वक्तव्यमें रहा है कि राज्य कांग्रेस जो चाहती थी उसकी पूर्ति नहीं हुई है। गत चार मासमें रियासतके अन्दर जो कुछ हुआ है उससे जनताकी भावनाका पता स्पष्ट चलता है। स्वामीजीने कहा है कि जब राज्यमें उत्तर दायी सरकारकी स्थापना और हैदराबाद भारतीय संघमें शामिल नहीं हो जाता है तब तक हमारा आ दोलन बन्द नहीं होगा।

सरदार पटेलने भारतीय पार्लमेण्टमें अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि गत जुलाई में हमने रियासतोंके भारतीय डोमिनियन में प्रवेश करनेके सम्बन्धमें उनसे बातचीत प्रारम्भ की थी। रियासतोंके सहयोगके परिणाम स्वरूप १५ अगस्तसे पूर्व हैदराबाद, काश्मीर तथा जूनागढ़को छोड़कर सबरियासतें भारतीय डोमिनियनमें शामिल हो गयीं। निजाम के प्रतिनिधियोंसे भी हमारी बातचीत हुई लेकिन १५ अगस्त तक समझौता न हो सका। निजाम बातचीत भंग करना नहीं चाहते थे अतएव उनकी प्रार्थनापर हमने उन्हें दो महीनेकी मुहलत दी। फिर गवर्नर जेनरलने हमारी ओरसे बातचीत की। दो मास पूर्व समझौता भी हो गया था लेकिन प्रतिनिधि मण्डलने इस्तीफा दे दिया और उसके स्थानपर निजामने नया प्रतिनिधि मण्डल भेजा। उसके साथ भी हमारा पहले जैसा ही समझौता हो गया। इस समझौतेसे स्पष्ट है कि हैदराबाद पाकिस्तानमें शामिल नहीं होना चाहता। हैदराबादको जो स्थिति है उसके अनुसार उसका भाग्य अटूट रूपसे भारतके साथ बन्धा हुआ है।

समझौतेकी शर्तें

समझौतेकी मुख्य बातें ये हैं:—निजाम सरकार मैसूरकी तरह किसी भी स्थानपर अपने व्यापार एजेण्ट नियुक्त कर सकेगी। ये एजेण्ट हमारे व्यापार कमिश्नर और कूटनीतिज्ञोंके सहयोगसे कार्य करेंगे जिसका अर्थ यह है कि वे उनके नियंत्रण और देखभालमें काय करेंगे। निजाम विदेशोंमें तथा ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके देशों

निजामकी हत्याकी चष्टा

में अपने कूटनीतिज्ञ एजेण्ट नियुक्त नहीं कर सकेगा। रियासत किसी भी दूसरे देशमें शस्त्र नहीं खरीद सकेगी। शस्त्रोंके मामले भी भारत सरकार केवल न्याययुक्त आवश्यकताओंको ही पूरा करेगी। निजामकी सेना और पुलिसके शासन सम्बन्धी मामलोंके बारेमें भारत सरकार से बादमें बातचीत की जायगी। रियासतमें स्थित भारतीय सेनाको धीरे धीरे फरवरी तक वापस बुला लिया जायगा। रेल-तार डाक आदिके प्रश्नपर बादमें विचार किया जायगा। जब भारत सरकारके प्रादेशिक कमिश्नरके लिये स्थान दे दिया जायगा। तब रेजीडेण्टके भवनको खाली कर दिया जायगा। मुद्रा और सिक्केके बारेमें वर्तमान प्रबन्ध ही चालू रहेगा। यह समझौता एक वर्षके लिये हुआ है।

नया मंत्रिमण्डल

निजामकी पुरानी शासन परिषद् भंग-कर अन्तःकालीन सरकार गठित हो गयी है। मि० मीर लायक अली नये प्रधान मन्त्री बनाये गये हैं। मन्त्रिमण्डलमें चार मन्त्री नामजद तथा चार मुसलमान और चार हिन्दू जिनमें दो वर्तमान सरकारके मन्त्री भी शामिल हैं, होंगे। राजबन्दियोंकी रिहाई शुरु हो गयी है। राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ को१५ अगस्तको गिरफ्तार किया गया था, अब अन्य कर्मियोंके साथ रिहा कर दिया गया है। लेकिन कांग्रेस नयी सरकारमें शामिल होगी या नहीं—यह अभी स्पष्ट नहीं है। मुक्त कांग्रेस नेताओंने जो वक्तव्य दिये हैं उनसे पता चलता है कि कांग्रेस नेताओंको 'अन्तःकालीन सरकारके गठनके तौर-तरीकोंसे सन्तोष नहीं है। यह भी सम्भव है कि कांग्रेस नेता शीघ्र ही मंत्रिमण्डलमें शामिल होनेसे इनकार कर दें। क्योंकि कांग्रेस दलको दो सीटोंसे अधिक मिलनेकी गुंजाइश नहीं मालूम पड़ती है। स्वामी रामानन्द तीर्थने एक मुलाकातमें बताया है कि जब तक बुनियादी बातोंपर कांग्रेस सन्तुष्ट नहीं हो जाती है तब तक उसके लिये सरकारमें शामिल होना कठिन है।

हैदराबाद बराबरका हिस्सेदार

हैदराबाद प्रतिनिधि दलके नेता नवाब-जंगने मारत और हैदराबाद राज्यके बीच होनेवाले समझौतेके सम्बन्धमें कहा है कि वर्तमान समझौतेकी शर्तें सन्तोषजनक है क्योंकि मारतीय संघने हैदराबादको एक अधीनस्थ राज्यके बजाय बराबरके हिस्से-दारके रूपमें स्वीकार किया है। रक्षाके लिये मारत सरकारने हैदराबादको उचित मात्रामें अस्त्र देना स्वीकार किया है। नवाब मुईन नवाज जंगसे जब यह पूछा गया कि छतारीके नवाबके नेतृत्वमें जब समझौता हुआ था तब इत्तेहादुल मुसल-मीनने विरोधी प्रदर्शन किया था लेकिन इस बार वह क्या सन्तुष्ट है। नवाब साहबने कहा कि पहले प्रतिनिधि मण्डल-में सभी लोग हैदराबादके बाहरके निवासी थे लेकिन वर्तमान प्रतिनिधि मण्डलमें सभी आदमी मुल्की थे जिनमें इत्तेहादुल मुसलमीनका भी प्रतिनिधि शामिल था।

जांचके बाद अस्त्र दिये जाय

हैदराबाद राज्य कांग्रेसकी कार्य-कारी समितिके अध्यक्ष श्री डी० जी० बिन्दुने एक वक्तव्यमें कहा है कि भारत सरकार निजामको हथियार देनेसे पूर्ण हैदराबादकी स्थितिके सम्बन्धमें कर जांच कर लेगी अभी हालहीमें हैदराबादकी पुलिस और फौजमें वृद्धिकी गयी है हजारों नेशनलगार्ड पूरी तरहसे सशस्त्र कर दिये गये हैं। भारत सरकार इस स्थितिमें जो भी शस्त्र देगी वह जनताको कुचलनेमें काममें लाये जायेंगे। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि कांग्रेस इन सुधारोंको स्वीकार न करेगी। राज्यकी जनता जब तक अपना आन्दोलन नहीं बन्द करेगी तब तक जनताकी सार्वभौम सत्ता स्थापित नहीं हो जाती और हैदराबाद भारतीय संघमें सम्मिलित नहीं हो जाता।

निजामकी हत्याकी चेष्टा

निजामकी हत्या करनेके लिये बम फेंका गया लेकिन दूर गिरा और निजाम बाल-बाल बच गये। कहते हैं कि निज़ाम जब महलसे बाहर जा रहे थे तब रास्तेमें किसीने उन पर बम फेंका, जो सड़क पर गिर कर जोरदार आवाजके साथ फटा। सड़क पर खड़े पांच आदमी घायल हुए। आक्रमणकारीको पकड़नेके लिये कुछ लोगोंने जिनमें अरब भी थे अपनी तलवार खींच ली। वह पकड़ा गया और उसके बाद दो बम और बरामद हुए। निजामने अपनी मोटर रोकी और अभियुक्तको पुलिसके हवाले करनेको कहा। निजाम नित्य ६ मील शहरसे होकर हवाखाने जाते हैं। उस समय सड़कका यातायात बन्द हो जाता है! दर्शक सड़कके दोनों ओर खड़े हो जाते हैं। हैदराबादके नये प्रधान मन्त्रीने रेडियो ब्राडकास्टमें इस गन्दे आक्रमणकी निन्दा की है।

राजाजी और पंडित नेहरू

हवाईयात्रा

(१२वें पृष्ठका शेषांश)

जहां तक भोजनका सम्बन्ध है, खाद्य-सामग्रीके पैकेट खानेके बन्धे घण्टोंपर दिये जाते हैं। अभी तक भोजन परसनेमें हिन्दुस्तानका कोई ख्याल नहीं रखा जाता! चाहे मुसाफिर निरामिष भोजी हो अथवा नहीं, पैकेटमें ठण्ढे मांसहारी खाद्य-पदार्थ ही होते हैं। बड़ी कठिनाईसे अपनी जरूरतके लिये अलगसे मक्खन-रोटीका टुकड़ा मिल पाता है। यह सुझाव दिया जा सकता है कि जो हवाई-मार्ग हिन्दुस्तानसे होकर जाते हैं उनमें निरा-मिष भोजियोंके लिये व्यवस्था लाज़िमी होनी चाहिये।

रास्तेपर मोटरसे और रेलोंपर रेल-गाड़ीमें सफर करनेमें जो मजा आता है उसका कारण यह है कि आदमीको तेज सफरका एक खास आनन्द महसूस होता है। जन्तुकी तरह छोटासा यह मनुष्य ४०, ५० या ६० मील प्रति घण्टाकी रफ्तारसे हवासे सरसराता हुआ जब निकलता है तो उसे बेहद आनन्द प्राप्त होता है क्योंकि वह जानता है कि अपने तईं इतनी गति प्राप्त करना उसे संभव नहीं। परन्तु हवाई सफरमें यह आनन्द भी नहीं आता। इतनी ऊंचाईपर स्थित होनेसे यह होता है कि यद्यपि जहाज ३०० मील प्रति घण्टाकी गतिसे ही क्यों न चल रहा हो, नीचेकी जमीन मस्त बादलकी तरह धीरे धीरे सरकती दिखाई देती है। इस तरह रफ्तार-प्रियताकी मान-विक इच्छा भी पूरी नहीं हो पाती।

अगर सफरके इस ढंगका शास्त्रीय विवेचन करें तो हमें दीखता है कि इसमें पेट्रोल बड़ी भारी मात्रामें खर्च होता है। यह वस्तु निश्चित मात्रामें ही मिल सकती है और संसारके विभिन्न भागोंमें भूगर्भ से निकाली जाती है। इसके स्टाकमें जैसे जैसे कमी होती जाती है वैसे वैसे उप-भोक्ताओंमें दूसरे संग्रह स्थलोंको हथि-यानेकी इच्छा बढ़ती जाती है। इससे आखिरकार लालच, वैर, घृणा और संदेह का बाजार गर्म होता है, और परिणाम-स्वरूप जागतिक महायुद्ध छिड़ जाते हैं। इसलिये, यात्राके इस ढंगमें अस्वाभाविक वृद्धिसे पड़ोसियोंमें कटुताका प्रादुर्भाव होगा।

इस सबका मतलब यह नहीं है कि हवाई-यात्रा रहे ही नहीं, परन्तु केवल इतना ही कि इसकी बुराइयोंसे हम साव-धान रहें और इसके इस्तेमालमें पूरी पूरी सावधानी बरतें। तथा कथित समयकी बचत इतनी नहीं है कि उसके साथ जुड़े हुए अनेकों दुर्गुणोंको दर-किनार कर दिया जाय। आजकी हवाई यात्राको तो हवाई ढुलाई, कहना ही अधिक उचित होगा।

अपनी बेवकूफियां ! डायरी रखिये ।

प्रकाशचन्द्र शर्मा

एलबर्ड हब्बर्ड कहा करते थे कि, प्रत्येक व्यक्ति कमसे कम पांच मिनटके लिये रोजाना 'बेवकूफ' बन जाता है, बुद्धिमानी इसीमें है कि समयकी यह सीमा और न बढ़े।

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डेल कार्नेगीने तो अपना एक फाइल बना रखी जिसमें वे अपनी बेवकूफियोंका ब्योरा लिखा करते हैं। फाइलका नाम उन्होंने 'मेरी बेवकूफियां' रखा है। वे कहा करते हैं कि 'मैं इस फाइल कोपढ़कर अपनी कठिनसे कठिन, समस्या सुलझा लेनेमें समर्थ होता हूँ।'

एच० पी० हावेल एक मामूली क्लर्कसे उन्नति कर अमेरिकाके धनकुबेर हो गये थे। अपनी सफलताका कारण वे अपनी 'मुलकाती डायरी' बतलाया करते थे जिसमें उन्होंने मुलाकातोंकी सूची लिख रखी थी। प्रत्येक सप्ताहके अन्तमें आप हर भेंटकी आलोचना कर अपने आपसे प्रश्न किया करते थे। मैंने उस भेंटमें क्या गलती की? मैं किस प्रकार अपनेको सुधार कर और अधिक सफलता प्राप्त कर सकता था? इत्यादि!

कभी कभी इस आलोचनासे उन्हें दुःख भी पहुंचता था किन्तु वे कहा करते थे कि यही मेरी सफलताकी कुंजी है।

बेन फ्रेंकलिन रात्रिको दिन भरकी अवांछित घटनाओंपर विचार किया करता था। इस प्रकारके अन्वेषणसे उसने अपने आपमें १३ बुराइयां पायीं जिनमें निम्न तीन प्रमुख हैं—समयका दुरुपयोग, निठल्ले बैठे रहना, लोगोंसे बहस करना।

फ्रेंकलिन अपने किसी एक दोषको चुनकर एक सप्ताह उस तक से द्वन्द्व करना प्रारम्भ करता था। रोजाना वह नोट कर जाता था कि किस दिन किसको जीत हुई। दूसरे सप्ताहमें अन्य दोषको चुना करता था। दो वर्ष ऐसा करनेके बाद उसका मत था कि संसारमें तीन चीजें बहुतअधिक कड़ी है। इस्पात हीरा और अपने आप को पहचाना।

मान लीजिये आपको किसीने 'बुद्धू' कह कर डपट दिया। आप क्या करेंगे? लिंकन ने एक राजनीतिज्ञको प्रसन्न करनेके लिये अपनी सेनाकी टुकड़ीको स्थान बदलीकी आज्ञा दे दी। युद्ध मन्त्रीने इसे भारी भूल समझकर आज्ञा माननेसे इनकार कर दिया और कहा कि ऐसा कर लिंकनने अपनेको 'निरा बुद्धू' साबित कर दिया।

लिंकनको जब यह मालूम हुआ तो उसने कहा कि जब युद्ध मन्त्रीने मुझे 'निरा बुद्धू' कहा है तो अवश्य ही मैं बुद्धू हूंगा क्यों कि वह कभी गलती नहीं करता। मैं अपनी आज्ञा की खुद जांच करूंगा। बादमें उक्त मन्त्रीने यह साबित कर दिया कि उसकी आज्ञा गलत थी। लिंकनने उसे वापिस ले लिया।

हम लोग 'आलोचना' से घबड़ाते हैं, डरते हैं, चिढ़ते हैं, कभी कभी क्रोध भी प्रकट कर बैठते हैं। 'किन्तु यह निश्चित हैं कि चार बारमें हम तीन ही बार सही हो सकते हैं'—कमसे-कम थियोडोर रूजवेल्ट का यही ख्याल था। आइन्सटाइन जैसा विद्वान गणितज्ञ भी स्वीकार करता था कि सौ में से निन्यानबे बार उसके परिणाम भी गलत हो जाते हैं।

स्वस्थ आलोचनाका मि० ई० एच० लिटिल स्वागत किया करते थे। पुराने जमानेमें आप कालगेट साबुनोंके सेल्समैन थे किन्तु बिक्री न होनेकी वजहसे आपको नौकरी छूटनेका भय हुआ इसलिये बादमें आप जब भी साबुन बेचनेमें असफल हो जाते थे, बेधड़क आप उसी व्यापारीके यहां पहुंचकर पूछते, 'मैं आपका नेक सलाह और आशीर्वाद प्राप्त करने फिर आया हूँ, कृपया साफ साफ बतलावें कि आपने अभी अभी मेरा साबुन खरीदनेसे क्यों इनकार कर दिया। इस प्रकार व्यापारियों के यहां आपने स्थान पा लिया, उनसे काफी घनिष्ठता हो गयी। और आज आप 'पामोलिव फरम्युर्स' जैसे विशाल और ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठानके अधिष्ठता हैं।

आपके पति......

—क्रोधी हैं? आप नम्र बनें, उनके स्वभावमें सुधार निश्चित है।

—का कद छोटा है?-टिप्पणियोंकी परवाह न करें-याद रहे अपनी चीज, अपनी ही चीज है।

—धनी हैं? आप अनादि काल तक उनकी ऋणि नहीं। वे जो कुछ भी देते हैं आप उसके योग्य हैं—अगर आप गुणी हैं?

—निर्धन हैं? दोषारोपण न करें, जो है उससे ही सुधा बरसायें, उन्हें अपनानेकी चेष्टा करें, उन्हें नीची देखनेको अवसर न दें।

—अतिव्ययी हैं? कुटुम्बके आर्थिक कार्य क्रमका भार ग्रहणरनेमें पीछे न हटें, यह आदत सराहनीय नहीं, इसे किसी भी मूल्य पर रोकें।

—चतुर हैं? उनसे प्रतिद्वन्द्विता करनेकी चेष्टा न करें। ऐसे लोग शांत और नेक पत्नी पसंद करते हैं

—घरमें रहना ही अधिक पसन्द करते हैं? आप उन्हें घरपर आराम और सुखदें, वे आपको बाहर अवश्य ले जायेंगे!

संसारका श्रेष्ठ कैदखाना

संसारकी जेलोंमें टर्कीका कैदखाना उत्तम माना जाता है। यहां कैदियोंके चरित्र के निर्माणकी चेष्टा की जाती है। कैदखाना इमराली नामक द्वीप पर बसा हुआ है। इस 'कोलोनी' को कैदियोंने ही बनाया है। बहुत सी बड़ी बड़ी झोपड़ियां और

ऐसे ऐसे विशाल भवन बना कर ब्रिटेनमें मकानोंके अभावको दूर किया जा रहा है

कान इन लोगोंने बनाये हैं। इन्हें खेती बारी सिखलाई जाती है। खेतोंकी फसलसे जो आय होती है उसे कैदियोंमें बांटकर उसके एकाउन्टमें जमाकर दिया जाता है। इस तरह मुक्त होने तक उसके पास अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये काफी पूंजी इकट्ठी हो जाती है। यह देखनेके लिये कि बाहर के अनधिकारी व्यक्ति द्वीपमें न आयें केवल दो वार्डेन रहा करते हैं—पहरा देनेकी आवश्यकता नहीं।

प्लास्टिक युग

'प्लास्टिक' लोहेसे भी कड़ा, कागज और कपड़ेका तरह मुलायम, शीशेकी तरह पारदर्शी और सुन्दर वस्तु है। वह दिन दूर नहीं जब प्लास्टिककी मोटरें, रेल हवाई जहाज, साइकिल, कुर्सी, बिल, कागज कपड़े, जूते और आभूषणोंका इतनी तेजीसे उत्पादन होगा कि नित्य काममें आनेवाली चीजें साधारण व्यक्तियों तक पहुंच सकेंगी।

'प्लास्टिक' कोई नई खोज नहीं, इसका नाम हमारे लिये नया है। ७० वर्ष पहले ब्रिटेनमें इसका सर्व प्रथम निर्माण हुआ था महारानी विक्टोरियाके काममें। धनी वर्ग अपने कांटे और चम्मचों पर सुन्दर हैंडिल लगवाना चाहते थे, हाथी दांत तो इतना था नहीं कि सबपर लगवाया जा सके इसलिये एलेक्जेण्डर पार्कस नामक व्यक्तिने सन् १८६५ में 'यूटिलिटी-आइवरी' (कामचलाऊ हाथी दांत) का अविष्कार किया। ८० साल बाद उसीको हम और आप 'सेल्यूलाइड' कहा करते हैं। इसके पश्चात् एक अंग्रेज और एक आस्ट्रियन ने 'यूरिया' नामक प्लास्टिककी खोज की—इसीका टूथ ब्रूस बनता है।

'प्लास्टिक' निम्नलिखित पदार्थों से तैयार किया जाता है—कोयला, मोम, तेल, छोआ [गुड़], एक प्रकारका कंकड़, लकड़ी, रूई, कोचीन [दूधसे हर तरहका तत्व निकाल लेनेके बाद का बचा हुआ हिस्सा] इसके अलावा पानी और हवाका भी उपयोग किया जाता है। इन खनिज पदार्थों से सत्रह प्रकारके प्लास्टिक तैयार होते हैं।

हम जो दूषित वायु सांस लेकर बाहर निकालते हैं उसे 'कार्बन डायोक्साइड' कहते हैं। रसायनज्ञ इसे कोयले पर आग फूंककर पैदा करते हैं। वे एक प्रकारकी और गैस भी बनाते हैं। जिसे वे 'एमोनिया गैस' कहते हैं। इन दोनों गैसोंको आपसमें जोरोंसे दबा दिया जाता है जिससे 'यूरिया' नामका नमककी तरह एक ठोस पदार्थ उत्पन्न होता हैं।

सम्पादक—देवदत्तमिश्र। ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेस्ट्रेड इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

REGD. NO. C 2229.

सचित्र

विश्वमित्र

THE ILLUSTRATED VISHWAMITRA

आपसे डाक्टरकी सिफारिश

"संक्रमण से सुरक्षित रहने के लिए मैं आपको सदैव एक शीशी डेट्टल तैयार रखने की सलाह देता हूं, किसी के घाव या खरोंच के पक जाने पर जब कि आप को नर्स का काम करना पड़े, अस्पतालों की भांति, संक्रमण से बचने के लिए अपने हाथों में डेट्टल लगाये"

'DETTOL'

डेट्टल आधुनिक एन्टिसेप्टिक

एटलान्स ईस्ट लि०, चेतला रोड, कलकत्ता।
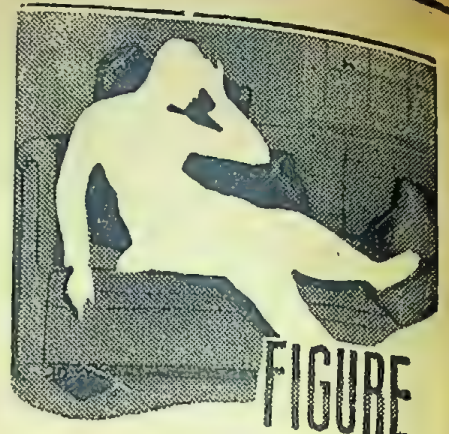
प्रशंसनीय रक्त परिष्कारक दूषित रक्तसे उत्पन्न होनेवाली सभी बीमारियोंकी अचूक दवा तथा टानिक। सूजन, बात, गठिया चर्मरोग, दुर्बलता घाव, फोड़ा फुंसी, गांठोंकी सूजन जो रक्तकी कमी या दूषित रक्तसे उत्पन्न होती है।

AMRITABALLI KASAYA

restores vitality & strength

KAVIRAJ N. N. SEN & CO. LTD CALCUTTA.

फैंसी सिल्क साड़ी

आकर्षक डिजाइन

नं०	७	८	९	५ गज
	१८)	२३)	२८)	"

२) आर्डर के साथ पेशगी

बाकी वी० पी० से

थोक व्यापारियों को खास सुभीता

भारत इन्डस्ट्रीज, जुही—कानपुर

वर्ष—३० संख्या—४३ ता० १९ नवम्बर १९४७ 19th NOVEMBFR 1947 मूल्य =)

उपालम्भ

तुम मुझको पागल कर दोगे !
किसी अकिंचन ने पाया ज्यों
अकस्मात् अलका का वैभव,
तुमने दे डाला है मानो,
भिक्षुक को भूपति का गौरव !
इतना सुख-ऐश्वर्य मुझे दे
क्या अपनी स्मृति भी हर लोगे ?
तुम मुझ को पागल कर दोगे ?

जिसको तुमने स्पर्श किया है,
उसमें क्या रह सकता कल्मष ?
करता है जो ध्यान तुम्हारा,
वह क्या हो सकता है नीरस ?
मिला तुम्हारा प्यार जिसे है,
उसे और क्या तुम वर दोगे ?
तुम मुझ को पागल कर दोगे !

सूनी थी हिरदय की नगरी,
हुआ तुम्हारा तभी पदार्पण ;
व्यर्थ तुम्हें क्या ढूंढा मैंने
देवालय में ? भटका वन-वन ?
मन-मन्दिर में आकर भी तुम
कब तक मुझ से खिंचे रहोगे ?
तुम मुझ को पागल कर दोगे !

आरसीप्रसाद सिंह

परहित बस जिनके मन माही।
तिन कहं जग दुर्लभ कुछ नाहीं ॥

स्वागत !

"सौम्य, शांत, देवतुल्य सुन्दर गौरवदन अनुरागरञ्जित नेत्र और दृढ़वाणी जिसका परिचय है वह जवाहरलाल अपूर्व ज्योति और अजेय तेजका पुंज है। मूलतः जीवन दर्शन सम्बन्धी सिद्धांतपर गांधीजीसे मत-भेद रहते हुए भी जवाहर लालजी उनको गम्भीर सम्मान और श्रद्धा स्नेहकी दृष्टिसे देखते और मानते हैं गांधीकी मध्य युगीनता और जवाहरलालकी आधुनिकताके बीच में एक अन्तर्निहित आध्यात्मिक सम्पर्क है और वह है दोनोंमें पायी जानेवाली एक समान मानवता—मानवधर्म । दोनों ही अपने साथियों, देशवासियोंको प्यार करते हैं और भारतकी मुक्ति उनके लिये विशुद्ध राजनीतिक प्रश्नसे कहीं अधिक महान अर्थ रखती है। किन्तु इसको व्यक्त करनेके दोनोंके तौरतरीके भिन्न हैं, वयोवृद्ध गांधी जी रहस्यवादी अनुभूति और चिन्तनमें विश्वास है तो अपेक्षाकृत अल्पवयस्क नेहरूजी युक्तिवाद और विज्ञानवादमें । गांधीजीका मार्ग है तपस्वीका, नेहरूका संसारीका। लेकिन आदर्शवादी दोनों हैं, क्योंकि गांधी और नेहरू दोनों भारतीय किसानको वह जैसा है उस दृष्टिसे नहीं उसे कैसा होना चाहिये दृष्टिसे देखते हैं। पण्डित नेहरूके विचार मानस पर मार्क्सवादका गहरा प्रभाव है, पर मानसिक चित्तवृत्तिपर उठने वाली तड़ित तरङ्गें उनको मार्क्सवादी सिद्धांतके घेरेसे बाहर निकाल ले आती हैं। फिर भी नेहरूका समाजवाद सुनिश्चित और निरन्तर गतिसे बढ़ रहा है और राजनीतिक संघर्षमें विजयके बाद वे सम्भवतः समाजवादी आन्दोलनका नेतृत्व करेंगे।

ये शब्द हैं ब्रिटिश पार्लमेन्टके श्रमिक दलके प्रमुख वामपन्थी सदस्य श्रीरेजीनाल्ड सोरेनसनके जोकि भारतके प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरूके सुन्दर व्यक्तित्व पर पूर्ण प्रकाश डालते हैं। उनके नेतृत्व और उनकी शासन-कुशलताका उल्लेख संसारके इतिहासके किसी कालके सर्वश्रेष्ठ राजनेता के समकक्ष किया जायेगा, यह हम ही नहीं कहते ब्रिटिश साम्राज्यके इस युगके एक परमकूट नीतिज्ञ राजनेता लार्ड माउण्टबेटेन ने उस दिन लन्दनके इण्डिया हाउसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू का चित्र उद्घाटन करते हुए कहा है। आपने कहा है कि "जब इतिहास लिखा जायगा यह सिद्ध हो जायगा कि किसी समय किसी देशमें पैदा हुए सर्वश्रेष्ठ मानवोंमें पण्डित नेहरूका स्थान है। सत्यता और शुद्धताकी कल्पना गम्य ऊंचाईके वे श्रेष्ठतम नररत्न हैं। जिन्होंने कभी किसी समय किसी दबावमें पड़कर कोई ऐसी नीति या कार्य नहीं उठाया जिसके लिये इतिहासके लिखे जाने के समय वे या उनके देशवासियोंको शर्मिन्दा होना पड़े। पण्डित नेहरूके नेतृत्व और व्यक्तित्वके सम्बन्धमें इन शब्दोंका कितना महत्व है यह इसीसे समझा जा सकता है कि लार्ड माउण्टबेटेनको अपने वायसराय काल और अब गवर्नर जेनरलकी हैसियतसे निकटसे निकट सम्पर्कमें रहकर पंडितजीको समझनेका पूर्ण अवसर मिला है। भारतके विभाजनके साथ ही मुस्लिम लीग और साम्राज्यवादी दुष्ट ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी दुरभिसन्धि और घृणित षड़यन्त्रके फल-स्वरूप भारतकी नयी सरकारके सामने जो परीक्षाकी घड़ी उपस्थित हुआ पंडित नेहरूने अपने गौरव नेतृत्व द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि भयंकर आंधी और बवन्डर बिजली और तूफानका भी किस दृढ़ता और साहसके साथ सामना करके दुश्मनकी चालों को व्यर्थ कर दिया जा सकता है। पिछले तीन महीनेका शासन यह सिद्ध करता है कि पंडित नेहरूके नेतृत्वमें भारत मार्ग में आनेवाले संकटों और आपदाओं को झेलते हुए आगे बढ़ता जायेगा और वह समय दूर नहीं है जब भारत संसारके अग्रगी राष्ट्रोंमें नेतृ-स्थान प्राप्त करेगा। हम अपने ऐसे मनस्वी और तपस्वी नेताका उनके ५९ वें जन्म दिवस (१४ नवम्बर) के उपलक्षमें सादर स्वागत करते हैं और उनके नेतृत्वपर पूर्ण आस्था और विश्वास प्रकट करते हुए उनके शतायु होनेकी प्रार्थना करते हैं।

रास्ता खतरेका है

निराश लीगी शहीद सुहरावर्दी बंगाल मुस्लिम लीग पार्लामेण्टरी दलके नेताके चुनावमें ख्वाजा नजीमुद्दीनसे बुरी तरह पटकनिया खा कर इस समय चारो तरफ हाथ पैर पटक रहे हैं। कभी महात्मा गांधीके चरणों तले बैठ जीवन सार्थक करनेके इरादेसे कलकत्तेसे दिल्ली और दिल्लीसे कलकत्तेका चक्कर काटते हैं तो कभी कायदे आजम जिन्नाकी कदम बोसीके लिये करांचीकी उड़ान भरते हैं। साधुसन्तकी शिक्षा लेना सहज है, किन्तु जिन्ना जैसे धूर्तराजको प्रसन्न करके काम निकाल लेना टेढ़ी खीर है। एक बात और है, काम बन जानेके बाद धूर्त नेता अपने समान ही महत्वाकांक्षी दूसरे चतुर और कूटनीतिज्ञको कभी प्रश्रय नहीं देना चाहता क्योंकि वह जानता है कि मौका मिलते ही वह अपने नेताको भी अपने रास्तेसे हटानेमें चाल चलनेसे बाज न आयेगा। यही कारण है कि असत्य और अनीतिके आधार पर खड़े नेता अपने सहयोगियोंसे काम निकाल लेनेके बाद उनको दूधकी मक्खीकी तरह दलसे निकाल फेंकते हैं, क्योंकि उनको अपने इन्द्रासनके डोलनेका खतरा उनको कभी सुख चैनसे बैठने नहीं देता और अपने निकट एवं योग्य से योग्यतम अनुयायियों पर विश्वास नहीं करने देता। कलकत्तेमें नरसंहार यज्ञके अनुष्ठान द्वारा पाकिस्तानका मार्ग प्रशस्त कर चुकनेके बाद मि० सुहरावर्दीको ज्ञान हुआ होगा कि धूर्तता और दूरन्देशीमें जिन्नाके सामने मैं अभी दूध पीता बच्चा ही हूँ। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि जीती हुई बाजी इस चालाकीके

साथ उनके हाथसे छीन ली जायेगी और वे न घरके होंगे न घाटके ।

मंझधारमें डगमगाती हुई नैयाको कैसे पार लगायें यह प्रश्न इस समय शहीद सुहरावर्दीके सामने है और संभवतः इसका उत्तर पानेके लिए ही उन्होंने भारत में बसने वाले लीगी मुसलमानोंका एक सम्मेलन गत सप्ताह कलकत्तेमें बुलाया था। सम्मेलन बन्द कमरेमें हुआ जिसमें पत्र प्रतिनिधियोंको भी नहीं जाने दिया गया। प्रश्न यह होता है कि करांचीसे मि० जिन्नासे मिलकर आनेके बाद ही इस बन्द सम्मेलनके आयोजनके पीछे अवश्य ही कुछ रहस्य है। निश्चय ही जिन्नाने सुहरावर्दीके सामने नया सुख स्वप्न रखा होगा। भारतमें मुस्लिम लीगका प्रभाव बना रहे, और पाकिस्तानका एक मजबूत गढ़ ढहने न पाये, इस कामके लिये सुहरावर्दीसे बढ़कर उपयुक्त व्यक्ति मि० जिन्नाको और कौन मिल सकता है। इस तरह एक तीरसे दो शिकारोंको निशाना बनाया जायेगा। सुहरावर्दीकी प्रतिभा और संगठन शक्ति भारतके हितकी दृष्टिसे मुसलमानोंको संगठित करनेमें न लगकर पाकिस्तानके पंचमांगियोंके संगठनमें लगेगी। स्वयं मुस्लिम लीगियोंको भारतमें लीगके दफनानेकी बातें कहते सुनकर जिन्नाका चिन्तित होना स्वाभाविक था। युक्तप्रांतीय असेम्बलीमें लीग पार्टीके नये नेता मि० जहीरुलहसन लारीने कहा था कि अब इन्डिया मुस्लिम लीग मर चुकी। संभवतः इस तरहके वक्तव्योंको सुनकर ही जिन्नाने यह साबित करनेके लिये कि भारतमें लीग मरी नहीं है सुहरावर्दीको फिर पीठ ठोंककर इस कामके लिये राजी और अमादा किया। सुहरावर्दी द्वारा कलकत्तेमें बुलाया गया सम्मेलन दरअसल भारतके मुसलमानोंका नहीं भारतके लीगी मुसलमानोंका जलसा था और मुस्लिम लीग को नये रूपमें जिलाये रखनेका प्रयास ही इसका उद्देश्य था, यह बात इस सम्मेलनकी कार्यवाही तथा कर शहीद सुहरावर्दीके भाषणसे बिलकुल स्पष्ट हो गयी है।

हम भारतके मुसलमानोंसे साफ साफ कह देना चाहते हैं कि यह खतरेका रास्ता है। जिस धर्म और सम्प्रदायके नाम पर एक बार हमारे देशका बटवारा हो चुका फिर उसी धर्म और सम्प्रदायके नाम पर किसीके अधिकार रक्षाकी बातको अब हमारा देश बर्दाश्त नहीं कर सकता भारतीय विधान परिषदने डंकेकी चोट अल्प संख्यकके रक्षाकी घोषणाकी है। भारतके मुसलमान, यह नहीं हो सकता कि अपनी रक्षाके लिये अबभी किसीविदेशी सरकारकी तरफ ताकते रहें, खासकर जब कि हमारी भारत सरकारने, जिसके सूत्रधार हैं पंडित जवाहर लाल नेहरू और महात्मा गांधीसे जिसे प्रेरणा मिलती है, केवल बचनों द्वारा ही नहीं कार्यों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि भारतमें प्रत्येक सम्प्रदाय सुरक्षित है, बशर्ते कि वह भारतके प्रति वफादार हों। सम्प्रदाय और धर्मके नाम पर विदेशी सरकार की छत्रछायामें काफी प्रोत्साहन और संरक्षण नामधारी राजनीतिक संस्थाओं और संगठनोंको दिया जा चुका है। स्वतंत्र भारत इस रवैय्येको चालू नहीं रहने दे सकता। भारतके मुसलमानोंके सामने रास्ता खुला है। वे भारतके नागरिकके नाते अपने अधिकारोंके लिये लड़ने वाली राजनीतिक पार्टियोंमें शामिल हों। कांग्रेस ही ऐसा संगठन है जिसमें शामिल होकर वे अपने साथ साथ देशका भी हित साधन कर सकते हैं। मौलाना आजादके नेतृत्वमें भारतके मुसलमान कांग्रेस संगठनके अन्तर्गत संघबद्ध होकर देशके शासनमें पूरा हिस्सा बटा सकते हैं, पर यह तभी हो सकता है जब वे सुहरावर्दीके मायावी चक्कर से अपनेको बाहर रखेंगे। हम बारबार उनको यह स्मरण कर देना चाहते हैं कि भारतमें बसकर भी यदि चार करोड़ मुसलमान जिन्नाका काम साधनेकी साजिश करने की उधेड़ बुनमें पड़ेंगे तो वे अपने हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारेंगे।

युक्तप्रान्तीय असेम्बलीसे हिन्दीके प्रांतकी राज्यभाषा होनेका प्रस्ताव पास होनेके बाद लीगियोंका वहांसे प्रतिवाद स्वरूप निकल जाना और जाते जाते उनमेंसे किसी एकका यह कहना कि हम भारतमें हो पाकिस्तान बनायेंगे, कांग्रेस सरकार पर मुंह देखी नीतिका आरोप, बम्बईके मुस्लिम सम्पादकोंका दो राष्ट्रोंके सिद्धान्त पर अडिग विश्वास प्रकट करना और स्वयं लीगको ही एक राजनीतिक संगठनके रूपमें जिलाये रखनेका प्रयास आदि बात से यह स्पष्ट है कि अभी अधिकांश मुसलमान पाकिस्तानी नशेमें झूम रहे हैं। सीधी तरहसे उनसे यही कहना है कि स्वतंत्र भारत जानता है कि नशा कैसे उतारा जाता है, यह सोच समझकर वे अपना रास्ता अख्तियार करें।

वही रफ्तार बेढंगी—

गत सप्ताह कलकत्तेमें श्री शहीद सुहरावर्दीके निमन्त्रण पर उनके निवास स्थान और उनके ही सभापतित्वमें भारतीय मुसलमानोंका जो बन्द सम्मेलन हुआ उससे पता लगता है कि हवाका रूख किधर है। मारके आगे भूत भागता है यह कहावत भारतके लीगी मुसलमानोंके सम्बन्धमें अक्षरशः इस समय लागू हो रही है। आज इनकी भारत-भक्ति और गांधीजी तथा नेहरूजीके प्रति इनमें जो श्रद्धाका भाव जागा है उसके पीछे हृदयकी शुद्धताका अंश कम भयका भाव अधिक है। भयका जनक अविश्वास और पाप है। भारतके राजनेताओंमें इन मुसलमानोंका अविश्वास और पाकिस्तानके साथ मिलकर भारतमें फिर नया खूनी तूफान लानेका जो पाप दिलमें ये छिपाये बैठे हैं उसका भेद खुल जानेकी आशंकासे सदा भयभीत रहना स्वाभाविक है और यही कारण है कि अपने इस पापको पर्देके भीतर छिपाये रखनेके गरजसे ये आज पंचम कौन कहे सप्तम स्वरमें राजभक्ति और देश भक्तिका राग अलाप रहे हैं, जिसका बेसुरा हो जाना स्वाभाविक है। इन मुसलमानोंके दिल अभी साफ नहीं हुए, यह इसी से स्पष्ट है कि भारत सम्बन्धी अपनी भावी नीतिपर खुलेआम विचार करनेका साहस तक नहीं कर सके। इनके दिलमें काला है, यह भी इस बातसे स्पष्ट है कि पाकिस्तान

बन जानेके बाद भी भारतमें उस संगठन को बनाये रखना चाहते हैं जिसने भारतको खण्ड-खण्ड कराया और आज भी जो भारतके विरुद्ध भयानकसे भयानक षड्यन्त्र कर रहा है। स्वभावतः भारतीय ऐसे संगठनको अपनी भूमिपर फिर फलते फूलते देखना कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। मुसलमान अभीतक अपनी पुरानी चालबाजियों और हथकण्डोंसे बाज नहीं आ रहे हैं। यही सब देखकर उस दिन युक्त प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषद्में सार्वजनिक शांति सुरक्षा सम्बन्धी बिलपर विचारके दौरानमें प्रधान मन्त्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्तने विरोधी दल लीगको कड़ी चेतावनी देते हुये कहा है कि "इस देशमें शान्तिकी रक्षाके हितको दृष्टिमें रखकर सरकार और बहुसंख्यक सम्प्रदायके विरुद्ध मिथ्या और निराधार आरोप लगानेके पुराने हथकण्डे बन्द करो।" इस सत्यसे कोई इनकार नहीं कर सकता कि कोई सरकार अल्पसंख्यकोंकी रक्षा बहुसंख्यकोंकी सहानुभूति और सद्भावके बिना कदापि नहीं कर सकती। उस बहुसंख्य सम्प्रदाय की छाती पर मुस्लिम लीगको बैठाये रहकर उसकी सदिच्छा और सहानुभूति पानेकी आशा नहीं की जानी चाहिये। इस सत्यको पंडित पन्तने महसूस किया है और इसीसे उन्होंने जोरदार शब्दोंमें कहा है कि झगड़ेकी जड़ मुस्लिम लीगको खत्म करो। इस संगठनने देशमें घृणा और फूटके बीज बोये हैं। उसे जीवित रखनेका अर्थ है घृणा और फूटकी जड़ सींचना गणतन्त्रवादी राष्ट्रके विकास के मार्गमें साम्प्रदायिक संस्थाएं कांटे हैं, उनको जड़से उखाड़ फेंकनेकी आवश्यकता है देशके मानस पर फैले हुए साम्प्रदायिक विषको उतारनेके लिए राष्ट्रवादी जहरमोहरे चाहिये। मुस्लिम लीगके रहते भारतमें शान्ति नहीं हो सकती देशकी समस्याको किसी सम्प्रदाय विशेषके दृष्टिकोणसे जब तक देखा जाता रहेगा, तब तक बालिग मताधिकार संयुक्त-निर्वाचन और लोकतंत्र सब व्यर्थ सिद्ध होंगे। अतः देशमें शांतिके लिये सर्वप्रथम आवश्यकता है मुस्लिम लीगको दफनानेकी, क्योंकि पंडित गोविंद बल्लभपन्तके शब्दोंमें, शान्तिके लिये एक नये मनोवैज्ञानिक आधारकी आवश्यकता है और जब तक भारतके मुसलमान लीगको दफनाकर इस नये आधार पर नहीं खड़े होंगे तब तक उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। यह अविश्वास ही संघर्षको प्रश्रय देगा और इसका परिणाम क्या हो सकता है इसे चालाक चौधरी खलीकुज्जमा समझ करही भारतसे नौ दो ग्यारह हो गये हैं, क्या यह भी आजतक मुसलमानोंको बतानेकी आवश्यकता है। जो अब भी मुस्लिम लीग को अपनी मंजिले मकसूद तक पहुंचानेका पासपोर्ट समझनेकी फिर गलती करने जा रहे हैं।

अ० भा० कांग्रेस कमेटीका अधिवेशन

गत सप्ताह १५ नवम्बरको दिल्लीमें आरम्भ हुए आल इंडिया कांग्रेस कमेटीके अधिवेशनमें राष्ट्रपति आचार्य कृपलानीने अपने त्यागपत्रके सम्बन्धमें देशकी स्थितिका सिंहावलोकन करते हुए एक लम्बा वक्तव्य दिया। महात्मा गांधीने भाषण करते हुए कांग्रेसकी राष्ट्रीय परिपाटी और परम्परा का जिक्र किया और कहा कि प्रत्येक कांग्रेस मैनका कर्त्तव्य है कि वह वर्तमान स्थितिका सामना करनेमें अपनी पूरी शक्ति लगा दें। कांग्रेस सम्पूर्ण देश और प्रत्येक सम्प्रदायका सेवक है। साम्प्रदायिक संगठनोंके खतरनाक सिद्धान्तों और आचरणोंका उत्तर देनेके लिये हमें कांग्रेसका प्रबल लोकमत बनाकर उनका प्रभाव नष्ट करना चाहिये।

नियंत्रण हटे

नियंत्रणके सम्बन्धमें महात्मा गांधीने बड़े जोरदार शब्दोंमें कहा कि नियंत्रण उठा दिये जाने चाहिये, तभी जनसाधारणको नियंत्रणसे उत्पन्न दुराचारोंसे बचाया जा सकता है।

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीने कण्ट्रोल हटानेके सम्बन्धमें प्रस्ताव पास किया है।

राष्ट्रपतिके त्यागपत्रपर

महात्मा गांधीने राष्ट्रपति कृपलानीके त्यागपत्रके सम्बन्धमें कहा कि कमेटी या तो उनका त्यागपत्र स्वीकार करे या उनके दृष्टिकोणको अपनाये। पण्डित जवाहरलाल नेहरूने यह सुझाया कि अन्य सब प्रस्तावोंपर विचार समाप्त हो जानेके बाद प्रेसिडेण्टके त्याग-पत्रपर विचार किया जाये।

कांग्रेसकी मौलिक नीति

विदेशी शासनके अन्त और स्वतन्त्र जनताके सामने उत्तरदायी सरकारकी स्थापनाका स्वागत करनेके सम्बन्धमें पण्डित नेहरूका प्रस्ताव पास हुआ। इस प्रस्तावमें कांग्रेसकी नीतिकी व्याख्या की

गयी और कहा गया कि जनता और सरकार दोनों उसीके अनुसार आचरण करे। कांग्रेसने दो राष्ट्रके सिद्धान्तको कभी नहीं माना। कांग्रेसकी नीति देशमें लोकतन्त्रीय सर्व जनीय राज्यकी स्थापना करने की रही है जिसमें सब नागरिकों के अधिकार एक समान रहें और सबको बिना किसी भेदभावके राज्यका संरक्षण प्राप्त हो।

अन्य प्रस्ताव

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी द्वारा स्वीकृत अन्य प्रस्ताव शरणार्थियों, देशी रियासतों, गैर सरकारी सेनाओं और साम्प्रदायिक सङ्गठनोंसे सम्बन्ध रखते हैं।। देशी राज्य सम्बन्धी प्रस्तावमें लोकतन्त्रीय शासन, जिसमें सर्वोच्च सत्ता जनत मानी जायगी, स्थापित करनेको नरेशोंसे कहा गया। मुस्लिम नेशनलगार्ड, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी गैर सरकारी सेनाओं और मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, अकाली दल जैसे सङ्गठनोंको अराष्ट्रीय बताकर इनको अपना सङ्गठन भङ्ग करने और प्रांतीय तथा केन्द्रीय सरकारोंको इस सम्बन्धमें आवश्यक कार्यवाहीकरनेका निर्देश दिया गया।

त्रिपुरा राज्यमें अशान्ति

पश्चिमी पाकिस्तान जब जूनागढ़ काश्मीर तथा हैदराबादमें नयी समस्याएं उत्पन्न कर भारतीय यूनियनको तङ्गकर रहा है तो पूर्वी पाकिस्तान ही इस काममें उनसे पीछे क्यों रहने लगा। त्रिपुरा राज्यने भारतीय यूनियनमें योगदान कर लिया है, अतः उसके विरुद्ध आन्दोलन चलानेकी तैयारियां हो रही हैं, तथा उसे पाकिस्तानमें सम्मिलित होनेका परामर्श दिया जा रहा है। भारत सरकार इस विषय में पहलेसे ही सचेष्ट जान पड़ती है। देखें, आगे चलकर क्या होता है।

कहां क्या हो रहा है?

राष्ट्रपतिका पद त्याग

आचार्य कृपलानीने भारतीय कांग्रेस के सभापतिके पदसे त्यग-पत्र दे दिया अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सम्मुख इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि केन्द्रीय सरकारमें जो कांग्रेसी नेता हैं उनका क्रियात्मक सहयोग उन्हें नहीं मिल रहा है है और वे महत्वपूर्ण बातों उनसे परामर्श नहीं लेते। राष्ट्रपति के पद-त्यागका महात्माजीने भी समर्थन किया है। अब वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके विचाराधीन है।

भारत अफ्रिकाका झगड़ा

संयुक्त राष्ट्र संघमें अफ्रिका निवासी भारतीयोंके प्रति दुर्व्यवहारके सम्बन्धमें भारत सरकारने जो मन्तव्य पेश किया है उसके निर्णयके लिये भारतीय प्रतिनिधि मण्डलकी नेतृ श्रीमती विजया लक्ष्मी पण्डितने दोनों देशोंके बीच एक गोलमेज कांफ्रेंसकरनेका सुझाव रखा है, जिसका अमेरिकाने जोरदार समर्थन किया है। संघकी जेनरल असेम्बलीके निर्णयकी प्रतीक्षा की जा रही ह।

पाकिस्तान द्वारा जूटपर टैक्स

पूर्वी पाकिस्तानकी सरकारमें पूर्वबङ्गा से भारतीय यूनियनमें आनेवाली जूटपर टैक्स लगानेकी घोषणा की है। पहले यह कर भारत से निर्यात होनेवाली जूटपर बन्दरगाहेंमें लगायाजाता है और इसकी अधिकांश आय भारत सरकारके खजानेमें जाती थी। ५ मनी गांठपर १५) तथा कच्ची गांठ और खुली जूटपर ३) मनके हिसाबसे यह टैक्स लगाया जायगा। देखें, भारत-सरकार इस सम्बन्धमें क्या कार्यवाही करती है?

ब्रिटिश अर्थ सचिवका त्यागपत्र

ब्रिटिश पार्लमेंटमें बजट सम्बन्धी प्रस्तावोंको उपस्थित करनेके पहले ही लन्दनके एक सांध्यकालीन समाचार पत्रमें उनके प्रकाशित हो जानेके लिये ब्रिटिश अर्थ सचिव मि० ह्यूग डाल्टनने आज कामन सभासे क्षमा मांगी और अर्थसचिव के पदसे इस्तीफा दे दिया। डा० डाल्टन ने कहा कि हाउसमें प्रवेश करते समय एक लाबी-संवाददाताके पूछने पर मैंने उन बातोंको व्यक्त कर दिया जो बादमें यहां उपस्थित की गयी। मैं स्वीकार करता हूं मेरा यह काम घोर अविवेकका है जिसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

फिलस्तीनकी नयी सरहद

संयुक्त राष्ट्र संघकी फिलस्तीन विभाजन उप समितिने प्रस्तावित भावी अरब और यहूदी राज्योंकी सरहदोंपर विचार करते हुए निश्चय किया कि जफ्फा शहर अरब राज्यकी सीमाके अन्तर्गत रहेगा इस सम्बन्धमें नियुक्त स्पेशल कमीशनने अपनी रिपोर्टमें जफाको यहूदी राज्यान्तर्गत रखा था।

जर्मनीके साथ ४० साला संधि

अमेरिकाके प्रधान मन्त्री मि० मार्शल लन्दनमें इसी महीने होनेवाले पर - राष्ट्र सम्मेलनमें फिर अपना यह प्रस्ताव रखेंगे कि जर्मनीके साथ चार राष्ट्रोंकी ४० साला अनाक्रमणात्मक संधि होनी चाहिये आपने यह भी कहा कि यह बड़े महत्वकी बात है कि यूरोप निवासी यह नहीं समझते कि अमेरिका उनको बीच मंझधारमें छोड़देगा।

लार्ड माउण्ट बेटेन

भारतके गवनर जेनरल लार्ड माउण्ट बेटेन अपने भतीजे फिलिप माउण्ट बेटेन और ब्रिटिश सम्राट नन्दिनी राजकुमारी एलिजाबेथके २० नवम्बरको होनेवाले विवाहमें भाग लेने लन्दन गये हैं। इस अवसरपर उन्होंने गत १४ नवम्बरको पं० जवाहरलालके जन्म-दिवसपर इण्डिया हाउस में पण्डितजीके चित्रका उद्घाटन किया।

फ्रांसमें कम्युनिस्ट प्रदर्शन

कम्यूनिस्टों द्वारा आयोजित प्रदर्शनों में गत सप्ताह मार्सेलीजमें एक व्यक्ति मर गया २१ घायल हुए परिणाम स्वरूप नगरमें सैनिक और यांत्रिक रक्षी बुलाये गये। वहां डकोंमें काम करनेवाले श्रमिकोंने हड़ताल कर रखी है। प्रदर्शन उग्र रूपमें हुए। आहतोंमें हालमें निर्वाचित डिगाल दली मेयर कारलिनी भी हैं। शहरमें रात भर प्रदर्शनकारी यह नारा लगाते घूमते रहे 'डिगालको फांसीपर लटका दो।'

हमारी जिम्मेवारी

लेखक—आचार्य श्री मन्नारायण अग्रवाल

इसबार आजाद हिन्दुस्तानकी पहल दीवाली मनानेका सौभाग्य हमें प्राप्त हो रहा है। हजारों वर्ष पहले जब भगवान रामचन्द्र लंका विजय करके अयोध्या वापस आये थे तब जनताने बड़ी खुशीमें घर घर दिये जलाये थे। १२नवम्बर १९४७को हम सैकड़ों सालोंकी गुलामीके बाद स्वतन्त्रता देवीके स्वागतमें घरघर दीवालीका महाकुंभ मनाएंगे।

दीवालीकी रात अमावस्याकी रात्रि होती है। उस वक्त सारा वातावरण अंधकारमय होता है। उस अंधकारमें हमारे अनगिनत दीप चारो ओर रोशनी फैलाते हैं। अगर अंधेरी रात न हो तो दीपावली-के त्यौहारका कुछ आनन्द ही अनुभव न हो। निराशाके वातावरणमें ही आशाकी चिनगारियां शोभित होती हैं। आज हिन्दमेंभी स्वराज्यके बाद चारों संकट और निराशा के बादल छाये हुए हैं। १५ अगस्तके दिन लोगों को स्वतन्त्रताका वरदान मिला और उसी दिन से मानों आपत्तियोंके पहाड़ ऊपर ढाने लगे। पंजाबमें अक्षरशः खूनकी नदियांभी बहने लगीं, करोड़ों घर वेचीराग हो गये और इस स्थितिको संभालनेके लिये हमारी नयी सरकार भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। पंजाबका हत्याकांड खत्म भी न होने पाया था कि काश्मीर पर चढ़ाई शुरु हो गयी और वहांकी स्थिति दिन दिन बिगड़ती दिखलाई देती है। जूनागढ़की हालत गंभीर बनी ही है, हैदराबादमें दिन दिन भयंकर तूफान आ जायगा। इनका कोई ठिकाना नहीं।

ऐसी स्थितिमें हिन्दकी जनताकी बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। दीपावलीके दिन हमेंअनुभव करना चाहिये कि संकटकाल के अंधेरेमें ही आशापूर्ण उत्साह की आवश्यकता होती है। दीपावलीका हरएक दीपक हमें यही संदेश देता है हताश होना मनुष्यको शोभा नहीं देता।अधिक से अधिक हिम्मत और वीरता की आवश्यकता विपत्तिके समय ही होती है। इसलिये हमें स्वतन्त्र भारतकी पहली-दीवाली के अवसर पर अपनी कमर कस लेनी चाहिये और सभी तरहकी कठिनाइयोंका बहादुरीसे मुकाबला करनेकी शक्ति और दृढ़निश्चय जुटाना चाहिये। भारत वर्ष एक बहुत प्राचीन देश है इस पर न जाने कितने लोगोंने आक्रमण किये और अपना राज्य चलाया। साम्राज्य आये और गये लेकिन हमारे देशकी आत्मा और संस्कृति अमर और अखंड रही है। जब किसी देशको सैकड़ों वर्षों की परतंत्रताके बाद आजादी हासिल होती है तो थोड़ी बहुत मारकाट होना अस्वाभाविक नहीं है। इस तरहकी कठिनाइयां मानों हमें गहरी नींदसे जागृता कराती हैं। इसलिये हम किसी भी तरह हिम्मत न हारें और विश्वास पूर्वक आगे बढ़ते चलें

अभी तो हमें स्वराज्य ही मिला है लेकिन अब हमें सुराज्य या रामराज्य स्थापित करना है। अगर गरीब और मूजकनता का रहन सहन का स्तर बढ़ सके तो फिर स्वराज्य से क्या लाभ हैं? सुराज्य कायम करनेके लिये हमें देशके आर्थिक संगठन का ढांचा ही बदलना होगा। समाजमें भी अनेक सुधार करके क्रांति करनी होगी। इस आर्थिक व सामाजिक क्रांतिके लिए हमें लाखों और करोड़ों नवयुवक कर्मकर्त्ताओं की आवश्यकता है। अभी तक तो हम सिर्फ राजनैतिक क्रांति करते रहे; असली क्रांति का तो अब वक्त आया है, यह हम न भूलें

ईश्वर करे स्वतंत्र भारतकी दीपावली हम सबके लिये मंगल दायी हो और उस दिन आशा और उत्साह की ज्योति देश भरमें जगमगा उठे।

———

अल्प-जीवन

—मित्तल एम० ए०

क्षण भंगुर जग में जीवन है।
फूल प्रात में मुसकाते हैं,
सांध्य पहर में मुरझाते हैं,
सुरभित कर जाते हैं जगको दो पलका उनका यौवन है
क्षण भंगुर जग में जीवन है।
हरे वृक्ष सुख में इठलाते,
सुखमा का अञ्चल फहराते,
आंधी उन्हें उखाड़ फेंकती,यह जीवन का परिवर्तन है।
क्षण भंगुर जग में जीवन है।
लता वृक्ष से नेह बढ़ाती,
अपना सुख सर्वस्व चढ़ाती,
सूख,विलग होजाती प्रियसे क्षणिक मधुर मधु आलिंगनहै
क्षण भंगुर जग में जीवन है।
मस्त पतंगे सुख में विह्वल,
मडराते दीपक पर प्रतिपल,
हंसते जल जाते ज्वालामें,दो पलका मतवालापन है
क्षण भंगुर जग में जीवन है।
मानव का सुख में इतराना,
यौवन, सुख का मधुर तराना,
दोपल गूंज लुप्त हो जाता,छा जाता चिर सूनापन है।
क्षण भंगुर जग में जीवन ।
कौन अमर इस धरती पर है।
परिवर्तन इस जगती पर है,
प्रकृति अनेकों रूप बदलती,दो पलका सुन्दर गायन है।
क्षणभंगुर जग में जीवन है।

किसने यह तूफान जगाया ?

श्री भगवन्त शरण जौहरी एम० ए०

नभसे सूने उरमें किसने इस क्षण जगमग दीप जलाया
दूर, बहुत ही दूर भव्य प्रासाद तुम्हारा;
पर्वत, निर्झर, उदधि किये हैं हमको न्यारा;
तुम से सुरभित पवन व्यर्थ हलचल भर जाती
कंप उठती है उच्छ्वासों से मेरी छाती;
मादक श्यामा घटा न बरसो पल भर इस वन;
इन प्राणों को उमस रही है हरदम निर्जन
किसका स्नेह छलक आया अब किसने यह तूफ़ानजगाया
बुझता-जलता एक-एक तारा क्या कहता
'विह्वलता तो कुछ पानेवाला हो सहता'
आशाका यह छोर युगोंसे मेरा साथी;
अटल साधना व्यर्थ किसीको कब हो पाती;
अपने ही हाथों समाधिका पत्थर रखकर;
मैं तो अब शव-सा निर्जीव पड़ा था भू पर;
फिर किसने अञ्चल फैलाकर, अपने मनका मोह छिपाया
अन्धकारको प्राण वायुसा श्वासों में कर;
मेरे जी का ज्वार शयित था पाषाणों पर;
लज्जित करने, कली-कली चुन हार बनाये;
किस बेलामें तुमभी पागल प्रियतम आये;
पर अब तो मैं चला प्रतीक्षा भुज फैलाये;
मरीचिका मृग एक बूंदको ज्यों बिलमाये;
जन्म-जन्मकेसहचर? अबक्या शेषकि तुमने मानमनाया

खुदीराम बोस — और प्रफुल्ल चाकी ?

लेखक—श्री ललितकुमार सिंह 'नटवर'

इस लेखमें यह रहस्योद्घाटनकी चेष्टा की गयी है कि किंग्सफोर्डके धोखेसे कैनेडी साहबकी मेम और मिस क्यों बम-दुर्घटनाको शिकार हुईं। साथ ही, एक अनुमान लगाया गया है कि खुदीराम और प्रफुल्ल चाकीमें, वास्तविक हीरो कौन था। इस विषय के अबतक के लेखोंसे प्रस्तुत लेखका दृष्टिकोण नवीन है।

लेखक

मुजफ्फरपुर रेलवे स्टेशनके पूर्वी गेटसे अगर आप बाहर हों तो उत्तरकी ओर मुड़ जाइये। साफ सुथरी-छोटी सी सड़क, कचहरी कम्पाउण्डको चीरती हुई एक दूसरी साफ-सुथरी मगर चौड़ी सड़कसे जा मिली है, जो पूरबसेपश्चिम सरपट चली गयीहै। इस संगमके सामने ही यूरोपियनोंका कलब घरहै अब आप बड़ी सड़क से बांयी ओर पश्चिम चलिये। खुशनुमा राज पथ है। कंकरीटको पक्की पिटाई, और दोनों तरफ सुडौल-मेहराबी उतार अगल बगल साफ कटा-छटा कच्चा नाला, जो केवल वर्षा-जलके निकासके लिये ही है। किनारे-किनारे देवतर्फी-वृक्षों का सुन्दर समूह-कतारमें खड़े सिपाहियों की तरह। स्वेतराज पथपर ये तरुवृन्द ऐसे लगते हैं, मानो सुफेद साड़ी पर हरे बूटेदार किनारी। चन्द्रज्योत्स्नामें घूमते समय जी में कवित्व जाग उठता है, किन्तु बरसातमें यहां की रात और भी घनी हो उठती है। खैर, कभी खूब टहल लीजियेगा। अभी आगे बढ़िये। बीस पच्चीस कदम पर, दाहिनी ओर कलब घराका गेट है। बेधड़क अन्दर चले जाइये। मगर जहां तक जाना है, वहीं तक जाइये शायद १९४७ में भी कलबके 'अन्दर खास'में कालोंकी जाने को आज्ञा न हो! उस समय तो कोई बड़ा-से-बड़ा हिन्दुस्तानी औफिसर भी प्रवेश नहीं कर सकता था। एक काले जज महोदय इस अनधिकार चेष्टाके लिये 'बहुत बेआबरू होकर इस कूचेंसे' बाहर निकले थे। बात यह है कि तिहुंत भरके निलहे-गोरोंकी रंगरेलियोंका यह खास अड्डा है। उत्तरी बिहारकी शासन नीति पर विचार विनिमय भी उस समय यहीं होता था। इसमें दर्शनीय नाच घर है। नहान विहार के लिये आयताकार चौकोण जलकुंडहै, जिसका पानी रोज बदला जाता है कई 'आम' और 'खास' कमरे हैं। और भी न जाने क्या-क्याहै। घर ऊंचा एकतल्ला और मजबूत है। चौड़ाईसे लम्बाई तिगुनी है। गेटसे यहां तकका रास्ता रमणीक है। दोनों तरफ करीनेसे कटे-छटे देशी-विदेशी फूल-पौधे हैं। आगे लतिकाओं से लदा एक पार्टी को बरसाती है। यहां सड़क भुजाओं की तरह फूटकर दोनों ओर उत्तर चली गयी है, मानो इस कलियुग केलि-गृहको आलिंगनकर रहीहो। बस अप इस बरसातीकी याद रखिये और लौट आइये गेटसे बाहर होकर दाहिनी ओर, पश्चिम, चलिये। कलब घरका घरा खत्म होते ही कर्बलाका मैदान शुरू होता है। यहां ताजिये और सीपर दफनाये जाते हैं। इसीसे सटा हुआ कन्हौली-कम्पाउण्ड है। आप उसकी पश्चिमी दीवारके पास, दाहिने घूमकर खड़े हो जाइये। दायें हाथके सामने एक नीमका ठूठ हैं, जो उस समय हरा भरा था। अभिवादन कर, इसे खूब ध्यानमें रखिये। कन्हौली कम्पाउण्डके बाद, जज-हाउसका घेरा शुरू होता है। आपके बायें हाथके सामने ही उसका पूर्वी गेट है, जो इस समय बन्द है। इसे भी याद रखिये। जज-कोठोकी पश्चिमवालीदीवारसे लगी दर भंगाराजमहलकी चहारदीवारीकी पूर्वी दीवार है। सामने भव्य गेट है। बीच वाले गेटके सामने थोड़ी दूर पर घटना प्रसिद्ध श्री पी० कैनेडी, बरिस्टर का सुन्दर बङ्गला था। यह ख्याल कर लीजिये। और हां एक बार यह और न भूलिये कि कलब घरसे जज-कोठी तक सड़क पार वृक्षोंका समूह और फुटबालके मैदान है।

आशा है आपने भूचित्र समझ लिया होगा।

भूमिका—

३०, अप्रैल, १९०८ई०। रात कुछ-कुछ अन्धियारी है। प्रायः आठ बजे होंगे। बाबूजी तीसरे पर ठेको तवे पर उलट कर घी डाल ही रहे थे कि कहीं दूर पर भारी धड़ाकेका आवाज सुनाई दी। बाबूजीने कहा कहीं रेल त ना लड़ल है ? बाल कौतूहलको एक महा प्रदीप करेंट लगा। मैं उड़ने ही को था कि डांट पड़ी 'खबरदार, कहीं गइल त! ऐसे तो मैं ८-६ बजे दिन तक सोता

रहता था। मगर दूसरे दिन पाँच बजे भोर हो में नींदको नानी चल बसी। पास पड़ोसमें एक हलचल जान पड़ा। कोई किसीसे कह रहा था-'डांकूने बम छोड़ा है।' बापर, बम? यह भयंकर नाम तो पहले हो पहल सुना। और डांकूने छोड़ा है? अब कौन रुकता है। छटपटाता हुआ पहुंचा सदर सड़क पर। देखा सैकड़ोंलोग पश्चिमकीतरफ झपटे और दौड़े जा रहे हैं। मैं भी दौड़ा। पुल स्पोडमें। मंजिले मकसूद पर पहुंच कर देखा, काफी हंगामा है। कलब घरसे जज गेट तक, दक्खिन ओर दर्शकोंको अनियंत्रित भीड़ हिलोरेका तरह सड़क पर बह आना चाहती, लेकिन पुलिसको कड़ाईका बांध जबर्दस्त है अधिक वेग उस नीम वृक्षके सामनेहै। उसमें बहकर मैं क्षण भरके लिये सड़क पर आ गया। देखा, दक्खिनी नालेमें बिना घोड़ेको एक फिटिन गाड़ो उलटो पड़ोहै, जिसके बीचका हिस्सा जला हुआ है सड़क पर सूखो घासकी तरह कुछ बिखरो हुई है। कहीं कहीं धातुओंके टुकड़ेकी तरह कुछ पुलिसवाले चुन रहे हैं। नीम वृक्ष की सामनेवाली डाली झुलसी हुई है। पुलिसवालोंने शीघ्रही मुझे भगा दिया। फिर भी जो कुछ देख लिया, साथियों से अधिक जानकारीका बाल सुलभ अभिमान जरूर जी में जग उठा। किन्तु सच तो यह है कि कुछ भी समझमें नहीं आया कि इस हुल्लड़से रातवाले बमोंके का क्या सम्बन्ध है। और न डांकूका पता था न बमका। हां, अधिक इन लोगोंमें यही चर्चा थी कि डकुओंने बम गिराकर कैनेडो साहबका मेम और दो मिसोंका हत्या कर डाली। कैनेडी साहब यहां के नामी बैरिस्टर थे पर उनकी लिखी हुई 'हिस्ट्री आफ दि ग्रेट मोगल्स'का खासा मान है। 'तिरहुत कैरियर' नामी अंग्रेजी साप्ताहिक का एक अरसे तक उन्होंने सम्पादन भी किया था। इस पत्र में हिन्दी कथा का भी कुछ अंश प्रकाशित होता था।

क्रमशः भीड़ छट गयो। वास्तविकता का पता किसीको न चला दो घण्टे बाद, इस खबरने शहरमें सनसनो फैलादो कि पूरबवाली ११ बजे दिनकी गाड़ोसे डांकू गिरफ्तार होकर आ रहा है। नियत समयके पहले ही स्टेशन पर इस प्रकार जन समुद्र उमड़ पड़ा कि प्लेटफार्म पर जगह न मिलो तो रेलवे डब्बों पर स्टेशनकी छत पर, यहां तक कि सिगनल, जो उस समय स्टेशन परही था लोग जा डटे। नियंत्रण कठिन हो था। साधारण पुलिसके अतिरिक्त सशस्त्र पुलिसके २० जवान भी थे। जैसे ही गाड़ो आयी, भीड़ की रेल-पेल बेतरह बढ़ गयी। मैं अपनी चपले घुस नीतिको बदौलत आगे बढ़ चुका था। एक ओर हल्ला हुआ। नायकको आज्ञा पाकर पुलिस पलटन एक डब्बेके आगे दो कतारमें-बन्दूक ताने खड़ो होगयी। हथकड़ी और रस्सेसे जकड़े हुए, एक कन्धा पकड़े, दो कद्दावर पुलिसवाले उतरे। लड़का उदास तो था, मगर चेहरे पर दृढ़ता थी। छरहरा बदन सांवला रंग, धोती कुरता सर पर कुछ बड़े बड़े घुंघराले बाल। अवस्था १६/१७ के करीब। बादको मालूम हुआ युवकका नाम खुदीराम बोस है। उसी समय यह संवाद भी जोरोंसे फैला कि इसके साथीकी लाश ६ बजे शामकी इधर ही वाली गाड़ीसे आ रहा है बस संध्याको भी वैसी ही भीड़, पुलिस की वही सरगर्मी। ज्योंहीं गाड़ी आयी चार पुलिसमैन एक स्ट्रेचर लिये उतरे और प्लेटफार्म पर एक किनारे रखदिया। मैंने नजदीक से देखा। एक मियाने कदके-खूब हट्टे-तगड़े जवानको लाश चित पड़ी था। गरदन एक ओर झुकी हुई दोनों हाथ दोनों तरफ कमरसे सटे हुए। ठीक याद नहीं है- बायीं या दायीं हथेलीके पास एक पिस्तौल भी पड़ा हुआ था। पता चला कि इस वीरका नाम प्रफुल्ल-चाकी है।

इतिहास—

मि० किङ्गसफोर्ड मिदनापुरके जज थे। प्रथम बम- दुर्घटनाके तथाकथित-अभियुक्तको आपने फांसोकी सजा दी। बदलकर मुजफ्फरपुर पधारे मुझे खूब याद है, जब वे अपने ब्रूहम गाड़ी पर हवाखोरी या किसी कामके लिये आते जाते तो जबरदस्त जमादार मुसहरसिंह, पिस्तौलके साथ साइकिल पर सवार होकर पीछे-पीछे चलते। कोठोपर भी कड़ा पहरा रहता था। शायद जज साहबको आशंका थी कि क्रान्तिदलने उनसे बदला लेनेकी ठानीहै। और सचमुच इसीका बीड़ा उठाकर खुदीराम और प्रफुल्ल इस नगरमें आये। और जो कुछ उन्होंने किया-फलस्वरूप जो कुछ हुआ, इसकी प्रसिद्धि देशमें काफी हुई। यह बमकी दूसरी महाघटना और दल-रहस्य-गोपनमें आत्म बलिदानकी पहली बेनजीर वारदात थी। इसी सम्बन्धमें अपने 'केशरी' पत्रको एक सम्पादकीय टिप्पणी प्रकाशित करनेके अभियोगमें लोकमान्य तिलकको सात सालकी सजा मिली थी। इस कारण इस घटनाकी शोहरतमें और भी चार चांद लग गये। जो अनजान हैं उनके लिये थोड़ेमें कह दूं। किङ्गस फोडके भ्रममें बेचारी निरपराध बूढ़ी मेम और उसकी दो लड़कियां मारी गयीं। शायद इसीलिये युवक भागे।

कोर्टमें बयान देते समय खुदीराम ने कहा भी था कि अपराधी निशाना बनता तो हम कभी न भागते। घटना के दूसरे दिन सुबह मुजफ्फरपुरसे पूरब तीसरे स्टेशन वैनी (अब पूसा रोड के प्लेट फार्मपर बैठकर चना चबेनेका नास्ता करते समय वह पकड़ा गया हफ्तों कोर्ट बाजी चली। कैदीका जलस शानके साथ कचहरी जाता और लौटता। दस सशस्त्र पुलिस दो कतार में आगे बीचमें फिटिन गाड़ी पर हथकड़ीसे जकड़ा हुआ वह किशोर, साथमें

पिस्तौल धारी गोरा सारजेण्ट और गाड़ीके पीछे भी दो कतारमें दस सशस्त्र पुलिस। अन्तमें बोरको फांसोकी सजा मिली। एकदिन पहले अपराधीकोअन्तिम इच्छानुसार उसे नगरके प्रमुख देव-स्थानोंका दर्शन कराये गये। क्रान्ति का वह दिव्य दीप, सवेरे बुझनेसे पहले रातभर अपनेमें आलोकित रहा। सारी रात गीता-पाठमें बितायी। फांसीके बाद, अभियुक्तके पैरवीकार प्रसिद्ध वकील श्री कालीप्रसन्नबोसने मृत शरीरका अत्येष्ठि-संस्कार सम्पन्न किया

प्रफुल्ल चाकीसे नौ स्टेशन पारकर सेमरियाघाट-स्टीमर पर सवार हो गया था। यह नन्हासा जहाज ज्योंही बीच गङ्गामें पहुंचा कि पुलिस वालोंने उसे गिरफ्तार करना चाहा। बस, उसनेवट पिस्तौल निकाल कर अपनेको निशाना बना लिया। मालूम होता है दोनों बनी स्टेशनतक, रात ही को पैदल भागे। एक वहीं ठहर गया। दूसरा ट्रेन पर सवार होकर सेमरिया पहुंच गया। परन्तु, बहुत कम लोगोंको —वह भी शायद ही-पता होगा कि आखिर भूल हो गयी क्यों कर? किंग्सफोर्ड बच कैसे गया-और कैनेडी साहबकी स्त्री-बच्चियां मारी गयीं?

रहस्य-प्रकाश—

शायद दोनों युवकोंने निश्चय किया कि जैसे ही उनका शिकार क्लबसे लौटकर अपने पूर्वी गेटके पास आयेगा फौरन ही निशाना बना दिया जाये। जजसाहब ठीक आठ बजे रातको क्लब छोड़ते थे इसी अनुसार एक क्लब कम्पाउण्डमें घुसा होगा-देखनेके लिये कि साहब चल पड़े हैं दूसरा बाहर-सड़कके दक्खिन छिपा होगा और सचमुच जैसे ही किङ्गसफोर्ड बहादुर, पोटिकोमें खड़ी अपनी गाड़ी पर सवार होकर चल पड़े कि वह युवक झटसे बाहर आकर साथीको सावधान कर दिया। फिर दोनों तेजीसे लक्ष्यस्थानपर आकर पेड़ोंकी आड़में छिप गये। मगर अफसोस, वे दो मिनट और वहीं न रुके रहे। नहीं तो निर्दोष महिलाओं के खूनसे उनके हाथ न रंगते! बात यह हुई कि जजकी गाड़ी जैसे ही बराम-देसे निकलकर आगे बढ़ी कि तार घर का जमादार उत्तमराम साइकिल दन-दनाता हुआ उधरसे आ पहुंचा और, रास्तेमेंहीसाहबको सलाम बजाकर जोरसे कुछकहा। गाड़ी रुकगयी, साइकिल भी। तार पिउनने झटसे एक पीला लिफाफा पेशकिया। शायद सरकारी जरूरी तार था। रसीद फार्मपर हस्ताक्षर करके साहब बहादुर गाड़के लैम्पमें उसे पढ़ने लगे। तबतक बरामदेके दूसरी ओर ठीक वैसीही गाड़ी निकलकर बाहर चली। इसी मनहूस गाड़ीपर कैनेडी परिवारकी बदनसीब स्त्रियां थीं। दुर्भाग्यवश इसे भी उधर ही से जाना था। गाड़ीकी एक रूपता, कुछ कुछ अंधेरा, और शायद कुछ घबराहट के कारण युवक भ्रमित हो गये। जैसे ही सवारी नीम वृक्षके पास पहुंची कि क्रांति दलकी अति प्रसिद्ध घटना घटी

एक अनुमान—

गाड़ीके कोचमैनने, जिसके साफे का पिछला लटकता छोर बम को लपटसे झुलस गया था, कोर्टमें बयान देते समय कहा था कि ताबड़तोड़ दो बम छोड़े गये एकसे केवल धोमी आवाज और आगकी लौ-सी निकली लेकिन दूसरेने ही नाश किया।

अनुमान है कि पहले बम प्रहारमें घबराये दिल और कांपते हाथोंका आभास मिलता है, मगर दूसरे कड़क-नादमें निश्चय ही मजबूत दिल और मजबूत हाथोंका सिद्ध कौशल झलकता है। इसी लिये कम उम्र और कोमलगात खुदीरामकी अपेक्षा तगड़े जवान प्रफुल्लचाकी ही इस घटनाका हीरो है। यह बात दूसरा है कि पार्टी-डिसिप्लिन के विचारसे खुदीरामने अपने पर लगाये अभियोगको वीरतासेअस्वीकार नहीं किया। साथही यह भी विचार णीय है कि पिस्तौल केवल प्रफुल्लके पास ही था।

जो हो इन वीरोंने मरकर अपनेको अमर बना लिया और इनकी आत्म के लिये सन्तोषकी बात है कि अन्तमें इस खेलका विलेन क्रान्तिकारी द्वारा ही मारा गया। बन्दे मातरम

—

कवि

पर तुम्हे भूला नहीं हूं

—श्री राजकुमार पाण्डेय 'कुमार' बी० ए०

(१)

डग बढ़ाता जा रहा हूं, पर तुम्हें भूला नहीं हूं—
चल रहा हूं,क्योंकि चेतन का नियम चलना रहा है,
जल रहा हूं,क्योंकि शलभों का नियम जलना रहा है
रुक नहीं सकता कि रुकने का नहीं,अवकाश मुझको
और दुनिया भी कहेगी, अस्थियों का दास मुझको
तब निरंकुश विश्व की यह,शूल-जर्जर व्यंग-वाणी
स्वप्न में भी, तुम भला कब, सुन सकोगी राज रानी
इसलिये जीवन-तरी को, मरण-लहरों-के निरंतर
पास लाता जा रहा हूं - पर तुम्हें भूला नहीं हूं—
डग बढ़ाता—

(२)

जिन्दगी बीती, हृदयके घाव ही अपने सुखाते
पर हजारों की कहूं क्या-काश ! कुछ भी सूख पाते
पग उठानेके प्रथम ही, ठोकरें खाता रहा मैं
फूल भी चाहे नहीं, पर शूल ही पाता रहा मैं
पार्श्वमें क्षणभर तुम्हारे रुक गया तो क्या मिलेगा
वृंत-च्युत सूखा सुमन,फिर वृंत पर कैसे खिलेगा ?
अस्तु,इस जीवन-विटपको, आँधियों के अञ्जुमन में
मैं ठहरता जा रहा हूं-पर तुम्हें भूला नहीं हूं
डग बढ़ाता जा रहा हूं

(३)

कवि नहीं है, वह न जिसने बेबसीके गीत गाये
कवि नहीं है वह न जिसने स्नेहके मधु-कण लुटाये
कवि नहीं है वह न जिसने दैन्य पर, आंसू बहाये
आदि कवि था, क्रौंच्चु को वेदनाको सह न पाये
और युग की प्यास को, जो बद्ध वाणी में न करदे
वह नहीं कवि, जो न सूखी हड्डियों में रक्त भर दे
इस लिये तुमसे विलग मैं,आज युगके ही स्वरों में-
स्वर मिलाता जा रहा हूं-पर तुम्हें भूला नहीं हूं
डग बढ़ाता जा रहा हूं

(४)

रुक गया यदि आज भी मैं घड़ी में,संक्रमण को,
सुन न पाया आज भी यदि भेरियों में रक्त-रण को
तो मुझे कवि जन्मदात्री कोख को धिक्कार है फिर
कवि कहानें का मुझे कुछ भी नहीं अधिकार है-फिर,
इन अनेकों के लिये,मुझ एक का बलिदान क्या है
इन करोड़ों के लिये तुम एक का सम्मान क्या है
अस्तु, अपने देशके हित,इस अकिंचन जिन्दगी की-
बलि चढ़ाता जा रहा हूं-पर तुम्हें भूला नहीं हूं
डग बढ़ाता जा रहा हूं

फूटा शीशा

बहुत दूरके कई व्यापारी, व्यापार की धुनमें, विज्ञान की ठसकमें, लक्ष्मीके दर्पमें, नयी-नयी भूमियों और नये नये क्षेत्रोंके अन्वेषण करनेके लिये भ्रमण कर रहे थे। अनायास उन्हें एक शीशा मिल गया। यात्रियोंका मन ललच उठा। एकने कहा, 'यह शीशा बड़ा अच्छा है। इसे मैं अपने देश ले जाऊंगा। सब लोग इसमें अपना मुख देखकर प्रसन्न होंगे।' दूसरेने कहा, 'मेरे देशवाले इसे देखकर अपने वास्तविक स्वरूपको समझते रहेंगे। तीसरेने कहा, 'यह दर्पण है। हमारे देशवाले इसके सहारे दर्प कर सकेंगे। इसे अवश्य पाना चाहिये।' पर सबने मनमें ही कहा। किसी का मन्तव्य किसी दूसरे पर प्रकट नहीं हुआ। एक शीशा और कई व्यापारी।

पर उस शीशेका अपना निजी स्वामी भी था। वह भी जीता जागता उन्हीं व्यापारियों जैसा ही पुरुष था। पर वह व्यापारियोंवाले उपयोगके महत्वसे उपेक्षित था। शीशेका प्रयोग, देखना, उसे स्वच्छ करके मुद्राकी भावभङ्गियां ताड़ना, उसके सहारे अपने रूपको संवारना और हाटमें निकलने योग्य बनाना।

—इन सारे उपयोगोंकी ओर उसके स्वामीका ध्यान न था। रूप संवारना रमणियोंका इन्द्रजाल है, मोह में फंसाने की माया है, यह उसका विश्वास था। शीशेमें बार-बार अपने लिये झांकना तरुणों, किशोरों तथा शिशुओंका बालिश्य है ऐसा उसका दृढ़ विश्वास था। व्यापारियोंकी भांति छल, दम्भ भौतिक दांव पेच उसके पास न थे। पर वह मूर्ख भी न था। शरीर दर्शनसे उसके निकट आत्म दर्शन पूजा करनेका वह अभ्यासी था। बाहरी शीशेसे भीतरी घटके दर्पणको देखना और दिखाना उसे अधिक रुचिकर था। अध्यात्मिकताके समक्ष भौतिकता परेशान थी।

शीशे के लिये पेंच पड़ गये। व्यापारी परस्पर गुथ गये। स्वामीसे पूछनेकी उन्होंने आवश्यकता ही न समझी। भौतिकताका घनघोर संघर्ष हुआ। हिंसाके पुजारी हिंसाकी भेंट हुए। लपेटमें अहिंसक भी आ गये। संघर्षने स्वामीकी चेतनाको जगाया। समर की लपटोंने स्वामीको उष्ण कर दिया। वह विचलित हो उठा। उसे दर्पणका महत्व ज्ञात सा होने लगा। पर काफी धुंवाधार होनेके पश्चात। भौतिक शक्तिका महत्व भी भासित होने लगा। स्वामीके आश्रितोंकी हिंसा भी सजग हुई। पर व्यापारियोंके समक्ष उनकी सम्मिलित शक्ति भी कुछ न थी।

व्यापारी स्वामीकी अणुमात्र भी परवाह न करते थे। उन्हें परस्परकी अधिक चिन्ता थी। शीशेके लिये वे खूब झगड़े।

कुछ आरम्भमें ही छोड़ भागे। कुछ थोड़े दिनों और वर्षों तक चिपटे रहे। कभी युद्ध कभी सन्धि दोनों साथ-साथ चलते रहे। स्वामीको लालच दिया गया। उसकी निवृत्तिको प्रवृत्तिकी ओर मोड़ा गया। उसकी आभ्यांतरिक सम्मानको बाहरकी लालिमामें चकाचौंध किया गया। वह रूप, रङ्ग और रेखाओंको देखने और भोगने का अभ्यासी बनने लगा। व्यापारकी सुन्दरसे सुन्दर वस्तुएं उसे भेंट मिलने लगी। विलासके नाना उपकरणोंके समक्ष शीशेको पकड़े रहनेका मोह शिथिल प्राय-

सारी भेंट, यह सारा इन्द्रजाल, यह सारी चाटुकारिता शीशेके लिये ही है। शीशेमें अवश्य कोई महत्व है यहां तक उसका ध्यान न गया।

व्यापारियोंकी भौतिकता राष्ट्रीय चेतनाकी पोषक थी, शीशेके स्वामीमें जो विलासके उपकरणोंने भौतिकताका जन्म दिया वह व्यक्तिगत भोग चेतनाका साधन थी। यही भेंट करने वालोंका मन्तव्य था। यही परिणाम हुआ।

व्यापारियोंमें पांचसे चार, चारसे तीन और तीनसे कुल दो महत्व वाले रह गये। शेष परस्परकी होड़ा-होड़ीमें टिक न सके और परास्त होकर भागे। उन्हें शीशेका मोह छोड़ना पड़ा। इस युद्धमें शीशेके स्वामीकी भी काफी क्षति हुई। अब घरमें ही एकसे कई स्वामी बन गये। उनमें भी परस्पर संघर्ष होने लगे। कुछने लड़ते हुए व्यापारियोंका पक्ष लेकर आपसमें लड़ना आरम्भ कर दिया। शीशेके स्वामियोंकी संख्या वृद्धिके साथ-साथ उनकी शक्ति-ह्रासका श्रीगणेश आरम्भ हुआ और शत्रुओंको इसकी पूरी जानकारी होते-होते उनके छलकी प्रवंचनाका संसार भी बढ़ने लगा। व्यापार-नीतिकी प्रेरणामें राजनीति थी और राजनीतिके मूलमें शीशेका अधिकार था।

शेष दो व्यापारियोंमें मरणात्तक युद्ध आरम्भ हुआ। शीशेके वास्तविक स्वामी एकसे दो, दोसे दस और दससे अनगिनत हो गये थे। सब शीशेको पूरा-पूरा हड़प जानेके फेरमें थे। व्यापारियोंके पक्षमें जत्थेके-जत्थे दोनों ओरसे सम्मिलित हो उठे। धुआंधार तोपें चलीं और अग्नि-

तक इसकी प्रतिध्वनि पहुंची। कभी सहायता मिली कभी उपेक्षा। परिचालन सूत्र व्यापारियोंसे हटकर उनकी सरकारोंके हाथ में पहुंच गया।

परिणाम—परिणाम अवश्य हुआ। पाशवबलकी ही विजय नहीं हुई नीति की भी जय हुई। जिस व्यापारीने खुल्लम खुल्ला कह दिया था कि वह शीशेको अधिकृत करना चाहता है उसे अपने मन्तव्यसे विरत होना पड़ा। जिसने छद्म भाषामें केवल यह कहा था कि शीशेसे उसका कोई सरोकार नहीं। वह तो केवल अपना व्यवसाय चाहता है और इसी मन्तव्यके लिये शीशेका थोड़ा बहुत उपयोग उसे वांछनीय है, वही अन्तमें टिका। छीना-झपटीमें भागने वाले व्यापारीने चार पांच ऐसे आघात शीशे पर किये थे कि उसमें चार पांच गहरे दाग लग गये। वे आजतक न छुटाये छूटे, न निकाले निकले। इसी प्रकार एक और व्यापारीने भी तीन अमर व्रण शीशेपर डल दिये थे।

अब इस शीशा-युद्धका दूसरा काण्ड प्रारंभ हुआ। स्वामियोंके जत्थे परस्पर झगड़ रहे थे। व्यापारीका मार्ग सरल था। अपनी नीति द्वारा एकको दूसरेसे लड़ा देना, कभी किसीका और कभी किसीका पक्ष लेकर, कभी किसीको और कभी किसीको हराना और जिताना। सब इसकी मित्रताके प्रार्थी थे। सबमें बलशाली यही व्यापारी था। यदि कहीं सब स्वामी एक हो जाते तो इस विदेशीके लिये स्थान न था। पर ऐसा होता कैसे? 'विनाश काले विपरीत बुद्धि'।

एक-एक करके सब स्वामी परास्त

हुये सब शक्ति खो देते। बिना मांगे व्यापारी के हाथमें शीशा था। सभी उसके मुखापेक्षी हो गये। धीरे धीरे स्वामियोंका भी वह स्वामी बन गया। शीशेका पूरा और चौकस प्रयोग व्यापारीके देशके हितमें होने लगा।

घड़ियां बीतीं दिन ढले सप्ताह और माहके आवर्तन होने लगे। वर्ष आये और वर्ष गये। शताब्दियोंकी सीमा भी पार हुई। नये स्वामीका नित नया रङ्ग-ढङ्ग और नित नया व्यवसाय। शीशेमें मूठ लगाई गयी वह साफ किया गया। उसमें रजतपरिधि लगाई गई उसकी लम्बाई चौड़ाई नापकर खोल बनाया गया। इसमें बड़े बड़े अक्षरोंमें व्यापारीने अपना नाम खुदवाया। मूठ इसलिए लगाई गई कि मुट्ठीकी जकड़में वह रह सके। स्वच्छ इसलिए किया गया कि स्वामी उसका उपयोग भली प्रकार कर सके। रजतपरिधि इसलिये लगाई गई कि उससे निकाली हुई स्वर्ण परिधिका आभास देखने वाले को न हो और कोई यह न कहे कि सोनेके लालचमें इसके स्वामीने सीमायें निकालकर शीशे को अशुभ बना दिया है। खोल इस लिये चढ़ाया कि शीशेको अन्य कोई न देखे। उसका सौंदर्य किसीका लालच न बढ़ा दें।

पर शीशेके परिचित बहुतसे लोग आस ही पास थे उससे आजन्मसे सम्बन्धित थे। उसका महत्व खूब जाना बूझा था और अपने साथ अपने पिता, प्रपितामहका अधिकार भी लोग समझते थे। और था भी। पौत्रिक मोह, उत्तराधिकारका स्वत्व परम्परा जागरण ईत्यादिने मिलकर व्यापारीके अनधिकार्य हाथसे प्रतिविरोध उत्पन्न कर दिया। संघर्षका अकुंर शतधः हो कर प्रस्फुटित हुआ। एक ही बात अनेक मुख कहने लगे, एक ही ध्वनि अनेककर्ण विवरोंमें प्रतिध्वनित होने लगी।

व्यापार ने बहुत छल किये। नये-नये अस्त्रोंसे काम लिया। नये नये तर्क उकसाये गये। नये नये साधन खड़े किये गये। अधिकारके नई-नई परिभाषायें रची गयीं। सबका प्रभाव पड़ा और सब विफल भी हुए। क्रूरता की प्रतिक्रिया हुई और मृदुता का भी प्रतिफल हुआ। युद्ध खूब चला मेल खूब हुये। विग्रह या सन्धि वारी वारी निरन्तरकी घटनायें हो गईं। पर व्यापारी शीशा छोड़ना न चाहता था औरलोग अपना शीशा उससे ले लेना चाहते थे।

व्यापारीकी घरेलू आपत्तियां भी कभी-कभी उसे क्षुब्ध कर देती थी और लोगों के समक्ष झुक भी जाता था। उसने लोगों से कहा शीशा तो मेरा खोलमें रहेगा। तुम इसे प्रयोग कर सकते हो, इसे राखसे मांज कर साफ रख सकते हैं। कुछ लोग इतने ही में संतुष्ट हो गये। पर अधिकांश जन समुदायको यह समझौता बिलकुल ग्राह्य न था। वह कहता था—शीशा हमारा है हम उसे अपने अधिकारमें रखेंगे।

फिर झगड़ा चला। फिर क्षणिक संधि हुई। व्यापारीने भेद नीति आरम्भ की। मिले हुए भाइयोंको फोड़ा बड़े और छोटे दो गिरोह बने। जिनमें प्रेम था उनमें घोर विद्वेष खड़ा हुआ। दण्डमुण्ड सम्मेलन प्रारम्भ होने लगे। जन्मके भाई मरणके शत्रु बन गये। छोटे गिरोह को व्यापारी की सहायता थी। अब संघर्षके दो पक्ष बन गये। बड़ी संख्याका व्यापारीको निकाल देनेकी चेष्टा और छोटे गिरोहको मिलानेका प्रयास और छोटी संख्याका व्यापारीकी ओर झुकना और शीशेके प्रति अपना अधिकार सावित करना।

दूसरेके पदार्थ को दूसरा भोगे दुनियां अब इसके प्रतिकूल हो गयी थी। व्यापारी का सारे विश्वमें करोवार था। उसके नेत्र दूसरोंके आरोपके समक्ष झुक जाते थे। परन्तु उसके पास बहाना था। इसके स्वामी परस्पर लड़ते हैं। शीशा किसे दिया जाय। और लड़ाई होती भी थी। पर छल थोड़े समयमें छलक भी उठता है। संसारकी हाटमें बराबरके खरीदारोंमें संघर्ष भी चलता है। व्यापारीके स्वार्थोंमें रेड़ मारने वाले शीशेके छद्म व्यवहारका रहस्योंद्घाटन जोर शोरसे करते थे। इस कोलाहलका बहुत काल तक सामना करना सरल न था। विश्वमें एक प्रतिकूल वातावरण बनने लगा। घरके इस आन्दोलनको प्राण मिले। व्यापारीको भीतर और बाहर दोहरा सामना करना पड़ा। मानव स्वार्थी है पर छिपकर। मानव उदार है धर्मात्मा है, आध्यात्मिक है और इमानदार है पर डंकेकी चोट पर। वह भी तरी जीवन से जीता है। पर बाहरी जीवनसे जीना पसन्द करता है और दिखाता है। स्वार्थ का विस्तार उसके तर्कका सहारा लेकर परमार्थका पूरा रूप धारण कर लेता है। पर भेददृष्टि भी तो होती है। पैनी आंखें सब चीरकर देख लेती हैं और असली रहस्यके नंगे हो जाने पर तर्क युक्ति के न जाने कितनी आवरण समेटने लगता है। परन्तु व्यापारीका स्वार्थ तर्क और युक्तियोंके न जाने कितना स्वरूप बदल चुका था और कपड़े खोलने या बदलने के अन्तरमें उसके नङ्गेपनको सब मित्रोंने कभी न कभी देख लिया था, शत्रु सब तो जानते ही थे। दुनियांमें लालच खुल रहा था कोई मार्ग न था। बहुत काल तक बड़ी और छोटी संख्यामें युद्ध उत्तेजित रहा। आमरण बैरकी नींव भी पड़ गयी पर व्यापारीके लिये लोकमतकी कोई सहानुभूति दुनियांका कोई कोना देनेको प्रस्तुत न था। उसने निश्चय कर लिया कि वह शीशा छोड़कर चला जायगा। इसीमें विश्वके समक्ष वह कुछ आदर पा सकता है पर शीशा छोड़ना था। सर्वदा के लिये उसे छोड़ना था। बड़ा सुन्दर बड़ा उपयोगी मन बैठा जा रहा था।

हां तो उसने निश्चय किया कि शीशे को फोड़कर दो कर देगा। और संख्याके अनुपात से उन दोनों भागोंकी सीमा बना देगा। पर शीशेको परिधि इतनी शक्तिशालिनी थी कि वह टुकड़े द्वारा ही उससे पृथक न हो सकते थे। तोड़नेका एकने विरोध किया दूसरे ने समर्थन। अन्तमें शीशा फोड़ा ही गया। व्यापारीने इस अशुभ कामको अपने हाथों किया।

पूरे शीशेका यही रहस्य है कि जब-तक उसके खण्ड परिधिमें जुड़े है सबमें पृथक-पृथक एक ही मूर्ति प्रतिबिम्बित होती है। सब टुकड़े एक ही का मुख तांकते हैं।

स्वाधीनता-प्राप्तिके उपलक्षमें नाना प्रकारके उत्सव समारोह देशके प्रायः सभी स्थानोंमें १५ अगस्तको ही सम्पन्न हुए परन्तु तीर्थराज प्रयागके समान हमारे नगर की बात तो निराली ही ठहरी। जिस प्रकार वहांके कुछ मनचले नौजवानोंने ता० २८ अगस्तको वहां गुलामी की तेरही भी मनायी, उसी तरह हमारे कुछ यारदोस्तोंको पितृपक्षकी समाप्ति यानी आश्विन अमावस्याके दिन एक कविसम्मेलन करने चुकी सूझी। स्थान ना गया वही टाउनहाल जिसको अब भिन्न भिन्न रूचिके व्यक्ति भिन्न भिन्न नामोंसे पुकारा करते हैं। यानी महंथ दिग्विजयनाथ जीके अनुयायी जिसको नगर मंदिर, काका कालेल करके

त्यिक गोष्ठियां प्रायः पूर्णमासी को हुआ करती थीं, परन्तु इस चोरबाजारके जमानेमें हमारी समझसे अमावस्याका महत्व पूर्णिमासे कहीं अधिक है, इसलिये मैंने इस तिथिको ही आपलोगोंकी अभ्यर्थनाके लिए अधिक पसंद किया। फिर बिजलीके बल्बोंकी जगमगाहट जैसी अच्छी अंधकारमें लगती है; वैसी प्रकास में नहीं, इसका अनुभव भी आप सज्जनों को अवश्य होगा। आशा है, आप महानुभाव मेरी इस सूझकी भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कविसम्मेलन की कार्यवाही को आगे बढ़ायेंगे।

संयोजक महोदय जब इतना कह कर

तक हमपर दखल जमाये फिर कौन नागरी को ढाढस कहो बंधाए सच पूछलो अगर तो कुछ भी मिला नहीं है जिस ओर दृष्टि डाला, सब सिलसिला वही है।

दावानलजीके अंतिम शब्दकी समाप्ति पर जोरोंकी करतल ध्वनि हुई। यद्यपि मंचपर और आगे बैठे हुए गांधी टोपीधारी कुछ भाइयोंने इस ध्वनि प्रदर्शन में भाग नहीं लिया परन्तु पीछे खड़ी बेशुमार जनताने इस पूर्ति पर पर्याप्त हर्ष प्रकट किया। उनके बीच खड़े कुछ नौजवानोंने खुलकर अपनी मंडलीमें कहा भी कि बेशक इस आदमीने समयकी सच्ची-सच्ची तसवीर रख दी है हम लोगोंके

अमावस्याका उत्सव

(श्रीराम जीवन शर्मा)

संप्रदाय वाले शहरकी चौपाल। परन्तु अभी इन सांस्कृतिक संघर्षोंसे दूरही रहनेवाले हमारे कट्टर कांग्रेसी भाई जिस को टाउन हालही कहना पसंद करते हैं, उसी स्थानपर बड़ी सजधज और नाजोअदाके साथ कवि सम्मेलनका आयोजन आरम्भ हुआ।

सभापतिके लिए यों तो कई नाम पेश किये गये परन्तु बहुमत रहा कविवर 'बंदूक' जीके ही पक्षमें आदरणीय पं० गयाप्रसादजी शुक्ल (सनेही-त्रिशूल) की देखा देखी कविवर कालीचरण शर्माके भी यद्यपि दो उपनाम हैं 'पंखा' और 'बंदूक' परन्तु प्रसिद्ध अधिक बन्दूकही है। बन्दूकजी के सभापति पद पर आसीन हो जानेके बाद कवि सम्मेलनके प्रधान आयोजक पं० ह्यां सोड़ शर्माने उपस्थित सज्जनोंसे कहा महाशयो, कुछ दिन पूर्व हमारे यहां साहि-

बैठ गये तो सर्व प्रथम कविरत्न 'दावानल' जी मंच पर खड़े हुए। कवि सम्मेलन चूंकि नये और पुराने दोनों ही ढंगसे मनाया जा रहा था इसलिए नवयुगके निर्माण कर्त्ताओंकी राय हुई कि पहले समस्या पूर्तियां पढ़ली जायें तब हमलोग अपने स्वतंत्र गीत गावें। और 'दावानल' जी क्योंकि पुराने कवियोंके नेता हैं एतदर्थ सबसे पहले उन्हींको अपना जौहर दिखानेका सुअवसर प्रदान किया गया। समस्या थी 'सब सिल-सिला वही है' जिस की पूर्ति 'दावानल' जीने यों की थी ;—

मुंह तो चमक रहा है।, पर दिल खिला नहीं है। कैसे खिले? अभी जब, सब सिलसिला वही है अंग्रेजतो गये पर अंग्रेजियत न भागी परतन्त्र भावनाके हम बन सके न बागी है हैट पैंट अब

सामने।

दूसरा नम्बर था कविता पढ़नेवालोंमें एक राय साहबका। राय साहब लक्ष्मीके लाड़ले होते हुए भी सरस्वती सेवकोंके समारोहोंमें भाग लिया करते थे। शौकीन मीजाजके आदमी चुलबुले आदमी, कविसम्मेलनोंमें दूसरोंकी कविता सुनते-सुनते स्वयं भी कुछ कहने लगे हैं। उपयुक्त समस्याकी पूर्ति उन्होंने जो की वह इस प्रकार है।

भय था हमें न हमसे, कैफियत देश मांगे
भय था हमें न हमसे, सुख शांति दूर भागे
भय था हमें कि भूखी जनता न कहीं जागे
भय हमें कि शोषित जन जायं न बढ़ आगे
सो सब नहो सका कुछ बस खैरियत यहीहै
जिस ओर देखता हूं सब सिलसिला वहीहै

दाद इनको भी काफी मिली लोगोंने खुलकर कहा कि जमींदार और पूंजीपति

वर्गके मनोभावोंको रायसाहबने साफ साफ प्रकट कर दिया है। सच :मुच उन लोगों को इस बातका बड़ा भय था कि स्वराज्य मिल जानेपर न मालूम हम लोगोंके प्रति कैसा वर्ताव हो। कराची कांग्रेसके मौलिक अधिकारोंकी याद करते ही तो उनकी नानी मर जाती थी। फिर ये हमारे सोशलिस्ट कम्युनिस्ट, फारवर्ड ब्लाकी भाई तो भविष्यकी सुनहली तस्वीरें खींच-खींचकर उनके पेटमें हड़कम्प पैदा किये हुए थे। परन्तु वस्तु-स्थितिके सामने आ जानेपर जब उनको पता चल गया कि वह सब तो हाथीके केवल दिखानेके दांत थे, वास्तवमें ये लोग भी हमारे शुभ चिन्तक ही हैं तो उनकी बांछें किस प्रकार खिल गयीं, यह तो देखनेसे पता चलता है मिनिस्टरोंके स्वागत समारोहोंमें उनका उत्साह, उनकी लगन देखते ही बनती है।

रायसाहबके बैठ जानेकेबाद जो महाशय मंचपर आये उनकी भेष-भूषा बड़ी सादी थी और देखनेमें वे ग्रामीणसे लगते थे। परन्तु कविता पाठके समय जब उन्होंने पतेकी बातें कहनी शुरूकी तो श्रोता समूह चकित हो गया। 'ग्रामीण' जी को चूंकि कचहरीके अमले घूस देनेके लिये बहुत तंग किया करते हैं इस कारण आजके सम्मेलनमें उन्होंने उन्हींकी खबर ली—

मुंसिफीमें मुहर्रिर है तो ले रहा अठन्नी
अर्दली कलक्टरका है तो मांगता चवन्नी
हैं जेब घूस ही से भरते अभी किरानी
सब ढङ्ग है पुराना, सब बात है पुरानी
फिर इन ठगोंसे खाली कोई जिला नहीं है
आजाद तो हुए हम पर सिलसिला वही है

बिलकुल ठीक। बिलकुल ठीक। की आवाजसे सभा मण्डल गूंज उठा। 'सच ही तो' श्रोताओंने कहा 'लम्बी चौड़ी डींग मिनिस्टर लोग भले हांका करें परन्तु भ्रष्टाचारमें अब भी जौ भरकी भी कमी नहीं हुई। कहां तककहा जाय, चारों ओर एक अजीब धांधली मची हुई।

'ग्रामीण' जी के पश्चात लोगोंका विचार हुआ था कि समस्या पूर्तियों की स्वतन्त्र रचनाएं सुनी जायें परन्तु अपने रामके कान स्वतन्त्र रचनाएं सुनते सुनते अच्छी तरह पक चुके हैं इसलिये अन्तरात्माकी रायसे घरकी ओर जाना ही उन्होंने मुनासिब समझा। फिर अमावस्याके इस घोर अन्धकारमें चोरोंसे भी ज्यादा डर डाइनोंका था जो आज ही से अपने करिश्मे जगाकर साल भर लोगों को हैरान किये रहेंगी। आखिर 'कलश स्थापनाकी रात्रि भी तो है न!

भो : भो : श्रृगाल !

मि सुहरावर्दीने कलकत्ता में हिन्दुस्तानके मुसलमानोंकी एकका न्फरेन्सका आयोजन किया

लीगियों की भारतके प्रति वफादारी

[लेख —श्री० लक्ष्मीचन्द्र बाजपेयी]

तूफान आया और तेजीसे आया। नेहरू जी के पैर लड़खड़ाये और एक क्षण के लिये वे स्तब्ध और आश्चर्य चकित रह गए। इसलिये नहीं, कि वे डर गए बल्कि इस लिये तूफान अनायास आया और अयाचित भी। वातावरण शांत था, तूफान के चिन्ह न थे और तूफान आ गया, इस लिये वे आश्चर्यसे अभिभूत हो उठे। फिर उन्होंने अपनेको सम्भाला, वस्तुस्थिति का अध्ययन किया। इस कठिन समस्याको सम्भालनेमें उन्हें कितनी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा होगा पाठक सहज ही अनुभव कर सकते हैं। यह दिल्लीका पहला भारतीय सङ्घके साथ—षड्यन्त्र था।

गांधी जी ने नेहरू जी के प्रधान मन्त्री का पद ग्रहण करनेके सम्बन्धमें कहा था—नेहरू जी ने भारतीय जनताके लिये कांटोंका ताज पहना हैं। इसके पश्चात् प्रधान मन्त्री का पद ग्रहण करनेके उपरान्त रेडियो भाषण करते जनताको जो सन्देश उन्होंनेदिया, उसमेंभी उन्होंने स्पष्ट कहा—मैं यहां महलोंमें रहनेके लिये नहीं आया हूँ, बल्कि मुझे इस बातका ज्ञान है। भारतीय जनता देहातोंमें रहती है और झोपड़ियों में। भारतीय जनताकी गरीबी अशिक्षा, वस्त्र, की न्यूनताको हमें दूर करना है। लेकिन इसके पूर्व कि वे इन गम्भीर गम्भीर समस्याओंमें हाथ डालें, षड्यन्त्रोंका तांता लग गया। अब इस छोटेसे लेखमें देखना यह है कि पाकिस्तान तथा आंग्ल महानुभावोंका संयुक्त मोर्चा किस तरह हिन्द सङ्घको मिटानेके लिये बद्ध परिकर था।

१५ अगस्तको स्वाधीनता प्राप्त होने के पूर्व ही पञ्जाबमें बहुत बड़े और व्यापक रूपमें दङ्गा, लूट-मार, घर जलानेके कार्य प्रारम्भ हो गये थे। इसका तात्पर्य केवल यह था, कि पञ्जाब का आधेसे अधिक भाग तो पाकिस्तानमें: यही चुका है अवशेष भाग को—हिन्दू बहुमत पूर्वी भागको भी जोर जबर्दस्ती से हिन्दुओंको खदेरकर धमका कर और आतंकित करके पाकिस्तान में सम्मिलित कर लिया जाय। यदि उनकी यह कार्यवाही सफल हो जाती तो अवश्य ही पाकिस्तान सरकार यह कहती कि पूर्वी पञ्जाबमें हिन्दू नहीं हैं अतएव वह मुस्लिम बहुमत प्रान्त है। और इस प्रकार नियमानुसार उसे पाकिस्तान गवर्नमेंटकी आधीनता स्वीकार करनी ही चाहिये। परन्तु परिणाम बिलकुल प्रतिकूल निकला यद्यपि हिन्दू सङ्घके लिये शरणार्थियोंको बसाना और उन्हें भोजन वस्त्र देना एक नयी समस्या बनकर आयी और भविष्यके प्रगतिपथ पर इस प्रकार रोड़े डाल दिये गए।

इतना ही नहीं पाकिस्तानके नुमाइन्दों ने इस बीच दिल्लीमें भारतीय सङ्घको

काश्मीरके प्रधान मन्त्री

दफना देनेके लिये वह एतिहासिक षड्यन्त्र किया जो इतिहासमें चिरस्मरणीय रहेगा। जमायत-उल उलेमा जो मुसलमानोंकी दूसरी प्रमुख संस्था है उसके नेताओंने स्पष्ट कहा है' दिल्लीका षड्यन्त्र पूर्व निर्धारित और आयोजित था और मौलाना आजाद तथा नेहरू आदि प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं की हत्या कर देनेको भी इस विद्रोहके पीछे की पृष्ठभूमि थी। जवाहर लाल जी ने भी इसी आशयको दुहराया है देशके अन्य नेताओंने भी इस षड्यन्त्रका पोल जानी है। परन्तु यह मि० जिन्ना और पाकिस्तानका दुर्भाग्य था कि षड्यन्त्र असफल गया। इस सम्बन्धमें अभी कुछ दिन पूर्व लखनऊ में जो शांति सम्मेलन हुआ था, जवाहर लाल जी के उद्गारों से लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने

कहा यद्यपि हुकूमत को उखाड़ फेकनेकी षड़यन्त्र कारियोंने पूरी चेष्टा की तथापि वे सफल मनोरथ न हो सके। उनके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे, लड़ाईका पूरा सामान था। लेकिन दिल्लीकी जनताने उनका सामना करनेमें मेरी जो सहायता की उसकी प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता इस सम्बन्धमें उन्होंने यह भी कहा—यूरोपके देशोंमें भारतीय सङ्घकी स्थिति और इज्जत और भी बढ़ायी गयी बल्कि यूरोप वालोंने यह कहा-भारती सङ्घने ऐसे नाजुक वक्त पर उसी साहसका परिचय दिया जिसका कि बहादुर सनिकोंने डंकर्क में परिचय दिया था।

दिल्ली षडयन्त्र समाप्त होते होते पाकिस्तानी सरकारने शतरञ्ज की नयी चाल पेश की। जूनागढ़का प्रश्न सामने आया। प्रारम्भमें समाचार पत्रों द्वारा यह स्पष्ट हो चुका है पाकिस्तान सङ्घके फौज ने जनता वहां शांति स्थापित करनेके लिये गयी थीं। उन फौजोंने जनताको लूटा धमकाया। पाकिस्तान सरकार चाहती यह थी जनमत गणना उसकी देख रेख में हो और मनमानी घर जानीकी जाय जैसा कि सीमा प्रान्त और सिलहटमेंकी गयी थी। परन्तु वहांकी तथा पड़ोसी राज्यों की जनताने ही इसका सामना धैर्य और बुद्धिसे किया। आज सांवल दास गांधीके तत्वावधानमें अस्थायी सरकार बन गयी है ओर पचीसों गांव उनके अधिकारमें प्रतिदिन आते जाते है। प्रसन्नता का विषय है मुसलमान उनके इस कार्यमें पूर्ण योग दे रहे हैं। वहांका षड़यन्त्र वहां की जनता ने ही समझ लिया और उसे अपने अधिकार में कर लिया।

जूनागढ़के षड़यन्त्रका श्रीगणेश केवल इसलिये किया गया था कि हिन्द सङ्घ अपनी शक्ति और क्रियाशीलता उसी पर केन्द्रीभूत कर दे। पाकिस्तान सङ्घ यह भली भांति जानता था भारतीय सङ्घ इस समय अनेक कठिनाईयों और दलदलों के बीच है। विपक्षी दलोंका सामना शरणार्थियों की समस्या हल करना मुस्लिम लीगकी चालोंमें उलझना हैदराबाद और जूनागढ़के सङ्कटका सामना करना आदि ऐसे विषय हैं जिनसे उसकी मुक्ति नहीं पाकिस्तानने यह सोचा इसी बीच पूरी तैयारीके साथ काश्मीर राज्य जिसका किसी भी सङ्घमें जाने का कदम निश्चित न था, पर हमला करके धमकी द्वारा उसे पाकिस्तान सङ्घमें सम्मिलित होनेके लिये विवश कर दिया जाय। ऐसा सोचना के कारण है:

[१] काश्मीरमें मुस्लिम शत प्रतिशत हैं।

[२] आक्रमण द्वारा लोग विरोधी मुसलमानोंको निष्कासित करके पाकिस्तान के पक्षमें बहुमत स्थापित करना।
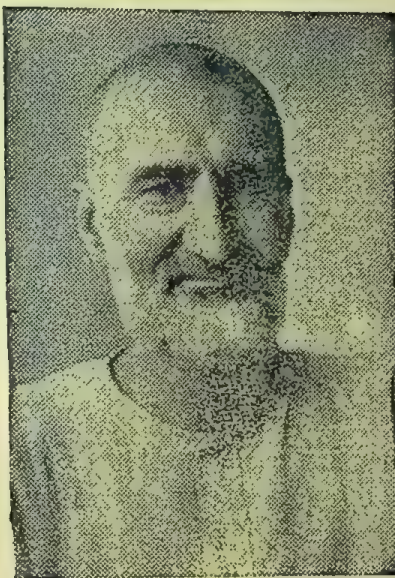
(३) काश्मीर दो महान राष्ट्रोंकी सीमा रेखा है और अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिपर काश्मीरका पाकिस्तान संघमें सम्मिलित होना पाकिस्तानके लिए महत्वपूर्ण होगा।

[४] पाकिस्तान संघमें कोई भी महत्वपूर्ण राज्य नहीं है इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे उसकी आर्थिक एवं राजनीतिक महत्व नहींके बराबर होगा।

[५] यदि काश्मीर पर आक्रमण पाकिस्तान द्वारा किया गया, तो विवश होकर वह पाकिस्तान संघकी शरण लेगा, कारण सामरिक सहायता उसे किसी भी मार्ग द्वारा हिन्द संघसे नहीं मिल सकेगी।

इन सब स्वप्नोंके बावजूदभी जब आक्रमण प्रबल हो उठे, तो काश्मीरकी जनता तथा उसके नेता शेख मुहम्मद अब्दुल्लाने धर्म के आधार पर बनी पाकिस्तानी सरकारके विरुद्ध युद्ध चलानेके लिए हिन्दू संघसे सहायता मांगी।

लम्बे विवाद,विचार विनिमयके पश्चात् हिन्द संघने काश्मीरके निर्णयको स्वीकारकर लिया और सहायता देना भी आरम्भ कर दिया। चूंकि पठानकोट सड़क अभी पूर्णरूपेण आवागमनके लिये तैयार न थी अतएव उसने वायुयानों द्वारा सामरिक सामग्रीका निर्यात प्रारम्भ कर दिया। यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि वायुयानों द्वारा क्या सहायता दी जा सकती है। टैंक, मशीनगन तथा अन्य अस्त्र शस्त्र केवल स्थल मार्ग द्वारा ही सुगमतासे भेजे जा सकते हैं। अतएव वे शीघ्रही समय पर आवश्यकतानुसार—यथेष्ट मात्रामें—नहीं भेजे जा सके। परिणाम स्वरूप आक्रमणकारियोंकी शक्ति बढ़ती रही, उनका दबाव जोर पकड़ता गया और उन्होंने अपने दिमाग खराब कर लिए। उन्होंने समझ लिया, काश्मीरको सहज ही लूट मार कर जीत लेंगे।

लेकिन परिणाम बिल्कुल विपरीत निकला। काश्मीरकी अधिकांश मुस्लिम जनता शेख अब्दुल्लाके साथ हैं और ऐसे नाजुक दौरके आते ही उसने पूर्ण साहस और शक्तिके साथ अपने नेताके हाथ मजबूत कर दिए। शीघ्र ही महाराज, काश्मीर ने बुद्धिसे काम लिया और शासन भार जनता पर छोड़ दिया, ताकि जनता अपनी सरकार बनाकर शत्रुओंका सामनाकर सके और महसूस करे ये उसके अपने देशके शत्रु हैं। इसी बीच सड़क भी तैयार हो गयी और सामरिक सहायता भी उचितरूपमें काश्मीरको जाने लगी। शत्रुओंके छक्के छूटने लगे। अब काश्मीरका जीतना लोहेके चने चबाना सिद्ध होने लगा। हालके समाचारोंसे स्पष्ट है काश्मीरकी सरकारके पैर मजबूत हैं और वह अपनी रक्षा कर सकती है। काश्मीरका हिन्दसंघमें सम्मिलित होना सत्य ही भारतीय संघकी महान् विजय है निश्चय ही काश्मीरको खोकर पाकिस्तानने अपने भविष्यके हवाई किलों पर एटमबम छोड़ लिया है। उसके स्वप्न नष्ट हो गये हैं। अवश्य ही, अन्तर्राष्ट्रीय

विश्वके सामने यह उसकी महान पराजय है।

अभी कुछ दिन पहले श्री० जवाहर लाल जी ने स्पष्ट कहा है, काश्मीरको युद्धस्थल बनानेमें पाकिस्तानकी साजिश है, आक्रमणकारी पाकिस्तानके दरवाजेसे आए। यदि जानकारीमें आए, तो भी पाकिस्तान जिम्मेदार है और यदि पाकिस्तानने उनके आनेमें विरोध नहीं प्रकट किया, तो यह अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंका उल्लंघन करता है स्पष्ट है लीगी मुसलमानोंने हिन्दसंघके साथ विश्वासघात किया है। इतना ही नहीं, नेहरू जी ने यह भी कहा है—"पाकिस्तान संघ जूनागढ़के झगड़ेको प्रारम्भ करके' उसकी ओटसे, काश्मीर पर आक्रमण करनेकी महीनों पहले सामरिक तैयारियां करता आ रहा था। कुछ भी हो जिन्ना साहबके मंसूबे मिट्टीमें मिलते देखे जा रहे हैं। क्योंकि नेहरूजी ने कहा है—मैंने जो कदम उठाए हैं, सोच-समझ कर और परिणामको भी समझ लिया है।

अब देखना यह है, लीगी मुसलमानोंने किस प्रकार सामूहिकरूपसे षड्यंत्रको सफल बनाना चाहा था। जिन्ना साहब अपनी प्रसिद्ध आयोजना 'पैन इस्लाम' कार्यान्वित करना चाहते थे। वे चारो ओर, काश्मीर से लेकर हैदराबाद और पूर्वी बंगालमें भी एक साथ गड़बड़ मचा चाहते थे। राज्यों को उभाड़ना चाहते थे। साथही भारतीय मुसलमानोंसे यह आशा करते थे, कि जब आवाज उठावी जाय, वे भी हिन्द संघके साथ विद्रोह प्रारम्भ कर दें।

परिणाम यह होता, हिन्द संघको अनायास ऐसा धका लगता, जिसके लिये वह तैयार न था। हुआ कुछ और ही। स्वाधीनता प्राप्त होते ही जिन खलीक साहबने हिन्दसंघके प्रति वफादारीकी शपथ ली थी, वे चोरीसे पलायन कर गए। लीगियों की वफादारीका पूर्ण ज्ञान हिन्द संघको था। वह वफादारी वैसीही थी जिस थालीमें खायेंगे, उसीमें छेद करेंगे। उस वफादारीके परिणाम स्वरूप ही हिन्दसंघ में लीगियों तथा अन्य मुसलमानोंकी तलाशियोंमें हजारों छुरे, तोपें, मशीनगनें, ब्रेनगनें, बारूद और पिस्तौल आदि निकले यह सारी सामग्री भी विश्वासघातके लिये ही एकत्रकी गयी थी। दिल्लीका सामान भी इसी बातका परिचायक है।

अब स्थिति बिलकुल बदल गयी है। युग-युगकी मुसलमानोंकी विश्वासघातसे भरी वफादारी अपना रंग ला रही। चारो ओर भारतीय संघमें फैले मुसलमानोंके प्रति लोग शंका और घृणा उगल रहे हैं। और बहुमत ऐसा बन गया है, कि मुसलमान समय आने पर, यदि उन्हें नागरिक हक दिये गए, तो दूसरे पाकिस्तानकी सृष्टि करेंगे। बड़े-बड़े राष्ट्रके नेता, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्यस्थापित करने में लगा दिया है, उनकी बात भी आज जनता स्वीकार नहीं करती। जवाहर लाल जी को इस आशयकी धमकी हम इस्तीफा देनेके लिए तैयार हैं परन्तु 'हिन्दूराज्य' अपनी जानकारीमें न बनने देंगे। का उलटा प्रभाव जान पड़ता है।

यह प्रतिक्रियाभी मुसलमानोंके विश्वासघातके परिणाम स्वरूप ही उत्पन्न हुई है। माना हिन्दूराष्ट्र बनाना बुरा है, कई दृष्टियों से हानिकर है तथापि इस नग्नसत्य-तथ्य से कोई मुंह नहीं मोड़ सकता, दो राये नहीं दे सकता सकता, कि कि मुसलमानों पर कड़ी दृष्टि रखना आजके समय की पहली मांग है प्रत्येक मुसलमानकी गतिविधिपर, क्रियशैली पर जागरूक सरकार को कड़ी नजर रखनी ही पड़ेगी। यदि वह यही करती, तो अवश्य ही घातक वफादारी सरकारको विनाशकी ओर ले जायगी।

———

छोटा नागपुरकी सामयिकी

आदिवासी महासभाके लीगीहथकण्डे

लेखक:—श्री सुबोध मिश्र

आदिवासी महासभा मुस्लिम लीगकी बेरी धर्मपिताओंके हथकण्डे--तीर धनुषसे सीधे हमलेकी धमकी झारखण्डिस्तानकी विचित्र मांग

पृथक्करण-आन्दोलन को लेकर छोटानागपुरका चप्पा-चप्पा आज नित्य-नवीन हलचलों का केन्द्र और प्रेस-प्रतिनिधियों का व्यस्त कार्यालय बना हुआ है! आन्दोलनकारी इस पृथक्करणके आधारपर, बिहारसे छोटानागपुरको पृथक कर जिस स्वतंत्र प्रान्तकी कल्पना कर रहे हैं उसका नाम 'झारखण्डिस्तान' कहा गया है। साथही, जयहिन्द, की भांति 'जय झारखण्ड' और 'लेके रहेंगे पाकिस्तान' की नाईं 'झारखण्ड लेके रहेंगे' के नारे भी बुलन्द किये जा रहे हैं। सीधी-कार्रवाई (डाइरेक्ट एक्शन) की धमकियां भी निरन्तर दी गयी हैं।

छोटानागपुर- पृथक्करण- आन्दोलन उचित है या अनुचित इसका विचार प्रस्तुत पंक्तियों का विषय नहीं। हमें यहां इस आन्दोलनकी पृष्टि-भूमिमें गोरों और तत्पालित इसाई मिशनरियोंके जो काले करनामें मिलते हैं उसकी चर्चा करनी है और यह देखना-दिखाना है कि जिस किसी भी मुसीबतों और परीक्षाओं की आंचमें तप-तप कर, हिन्दुत्व और तद्-जनित संस्कृतिसे चिपके रहने वाले हिन्दू-आदिवासी अपने अधिकारोंकी रक्षाके निमित्त किस साहसिकता और कट्टरपन का उदाहरण देते रहे हैं। तदनन्तर देखना है, कि आज छोटानागपुरकी वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति क्या है।

सन १८९५ ई॰ के पूर्व से ही भोले भाले आदिवासी इसाई धर्मके जालमें फंसाये जाने लगे। तीरंदाजीमें यहांकी जंगली जातियां उद्र सम्भूत वीर थी। गोरे बाकायदे इसे समझ गये कि इनपर काबू पाना आसान काम नहीं। उधर छोटानागपुरकी रत्नगर्भा भूमिको देखकर साइमन कमीशन अपनी तृष्णासे व्यग्र था। उसने अन्वेषण करके यह धारणा पक्की करली थी कि कोईभी खनिज पदार्थ ऐसा नहीं जिसे छोटानागपुरकी भूमिसे प्राप्त न किया जा सके। परन्तु, रोड़ा यह था कि यहांके आदिवासी जंगली, भोले-भाले और अशिक्षित होते हुए भी अपनी धरती माता और माताकी महत्ताको अच्छी तरह जानते थे। अस्तु, मिशनका मायाजाल फैलानेके अतिरिक्त कोई अन्य निरापद मार्ग न था।

अभिनय आदिके द्वारा ईश दर्शन, वरदान मुक्ति आदिके प्रलोभनों पर इनकी अज्ञानतासे लाभ उठाया गया और ये बड़ी तादादमें प्रभु ईसाकी शरणमें आने लगे। किन्तु, गोरोंकी यह चाल अधिक दिनों तक गुप्त न रह पाई। बिरसाके कान खड़े हुये। बिरसाने मिशनरियों, अंग्रेजों और इनके सहायक जमीन्दारों के प्रति लोहा उठाया। इस तरह १८५६ के बाद, भारतीय इतिहासमें यह क्रान्ति दूसरी महाक्रान्ति हुई किन्तु इसपर गोरोंने बुरी तरह मरदा डाला। तोपोंकी गरजमें इस सत्यको छिपा डाला गया कि बिरसाने किस तरह इनके दांत खट्टे किये!

अङ्गरेजोंके टुकड़ोंपर पालित 'धर्म-पिता' यहांके निवासियोंको अपना परिचय 'ईश्वरका दूत— तुम्हारी मुक्तिका सन्देश वाहक' के नामसे दे रहे थे और बीच-बीच में प्रसङ्ग उपस्थित कर, गोरी चमड़ीको संसारकी सर्व श्रेष्ठ जाति बताना इनका प्रधान कार्य था। और इनकी जमीनें दिना-दन अङ्गरेजोंके हाथ चली जा रही थी। ज्ञानका संचार करना बिरसा की ही दूर-दर्शिता थी कि जङ्गल हमारा, जमीन हमारी फिर इन गोरोंको लगान लेनेका क्या अधिकार?

लरका आन्दोलन

अस्तु बिरसाके नेतृत्वमें लगान माफी की अर्जी दी गयी। किन्तु उसे 'कोहुदा-मांग' कहकर ठुकरा दिया गया। इसी ठोकरने आदि-वासियोंकी आंखें खोली। यद्यपि मिशनके षड्यन्त्रने बिरसाको इस संसारमें रहने न दिया, किन्तु आदिवा-

सियोंका संघर्ष रुका नही अपितु विरसा बलिदानने आगमें घीका काम किया। मिशन वालों, अङ्गरेजों और मददगार जमीन्दारों पर निरन्तर हमले होते रहे। अन्तर केवल इतना था कि अब इस क्रांतिका नाम 'विरसा आन्दोलन' नहीं, प्रत्युत'लरका आन्दोलन था और इसआन्दोलनके पश्चात ही टाना भक्तों द्वारा बगावतका झण्डा उठाया गया।

अङ्गरेजों की इस दुर्नीतिको कांग्रेस यद्यपि समझने लग गयी थी किन्तु चूंकि अभी वह स्वयं शैशवावस्थामें थी, इस ओर उनका सहाय्य कोई उल्लेखनीय रूपसे नहीं पहुंच पा सक रहा था। तब-तक वह तायतमें यहां की आदिम जनता क्रिश्चियन बनायी जा चुकी थी और उनके द्वारा सम्बन्धियों तथा परिचित नन-क्रिश्चियन आदिवासियों पर दबाव डलवाया जा रहा था। कितने ही ऐसे गांव दुर्दशा ग्रस्त किये गये जहांके कुएं बरबाद कर उनके बीच बढ़ियां कुआं खुदा दिया गया जो अपना धर्म बदल चुके थे। अस्तु, जल कष्टसे जब भोले ग्राम वासी उस कुंए पर पहुंचते तो उनके कलके भाई, आजके विधर्मी, उन्हें धर्म परिवर्तन करानेको विवश करते उधर बढ़ई, लुहार कुम्हार आदि पूर्वसे ही क्रिश्चियन बना लिये जानेके कारण, इन्हे तबतक अपनी सेवाएं नहीं लेने देते जबतक ये क्रिश्चियन बन जाना कबूल नही कर लेते। इस तरह समूचाका समूचा गांव इसाई बनने लग गया। गांवके बुद्ध जमीन्दार पहले ही मिला लिये गये और गांवके मुखियाको अच्छी तरक्की दे दी गयी। प्रलोभन और अज्ञानतावश पड़ोसी ही मिशनरियोंका प्रचारक बन पड़ा। महिला प्रचारिकायें भी सबकुछ करने लग गयीं। उनदिनों, कहते हैं कि, प्रचारक अन्य खर्चके अलावा धर्म परिवर्त्तनकी स्वीकृति ले लेनेपर मिशन से ५०) प्रति व्यक्ति उसकामकेलिये अति-रिक्त-पुरस्कार प्राप्त किया करते थे। ज्यों-ज्यों भोले भाले आदिवासी माया जालमें फंसते गये; धर्म पिताओं की बांछें खिलती गयीं और शनैः शनैः ये "प्रभु ईसू का महान देश; छोटानागपुर महान" ही नहीं वरण 'इसाइस्तान' का स्वप्न देखने लग गये। भीतरही भीतर बड़ी-बड़ी योजनाएं गढ़ी जाने लगीं और अपने विलायती-आकाओंसे वाह-वाही लूटी जाने लग गयी। कुछ लोगों की यह भी धारणा है कि इस तरह 'इसाइस्तान' का एक मान चित्र भी तैयार करके विलायत भेजा गया था।

आदिवासी महासभा का जन्म

यद्यपि इन्हें अपने खल-अभिनयमें पूरी सफलता मिल रही थी फिरभी विरसा आदिका घाव अभी हरा था और फूंक-फूंक कर पग धरने-मेंही ये अपना मंगल समझते थे। अस्तु "प्रभु ईसूका महान देश; महान छोटानागपुर-इसाईस्तान" की बात इन्हें प्रकट करते न बनी और शनैः शनैः ये कुचालकी गहरायीमेंजानेलग गये। और अब उच्च शिक्षा आदिके बहाने परम गौरांग भक्त तथा दब्बू बनाये रखना तथा समय समय पर उस इसाइस्तामका सुखद स्वप्न दिखाना इनका प्रधान लक्ष्य रहा। किन्तु, जब इनकी दृष्टि इस बात पर गयी कि कांग्रेस सशक्त होती जा रही है साथ ही हिन्दू मिशन वालों का भी इस क्षेत्रमें आवागमन होने लग गया है तो इनकी धीरता जाती रही और कहींसे 'आदिवासी महासभा' का बीज रोपण हुआ जो सन् १९३८ ई० की बात है। प्रचार किया गयाकि इस आदिवासी महासभा में क्रिश्चियन नन क्रिश्चियनका कोई प्रश्न नहीं, यह तो आदिवासी मात्रकी सभा है। हम सब भाई-भाई हैं।

यद्यपि हिन्दू आदिवासियोंने अपनी कई सभायें कायम कर ली थी किन्तु उपर्युक्त कथित महासभाके पास साधन धन दोनों ही पर्याप्त थे फलतः इन्हें दवा डालनेका कुचक्रभी चलने लगा और इसा-इस्तानकी बात इनके पेटमें अधिक दिनों तक छिपी न रहकर 'झारखण्डिस्तान' के रूपसे प्रकट हो गयीं। एक ओर यह प्रमाणित होने लगा कि आदिवासी महा-सभा केवल क्रिश्चियनों की स्वार्थ साधना का एक केन्द्र है तो दूसरी ओरसे इसके लक्षण भी प्रकट होने लगे कि आदिवासी महासभा यदि मुस्लिमलीगके पेटकी बेटी नहीं, तो गोद ली गयी बिटिया अवश्य है!

सीधे हमलेकी धमकी

अस्तु, ज्यों-ज्यों यह आदिवासी आंदोलन जोर पकड़ता गया, हिन्दू आदि-वासियोंपर इनकी पोल भी प्रकट होने लग गयी। और ये मुस्लिम लीगकी भांती सीधी-कार्रवाई आदि की धमकी देकर फौरनसे पेश्तर 'झारखण्डिस्तान' प्राप्तकर लेनेके लिये व्यग्र हो उठे ताकि आदिवासियोंकी आंखें खोलनेवाले बिहारी और अपर प्रांतीय व्यक्तियोंको हम अपनी 'अपनी सरकार' होनेके कारण झारखंडसे या तो निकाल बाहर कर दें या जबानपर ताला जड़ दें।

उधर सरना-युवक मंडल, सनातन आदिवासी सभा, उरांव मुंडा खड़िया सभा आदि यहां के सनातनवासियोंकी विभिन्न संस्थामें कार्य करने लग गयो यह देखकर मि० जयपाल सिंहकी महासभा इन्हें तोड़-मरोड़ देनेमें कोई बात उठा नहीं रख ? लोगोंको यह देखकर आश्चर्य होता कि सम्मेलन तो आदिवासी महासभाका होता किन्तु तकरीड़े झाड़नेके लिये उसमें बड़े-बड़े स्थानीय प्रांतीय तथा देशीय लीगी कठ मुल्ले पहुँचा करते। यहीं तक नहीं बल्कि एक दफे इसी सिलसिलेमें स्वयं श्री सुहरा-वर्दी साहब भी रांची पधारे। और उस दिन, रांचीके एक दिहात, बधिमा, संवसार आदिवासी सभा (जो उपर्युक्त विभिन्न सभाओंका अब सम्मिलित रूप है] में यह कलई खुल गयी कि, छोटानागपुरको भी दूसरा पंजाब बनानेके लिये मुसलिम लीगने आदिवासी महासभाको एक लाख रुपया दिया था। संवसार आदिवासी सभाके सभापति श्री आयता उरांवने स्पष्ट घोषित किया कि इसाई मिशनरियों द्वारा पालितों को आदिवासी कहलानेका कोई अधिकार नहीं। संवसार सभाने जोरदार शब्दोंमें अपील की है कि जो व्यक्ति क्रिस्तान हो गये हैं उन्हें आदिवासियोंके नाम पर कुछ न दिया जाये। श्री आयता उरांवने यह भी स्पष्ट रूपसे कहा है कि क्रिस्तान विदेशी सत्तावादी हैं और लोगोंको मरवानेकी गुप्त

तथा प्रकट साजिशें कर रहे हैं। अस्तु, विधान परिषद् आदिवासियोंकी समस्याओंको ठीक-ठीक समझे। और, है भी यह सर्वथा सत्य कि छोटानागपुरकी राजनीतिक समस्यायें अब उत्तरोत्तर जटिलता धारण करती चली जा रही हैं। कायदे आजम जिन्ना ज्यों-ज्यों दबाते गये, कांग्रेस दबती गयी और यह उदाहरण आदिवासी महासभाके नेता मि० जयपालसिंहके लिये वह छींका हुआ जो बिल्ली के भाग्य से टूटी!

लीगी मनोवृति सच तो यह है कि हम डराते-धमकाते रहें और कांग्रेस हमें अधिक से अधिक सुविधायें देती रहे मुस्लिम लीगी मनोवृत्तिकी पुनरावृत्ति आदिवासी महासभा अक्षरशः कर रही है।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि इधर तो कांग्रेसी सरकार द्वारा आदिवासियोंके हितार असेम्बलीमें कई बिल उपस्थित होने जा रहे हैं और उधर आदिवासी महासभा द्वारा यह निश्चय किया जा रहा है कि असेम्बलीमें अविश्वास प्रकट करनेके लिये बहुत बड़ी तादादमें काले झंडोंका जुलूस निकाल कर असेम्बली भवन तक पहुंचाया जाये।

लड़कर लेंगे झारखण्ड

मि० जयपाल सिंहके डाइरेक्ट एक्शन का रूप क्या होगा इसे तो जयपाल सिंह ही जाने, किन्तु "लड़के लेंगे झारखण्ड... झारखण्ड जिन्दाबाद" आदिसे अनपढ़ आदिवासी उत्तेजित हो रहे हैं। उनकी धारणा हो गयी है कि डाइरेक्ट एक्शन होंगे। उन्हें कांग्रेसियोंके साथ युद्ध छेड़ना है, फलतः वे गुपचुप तीर धनुषको संग्रह और अभ्यास आदिसे करने लग गये है। मुस्लिम लीगने जिस भाँति नेशनल गार्डों की भर्ती शुरू की है उसी तरह जगह-जगह आदिवासी महासभाके द्वारा स्वयंसेवकोंका सङ्गठन किया जा रहा है और इनकी शिक्षा दीक्षा परेड अभ्यास आदि ऐसे पहाड़ी स्थानोंमें हो रहे हैं जहां मोटरें या अन्य सवारियों की पहुंच नहीं और जिधर अधिकारी या अन्य कार्य कर्ताओंने अब तक झांका भी नहीं है।

लीगका प्रचार करनेके लिये 'डान' निकला तो लीगकी बिटिया आदिवासी महासभा भी 'झारखण्ड न्यूज' के नामसे एक न हिन्दी, न हिन्दुस्तानी साप्ताहिक निकाल बैठी। जिसके मोटे, भ्रामक एवं उत्तेजक, शीर्षक मि० जयपाल सिंहके कम पढ़ अन्ध अनुयायियोंको उकसानेमें कारगर हो रहे हैं। और संभवतः बिहार सरकार इस पत्रिका को पढ़नेकी जरूरत ही नहीं समझती।

नील गिरिमें आदिवासियोंने जो अराजकता फैलाई है उसे सभी जानते हैं। अब गांगपुरमें आदिवासियोंका सम्मेलन होने जा रहा है जिसके सम्बन्धमें उक्त झारखण्ड न्यूज लिखता है कि गांगपुरमें आदिवासी महासभाके सम्मेलनको 'भयंकर' तैयारियां हो रही हैं! अस्तु, चूंकि नीलगिरिमें आदिवासियोंके द्वारा अराजकता फैल चुकी है; इस भयंकर शब्दका अर्थ सहज ही लगाया जा सकता है?

'झारखण्ड' न्यूज के इसी माहकी २ तारीखके अंकसे सम्पादकीयकी कुछ पक्तियां देखिये—बिहार कांग्रेस, चले जाओ! छोटा नागपुरको छोड़ दो!—हक हमारा झारखण्ड—झारखंड अलग प्रान्त" आदि।

हां इधर बिहार सरकारकी ओरसे भी रांचीसे "आदिवासी" नामक एक साप्ताहिक प्रकाशन होने लग गया है किन्तु एकतो इसे लिखनेका कोई और विषय ही नहीं सूझता, दूसरे इस साप्ताहिकके सम्पादक मुद्रक, प्रकाशक आदि अ-आदिवासी हैं, आदिवासियोंपर इसका कोई प्रभाव भी नहीं होता।

अस्तु गांगपुरमें आदिवासी महासभाका सम्मेलन होने जा रहा है। और यदि नीलगिरिमें उत्पन्न आदिवासी अराजकता की छूत गांगपुर भी पहुंची तो रांची, सिंहभूमि और संथाल परगनामें भी इसकी छाप पड़ेगी।

आपका स्वास्थ्य !

सुखकी नींद..

(प्रकाशचन्द्र शर्मा)

बहुतसे लोग प्रायः यह शिकायत करते पाये जाते हैं कि रातमें अच्छी तरह वे सो नहीं पाते और बहुतोंको देर तक सोते रहने की शिकायत रहती है। हमें इसका कारण देखना है कि ऐसा क्यों होता है।

हम सो क्यों नहीं पाते ? के सम्बन्धमें प्रो० नथानील क्लीटके विचार उल्लेखनीय है—

(१) लोग कहते हैं कि रातमें ८ घण्टे सोना परमावश्यक है। किन्तु यह बिल्कुल गलत है। बार बार अनुसन्धान करनेसे यह सिद्ध हो गया है कि दो व्यक्तियोंको बराबर समय तक सोना कोई जरूरी नहीं। एक व्यक्तिको ६ घण्टे तथा दूसरेको ५ ही घण्टे सोनेकी आवश्यकता हो सकती है।

(२) एक करवट सोनेसे गहरी नींद आती है। करवट बार-बार बदलना नींदमें बाधक होता है।

यह केवल खयाल मात्र है। अनुसन्धानों ने इसे सिद्ध कर दिया है कि करवट बदलते रहनेसे नींद और भी अच्छी तरह आती है। यदि आप रात भर एक करवट सोते रह जायें तो सुबह उठने पर शरीर बिल्कुल कड़ा मालूम होगा।

(३) आप यदि रात्रिमें दो बार सोयें तो अच्छी तरह सो सकते हैं। जैसे बहुतसे लोग, विशेष कालेजके छात्र १० बजे रातसे २ बजे तक सोते हैं, फिर ३ बजे काम (अध्ययन आदि) करनेके बाद पांच बजेसे ८ बजे तक सोते रहते हैं।

किन्तु आदमी रातमें काम करना ही नहीं चाहता। इससे अच्छा है कि रात भर सोते रहते और सुबह जल्द उठकर अपना काम करने लग जाते।

(४) हम जितनी देर नहीं सोयेंगे, इसे हमें पूरा करना ही होगा। यह भी एक कहानी ही है। क्योंकि जो लोग ४-५ दिन लगातार जगते रहते हैं, उन्हें तो उस ३० या ४० घण्टोंके बदले १० या ११ घंटे ही सोना पड़ता है।

(५) बायीं तरफ मत सोओ। हजारों माताएं इस विश्वाससे कि इसका हृदय पर प्रभाव पड़ता है, अपने बच्चोंको बराबर ऐसे खबरदार रहनेको कहती हैं। यह भी सबसे बड़ी बेवकूफी है। जब हम रातमें कितनी ही बार करवट बदलते हैं। उस समय बायें-दायें का प्रश्न ही नहीं रह जाता।

(६) सोनेके पहले खाना न खाओ और न पानी पीओ। परन्तु अनुसन्धानोंने इसे भी निराधार सिद्ध कर दिया है हवा भी बहुतसे लोग पीकर और अच्छी तरह सो सकते हैं। सकते हैं कुछ लोग सोचते हैं या सुन रखा है हवा पीनेसे नींद नहीं आती और इसीलिये उन्हें परेशानी उठानी पड़ती है।

बहुतसे लोग बराबर लगातार सोनेका अभ्यास करते हैं। लेकिन इसका प्रभाव क्या पड़ता है; हमें इस पर विचार करना है—

खाली समयमें आप १० बजे दिन तक सोनेकी योजना बनाते हैं। फिर भी सात बजे ही नींद खुल जाती है। किन्तु आपका अभ्यास इतना पक्का है कि रोजके समयसे ही नींद खुल जाती है।

प्रत्येक व्यक्तिको अपने अच्छी तरह सोनेकी उचित व्यवस्था करनी चाहिये। यदि व्यायाम करनेसे नींद अच्छी तरह आती हो तो व्यायाम करें और यदि ग्रामोफोनके रेकार्ड सुननेसे नींद आती हो, तो उसे सुनें।

यदि स्नान करनेसे नींद आती हो तो, स्नान करें।

किन्तु नींद की दवा डाक्टरकी चिकित्साके बिना इस्तेमाल न करें। ये खतरनाक हैं। अपने वर्षोंके अध्ययनके उपरान्त क्लीटमैनने निम्नलिखित सुझाव दिये हैं।

(१) नींदको बीचमें मत तोड़ें।

(२) जल्द उठनेका प्रयत्न करें। मानसिक कष्ट या आर्थिक चिन्तासे लोग अधिक देर तक सोते हैं।

(३) अकेले सोयें। अकेले सोना अच्छा है।

(४) यदि नीन्द अच्छी तरह न आये तो १ घण्टे पहले ही सोनेका प्रयत्न करें। जल्दी सोनेसे अच्छी नींद आती है।

[५] स्वयं विचार कर देखें कि काफी सो पाते हैं या नहीं ! यदि मुर्गा बोलनेसे ठीक पहले आप उठ गये तो आपने अपनी नींद पूरी कर ली। यदि मुर्गा बोलने पर भी थकावट महसूस कर सोते रहें तो आपकी नींद पूरी नहीं हुई, जल्दी सोनेका प्रयत्न करें।

युक्तप्रान्तमें महिला पुलिस दल नियुक्त करनेकी स्कीममें प्रीमियर पं० गोविन्दवल्लभ पन्तका पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है।
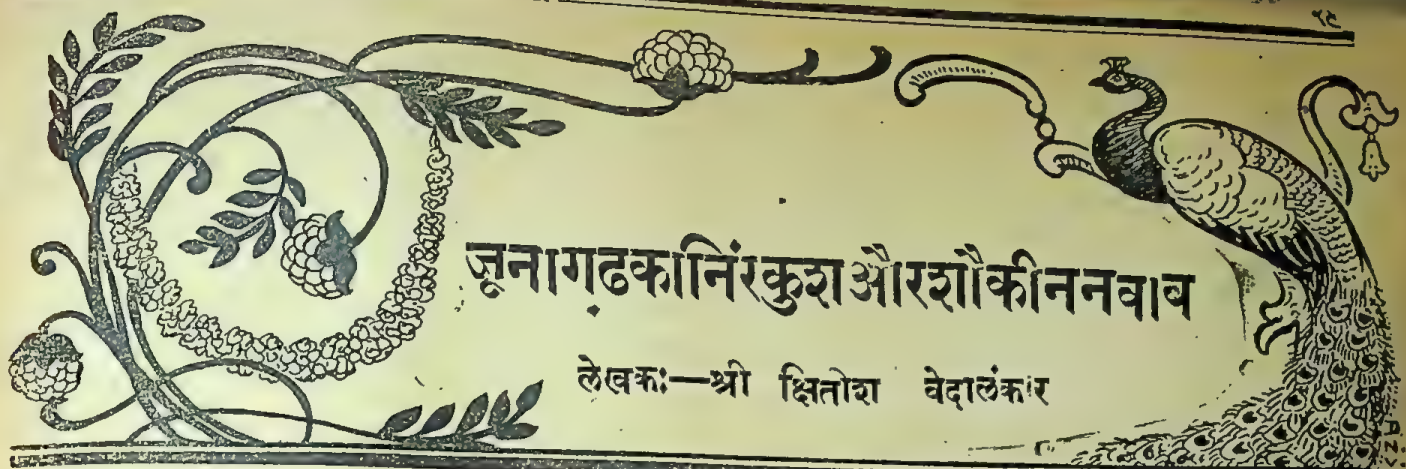
जूनागढ़का निरंकुश और शौकीन नवाब

लेखकः—श्री क्षितीश वेदालंकार

पाकिस्तानमें सम्मिलित होनेके लिये हस्ताक्षर करनेवाले जूनागढ़के वर्तमान नवाब बाबी वंशके नौवें नवाब हैं इनका नाम है कर्नल सर महावत खां। इनका सम्बन्ध पठानोंके युसुफजई वंशसे है। ब्रिटिश सरकारका ओरसे इन्हें १५ तोपों की सलामी मान्यथी। वस्तुतः आप महावतखां तृतीय हैं, क्योंकि इनसे पहले जूनागढ़की गद्दीपर दो महावतखां और बैठ चुके हैं। इनका जन्म १९०२ में हुआ था। अजमेरके मेयो कालेजमें आपने शिक्षा ग्रहणकी और ई० सन् १९२० में आप राज्यासनपर विराजमान हुए।

इनका राज्यारोहण करते हुए चौथायी सदी गुजर गयी है, दो साल और ऊपर भी हो गये हैं। इन सत्ताइस वर्षों में जूनागढ़की प्रजाने बहुत ऊंच नीच देखा है। देलवाड़ा और प्रभाशतीर्थके झगड़ेकी बात तोपुरानी हो गयी। इसी बीच मुसलमान अधिकारियोंका भी दौर दौरा हुआ। परन्तु प्रजाने उन सब अफसरोंको चुपचाप सहा, क्योंकि वे नवावके बनाये हुए अफसर थे। और भोली मनोवृत्तिसे प्रजा यह समझती थी कि नवाब तो अपने ही हैं।

सत्य अब प्रकट हुआ

परन्तु सत्ताईस वर्षके बाद प्रजाकी यह धारणा बदल गयी है। नवाब महावत खां तृतीय प्रजाके नहीं हैं यह सत्य तो तो अभी प्रकट हुआ है। कर्नल साहब पाकिस्तान प्रपंचियोंके हाथके खिलौने हैं यह असलियत तो प्रजाके सामने और सारे हिन्दुस्तानके सामने आजाही खुली है।

जूनागढ़के गद्दी नशीन महावतखां और आजके महावतखां अलग अलग दीखते हैं। स्वयं महावतखां अपने भूतकालको भूल गये लगते हैं। प्रजाको जो वचन दिये थे अपने मुखमेंसे निकले वे वचन भी उनकी स्मृतिसे उतर गये। किन्तु कर्नल साहबको यह नहीं भूल जाना चाहिये कि अपने भूतकालकी उपेक्षा करनेवाले वर्तमानमें जीवित नहीं रह सकते। भूतके आधारपर ही भविष्यका महल खड़ा होता है।

१९२० के मार्च महीनेकी ३१ तारीख याद नहीं है, जिस दिन उनका राज्यारोहण हुआ था। उस समय काठियावाड़की समस्त रियासतें बम्बई सरकारके अधिकारमें थी। तत्कालीन गवर्नरके एजेण्ट श्री मिकोनिकीने आपको राज्यासनका अधिकार प्रदान करते हुए कहा था कि

"आपको एक महान् इतिहासका विरासत मिल रही है और आप अपनी योग्यतासे उसे सुरक्षित रखेंगे, इसमें मुझे सन्देह नहीं"

आज इनसे जबाब तलब करनेके लिये श्री मिकोनिकी उपस्थित नहीं हैं। पर

सांवलदास गांधी

इनकी प्रजा और इनकी अन्तरात्मा उनसे पूछ सकती है कि आपने उस विरासतकी योग्यताको सुरक्षित रखा है?

उसी १९२० का मार्च मासका ३१ ता० को श्री मिकोनिकासे अधिकार लेते हुए जो उद्गार उन्होंने स्वयं प्रकट किये थे वे भी कालपट्टपर लिखे हुए हैं।

(१) आतिथ्य और अपनी प्रजाके साथ समान वर्ताव यह जूनागढ़की प्राचीनसे प्राचीन प्रथा है। मैं स्वीकार करता हूं कि उन सबको चालूरखूंगा।

(२) मेरी प्रजा की बड़ा भाग खेती-बाड़ी करनेवाला है, उनकी समृद्धि और उनका कल्याण मेरा सर्व प्रथम कर्तव्य होगा। उनको हानि पहुंचाने वाला कोई कानून या व्यवस्था नहीं बनायी जायगी।

उनके द्वारा बोले हुए ये शब्द आज उन्हींकी हंसी उड़ा रहे हैं। वह आतिथ्य

और प्रजाके प्रति सममावकी बात आज कहां है ? कल्याण और जन समृद्धि की मावना कहां चली गयी ? मयके मारे जो सैकड़ों हजारों किसान और व्यापारी रियासत छोड़कर चले गये हैं उनसे इन मावनाओं की अच्छी अभिव्यक्ति होती है। तो फिर सन् १६२० के महावतखां और सन् १६४७के महावतखां पृथक पृथक हैं यह कहकर क्या हमने गल्ती की है ?

उसी साल, सन् १६२० की बात है १५ अगस्तकी तारीख थी। जूनागढ़की प्रजाने इनकी अमलदारीकी प्रशंसा करने के लिये, धर्म और जातिका सब भेद भूल कर इनको मानपत्र भेंट किया था उस मानपत्रको पढ़नेवाले राणा साहब आज भी विद्यमान हैं उस समय प्रजाने क्या कहाथा राज्यके सिंहासनपर शोमित होनेवाले पूर्ववर्ती राजाओं की अपनी प्रजाके प्रति सहानुभूति और उसके साथ पितृतुल्य हृदय, प्रत्येक धर्म और सम्प्रदायके लिये खुला व्यवहार तथा सममाव और अलग धर्मोंको और अलग अलग जाति बन्धनको माननेवाली प्रजामें परस्पर प्रेम और शांति ......'

आज २७ वर्षों के बाद रियासतका प्रजाके अन्तस्तलमें इन शब्दों की प्रतिध्वनि कैसी सुनायी दे रही है ? परस्पर प्यार और शांतिको छिन्न भिन्न करनेवाले स्वयं नवाव साहब ही बनेंगे प्रजाने कमी स्वप्नमें भी ऐसा नहीं साचा था।

जो राजा अपनी प्रजाका रंजन करनेमें असमर्थ है और प्रजाकी इच्छाओं के विरुद्ध आचरण करता है उसे राजा बननेका अधिकार नहीं। जूनागढ़की प्रजा क्या चाहती है यह तो जग विदित है प्रजाने श्री सांवल दास गांधीके नेतृत्वमें अपनी आजी हुकूमत बना ली है, और न केवल बना ली है प्रत्युत शक्तिके द्वारा मी एक एक करके गांवों को अपने अधिकारमें लेना शुरू कर दिया है। क्या प्रजाकी इच्छा अब भी अव्यक्त रह गयी ?

सोरठकी धरतीकी मूक पुकार, अरब सागरका गम्भीर गर्जन, और जूनागढ़ की प्रजाका आर्तनाद सर महीवतखां तृतीयकी निरंकुशताको ललकार रहे हैं और कह रहे हैं कि पाकिस्तानसे अलग हो जाओ। परन्तु नवाब सोहबकी नींद अमी नहीं खुली। कालका प्रहार एक दिन नींद खोलकर छोड़ेगा।

पर विचारे नवाव भी क्या करें ? नवावी परम्परा ही ऐसी है। लगातार ऐश आराममें जीवन वितानेके कारण वे वस्तुस्थितिका सामना करनेमें समर्थ नही हैं। जूनागढ़की नवाबी सिन्धके उच्च वर्ग से प्रमावित रही है और इस समय मी नवावके दीवान शाहनवाज भुट्टो जो स्वयं सिन्धी हैं, अपने राजनैतिक स्वार्थों के कारण रियासतको पाकिस्तानमें ले गये हैं।

वर्तमान नवावके पिताके हरममें चार दर्जनसे ऊपर बेगमें थीं और जब कभी कोई पेचीदा सवाल आता तो वे भी जानबूझकर बीमार पड़ जाते और बिचारे दीवानको अकेले ही समस्याको सुलझाना पड़ता।

महावत खांकी चार बेगमें हैं

इनमें सबसे छोटी बुलाक बेगम-जो सिन्ध के पीरपरिवारमें अभूत पूर्व सुन्दरी कह जाती है—सबसे अधिक प्रमावशायली है। जबसे नवाब पर इसका जादू चला है तमीसे जूनागढ़में सिन्धियों का बाहुल्य हुआ है। भुट्टो भी उसी सिलसिलेकी एक कड़ी हैं। एक रातमें ही हिन्दू दीवानको अपनी जान लेकर मागना पड़ा और उसकी जगह भुट्टो दीवान नियुक्त किया गया। परन्तु बुलाक बेगमका प्रमाव मी कबतक रहेगा यह कुछ नहीं कह सकते। कहते हैं कि 'भुट्टो एण्ड कम्पनी'ने एक और अनिन्द्य सुन्दरीसे नवाबकी भेंट करवादी है पर ४ बेगमे पहलेसे मौजूद रहनेके कारण शरीयतके मुताबिक ५वीं बेगम नहीं रह सकती थी। उसके लिये उपाय यह किया गया कि एक हिन्दू रियासतमें जाकर हिन्दू-ढङ्गसे शादी करली गयी। इसतरह ५ वीं बेगम हिन्दुस्तानी हुई।

नवाबके शौक

नवाब साहबको कुत्ताका बड़ा शौक है। ६०० कुत्ते की फौज पाल रखी है। इन कुत्तों से इतना प्रेम है नवाब साहबको कि एक वार एक कुत्ते को वरकी तरह सजाकर और एक कुत्तीको वधूकी तरह आभूषणों से सुसज्जित करके खूब धूमधामसे उनका विवाह करवाया। कुत्तों को खुली हवामें सैर करवानेके लिये सवारीके प्रबंध में १० हजार रुपया खर्च किया गया। नबाब साहबको कुत्तों का यह प्रेम ही 'कुत्तों' से हटकर 'भुट्टो'की तरफ न ले गया हो—

नबाब साहब को नाटकों का भी बड़ा शौक है। पर इस शौकमें भी निरंकुशता किस तरह छाई रहती है—यह इस घटना से प्रकट होता है :

एकबार रङ्गमञ्चपर 'लैला मजनू' नाटक खेला जा रहा था। तीसरे अंक के अन्तिम प्रवेश आपने रोक दिया और नाटकके संचालकको बुलाकर कहा कि "हमारी खातिर इस नाटकमें ऐसा परिवर्तन करदो कि लैला और मजनू इन दोनो में से कोई भी न मरे। अभी इसका प्रवेश लिखो और अभी मञ्चपर खेलो। मैं देखनेके लिये यहीं बैठा हूं।"

एक ऐतिहासिक नाटकमें भी आपने उलटफेर करवा दिया और अपने रंगमञ्चपर इतिहासको भी उलट दिया। इसी प्रकार एकवार 'पृथ्वीराज और संयुक्ता' के नाटकमें आपने यहउद्गार प्रकट किया था कि पृथ्वीराजको संयुक्ताके बजाय उसकी दासीका हरण करना चाहिये था।

एक नाटकसे तो नबाव साहबने दुनियां भरसे अनोखी ही मांग पेश की। नाटक को उलटी ओरसे शुरू करवाया—अन्तका हिस्सा पहले और पहलेका हिस्सा अन्तमें।

महाबतखां साहब ! अपने निजू प्रासादके मञ्चपर तुम चाहे कुछभी करते। इतिहास और भूगोलको उलट देते। पर जूनागढ़का राज्यमञ्च तो तुम्हारा निजू नहीं है। यदि तुम्हे इतना ही पता होता तो आज यह आंधी न आती।

पाकिस्तान किसी नाटक कम्पनीका नाम नहीं है—यह अस्लियत भुट्टोने तुमसे क्यों छिपाई ! तुमने कारागारमें से चोर और डाकुओं को निकालकर घातक हथियार पकड़ा दिये हैं—क्या सोचकर ! क्या यह नाटककी और सीन—सिनरीयों की जेल है ! नहीं, यह तो सची जेल है।

भुट्टोका यह नाटक जो मयानक विस्फोट कर गयी है उससे तुम्हारा आज तककाजीवन, तुम्हारा शौक और तुम्हारी सत्ता समाप्त हो जायेगे ! और क्या कहूं !

इतिहास मज़हब और आदमी

(लेखक:—फणीश्वर नाथ 'रेणु')

—

उस दिन दीवाली थी—लक्ष्मीके शुभागमनका एकमात्र दिन। सुबह उठते ही मनमोहन, मां से लड़ कर "कैम्प"में चला गया था। आस पास के गांवोंमें जोरोंसे हैजा और मैलेरिया फैला हुआ था। भूख और रोगका संयुक्त मोर्चा। प्रत्येक गांवसे रोज आठ-दस लाशें उठ जाती थीं। बहुत 'लिखा-पढ़ी' खुशामद और लड़-झगड़ कर, मनमोहन एक मेडिकल कैम्प' ला सका था। वह स्वयं डाक्टरोंके साथ, सुबहसे शाम तक गांवोंमें घूम घूम कर दवा और पथ्य बांटता फिरता था।

दोपहरको वहघर लौटा।

नौकर-नौकरानियोंके साथ, मां सफाई के काममें लगी हुई थीं। केलेके पौधे गाड़े जा रहे थे, कंदीलें बनाईजा रही थी, रङ्गीन कागजोंकी झण्डियां सजाई जा रही थीं। और इन सजावटोंको खड़ी देख रही थी, थी, गांवके दर्जनों नग्न-स्नाण, भूखे लड़के-लड़कियोंकी भीड़। वृद्ध नौकर रामटहल बार-बार उन लोंगोंको अकारण ही डांट बता देता था और प्रत्येक डांट पर यह एक कदम पीछे हट जाती थी।

मनमोहन बारामदे में पड़ी हुई एक कुर्सी पर धम्म से जा बैठा।

हवामें चूने और वार्निशकी गंध घुल-मिल गयी थी। बगलके एक कमरेमें मां नौकरोंसे उदकर काम ले रही थी और साथ-साथ बड़बड़ा रही थो।

"..........तुम क्रिस्तान हो जाओ घरमें मुर्गे-मुर्गियां पकाओ, मुसलमानोंके साथ खाओ मैं कुछ नहीं बोलती। तुम देवी देवताओं की खिल्ली उड़ाते हो मैं नहीं रोकती। लेकिन जब तुम मेरे धरम-करम में अड़ङ्गा डालोगे, मां लक्ष्मी की पूजा नहीं करने देगे—तो इसे मैं कैसे बर्दाश्त करूं! बापका धरम था तुम्हें पढ़ाया लिखाया, तुम्हारे लिये जमीन जायदाद छोड़कर बेचारे सिधार गये। पढ़ लिख कर पंडित हुए, नहीं कमाते हो तो हर्ज नहीं, लेकिन बापकी इज्जत, घरकी मर्यादा को तो कमसे कम निभाओ। सो नहीं, बैठे बिठाये आवारों के साथ हल्ला धरम छोड़कर अधरमकी बातें और किसान मजदूर राज्य......। हो चुका किसान मजदूर राज्य!"

मनमोहन बरामदेसे सब कुछ सुन रहा था। उसने देखा कि मां का क्रोध अब तक भो शांति नहीं हुआ है। वह उठा और अपने कमरेमें दाखिल हुआ। वह थोड़ा लेटना चाहता था किन्तु कमरेमें आकर उसने देखा कि पलङ्ग पर एक अपरिचित वृद्ध आधिपत्य जमाये बैठा है। वह उसकी ओर गौर से देख कर एक कुर्सी पर बैठ गया।

वृद्धने तपाकसे फर्श पर खैनी थूकते हुये, सड़ी हुई दन्त पंक्तियां निकाल कर कहा—'अहा हा! बबुआ जी, मां लक्ष्मी कल्याण करें। प्रातः कालसे कहां रहे बबुआ जी!'

मनमोहनने अन्यमनस्क होकर मिनमिना दिया—ज़रा गांवोंमें घूम रहा था।

'अहा हा!—वृद्ध पुनः थूकता हुआ बोला—ठीक है ठीक है, परोपकार तो महा धर्म है बबुआ जी! किन्तु देवी देवताओंका अनादर मां लक्ष्मीका अपमान आदि तो सर्वथा धर्म विरुद्ध आचरण है। अंग्रेजी पठान पाठनका.......

आप ?......आप कौन हैं?—मन-मोहनने टोका।

'अहा हा! अपने कुल पुरोहित पण्डित दिनमनि पाठकको नहीं पहचानते बबुआ जी?—आप ही पुरोहित दिनमनि पाठक हैं?—मनमोहनने भौं सिकोड़ते हुए पूछा।

पंडित जी पुनः एक बार थूक कर, जोर जोरसे हंसने लगे। मनमोहनको सिर्फ दो घण्टे पहले की बात याद आ गयी। महा कङ्गाल चेथरू मंडल रो-रो कर कह रहा था कि पंडित दिनमनिने उसे लूट लिया। उसके एकलौते जवान बेटेके श्राद्धमें ५) रु० दक्षिणा तो लिया ही जबर्दस्ती एक गाय भी खोलकर ले गया। स्त्रोके श्राद्धमें अंगूठेका निशान लेकर जो नहीं भरा तो छप्पर पर से कोहड़े शाक भाजी भी नोपाकर ले गया...

मनमोहनको गम्भीर देखकर पंडित जी ने सोचा कि वह अपनी अनभिज्ञता पर लज्जित हो रहा है उन्होंने उत्साहित होकर कहा कोई चिन्ता नहीं बबुआ जी।...

मनमोहनने सहसा पूछ दिया—पंडित जी क्या आप कह सकते हैं। मां ने जो यह नई जमीन खरीदनेमें आपका कितना हाथ है

'बबुआ जी! मैंने ही तो सब कुछ किया'—वृद्ध मनमोहनके मनोभाव को नहीं समझ सका। वह प्रसन्न होकर कहता गया—बिधवा तो जमीन वेचनेके लिये राजी ही नहीं हो रही थी। बस मैंने धरम की वह लकड़ी फेरी कि सारी अकड़ जाता रही।......

और कैलाशपतिके विरुद्ध झूठी गवाही भी आपने ही दी थी?

अरे क्या पूछते हो बबुआ जी! तुम्हें तो सब मालूम है। नहीं रहे मालिक मेरे वरन सारी लक्ष्मीपुरकी जमींदारी अपनी ही होकर रहती। मैं तो सेवक हूं बहू जी की आज्ञा पर ......

'और आप ग्रामहिंदू सभाके सभापति भी हैं?

'अहा हा! तुम तो सब जानते हो बबुआ जी। मालिकने मुझे जो कुछ भी बनाया वह हूं। अब तुम जमींदारीका भार तो संभालो।......

अहा हा मां दुर्गे

अब आप जा सकते हैं।—मनमोहन की त्योरियां बदल गईं। वृद्ध कुछ बोलना ही चाहता था कि मनमोहनने कहा—अब फिर दर्शन देनेका कष्ट नहीं कीजियेगा।

वृद्धने अपनी गंदी झोली उठाई और राह पकड़ी।

फर्श पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। उसकी सफाईके लिये मनमोहनने नौकरको आवाज दी। अचानक मां ने कमरेमें प्रवेश

किया। क्रोध से वह जल सी रही थी। उसके नथुने फुके हुए थे और वह जोर जोरसे सांस ले रही थी। बोली—'अब मुझे क्या कहते हो कहो? मां लक्ष्मीका अपमान करके जी नहीं भरा तो बेचारे ब्राह्मणको गालियां देकर निकाल बाहर किया। अब मुझे गला घोंट कर मार डालो तो स्वर्गमें तुम्हारे पिता को शांति मिले। हे भगवान मेरे ही कोख से ऐसे अधरमी को जन्म लेना था…।

वह रो पड़ी। मनमोहन पत्थरकी तरह बैठा रहा।

मां अंचलसे आंख पोंछती हुई चली गई। मनमोहन कुछ कहना चाहता था लेकिन पलंगकी ओर निगाह उठाकर, वह बैठा रहा। कुछ देरके बाद वह उठा और टेबिल पर कोई किताब ढूंढ़ने लगा।

उस दिन भंडार घरकी सफाईके सिलसिलेमें धन्नूकी मांने एक अलभ्य पुस्तकका जीर्णोद्धार किया था और बड़े उत्साहसे मनमोहनके टेबिल पर रख गई थी। टेबिल पर तीन-चार मोटी मोटी किताबें जिनके नाम सुनहले अक्षरोंमें लिखे हुए, चार पांच छोटीऔर पतली—जिनके 'गेट-अप इतने अच्छे कि बरबस पढ़नेको जी मचल पड़े, अंग्रेजी और हिन्दीकी कुछ मासिक पत्रिकायें और रंगीन पत्थरोंके नीचे दबी हुई रंग-बिरङ्गी चिट्ठियोंके बीच वह गंदी और पुरानी किताब आंखोंमें खटकी। मनमोहनने उसे उठाकर देखा—'भारतवर्षका इतिहास।' वह किञ्चित मुस्कुराया और उसे एक ओर फेंक दिया फिर कुछ सोचकर उसे उठा लाया और आरामकुर्सी पर लेट गया।

भारत वर्षका इतिहास

यह किताब मनमोहनकी ही है, इसके सबूतमें उसके कई पृष्ठों पर लिखा हुआ था—This book belongs to Manmohan Verma, Class VII H.E. School वगैरह वगैरह।

शुरूके कुछ पन्ने फट चुके थे, कुछमें कीड़े लग गये थे, लेकिन सबसे अन्तमें—सम्राट पंचम जार्जकी तस्वीर और उसके नीचे लिखी हुई पंक्ति—God save the king' अब तक चमक रही थी।

मनमोहन को याद आई कि पुरस्कार वितरणोत्सव' के अवसरपर उसने बड़े सुरीले स्वरमें—God save the king गाकर एक अच्छा सा पुरस्कार प्राप्त किया था।

आज मनमोहन एम० ए० है। विश्वविद्यालयने, जिस वर्ष उसे इतिहासमें प्रथम श्रेणीका एम० ए० घोषित किया उसी वर्ष भारत सरकारने उसे शांतिका शत्रु कह नजरबन्द भी बना लिया था।

वह मुस्कराता हुआ पन्ना उलटता रहा। स्थान स्थान पर पंक्तियां 'अंडर-लाइन'कीहुई थीं, परीक्षामें पूछे जानेकी संभावना प्रकटकी गई थी।…पानीपतकी लड़ाई….ताजमहलकी तस्वीर…औरंगजेब, छत्रपति शिवाजी…बहादुरशाह…अंग्रेजी शासनकाल…

वह रुक गया राबर्ट क्लाइवकी बगलमें लिखा हुआ था Most important… क्लाइव बड़ा बदमाश था। वह स्कूलको खिड़कियां और बेंचोंको तोड़ फोड़ डालता था मनमोहनको याद आया कि सूरज प्रसाद को भी मास्टर साहब राबर्ट क्लाइव कहते थे। बड़ा शैतान था सूरज भी स्कूल भरमें सबसे बदमाश!…यह सब दिन वैसा ही रहा। १९४२ के आंदोलनमें उसे फांसी हो गई। आह! सूरज नहीं रहा। कितना बड़ा संगठनकर्ता था वह कितना निडर आंधी और तूफानोंमें भी हंसने वाला! सुना कि फांसीके दिन वह रोयाथा। क्या वह रोया होगा?.. वह जरूर अपनी छोटी बहन शारदाको एक बार देखनेके लिए रोया होगा!….शारदा बिना मां-बापकी बच्ची, भूखों मर गई।….देशके कितने सूरज अस्त हो गये, कितनी शारदा भूखसे बिलख बिलख कर मर गई होंगी।….

पन्ना उलटा सिराजुद्दौला। सिराजुद्दौला सिर्फ २० वर्षकी उम्रमें नवाब हुए!….मनमोहनने अपनी उम्रको जोड़ा—२५ वर्ष। एक बार मनमोहनने सिराजुद्दौला पर कविता लिखी थी—'प्यारे सिराज! प्यारे सिराज!' ज्योत्सनाको वह कविता बड़ी अच्छी लगती थी वह बार बार यही कविता सुनना चाहती थी। ज्योत्सना कम्यूनिस्ट पार्टीमें काम करती है अब सुना है, १९४२ आंदोलनके समय वह रेडियो पर 'जन सगीत' गाया करती—ग्रामोंमें आग लगाने वाले गुंडे हैं बदमाश हैं, और 'यह क्रांति नहीं है, यह क्रांति नहीं है….दुश्मन है द्वार पर….

मनमोहनने किताब पर दृष्टि गड़ाई…. इस अमानुषिक बधको ब्लैकहोलकी घटना कहते हैं।

यह मुस्कुराया। बहुत देर तक मुस्कुराता रहा। अचानक रामटहल आकर खड़ा हो गया।

'क्या है?'

'पूजा शुरू हो गई।'

'तब?'

'आप नहीं चलिएगा?'

'नहीं।'

रामटहल चला गया। मनमोहन पुनः किताबके पन्नोंमें वापस हो गया।….लार्ड कार्नवालिस….जमींदारी प्रथाका जन्म…. जमींदारी प्रथा आज मिट रही है। इस सत्यानाशी प्रथाको कायम रखनेके लिए जमींदारोंने क्या क्या नहीं किया! आज भी वे सचेष्ट हैं। उन्होंने राष्ट्र सेवक दल नामक एक संस्था भी कायम की है। मुस्लिम नेशनल गार्ड और यह 'राष्ट्र सेवक दल,' मुस्लिम और हिन्दू पूंजीपतियोंकी डूबती हुई नैयाको बचा सकेगा?….इस गांवमें भी तो काली टोपी लगाये शामको कुछ लड़के लाठी घुमाया करते थे। आज गांवमें महामारी फैली हुई है। कहां हैं वे?….कहां हैं थापट जी?….

उसने पन्ने पर निगाह गड़ा कर पूछा—'भूखे, बीमार मुल्कमें धर्मके नाम पर लड़ाइयां होती हैं अथवा रोटीके लिए? रोटीके लिए नोवाखाली और विहारके गांवोंने कितनी बार सम्मिलित कोशिशकी?… क्या 'कालोबर्दीका' राज होकर ही रहेगा?

❀ * ❀

दीवालीकी संन्ध्या न जाने कब उतर आई। कमरेके अन्धकारमें बैठा मनमोहन अपने आपसे पूछ रहा था—"है हिम्मत? इन बिगड़ते हुए इतिहासके पन्नोंको फाड़कर जलाना होगा।"

असख्य दीपोंकी टो ी झि मि ा उठी केलेके पौधोंमें पिरोई हुई मोमबत्तियां जलने गा — ग ने लगी। प ाखे, फु झड़ी, आतिशबाजी !! आंगनमें एक साथ, घड़ि-याल गंख और घंटो घनघना उठी। आरती हो रही है। बड़े घरकी दीवाली देखनेके लिए प्रसाद लेनेके लिए गांव भरकी जनता टूट पड़ी। भूखी, बीमार-नग्न जनता। क्या प्रसादसे भूख मिट सकती है?

श्री लक्ष्मी मैयाकी जय....!-जयध्वनि के साथ पूजा शेष हुई। प्रसाद वितरण को ाहल !!

मनमोहनक कानोंके पास गूंज रहा था—श्री लक्ष्मी मैयाकी जय। उसने शब्दों को तोड़ना शुरू किया—

श्री लक्ष्मी मैयाकी जय।'

'व्यक्तिगत सम्पत्तिकी जय!'

'लूट बेइमानी, शोषणकी जय।'

पूंजीकी जय।'

'हिन्दू राजकी जय।'

पाकिस्तानकी जय।'

'लड़ाईकी जय!'

'फासिज्मकी जय।'

और यह God save the king? इस प्राथनाके बावजूद भी सम्राट मर जाता है तो गॉड सेभ दिकिंगका मतलब हुआ....ईश्वर, गुलामी, गरीबी, भूख मौत, जुल्म, दगे, लूट, कत्लेआम—सभीको कायम रखें।....

वह बरामदे पर आकर खड़ा हो गया। गांवके कुछ रोगमुक्त नौजवान, सामनेके मैदानमें 'मशाल' लाला मना रहे थे। हाथ में बड़े बड़े जलते हुए मशाल लेकर वे दौड़ रहे थे। शोरगुल मचा रहे थे। दिवालीका यह शेष विधि उसे बड़ा अच्छा लगा। घोर अन्धकारमें ूप पाते हुए मशा — ला ठ ा ठ !!

धीरे धीरे मशालोंकी संख्या बढ़ती गई, शोरगुलमें तेजी आती गई। मनमोहन मुस्कुर पड़ा। उसके पांव आपही आगे बढ़ने। लगे उसने उलट कर एक बार दीपोंकी ओर देखा—कतारमें सजे सजाये हजारों दीप जगमग जगमग कर रहे थे। जगमग कर रहे थे ! जगमग जगमग—शृंगार रसकी कविता सी, रुनझुन—जैसे खुमारी से ऊंघती हुई महफिलमें वेश्या नाच रही हो।

उसने मशालोंकी ओर देखा—एक ताण्डव नृत्य सा मुक्त घर सा उसने अपने नसोंमें गर्म खूनका अनुभव किया

मनमोहन चल पड़ा रोगग्रस्त गांवों की ओर। और उसके घर से एक महल दूर थे वे गांव—जहां गृह गीदड़-कुत्ते कहीनोंसे त्योहार मना रहे। उन गांवोंके बीच, सघन आमके बागमें मेडिकल कैम्प था। दूरसे ही रोशनी दिखाई पड़ती है उसने गांवमें प्रवेश किया।

गांवका यह प्रवेश भाग शांत था, शांत यानी—इस अंचलकी आवादी एकदम खत्म होचुकी थी।

गांवके मध्य भागमें कुछ कुत्ते आपसमें मिलकर डरावनी आवाजमें रो रहे थे वह सिहर पड़ा, किन्तु चलता एक अंधेरी और गंदी गलीमें वह ठिठक पड़ा—सफेद छाया भाग कर अन्धेरेमें जल्दी जल्दी छिप गई। पहले तो यह डरा, लेकिन तुरन्त ही सम्हल गया। उसने पहचान लिया। डा० सिन्हा और मिस चटर्जी मेडिकल स्टुडेंट। उसने चलते चलते सोचा—दोनों एक ही बात है। अस्थिपंजरों के गांवमें फुलझड़ियां जलाकर दीवाली मनाना और लाशों पर खड़ा होकर प्रेमालिङ्गन करना दोनों एक ही बात है।

वह गांवके मध्य भागमें आ पड़ा। शुरूमें ही हमीद मियां का घर था। गांव भरका चचा हमीद। हमीदके आंगनेमें जाकर उसने पुकारा—हकिया! हकिया!

हाय रे! अरे बाप! आओ भैया!—एक झोपड़ीसे कांपती आवाज आई।

अरे! तू भी पड़ गयी क्या? हमीद चाचा कैसे हैं और चाची सर झुकाकर झोपड़ीके अन्दर चल गया हकिया जमीन पर चीथड़ोंमें लिपटी हुई कांप रही थी। मनमोहनने जलती हुई कुप्पी उठाई और दूसरी झोपड़ीमें जाकर देखा—हमीदकी लाश ऐंठ गयी थी और पास ही बुढ़िया भी मुंह फाड़े मरी पड़ी थी। वह एक लम्बी सांस छोड़कर लौट आया। जमीनपर कुप्पी रखकर वह बोला—घबराओ मत्र हकिया मैं यहीं हूं। डाक्टर आये थे!

भाई जी! बहुत ओरोंकी सर्दी...जाड़ा

मनमोहन जमीन पर बैठ गया और सोचने लगा कि वह क्या करे! उसने झोपड़ीमें एक बार निगाह दौड़ाई—चारों ओर गंदगी फैली हुई थी। कपड़ोंके नाम पर दो चार चीथड़े इधर उधर फेंके हुए थे तीन चार मिट्टीके पुराने बर्तन...... सर्दी, सिल, नमी और बदबू!

भैया! मुझे दवा रक्खो, मेरी हड्डियां अलग हो रही हैं।

मनमोहनने उसकी पीठपर अपनेको डाल दिया। गंदे कपड़ोंकी गंधसे उसका शिर चक्कर खाने लगा।...आह! कितनी स्वस्थ और तगड़ी लड़की थी यह। मिहनत से कभी भागती नहीं थी। गांव भर की सेवा की है इसने कैम्पमें आई हुई कालेज की लड़कियोंको इसने निस्वार्थ सेवाका सबक सिखा दिया है। ......इसकी मांसल बांहें गठा हुआ शरीर और.....

उसने अपने शरीरको जरा खींचा कि हकिया कराह उठी—भाई जी। मैं मर जाऊंगी मत जाओ। भाई जीवह फूट-फूट कर रो पड़ी। मनमोहनने पुनः उसे दबाया—डरो मत मैं कहीं नहीं जाता। मलेरिया है, सूई पड़ते ही अच्छी हो जायगी।

वह बैठा रहा। हकिया कराहती थी पानी मांगती थी। पानी पीकर कै करती थी। फिर रोने लगती थी। मनमोहन उसकी तीमारदारी कर रहा था।...आंगन में जमीन सूंघते हुए एक सियार ने प्रवेश किया। हकिया की कराह पर उसने डरकर झोपड़ी की ओर देखा। उसकी आंखें अंधेरेमें चमक उठीं। वह बहुत देर तक देखता रहा। मनमोहनको लगा जैसे सियार आश्चर्यित होकर देख रहा हो, क्योंकि हकियाने उसे दोनों हाथोंसे जकड़ रखा था।

—०—

कौन क्या कहता है

"जनताकी इच्छा चलेगी। यदि हैदराबाद इस स्पष्ट संकेत को नहीं समझ पाता तो उसका हाल भी वहीं होगा जो जूनागढ़का हुआ है। पाकिस्तानकी हरकतोंसे ऐसा मालूम होता है कि हिन्दुस्तान को आफतमें फंसा देख उसने रियासतों में उपद्रव और विशृंखलताकी सृष्टि करके स्थितिको अधिक बिगाड़ने का यही उपयुक्त अवसर समझा। मैं दावेके साथ यह बता देना चाहता हूं कि मामलेको बहुत दिनों तक यूं ही नहीं पड़े रहने दिया जा सकता। अगर वे हमें चैलेंज देनेको उतावले हो रहे हैं तो हम उसे स्वीकार करनेको तैयार हैं।

पाकिस्तानकी दस्तन्दाजी

याद रखना चाहिये कि जूनागढ़के नवाब बिना चूंचपड़ किये राज्य छोड़ गये। यह आफतका पहाड़ नवाबके सर पर इसलिये आकर टूटा कि शरारत पर तुले हुये व्यक्तियों द्वारा उनको गलत सलाह दी गयी। पाकिस्तान सरकारके दांव पेंच भी इसके पीछे थे।

जूनागढ़के मामलेमें दस्तन्दाजी करनेका पाकिस्तानको कोई हक नहीं था। हमनेविभाजन इसआवश्यकतासेस्वीकार किया था कि आर्य भाईके झगड़ेका एक समझौता अन्तिम हो रहा है। हम समझते थे कि संयुक्त परिवारके एक अंग के समान एक भाईकी दुराग्रह पूर्ण मांग को स्वीकार कर हम दोनों शान्तिसे रहेंगे और इस तरह सबके दिन अच्छे होंगे। लेकिन विभाजन होते ही पंजाबके दंगोंने हम सबको घेर लिया। इस पर भी हमने खास तरहसे इस बातका ध्यान रखा कि जिन रियासतोंके साथ पाकिस्तानका प्राकृतिक सम्पर्क है उनके साथ सम्बन्ध स्थापनमें पाकिस्तानके रास्तेमें रोड़े न अटकाये जांय। उनके गुटके किसी रियासतको हमने अपनेमें मिलानेके लिये बहकाया या फुसलाया नहीं। लेकिन वे लोग जहांतक जितना संभव था हमारे रास्ते में रोड़े अटकानेसे कभी बाज नहीं आये

सबसे पहले रामपुरने भारतीय संघ शामिल होनेकी घोषणा की और उने पाकिस्तानकी प्रतिहिंसा और दुरभिसंधि का कजा चखना पड़ा। हमारे दृढ़ताके साथ इस चुनौतीका सामना करते ही प्रतिरोध ठण्डा पड़ गया तब इन लोगोंने जूनागढ़में गैर रखनेकी कोशिश की। हमने उन्हें चेतावनी दी, उनसे प्रार्थना की, तर्क किया पर दुराग्रह जरा भी टससे मस न हुआ। हमारे मामलोंमें इस तरहकी दस्तन्दाजीके फलाफलकी ओरसे हम आंखें बन्द करके नहीं रह सकते उसी तरह जूनागढ़में उनके आखिरी कदम उठाने यह फैसला किया गया। यह फैसला जल्दिबाजीमें नहीं हुआ बल्कि अन्य कोई मार्ग न देख सोच समझकर अमिट होनीके सामने सर झुकाना स्वीकार किया गया। दीवानने पाकिस्तानको भी इसकी इस सम्बन्धमें पाकिस्तानकी प्रतिक्रिया देखने के लिये २४ घण्टे तक हमने राह देखी लेकिन कोई उत्तर नहीं आया। तब हमने केवल जूनागढ़में शान्ति सुरक्षित रखने के लिये ही नहीं काठियावाड़में इसकी कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया न हो इस दृष्टिसे हमने अपनी सेना वहीं भेजी।

पाकिस्तानके इस कथनमें कोई तथ्य नहीं है कि दीवानने जो रास्ता अख्तियार किया वैसा करनेका उसे कोई अधिकार न था। नवाब जूनागढ़की स्वीकृति और जनताकी अनुमति उसे प्राप्त थी। इसके सिवा दूसरा कौन अधिकार या सत्ता है

हैदराबाद जूनागढसे सबक ले—सर्दार पटेल

के बहुत पहले जो रियासतें हमारे साथ शामिल हो चुकी थीं उनके हितोंकी भी हम उपेक्षा नहीं कर सकते थे। भारतीय संघमें सम्मिलित राज्योंने अधिकार और काठियावाड़की शांति रक्षाके उद्देश्यसे हमें सतर्कताके पूर्वोपायोंसे काम लेना पड़ा और मनवादर, मङ्गरोल और बबरियाबादको सैनिक भेजने पड़े।

इतने पर भी जूनागढ़में अपनी सेनाएं ले जानेका हमारा कोई इरादा नहीं था। लेकिन श्री सांवलदास गांधीके नेतृत्वमें सङ्गठित अस्थायी सरकारने हाथ डाला। गांवके बाद इनके अधिकार में आता गया और दुन्तियाना तक पहुंच गये। तब नवाबके सलाहकारोंने, जो पहले मैदान छोड़ भाग गये थे, महसूस किया कि खेल खतम हो गया। जिन लोगों ने इनकी धनसे मद की थी उनको घोर संकटमें छोड़ ये लोग चलते बने।

यह सब हो जानेपर जूनागढ़का शासन भार भारतीय संघके हाथोंमें सौंपने का फैसला उस समय किया जब पाकिस्तान सरकारने मेजर हार्वे जोन्सको मदद देनेसे इनकार कर दिया इतनाही नहीं कौंसिल और जनतासे परामर्श लेकर अपने कार्यके समर्थनके लिये जिसे प्राप्त करना दीवानके लिये आवश्यक था। दरअसल भारतीय संघके ही कामको नाजायज बतानेके लिये सब तरहके हथकण्डोंसे काम लेना पाकिस्तान सरकारकी आदत है। कभी धमकी, कभी आंखलाल पीली करना और कभी बिलकुल नरम पड़ जाना उनके तौर तरीके हैं। कराची की ज्यादा मुनाफिक आब हवामें पहुंच कर अबस्यात दीवानने यह यह महसूस किया कि भारतीय संघके हाथोंमें हमने पूर्ण तया शासन नहीं सौंपा। लेकिन उनका पत्र इस बातका पर्याप्त प्रमाण है और सम्भवतः वे हमसे इस बातकी आशाभी नहीं कर सकते कि उनके और उनके अफसरोंकी कालीकरतूतों और नवाबके स्वराज्य छोड़कर भागजानेके बाद इस राज्यको थालीमें रख कर उनकी नजर करेंगे।

जोभयङ्कर घृणित रूप देखा गया है किसी किसी पड़ोसी राज्यके साथ एक विदेशी राष्ट्र भी वैसा आचरण नहीं कर सकता लेकिन काश्मीरका भविष्य, हैदराबादकी भांति, जनताके हाथोंमें है।

अधिकांश व्यक्ति ऐसे दिखते हैं चाहे वे नाई को छः आने तक प्रति सप्ताह देते हों। इतने में उनकी तीन हजामत बनती हैं, इस प्रकार सात दिनों में से चार दिन उनकी दाढ़ी खुरदरी ही रहती है।

यदि आप "सेविन ओ' क्लॉक" ब्लेड से स्वयं ही प्रतिदिन हजामत बनावें तो आप इस प्रकार सुव्यवस्थित ही नहीं दिखेंगे; किंतु पैसे की भी बचत करेंगे, क्यों कि एक छः आने का पैकेट हफ्तों चलेगा।

"सेविन ओ' क्लॉक" ब्लेड उत्तम इस्पात से तीन स्तरों के बनाये जाते हैं। वे बाजार में अत्यंत तेज़ और विश्वसनीय ब्लेड हैं।

नित्य स्वयं हजामत बनाइये

7 o'clock

SLOTTED BLADES

"सेविन ओ'क्लाक" ब्लेडस्

ब्लेड जो ज़्यादा हजामत और कम ख़र्चा देते हैं

६ आने में ५ का प्रत्येक पैकेट

अधिक टिकाऊ

बैटरी

कार, ट्रक और लारी के लिये

Local Agents Messrs. F. & C. O S L E R Ltd
12 Old Court House Street Calcutta
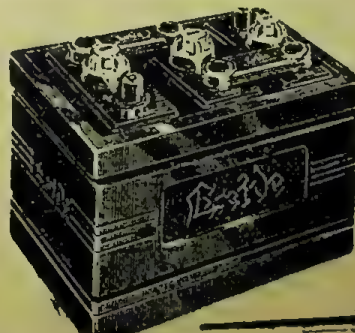
स्वतन्त्र भारतके स्थानापन्न गवर जनरल श्री राजाजी हमारे कार्टूनिस्टकी दृष्टिमें

उच्च कोटिकी रिस्ट वाच

स्वीस मेड, मजबूत टिकाऊ, आधुनिक डिजाइन, लीवर मूवमेंट ठीक समय, ३ वर्षकी गारन्टी। गोल आकारकी रिस्टवाच १५), सुपीरियर १६॥), उपर्युक्त कैसी फ्लैट शेप, ४ जुएल, क्रोमीयम केस २४)। उसी प्रकार सेन्टर सेकण्ड २६), गोल आकार १५ जूएल ३६), लम्बी शेप ५ जूएल ३५), रोल्ड गोल्ड स्टोक टैंक (केस गारन्टी युक्त १० वर्ष (५०), डाक खर्च ॥) दो आर्डर आनेसे मुफ्त। प्रत्येक घड़ीके साथ एक फीता दिया जाता है।

ईस्टर्न वाच कं०
पो० बक्स नम्बर १२२१६ (पी)
कलकत्ता ५

REGD. NO. C 2229.

सम्पादक—देवदत्त मिश्र, ७४ धर्मतल्ला स्ट्रीट, स्थित इलेक्ट्रिक इण्डिया प्रेसमें गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।